ज्यों केराके पातमें पात पातमें पात।
त्यों गुणिजनकी बातमें बात बातमें बात ॥

हिन्दी

लोकोक्ति कोष

अर्थात्

हिन्दीकी प्रचलित कहावतोंका बृहत् संग्रह जिसमें संस्कृत, फारसी,
मारवाड़ी, पंजाबी, पूर्वी, भोजपुरी आदि भाषाओंकी
प्रसिद्ध कहावतें भी शामिल की गई हैं।

विश्वम्भरनाथ खत्री

द्वारा

संकलित सम्पादित और प्रकाशित
६६ हरिसन रोड,
कलकत्ता

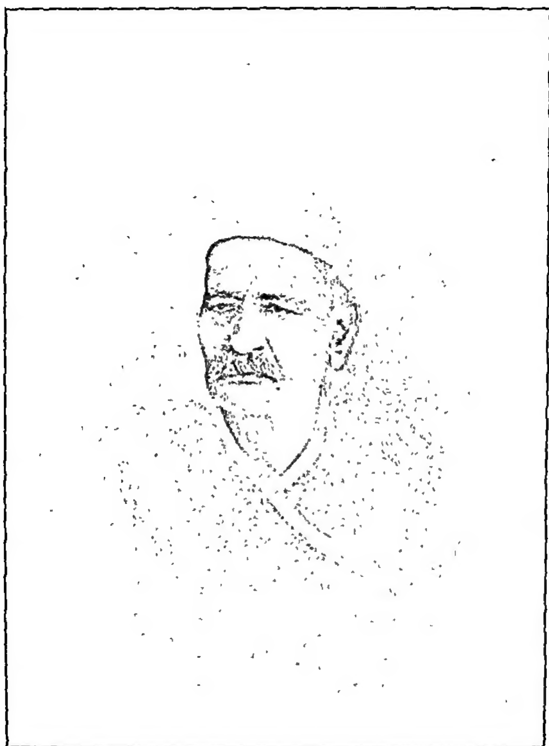
सर्व स्वत्व स्वाधीन

प्रथम संस्करण
२००० प्रति

सम्वत् १९८०

सादी जिल्द ३॥)
सुनहरी „ ४)

मुद्रक—
रामकुमार भुवालका
"हनुमान प्रेस"
नं० ३, माधव सेठ लेन,
कलकत्ता ।



स्वर्गीय बाबू छुन्नामलजी खत्री ।

(संग्रहकर्त्ताके पिता)





जिन्हें लोकोक्तियोंसे अतिशय प्रेम था, जो बात बातमें सूक्तियोंके प्रयोगसे
अपने साधारण कथोपकथनको मनोरंजक और सरस बना दिया
करते थे, जिन्होंने लोकोक्तियोंपर कही हुई अनूठी कहानियोंसे
श्रोताओं पर प्रभाव डालते हुए मेरे बाल-हृदयपर इस
कार्यमें अभिरुचि पैदा करनेका अंकुर जमा
दिया था, आज उन्हीं परम पूज्य स्वर्गीय
पितृदेवके चरणोंमें उन्हींकी वस्तुको
समर्पण करनेका शुभ
अवसर प्राप्त हुआ है।





विश्वम्भरनाथ खत्री ।

ग्रन्थ-परिचय



लोकोक्ति भी भाषाका एक अलंकार है। पर केवल अलंकार नहीं है—अलंकारसे बहुत कुछ अधिक है। यह लोकोक्ति है—लोक विशेषके ज्ञान, अनुमान और अनुभवका "गागरमें सागर" है। लोकोक्तिके अनेक प्रकार हैं। कुछ लोकोक्तियां घटना-विशेषसे उत्पन्न होती हैं, कुछ इतिहास-विशेषके संस्कारसे निकलती हैं और कुछ नित्यके व्यवहारसे। प्रत्येक लोकोक्ति किसी न किसी कविकी ही उक्ति है, परन्तु उसमे ज्ञान अकेले उस कविका नहीं, प्रत्युत सारे समाजका होता है। समाज उस उक्तिमें अपने ही अनुभवका दर्शनकर प्रसन्न होता है और उसे सादर ग्रहण करता है। इसी बातपर अंगरेजी भाषामें एक लोकोक्ति है—"Wisdom of many and wit of one" अर्थात बहुतोंकी अनुभूति और एककी उक्ति।

सभी भाषाओंमें ऐसी उक्तियां स्वभावतः होती ही हैं और ऐसी उक्तियोंका संग्रह सर्वत्र ही बड़े आदरकी दृष्टिसे देखा जाता है। ऐसी लोकोक्तियोंका पुस्तकरूपमें संग्रह करना साहित्यकी एक उत्तम सेवा है। हिन्दी भाषामें अबतक ऐसे संग्रहकी कमी थी। नामको दो एक पुस्तकें हैं, पर वे नहीं के बराबर हैं। श्रीयुत बाबू विश्वम्भरनाथजी खत्रीने हिन्दी भाषा साहित्यकी यह कमी पूरी की है और इसलिये वे हम सबके धन्यवादके पात्र हैं। आप छिपे हुए रत्न हैं। हिन्दी साहित्यके ऐसे मर्मज्ञ और प्रेमी बहुत कम हैं। एक दुस्साध्य रोगसे आप अनेक वर्षोंसे पीड़ित हैं और उसकी दुःसह पीड़ामें आपको किसी वस्तुका प्रेम और आह्लाद है तो वह आपका साहित्य-प्रेम है। इसी साहित्य-प्रेमका यह निस्वार्थ फल है कि आज दीर्घ कालके प्रेमपूर्ण परिश्रमके पश्चात् आपका यह लोकोक्ति संग्रह हिन्दी साहित्य क्षेत्रमें अवतीर्ण होता है। बाबू विश्वम्भरनाथजीने इस संग्रहमें फालनकी डिक्शनरीसे बहुत सहायता ली है, इसमें संदेह नहीं, पर इस संग्रहका वह एक अंशमात्र है। अधिकतर कहावतें आपने परंपरासे सुनी हुई लोकोक्तियोंकी स्मृतिसे ही संग्रहकी हैं। ऊपर हमने लोकोक्तियोंके प्रधानतः तीन प्रकार लिखे हैं और उनमें एक प्रकार "घटना विशेषसे" उत्पत्तिका है। बाबू विश्वम्भरनाथजीने ऐसी घटनाओंकी कहानियां भी यत्र तत्र कहावतोंके साथ ही जोड़ दी हैं, जिससे यह संग्रह बहुमूल्य और मनोरंजक हुआ है। इस ग्रन्थका महत्व स्थायी है और साहित्य-सेवीमात्रके लिये इसका संग्रह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य है यह कहनेकी आवश्यकता नहीं।

लक्ष्मण नारायण गर्दे।

लाठी उसकी भैंस।" इसका प्रयोग एक विद्वान भी उसी प्रकार करेगा जिस प्रकार कि एक अपढ़ गंवार।

कहावतोंमें एक खूबी यह भी है कि उनके द्वारा किसी जातिके रीति-रस्म या धर्म-कर्म आदिका भी बहुत कुछ ज्ञान हो सकता है और उनसे ऐतिहासिक घटनाओंका भी सम्बन्ध हो जाता है। जैसे एक कहावत है कि "तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार।" इस कहावतके दो खण्डोंसे दो भिन्न भिन्न बातोंका बोध होता है। इसका पूर्व पद तो हिन्दुओंके रिवाजको बतलाता है कि कन्याके विवाहके पूर्व जो उसके तेल चढ़ाया जाता है वह फिर दूसरी बार नहीं चढ़ता अर्थात् उसका पुनर्विवाह नहीं हो सकता। दूसरे खण्डसे एक ऐतिहासिक घटनाका पता चलता है कि महाराणा हम्मीर देव अपनी बातके इतने पक्के थे, कि अपना हठ रखनेके लिए उन्होंने मृत्यु की भी परवाह नहीं की। इसी प्रकार कहावतोंमें बहुतसी व्यवसायसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुत सी कृषिसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुत-सी नीति सिखानेवाली, कितनी ही स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी और बहुत सी अनुभवसिद्ध बातोंको सूत्ररूपमें प्रगट करनेवाली होती हैं। इन सबके उदाहरणोंकी विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, ग्रन्थके अनुशीलन करनेवालोंको स्वतः प्रगट हो जायगी।

कहावतोंकी भाषा भी बड़ी गठी और मंजी हुई होती है, जो सहजहीमें हृदयङ्गम हो जाती है। जैसे "खाली संख बजावें दीवा पानी भोग लगावें।" कैसे गठे हुए शब्द हैं। इसमें एक अक्षर भी भरतीका नहीं न एक अक्षर नया भरनेकी गुञ्जाइश है और थोड़े ही शब्दोंमें कितने बड़े आशयको प्रगट करती है कि कदाचित् कोई इससे कम शब्दोंमें ऐसी भावपूर्ण बात कह सके।

यहां यह बतला देना अनुचित न होगा कि इस ग्रन्थमें बहुत सी ऐसी कहावतें छोड़ दी गई हैं जिनमें विशेष अश्लीलता, ग्रामीणता या किसी जाति या देश विशेषके लोगोंपर कटाक्ष हुआ हो। यदि एक आध मसल ऐसी आ भी गई हो तो उसका विशेष प्रचलन समझकर ही दी गई है, किसीपर कटाक्षके भावसे नहीं। किसी किसी कहावतमें अश्लीलताके लिए पाठभेद भी कर दिया है और कहीं कहीं अश्लील अंश छोड़कर कहावत अधूरी ही लिखी गई है।

पाठकोंको यह बात भी ध्यानमें रखनी चाहिए कि बहुत सी कहावतें ऐसी होती हैं जिनके दो खण्ड होते हैं, जैसे "राजा करे सो न्याव, पासा पड़े सो दाँव।" कोई तो पहले खण्डको पहिले कहता है और कोई पिछले खण्डको ही पहिले कहता है। ऐसी कहावतें कहीं कहीं तो दोनों जगह दी गई हैं, परन्तु विशेषतः एक ही जगहपर लिखी गई हैं। पाठकोंको उचित है कि यदि ऐसी कोई कहावत एक रूपमें न मिले तो उसे दूसरे रूपमें देखें, अवश्य मिल जायगी।

दिल्ली, आगरा, लखनऊ आदि शहरोंमें हिन्दू मुसलमानोंका घनिष्ठ सम्बन्ध रहनेके कारण वहांके हिन्दू भी बहुतसी मुसलमानी कहावतोंका उपयोग करते हैं। इसलिए इसमें बहुतसी मुसलमानी मसलें भी संयोजित की गई हैं। कुछ अन्य भाषाओंकी प्रचलित कहावतें भी शामिल की गई हैं, जैसे संस्कृत और फारसीको, जिनका उपयोग पठित समाजहीमें अधिक होता है तथा पंजाबी, मारवाड़ी, पूर्वी, भोजपुरी आदि जिन्हें गृहस्थ, व्यापारी और दिहाती लोग अधिकतर काममें लाते हैं। बहुतसी कहावतें जिनका प्रयोग प्रायः स्त्रियां ही अधिक करती हैं, वह जनानी करके लिखी गई हैं।

कुछ कहावतें ऐसी हैं जिनके कई भिन्न भिन्न अर्थ होते हैं। कभी कभी तो एक ही कहावत परस्पर दो विपरीत कामोंके लिये व्यवहृत होती है जैसे "सांप मरा न लाठी टूटी"। यद्यपि यह मसल बहुधा कामकी सफलताके लिये ही कही जाती है, परंतु मैंने कामके निष्फल होनेपर भी लोगोंको इसका प्रयोग करते सुना है। सफलताके पक्षमें, तो यह अर्थ होता है कि जमीनमें धीरे-से लाठी मारी जिसके डरसे सांप भी भाग गया और लाठी भी न टूटी, अर्थात अपना प्रयोजन सिद्ध हो गया। विफलताके पक्षमें यह अर्थ होता है कि सांपको मारनेके लिये लाठी मारी जो सांपके न लगी, वह तो साफ बचकर निकल भागा पर लाठी टूट गई, जिससे अपना काम तो सिद्ध न हुआ उल्टी हानि हो गई। ऐसी मसलें जहांपर आई हैं उनके भिन्न भिन्न अर्थ दिये गये हैं। अर्थ जो साफ साफ निकलते हैं वही, दिये गये हैं। कहीं क्लिष्ट कल्पनासे काम नहीं लिया गया है।

बहुतसी कहावतें आज कल अशुद्ध रूपमें प्रचलित हो रही हैं—जैसे "अक्ल बड़ीकी भैंस"। इसकी पुष्टिमें लोग यहांतक कहते सुने गये हैं कि "अजी अक्लको लेकर क्या करे, भैंस बड़ी है जिसका दूध पीनेमें आवे। इसी तरह "अल्लादे निवल्ला" "ऊजड़ खेड़ा नाम निवेड़ा", "मा पर पूत पिता पर घोड़ा" "हाथ पांवके आलसी मुंहमें मूछें जायं" इत्यादि भी हैं, जिनका कोई अर्थ ही नहीं निकलता। ऐसी मसलोंको भी जहाँतक हो सका शुद्ध रूपमें लिखनेकी चेष्टा की गई है।

ऐसी भी बहुतसी कहावतें हैं जो व्यंगसे कही जाती हैं और जिस पर उसका प्रयोग होता है वह सुन कर मनही मन कुढ़ जाता है वा लज्जित हो जाता है। परन्तु बात सत्य होनेके कारण कुछ कह नहीं सकता—जैसे, "भीखके टुकड़े बजारमें डकार", "नया जोगी गाजरका संख" "पढ़ न लिखे नाम विद्याधर" इत्यादि। ऐसी ही कहावतें चर्री कहलाती हैं।

मैं उन ग्रन्थकारोंको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिनके ग्रन्थोंसे मुझे इस पुस्तकके तैयार करनेमें बहुत कुछ सहायता मिली है। सबसे बड़ी सहायता डा० फालन "संग्रहीत "हिन्दुस्तानी प्राभर्वस" जो कि अंगरेजीमें छपी है और उन्हीं महाशयकी बनाई "हिन्दुस्तानी इंगलिश डिक्शनरी" से मिली है, जिसमें शब्दोंके उदाहरणमें बहुतसी मसलें भी दी गई हैं। इसके अतिरिक्त प्रातःस्मरणीय महात्मा तुलसीदास कृत "रामचरितमानस" (जिसमें कहावतें भरी पड़ी हैं) कविवृन्दकृत "दृष्टान्त सतसई" "बिहारी सतसई" भानु कवि कृत "काव्य प्रभाकर" में लोकोक्ति हजारा" राय शिवदासकृत "लोकोक्ति रस कौमुदी" (जिसमें प्रायः तीन सौ लोकोक्तिओंमें नायका भेद कहा गया है), इत्यादि ग्रन्थोंसे भी बहुत सहायता मिली है। हिन्दी तथा उर्दूके बहुतसे कविओंके ग्रन्थोंमेंसे उदाहरण चुन चुन कर कहावतोंके साथ यथा स्थान दिये गये हैं। बहुतसे साधू, महात्मा तथा कवीश्वरोंकी वाणी ऐसी हैं जो वास्तवमें लोकोक्ति न होने पर भी बहुत लोगोंको कंठस्थ हैं और उपयुक्त समयपर उनका प्रयोग करनेसे विशेष आनन्द और शिक्षा मिलती है, इसलिये उन्हें भी इस पुस्तकमें स्थान दिया गया है। कहावतोंका निकास कहाँसे हुआ है इसकी भी खोज, जहां तक हो सका, की गई है और वह छोटे टाइपोंमें छपवा दिया गया है। पाठकोंके मनोरंजनार्थ बहुतसी कहावतोंके साथ उनमें फबती छोटी छोटी कहानियाँ





लोकोक्ति कोष

अ

अंगरेज़की नौकरी और बन्दर नचाना बराबर है — जरा जरा सी बातमें लांछित होने तथा ठोकर खानेका भय रहता है।

अंगरेज़ी राज, तनको कपड़ा न पेटको नाज — करके भारसे पीड़ित प्रजाको खाना और कपड़ा अच्छी तरह न मिलने तथा खर्च बहुत बढ़ जानेके कारण ऐसा क० अन्नके विदेश जाने और स्वदेशी कपड़ेका व्यवसाय बन्द होनेके कारण भी क०।

अंगरेज़ोंने धरसाभर ज़मीनसे सारा हिन्दुस्तान अपना कर लिया — जब कोई मनुष्य थोड़ासा सहारा पानेपर अपनी चतुराईके बलसे सभी काम अपने वशमें कर लेता है तब क०।

अंडा गुड़गुड़ होना — लोट पोट हो जाना। (१) भांगके नशेमें बेहोश हो जाना। (२) गहरी चोट लगनेपर लोट पोट हो जाना। यह शब्द अङ्गरेजोंके एक जेनरल आक्टरलोनीका अपभ्रंश है। यह भरतपुर दखल करनेके लिये भेजे गये थे। जब ये चढ़ाईका नकशा ठीक कर दूरबीनसे किलेकी ओर देख रहे थे, उसी समय किलेपरसे एक गोला आकर इनको लगा और ये लोट पोट होकर पञ्चत्वको प्राप्त हुए।

अंडा सिखावे बच्चेको कि चीं चीं मत कर — जब कोई छोटा बड़ेको उपदेश दे, तब क०।

अंडुवा बैल जीका जवाल — (मा०) स्पष्ट।

अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई — जब मेहनत करे कोई और लाभ हो दूसरेको, तब क०।

अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो रहेंगे — (व्य०) पूंजी बनी रहेगी तो ब्याज बहुत आजायगा।

अंतड़ीमें रूप, बुकचीमें छब — (मु० ज०) पेट भरनेमें ही रूप है और अच्छे कपड़े पहननेमें ही छवि है अर्थात् बिना खाये चेहरेमें रूप नहीं और बिना वस्त्र पहने शरीरकी शोभा नहीं।

अंत बुरेका बुरा — बुरेका अन्त बुरा ही है, जो किसीका बुरा करता है अन्तमें उसका बुरा ही होता है।

अंत भलेका भला — भलेका अन्त भला ही है, जो सबके साथ भलाई करता है, उसकी अन्तमें भलाई ही होती है।

लाल दिखाये जिहि विहि सोधौं,
प्रभु पै राखि बाढ़ि गढि कोसौं
चतुर खीझ छकि जेहि जानें, चम भलेको भला बखानै।

अंत मता सो गता — (ध०) अन्त समय जैसी मति रहती है वैसी गति होती है।

अंतर बजे तो जन्तर बजे — बिना मनमें बोध हुए कोई यन्त्र ठीक नहीं बजता। गाने बजाने वालोंको क०।

अंतर्शाक्त बहिर्शैव्या सभा मध्ये च वैष्णवा—(सं०) गुप्त रूपसे मद्य मांस खानेवाले, बाहर त्रिपुण्ड रुद्राक्ष धारण करनेवाले और सभामें तिलक छाप लगाकर वैष्णव बननेवाले अर्थात् जिनके मतका कोई ठीक नहीं है उनपर कही जाती है।

अंदर छूत नहीं बाहर कहें दुरदुर—मन मैला और ऊपरसे सफाई रखनेपर क०।

अंधरी गैया धर्म रखवाली—असहायका अवलम्बन ईश्वर है।

अंधा क्या चाहे दो आंखें—जिस चीजकी जरूरत हो, अगर वही चीज मिल जाय तब क०।

कहै सखी लखि व्याकुल बाम, कहै बेगि तो ल्याऊं स्याम।
बोली लोग छलि ज्यों भाखैं, अन्धरी कहा चहै दुइ आंखें।

अंधा क्या जाने बसन्तकी बहार—जिसने जो चीज देखी नहीं है, वह उसका महत्व क्या जाने।

अंधा गाय, बहरा बजाय—एक देख न सके दूसरा सुन न सके। जब दोनों एक से हों तब क०।

अंधा गुरु बहरा चेला, मांगे हड़ दे बहेड़ा—ऊपर देखो।

अंधा चूहा थोथे धान—अंधे चूहेको खोखला अन्न मिलता है। मूर्ख थोड़ेहीमें फुसला लिया जाता है।

अंधाधुंध मनोहर गाइयाँ—(पं०) जब कोई देखने वाला नहीं हो, तब जो खुशी चाहे करे।

इस मसलपर एक कहानी है—एक काने मनुष्यने पुरोहित तथा नाई भाटको रिशवत देकर अपने ब्याहके लिये लड़की ठीक की। जब विवाह करने गये तब वर-पक्षके गायकने ढंबल बजाकर यों गाया, "काने साजन ब्याहने आइयां" इसके उत्तरमें कन्या-पक्षके गायकने भी ढंबल बजाकर इस तरह गाया "अंधाधुंध मनोहर गाइयाँ" विवाह होनेके बाद जब मालूम पड़ा कि लड़की अंधी है तब दोनों पक्षमें झगड़ा शुरू हो गया। वरपक्षवालोंने कहा हमने पहलेसे ही सूचना दे दी थी कि "काने साजन ब्याहने आइयां" अर्थात् काना दूल्हा विवाह करने आया है। इसपर कन्यापक्षवालोंने कहा कि हमने भी "अंधाधुंध मनोहर गाइयाँ" कहकर सूचित कर दिया था कि लड़की अंधी है। तभीसे यह मसल प्रचलित हो गई है।

अंधा बगला कीचड़ खाय—अनाड़ीको निकम्मी चीज ही मिलती है।

सुनि पिय संग रति नारि कुरूप, भोरै ही कहै बात अनूप।
लोक उक्ति यह सबहिं लखाई, अंधरा बगला कीचहिं खाई
(धीरा धीरा। लो०र०को०)

अंधा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपनेहीको दे—जो मनुष्य कोई चीज बांटे और फिर फिरके अपनेही कुनबेवालोंको दे उसपर क०।

अंधा बैल घुमाके जोता जाता है—मूर्ख सीधी बात कहनेसे नहीं समझता, लेकिन घुमा फिराकर कहनेसे समझ जाता है।

अंधा बेईमान—(१) अन्धा मनुष्य हमेशा शक्की होता है। (२) बेईमान मनुष्य अन्धा होता है अर्थात् उसे अपने स्वार्थके आगे कोई भी बुराई भलाई नहीं सूझती।

इसपर एक कहानी है:—किसी भोज या जलसेमें एक अन्धा आदमी भी शामिल था। भोजन करते समय उसने सोचा कि इसमें सभी मनुष्य दोनों हाथोंसे खाते होंगे। इसलिये वह भी दोनों हाथोंसे खाने लगा। फिर उसने सोचा कि शायद ये थालोंमें मुंह लगाकर भी खाते होंगे इसलिये वह भी ऐसा ही करने लगा। अन्तमें उसने सोचा कि लोग खाकर थाली भी अपने घर ले जाते होंगे। अतएव वह अपने आगेकी थाली लेकर भी-ही रवाना हो गया।

अंधा बेईमान बहरा बहिश्ती—(मु०) अन्धा बेईमान होता है और बहिरा देवताके समान होता है, क्योंकि वह अपने कानोंसे किसी तरहकी बुरी बातें नहीं सुनता।

अंधा मुल्ला टूटी मसीद—(मु०) दोनों ही निकम्मे। जैसेको तैसा।

अंधा रस्सी बटता जाय, बछड़ा खाता जाय—दे० "अन्धी पीसे········"।

अंधा राजा चौपट नगरी—(व्य०) जो मालिक अपने कामको निज आंखोंसे नहीं देखता है, उसका काम नहीं चलता और साथ साथ बरबाद भी हो जाता है।

अंधा लकड़ी एक बार खोता है—क्योंकि वह बहुत होशियार होता है।

अंधा सिपाही कानी घोड़ी, विधिने खूब मिलाई जोड़ी—जहां दो मनुष्योंमें मित्रता हो और दोनों ही निकम्मे वा ऐवी हों, वहां क०।

अंधा हादी, बहरा मुर्शिद—देखो "अन्धा गुरु..."

अंधियारी गई कि चोर—अंधियारी रात आनेहीसे चोर चोरी करने निकलेगा। जब कोई खोटा मनुष्य खोटा काम करके छिपाने तब उसे क०। तात्पर्य यह है कि तुम तो फिर भी ऐसा काम करोगे क्योंकि यह तुम्हारी आदत है।

अंधी आंखमें काजल सोहे, लंगड़े पांवमें जूता—(च०) दोनों ही अच्छे नहीं लगते। वेमेल बात पर क०।

अंधी नायन आइनेकी तलाश—(च०) जब कोई ऐसी चीज पानेकी इच्छा करे, जिसके पाने योग्य वह न हो तब क०।

अंधी पीसे कुत्ता खाय—जो मनुष्य अपने उपार्जित धनको रखनेकी व्यवस्था न कर सके और दूसरे उस धनका भोग करें, उसपर क०।

अंधी मा निज पूतोंका मुंह कभो न देखे—स्पष्ट।

अंधे आगे रोना अपने दीदे खोना—जब कोई किसीको अपना दुःख सुनावे और सुननेवाला उसपर ध्यान न दे, तब क०।

अंधेकी जोरूका खुदा रखवाला—(मु०) क्योंकि उसका पति उसकी रखवाली नहीं कर सकता।

पति विदेश सोवे तिया सासु धामके काम।
है अंधरेकी जोयकी, सदा सहायक राम॥

अंधेकी लकड़ी ही आंखें हैं—क्योंकि उसीके सहारे वह चलता है।

अंधेके लेखे दिन रात बराबर—क्योंकि उसकी आंखोंमें सदा अंधेरा रहता है।

अंधेके हाथ बटेर लगी—यदि किसीको अनायास कोई अच्छी चीज मिल जाय, तब क०।

अंधेको अंधा कहनेसे बुरा मानता है—कटु वचन सत्य होनेपर भी बुरा लगता है।

दोष भरी न उचारिये, यदपि यथारथ बात।
कहे अन्धको आंधरो मान बुरो सतरात॥ (छन्द)

अंधेको अंधेरेमें बहुत दूरकी सूझी—(च०) जब कोई मूर्ख दूरंदेशीकी बात कहे तब क०।

अंधेको आरसी—जब किसीको ऐसी चीज़ दी जाय, जो उसके काम न आवे तब क०।

मूरखको पोथी दई बाचनको गुन गाय।
जैसे निर्मल आरसी दई अंधके हाथ। (छन्द)

अंधेको चिराग दिखाना—जब कोई मूर्खको उपदेश करे तब क०।

अंधेको जुआ मुआफ है—यदि भूलसे कोई रकम लिखनेमें छूट जाय, तब लिखनेवालेको ऐसा क०।

अंधेको न्योतो न दो जने आए—एक अन्धा दूसरा उसका हाथ पकड़के साथ लाने वाला। ऐसा काम न करो जिसमें दूसरी तरद्दुद पैदा हो।

अंधेने चोर पकड़ा दौड़ियो मियां लङ्गड़े—असम्भव बात। जहां कार्यकर्ता और उसका सहायक दोनों ही उस कामके करनेमें असमर्थ हों, वहांपर क०।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—जो राजा मूर्ख होता है, उसके नगरमें अन्धेर होता रहता है और वहां साग तथा मिठाई एक ही भाव बिकती हैं। जो मूर्ख मालिक अपने कामका इन्तज़ाम ठीक नहीं कर सकता और जिसके यहां अच्छे और ईमानदार आदमियोंकी कदर नहीं होती तथा लुच्चे और लफंगे अपनी मनमानी करते हैं, वहांपर क०।

इस मसलपर भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने एक छोटासा नाटक बहुत अच्छा बनाया है, जिसका सारांश यह है—किसी समय एक गुरु और उनका चेला तीर्थयात्राको बाहर निकले, एक शहरमें पहुंचकर गुरुने चेलेको आटा लानेके लिये बाज़ार भेजा। चेलेने सभी चीज़ एकही दरमें बिकती देख मिठाई खरीद ली। गुरुने सब बातें जानकर ऐसी अंधेर नगरीमें रहना पसन्द न किया और चेलेको वहीं छोड़ वे दूसरी जगह चले गये। इधर उनका चेला अंधेर नगरीमें अच्छी अच्छी चीजें खाकर मोटा ताजा होगया। संयोगवश उस नगरमें किसीने खून किया। बहुत तलाश करनेपर जब खूनी न मिला, तब राजाने इसी मोटे चेलेको फांसीकी आज्ञा दी। गुरुको मालूम होनेपर वे इसे छुड़ाने आये और बोले कि मैं ही दोषी हूं क्योंकि मैंने ही खून किया है। गुरुको क्योंकी फांसी दी जानेको थी त्योंही चेला चिल्ला उठा, 'ये निर्दोषी हैं, मैंने ही खून किया है। इस तरह बड़ी देर वाद विवाद होने के बाद दोनोंकी रिहाई होगई। भावार्थ—जहां न्याय और अन्याय का विचार नहीं है वहां कदापि वास नहीं करना चाहिये।

अंधे रसिया आइनेपर मरें—(उ०) ऐसी चीज़का शौक करना जिससे अपना कुछ भी अर्थ न निकले।

अंधेरी रैनमें जेवड़ी सांप—अंधेरी रातमें रस्सीको देखनेसे सांपका भ्रम होता है। इसका कारण मनका डर है। वेदान्ती संसारको मिथ्या सिद्ध करनेके लिये यही उदाहरण देते हैं, कि जैसे डरसे अंधेरेमें रस्सीको देखकर सांपका भ्रम होता है, इसी तरह माया-जालमें फँसे मनुष्यको संसार सत्य जान पड़ता है, जो वास्तवमें मिथ्या है।

अंधेरे घरका उजाला (वा चिराग)—यदि घरमें एक ही लड़का हो और सपूत हो जिससे कुलका नाम बना रहे उसको क०।

अंधेरे घरमें धींगर नाचे—अंधेरे घरमें भूतोंका वास होता है।

अंधेरे घरमें सांप ही सांप—अंधकारमें सदा भ्रम लगा रहता है।

अंधे हाफिज़ काने नवाब—(उ०) हाफिज़ उसीको कहते हैं जिसे कुरान कंठस्थ हो। अंधे और कानेको व्यंगसे क०।

अंधोंका हाथी—जब मनुष्य ईश्वरकी आकृतिके विषयमें अपने अपने अनुभवको ही पक्का समझते हैं तब क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है.—दो चार अन्धोंने एक हाथीका संपूर्ण अङ्ग टटोला। जिसने कान पकड़ा उसे मालूम हुआ कि हाथी सूपसा होता है और जिसने पैर पकड़ा उसने कहा कि हाथी खंभेसा होता है। इसी प्रकार सबने अपने अपने अनुभवसे हाथीका भिन्न भिन्न आकार स्थिर किया, किन्तु यथार्थमें वे सबकेसब अन्धे थे, अतः किसीको हाथीकी यथार्थ आकृतिका पता न चला उदा०—आंधरे ने हाथी देख झगरो मचायो है। (सुन्दरदास)

अंधोंने गाँव मारा दौड़ियो वे लँगड़े—असम्भव बातपर क०।

अंधोंमें काना राजा—बहुतसे मूर्खोंमें अगर एक कम लिखा पढ़ा हो, उसीका मान होता है अथवा मूर्ख समाजमें जब कोई अल्प बुद्धिवाला बड़ी ज्ञानकी बातें अभिमानपूर्वक कहता है तब क०।

अंधा मानुष ले गयो जन देखतकी जोय—सुजाखेकी स्त्रीको अंधा ले भागा, असम्भव तथा अनोखी बातपर क०।

अकल खुरा जगसे बुरा—(हि०) अकल—अकेला, (फा०) खुरा—खानेवाला। नदीदा, स्वार्थी, जो दूसरेको न देख सके। स्वार्थी या द्वेषी मनुष्य सबसे बुरा होता है।

अकाल नहीं है काल है—जब दीर्घ काल व्यापी अकाल पड़ता है, तब क०। क्योंकि उस समयमें बहुत मनुष्य खाने विना मर जाते हैं।

अकाल मृत्युकी मुक्ति नहीं—आत्मघातीकी मुक्ति नहीं होती।

अकेलवा गइल मैदान फिरे लोग कहिल कि हेराय गइले—(भो०) स्त्री यदि अकेली बाहर जाय तो लोग संदेह करते हैं कि किसीके साथ चली गई। तात्पर्य यह है कि स्त्रियोंको अकेले कहीं न जाना चाहिये, क्योंकि इनपर सहजमेंही संन्देह हो जाता है।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—एक आदमी भारी काम नहीं कर सकता।

अकेला चले न बाट, भाड़ बैठे खाट—काम करनेके पहले सचेत हो जाना चाहिये, जिससे काममें विघ्न न पड़े।

अकेला पूत कमाई करे घरका करे या कचहरी फरे—दोनों काम एक साथ नहीं किये जा सकते।

अकेला हँसता भला न रोता—अकेलेका हँसना और रोना दोनों ही बुरे मालूम पड़ते हैं क्योंकि ये दोनों काम अकेले करते भी नहीं बनते।

अकेला हसनू रोवे कि कब्र खोदे—(मु०) दो काम एक साथ नहीं होते।

अकेली कहानी गुड़से मीठी—जबतक उसकी अपेक्षा अच्छी दूसरी न सुनी जाय तब तक वही अच्छी है। जब कोई एक तरफकी बात सुनकर विश्वास कर लेता है तब क०

अकेली लकड़िया न जरे न बरे न उजारा होय—(ग्रा०) अकेलेसे कोई काम नहीं होता।

अकेली लकड़ी कहाँ तक जले—(ज०) ऊ० दे०।

अकेले दुकेलेका अल्लाह बेली—(मु०) निःसहाय और निरावलम्बके रक्षक ईश्वर हैं।

अक्रोहेन जिने कोह् असाधु साधुनां जिने—(प्रा०) क्षमासे क्रोधीको और साधुतासे असाधुको जीतना चाहिये। यह महात्मा बुद्धका वचन है।

अक्लकी कुताही और सब कुछ है—(मु०) मूर्खको क०।

अक्लके पीछे लाठी लिन्हें—अक्लके पीछे लाठी लेकर दौड़ना अर्थात् अक्लको दूर भगाना। जब कोई मूर्खताका काम करता है तब क०।

अक्ल चिह कुत्तिस्त कि पेशे मर्दा विभायद—(फा०) अक्ल कौन कुतिया है जो मर्दोंके पास आवे। जो मूर्खतासे पाशविक बल प्रयोग करते हैं उन्हें क०।

अक्लपर परदा पड़ गया—(मुहावरा) अक्ल मारी गई या जाती रही। जब कोई बुद्धिमान मनुष्य मूर्खताका काम करे तब क०।

बे परदा नजर आई जो कल चन्द बीबियाँ।
अकबर जमींमें गैरते कौमीसे गड़ गया॥
पूछा जब उनसे आपका परदा कहाँ गया।
कहने लगीं कि अक्लपे मरदोंकी पड़ गया॥ (अकबर)

अक्ल बड़ी कि बहस—बातको समझना अच्छा है, झूठी बकवाद करना अच्छा नहीं। इसी मसलको लोग विकृत रूपमें कहते हैं—"अक्ल बड़ीकी भैंस।"

अक्ल बड़ीकी भैंस—बड़ी उम्रवालेसे बड़ी अक्लवाला श्रेष्ठ है।

बुजुर्गी बअक्लस्त न बसाल (शेख सादी)।

अक्लमंदको इशारा मूर्खको तमाचा (या तगादा)—(१) बुद्धिमान जरासे समझानेपर समझ जाता है, मूर्ख बिना मारे नहीं समझता (२) बुद्धिमान इशारेसे ही समझ लेता है, कि यह अपना पावना मांगता है परन्तु मूर्ख बिना तगादा किये नहीं समझता।

अक्ल मंदाँरा इशारा काफी अस्त—(फा०) बुद्धिमानोंके लिये इशारा ही बहुत है।

अगड़म बगड़म काठ कठंवर—कूड़ा कर्कट।

अगर कोह टल्ले न टल्ले फकीर—पहाड़ टल जाय पर फकीर न टले।

अगला करे पिछलेपर आवे—अगलोंकी भूल पिछलोंको भुगतनी पड़ती है।

अगला लीपा गया सराहा, अबका लीपा आगे आया—पहले जो काम किया सो किया, अब जो सामने है उसे करो। जो लोग अपने पहले किये हुए अच्छे कामोंकी प्रशंसा करते हैं उनको क०।

अगली मझली पछली, पछली परधान—(पू० ज०) पहली पीछे पड़ गई और पिछली प्रधान बन बैठी।

अगलेको घास न पिछलेको पानी—न जीतोंको खाना न मरोंको पानी। स्वार्थी तथा कंजूसके प्रति क०।

अगले पानी पिछले कीच—जो पहले कुएँ पर जाते हैं, उन्हें पानी मिलता है और पीछे जानेवालोंको कीचड़ हाथ लगती है। पहले जो कोई नया काम करता है, उसे जो फायदा होता है, वह पीछे करनेवालोंको नहीं होता। देर करनेसे नुकसान है।

अगस्तिक यात्रा—(मै०) ऐसा जाय कि फिर लौटके न आवे। यह कथा पुराणमें प्रसिद्ध है, कि अगस्त मुनि जब विन्ध्य पर्वतके पास पहुंचे तो उसने मुनिको दण्डवत की। मुनि पहाड़को लांघकर कह गये कि जब तक मैं लौटकर न आऊं तबतक तुम इसी तरह पड़े रहना। आजतक वे लौटकर न आये। विन्ध्याचल उसी तरह लम्बा पड़ा हुआ है।

अगिल खेती आगे आगे पाछिल खेती भागे जोगे—(पू० कु०) पहले बोई हुई खेती सफल होती है और पीछेकी यदि हो जाय तो समझना चाहिये कि भाग्यसे हुई है।

अगम बुद्धि बानियां पच्छम बुद्धि जाट—बनियेंको पहले सूझती है, जाटको पीछे।

अघाना बगुला पोठिया तीत—(पू० प्रा०) पेट भरेको अच्छी चीज भी नहीं छहाती। पेट भरे बगुलेको सभी मछलियां कड़वी जान पड़ती हैं।

अचारकेसे घड़े—उस मनुष्यको कहते हैं जिसकी किसीसे नहीं बनती या लोग जिसे अलग कर देते तथा बिना जरूरतके नहीं पूछते। जिन घड़ोंमें अचार भरा रहता है वे अलग रक्खे रहते हैं, जरूरत पड़नेपर ही उनमेंसे अचार निकाल लिया जाता है। उ०—यदि तुम सबसे मिलकर नहीं चलोगे तो ऐसे धरे रहोगे, जैसे अचारकेसे घड़े।

अच्छा किया खुदाने बुरा किया बन्दैने—(मु०) (१) ईश्वरका किया हुआ सब काम अच्छा होता है। (२) कृतघ्नको भी कही जाती है, जो किसीका एहसान नहीं मानता।

अच्छी भई गुड़ सत्तरह सेर—जब चीज सस्ती मिलती है तब क०।

अच्छे घर बयाना दिया—अच्छेसे उलझे—जब कोई अपनेसे अधिक बलवानके साथ बैर ठाने तब क०।

भली भवन अब बायन दीन्हा,
पावहुगी फल आपन कीन्हा। (तुलसी)।

बयाने के स्थान "बयना" भी कहते हैं, जिसका अर्थ यह है, जब कोई सौगात कहींसे आती है,तो लोग उसे अपने इष्ट मित्रोंमें इसलिये बाँट देते हैं कि उसका पलटा उन्हें भी मिलता है।

अच्छे बुरेमें चार अंगुलका फर्क है—(मु०) आँख और कानमें (देखने और सुननेमें) चार अंगुलका फर्क है। जबतक खुद देख न ले, दूसरेके कहनेसे किसीको बुरा न समझे।

अच्छे भये अटल, प्राण गये निकल—यह मसल मथुराके चौबेके लिये प्रसिद्ध है। पेटभर खा चुकनेपर यदि कोई कहे कि चार आने लड्डू देंगे तो वे और भी खा लेंगे। खूब पेट भर जानेपर यदि एक रुपया लड्डूका लोभ दिया जाय तो वे और भी खालेंगे। जितनाही लोभ उन्हें दिया जायगा उतना ही वे खाते जायँगे। वे समझते हैं कि यदि मिठाई खाकर प्राण भी निकल जाय तो वह अच्छा है। बहुत खाने वाले लालचीपर ताना है।

अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम, दास मलूका कह गये सबके दाता राम—आलसी तथा संतोषी मनुष्यपर क०।

अजगर फहँ भछ राम दिवैया—आलसी मनुष्य कहते हैं, जो अपना सब धन खो देते हैं और कहनेसे किसी कामका उद्योग भी नहीं करते।

अजगरके दाताराम—ऊ० दे०

आजु महावन लखि गोपाल, सुरत आइ चित चढ़ी रसाल,
तैहि मग भूलि परी कोउ बाम, अजगरको दाता है राम।
(लो० र० की०)

अजागलस्तन—(सं०) बकरीके गलेका थन, मनुष्य वा चीज कुछ काम न आवे और स्वरूप हो उसे क०।

कुल कुपुत्र किहिं कामको तिहिं अभ शोभा नाहिं
ज्यों बकरीके कण्ठ थन दूध न जन तिहि माहिं।(

अजीरनको अजीरन ठेले, नहीं तो सिर चौ खेले—(१) बलवान ही बलवानका सामन सकता है, दुर्बल यदि बलवानका सामना करे मारा जाय। (२) बहुतोंका यह ख्याल है अजीर्णमें ठूँसकर खानेसे वह पहले खायेको करता है।

अटकल पच्चू गैर मुफस्सिर—दे० "अटकल डेढ़।"

अटकल पच्चू डेढ़सौ—जब किसी बातका न हो, केवल अनुमानसे कही जाय तब क०

अटकल पच्चू साढ़े बाईस—ऊपर देखो।

अटका बनिया देय उधार—(व्य०) जब कोई दूसरेको अपने मतलबके लिये कुछ दे दे यद्यपि देनेकी इच्छा नहीं है तब क०।

अटकेगा सो भटकेगा—शक्की आदमीपर क०

अड़तेसे अड़ जाइये, चलतेसे चल दूर—जो रहे उसके साथ वैसाही बर्ताव करना चाहिये

अड़सठ तीरथ कर आई तोमड़ी, तौभी न कड़वाई—जन्मगत दोष कभी नहीं मिटता।

अड़ीघड़ी, काजीके सिर पड़ी—(मु०) बुराई विचार करनेवालेके सिर पड़ती है।

अढ़ाई दिनकी सक्के भी बादशाहत कर (व०) जो हठात् एक ऊंचे पदपर पहुँचकर रोब दिखाता है उसे व्यंगसे क०।

अढ़ाई हाथकी ककड़ी नौ हाथकाबीज— बातपर क०

अताई नानखताई जब जीमें आई तोड़ प्राकृतिक वस्तुका भोग इच्छानुसार हो सक

अति अगाध अति औथरो, नहीं कूप सर सोताकों सागर जहाँ, जाकी प्यास बु

(बिहारी) नदी, कुआं, तालाब या बावड़ीका जल बहुत गहिरा हो या उथला, जहां जिसकी प्यास बुझती है उसके लिये वही समुद्र है। जहां छोटे राजा से किसीको बहुत प्राप्ति हो और बड़े से कुछ न मिले वहां क०।

विषम वृषादितकी तृषा जिये मतीरनि सोधि।
अमित अपार अगाधजल मारौ मूंड़ पयोधि (बिहारी)।

अति अपार जे सरितवर, ते नृप सेतु करांहिं।
चढ़ि पिपीलिका परम लघु बिन श्रम पारहिं जाहिं

(तुलसी) बड़ोंके सहारे छोटोंका काम चलता है।

अति और नारायणसे वैर है—हदसे ज्यादे कोई काम अच्छा नहीं।

फिरे स्याम संग जित तित जाऊं, हौं अपने मनमें सकुचाऊं
कहै कहावत ज्यौं तिलहीकी, अतिकी बात न कीजै नीकी।
(प्रे०म०ग०ली०र०को०)

अतिका भला न बरसना, अतिकी भली न धुप्प
अतिका भला न बोलना, अतिकी भली न चुप्प

यद्यपि ये चारों बातें अच्छी हैं तो भी जरूरतसे अधिक होनेपर हानि करती हैं।

अति दर्पण हता लंका—बहुत अभिमान करनेसे मनुष्य अवनतिको प्राप्त होता है।

अति दुखियाको दुख नहीं—बहुत दुख भोगनेपर वह सह्य हो जाता है, फिर दुखका ज्यादा कष्ट नहीं होता।

अति बड़ घरनीको घर नहीं, अति बड़ सुन्दरिको वर नहीं—जिसे जो चीज अवश्य मिलनी चाहिये वह न मिले तब ऐसा क०। ईश्वरपर आक्षेप है।

अति भक्ति चोरका लक्षण—स्पष्ट। यह प्रसिद्ध बंगला मसल, "अति भक्ति चोरेर लक्षण"का अनुवाद है।

अति संघर्षण करै जो कोई, अनल प्रगट चन्दनतें होई—(तुलसी) कैसाही ठंढा मनुष्य क्यों न हो, अधिक पीड़ा पहुंचानेसे उसे भी क्रोध आ ही जाता है। जैसे चन्दन बहुत शीतल होनेपर भी अधिक रगड़नेसे उसमेंसे आग निकलती है।

अति सर्वत्र वर्जयेत्—(सं०) हदसे ज्यादे कोई काम न करे, दे० "अतिका भला।"

अदृष्ट बलवान है—जो अदृष्टमें रहता है वह बिना हुए नहीं टलता।

रामहुकी हरी रावन बाम चहुं दिसि एक अदृष्ट बली है।
(केशव)

अद्धीके नोनको जाऊं, ला मेरी पालकी—जब साधारण कामके लिये बड़ा सामान करे, तब क०।

अधजल गगरी छलकत जाय—ओछा आदमी इतरा कर चलता है।

अधिकस्य अधिकं फलम्—जितना अधिक पुण्य करोगे, उतना अधिक फल मिलेगा।

अधेला न दे अधेली दे—गँवार या कंजूसपर कही जाती है जो कहनेसे अधेला नहीं देता मगर दबेपर उसी कामके लिये अधेली देता है।

अनकर खेती अनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय—(पू०) अनुचित या अन्याय दखल देनेपर क०।

अनकर चुकर अनकर घी, पांड़े बापका लागा की—(पू०) जो पराया माल बेदर्दीसे वृथा नष्ट करे उसपर क०। पांड़े रसोइया ब्राह्मण को कहते हैं, जिसके हाथमें भंडार रहता है।

अनकर धनपर लछमीनरायन—(पू०) पराये धनपर सेठ बननेपर क०।

अनकर सेन्दुर देख आपन कपाड़ फोड़े—(पू०) जो दूसरेकी बढ़ती देख जल मरे उसपर क०।

अनकर गोड़वा धोय नौनियां अपना धोवत लजाय—(पू०) नाई औरोंका पैर धोता है, अपना धोते लजाता है। जब कोई दूसरोंकोही शिक्षा दे और आप कुछ न करे तब क०।

अनके धनपर चोर राजा—(पू०) जब किसी अच्छी कमाई हुई दौलतपर कोई मालिक बन बैठता है तब क०।

अन जानतेको दोष नहीं—यदि कोई बिना जाने त्रुटि करता है, तो वह दोषका भागी नहीं बनता।

अनजान सुजान सदा कल्यान—परम ज्ञानी और महा मूर्ख लोग सदैव कल्याणको प्राप्त होते हैं। अर्थात् जो बड़ा विद्वान है, वह ज्ञानवश और जो महा मूर्ख है, वह अज्ञानवश संसारसे समदृष्टि व्यवहार रखता है।

अनदेखा चोर बाप बराबर—जिस मनुष्यका चोर होनेका कोई प्रमाण नहीं, वह बापके बराबर है अर्थात् उसका अनादर नहीं किया जा सकता।

अनदेखा चोर साले बराबर—जिस चोरको नहीं जानते उसकी घरमें बड़ी आजादी रहती है। सालेसे परदा नहीं होता, वह घरमें सब जगह जा सकता है और उसे कोई नहीं रोकता है।

अनदोषीको दोष, जिसकी गति न मोष—बेकसूरपर कसूर नहीं लगाना चाहिये।

अनविरतक विरत घमलोड़ बजाई—(मै०) जिस पुरोहितके वृत्ति नहीं होती वह फजूल हल्ला मचाता है।

अनमिलेकी कुशल है—(१) अकेला रहना अच्छा है (२) जब आदमी किसी खतरनाक जगहको बगैर खटके पार कर जाता है तब क०। (३) जब ऐसे दो आदमी जिनका आपसमें सद्भाव न हो, एक दूसरेसे आ मिलते हैं तब भी क०।

अनमिलेके त्यागी, रांड़ मिले वैरागी—स्त्री न मिले तो त्यागी, मिल जाय तो वैरागी। वैरागी गृहस्थी रखते हैं।

अनरथ करत जाहि डर नाहीं, सो जैहैं थोड़े दिन मांहीं—(तुलसी) जो अनर्थ करनेमें भय नहीं खाता वह जल्दी तबाह हो जाता है।

अनहोतमें औलाद—दरिद्रतामें बहुत औलाद दुखदाई होती है।

अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार—स्पष्ट।

अनाड़ीका सौदा बाराबाट—न जाननेवालेका सौदा हमेशा बिगड़ता है।

अनुजवधू भगिनी सुत नारी, सुनु सठ यह कन्या सम चारी—(तुलसी) रामचन्द्रजीका बालिके प्रति उपदेश। बालिने अपने छोटे भाई सुग्रीवकी स्त्रीको छीन लिया था, इसी दोषपर वह मारा गया। छोटे भाईकी स्त्री, भानजी, पुत्रवधू और कन्या ये चारों बराबर हैं।

अनोखे गांवमें ऊँट आया, लोगोंने जाना परमेश्वर आया—मूर्ख लोग बिना देखी चीजको बड़े आश्चर्यसे देखते हैं।

अनोखीके हाथ लगी कटोरी, पानी पीपी मरी पदोड़ी—जब किसी नीच आदमीको ऐसी बड़ी चीज मिल जाती है जो उसने पहले न देखी हो तो वह बड़ा घमण्ड करता है।

अन्न धन अनेक धन, सोना रूपा कितेक धन—(पू०) अन्न ही सच्चा धन है, सोना चांदी उसके सामने कुछ नहीं।

अन्नुख घरमें नाती भतार—(पू०) अनोखे घरमें नाती ही मालिक होता है। जिसकी चले उसीको मानना।

अपना अपना कमाना, अपना अपना खाना—जब किसी समाज या कुटुम्बके आदमी मिल जुलकर नहीं रहते अथवा एक साथ काम नहीं करते, वरन् अलग अलग बर्ताव करते हैं तब क०।

अपना अपना घोलो अपना अपना पीओ—ऊपर देखो।

अपना अपना दुखड़ा सब रोते हैं—जहां सभी अपने-अपने दुखोंकी शिकायत करते हैं वहां क०।

अपना अपना लहनिया है—अपना अपना भाग्य है।

अपना उल्लू कहीं नहीं गया—(व्यं०) हम किसी न किसी को ठग ही लेंगे अर्थात् हम अपना मतलब निकाल लेंगे।

अपना कुत्ता बरजो हम भीखसे बाज आये—जब कोई दूसरेके यहां अपना काम निकालने जाय वहां उल्टी आफत गले पड़े तब क०।

अपनाके जुरे ना अनकाके दानी—(भो० ज०) अपनेको मिले नहीं दूसरेको दान करनेको तैयार।

इकमें चपनोंके सख्त मुनसिक हैं।
जो कि चोरोंके इकमें हैं कैयाम। (हाली)।

अपनाके रोटी तीन गीत गौती—(पू० ज०) अपनेको एक भी रोटी मिले तो तीनका गीत गावे।

अपना गुड़ भोजन बराबर—अपना अवगुण भी गुण जान पड़ता है।

अपना घर अपना हर—अपना घर अपना ही है क्या भीतर क्या बाहर।

अपना घर दूरसे सूझता है—(१) अपने अपने नफेपर सबकी आंख रहती है। (२) समय पड़ते ही अपना याद आता है।

अपना घर देखो—(यो॰ घा॰ व्य॰) (१) अपना घर संभालो (२) अपने व्यवसायको देखो, कि क्या घाटा और क्या नफा है।

अपना घर सत्तू ना अनका घर पेड़ा—(पू॰) मुफ्तखोरको क॰।

अपना घर संभौत ना, अनका घर मूसरं पेसन थाती (मैं॰ ज॰) ऊपर देखो।

अपना घर हग भर,दूसरेका घर थूकनेका डर—अपने घरमें जो चाहो करो, दूसरेके घरमें ऐसा काम न करो जिसमें कोई कुछ कहे।

अपना टेंटर न देखे दूसरेकी फुल्ली निहारे—(पू॰ज॰) जो अपना बड़ा ऐब न देखे, दूसरेके छोटे दोषका बखान करे, उसको क॰।

अपना ठीक ना, अनकर नीक ना—(पू॰) मूर्ख दूसरेकी अच्छी सलाहको नहीं मानता। जिसे खुद काम करना न आवे और दूसरेका काम भी पसंद न हो उसे क॰।

अपना तोसा, अपना भरोसा—अपने निर्वाहके लिये अपनी ही कुव्वतकी जरूरत है।

अपना दीजे दुश्मन कीजे—(व्य॰) किसीको उधार देना दुश्मन बनाना है।

अपना दूरसे सूझता है—देखो "अपना घर दूर"

अपना नयना मुझे दे, तू घूम फिरके देख—(पू॰ ज॰) स्वार्थी मनुष्यपर क॰।

अपना निकाल मुझे डालने दे—ऊपर देखो।

अपना पूत पराया ढटींगर—(ज॰) अपने लड़केपर जैसा प्यार होता है, वैसा दूसरेके लड़केपर नहीं।

अपना पेट तो कुत्ता बिल्ली भर लेता है—जो दूसरोंको न खिलावे, उसको क॰।

अपना पैसा खोटा तो परखैयेको क्या दोष—यदि कोई बाहरवाला अपनोंमें बिगाड़ करा दे, तब उसे क॰।

आनि मिलाइ पिय सुनिय, चाह करो नहि रोष।
दाम जु खोटो आपनो, परखैयाको दोष।
(भ्र॰ ना॰ लो॰ र॰ कौ॰)

अपना बिसमिल्ला दूसरेका नीज़ बिला—अपनी २ चीजको सब सराहते हैं।

अपना बैल कुल्हाड़ी नाथब—अपनी चीज़को जैसे चाहे काममें लावे, चाहे उसका दुरुपयोग ही क्यों न होता हो। बैल सूएसे नाथा जाता है, पर हमारा बैल है, हम कुल्हाड़ीसे नाथेंगे, इसमें दूसरेका क्या।

अपना मरन जगतकी हंसी—असावधानतापर क॰।

अपना माल अपनी छाती तले—(व्य॰) अपनी चीज अपनी ही हिफ़ाजतमें रहे, तब क॰।

अपना मोठ,अनकर तीत—देखो "अपना बिसमि..."

अपना लाल गंवायके दर दर मांगे भीख—फिज़ूलखर्चको क॰।

अपना लेना क्या, पराया देना क्या—दोनोंमें ही कोई एहसान नहीं।

अपना वही जो आवे काम—जो वक्तपर काम आवे, वही अपना है।

अपना सा मुंह लेकर रह गये—जब कोई आदमी अपनी बातपर कायल हो जाता है, तब क॰।

अपना सेर सवा सेरका—जब कोई आदमी अपनी बात सिरे रखना चाहे, तब क॰।

अपना सो नवेड़ा, पराया सो धटकेड़ा—जब कोई अपनी वस्तुकी प्रशंसा और दूसरेकी वस्तुका तिरस्कार करता है, तब क॰।

अपना हाथ जगन्नाथ—जब कोई दूसरेकी चीजको आजादीसे इस्तेमाल करता है, तब क॰।

अपना हारा और मेहरीका मारा कौन कहता है—कोई नहीं कहता, सभी छिपाते हैं।

अपना ही माल जाय, आपही चोर कहलाय—स्पष्ट।

अपना ही राग अलापते हैं—जब कोई अपनी ही कहे, दूसरेकी न सुने, तब क॰।

अपनी अकल और पराई दौलत बड़ी मालूम होती है—स्पष्ट।

अपनी अपनी खालमें सब मस्त हैं—स्पष्ट है।

अपनी अपनी गरजको अरज करे सब कोय—स्पष्ट।

अपनी अपनी गरज सब, बोलत करत निहोर।
बिन गरजे बोले नहीं, गिरवरहू को मोर। (वृन्द)

अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग—जहां कोई नियम न माना जाता हो, सब अपनी तबीयतकी बात करें, वहां ऐसा क०।

अपनी अपनी तुनतुनी, अपना अपना राग—ऊ० दे०।

अपनी असलपर आगया—जब कोई कुछ दिनोंके लिये सम्मानित होकर अपने पुराने हालपर आ जाय, तब क०। जब किसीका जातिगत स्वभाव प्रगट हो जाय, तब क०।

> कोठेपे रहने वाली ओनेपे आ गई।
> रफ़ते रफ़ते अपने क़रीनेपर आ गई॥

अपनी इज्जत अपने हाथ है—स्पष्ट। किसी ओछेसे मुंह न लगनेके लिये क०।

अपनी ओर निबाहिये, बाकी वह जाने—अपना कर्त्तव्य करना चाहिये। दूसरा अपनेका जिम्मेवार है अर्थात् आप पहिले किसीसे बिगाड़ न करे।

> जो पिय तो हित घट कियो, तऊ न तुम चित चाह।
> बाकी सो जानै वहै, अपनी ओर निबाह॥

अपनी करनी अपना भोग—अपने कर्मका फल आपही भोगना पड़ता है।

अपनी करनी पार उतरनी—ऊ० दे०

> जो पार उतारे औरोंको, उसकी भी नाव उतरनी है।
> जो गर्क करे फिर उसको भी यां डुबकों डुबकों करनी है।
> शमशीर तबर बन्दूक सना, और नश्तर तीर नहरनी है।
> यां जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी पार उतरनी है॥
> (नज़ीर)

अपनी कोखका पूत नौसादर—अपना ही लड़का कुलका दीपक हो सकता है, जैसे नौसादरही सोनेको साफ करता है।

अपनी गरजको गधा चराते हैं—मतलबके लिये आदमी बुरा काम भी करता है।

अपनी गरज बावली—लोग अपनी गरजमें पागल हो जाते हैं।

अपनी गलीमें कुत्ता शेर—जब कोई नामर्द आदमी घरमें आकर चिल्लाता है, तब ऐसा क०। अपने घरमें भी जोर रहता है।

अपनी गौंते ससा अहेरी—भूखके समय खरगोश भी शिकारी बन जाता है।

> नव तिय पिय चाहे कछु फिरै।
> जानि जानि जिय भाजी फिरै॥
> करै पखानो सुमति अहेरी।
> अपनी गौंते ससा अहेरी॥

अपनी चिलम भरनेको दूसरेका झोपड़ा जलाना—जब कोई आदमी अपने थोड़े फायदेके लिये दूसरेके बड़े नुकसानकी परवाह नहीं करता, तब ऐसा क०।

अपनी जान सबको प्यारी है—स्पष्ट।

अपनी टांग उघारिये आपही लाजों मरिये—अपनोंकी बुराई करनेसे आपही लज्जित होना पड़ता है।

अपनी तो यह देह भी नहीं है—दुनियांमें कोई चीज अपनी नहीं है।

अपनी दाढ़ी जलने दो, हमारा दीया बलने दो—स्वार्थीपर क०।

अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं—अपनी बिगड़ी सब सम्हालते हैं।

अपनी नाक कटाके दूसरेका असगुन मनाना—जब कोई दूसरेका नुकसान करनेके लिये अपना नुकसान भी कर डालता है, तब क०।

अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना—अपने मनकी करना।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—अपनी इज्जत अपने हाथ होती है।

अपनी बला औरके सर—जब कोई अपना अपराध दूसरेके सिर मढ़ता है, तब क०।

अपनी बात गुड़से मीठी—स्पष्ट।

अपनी बेरको घोलम घाला, हमारी बेरको भूखम भाला—स्वार्थीको क०।

अपनी भरी थाली छोड़कर दूसरेकी जूंठी पत्तल निहारना—बदीदे या लालची आदमीको क०।

अपनी मारी खाना—अपने हाथकी कमाई खाना।

अपनी राधाको याद करो—जब कोई किसीका कहना न माने तब क०। तात्पर्य यह है, कि जो

तुम्हें अच्छा लगे सो करो। जाओ अपना काम करो, ऐसा भाव दिखलानेके लिये भी क०।

अपनी लिट्टीपर सब आग रखते हैं—सभी अपना स्वार्थ देखते हैं।

अपनी हराई मराई कोई नहीं भूलता—अपनी विपत्तियोंको कोई नहीं भूलता।

अपनी हारी किससे कहे—अपनी बुराई कोई नहीं कहता।

अपने ऐब सब लीपते हैं—अपनी बुराई सब छिपाते हैं।

अपने कियेका क्या इलाज—अपने किये बुरे कामको कोई क्या करे। खुदकरदहरा इलाज नेस्त। फा०

अपने गिरेबानमें मुंह डालो—जब कोई दूसरेकी बुराई करता है, तब क० पहले अपने ऐब देखो, तब दूसरेको कहो।

अपने घरके सब बादशाह हैं—अपने अपने घरमें सभी मालिक हैं, जो चाहे सो करें।

अपने घरमें आना किसको बुरा लगता है—सभी चाहते हैं, कि हमें धन मिले।

अपने दहीको कोई खट्टा नहीं कहता-अपनी चीजको कोई बुरा नहीं कहता।

अपने दिलकी गवाहीको सच जान—जो अन्तःकरण कहे, उसे मानना चाहिये।

अपने दूर पड़ोसी नेरे—अपने रिश्तेदारोंसे पड़ोसी बहुत काम आते हैं।

अपने पाँवों कुल्हाड़ी मारना—अपना नुकसान आपही करना।

> पियसों नित प्रति रूठी रहै,
> काम लिया पिय मिलिबो चहै।
> सुनो कहाउत नाहिं न मारी,
> मारै आनि निज पैर कुल्हारी।

अपने पास पैसा तो पराया आसरा कैसा—स्पष्ट।

अपने पूत कुँवारे फिरें पड़ोसिनके फेरे—(ज०) जो अपने घरकी भलाई न देखकर दूसरेकी ओर ध्यान देता है, उसपर क०।

अपने बच्चेके दाँत हर कोई जानता है—अपनेको सभी पहचानते हैं।

अपने बावलों रोइये, दूसरोंके बावलों हँसिये—(ज०) अपनी बुरी औलादपर आदमी रंज करता है, पर दूसरेकी औलादपर हँसता है।

अपने मनसे जानिये, पराये मनकी बात—जो जैसा रहता है, वह दूसरेको भी वैसाही समझता है।

अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता—बिना अपने किये काम नहीं होता।

अपने मियाँ दर दरबार, अपने मियाँ चूल्हेदार—एक ही आदमी जब दो तरहके छोटे बड़े काम करता है, तब क०।

अपने मुँह धन्ना बाई, } जब कोई अपने मुँहसे
अपने मुँह मियां मिट्ठू— } अपनी बड़ाई करे, तब क०।

> अपने मुँह तुम आपनि करनी।
> बार अनेक भाँति बहु बरनी॥ (तुलसी)

अपने मुँह शादी मुबारिक—ऊपर देखो।

अपने लगे तो देहमें, औरके लगे तो भीतमें—मनुष्य अपने साधारण दुःखको बड़ा और दूसरेके बड़े दुःखको साधारण समझता है।

अपने सुई भी न जाने दें, दूसरेके भाले घुसेड़ दें—ऊपर दे०।

अपनेसे बचे तो और को दें—स्वार्थीपर क०। कंजूसको भी क०।

अपनेसे बिगाने भले—जब दुःखमें अपना कोई काममें न आवे, गैरोंसे मदद मिले, तब क०।

अपने हरामजादेको समझा, नहीं तो तेरे गरीबको खा लूंगी—जब बलवानपर जोर नहीं चलता और उसके बदले निबल सताया जाता है, तब क०।

इसपर एक कहानी यों है—किसी मनुष्यके दो लड़के थे। एक गरीब और दूसरा बड़ा उत्पाती था। यह उत्पाती लड़का शीतलाके स्थानपर आकर सब चढ़ावा खा जाता और शीतलाका बहुत अपमान करता था। एक दिन रातमें उसके बापको स्वप्नमें शीतलाने प्रगट होकर सब बात कही।

अपने हाथसे अपने पेटमें छुरी नहीं मारी जाती—अपना नुकसान आप नहीं किया जाता।

अपनोंकी आड़ कोई नहीं उठाता—अपने रिश्तेदारोंका एहसान जल्दी कोई नहीं लेता।

वरमपि धारा तरुतल वासः, वरमपि भिक्षा वरमुपवासः।
वरमपि घोरे नरके पतनम्, न च धन गर्वित बान्धवशरणम्।

अफलातूनके नाती बने हैं—जो बहुत अभिमान करता है, उसपर व्यङ्गसे क०।

अफसोस दिल गढ़ेमें—जब मनुष्यको बहुत कष्ट आ पड़ता है, तब क०।

अफीमची तीन मञ्जिलसे पहिचाना जाता है—स्पष्ट।

अफीम या खाय अमीर या खाय फकीर—क्योंकि येही दोनों स्वतन्त्र रहते हैं। अफीम महँगी होती है इसलिये अमीर खरीदकर और फकीर मांगकर खा सकता है।

अबकी चढ़ी कमान को जाने फिर कब चढ़े—अबकी गयी बात न जाने फिर कब हाथ आवे।

अबकी छईकी निराली बातें—नये छोकड़ोंकी नई बातें।

अबकी बार, बेड़ा पार—बस एक बार और हिम्मत करो।

अबके बचे तो सब घर रचे—अबकी आफतसे बचना मुश्किल है।

अबके मारे तो जानूं—डरपोकको, विशेषकर बनियोंको क०। इसी जोड़की बङ्गलाकी प्रसिद्ध मसल है, "मारली तो मारली एबार मार देखी।"

अबके साहे हम न व्याहे फिट्ट पड़ो वह साहे—जो चीज अपने काममें न आवे वह किसी कामकी नहीं।

अब तो पत्थरके नीचे हाथ दबा है—(व्य०) जब कोई किसीके फन्देमें फंस जाय या किसीकी रकम किसीके नीचे दब जाय, तब क०।

सब सों तन सों पीव मिलाये,
अबका होत काम पछिताये।
सुनि प्रसिद्ध यह जगमें गाय,
निकले क्यों पाथर तर हाथ॥

अब तो रुपयेकी जात है,
अब तो रुपयेकी माया है } रुपयेसे ही सब होता है।

अब पछताये होत क्या, जो चिड़ियाँ चुग गईं खेत—समय निकल जानेपर पछताना वृथा है, पूरा दोहा यह है:—

पाछे दिन पाछे गये हरिसों किया न हेत।
अब पछताये होत क्या, जो चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिन्देपर भारी है—(मु०) बिगड़े पर भी मेरी हालत तुमसे अच्छी है।

अबराकी जोरू सबकी भौजाई—(भो०) गरीबको सब दबा लेते हैं।

अबराकी भैंस बियाइल, सगरा गांव मेटिया ले धाइल—(भो०) बेवकूफका धन दूसरा ही भोग करता है।

अब सतवंती होकर बैठी लूटकर संसार—(ज०) जो आजन्म बुरा काम कर अन्तमें अच्छे काममें लग गया हो, उसे व्यङ्गसे क०।

अब्बरके हम जब्बर हैं और जब्बरके हम दास—डरपोकको क०।

अव्वल खेश बाधू दरवेश—(फा०) पहले आपको पीछे फकीरको।

अव्वल ताम बाधू कलाम—(फा०) पहले खाओ पीछे बात करो। शतं विहाय भोक्तव्यम्।

अव्वल मरना, आखिर मरना, फिर मरनेसे क्या है डरना—स्पष्ट।

अव्यवस्थित चित्तानां, प्रसादोपि भयंकरः।
क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, रुष्टा तुष्टा क्षणे क्षणे॥
(सं०) जिसका चित्त स्थिर नहीं, उसकी कृपा भी अच्छी नहीं; क्योंकि उसको न क्रोधित होते देर न प्रसन्न होते देर लगती है।

अभी एक चनेकी दो दाल भी नहीं हुई—अभी शामिल हैं, अलग नहीं हुए।

अभी के दिन, के रात—जब कोई थोड़ा मिलनेसे ही इतराने लगता है और यह समझता है, कि मेरी सदा ऐसी ही कटेगी, तब क०।

अभी तो तुम माका दूध पीते हो—जब कोई जान बूझकर अनजान बन जाय, तब क०।

अभी तो तुम्हारे दूधके दाँत भी नहीं टूटे हैं—जब कोई लड़का होकर बड़प्पनकी बातें करे, तब क०।

अभी तो तुम्हारे होठोंका दूध भी नहीं सूखा—ऊ० दे०।

अभी तो बेटी बापकी है—(१) अभी लड़कीका विवाह नहीं हुआ। व्याहसे पहिलेही यदि समधीसे कुछ कहा-सुनी हो, तब क० (२) अब भी कुछ हो सकता है।

अभी दिल्ली दूर है—जो थोड़ा ही काम करके समझ ले, कि मैंने सब कर लिया, उसपर क०। यह फारसीकी मसल "हनोज़ दिल्ली दूर अस्त" का तर्जुमा है।

अभी सेरमें पूनी भी नहीं कती—ऊ० दे०।

अभ्यास सारिणी विद्या—अभ्याससे विद्या आती है।

करत करत अभ्यासके, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जातते, सिलपर परत निसान॥ (वृन्द)

अमरौती खाकर कोई नहीं आया—कोई अमर नहीं होता, सबको मरना है।

अमानतमें ख्यानत—धरोहरमें बेईमानी करना।

अमीरका उगाल गरीबका आधार—अमीरको जो चीज फेंक देनेमें कोई कष्ट नहीं, गरीबके लिये वही बहुत कामकी है।

अमीरको जान प्यारी, फ़कीरको एकदम भारी—अमीरको अपनी जान प्यारी होती है, लेकिन गरीबको नहीं, क्योंकि वे बहुत कष्टमें समय बिताते हैं और जीनेसे मरना ही अच्छा समझते हैं।

अमीरने पादा सेहत हुई, गरीबने पादा बेअदबी हुई—जिस कामके करनेसे बड़े आदमीकी तारीफ होती है उसी कामके करनेसे गरीबकी निन्दा होती है।

अब मेरे अगले, मनमाने सो कर ले—(ज०) जब कोई स्त्री अपने अत्याचारी पति द्वारा सताई जाती है, तब ऐसा क०।

अरज़ां बइल्लत, गिरां बहिकमत—(फा०) सस्ती चीज खराब होती है, महँगी अच्छी।

अरब खरबलौं लच्छमी, उदय अस्तलौं राज।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन, ये आवें किहि काज॥
ईश्वरकी भक्तिके बिना यह सब वृथा है।

अरहरकी टट्टी और गुजराती ताला—जब कम कीमती चीजकी ज्यादा होशियारी की जाय, तब क०।

सियन सुहाव न टाट पटोरे (तुलसी)

अरे हंस या नगरमें, जैयो आप विचारि।
कागनसों जिनि प्रीति करि, कोयल दई विडारि॥
(बिहारी) मूर्खोंके गांवमें यदि कोई जाया चाहे, तब क०।

अर्क तरूकी डारसे कहुं गज बांधे जायं—छोटे आदमी या छोटे सामानसे बड़ा काम नहीं हो सकता।

अर्द्ध रोग हरे निद्रा, सर्व रोग हरे क्षुधा—जब रोगी को नींद आवे तो उसका आधा रोग अच्छा हो गया, और जब भूख लगे, तब उसे बिलकुल आराम हो गया, समझना चाहिये।

अलक़लीलुल फ़ितरतुन, अलतवीलुल अहमकुन—(फा०) नाटे फितरती और लंबे अहमक होते हैं।

अलख पुरखकी माया, कहीं धूप कहीं छाया—ईश्वरकी माया अपार है, अथवा ईश्वरकी माया जानी नहीं जाती, कोई सुखी है कोई दुखी है।

अलख़ामोशी नीमरज़ा—(फा०) चुप रहना आधी रजामन्दी है। मौनं सम्मति लक्षणम्।

अल गई बल गई, जलवेके वक्त टल गई—(मु० ज०) जरूरतके वक्त काम न आनेपर क०

अलफ़रबः ख्वाहमख्वाह मर्दे आदमी—मोटा ताजा आदमी देखनेमें भलामानस मालूम पड़ता है।

अलबल खुदाबल—ईश्वरका बलही बल है।

अलबेलीने पकायी खीर, दूधकी जगह डाला नीर—(ज०) मूर्ख औरतका किया काम बिगड़ जाता है।

अला बला बन्दरके सिर—कमजोरके सिरपर दोष मढ़ा जाता है।

अला लूँ, बला लूँ, सहनक सरका लूँ—(मु० ज०) स्वार्थी या कपटीको क०।

अलिफ़के नाम वे नहीं जानते—हिन्दीमें कहते हैं "निरक्षर भट्टाचार्य हैं।" बेपढ़ेलिखे आदमीको ऐसा क०।

अलीलकी राय अलील—बीमार आदमीकी राय मानने काबिल नहीं होती।

अली हिम्मत सदा मुफलिस—कवाड़िया हमेशा फकीर रहता है।

अल्पाहारी सदा सुखी—थोड़ा खानेवाला कभी बीमार नहीं होता।

अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह—(मु०) किसी कामके निर्विघ्न पूरा होनेपर कहते हैं।

अल्लाह करे बांका पकड़ा जाय, लाल खांके लकड़ेसे जकड़ा जाय—(मु० ज०) एक बददुआ है। खुदा करे बुरेको सजा मिले।

अल्लाहका दिया सिरपर—(मु०) दूमानी है-(१) ईश्वरका दिया अर्थात् चिराग सिरपर है (चान्दसे मुराद है) (२) जो कुछ परमात्माने दिया है, सर माथे है अर्थात् बाइज्जत कबूल है।

अल्लाहका नाम लो—(मु०) झूठ बोलनेवालेसे कहा करते हैं, "अजी अल्लाहका नाम लो।"

अल्लाह दे अल्लाह दिलावे, बन्दा दे मुराद पावे—(मु०) देता दिलाता खुदा है, आदमी देता है मुराद पानेके लिये।

अल्लाह दो सींग देवे तो वह भी कबूल है—(मु०) दुखीको जो परमात्मा दे उसीमें सन्तोष करना चाहिये।

अल्लाह यार है तो बेड़ा पार है—(मु०) ईश्वर मदद देगा तो सब काम पूरा हो जायगा।

अल्लाह रे! दीदेकी सफाई—(मु० ज०) जिस औरतकी आंखें चंचल हों, उससे ऐसा क०। चंचल नेत्रवाली स्त्री कुचलनी होती है।

अल्लाहहीकी चोरी नहीं तो बन्देका क्या डर है—किसी काममें आदमीका डर करना व्यर्थ है; क्योंकि ईश्वर सब देखता है।

पिला मैं आशकारा हमको किसकी साकिया चोरी
खुदाकी जब नहीं चोरी तो फिर बन्देकी क्या चोरी। (जौक)

उस्ताद जौक दुर्बलताके कारण रमजानमें रोजे नहीं रखते थे। पर अदबके कारण वे किसीके सामने पानी तक नहीं पीते थे। जब कभी उन्हें दवा या पानी पीना होता तो अंदर जाकर पी आते थे। एक दिनका जिक्र है, कि गरमी बहुत थी; तीसरे पहरका वक्त था, नौकरने शरबत घोलकर कटोरेमें घोलकर तैयार किया और उनको भीतर चलनेका इशारा किया। प्रोफेसर आजाद उस समय मौजूद थे। उनकी तरफ देखकर उन्होंने कहा—"ये हमारे यार हैं, इनसे क्या छिपाना। उसी समय उन्होंने उक्त शेर कहा। (२) जाहिद शराब पीने दे मसजिदमें बैठ कर, या वह जगह बता कि जहांपर खुदा न हो।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्—(सं०) अच्छे या बुरे जैसे काम किये हों उनका फल भोगना ही पड़ेगा।

अशरफियां लुटें और कोयलोंपर छाप—फिजूल खर्च करनेवालेको क०। अशरफियां तो खर्च हो जायँ फिर भी पैसे पैसेकी होशियारी की जाय।

अस नहिं भयउ न होवन हारा—(तुलसी) न ऐसा हुआ और न होगा। वशिष्ठजीने भरतसे दशरथकी मृत्युके समय कहा है।

न भूतो न भविष्यति। (सं०)

असबाबमें असबाब एक चंग एक रबाब—जो कुछ हमारा असबाब है यही है—एक चंग एक रबाब (रबाब एक बाजा है)

असलसे खता नहीं, कमअसलसे वफा नहीं—अच्छी पैदायशवालोंसे धोखा और बुरी पैदायश वालोंसे वफादारी नहीं होती।

असीलकी मुर्गी टके टके—(मु०) गरीब आदमीकी चीजकी कुछ कीमत नहीं।

असौजमें बरसे दाता, नाज नियारका रहे न घाटा—असौजमें पानी बरसनेसे फसल अच्छी होती है।

अस्सीकी आमद चौरासीका खर्च—जहां आमदनी कम और खर्च ज्यादा हो, वहां ऐसा क०।

अस्सी बरसकी उमर, नाम मियां मासूम—(प०) गुण या अवस्थाके विरुद्ध नाम रहनेपर क०।

अस्सी लस्सी—अस्सी बरसकी उमर हो जानेसे आदमी निकम्मा हो जाता है।

अहंकारीका सर नीचा—घमण्ड करनेवालेका सर नीचा रहता है।

अहमकसे पड़ी बात, काढ़ो पैंटा तोड़ो दांत—बेवकूफ आदमीसे सख्तीसे काम लेना चाहिये।

अहमदकी दाढ़ी बड़ी या मुहम्मदकी?—जब कोई काम करना ही है, तो संकोच कैसा।

अहीरका क्या जिजमान और लपसीका क्या पकवान—जैसे लपसी अच्छे भोजनमें नहीं है, वैसे ही अहीरका पुरोहित होना लाभदायक नहीं है।

अहीरका पेट गहिर बामनका पेट मदार—अहीर और ब्राह्मण ये दोनों खानेमें मशहूर हैं।

अहीरकी दहेंड़ी मटिया सुर्खरू—काम करनेवालोंकी कीमत उनके हथियारसे अधिक है।

अहीर गाड़ी, जात गाड़ी, नाई गाड़ी कुजात गाड़ी,—अपने समाजसे विपरीत व्यवसाय करनेवालोंपर क०।

अहीर देख गड़रिया मस्ताना—अपने ऊँचे दर्जेके आदमीको कुराहकी ओर जाते देख नीचे दर्जेके आदमी भी उन्हींका अनुकरण करते हैं।

अहीरसे जब गुन निकले, जब बालूसे घी—निर्गुणीसे गुण चाहना उतना ही असम्भव है जितना बालूसे घी निकालना अर्थात् बुरेसे भलाईकी उम्मेद नहीं होती।

अहीरोंके छांटल बहुरी?—अहीरोंके लिये बिना छांटा हुआ ही अन्न उपयुक्त है।

आ

आई गई पार पड़ी—जो हो चुका सो हो चुका। गुज़री हुईपर सोच करनेवालोंसे क०।

आई तो रमाई नहीं तो फ़क़ चारपाई—न कुछसे कुछ अच्छा है।

आई तो रोज़ी नहीं तो रोज़ा—(मु०) कमाना तो खाना, नहीं तो रोज़ा मनाना।

आई न गई कौले लग गाभिन भई—किसी पुरुषका संसर्ग न किया तो क्या खंभेसे गाभिन हुई? जो बदचलन स्त्री अपने किये हुए बुरे कामको छिपाती है, उसे व्यङ्गसे क०। (२) जिसने कोई कसूर न किया हो, और बिना कारण दोषी गिना जाता हो, उसे भी क०। (३) यह पहेली भी है, जिसका अर्थ 'रोटी' होता है। कौला=कोयला।

आई न गई छो छो घरहीमें रही—(मु० ज०) जो सदा घरमेंही रही, घरसे बाहर कभी न निकली हो, उसपर क०।

आई बहू आया काम, गई बहू गया काम—आदमीके साथ काम घटता बढ़ता है।

आई बातका रखना, कुन्द ज़हन होना—मुँहमें आई बात कह डालना अच्छा है, मनमें रखना अच्छा नहीं।

आई बात रुकती नहीं—जो बात दिलमें असर कर गई हो, बिना कहे नहीं रहा जाता।

आई माई को काजर नहीं, बिलाईको भरमांग—(पू० ज०) जिसे ज़रूरत है, उसे कुछ नहीं, जिसे ज़रूरत नहीं, उसे सब कुछ हो, तब क०। भरमांग=(१) मांगभर सेंदूर (२) जितना मांगे उतना देना।

आई मौज फ़क़ीरकी, दिया झोपड़ा फूंक—विरक्त मनुष्यके लिये कहा है।

आई सतुअनकी बहार, बालम मूछें मुड़ाय डालो—क्योंकि सतुआ मूंछोंमें लग जाता है।

आई है जानके साथ, जायगी जनाज़ेके साथ—जो आफ़त मरते दमतक न छूटे, उसपर क०।

आउ दरिद्र कान चढ़ बैठ—जान बूझकर आफ़त मोल लेना।

आओ जाओ घर तुम्हारा, खाना मांगे दुश्मन हमारा—झूठी खातिर करनेवाले ऐसा क०।

आओ पड़ोसी हम तुम लड़ें—लड़ाके आदमीको कहते हैं जो बिना कारण लड़े।

आओ पीर घरका भी ले जाव—पीरोंका काम देना है, न कि, लेना। जब लाभके स्थानमें उलटी हानि हो तब क०।

आओ पूत सुलच्छने, घरहीका ले जाव—बुरे लड़कोंसे, जो घरकी दौलत बिगाड़ते हों, ऐसा क०।

आओ बे पत्थर पड़ मेरे पांव—अपने हाथों दुःख मोल लेना।

कभी न दोष तुम्हें न उन्हें
इस आपुही पैर पै पाथर पारे। (ठाकुर)

आंख एको नहीं कजरौटी दस ठाईं—(पू० ज०) निष्प्रयोजन आडम्बर दिखानेपर क०।

आंख ओझल, पहाड़ ओझल—आंखकी आड़में करनेसे पहाड़ भी आड़में हो जाता है। आंखके आगे कोई चीज रखनेसे पहाड़ भी छिप जाता है।

आंखका अंधा गांठका पूरा—मूर्ख धनवानको क०।

आंख कानमें चार अंगुलका फ़र्क है—बिना देखे विश्वास नहीं करना चाहिये।

आंख=देखना, कान=सुनना

आंखकी भौंहके सामने—किसीके मित्रसे उसकी बुराई छिप नहीं सकती; जैसे भौंहसे आंख।

आंखके आगे नाक, सूझे क्या खाक—अपना पंथ बढ़ानेके लिये ऐसा कहा जाता है।

इस मसलका निकास एक कहानीसे है:—किसी समय एक नकटेने अपना पंथ बढ़ानेके लिये लोगोंसे कहा कि मुझे ईश्वरका दर्शन होता है। तब लोगोंने कहा कि हमारे भी तो आंखें हैं, हम लोगोंको ईश्वर क्यों नहीं दीख पड़ते? इसपर नकटेने उक्त मसल कही। अन्तमें उसकी बातमें पड़कर नाकवालोंके नाक कटा लेनेपर भी जब उन्हें ईश्वर न दिखे, तब वे भी लज्जावश उसीको भाई कहने लगे। भा०—जो धोखेवश दूसरे पन्थमें आ जाता है, वह भी अपनी संख्या बढ़ानेकी कोशिश करता है।

आंख गड्डू नाक मद्दू नाम सोहनी—रूपके विरुद्ध नाम होनेपर क०।

आंख चोपट अंधेरे नफ़रत—आंखसे न देखते हुए अँधेरे से नफ़रत करना।

आँख न दीदा, काढ़े कसीदा—(च०) देखो "आंख एको नहीं……"

आँख न नाक, बन्नो चाँदसी—(च०) जब नाम के अनुसार सूरत न हो, तब क०।

आँख नहीं पर काजल दीन्हें—(च०) देखो "आंख एको नहीं……"

आंख नाक मुंद मूंद के, नाम निरञ्जन ले।
भीतरके पट जब खुलें, जब बाहरके दे॥
उपदेश।

आँख फड़के दहिनी, मैया मिले कि बहिनी—(ज०) स्पष्ट।

आँख फड़के बाई, मैया मिले कि साई—(ज०) स्पष्ट।

आंख फूटेगी, तो क्या, भौंहसे देखेंगे—(१) आंखके रहते ही भौंकी शोभा है। (२) स्त्रीके मर जानेपर सालेका सत्कार नहीं होता। (३) पुत्रके मर जानेपर बहूका आदर नहीं होता।

आंख जब तक है तो सुख पाती है भौं।
आंखही फूटी तो कब भाती है भौं।

आंख फूटी पीड़ गई—किसी तकलीफसे ज्यादा व्यथित होनेपर ऐसा क०। जिससे बराबर कष्ट मिले उसे त्यागना ही अच्छा है।

सुरति योगमें जनि चकुलावे। थोरे दुखमें बड़ सुख पावे॥
लोग पथारथ मनमें ल्याय, फूटी आंख पीर मिट जाय।

आंख फेरे तोतों की सी, बातें करे मैना की सी—बदचलन स्त्रीके लिये क०।

आंख बची माल दोस्तों का—अपनी चीजकी खबरदारी रखनी चाहिये। जब असावधानतासे किसीकी चीज चोरी जाय, तब क०।

चिड़ियाने देखा कौआ, गाफिल इधर घसीटा।
कौवेने बाज पाकर, चिड़ियाका पर घसीटा।
चीलोंने मार पंजे, कौवेका सर घसीटा।
जो जिसके हाथ आया, उसने ही धर घसीटा।
हुशियार आगे जाओ, यह दस्त है ठगोंका।
या टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तोंका।

आंख बिरानी खोभरो, मानो भुसमें जाय—दूसरेको तकलीफ देनेसे देनेवालेको कोई तकलीफ नहीं होती। खोभरो=कांटा। पराई आंखमें, कांटा चुभाया मानों भुसमें चुभाया।

आंख में फुली नाम कमल नयन—(च०) नामानुसार गुण नहीं होनेपर क०।

आंखमें मैल और इसमें मैल नहीं—बहुत सुन्दर स्त्रीको क०।

आंखमें लोर दांत निपोर—भद्दी शक्लको क०।

आंखसे दूर सो दिलसे दूर—दूर रहनेसे मुहब्बत नहीं रहती।

बेकार है शिकवये तगाफुल रंजूर।
होता है किसे ख्याले यारे महजूर।
क्या तूने सुनी नहीं ये मशहूर मसल,
जो आंखोंसे दूर है—वह है दिलसे भी दूर।

आँखे अंजन, दांते मंजन, नित दे नित दे नित दे
काने लकड़ो, नाके उंगली, मत दे मत दे मत दे
—आंखोंमें अंजन और दांतोंमें मंजन रोज लगाना चाहिये, पर कानमें लकड़ी और नाकमें उंगली कभी नहीं डालनी चाहिये।

आँखें हुई चार, तो मनमें आया प्यार,
आँखें हुई ओट, तो जीमें आया खोट } देखेकी मुहब्बत होती है, पीठ पीछेकी नहीं।

जब तक रहे दूर तुम नजरसे ऐ यार।
करते रहे रंजूरको मर्दों में शुमार॥
अब उस जुदाईके रवादार नहीं।
चार आंखें हुईं तो दिलमें भी आया प्यार (रञ्जूर)।

आँखें हैं या भैंसके चूतड़—जो सामनेकी चीज न देख सके उसे ताना मार कर कहते हैं।

आँखोंका अन्धा नाम नैनसुख—गुणके विरुद्ध नाम हो तब क०।

आँखोंका काजल चुराता है—बहुत चालाक आदमीको कहते हैं।

आँखोंका तारा—जिस चीजको ज्यादा मुहब्बतकी नजरसे देखा जाता है, उसे क०। बहुधा लड़कोंपर ही क०।

आँखोंका देखा दूर कर, भले मानसका कहना कर—भले मनुष्यके कहनेके सामने एक दफा आंखों देखी बातको भी भूल जाना चाहिये।

आँखोंका नूर दिलकी ठंढक—पुत्रके लिये क०।

आँखोंकी सुइयां निकालना बाकी है—जब किसी कामका अधिक भाग हो जाय, केवल थोड़ाही करना बाकी रहे, तब क०। यह मसल देहाती औरतोंपर कही गई है। उनका विश्वास है, कि यदि आटेकी कोई मूर्ति बनाकर उसमें बहुतसी सुइयां चुभा दी जायं और उसे मरघटमें रख छोड़ें, तो उनका शत्रु उसी तरह सुईकी वेदनासे प्राण त्याग कर सकता है। उनका यह भी विश्वास है, कि यदि जादू द्वारा उसमेंसे सुइयां निकाल ली जायं, तो उसका प्राण फिर पलट आ सकता है।

इसपर एक कहानी है कि उपर्युक्त रीतिसे एक दुष्ट स्त्रीने अपने स्वामीको मार डाला। बाद उसे फिर जिलानेके लिये उसने आंखोंकी सुइयां छोड़कर प्रायः सभी सुइयां निकाल डालीं। उसी समय उस स्त्रीकी दासीभी पहुँच गई। उसने आंखोंकी सुइयां निकाल लीं और ऐसा करनेके साथही प्राणवायु फिर पलट आई। वह मनुष्य यह समझकर दासीपर प्रसन्न हुआ, कि इसीने मेरी जान बचाई है। अन्तमें उसने दासीके साथ ब्याह कर अपनी स्त्रीको निकाल दिया।

आँखों देखी चेतना, मुँह देखे व्योहार—देखनेसे विश्वास और परिचय होनेसे व्यवहार होता है।

आँखों देखी कानों सुनी—जब किसी कामका निश्चय होना प्रतीत हो जाय, तब क०।

आँखों देखी मानूं, कानों सुनी न मानूं—देखी हुई बातपर विश्वास किया जाता है, सुनी हुई पर नहीं।

सुनि पिय गुन तिय मनि अकुलाई,
कहत पखानो जग इमि गाई।
जौलौं लखौं न अपने नैन,
तौलौं पतियाओं नहि बैन।

आँखोंपर ठीकरी रखना—किसी बातको जान बूझ कर न देखना। बेशर्मको भी क०।

आँखों पै पलकोंका बोझ नहीं होता—अपनी चीज किसीको भारी नहीं मालूम पड़ती।

आँखोंमें खाक डालना—धोखा देना।

आँखोंमें चर्बी छाई है—अहङ्कारीके प्रति ऐसा क०।

तोरे आंखमें चर्बी छाई मात न पाय्यो गोजर।
(हरिश्चन्द्र)

आँखोंमें मेंहदी छाई है—ऊ० दे०।

आँखोंमें सरसों फूलना—बदमस्तीकी हालतमें क०

जब तें लखि पीत पटधारी, तबतें और न भावत प्यारी।
कहे पखानो ज्यों रवि रैन, फूल रहे सरसोंहि नैन।

आँखोंमें हरियाली छाई है—जिसको दुःखका ज्यादा अनुभव न हो, उसे ऐसा क०।

आँखों सुख कलेजे ठंढक—पुत्रके प्रति क०।

आँखोंसे सुखो नाम हाफिज़जी—मुसलमानोंमें बहुधा अन्धेको हाफिज़जी कहते हैं।

आंत भारी तो माथ भारी—पेट भरा हो, तो आलस आता है। अधिक भोजन करनेसे सिरमें दर्द होता है।

आँता तीता दांता नोन, पेट भरनको तीन ही कोन, आंखें पानी काने तेल, कहे घाघ वैदाई गेल—कड़ुई चीज़ खाना, दांतोंमें नमक लगाना, कम खाना, आंखोंसे पानी लगाना और कानमें तेल डालना, वैद्यकी जरूरत नहीं रखते, ऐसा घाघ कहते हैं।

आँधर कूकर बतासे भूंके—(१)अंधा कुत्ता हवाकी आहटसे भी भौंकता है। (२) मूर्ख मनुष्य ज़रासी बातके लिये ही लड़ बैठते हैं।

आँधर कूटे, बहिर कूटे, चावलसे काम—(पू०) (१) चाहे अंधेने कूटा हो या बहरेने,चावलसे काम। (२) कोई भी करे काम होनेसे मतलब।

आँधर गई भुंजावे,खोपड़ी फूटि लगली गावे—स्पष्ट।

आँधरी घोड़ी खोखले चना—मूर्ख गुणकी पहिचान नहीं कर सकता।

आँधी आवे बैठ जाय, मेह आवे भाग जाय—आंधी आनेपर बैठ जाना और पानी बरसनेपर भाग जाना चाहिये।

आंधीके आगे बेनेकी बतास—(१)आंधीमें पंखा झलना वृथा है। (२)अनावश्यक कार्य्यपर क०।

आंधीके आम—(१) सस्ती चीज़पर क०। (२) जो चीज़ बहुत दिन न रहे,उसपर भी क०।

आँधी बाटे जेवरी पाछे बकरी खाय—दे० "अंधी पीसे कुत्ता खाय"।

आंसू एक नहीं कलेजा टूक टूक—दिखौवा रोनेपर क०।

आकास बाँधे पाताल बाँधे, घरकी टट्टी खुली—जो दूसरोंका दोष दिखाते हैं, पर अपना नहीं देखते उनपर क०।

आक़िला पैरवी ए नुक़त न कुनन्द—(मु०) पढ़े लिखे नुक़्तोंकी परवाह नहीं करते। फ़ारसीमें जो शिकिस्ता लिखते हैं वे अक्सर नुक़्ते लगाना छोड़ देते हैं, उनपर व्यंगसे क०।

आख़िर अपनी ज़ातपर आगया—अन्तमें जिस नीच मनुष्यकी नीचता प्रगट हो जाय, उसपर क०। दे०,, अपनी असलपर..."

आग और पानीको कम न समझे—इनको बढ़ते देर नहीं लगती।

आग और फूसका वैर है—स्त्रियोंका संग न करनेके लिये क०।

आग और वैरीको कम न समझो—इनको बढ़ते देर नहीं लगती।

'आग'कहते मुंह नहीं जलता—खाली नाम लेनेसे ही उसका असर नहीं होता।

आगका जला आदमी आगहीसे अच्छा होता है—जैसा आदमी देखना वैसा बर्त्ताव करना।

प्रथम समागम दुख दरसाई,
बहुरो सो प्रिय सुख सरसाई।
लोक उक्ति मन महं नहिं ल्याई,
आगि दह्यो अंग आगि सिराई॥
(मो० र० को०)

आगके आगे सब भस्म है—आगका परिणाम भस्म है।

आग खायगा सो अंगारा हगेगा—बुरे कामका बुरा फल होगा।

आग खाये मुंह जरे, उधार खाये पेट जरे—स्पष्ट।

आग, जवासा, आगरी, चौथा गाड़ीवान।
ज्यों ज्यों चमके बीजरी,त्यों त्यों तजे पिरान॥
पानी बरसनेसे इन चारोंकी हानि होती है। आगरी=नोनिया; जवासा=एक प्रकारकी कँटेदार झाड़ी जो प्रथम वृष्टिके ही बाद मर जाती है। बिजली चमकना वर्षा होनेकी सूचना है।

बरसत मेंह मेह बरसत बड़ बड़, भारसत देह जो के जरत जवासो है (पद्माकर)।

आग पानीका वैर है—विपरीत वस्तुओंका मेल नहीं होता।

आग विना धुआँ नहीं—विना कारण लड़ाई नहीं होती।

आग में मूत या मुसलमान हो—यह मसल मुगलोंकी अमलदारीके समय चली है, जब हिन्दुओंको जबरदस्ती मुसलमान बनानेके लिये ऐसा कहा जाता था;क्योंकि हिन्दू अग्निको देवता समझकर मूतनेको राज़ी नहीं होते थे।

आगरेके, लाला पेट भरा मुंह काला— आगरे वाले खानेके जितने शौकीन होते हैं, पहिननेके उतने नहीं।

आग लगन्ते झोंपड़ा, जो निकले सो सार— जब सब चीजें नष्ट होती हों, तब उनमेंसे जो बच सके वही लाभ है।

धर्म कर्म करिके कछू, अरा करत तन दाह।
आग लगन्ते झोंपरो, जो निकसे सो लाह॥

आग लगाय तमाशा देखना—लड़ाई झगड़ा करा देनेवालोंपर क०।

आग लगाय पानीको दौड़ना—जो लड़ाई करा कर मेलका उद्योग करे, उससे क०; क्योंकि उसका सिद्धान्त बुराई करनेका है, केवल दिखानेके लिये भलाई करता है।

बालनकों मोहि रिस उपजाई।
पियनों कहि शुभ मेरु मनाई॥
आगे सो जो गाथा गावै।
आग लगाइ पानिको जावै॥
अधमादृति। (लो०र०की०)

आग लगे कहं पैये मेह—आग लगनेपर पानी कहां मिलता है।

सोवो व्याकुल विरहिन वार, पिय घनश्याम मिले इहि बार।
उपखानो ज्यों जग कहि देह, लगे आगि कहूं पैये मेह।
(लो० र० की०)

आग लगे तो बुझे जलसे, जलमें लगे तो बुझे कैसे—यदि संयोगवश कोई खोटा काम करने जाय, तो समझानेसे मान सकता है, परन्तु जिसकी जन्मसे ही आदत खराब है, यह कैसे मान सकता है?

आग लगेपर कुआं खोदना—काम बिगड़ जानेपर सचेत होना।

जो पहली कीजै यतन, सो पीछे फलदाय,
लाय लगी खोदै कुआं, कैसे आग बुझाय।

आग लगे पर बिल्लीका मूत ढूंढ़ना—उपस्थित विपत्तिसे बचनेके लिये ऐसा उपाय बताना जो हो न सके।

आग लगे मढ़े, बज्र पड़े बरात—श्राप देना है।

आगा मीरकी दाई, सब सीखी सिखाई—अच्छों को नौकर भी अच्छे ही मिलते हैं।

आगे आगरा पीछे लाहोर—उल्टे रास्ते चलनेवालों पर क०। कोई मनुष्य लाहोर जानेके लिये आगरे की तरफ मुंह करके चल पड़ा था।

आगे आगे गोरख जागे—देखो "आगे चलकर गुल……।"

आगेका गिरते ही पीछेका होशियार—एकको ठोकर खाते देखकर दूसरा सचेत हो जाता है।

आगे कुआं पीछे खाई—जब दोनों ओर विपत्ति दिखाई दे, तब क०।

आगे चलकर गुल खिलेगा—(बो० चा०) जब भविष्यमें किसी बातका गुप्त भेद खुलनेका या किसी कामका बुरा परिणाम होनेका निश्चय हो जाय, तब क०।

(१) इन्तिदाये इश्क़ है रोता है क्या,
आगे चलकर देखना होता है क्या॥

(२) नहिं पराग नहिं मधुर रस, नहिं विकास इहि काल।
अली कलीही सों बिंध्यो आगे कौन हवाल। (बिहारी)

आगे चलते हैं पीछेकी खबर नहीं— असावधान होनेपर क०।

आगे जाय घुटने टूटें, पीछे देखे आंखें फूटें— (ज०) दे० "आगे कुआं……"

आगे दौड़, पीछे चौड़—जब नया काम करता जाय और पिछला बिगड़ता जाय, तब क०

आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार-का गदहा—जिसका कोई न हो, उसे क०।

आगे पग रखे पत बढ़े, पाछे पग रखे पत जाय— उन्नतिसे इज्जत बढ़ती और अवनतिसे घटती है।

आगे पीछे सब चल बसेंगे—सबको एक दिन मरना है।

आगे फरुक पीछे बात, जिसका नाम फरुखा-बाद—फर्रुखाबादियोंपर व्यंग है।

आगे राह बतायके, पीछे गोता दे—धोखेबाज आदमीपर कही जाती है।

आगे रोक, पीछे ठोक—जब दोनों तरफ़से भागने-का रास्ता न मिले, तब क०।

आगे हाथ, पीछे पात—(ज०) बहुत गरीबसे कही जाती है, जिसके पास तन ढकने तकको कपड़ा न हो।

आजकलकी कन्या अपने मुंहसे वर मांगती हैं—समयके प्रभावपर क० । तात्पर्य यह है कि बेशर्मी बढ़ती जाती है ।

आजकल तुम्हारे ही नाम कमान चढ़ी है—जबरदस्तसे क० ।

आजका काम कलपर मत छोड़ो—जो काम सामने आवे उसे तुरन्त कर डाले ।

करने जो कुछ तुझे है कर लें फ़िलहाल।
काल न किसे है जानने इस्तक़बाल॥
मेरी ये नसीहत आपे जी पर लिख ले।
जो आजका काम हो उसे कलपर न टाल॥ (सरूर)

आज किधरका चांद निकला है—जब कोई बहुत दिन बाद मिलता है, तब क० ।

आजकी आज, आजकी बर्ष दिनमें—आदतपर निर्भर है, चाहे आजका आज करे चाहे बर्ष दिनमें ।

आजकी आजके साथ, कलकी कलके साथ—(व्य०)जब कोई आजका काम कलके लिये रख छोड़ता है, तब क० ।

आजके थापे आज नहीं जलते—आजके सिखाये आज ही काम नहीं कर सकते । आजके थापे उपले आज नहीं जलते, उन्हें सूखनेके लिये कुछ समय चाहिये ।

आजके बनिये कलके सेठ—जिसकी अवस्था बदलती रहे, उसे क० ।

आज तक पड़े हींग हगते हैं—अभीतक आराम नहीं हुआ ।

आज नपूती कल नपूती, टेसू फूला सदा नपूती—(ज०) निराश अवस्थापर क० । आज भी निपूती कल भी निपूती, टेसू फला तोभी निपूती । जब वृक्षोंका पतझड़ हो जाता है, तब टेसू फूलता है ।

आज नहीं कल—(व्या०) टालमटोल करनेवालेपर क० ।

यह मसल एक काफ़िर मुसलमानके प्रति कही गई है, जो प्रति दिन रातके समय एक पेड़के नीचे ईश्वरकी आराधना इस तरह किया करता, "खुदा अपनी मुहब्बतमें हमें खींच।" एक रातको उसी पेड़पर बैठे हुए किसी गंवारने रस्सीकी फंसरी नीचे गिराकर उस भक्तको ऊपर आनेके लिये कहा। वह पाखंडी भक्त भयसे चिल्ला उठा, "आज नहीं कल, अर्थात् आज मुझे मत खींचिये, कल अवश्य आऊंगा" किसीकी सत्यता या असत्यता तबतक जानी नहीं जाती, जबतक उसकी परीक्षा न की जाय ।

आज बसेरवा नियर, कल बसेरवा दूर—(पू०) आजका घर पास है । कलका घर दूर है । इसलोक और परलोकपर क० ।

आज़मायेको आज़मावे, नामाक़ूल कहावे—जिसे कई बार आज़मा चुके फिर उसे आज़माना मूर्खता है ।

आज मुए कल दूसरा दिन—जिसकी कोई याद करने वाला न हो, उसे क० ।

आज मेरे मंगनी कल मेरे ब्याह, परसों लौंडियाको कोई ले जा—भविष्यका कुछ ठीक नहीं ।

आज मैं, कल तू—विपद समीपर पड़ती है, आज हमपर है, तो कल तुमपर भी पड़ेगी ।

आजसे कल नेरे है—आजसे कलका दिन ही पास है ।

आज हमारी कल तुम्हारी, देखो लोगो फेरा फारी—देखो, "आज मैं कल तू ।"

आज है सो कल नहीं— अवस्थाके परिवर्तनपर क० ।

आज़ादी खुदाकी निआमत है—स्वतन्त्रता ईश्वरकी देन है ।

आटा नहीं तो दलिया तब भी हो जायगा—गेंहू पीसनेसे आटा नहीं तो दलिया अवश्य हो जायगा । काम करनेसे ही सफलता होती है । यदि पूरी नहीं तो थोड़ी अवश्य ही होती है ।

आटा निबड़ा, बूचा सटका—मुफ्तख़ोरको जब कुछ नहीं मिलता तब वह साथ छोड़ देता है ।

आटेका चिराग़, घर रखूं तो चूहा खाय, बाहर रखूं तो कौवा ले जाय—(ज०) जब दोनों तरहसे मुश्किल हो, तब क० । देवीकी ज्योतके लिये आटेका दीया बनाया जाता है ।

आटेके साथ घुन पिसा—दोषीके संग रहनेसे जब किसी निर्दोषीकी हानि होती है, तब क० ।

आटे दालका भाव } जो गृहस्थीके फेरमें
आटे दालका फ़िक्र } पड़ता है, वही जानता है।

क्या तवङ्गर क्या गमी क्या पीर औ क्या बालका,
सबके दिलके फ़िक्र है दिन रात आटे दालका। (नज़ीर)

आटेमें नोन, सचमें झूठ—झूठ इतनी खप सकती है जितना आटेमें नमक। बहुत झूठ न बोलना चाहिये।

भाव दिखाइ इतक परमान, जासे मिटे न रस मिठान।
रस सिङ्गारमें ऐसे भावें, आटे मांह लोन ज्यों नावें॥
(सी० र० कौ०)

आठ कठौती मठा पिये, सोलह मकुनी खाय,
उसके मरे न रोइये, घरका दलिद्दर जाय—जो बहुत खाता हो, उसपर क०।

आठ कनौजिया नौ चूल्हे—कनौजियोंमें खाने पीनेका विचार बहुत है, कोई किसीका छुआ नहीं खाता। नाइत्तफ़ाक़ीपर क०।

आठ गांवका चौधरी, बारह गांवका राव,
अपने काम न आय तो,अपनी ऐसी तैसीमें जाव—जब किसी बड़े आदमीसे सहायता न मिले, तब क०।

आठ जुलाहे नौ हुक्का, जिसपर भी थुक्कम थुक्का—जुलाहोंकी मूर्खतापर कही जाती है।

'आठ टकेके गेहूं मंगाये, पीसेगी के नांहरे?'
'नाईं मेरे भोरे सइयां, पीसा नहीं जायरे।'
'पीस पोयके आगे रक्खा, खायगीके नांहरे?'
'हां रे मेरे भोरे सइयां, खाऊंगी चौं नांहरे।'—जो स्त्री काम नहीं करती और खानेको मुस्तैद रहती है, उसे क०

आठ बार नौ त्योहार—हिन्दुओंमें त्यौहार बहुत होते हैं। यह कहावत कुछ अशुद्ध सी जान पड़ती है, क्योंकि बार सात ही होते हैं, परन्तु इसी रूपमें सर्वत्र कही जाती है।

आठ हाथ लकड़ी, नौ हाथ बीली—असम्भव बातपर क०।

आठों गांठ कुम्मैत—बड़े चालाक आदमीसे कहते हैं। कुम्मैत घोड़ा बहुत मेहनती और फुर्तीला होता है।

आठों पहर कालका डंका सिरपर बजता है—मौत हर वक्त सिरपर है।

आड़े हाथों लेना—(१) किसीको ज़लील करना। (२) बुरा भला कहना।

आता है हाथीके मुंह, जाता है च्यूंटीके मुंह—आता मुश्किलसे है और जाता सहजमें है। धन पर क०। आतेको सब देखते हैं, जातेको कोई नहीं देखता।

आता हो उसे हाथसे न दीजे, जाता हो उसका ग़म न कीजे—आई चीज़को न छोड़े और गईका सोच न करे।

आती बहू जनमता पूत—यह सबको प्यारे लगते हैं।

आती लक्ष्मीको लात मारना ठीक नहीं—लाभ छोड़ना अच्छा नहीं है।

आते आओ, जाते जाओ—(१) यह एक मुहावरा है। (२) आना हो तो आओ, जाना हो तो चले जाओ। लापरवाही ज़ाहिर करती है।

आतेका नाम सहजा, जातेका नाम मुक्ता—दुःख आवे तो उसे शान्तिपूर्वक सहना चाहिये; क्योंकि उसके चले जानेसे मोक्ष है।

आते जाते मैना न फंसी, तू क्यों फँसारे कौवे—सीधे आदमीसे सयाना आदमी ही अधिक धोका खाता है।

आत्मवत् सर्वभूतानि—(सं०) सबको अपनी बराबर समझना चाहिये।

आत्मामें पड़े तो परमात्माकी सूझे—दुःख भरा हो तो ईश्वर याद आवे।

आत्मासुखी, तो परमात्मा सुखी—ऊ० दे०।

आदम आया, दम आया—आदमसे सृष्टिका प्रारम्भ है।

आदमी अनाजका कीड़ा है—आदमी अनाजसे जीता है।

आदमी अपने मतलबमें अंधा है—स्पष्ट।

आदमी अशरफ़ुल मख़लूक़ात है—मनुष्य सब जीवोंमें श्रेष्ठ है।

आदमी आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर—सब आदमी एकसे नहीं होते।

आदमीका शैतान आदमी है—आदमीको आदमी ही बुरा रास्ता बताता है।

आदमीकी क़दर मरेपर होती है—स्पष्ट।

आदमीकी कसौटी मुआमला है— आदमीकी जाँच काम पड़नेसे होती है।

आदमीकी दवा आदमी है—आदमीको आदमी ही सुधारता है।

आदमीकी पेशानी दिलका आईना है—आदमी-का मुंह देखनेसे, उसके अन्दरका हाल जाना जा सकता है।

आदमी कुछ खोकर सीखता है—बिना खाये ठाकुर नहीं होता।

आदमीको अढ़ाई गज़ कफ़न काफ़ी है—हिन्दुओं-की मसल है, लहासको ढाँकनेके लिये अढ़ाई गज कपड़ा लगता है।

आदमीको अढ़ाई गज़ ज़मीन काफ़ी है—(मु०) क़ब्रके लिये।

> ख़ूके दरिया बह गयी, आलम तहोबाला हुए,
> ऐ सिकन्दर किस लिये, दो गज़ ज़मींके वास्ते।

आदमीको आदमियत लाज़िम है—मनुष्यमें मनु-ष्यत्व होना चाहिये।

आदमीको आदमीसे सौ दफ़ा काम पड़ता है—स्पष्ट।

आदमी क्या है, आबनूसका कुन्दा है—बहुत काले आदमीसे क०।

आदमी चनेका मारा मरता है—मौत आनेपर छोटीसी चोट भी मारनेके लिये काफ़ी है। जीवनकी अस्थिरतापर क०।

आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे—आदमी पास रहनेसे जाना जाता है।

आदमी ठोकर खाकर सम्हलता है—दे० "आदमी कुछ खोकर......"

आदमीने आखिर कच्चा शीर पीया है—मनुष्य-की दुर्बलतापर क०।

आदमी पानीका बुलबुला है—आदमी नाशवान है

> पानीका बुलबुला है इनसानकी हयात,
> हरगिज नहीं इससे बढ़के इसको है सबात।
> वो इस धुनमें कि हूँ रक़ीबोंको शिकस्त।
> और मौत इस फ़िक्रमें कि हूँ इसको मात॥ (रघुर)

आदमी पेटका कुत्ता है—आदमी पेटका गुलाम है।

आदमी मानके लिये पहाड़ उठाता है—मनुष्य प्रतिष्ठाके लिये शक्तिसे बाहर काम करता है।

आदमी मालकी ख़ातिर पहाड़ सरपर उठाता है—फ़ायदेके लिये आदमी सब काम करता है।

आदमी मुश्किलसे मिलता है—अच्छा आदमी न मिलनेपर क०।

आदमी सा पखेरू कोई नहीं—क्योंकि यह बहुत दूर देशोंमें घूमा करता है।

आदमी है कि घनचक्कर—आवारा आदमीको क०।

आदमी है या बिजली—बहुत तेज़ आदमीको क०।

आदमी होना बहुत मुश्किल है—जिसमें इनसानि-यत नहीं होती, उसे क०—

> "इसने माना हो फ़रिश्तह शेख़जी, (पर)
> आदमी होना बहुत दुशवार।

आदमी हो या बेदालके बूदम—मूर्खसे कही जाती है। फ़ारसीमें बूदमसे (दाल) निकाल लेनेपर 'बूम' रह जाता है; जिसका अर्थ उल्लू है।

आदमी हो या संगे बेनून—फ़ारसीमें 'संग'मेंसे नून निकाल लेनेपर 'सग' रह जाता है, जिसका अर्थ कुत्ता है

आदर न भाव, झूठे माल खाव—झूठ मूठका सत्कार करनेपर क०।

आदर बढ़ल गजाधर ब्रह्मके—बड़े आदमीकी स्त्रीका बहुत आदर है।

आद हिन्दू बाद मुसलमान—पहिले हिन्दू पीछे मुसलमान।

आदीके चन्दन लिलार चरचराय—(पू०) स्पष्ट। चन्दनकी जगह अदरक पीसकर माथेमें लगाई जाय तो माथा चरचराने लगेगा।

आदी मिरचाईका कौन साथ—अदरक मिर्चका क्या साथ?

आध सेरके पात्रमें, कैसे सेर समाय—जब किसी छोटे आदमीको धन मिल जाता है और वह उसे बुरी तरह खर्च करता है, तब ऐसा क०।

आधा आप घर, आधा सब घर—लालचीको कहा जाता है।

आधा तजे पंडित, सर्वस तजे गँवार—समय पड़नेपर बुद्धिमान थोड़ा व्यय करके शेषको बचा लेता है।

आधा तीतर, आधा बटेर—बेतुकी बात कहना, जिसका ठीक मतलब न हो।

आधा मियां शेख़ शरफ़ुद्दीन, आधा सारा गाँव—बड़े आदमीको जब सबसे ज्यादा हक़ दिया जाय तब क०।

आधीको छोड़ सारीको धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे। आधीको छोड़ सारीको धावे, आधी रहे न सारी पावे—ज्यादा लालच करना अच्छा नहीं; जो मिले उसीमें सन्तोष करना कर्त्तव्य है।

आधी रातकी जँभाई आय, शामसे मुँह फैलाय—बेवक्तका काम करनेपर क०।

आधी रोटी बस, कायथ हैं कि पस—कायस्थ लोग कम खानेवाले होते हैं।

आधे असाढ़ तो बैरीके भी बरसे—आधे असाढ़में जरूर वर्षा होती है।

आधे क़ाज़ी क़द्दू, आधे बाबा आदम—(मु०) ज्यादे औलादवालेको ऐसा कहते हैं। कहते हैं, कि क़ाज़ी क़द्दूके ७० लड़के थे।

आधे गाँव दिवाली आधे गाँव फाग—जहाँ इत्तफ़ाक़ (मेल) नहीं होता, वहाँ ऐसा क०।

आधे माघे, कामरि काँधे—(१) आधे माघमें जाड़ा कम होनेके कारण कम्मलको कंधेपर रख लेते हैं। (२) आधे माघसे वे लोग कामर उठाते हैं जो प्रयागसे जल लाकर वैद्यनाथको शिवरात्रिके दिन चढ़ाते हैं, क्योंकि वहांसे बीस पचीस दिनका रास्ता है।

आनक पहिरिक साजो बड़, छीन लेलक त लाजो बड़—(म०) पराई चीज पहिरनेमें जैसी शोभा होती है, छिन जानेपर वैसी ही लज्जा भी होती है। जो मँगनीकी चीज पहिनकर शान शौकत दिखाते हैं उनको क०।

आन बनी सर आपने, छोड़ पराई आस—अपने ऊपर आ पड़े तो दूसरेकी आशा नहीं करनी चाहिये।

आनसे मारे, तानसे मारे, फिर भी न मरे तो राँनसे मारे—औरतपर कही जाती है; पहिले बातोंसे फिर आँखोंसे, उसपर न मरे तो जांघोंसे मारती है।

आप करे मोहि दोष लगावे, ऐसा स्वामी नाहिं सुहावे—स्पष्ट।

आप करे सो काम, पल्ले पड़े सो दाम—हाथका काम पासका दाम काम आता है।

आप काज महा काज, आप काम महा काम—काम आप करनेसे ही ठीक होता है।

> कहो बाम प्रति मोहन मीत, सरस गीतमें रस बिपरीत,
> सुनो पखानो लोक समाज, आप काज सोई महाकाज।
> (लो० र० को०)

आपको लापसी पराई सो कुश्की—अपनी चीज अच्छी, दूसरेकी बुरी बताना।

आपके पीसेका क्या छानना—(व्यं०) अपने किये कामकी बड़ाई करे, उससे ऐसा क०।

आपको न चाहे (व माने), ताके बापको न चाहिये—(व मानिये) स्पष्ट।

> (१) दाता कहा सूर कहा सुन्दर सुजान कहा,
> आपको न चाहै ताके बापको न चाहिये। (बोधा०)
>
> (२) हौं अधीन पिय हितकी बाम।
> सेवकसों नित चाहौं काम॥
> लोग पखानो यह सुन लीजै।
> चाह करै ता चाह करीजै॥

आपको फ़ज़ीहत ग़ैरको नसीहत—दे० "दिगरां फ़ज़ीहत।"

आप खाय, बिलाई बताय—आप करे दूसरेका नाम बतावे, तब क०।

आप ख़ुराही आप मुरादी—जो केवल अपना ही फ़िक्र रक्खे उसको क०।

आप गये और आस पास—आप भी बरबाद हो और साथमें पड़ोसियोंको भी बरबाद करे, तब क०।

> आप गये अरु औरनि घालहिं। (तुलसी)

आप चले तो चिट्ठी काहेकी—व्यर्थ काम करनेपर क०।

आप चले भुइयां शेख़ी गाड़ीपर—शेख़ीबाज़को क०।

आप ज़िन्दाह, जहान ज़िन्दाह—जबतक आप जीता है, तबतक दुनियां है।

आप डूबा सो डूबा, औरको भी ले डूबा—अपनी हानि हुई, दूसरोंकी भी हानि की।

आप डूबे तो जग डूबा—जब अपनी ही हानि हो, तब दूसरेकी हानिका क्या विचारना।

आप डूबे बामना जिजमाने ले डूबे—आजकलके ब्राह्मणोंपर क०।

आ पड़ौसिन मुझ सी हो—(ज०) जो दूसरोंको अपनीसी ही अवस्थामें देखना चाहे, उसपर क०।

आ पड़ौसिन हम तुम लड़ें—लड़ाकी औरतपर क०।

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति—(सं०) विपत्तिमें मर्यादा नहीं रहती।

आप तो मियां हफ्तहजारी, घरमें रोवे कर्मों मारी—आप बना ठना रहे, घरवाली दुःख पावे। तबक०।

आप धनी तो जग धनी—जब कोई; अपने जैसा सभीको धनी समझे, तब क०।

किसी गांवके पास एक अशरफी और एक भैंस थी। वह केवल अपने मनमें ही नहीं समझता था, बल्कि सबसे कहा करता था, कि गांवके सभी मनुष्योंके पास एक एक अशरफी और भैंस है।

आप न जावे सासुरे, औरोंको सिख दे—आप न करे औरोंको सिखावे।

औगुन कौन जो कहति है; सुधि करि रोस; निकेत,
जाति आप नहिं सासुरे, औरनको सिख देत।
(मध्यमभाग लो० र० को०।)

आपनी ज़रूर जा जरूर जाइयतुहै—अपनी जरूरत के लिये पाखानेमें भी जाना पड़ता है। जब गरज वश कोई निन्दित काम किया जाय वा नीचकी खुशामद करनी पड़े तब क०।

तालिबोंके घरमें सरापा गुरूर है, जाना पड़ा ज़रूर तो जाये ज़रूर है। सरापा=सिरसे पैरतक, अर्थात् बहुत।

आप पांड़ेजी बैंगन खावें, औरोंको परमोध बतावें—देखो "पर उपदेश कुशल······"

आप बीती कहूं या जग बीती—मैं अपना दुखड़ा सुनाऊं अथवा सभीका।

आप बुरा तो जग बुरा—बुरा आदमी सबको बुरा समझता है।

आप भला तो जग भला—(१) भलेको सब भले ही दीखते हैं। (२) भलेके साथ सभी भलाई करते हैं।

प्रिय बोलै कैसे नहिं जाउँ, हौं काहूको धरौं न नाउँ।
सो लखि निधरक करु कोउ छला, आप भले तब सब जग भला। (लो० र० को०।)

आप भूले उस्तादको लगाय—जब कोई अपनी भूल दूसरेके सिर मढ़े, तब क०।

आपम धाप कड़ाकड़ बीते, जो मारे सो जीते—जल्दी मार, जो पहिले मारेगा सो जीतेगा।

आप मरे जग परलै—जानसे जहान है।

आप मरे सब मर गई दुनियां—ऊ० दे०।

आप मियां सूबेदार, घरमें बीबी झोंके भाड़—दे० "आप तो मियां हफ्त······"

आप मिले सो दूध बराबर, मांग मिले सो पानी। कबीर कहैं वह रक्त बराबर जामें ऐंचा तानी—स्पष्ट। गले पड़कर किसीसे नहीं मांगना चाहिये।

आप रहें उत्तर काम करें दक्खिन—जो अनाड़ीपन वा मूर्खताका काम करता है, उसपर क०।

आप राह राह तुम खेत खेत—जिसका काम बहुत फैला हो उसपर क०।

आप लगावे आप बुझावे, आपही करे बहाना, आग लगा पानीको दौड़े, उसका कौन ठिकाना—स्पष्ट।

आप लिखें खुदा बांचे—जब अपना लिखा न पढ़ा जाय, तब उसे व्यंगसे क०।

आप सुने रागसे, फकीर सुने भागसे—आप पैसा खर्च कर गाना सुनते हैं, फकीर अपने भागसे सुनता है।

आपसे आवे तो आने दो—इस मसलका निकास दो कहानियोंसे है:—

(१) एक कट्टर मुसलमान सुरगीका मांस नहीं खाता था। एक दिन उसकी स्त्रीने एक बड़े मुरगेको मारा और बहुत सा घी मसाला देकर उसका मांस पकाया। जब स्त्रीने अपने खाविंसे खानेका आग्रह किया, तो

वह राज़ी न हुआ। बहुत हठ करनेपर वह केवल उसका शोरवा खानेपर राज़ी हुआ। जब शोरवेका स्वाद उसे अच्छा लगा, तब उसने अपनी स्त्रीसे कहा, कि शोरवेके साथ यदि मांसके टुकड़े आपसे-आप आजाँय तो आने दे। स्त्री तो यह चाहती ही थी, वह जान-बूझकर बहुतसे टुकड़े शोरवेके साथ गिराती गई, यहां तक कि वह सबका सब मांस खा गया।

(२) एक कट्टर ब्राह्मण पण्डित सबको उपदेश दिया करते थे, कि बैंगन खाना हिन्दुओंके लिये निषिद्ध है। एक दिन किसीने एक टोकरी भर बैंगन लाकर उन्हें दिये। जब उन्होंने लेना स्वीकार न किया, तब उनकी स्त्रीने कहा, जो चीज़ आपसे आवे उसे आने दीजिये। इसपर वह राज़ी हो गये और बैंगनसे भरे टोकरेको लेकर घरमें रख आये, (भाव०) लालच मनुष्यको अंधा बना देता है, जिसके वशमें होकर उसे अच्छे बुरेका ज्ञान नहीं रहता।

आपसे गया जहानसे गया—(१) जो अपनेसे गया सो जहानसे गया। (२) खुशामदी आदमी भी कहा करते हैं, अर्थात् जिसको आपके यहां आश्रय न मिला उसको कहीं भी आश्रय न मिलेगा। (३) जो आप सो गया उसके लेखे जहान सो गया।

आपसे भला खुदासे भला—जो अपनी निगाहमें भला है, वह ईश्वरके सामने भी भला है।

आपसों न बोले ताके बापसों न बोलिये—दे० "आपको न चाहे"

आप हारे, बहूको मारे—जो अपना गुस्सा बेकसूर-पर उतारे, उसे क०।

आप ही अपनी क़ब्र खोदते हैं—जो अपनी खराबी अपने हाथोंसे करे, उसे क०।

आप होकी जूतियोंका सदक़ा है—किसी बड़ेके सामने अपनी अधीनता दिखानेके लिये क०।

इस मसलपर एक कहानी इस तरह प्रसिद्ध है—किसी एक मुसलमान मसखरेने सुन्नतके उपलक्षमें अपने बंधु बांधवोंको निमन्त्रित किया। जब वे खाने को गये, तब उसने अपने नौकरसे उनके सब जूते बेच डालने-को कहा। नौकरने भी उसके कथनानुसार जूते बेचकर उसे दाम दे दिये। खाते समय आत-भाइयोंने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा 'भाई साहब! आपने बड़ी तक-लीफ की।' इसपर मसखरेने हाथ जोड़ विनीत भावसे कहा, 'सब आपही की जूतियोंका सदक़ा है, मैं क्षुद्र होकर आपलोगोंकी क्या सेवा कर सकता।'

आप ही नाक चोटी गिरफ्तार हैं—(मु० ज०) खुद मुसीबतमें पड़े हैं।

आप ही मियाँ मंगते, बाहर खड़े दरवेश—जो खुद दूसरोंकी मदद चाहता है, वह किसीकी मदद क्या कर सकेगा?

आपा तजे, तो हरको भजे—अभिमान छोड़नेसे ईश्वरकी उपासना होती है।

जहं हम तहं हरि नाहिं हैं, जहं हरि तह हम नाहिं।
प्रेमनगरी, चलि साकरी, रहिमन दै न समाहिं।

आफँसेका मामला है—जब कोई आदमी दैव संयो-गसे ऐसी संगतमें आ जाय, जहां उसे अपनी इच्छाके विरुद्ध उन लोगोंको खुश करनेके लिये कोई काम करना पड़े, तब क०।

आफँसे भाई आफँसे—ऊ० दे०।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—कोई हिन्दू मुहर्र-मके दिनोंमें ताज़िये देखने गया और मुसलमानोंके बीचमें आ फंसा। मुसलमान जो उस समय छाती पीट रहे थे, उससे कहने लगे, कि तुम्हें भी हमारा साथ देना होगा। वह हिन्दू भी लाचार होकर उन्हींके साथ छाती पीटने लगा। छाती पीटते समय मुसलमान तो कहते थे 'हाय हुसैन, हाय हुसैन' और वह हिन्दू कहता था "आ फंसे भाई आ फंसे।"

आफ़ताबपर थूकनेसे अपने ही मुँहपर पड़ता है—जो अच्छेकी निन्दा करे, उसीकी निन्दा होती है।

आब आबकर मर गया, सिरहाने रहा पानी—फ़ारसी बोलनेवालोंपर व्यङ्ग है। जो लोग अपने घरमें विदेशी भाषा बोलते हैं और घरवाले समझ नहीं सकते, उनपर कही जाती है।

इस कहावतका निकास इस तरह है:—कोई फ़ारसी पढ़ा लिखा मनुष्य एक समय बीमार पड़ा। जब प्यासके मारे उसका गला सूखने लगा तो वह 'आब! आब!!' कहकर चिल्लाने लगा। यद्यपि पानी उसके सिरहाने रक्खा था, परन्तु घरवाले उसकी बोली न समझ सके और प्यासके मारे उसकी प्राण वायु उड़ गई। दूसरी कहावत इस तरह है, "काबुल गये मुग़ल हो आये, बोलें अटपट बानी। आब आबकर प्राण तिजाग दये, पाछ धरा रहा पानी।"

आ बड़े बापकी बेटी है तो पंजा कर ले— (ज०) जो अपने बलका अभिमान करे उसे क०।

आवत हादी जावत संतोष—धनपर कही जाती है। जब धन आता है, तो सुखी होती है, और जब निकल जाता है, तो संतोष हो जाता है।

"जात जात बित होत है, ज्यों जियमें संतोष।
होत होत जो होय तो, होय घरीमें मोष।" (बिहारी)

आय न दीदह, मोज़ह कशीदह—(फा०) बिना पानी मोज़ा उतारना, बिना बातके आपेसे बाहर होना।

आबरू जगमें रहे तो जानजाना पश्म है— इज्जतके सामने जान कोई चीज़ नहीं। यह दुमानी है "आबरू" और "जानजाना" नामके दो शायर लखनऊमें हो गये हैं। दोनोंमें आपसमें बहुत छेड़छाड़ रहती थी। यह शेर "आबरू" का कहा हुआ है, जिसमें 'जानजाना' पर कटाक्ष है। पूरा शेर इस तरह है :—जो सती सतपर चढ़े, तो पान खाना रस्म है। आबरू जगमें रहे तो जानजाना पश्म है।

आ बला गले लग—जान बूझकर आफ़त बुलाना।

आवे न जावे चतुर कहावे (वा बृहस्पत कहावे)— (च०) स्पष्ट।

आम इमलीका साथ है—दोनों ही खट्टे हैं।

आम ईख नीबू वणिक,गारे ही रस देत—आम, ऊख, नीबू और बनियां इनको दबानेसे ही रस मिलता है। यह प्रायः बनियोंपर कही जाती है, जो बिना दबावके जल्दी किसी देश-हितकर कार्यमें रुपये नहीं देते।

आंबा नीबू बानियां गर चापे रस देत,
कायथ कौआ करहटा मुरदाहू सों लेत।

आमके आम गुठलीके दाम—किसी वस्तु या काममें दुहरा लाभ हो तब क०।

'पहिले कर मन इच्छित भोग, पाछे लेइ द्रव्य सुख भोग,
करै पखानो ज्यों बुधि धाम, आम आम गुठलीके दाम।'
(सामान्य, लो० र० को०)

आमके चूमे मुँह भर लाल—संगतका फल होता ही है।

आम खानेसे काम, पेड़ गिननेसे क्या काम— जब कोई मतलबका काम न कर फ़िज़ूल बातें करे, तब क०।

'कह मनाई का तुम्हें', करौं केलि अभिराम।
आम खानसौं कामका, पेड़ गिननसौं काम।'
(लो० र० को०)

आम झड़े पताई, लड़का रोवे दाई दाई— अभी बौरही झड़ा है कि लड़का आमके लिये रोने लगा।

आमदनीके सिर सेहरा है—धनसे ही प्रतिष्ठा होती है।

आमने सामने घर करूं, और बीच करूं मैदान— (ज०) बेशर्म औरतको क०।

आम फले तो नव चले, अरंड फले इतराय— अच्छेके पास धन होनेसे वह नम्र हो जाता है और ओछेके पास होनेसे इतराने लगता है।

आम फले पत राखके, महू फले पत खोय— श्लेष है, जब नये पत्ते निकल आते हैं, तब आम फलता है, और पतझड़ हो जानेपर महुआ फलता है। अच्छे लोग इज्जत रखके काम करते हैं।

आम बो आम खाओ, इमली बो इमली खाओ— जैसा करो वैसा पाओ।

आमा फले तो नीचा नवे—बुद्धिमानोंके पास धन होनेसे वे और भी नम्र हो जाते हैं।

आमोंकी कमाई नीबूमें गँवाई—जब एक कामकी आमदनी दूसरे काममें ख़र्च हो जाती है, तब ऐसा क०।

आय तो जाय कहां—क्या परिणाम होगा उसका निश्चय न हो, तब क०।

आया कर तू जाया कर, टट्टी मत खड़काया कर— (ज०) स्पष्ट।

आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा— जब किसी मनुष्यका ध्यान एक ही तरफ रहता है, और दूसरी तरफसे उसका नुक़सान हो जाता है तब क०।

इस कहावतपर अमीर ख़ुसरोकी एक कविता है। एक दिन अमीर ख़ुसरो प्यासे एक कुएं पर गये। वहां चार औरतें पानी भर रही थीं। उनमेंसे एक इनको पहिचानकर बोली, कि यही ख़ुसरो है, जो शायरी करता है। जब ख़ुसरोने उनसे पानी पीनेको मांगा, तो उन्होंने कहा, कि जो तुम हमारी चीज़ोंपर कुछ कविता बना दो

तो पानी पिलावें। एक बोली 'मेरे घर आज खीर हुई थी, इसपर कुछ कहो'; दूसरी बोली 'मेरे चरखे पर कुछ कहो'; तीसरी बोली 'सामने जो कुत्ता खड़ा है, इसपर कुछ कहो'; चौथीने कहा 'मेरे ढोलपर कुछ कहो।' खुसरो तो बहुत प्यासे थे, बोल उठे 'खीर पकाई यतनसे, चरखा दिया जला। कुत्ता आया खागया, तू बैठी ढोल बजा, ला पानी पिला।' इसपर सब बहुत खुश हुईं और उनको पानी पिला दिया।

आया तो नोश, नहीं फ़रामोश—(मु०) मिला तो खालिया, नहीं चुप रहे।

आया मंगसिर, जाड़ा रंगसिर—मंगसिर या अगहनमें जाड़ेपर रंग रहता है।

आया रमज़ान भागा शैतान—(मु०) स्पष्ट।

आया राजा पोह, जाड़ेको चढ़ा छोह—पूसमें जाड़ेका ज़ोर रहता है।

आया है सो जायगा, राजा रंक फ़क़ीर—ग़रीब अमीर सभीको मरना है।

आये कनागत फूली काँस, बामन उछलें नौ नौ बाँस—कनागत या पितृ-पक्षमें ब्राह्मणोंको निमंत्रण बहुत मिलते हैं, इससे वे बहुत खुश रहते हैं। इसीका उत्तरार्द्ध यह है 'गये कनागत टूटी आस, बामन रोवें चूल्हे पास।' कनागत बाद फिर न्योते नहीं मिलते, इसीलिये हाथसे पकाते हैं और रोते हैं। निमंत्रण-लोलुप ब्राह्मणोंको क०।

आयेकी शादी न गयेका ग़म—सन्तोषी मनुष्यको क०।

आये चैत सुहावन, फूहड़ मैल छुड़ावन—फूहड़ स्त्रियोंपर कहते हैं, जो जाड़ेमें सर्दीके भयसे नहीं नहातीं।

आये थे हरिभजनको ओटन लगे कपास—जिस कामके लिये जाय, वह न कर दूसरे ही काममें फंस जाय, तब ऐसा क०।

आये मीर भागे पीर—मीरके पहुंच जानेपर दूसरे पीर भाग जाते हैं।

यह मसल इस तरह मशहूर है:—अमरोहेमें शेख सद्दो या मीरांजी नामका एक आदमी रहता था। यद्यपि इसे किसी विषयमें पूरा प्रवेश न था, तोभी वह अपनेको एक निपुण ज्योतिषी और भविष्यवक्ता कहा करता था। एक दिन हल जोतते समय खेतमें उसे एक चौमुखा दीया मिला। यह दीया पूर्व समयके किसी प्रसिद्ध जादूगरका बनाया हुआ था। उसमें चार बत्तियां लगी थीं। दीयेमें विशेषता यह थी, कि जो कोई उसे बालता, उसीके सामने चार जिन्न उपस्थित होकर उसकी हरएक आज्ञा पालन करनेमें तत्पर हो जाते थे। पहिले पहिल जब शेख-सद्दोने उस दीयेको बाला, तो अपने सामने चार जिन्नोंको देख वह भयभीत हो गया और दीयेको बुझानेकी कोशिश करने लगा। जिन्नोंने कहा, कि जबतक हमें कोई काम करनेकी आज्ञा न मिलेगी, तबतक हम इस स्थानसे नहीं टलेंगे। शेख कामी पुरुष था। उसने जिन्नोंसे एक खूबसूरत औरत लानेको कहा, जिसे उसने किसी दूर स्थानमें देखा था। यह काम जिन्नोंने तुरत कर डाला। वह औरत एक कुलीन घरकी थी। इस घटनाको देख वह चकित और भयभीत हो गई। जिन्नोंमेंसे एकने शेखसे कहा 'हम लोग तभीतक आपकी सेवा भलीभांति करेंगे, जबतक आप सुराहपर चलेंगे। कुपथगामी होनेहीसे आप मारे जायंगे।' शेखने प्राण जानेके भयसे उस समय तो स्त्रीको छोड़ दिया और जिन्नों द्वारा उसे अपने स्थानपर पहुंचवा दिया। इसी तरह उसने कई बार किया। अन्तमें जब उससे न रहा गया, तब एक दिन उस स्त्रीको बुलाकर उसके साथ बलात्कार किया और उसी दम जिन्नोंने उसे मार डाला। एक प्रसिद्ध व्यक्ति कहलाये जानेके कारण उसकी एक दरगाह अमरोहेमें स्मारक रूपसे बनवाई गई। वहां अभीतक बहुत लोग ज़ियारत करने आया करते हैं। ऐसा कहा जाता है, कि मृत्युके बाद वह एक बड़ा प्रतापी जिन्न हो गया। जब कभी वह मनुष्यके विशेषतः स्त्रियोंके सिरपर आता है, तो और दूसरे पीर जैसे मदारिया, [illegible], अन्य मियां वगैरह भी दो ग्यारह हो जाते हैं। तात्पर्य यह है, कि बड़ोंके सामने छोटोंका प्रभाव कम पड़ता है और वह अपना काम बड़ोंके लिये छोड़ देते हैं।

आरत कहा न करहिं कुकरमू—(तुलसी) दुःखी होनेपर मनुष्यको अच्छे बुरेका विचार नहीं रहता।

आरतके चित रहै न चेतू—(तुलसी) दुःखित मनुष्यको सदा फ़िक्र लगा रहता है।

आरी केरि चलावनो, नहिं बंदरको काम—आरी चलाना बंदरका काम नहीं। सावधानीका काम चपल मनुष्य नहीं कर सकते।

आलमगीर मानी, चूल्हे आग न घड़े पानी—औरंगज़ेबके शासन कालमें लोगोंने बहुत कष्ट पाया था, उसीपर उक्ति है।

आलस निद्रा और जंभाई, यह तीनों हैं कालके भाई—स्पष्ट।

आलसी सदा रोगी—स्पष्ट।

आला दे निवाला—ऐ आला! तू इसे एक कौर रोटी दे।

इस कहावत पर एक कहानी इस तरह है:—कोई राजा एक भिखारिन खूबसूरत लड़कीको देख मोहित हो गया और उससे शादी कर ली। महलमें आकर भी उस लड़कीकी भीख माँगनेकी आदत न छूटी। जबसे वह रानी हो आई, तभीसे वह दुःख पाने लगी, उसे कभी चैन न पड़ता। इसका कारण यूं था कि भीख माँगनेके सिवा और कुछ न था। राजाने उसकी अनिश्चित बीमारीको देख कई हकीमों-को बुलाया, पर कोई भी उसे अच्छा कर न सका। बाद एक चतुर बूढ़ा वैद्य, जो लड़कीका पूर्व जीवनचरित जानता था, राजदरबारमें आया, और उसने रानीको इस रोगसे मुक्त करनेकी प्रतिज्ञा की। उस बूढ़े वैद्यने दीवारके खाने (ताक) में बहुतसे रोटीके टुकड़े रख लड़कीसे कहा, कि तुम नित्य इन खानोंके पास जाकर 'आला दे निवाला' ऐसा कहकर उनमेंसे एक टुकड़ा निकाल लिया करो। फिर क्या था। लड़कीकी भीख माँगनेकी आदत पूरी हुई, और उसके दूसरे ही दिन वह चंगी हो गई। (अत:) लाख कोशिश करनेपर भी किसीकी पुरानी आदत नहीं छूटती है। यही आशय लिए इसकी 'आला दे निवाला, भरो जाती है कदापि ईश्वर आलेसे देता है।

आखिर यह क्या समझ न हो जिसका किताब-पर—जिसके पढ़नेका कुछ असर न हो, वह विद्वान ही कैसा?

आली दिमाग सदा मुफ़लिस—खर्चीला सदा गरीब रहते हैं।

आप गया, आदर गया, गया सुपारी पान, ते दुपहिया हाट भये, खुशी भये अजमान—कंजूस-की मेहमानदारीपर क०।

आयत ही आदर नहीं, जात न राखो हस्त ते दोनों भूखों मरें, पण्डित और गृहस्थ—(१) आते समय आदर नहीं और जाते समय कुछ हाथ न लगे, तो पंडित भूखे मरते हैं। (२) आर्द्रा नक्षत्रके प्रारम्भमें और हस्त नक्षत्रके अन्तमें यदि वर्षा न हो, तो गृहस्थी या खेती डूब जाती है।

आशाका मरे निराशाका जिये—आशामें असन्तोष और निराशामें संतोष=आजाता है।

आशिक़को खुदा ज़र दे, नहीं कर दे ज़मींके परदे—उदारको या तो ईश्वर धन दे या उसे ज़मीनमें छिपा दे।

आशिक़ी, और मामाजीका डर—दोनों काम एक साथ नहीं सध सकते।

करना चाहे आशिक़ी और ख्वाजाजीका डर (नागरीदास)

आसकती गिरा कुएँमें, कहा यहीं चैन है—आलसियोंपर क०। आसकती=आलसी

आस पास बरसे, दिल्ली पड़ी तरसे—जिसे ज़रूरत हो, उसे न मिलकर दूसरोंको कोई चीज़ मिले, तब क०।

आस बिरानी जो तके, जो जीवत मर जाय—उद्योगियोंका कहना है।

आसमानका थूका मुंहपर आता है—(१) जो बड़ोंकी निन्दा करते हैं, उनपर कही जाती है। (२) दुस्साहसके काममें अपनी बुराई होती है।

आसमानकी चील, ज़मीनकी असील—(मु० ज०) आसमानमें चील और ज़मीनमें खरीदी हुई लौंडी दोनों ही खराब हैं।

आसमान ज़मीनके कुलाबे मिलाते हैं—जब कोई असंभव काम करना चाहे, तब क०।

दुरुस्त करें चाहे आप न सुधरे किसी तरह,

यह आसमां ज़मींसे मिलाया न जायगा। (दाग)

आसमानने डाला धरतीने झेला—बेचारे आदमीको कहते हैं जिसकी कोई खबर लेनेवाला नहीं।

आसमान फटे तो कहाँतक थिगली लगे—थोड़ा बिगड़ा हुआ काम सुधर जाता है, पर बहुत बिगड़ जाय, तब नहीं सुधर सकता।

आसमानमें थिगली लगाना—जो काम कोई न कर सके, वह काम करना।

आसमानसे गिरा खजूरमें अटका—(१) जिसमें

बड़े बड़े काम किये हों और साधारण काम न कर सके, उसको क०। (२) जो बड़ी धमधामसे कामका आरंभ करे और थोड़ा ही बाकी रहनेपर उसे छोड़ दे, तब भी क०। (३) जब किसी मनुष्यको किसी धनीसे पुरस्कार मिले और बीचके कारिन्दे उसे दबा बैठें, तब भी कही जाती है।

आसमानसे बातें करना—इतराना। बहुत ऊँची चीजपर भी कही जाती है, जैसे उसका मकान आसमानसे बातें करता है।

आस्तीनका सांप—छिपा हुआ दुश्मन या घरका वैरी।

आह-इ-मरदाँ न ऊह-इ-जनाँ—(फा० मु०) न मर्दकीसी आह न औरतकीसी ऊह। डरपोक मनुष्यको क०।

आहार चूके वह गये, व्यवहार चूके वह गये। दरबार चूके वह गये, ससुरार चूके वह गये—स्पष्ट।

आहारे व्योहारे लज्जा न कारे—भोजन और लेन देनमें शर्म नहीं करनी चाहिये।

(१) कौनौं मीन गहौं सुखशाल,
तजौ नेक भई महा विहाल।
छोजा पछतानौ जग परचार,
लज्जा नहिं अहार व्यौहार॥ (मध्या० खो० द० की)

(२) आहारे व्यवहारेच त्यक्तलज्जा सदा भवेत् (चाणक्य)

इ

इँचा खिँचा वह फिरे, जो पराये बीचमें पड़े—किसीके झगड़ेके बीच न पड़ना चाहिये। बीचवालेकी खराबी होती है।

इंदर राजा गरजा, म्हारा जीया लरजा—(मार०) बनियोंका कहना है, जो लाभके लिये बहुत अन्न जमा करके रखते हैं। बादल गरजनेसे उनको भय होता है, कि वृष्टि होगी तो अन्नका दाम गिर जायगा।

इंद्रजीत सन जो कछु भाखा, सो सब जनु पहिले करि राखा--(तु०)—बहुत होशियार आदमीको क०, जो कहनेके पहिले काम कर रखता है।

इकते एक दईके लाल—एकसे एक पुरुष-रत्न ईश्वरकी सृष्टिमें पड़े हैं।

एक-एकसे एक-एकको बढ़कर बना दिया।
दारा किसी किसीको सिकन्दर बना दिया॥

इक तो बुढ़िया नाचनी दूजे घर भा नाति—एक तो बुढ़िया पहिलेसे ही नाचनेवाली थी, जब उसके पोता हुआ, तब वह कैसे नाचनेसे बाज आ सकती। जब खुशीपर खुशी हो, तब क०।

इक दूबर अरु दोय असाढ़—एक तो ऊंट दुबला दूसरे दो असाढ़। ऊँटको बरसातमें बहुत कष्ट होता है।

इक नागिन अरु पंख लगाई—जब कोई भयंकर चीज और भी भयंकर हो जाय, तब क०।

रचि विपरीत रूप गुन भरी, गाय नृत्य करि धन सब हरी।
कहँ उक्ति ज्यों बुध पद गाई, एक नागिन अरु पंख लगाई॥
(सामान्या)

इक़रारे जुर्म इसलाहे जुर्म—(फा०) दोष स्वीकार करनेसे आधा रह जाता है।

इक लख पूत सवा लख नाती, तिस रावनके दीया न बाती—जब किसीके बुरे दिन आते हैं और नित प्रति हानि होती जाती है, तब क०। हिन्दुओंमें मनुष्यके मरते समय उसके हाथपर दीया रक्खा जाता है। रावणका इतना बड़ा कुनबा होनेपर भी उसके मरते समय कोई न बचा था। बड़े कुनबेपर गर्व न करना चाहिये। यदि ईश्वरका कोप हो, तो सब उसके सामने ही मर जा सकते हैं।

इक्का, वकील, गधा, पटना शहरमें सधा—(पू०) ये तीनों चीजें पटनेमें बहुत हैं।

इक्के चढ़के जहाँ जाय, पैसे देके धक्के खाय—इक्केकी सवारीकी कोई इज्जत नहीं।

इज्जतकी आधी भली, बेइज्जतकी सारी बुरी—स्पष्ट।

इतना झूठ बोले जितना आटेमें नोन—झूठ इतना बोले जितना खप सके।

इतना नफ़ा खाओ जितना आटेमें नोन—(व्य०) बहुत नफ़ा न खाना चाहिये।

इतनी तो कमाई नहीं जितनेका लँहगा फट गया—(ज०) जब लाभसे हानि अधिक हो, तब क०।

इतनी तो राई होगी जो रायतेमें पड़े—अपने कामके लिये हमारे पास काफ़ी चीज़ है।

इतनी सी जान, गज़ भरकी ज़ुबान—जो लड़का होकर लंबी चौड़ी बातें करे, उसको क०।

इत्तफ़ाक़हीमें क़ुव्वत है—(मु०) एकतामें ही बल है।

इधर काटा उधर पलट गया—सांपकी तरह चालाक आदमीको क०।

इधर क़िबले-क़ुतब, उधर खतीजा, मूतूं किधर—(मु०) दोनों तरह मुश्किल। मुसलमान मक्के और खतीजेकी तरफ मुंह करके पेशाब नहीं करते।

इधरके रहे न उधरके रहे—जब कोई दोनों तरफ़से जाय, तब क०।

गये दोनों जहांसे ख़ुदा की क़सम,
न इधरके रहे न उधरके रहे। (अमानत)

इधर गिरूँ तो कुआँ, उधर गिरूँ तो खाई—जब कोई असमंजसमें पड़ता है, तब क०। अथवा जब कोई मनुष्य अपने ही आत्मीय जनोंके झगड़ेमें पड़ता है और किसीसे भी बुरा नहीं बना चाहता तब क०।

बुराई है आज बोलनेमें न बोलनेमें भी है बुराई;
खड़ा हूं ऐसी विकट जगहपर इधर कुंआ है उधर है खाई।
(बेताब)

इधर न उधर यह बला किधर—न मरे और न आराम हो ऐसे ही मौकेपर क०।

इनकी नाकपर गुस्सा रक्खा ही रहता है—जिसको जरासी बातमें क्रोध आ जाय, उसे क०।

इनके चाटे रूख नहीं जमते }
इनके चाटे रोंगटे नहीं जमते } जो बहुत ठग और दगाबाज़ होते हैं, उनको क०।

इनको पत्थर मारे मौत नहीं—बेहयाको क०।

इनको भी लिखो—मूर्खको क०।

इस मसलपर एक कहानी इस तरह है:—एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे पूछा, कि संसारमें अन्धोंकी संख्या अधिक है या आंखवालोंकी? इसपर चतुर बीरबलने उत्तर दिया 'धर्मावतार! संसारमें अन्धे ही बहुत हैं।' बादशाहने आश्चर्यमें आकर कहा, कि जबतक इस बातको प्रमाणित कर न दिखाओगे, तबतक हम इसे नहीं मान सकते। इस बातको सिद्ध करनेके लिये बीरबल अपने साथ एक मुंशीको लेकर घरसे निकले और रास्तेमें कंकड़ चुनने लगे। जो कोई उस राहसे आता जाता था, वह बीरबलको कङ्कड़ उठाते देख पूछता था 'बीरबल! यह क्या कर रहे हो?' इसपर बीरबल अपने मुंशीसे कहते जाते "इनको भी लिखो।" अर्थात् इनका भी नाम अन्धोंमें लिखो, क्योंकि ये देख रहे हैं, कि मैं कङ्कड़ उठा रहा हूं, तौभी पूछते हैं, कि क्या करते हो? अब लौटकर बीरबलने बादशाहको अन्धोंकी सूची दिखाई, तो वह उनकी बुद्धिमत्ताकी प्रशंसा करने लगे।

इन तिलों तेल नहीं निकलता—कंजूसोंपर क०। अर्थात् यहांसे कुछ मिलनेकी आशा नहीं है।

कायर छोरीको मिस ठानि,
सुख कुच मीड़ब पर तिय जानि।
खोग पखानो मनमें ह्वैहैं,
ऐसे तिलन तेल नहिं पैहैं॥

ऐसे तिलोंसे तेल नहीं निकलता अर्थात् सुख और कुच मड़नेसे वह जो रस है सो न मिलेगा।
(केशव गोपना लो० र० कौ०)

इन दोनोंका आजकल खूब क़ारूरा मिल रहा है—दोनों एक हो रहे हैं।

इन नयनोंका यही विशेष, वह भी देखा यह भी देख—जब अच्छी अवस्थाके बाद बुरी अवस्था आती है, तब ऐसा क०, अर्थात् वह सुखके दिन भी देखे, अब यह कष्टके दिन भी देखने पड़ते हैं।

इन बिचारोंने हींग कहां पाई, जो बगलमें लगाई—ऐसे अच्छे मनुष्योंसे ऐसा दुष्कर्म कैसे हो सकता है।

इनशा अल्लाताला, बिल्लीका मुंह काला—जो तुच्छ बातोंके लिये लालायित हों उनको, क०।

इनसान क्या न जो दिले दिलबरमें घर करे—वह मनुष्य ही क्या जो किसीके मनमें न घुस सके।

कौड़ा ज़रासा और वह पत्थरमें घर करे,
इनसान क्या न जो दिले दिलबरमें घर करे—(ज़ौक़)

इनसान ही तो है—जब किसीसे भूल हो जाती है, तब क०।

इनसानियत और इल्ममें बहुत फ़र्क़ है—मनुष्यत्व और विद्यामें बहुत अन्तर है। विद्या पढ़नेसे आती है, पर मनुष्यत्व बिना सत्संगके नहीं प्राप्त होता। उदा०

आदमीयत और शै है इल्म है कोई और चीज़,
लाख तोतेको पढ़ाया फिर भी हैवां ही रहा।

इनायते शाही किसीकी मीरास नहीं—राजाका अनुग्रह किसीकी बपौती नहीं है।

इराकीपर ज़ोर न चला, गधीके कान अमेठे—जब बलवानपर ज़ोर नहीं चलता और ग़रीबपर गुस्सा उतारते हैं, तब क०।

इल्मका परखना लोहेके चने चबाना है—विद्वान्‌की जांच करना मुश्किल है।

इल्म थोड़ा ग़रूर ज्यादह—विद्या थोड़ी अहंकार बहुत।

इल्म दर सीना ना दर सफ़ीना—(फ़ा०) विद्या हृदयमें रहती है पुस्तकोंमें नहीं।

इल्लत जाय धोये धाये, आदत कहां आय—ऐब छूट जाता है, टेव नहीं छूटती।

इब्तिदासे इंतिहा तक—(मु०) आरम्भसे शेषतक, सिरसे पैर तक।

इश्क़के कूंचेमें आशिक़की हजामत होती है—क्योंकि जहां दिल लगता है वहां सर्वस्व अर्पण कर देता है। हजामत बनना सफ़ाई होनेको क०।

इश्क़के शौक़ीन ख़र्चके कोताह—जब कोई आदमी नाम और आराम तो बहुत चाहता है पर पैसा नहीं ख़र्च किया चाहता, तब क०।

इश्क़ छिपानेसे नहीं छिपता—प्रेम छिपाये नहीं छिपता।

इश्क़, मुश्क, खांसी ख़ुश्क, ख़ून ख़राबा छिपता नहीं—प्रेम, कस्तूरी, सूखी खांसी और ख़ून ये छिपानेसे नहीं छिपते।

इश्क़में शाह और गदा बराबर—प्रेममें बादशाह और कंगाल बराबर हैं।

इश्क़ या करे अमीर या करे फ़क़ीर—प्रेम अमीर या फ़क़ीर दो ही कर सकते हैं।

इश्क़े मजाज़ीसे इश्क़े हक़ीक़ी हासिल होती है—मनुष्यसे प्रेम करते करते ईश्वरसे प्रेम हो जाता है।

इसका दुख दिखावे मुख—मुंह देखनेसे दुःख जान पड़ता है।

इस कान सुनो, उस कान उड़ाई—किसीकी बात न सुनना या उसपर ध्यान न देनेपर क०।

इसके पेटमें दाढ़ी है—यह लड़का होनेपर भी सयाना है।

इस घरका बाबा आदम ही निराला है—इस घरकी सभी बातें अनोखी हैं।

इसमें भी कुछ भेद है—जरूर कोई बात छिपी हुई है।

इस हाथ देना उस हाथ लेना—तत्काल फल मिलना।

'कलयुग नहीं करयुग है यह,
यहां दिनको दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है,
इस हाथ दे उस हाथ ले॥ (नज़ीर)

इसलाम कुली पांडे—आधे हिन्दू और आधे मुसलमान। जो हिन्दू होकर मुसलमान वा ईसाई पोशाक पहिनते हैं और कुछ चिन्ह हिन्दुओंके भी रखते हैं, उनपर व्यङ्ग है, जैसे हैट कोट पहिने और त्रिपुण्ड लगाये।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—एक मुसलमान फ़क़ीरने देखा, कि मुझे केवल रोटियां ही मिलती हैं और हिंदू ब्राह्मणोंको पूरियां और मिठाई मिलती है, इससे ब्राह्मण बनना अच्छा है। उसने एक धोती पहिन ली, गलेमें जनेऊ डाल लिया, माथेमें तिलक लगा लिया और बगलमें पोथी दबाली। ऐसा भेष बना वह एक ब्राह्मणके यहां गया, जहां ब्राह्मण भोजन हो रहा था। वहां पहुंचकर उसने कहा "धोती लिनी, पोथी लिनी दर गलू ज़ुन्नार, इसलाम कुली पांडे मनम् पूरियां बियार।" अर्थात् मैंने धोती पहन ली है, पोथी लेली है, गलेमें जनेऊ भी डाल लिया है, और इसलामसे बदलकर मैं पांडे होगया हूं, अब मेरे वास्ते पूरियां लाओ।

इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं, जो तर्जनि देखत मर जाहीं—(तुलसी) जब कोई किसीको झूठा रोब दिखाकर डराना चाहता है, तब क०। यह बात लक्ष्मणजीने परशुरामजीसे कही थी, कि यहां कोई कोंहड़े-

उठते ही टांग टूटी—बदनसीब आदमीको कहते हैं, जो कोई काम करने जाय और पहिले ही उसमें विघ्न पड़े।

उठाऊका माल घटाऊमें जाय—मुफ्तमें मिला हुआ माल या जिस मनुष्यके रहनेका ठीक ठिकाना न हो, उसका माल यों ही लुट जाता है।

देत हरख परकीया जानि, तजि चकुलावत हिय हित मानि।
कहै उक्ति ज्यों जगत खटाऊ, होइ बटाऊ माल लुटाऊ॥
(लो० र० को०)

उठाऊ चूल्हा—उस मनुष्यको कहते हैं, जिसके रहनेका कोई पक्का ठिकाना नहीं।

उठाओ मेरा मकना, मैं घर संभालू अपना—(मु० ज०) जो नई विवाहिता स्त्री ससुरालमें आते ही मालकिन बनना चाहे, उसे क०।

उठा बबूला प्रेमका, तिनका चढ़ा अकास, तिनका तिनमें मिल गया, तिनका तिनके पास—मृत मनुष्यकी आत्माके विषयमें क०। जब शरीरका नाश होता है तो देह पंचतत्वोंमें मिल जाती है और आत्मा जहांसे आई है वहीं चली जाती है।

उठी पैंठ आठवें दिन—(व्या०) आजकी उठी हाट फिर आठ दिनपर लगेगी, इससे जो कुछ लेना हो सो आज ही ले लो। तात्पर्य यह है, कि मौकेको हाथसे न जाने देना चाहिये।

उड़ चल पंछी पीके देश—(ज०) विरहिणी स्त्री पतिके वियोगपर क०।

उड़ता गप्पा—अचानक कहींसे थोक रकम विना परिश्रम मिल जाय, तब क०।

उड़ती उड़ती ताक चढ़ी—जब कोई अफवाह पक्की हो जाती है, तब क०।

उड़ती चिड़िया परखते हैं—बुद्धिमान मनुष्यपर कही जाती है, जो आदमीका चेहरा देखकर ही मनका हाल जान जाय।

उड़तेके पर काटते हैं—ऊपर दे०। बहुत चालाक आदमीको क०।

उड़द कहे मेरे माथे टीका, मो बिन ब्याह न होवे नीका—हिन्दुओंके यहां विवाहमें उरदकी बहुत जरूरत पड़ती है। माथे टीका कहनेसे मतलब यह है, कि मैं भी एक प्रधान चीज हूं। उरदके मुंहपर सफेद छींटा भी होता है।

उड़द कहे मैं सबसे नीका, सब पंचों मिल दीना टीका। जब मेरे हों उड़दी बड़े, गबरू खा जांय खड़े खड़े—(ग्रा०) स्पष्ट।

उड़दी उड़दोंकी भली, रसकी आछी खीर, लाज जो राखे पीवकी, वह भी आछी बीर—(ग्रा०) बड़ी उरदकी और खीर दूधकी अच्छी होती है। वह स्त्री भी बहुत अच्छी है जो अपने स्वामीकी इज्जत रखती है।

उड़ी जात कितहू गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ—गुड्डी चाहे किसी तरफ उड़कर क्यों न चली जाय, तौभी उसकी डोर उड़ानेवालेके हाथमें रहनेसे वह सर्वदा उसके ही अधीन रहती है। जब कोई किसीके अधीन रहे और जिस रास्ते वह चलावे उसी रास्ते चलना पड़े, तब ऐसा क०।

कहा भयो जो बीछुरे, तो मन तो मन साथ।
उड़ी जात कितहू गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ॥ (बिहारी)

उतको भूल न जा रे भाई, जित होती हो मार पिटाई—(उप०) जिधर मार पीट होती हो, उधर न जाना चाहिये।

उत मत गेहूं बुवा रे चेले, जित हों थल और पाथर ढेले—(कृषी) जिस जमीनमें ढोंके और पत्थर हों, वहां गेहूं न बोना चाहिये।

उत मत रो अपना दुःख जाकर, जित आवैं बैरी उमड़ाकर—(उप०) स्पष्ट।

उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई—जब इज्जत ही नहीं रही, तो डर किसका? लोई=कंबल, उतर जाना=नंगे हो जाना=इज्जत उतर जाना।

उतरा कबीर सरायमें, गठकतरेके पास। जस करसी तस पावसी, तू क्यों भयो उदास—स्पष्ट

उतरा घाटी, हुआ माटी—(१) जबतक अन्न गलेसे नीचे नहीं उतरता, तब तक वह भोजन कहाता है, परन्तु जब गलेसे नीचे उतरा कि मट्टी हो गया। जब कोइ पदार्थ या मनुष्य कार्य हो जानेपर निरर्थक होजाय, तब उस पदार्थ या मनुष्यके लिये ऐसा क०। (२) मृत शरीरपर भी

कही जाती है; जहां श्मशानमें पहुंचा और मट्टी हुआ।

उत रावन इत राम दुहाई, जयति जयति जय पड़ी लड़ाई—(लसो) जब दोनों तरफका जोड़ बराबर होता है तब क०।

उतरा सहना मर्दक नाम—जब मनुष्य अपने उच्च स्थानसे गिर जाता है, तब उसका प्रभाव भी घट जाता है। जो अमला वा गुमाश्ता अपने काम-परसे हटा दिया गया हो और लोग उसका पहिले जैसा सम्मान न करते हों, तब ऐसा क०।

(१) तिय तन भाखयो कोचम भूप, धर्यो चहत सिंसवारैरूप
कहिं पखा री जी बुधिधाम, उतरो सहना मर्दक नाम ॥
(लो० र० की) सहना=कोतवाली, मर्दक=नामर्द; अर्थात् कोतवाली छुटनेसेही नामर्द नाम पड़ा, ऐसेही लड़कपन जातेही जवान नाम पड़ा।

(२) सदा न निभे कपट व्यवहार,
बहु दिन यदपि सुमत संसार।
भेद खुल निन्दा सब ठाँव,
उतरा सहना मरदक नाँव ॥

उतरे जीसे चीज़ जो, वाकी सार न होय। तू ऐसा मत कीजियो, जगत बिसारे तोय—जो चीज मनसे उतर जाती है, उसका कुछ मूल्य नहीं रहता। इसलिये तुम भी ऐसा काम न करो जिससे लोग तुमसे घृणा करें।

उतसे अन्धा आय है, इतसे अन्धा जाय। अन्धेसे अन्धा मिला, कौन बतावे राय—स्पष्ट। जहां काम करानेवाले और करनेवाले दोनों ही उस कामको न समझते हों, तो वह काम कभी पूरा नहीं उतर सकता। ऐसी जगहपर इसका प्रयोग होता है।

उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा—जल्दबाज आदमी पागलके तुल्य होता है और उसका काम सफल नहीं होता। जो गम्भीरता-पूर्वक धैर्यके साथ काम करता है, उसका मनोरथ अवश्य पूरा होता है।

उतारो नाथ पार मोरी नैया—संकटके समय ईश्वर-से प्रार्थना है।

उत्तम खेती मध्यम वान, नीच नौकरी भीख निदान—खेती करना सबसे अच्छा काम है, व्यापार करना मध्यम है, पराई सेवा करना बुरा काम है और भीख मांगना तो सबसे बुरा है।

उत्तम गाना मध्यम बजाना—स्पष्ट।

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीचपै होय, परो अपावन ठौरमें, कञ्चन तजे न कोय—(वृन्द) स्पष्ट।

विषादप्यमृतं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम्।
नीचादप्युत्तमां विद्यां स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ (चाणक्य)

उत्तरकी हो इस्तरी (स्त्री), दक्खिन ब्याही जाय, भाग लगावे जोग जब, कुछ ना पार बसाय—जहां जिसका संयोग होता है, वहां जाना पड़ता है। हिन्दुओंको परदेश जाना कष्टकर होता है।

उत्तर गुरु दक्खन माँ चेला, कैसे विद्या पढ़े अकेला—स्पष्ट।

उत्तर जाय कि दक्खन, वही करमके लक्खन—स्पष्ट।

उत्तर रहे बतावे दक्खन, वाके आछे नाहीं लक्खन—जो रहे कहीं बतावे कहीं, उसपर क०। झूठेका विश्वास नहीं।

उत्तर हर जो बरषा होवे; काल पिछोकर जाकर रोवे—(कृषी) यदि उत्तरमें वर्षा हो, तो अकाल पड़नेका डर नहीं रहता।

उथली रकाबी फुल फुला भात, लो पञ्चो हाथों हाथ—कंजूस आदमी वा झूठा भड़वा दिखाने-वालोंपर क०।

उथले कहिके गहिरे बोरै—जो किसीको धोखा दे सहज बताकर कठिन काममें फंसा दे, उसपर क०।

उदधि पिता तऊ चन्द्रको, धोय न सक्यो कलङ्क—(वृन्द) किसीके दोषको कोई सामर्थ्यवान पुरुष भी नहीं छिपा सकता।

उदधि रहे मर्यादमें, बहे उलटि नद नीर—(वृन्द) जो गम्भीर है, वह अपनी मर्य्यादा नहीं छोड़ता, परन्तु ओछा इतराता फिरता है।

उदर निमित्तं बहु कृत वेषा—(सं०) पेटके लिये आदमी बहुत तरहके स्वांग रचता है।

उदासीन धन, धाम न जाया—जो त्यागी हैं, वे धन, घर और स्त्रीसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते।

उद्यम किये दलिद्दर भागे—उद्योग करनेसे दरिद्रता जाती रहती है।

उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी—(सं०) उद्योगी पुरुषोंके पास लक्ष्मी सदा उपस्थित रहती है।

उधली बहू वलेंडे सांप दिखावे—(अ०) चंचल बहू छप्परमें सांप दिखाती है, अर्थात् बहाना करके घरसे बाहर निकलना चाहती है। जो झूठा बहाना करके अपना मतलब साधा चाहे, उसे क०।

उधारका खाना और फूसका तापना बराबर है—जैसे फूसकी आग ज्यादा देरतक नहीं ठहर सकती, वैसेही उधार लेकर खाना भी अधिक दिनोंतक नहीं चल सकता।

उधारका खाना कोई नहीं भूलता—स्पष्ट। (अश्लीलताके कारण इस कहावतका कुछ अंश छोड़ दिया गया है।)

उधार काढ़ि व्यवहार चलावे, छप्पर डारैं तारो। सारेके संग बहिनी पठवे, तीनउका मुंह कारो—(घाघ) स्पष्ट।

उधार खाये बैठे हैं—तैयार बैठे हैं।

उधार दिया गाहक खोया—(व्य०) जिस ग्राहकको माल उधार दिया जाता है, वह देनेके डरसे जल्दी नहीं आता।

उधार देना लड़ाई मोल लेना है
उधार दीजे दुश्मन कीजे, } (व्य०) जब तुम अपना पावना मांगोगे तभी बिगाड़ होगा।

उधार बड़ी हत्या है—(व्य०) किसीका देनदार होना बहुत बुरा है।

उधियाइल सतुआ पितरनके दान—(पू०) जो सत्तू उड़ गया वा नष्ट हो गया, वह पितरोंके लिये समझा गया। जब कोई किसीको ऐसी चीज देकर एहसान किया चाहे जो अपने काममें न आवे, तब क०।

उनके पेशावमें चिराग जलता है—प्रतिष्ठित और दबाववाले मनुष्योंको क०।

उन्नीस बीसका तो फर्क होता ही है—(व्य०) संसारमें दो चीजें बिलकुल एकसी नहीं होतीं, कुछ न कुछ फर्क रहता ही है।

उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं—(तुलसी) कमल और जोंक दोनों ही एक साथ जलमें पैदा होते हैं, परन्तु अपने अपने गुण और दोषके कारण वे भिन्न भिन्न हो जाते हैं। इसी तरह सभी मनुष्योंको ईश्वरने उत्पन्न किया है, लेकिन अपने अपने गुण और दोषकी वजहसे वे भले बुरे गिने जाते हैं। दो सगे भाई जब विपरीत आचरणके होते हैं, तब उनपर क०।

यदपि सहोदर होय तव, प्रकृति औरकी और।
विष मारै ज्यावै सुधा, उपजै एकहि ठौर॥ (छन्द)

उपले थापती आइयां, हाथ पोंछै दरियाइयां—(पं०) जब कोई गरीब घरकी लड़की धनवानके यहां ब्याही जाय और अपनी पूर्व अवस्थाको भूल जाय, तब ऐसा कहते हैं। दरियाई कनावेजकी तरहका रेशमी कपड़ा होता है, जो पंजाबमें तैयार होता है।

उपास भलाकी पतोहूका जूठ—दोनों ही बुरे हैं। कोई पहिलेको और कोई दूसरेको कुछ अच्छा समझता है।

उमरा जो कहें रात तो हम चाँद दिखा दें—खुशामदी आदमीको क०।

उमा दारु योषितकी नाईं, सबहिं नचावत राम गुसाईं—(तुल०) ईश्वर कठपुतलीकी तरह सबको नचाता रहता है।

उरझेसे सुरझे भले, जो प्रभु राखे टेक—स्पष्ट।

उर बैजन्ती माल सुमिरनी श्यामकी, भोजन दूनों जून कृपा हो रामकी, साधु सन्तका सङ्ग तीर्थका डोलना, इतना दे करतार तो फिर क्या बोलना—वैष्णव चाहते हैं।

उलझ जायगा तो सुलझ ही रहेगा—(१) ब्याह हो जायगा तो सम्हल जायगा। (२) किसी काममें लग जायगा तो सुधर जायगा। आवारा आदमीको क०।

उलझना आसान सुलझना मुश्किल—किसी झगड़ेमें पड़ जाना सहज है परन्तु उसे निपटाके साफ निकल आना मुश्किल है।

उल्टा चोर कोतवाले डाँटे—जब कोई मनुष्य अपराध करके उल्टे उसी मनुष्यको झिड़क झिड़ककर बातें कहे जिसका नुकसान हुआ हो, तब क०।

लखि सदीप कछु कह्यो न बाल,सौं तुम कथि रहे को लाल।
रसिक नाम काहेको भाड़े, उलटि चोर कोतवालहि डाँड़े।
(नाम। लो० र० को०)

उल्टा चोर बैकुन्ठे जाय—जब दोषी होकर भी प्रतिष्ठाको प्राप्त हो, तब क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—किसी चोरने मौका पाकर एक स्त्रीको लूटा। जब उसने उसके घर-की सभी चीजें ले लीं, तब उसके गहने भी बदनसे उतार लिये। एक छल्ला उसकी उँगलीमें फँस गया था, चोरने बहुत जोर किया, पर वह न उतरा। इसपर स्त्री बोली, कि तूने सब चीजें तो ले लीं, यदि एक छल्ला न लेगा तो क्या होगा। यह सुनकर चोर बोला, कि इस एक छल्लेसे मैं चार साधुओंको खिलाऊंगा। उसकी ऐसी साधुओंपर भक्ति देख साक्षात् विष्णु भगवान वहां प्रगट हुए और उस चोरको सदेह बैकुण्ठ ले गये।

उल्टा नाम जपत जग जाना, बाल्मीक भये ब्रह्म समाना—(तुल०) रामका नाम उल्टा चाहे सीधा जिस तरहसे लिया जाय, उससे मुक्ति ही होती है। बाल्मीक रामके बदले मरा मरा कहते सिद्ध हो गये थे, यह कथा सबको विदित है।

उल्टी अंतड़ी गलेमें आई—गये थे सुलझने उल्टे उलझ गये।

उल्टी खोपड़ी अन्धा ज्ञान—(१) फकीरोंका कहना है। तात्पर्य यह है, कि सिर नीचा करनेसे (नम्र होनेसे) गुप्त ज्ञान प्राप्त होता है। (२) जिस आदमी-को कहा जाय कुछ और समझे कुछ, उसे भी क०।

उल्टी गंगा पहाड़को चली—कोई असम्भव घटना हो, तब क०।

उल्टी गंगा बहाना—जो काम तुम्हें दूसरेके साथ करना चाहिये, वही काम यदि दूसरा तुम्हारे साथ करे, तब क०।

उल्टी टांगे गले पड़ी—देखो 'उल्टी अंतड़ी'।

उल्टी माला फेरना—किसीको शाप देना या किसी-का बुरा चाहना।

उल्टी सेफ़ी पढ़ना—(मु०) ऊपर दे०। इसमें एक नंगी तलवार खड़ी की जाती है और जिससे शत्रुता हो उसका नाम लेकर तथा कुछ पढ़कर उस-पर फूंकते हैं।

उल्टे छुरेसे मूड़ना—ठगनेपर या आसामी उतारने-पर क०।

उल्टे बांस बरेलीको—(१) जब कोई विपरीत काम किया जाय, तब क०। बरेलीके चारों तरफ बांस बहुत पैदा होता है। इसलिये उसका नाम बांस-बरेली पड़ा है। वहांसे आसपासके दियारोंमें बांस चलान होता है। दूसरी जगहसे बांस वहां भेजना मूर्खता है। (२) बरेली या बड़ेरी उस लम्बी लकड़ीको कहते हैं जो छप्पर छानेके लिये सबसे ऊपर दी जाती है। उसीपरसे दलवां बांस दोनों तरफ बिछाये जाते हैं। बड़ेरीपर बांस उल्टे रक्खे जाते हैं अर्थात् बांसका मोटा भाग ऊपर और पतला नीचे किया जाता है।

उल्लूकी दुम फाख्ता—मूर्खको क०। जहां बेजोड़ काम हो, वहां क०।

उल्लू खिलाना—(मु० जं०) अपने वशमें कर लेना। यहांकी स्त्रियां, विशेषकर मुसलमान, ऐसा समझती हैं, कि जो उल्लूका मांस खाता है, वह स्त्रीके वशमें हो जाता है।

'ओढ़ने उसको उसको है उल्लू खिला दिया।
है उस हरामखोरको उल्लू बना दिया॥' (ज़फ़र)

उवासी यमका संदेशा—जम्हाई आना अच्छा नहीं है।

एक अमीरको जब जम्हाई आती थी, तो उसके मुसाहब चुटकी बजाते थे। एक चौबेजी भी मुसाहबोंमें नये भरती हुए। उन्होंने सबसे पूछा, कि जम्हाई आनेपर तुम लोग चुटकी क्यों बजाते हो? मुसाहबोंने कहा, कि जम्हाई यमका सन्देशा है अर्थात् जब यमके दूत लेने आते हैं, तब जम्हाई आती है। उनको डरानेके लिये हम लोग चुटकी बजाते हैं। दूसरे दिन जब उस अमीर

को समझाई आयी, तो चौबेजी उसकी छातीपर चढ़ बैठे और उसके मुंहपर सोटा रखकर बोले, कि चुटकी बजाइबे सों ये सारे यमके दूत नाहिं मानेंगे, याते मैं इनकी सोटासों खबर लेऊंगो।

उसकी टाँगें उसीके गलेमें—जो अपनी ही करतूतसे विपदमें फंसे, उसे क०।

उसकी तूती बोल रही है—जिस मनुष्यकी खब बढ़ती हो या कारबार खूब चलता हो, उसे क०।

उस कूकरसे बचकर रहे, जाको जगत् कटखना कहे—(उप०) जिसे सब कोई बुरा कहते हों, उससे बचकर रहे।

उसके कानपे जू नहीं रेंगती—वह किसीका कहना नहीं सुनता।

उसके भाग बड़े अलबेले, जो दौलतमें आवे खेले—जो धनवानके घर पैदा होते हैं, वे बड़े भाग्यवान हैं।

उसको सीख न दो कभी, जो हो कट्टर नीच, लोह मेख नाहीं धंसे, कबहूं पाथर बीच—(उप०) स्पष्ट।

उस जातकपर प्यार जताओ, मातपिता बिन जिसको पाओ—(उप०) स्पष्ट।

उस जातकसे करो न यारी, जिसकी माता हो कलहारी—(उप०) स्पष्ट।

उस दिन भूलें चौकड़ी, वली, नबी और पीर, लेखा लेवे जिस दिना, क़ादर पाक क़दीर—(मु०) जिस समय ईश्वर विचार करने बैठेगा, उस समय किसीकी भी नहीं चलेगी।

उस नरको ना सीख सुहावे, नेह फंदमें जो फंस आवे—स्पष्ट।

उस नरसे तुम मिलो न कोई, जांको देखो कपटी धोई—स्पष्ट।

उस पुरखाका नाहिं भरोसा, जो लें चीज़ दिखावे ठोसा—जो लेके दे नहीं, उसका विश्वास मत करो।

उस बस्तीमें तू कभी, ना कीजो विश्राम, जो हो नामी देशमें, ठग चोरनका ग्राम—जहां ठग और चोर रहते हों, वहां न ठहरना चाहिये।

उस बूंदसे भेंट नहीं—जब कोई मनुष्य समयपर सामान्य बातके लिये चूक जाय और पीछेसे अपनी भूल छिपानेके लिये अनेक उपाय करे, तब क०। इस कहावतकी उत्पत्ति इस कहानीसे है। एक गंधी बहुत सा इत्र लेकर किसी राजाके पास बेचने गया। इत्र दिखाते समय उसकी एक बूंद फ़र्शपर गिर पड़ी। राजाने उसे झट उंगलीसे पोंछ कर सूंघा और मूंछोंमें लगा लिया। राजाका ओछापन देख गंधी मुस्कराके रह गया। राजाका मंत्री, जो बहुत होशियार था, इस बातको ताड़ गया। उसने गंधीका सब इत्र खरीदकर मुंह मांगा दाम दे दिया। अपने राजाको छोटे दिलका समझकर, गंधी कहीं दूसरे दरबारमें उसकी हंसी न उड़ावे, इस ख्यालसे उसने सब इत्र गंधीके ऊपर ढलवा दिया। गंधी यह कहता हुआ चला गया, "बूंदका चूका घड़े ढुलकावे, पर उस बूंद से भेंट कहां।" अर्थात् राजाकी क्षुद्रता जो उस गिरी हुई बूंदको उठा कर सूंघ लेनेमें प्रगट हो चुकी है, वह घड़ाभर इत्र मेरे ऊपर ढुलकानेसे नहीं छिप सकती

उस सेती मिल दौड़कर, जो नर ज्ञानी होय, दाता दुश्मन भी भला, कह गये यह सब कोय—देखो 'नादान दोस्तसे...'।

उसीकी जूती उसीका सिर—उसीकी चीज़से उसीका नुक़सान करना।

उसी रूखपर है चढ़ा, उसीकी जड़ कटवाय, वह मूरख तो एक दिन, गिर दबकर मर जाय—(उप०)देखो "जिस गाछपर......"।

उसे तो धोनी ही नहीं आती—जो बहुत सीधा होता है और कुछ नहीं जानता, उसे क०। धोनी हाथ-पानी लेनेको कहते हैं।

उस्ताद, हज्जाम; नाई, मैं और मेरा भाई; घोड़ी और घोड़ीका बछेड़ा, और मुझको तो आप जानते ही हैं—ब्याह शादीमें नाई या जाजक कई नामोंसे पृथक् पृथक् नेग लेता है जो सब उसीके पास जाता है। उन लोगोंपर कही जाती है जो कोई चीज बंटते समय घुमा फिराकर कई नामोंसे लेते हैं, जो सब वास्तवमें उन्हींको मिलती हैं।

ऊ

ऊंघतेको ठेलतेका बहाना—दूसरेका जरासा दोष देखकर अपना सब दोष उसके सिर मढ़ देनेपर क० । ऊंघनेसे तो गिरा, पर बहाना दूसरेको धक्का देनेका लगा दिया ।

ऊंच निवास नीच करतूती, देख न सकहिं पराइ विभूती—(तुलसी) दुष्टोंको क० ।

ऊंच नीचमें बोई क्यारी, जो उपजी सो भई हमारी—जो थोड़ी उपजेगी सो ही मिलेगी । बेक़ायदे काम करनेपर सफलता नहीं होती ।

ऊंच बढ़ेही खोखर बांस, ऋण खैलौं बारह मास (पू०) बारहों महीने उधार लेकर खाना बोथे बांसकी बढ़ ड़ीके तुल्य है, जो जल्दी टूट जाती है ।

ऊंची दूकानको फीकी मिठाई
ऊंची दूकान फीका पकवान
} जहां खाली दिखावटी काम हो, वहां क० ।

काहा ठीक है यह मक़ूला किसीका ।
कि दूकान ऊंची है पकवान फीका ॥

ऊंचे चढ़के देखा, तो घर घर येही लेखा—सब घरोंमें यही हाल है ।

ऊंट ऊंट किदारा गावें—जब एक प्रकृतिके दो या अधिक मनुष्य मिल जाते हैं तो बहुत खुशी मनाते हैं । दो मूर्ख एक राय होकर अपना ही राग अलापें, तब क० ।

सुकिया सुन्दरि सीनहिं मीत, अति छदमसों अतिसै प्रीत ।
लोग उक्ति सांची दरसावें, ऊंटहिं ऊंट किदारा गावें ॥
(भुट । लो० र० को०) ऊंट ऊंट मिलके मंसे केदारा राग गावें ॥

ऊंटका पाद न आसमानका न ज़मीनका—निकम्मे आदमीके अधूरे काम तथा व्यर्थकी बातपर क० ।

हरी न सिहिं हरि भक्ति, नहिं, लयी विषयके स्वाद ।
सो नहिं जिमि आकाशको, भयो ऊंटको पाद ।
(नागरीदास)

ऊंटका मुंह न जाने किधर उठे—उदग्ड आदमी न जाने क्या कर बैठे ।

ऊंट किस करवट बैठे
ऊंट किस कल बैठता है
} न जाने क्या फैसला हो । जब दो मनुष्योंमें विवाद होता है और किसकी जीत होगी यह जाननेके लिये लोग उत्सुक होते हैं, तब क० ।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—किसी कुम्हार और घसियारेने एक ऊंट किराये किया । एक तरफ़ कुम्हारके बरतन रक्खे गये और दूसरी तरफ घसियारेकी घास । जब ऊंट घास खाने लगा, तब कुम्हार खुश हुआ और कहने लगा, कि मेरा यह कुछ नुक़सान नहीं कर सकता है । इसपर घसियारेने कहा, देखिये ऊंट किस करवट बैठता है । जब ठिकानेपर पहुंचे, तब ऊंट उस करवट बैठ गया जिधर कुम्हारके बरतन थे, जिससे वे उसकी सब चूर हो गये ।

ऊंटकी चोरी और झुके झुके—बड़े काम छिपकर नहीं होते ।

ऊंटकी चोरी सिरपर खेलना—जोखिमका काम है; क्योंकि इतना बड़ा जानवर छिपाये नहीं छिप सकता ।

ऊंटकी पकड़ कुत्तेकी झपट—ईश्वर दोनोंसे बचावे; क्योंकि दोनों ही बुरे हैं ।

ऊंटकी बरसातमें खराबी—दे० "एक द बर ......"

ऊंटके ऊंट ही रहे—ज्योंके त्यों बने रहे, अर्थात् कुछ भी न सीखे । मूर्खको क० ।

पर कारज करि दुख सहैं, सैत न हरि रस घूंट ।
भार घसीटत औरको, आप ऊंटके ऊंट । (नागरीदास)

ऊंटके गलेमें बिल्ली—किसी काममें ऐसा अड़ंगा लगा देना जिसमें वह काम न हो सके ।

इस कहावतका निकास इस कहानीसे है:—एक समय किसी आदमीका ऊंट खो गया । उसने प्रतिज्ञा की, कि यदि ऊंट मिल जाय, तो उसे चार पैसेमें बेच डालूंगा । जब ऊंट मिल गया, तब उस धूर्तने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेके बहानेसे ऊंटके गलेमें एक बिल्ली बांध दी । उसने बिल्लीका दाम उतना ही रक्खा जितना उस ऊंट और बिल्ली दोनोंके दाम मिलाकर होते थे । अब वह यह कहता फिरता था, कि चार पैसेमें ऊंट खरीदनेवालेको बिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी । अब इस शर्तपर कोई ऊंट खरीदनेपर राज़ी न हुआ, तब उसका ऊंट उसीके पास रह गया और उसकी बात भी रह गई ।

ऊंटके मुंहमें जीरा—बहुत खानेवालेको थोड़ीसी चीज दी जाय, तब क० ।

दान दीन कहं दीजै, धनिहि दिये धन छीजै ।
समभइ तो मति थोरा, "ऊंटके मुंह में जीरा ॥"
(लो० ऊं०)

ऊंटको किसने छप्पर छाये हैं—ग़रीबके आराम-का कोई ख्याल नहीं करता।

ऊंटको हगते देख मेड़कीने भी टांग फैलाई—जब कोई छोटा आदमी बड़ेका अनुकरण करे, तब क०।

ऊंट गये सींग मांगने, कान भी खो आये—जब किसी मनुष्यको कुछ मिलता हो और वह उतनेसे संतुष्ट न हो और ज्यादा मांगे, फिर उसे वह भी न मिले, तब क०। ऊंटके कान उसके शरीरकी तुलनामें बहुत छोटे होते हैं।

ऊंट घोड़े वहे जांय, गदहा कहे कितना पानी—जब किसी कामको सामर्थ्यवान पुरुष भी न कर सके, उसे एक असमर्थ मनुष्य करनेका साहस करे, तब क०।

ऊंट चढ़के बूंट मांगे—जो असम्भव काम किया चाहे, उसे क०। ऊंट बहुत ऊंचा होता है और बूंट या चनेका गाछ बहुत नीचा होता है।

ऊंट चढ़े कुत्ता काटे—जब कोई मनुष्य अपनेको विपत्तिसे सब प्रकारसे बचाता रहे, पर फिर भी उसपर विपत्ति पड़े, तब क०।

(१) भा विधिना प्रतिकूल जबै,
तब ऊंट चढ़े पर कूकर काटत ।
(२) जापर हरि कछु कतहु रिसाहीं,
ताहि निरापद थल कहुं नाहीं ।
कुश्चिल नासु सकल विधि घाटै,
"ऊंट चढ़े पर कूकर काटै" ॥

ऊंट जबतक पहाड़के नीचे नहीं जाता तब ही तक जानता है "मुझसे ऊंचा कोई नहीं"—जो अहंकारी मनुष्य अपनेसे ज्यादा किसीको न समझता हो, उसपर क०।

ऊंट जब भागे तब पच्छमको—सभीको अपना घर प्यारा है। राजस्थान और अरबकी मरुभूमि जो ऊँटका निवासस्थान है पश्चिमकी ही ओर पड़ती

ऊंट डूबे खधर थाह ले
ऊंट डूबे मेड़की थाह ले } जो काम बड़े बड़ों न हो सके, उसे तुच्छ मनुष्य करनेका साहस करे, तब क०।

ऊंट दूल्हा गधा पुरोहित—जब किसी नीच मनुष्यकी प्रशंसा वैसाही कोई मनुष्य करता है, तब क०।

ऊंट बर्राता ही लदता है—ऊंट जब लादा जाता तब बर्राता रहता है। जब मनुष्य काम न किया चाहे और उससे जबरदस्ती काम कराया जाय, तब क०। काम करनेकी इच्छा न रहनेसे डरके मारे काम भी करता जाता है और बड़बड़ाता भी जाता है।

ऊंट बल बलानेसे लड़ता है—ऊंट जब लड़ता तब बलबलाता है। जहां लड़ाई होती है वहां शोर गुल होता है।

ऊंट बहा जाय गदहा थाह ले—जो अनुचित साहस करता है, उसपर क०।

ऊंट बिलाई ले गई, हांजी हांजी कहना—ठकुरसुहाती कहना। जब एक बड़ा आदमी कुछ असम्भव बात कहे और कोई मनुष्य खुशामदवश उसीकी सी कहने लगे, तब क०। जब बड़े आदमीने कहा, कि ऊँटको बिल्ली उठा लेगई जो बिलकुल असम्भव है, तब खुशामदीने जवाब दिया, "हां, मैंने भी देखा था।" जहां अपनी इच्छाके प्रतिकूल सबका साथ देनेके लिये कोई काम किया जाय, वह भी क०।

भट्ट कहै सुन भाटनी, यही गांवमें रहना।
ऊंट बिलैया ले गई, हांजी हांजी कहना ॥

ऊंट बुड्ढा हुआ, पर मूतना न आया—जिस मनुष्यकी उम्र तो बहुत हो जाय, पर उसे बुद्धि कुछ भी न हो, उसे क०।

ऊंट मक्केको भागता है—मक्का पश्चिमकी तरफ है। देखो, 'ऊंट जब भागे तब पश्चिमको।'

ऊंट मक्खीको भी हांकता है—शत्रु चाहे कैसा ही तुच्छ क्यों न हो, उसे पास न आने दे।

ऊंट मरा कपड़ेके सिर—जब किसी सौदागरका ऊंट मरता है, तब उसका दाम वह अपने मालपर

ऊंट रे ऊंट, तेरी कौनसी कल सीधी—जिस मनुष्यमें किसी तरहकी भी भलाई न हो, उसको क०। वेडौल आदमीपर भी क०।

ऊंटसा कद तो बढ़ा लिया पर शऊर ज़रा भी नहीं—स्पष्ट।

ऊखसे गंडेरी प्यारी, गुड़से प्यारा गांडा।
मा बहिनसे जोरू प्यारी, जिससे होय गुज़ारा—जिस चीज़से अपना मतलब निकले, वही अच्छी लगती है।

ऊजड़ खेड़ा, नाव न वेड़ा—जिस ऊजड़ गांवमें न नाव हो और न वेड़ा ही हो, कोरा नाम ही नाम हो, उसे क०। इसी मसलको लोग अपभ्रंश रूपमें 'ऊजड़ खेड़ा नाम निवेड़ा' कहते हैं।

ऊजड़ गांवमें मुरार महतो—उजाड़ गांवमें कोल्हू ही सरदार है, बहुत भारी होनेके कारण वह दूसरी जगह जल्दी नहीं जा सकता है।

ऊजड़में तो गूजर नाचे, ढाक देख वैरागी।
खीर देखके बामन नाचे, तन मन होगया राजी—अर्थ स्पष्ट है। गूजर एक जाति है जिसका काम गोचारण और गोपालन है। ढाक एक पवित्र वृक्ष है और ब्राह्मणोंकी मिष्टान्न-प्रियता प्रसिद्ध ही है।

ऊजड़ हो घर सासका, वैर करै हर बार।
पीहर घर सूबस बसे, जब लग है संसार॥
(ज०) इस देशमें सास बहुओंमें प्रायः अनबन रहती है; इसीसे स्त्रियोंको पीहरमें रहना अच्छा लगता है।

ऊतके निन्यानवे, बारह पंजे साठ—मूर्खोंपर कही जाती है, जो हिसाब कुछ नहीं समझते। उनके लेखे निन्यानवे और साठ एकसे हैं।

ऊतर पातर, मैं मियाँ तू चाकर—लड़के खेलमें जब बदला चुका देते हैं, तब क०।

ऊधोका लेन न माधोका देन—स्वाधीन मनुष्य कहता है, जिसे किसीका देना लेना नहीं है।

ऊधो तुम्हें द्वारिका जाना—आखिर तुम्हें यह काम करना ही है।

ऊधो बनिआयेकी बात—ऐसे मनुष्यके विषयमें कही जाती है, जिसे आशातीत लाभ होता है।

> मोहि मोहि हरि मधुपुर आई।
> मिलि कुबजा मोहि लीग पठाई॥
> लौग छलि ज्यों अब विख्यात।
> ऊधो बनि आयेकी बात॥
> (प्रोषित पतिका। श्री० र० कौ०)

ऊपरका घड़ भाई, और नीचेका अल खुदाई—कपटी मनुष्यको कहते हैं जो ऊपरसे भाईके जैसा स्नेह दिखाता है, पर भीतर उसके क्या है, ईश्वर जानते हैं।

ऊपर गोरे भीतर काले—ऊ० दे०।

ऊपरसे राम राम, भीतरसे कसाईका काम—ऊ० दे०।

ऊसर खेतमें केसर—नालायक पिताका लायक लड़का।

ऊसर बरसे तृण नहीं जामे—ऊसर ज़मीनमें वर्षा होनेपर भी घास नहीं उगती। मूर्खको उपदेश देनेपर भी कुछ असर नहीं होता।

ए

एक अंडा वह भी गंदा—जिसका एक ही लड़का हो और वह भी निकम्मा हो, तब क०।

एक अकेला, दोका मेला—स्पष्ट।

एक अकेला, दोसे ग्यारह—जब दो आदमी मिल जायं, तब ग्यारहका काम करते हैं।

एक अनार, सौ बीमार—एक काम खाली होनेपर सौ उम्मेदवार खड़े हो जायं, तब कही जाती है।

एक असामी सौ अरज़ियां—ऊ० दे०।

एक अहीरकी एकी गाय, ना लागे तो छूछी जाय—जिस मनुष्यके एक ही लड़का हो और जिस दिन वह कुछ उपार्जन कर न लावे, उस दिन भूखा रहना पड़े, ऐसे मौकेपर क०।

एक अहारी सदा व्रती, एक नारी सदा यती—स्पष्ट।

एक आँख फूटती है, तो दूसरीपर हाथ रखते हैं—कहीं दूसरी भी नहीं फट जाय, इसलिये बचाते हैं।

एक आँखमें लहर बहर, एक आँखमें खुदाका कहर—कानेको क०।

एक आँखसे रोवे, एक आँखसे हँसे—चालाक आदमीको क०। रंज और ख़ुशी एक साथ होनेपर भी क०।

एक आमकी दो फांकें—जब दोनों एकसे ही होते हैं, तब क०।

एक आवेके बरतन हैं—एकही कुनबेके हैं। एक सी चीज़ोंपर भी क०।

एक इतवारके व्रतसे जन्मका कोढ़ नहीं जाता—थोड़ेसे उद्यमसे जन्मभरकी दरिद्रता नहीं जाती। एक दफ़े दवा खानेसे पुराना रोग नहीं जाता।

एक ओर चार बट्टे एक ओर चातुरी—स्पष्ट।

एक और एक ग्यारह होते हैं—एकजीके दो आदमी मिल जायँ तो वे ग्यारहका काम करते हैं। संघमें बड़ी शक्ति है। (११) ग्यारहसे भी मतलब है।

एक करे सब लाजें—जब घरका एक आदमी बुरा काम करता है, तो सबको नीचा देखना पड़ता है।

एक कहो न दस सुनो—न किसीको एक गाली दोगे, न वह तुम्हें दस गाली देगा।

एकका तीते तीनों तीत—(भो०) एक चीज़ कड़वी होनेसे तीनों कड़वी हो जाती हैं। बुरेकी संगत करनेसे बुरा कहलाता है।

एक कान बहरा करो, एक कान गूँगा—उस असमर्थ मनुष्यसे कही जाती है जो किसीसे अपनी बुराई सुनकर उससे बदला न ले सके।

एक कान सुनी, दूसरे कान उड़ाई—जब कोई किसीकी बातपर ध्यान न दे, तब क०।

एकका मुंह शक्करसे भरा जाता है, सौका मुंह ख़ाकसे भी नहीं भरा जाता—जब दाताकी इच्छा एकको देनेकी हो और लेनेवाले सौ आ जायं, तब क०।

एककी दारू दो, दोकी दारू चार—कैसा ही मनुष्य मज़बूत क्यों न हो, दोकी बराबरी नहीं कर सकता, न दो चारकी कर सकते हैं।

एककी सैर, दोका तमाशा, तीनका मेला, ...

सफ़रमें बहुत आदमियोंका संग करना अच्छा नहीं, सभी अपने अपने मनकी किया चाहते हैं, जिससे प्रायः उनमें झगड़ा हो जाया करता है।

एककी सैर, दोका तमाशा, तीनकी फिट फिट, चारका स्यापा—ऊ० दे०।

एकके दूनेसे सौके सवाये भले—(व्य०) थोड़ा मुनाफ़ा करनेसे माल बहुत बिकता है और बरकत होती है। थोड़े ब्याजपर रुपया लगानेसे रुपया डूबनेका डर नहीं रहता।

एकको दे है कतवये आली, एकको दे है खुरपा जाली—ईश्वर अपने इच्छानुसार किसीको धनवान करता है और किसीको कंगाल।

एकको लाई एकको बधाई—जब कोई मनुष्य एकको देनेकी प्रतिज्ञा करे और दूसरेको दे दे, तब क०। एकका आते वक्त आदर करे और दूसरेका जाते वक्त। चंचलता और अस्थिरतावश एकको देनेकी चीज़ दूसरेको दे दे।

एक कौड़ी गांठी, चूड़ा पहिरूं कि माठी—(पू० ज०) जिसकी पूंजी तो बहुत थोड़ी हो, परन्तु सभी कामोंमें ज़्यादा ख़र्च करना चाहता हो, उसे क०।

एक ख़ता, दो ख़ता, तीसरी ख़ता मादर बख़ता—(मु०) एक या दो भूल भूल समझी जाती हैं, इससे अधिक भूलें हों तो आदत समझनी चाहिये।

एक खाय दूध मलीदा, एक खाय भुस—अपना अपना भाग्य है, किसीको अच्छी चीज़ मिलती है किसीको बुरी।

एक ग़रीबको मारा था तो नौ मन चरबी निकली थी—एक बार मैंने तुम्हारे ही जैसे ग़रीबको मारा था, तो उससे नौ मन चर्बी मिली थी। उन लोगोंसे कही जाती है, जो देनेके डरसे जान बूझकर ग़रीब बनते हैं और बिना पीड़ा पहुंचाये रक़म हाथसे जल्दी नहीं छोड़ते।

एक गाँवमें नकटा बसे, छिनमें रोवे छिनमें हंसे—घड़ी घड़ी रंग बदलनेवालेपर क०।

एक गुरुके बालके—एक उस्तादके चेले। जहां दोनों

एक घड़ीकी ना, सारे दिनका उद्धार—एक बार नहीं कर देनेसे बारबारका तगादा छूट जाता है।

एक घड़ीकी बेहयाई, सारे दिनका आधार—लज्जाहीन मनुष्योंसे क०। वेश्याओंके प्रति भी क०।

एक चना दो दाल—एक चनेकी दो ही दाल होती हैं।

एक चना बहुतेरी दाल—एक चना रहेगा तो बहुत सी दाल हो जायँगी, क्योंकि साबित चना ही बोया जाता है (१) यदि मालिक रहेगा तो लड़केबाले बहुत हो जायंगे। (२) एक साबित चना उसके बहुतसे टुकड़ोंसे अच्छा है। बहुतसे सिपाहियोंकी जान बचानेसे एक अफ़सरकी जान बचाना अच्छा है।

एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—अकेला आदमी कुछ कर नहीं सकता।

एक चनेकी दो दाल—एक बापके दो लड़के।

एक चुप सत्तर बला टाले—स्पष्ट।

इनसानकी लिये गो है ज़बान एक निआमत,
लेकिन है फ़ज़ीलतमें एक बद आदत।
इनसानपर 'आफ़तें' बहु लाती है मगर,
टलती है एक चुपसे सत्तर आफ़त॥ (रंजूर)

एक चुप हज़ारको हराय—जो मनुष्य चुप रहता है, उससे हजार बोलनेवाले हार जाते हैं।

एक चुप हज़ार चुप—यदि लड़ाईमें एक भी ठंडा पड़ जाय वा ग़म खा जाय, तो लड़ाई मिट जाती है।

एक छौनीके आंचलमें नोन, घड़ी घड़ी रूठे मनावे कौन—स्पष्ट।

एक जना घर मुरदा भेल, चार जना मिल खटिया लेल, आप आपके सभी मालुक, बार उखाड़े मुरदा हालुक—(पू०) किसी घरमें एक मनुष्य मर गया। चार आदमी उसकी खटिया उठाने आये। मुरदेको हलका करनेके लिये उन्होंने उसके बाल मूंड़ दिये, पर मुरदा हलका न हुआ।

एक जनेसे दो भले—कहीं मुसाफ़िरीमें जाना हो, तो अकेले न जाकर किसीके साथ जाना अच्छा है।

एक जान दो क़ालिब—जब दो मनुष्य एक जीके हों, तब क०।

एक जान हज़ार अरमान—एक जान, और आशाएं बहुत, कहांतक पूरी हों।

एक जोरूकी जोरू, एक जोरूका खसम, एक जोरूका सीसफूल, एक जोरूकी पशम—अर्थ स्पष्ट है। स्त्रैण मनुष्योंको क०।

एक जोरू सारे कुनबेको बस है—एक स्त्री सारे कुनबेको संभाल सकती है। जिस घरमें एक ही स्त्री और कई पुरुष होते हैं और स्त्रीका चरित्र अच्छा नहीं होता, वहांपर भी क०।

एक जौकी सोलह रोटी, भगत खाय भगतानी मोटी—भगतजी तो एक जौकी सोलह रोटियां खाते हैं, और उनकी स्त्री मोटी होती जाती है।

एक झूठके सबूतमें सत्तर झूठ बोलने पड़ते हैं—स्पष्ट।

एक डर दो तरफ़—जब दो मनुष्य आपसमें लड़ते हैं, तब डर दोनोंको होता है। जहां दो पण्डित आपसमें विवाद करते हों या दो पहलवान कुश्ती लड़ते हों या दो मनुष्योंका आपसमें मुक़दमा चलता हो या दो राजाओंमें युद्ध ठना हो, वहांपर क०।

एक डूबे तो जग समझावे, सब जग डूबा जाय—जब एक आदमी कुराहपर चले तो उसे सुराहपर ला सकते हैं, पर यदि सब बुरे हो जायं तो उन्हें संभालना मुश्किल है।

एक तनदुरुस्ती, हज़ार न्यामत—धनसे आरोग्यता अच्छी है।

(१) तन्दुरुस्तीकी निपट फ़ज़्में इलाही बूझिये,
आगर जगमें रहे, तो बादशाही बूझिये। (नज़ीर)
(२) जितने सुखुन हैं, सबमें, यही है सुखुन दुरुस्त।
अल्लाह आबरूसे रक्खे और तन्दुरुस्त॥ (नज़ीर)
(३) जो गरचे लाख दौलतें, बीमारके बनें।
और न्यामतोंके ढेर अभी जो बने ठने॥
बेहतर है सुफ़लिसोंके मियां चाबने चने।
जो तन्दुरुस्त है वही दूल्हा है और बने॥ जितने सुखुन हैं सबमें..........।" (नज़ीर)

एक तरकशके तीर—जब सभी एकसे होते हैं, तब क०।

एक तरफ़की बात गुड़से मीठी—जबतक दूसरी तरफ़की बात न सुनी जाय, तबतक जो पहले सुनी है उसीपर विश्वास रहता है। जब दो मनुष्योंमें लड़ाई होती है और उनमेंसे एककी बात सुनकर कोई तीसरा मनुष्य उसका पक्ष ग्रहण करे, उसको क०।

एक पापी सारी नावको डुबाता है—यदि घरमें एक मनुष्य नीचा काम करे, तो घर भरको नीचा देखना पड़ता है।

एक पाव गया उड़न पुड़न, एक पाव गया पन।

एक पाव गया घुन लपेटा, एक पाव लिया हम—जब कोई मनुष्य उल्टा सीधा समझाके हिसाबको पूरा कर दे, तब क०।

एक पूत जनि जनियो माय, घर रहे कि बाहर जाय—एक आदमी दोनों काम नहीं कर सकता।

एक पेड़ हर्र, सगरे गाँव खाँसी—देखो, 'एक अनार सौ बीमार।' माल कम और गाहक बहुत।

एक फूअड़ फूअड़के गई, जा कुठलासी ठाढ़ी भई (ग्रा०) जब किसी अनाड़ी आदमीको किसीके पास कुछ कहनेको भेजा जाय, और वह उसके पास जाकर ठूंठसा खड़ा हो जाय, और कुछ कहे न, तथा वह भी उसका मतलब न समझ सके, तब क०।

एक बखिया मोरे पल्ले, कौन पिनौते होके चल्ले—(पू० ज०) जो अपनी ज़रा सी चीज़पर इतराता है, उसे क०।

एक बणिक बिन काहथों, लगि हैं नाहीं हाट?—क्या एक बनिया न होगा तो हाट न लगेगी? जब कोई मनुष्य अपने यहां कार्यमें किसीको बुलावे और वह अनुनय विनय करनेपर भी मारे मिजाजके न आवे, तब क०। कहनेका तात्पर्य यह है, कि तुम्हारे न जानेसे भी मेरा काम अटकेगा नहीं।

एक बार योगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी—योगी दिनमें एक बार और भोगी दो बार पाखाने जाते हैं, इससे अधिक बार जाय तो उसे रोगी समझना चाहिये।

एक बोटी सौ कुत्ते—देखो, 'एक अनार सौ बीमार।'

एक बोली तीन काम—बहुत चालाक आदमीके विषयमें कही जाती है, जिससे एक कामको कहो और तीन कर आवे।

एक बोली दो बोली, मेरी नकटी सटासट बोली—(ज०) जो निडर लड़की एक बात कहते ही, दस सुनावे उसे क०।

एक भवानी, कुल गांव अन्धा, किसे किसे आंख दें—देखो "एक अनार सौ....."

एक मछली सब जलको गदला करती है—यदि घर या संगतमें एक मनुष्य भी बदनाम हो, तो सबकी बदनामी हो जाती है।

> सुनरी सखि चपपति रस पागी,
> सकियम दोष मु लावन लागी।
> मीन पखानो चित नहिं धरै,
> एक मछरी सब जल बिन करै॥ (लो०र०कौ०)

एक मास ऋतु आगे धावै—(कृ०) ऋतुका आगमन एक महीने पहिलेसे जाना जाता है।

एक मुंह दो बात—जो मनुष्य दो तरहकी परस्पर विपरीत बातें कहे, उसे क०।

एक मुरग़ी नौ जगह हलाल नहीं होती—(१) एक काम नौ जुदी जुदी जगह नहीं हो सकता। (२) एक आदमी एक ही समय नौ जगह काम नहीं कर सकता।

एक मुश्किलकी, हज़ार हज़ार आसान है—एक रोगकी सौ सौ दवायें हैं। कैसा ही मुश्किल काम क्यों न हो, यदि जीसे किया चाहे, तो आसानीसे हो सकता है।

> मुशकिलें नेस्त कि आसां न शवद।
> मर्द बायद कि, परेशां न शवद॥ (शेख सादी)

एक मेरे घर अन्ना, दूसरा रखन्ना—(मु० जा०) मेरे घर एक लौंडी तो है ही, दूसरा एक खवास भी है। अपना बड़ा आदमीपन दिखाना। अन्ना=दाई; रखन्ना=लड़का नौकर जो अन्दर महलमें रहता है और बाजारमें सौदा खरीदनेके लिये रक्खा जाता है।

> तवक़ में है मेरा पुराना रखन्ना,
> यह सब है रखन्नोंका नाना रखन्ना। (रङ्गीन)

एक मैं दूसरा मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई—उस मनुष्यको कही जाती है, जिसे निमन्त्रण दिया जाय, और वह अपने साथ और भी कई आदमियोंको बिना बुलाये ले जाय।

इसपर एक कहानी है, कि एक नाईने किसी विवाहमें अपने नेगका एक हिस्सा लेनेसे इनकार किया था, और पृथक् पृथक् नामसे तीन हिस्से मांगे थे, जो यथार्थमें उसीको मिलते थे

जब कोई मनुष्य अन्यायसे अपना हिस्सा अधिक चाहता हो, तब भी क० ।

एक म्यानमें दो तलवारें नहीं रहतीं—एककी जगह दोका अधिकार नहीं हो सकता। जहां दो मनुष्य किसी काम या घरके मालिक बनते हों, और दोनों ही अपना अपना पूरा अधिकार चाहते हों, वहां क० ।

एक म्यानमें दो छुरी—ऊ० दे० । जहां एक स्त्रीके साथ दो पुरुष रहते हों, वहां भी क० ।

> पति अतुल देखी तोहि तीय,
> अवधि नदी एक निसि द्वै पीय।
> प्रीति रीति काहूकी आड़े,
> एकहि म्यान माहं द्वै खाड़े॥ (कुलटा। लो०र०भा०)

एक रत्ती बि[न] [प]ाहिं रत्तीका—(१) जिस मनुष्यका पानी उतर गया, वह कौड़ी कामका भी नहीं, (२) कामियोंके लिये बिना रतिके मनुष्य-जन्म वृथा है। रति=धन, प्रतिष्ठा; रत्ती=घुंघची या गुंजा जो वजनमें बहुत हलकी होती है; स्त्रीसहवास।

> मानिनि मान मान मन माहिं,
> सब शोभा प्रीतम हित आहि।
> सखी पखानो अतिही नीको,
> एक रती बिनु एक रतीको॥

एक रोटीके दो टुकड़े—एकसे आदमियोंको या बराबरवालोंको कही जाती है।

एक शेर मारता है, सौ लोमड़ियां खाती हैं—एक मनुष्य कमाता है, दस मुफ्तमें खाते हैं।

एक सिर हज़ार सौदा—जब एक आदमीपर बहुत सा काम सौंपा गया हो, तब क० ।

एक सुहागन सौ लौंडे—जब एक चीज़के कई ग्राहक हों, तब क० ।

एकसे एक दोसे ग्यारह—एक अकेला ही रहता है, पर दो एक साथ मिलनेसे ग्यारहके समान हो जाते हैं।

एकसे दो भले—यदि बाहर जाना हो, तो किसीके साथ जाना अच्छा है।

एकसे ले एकको दे—ईश्वर एकसे लेता है, तब दूसरेको देता है।

एक हम्माममें सब नंगे—(मु०) सभी एक सा काम करते हैं। जब कोई किसीके ऐसे कामकी बुराई करे, जो सभी करते हों, तब क० ।

एक हाथ ज़िक्रपर, दूसरा हाथ फ़िक्रपर—एक हाथसे माला जपता जाय, दूसरेसे काम करता जाय।

एक हाथ लेना, एक हाथ देना—(व्य०) नगद भुगतान।

> क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले।
> (नज़ीर)

एक हाथसे ताली नहीं बजती—जब दो मनुष्य आपसमें झगड़ा करते हैं, तब क० । यदि दोनों लड़ाके न हों, तो कभी लड़ाई न हो।

> (१) हिंग गुरु नारि, निरखि घनश्याम।
> करी बिनय देखे हिम धाम॥
> कहै पखानो साधु सु आली।
> एक हाथ बाजै नहिं ताली॥ (विदग्धा)
> (२) दोऊ चाहैं मिलनको तो, मिलाप निरधार।
> कबहुं नाहिं न बाजिहैं, एक हाथसे तार॥

एक ही लकड़ीसे सबको हांकना—सबके साथ एक सा व्यवहार करना। जब कोई बड़े और विद्वानका आदर नहीं करता, और अच्छे बुरे सब मनुष्योंसे एकसा बरताव करता है, तब क० ।

एक हुनर और एक ऐब सब आदमियोंमें होता है—गुण दोषसे खाली कोई नहीं।

एक हुस्न आदमी, हज़ार हुस्न कपड़ा। लाख हुस्न जेवर, करोड़ हुस्न नखड़ा—स्पष्ट। शानदार स्त्रियों विशेषतः वेश्याओंके प्रति क० ।

> साज सखी सुभ सज्यौ सिंगार, सोभित सुखदा रूप अपार।
> सोग छवि ज्यों नभ परकास, एक गुन रूप सहस गुन बास॥

एकान्त वासा, झगड़ा न झांसा—एकान्तमें रहनेसे कुछ खटका नहीं रहता। त्यागी तथा विरक्त लोग कहते हैं। छड़े मनुष्य जिन्हें किसीका साथ पसन्द न हो, वे भी कहते हैं।

एकादशीके घर शिवरात—भूखेके घर भूखा जाय, तब क० ।

एका बड़ी चीज़ है—एकतामें बड़ा बल है।

चार जना चारहु दिशा तें चारों कोन गहि,
चाहै जो सुमेरुको उखारैं तो उखरि जाय (ठाकुर)

ए कूकर तू दूवर काही, दस घरको आवाजाई—(पू०) किसीने कुत्तेसे पूछा, 'तू दुवला क्यों है ?' जवाब मिला, 'पेटके लिये दस घर जाना पड़ता है, इसीलिये।' जो मनुष्य अपने स्वार्थके लिये घर घर दौड़ता फिरता है, उसकी इज़्ज़त नहीं रहती और वह कुत्तेके तुल्य है।

एकै साधे, सब सधे सब साधे सब जाय—एक कामको अच्छी तरह करे, तो वह पूरा होता है और कई काम एक साथ करे तो सभी विगड़ जाते हैं।

एरोके चेरो नौआके बराहिल—गुलामकी गुलामी करना और नाईके पैर दावना। जब दुर्भाग्यवश किसी नीचकी सेवा करनी पड़ती है, तब क० अत्यन्त नीच मनुष्योंको भी कहते हैं।

एवज़ मावज़ गिला नदारद—(फा०) बदला चुका देनेपर शिकायत न करनी चाहिये।

एहसान लीजे जहानका, ना एहसान लीजे शाहजहानका—दुनियांका कनौड़ा हो, पर ईश्वरका कनौड़ा न होना चाहिये, अर्थात् उनकी आज्ञाका उलंघन न करे।

ऐ

ऐँतवार जब जानिये जब हट्टी लीपें वानिये—(पं०) पश्चिमोत्तर देश तथा पंजावमें इतवारके दिन जिनकी कच्ची दूकानें होती हैं, वह उसे लीपते हैं।

ऐंचन छोड़ घसीटनमें पड़े—खींचने गये थे, उल्टे आप ही घसीट गये। जब कोई आदमी एक काम सुलझाने जाय और उलटा आप ही उसमें उलझ जाय, तब क०।

ऐव करनेको भी हुनर चाहिये—पापका काम करनेमें भी कुशलता चाहिये। बिना वुद्धिके कोई काम नहीं होता। जब कोई वुद्धिमान मनुष्य वुरा काम करे, और अपने वुद्धि-बलसे उसे छिपा ले, तब अपनी बड़ाई करनेके लिये कहता है।

तू रीस जो भाइयोंकी करता है यार,
करते हैं तुझको बन्दरोंमें वो शुमार।
लेकिन आसान नहीं है नक़्क़ाली भी,
करनेको ऐब भी हुनर है दरकार॥ (रंजूर)

(२) ऐब यह है कि करो ऐब हुनर दिखलाओ।
वर्ना यां ऐब तो सब फ़र्द बशर करते हैं। (हाली)

ऐ मेरे करम, जहां टटोलो वहीं नरम—जब किसी काममें नसीब साथ नहीं देता, तब क०।

ऐरे गैरे नत्थू खैरे
ऐरे गैरे पचकल्यान
ऐरे गैरे फ़स्ल बहुलेर } ऐसा मनुष्य जिसकी कहीं पूछ न हो; उसको कहते हैं। जो जातिमें हीन हो, उसे

ऐसन बुड़बक कौन है, जो खात नहीं अघाय—(पू० ग्रा०) मूर्खसे मूर्ख मनुष्य भी पेट भर जानेपर और नहीं खाता।

ऐसन सुहाग मोरा, नित उठ डोला—(पू० ज०) ऐसाही शुभ दिन हमेशा आता रहे।

ऐसा काम हमेशा कर, जिसमें न होवे कुछ भी डर—हर काम समझकर करो।

ऐसा किया दिल गुरदा, कि रुपया किया खुरदा—(मु०) ऐसी उदारता दिखाई कि रुपया भुना डाला। कंजूस आदमीको क०।

ऐसा चाटा, कि धोयेका चाचा—(च०) एक दम सफ़ाई कर दी। (१) जब कोई मनुष्य किसी धनवानका सब धन खा जाय और कुछ भी न छोड़े, तब क०। (२) जब कोई मनुष्य खाते समय थालीकी सब चीजें पोंछकर खा जाय और थाली धोईसी जान पड़े, तब भी क०। चाचा श्रेष्ठको कहते हैं, धोयेका चाचा—धोयेसे बढ़कर, धोवीके धोयेसे भी अधिक सफ़ेद।

ऐसा जैसे रुपयेके टके भुना लिये—जब कोई काम सहजमें कर लिया जाय, तब कही जाती है। रुपयेके पैसे भुना लेना बहुत सहज है।

ऐसी ऐसी छटी चल बल जाँय, नौ नौ पतरी भटाइन खाँय—(पू०ज०) ऐसी ऐसी छटी रोज हुआ करें

ऐसी करना नकल, न चले किसीकी अकल---नक़ल ऐसी करनी चाहिये जो असल जान पड़े।

ऐसी कही कि धोये न छूटे---ऐसी बात कहना कि मनसे न छूटे। जब कोई किसीको ऐसी लगती बात कहे कि उसके जीमें चुभ जाय, तब क०।

ऐसी कहो न बात, कि सबका हिले हाथ---ऐसी बात न कहो जिसमें कोई उँगली उठावे।

ऐसी गाढ़ी पीजिये, ज्यों मोरीकी कीच। घरके जाने मर गये, आप नशेके बीच—भांग पीनेवालोंपर व्यंगसे कही जाती है।

ऐसी तेरे ही तले गंगा बहै है ?---(ज०) जो बहुत अहंकार करे उसे क०।

ऐसी बहू सयानो, कि पैंचा मांगे पानी—कंजस नई बहूपर क०। ऐसी सयानी है, कि पानी भी उधार मांग लेती है।

ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई—जब एक मनुष्यको दूसरेसे नुकसान पहुंचता है, तब क०।

ऐसी लटकी, कि भुईंमें पटकी—(ज०) ऐसा नीचा देखा कि, ज़मीनमें धँस गई।

ऐसी होती कातनहारी, तो क्यों फिरती मारी मारी—(ज०) जो काममें सुघड़ न हो उस औरतको क०। कातनहारी—कातनेवाली।

ऐसे आदमीके दीदेमें साठीकी पीच पसा दीजिये—जिस आदमीकी नज़र बुरी हो, उसे क०—साठीकी पीच=चावलका मांड़।

ऐसे ऊत रिवाड़ी जायं, आटा बेचें गाजर खायं—ऐसे मनुष्यको रिवाड़ी भेज दो जो आटेके बदलेमें गाजर खरीदे। रिवाड़ीवालोंपर व्यंग है। रिवाड़ीमें गेहूं बहुत पैदा होता है, इससे शायद वहांवाले उसकी कुछ कदर नहीं करते हों।

ऐसे गये जैसे महफिलसे जूता—जब कोई चुपकेसे चला जाय, और उसका जाना किसीको मालूम न पड़े, तब क०।

ऐसे गये जैसे गदहेके सिरसे सींग— ऊ० दे० गधेके सिरमें सींग होते ही नहीं, इसलिये उस जगह बिलकुल सफाई रहती है। महफिलमें जानेके पहिले जूते बाहर उतार दिये जाते हैं, इसलिये अक्सर वे चोरी जाते हैं।

ऐसे चूतिया शिकारपुरमें रहते हैं—जब कोई किसीको बेवकूफ बनाकर अपना मतलब निकालना चाहे, तब क०। शिकारपुरके लोग किसी समय मूर्ख समझे जाते थे।

ऐसे जंगलमें चावल—इसमें ज़रूर कुछ भेद है। जब कोई असम्भव बात देखनेमें आवे, तब कहते हैं। किसी जङ्गलमें कबूतरोंका एक गिरोह उड़ता हुआ आया। मैदानमें चावल बिखरे हुए देखकर सब नीचे उतरने लगे। एक बूढ़ा कबूतर बोला 'ऐसे जङ्गलमें चावल ?' इसमें कुछ धोखा है, पर और कबूतरोंने उसकी बात नहीं मानी और सबके सब नीचे उतर पड़े। चावल किसी बहेलियेने बखेर दिये थे और उनपर जाल बिछा दिया था। चलमें सब कबूतर जालमें फँस गये। तात्पर्य यह है, कि जब कोई असम्भव बात देख पड़े, तब उस-पर विश्वास न करे और बुद्धिसे काम ले।

ऐसे जीनेसे मर जाना अच्छा—जब आदमी बहुत दुखी होता है, तब क०।

'गुज़रती अब न हो सूरत, गुज़र जाना ही बेहतर है।
हुई जब ज़िन्दगी दुश्वार मर जाना ही बेहतर है॥'
(अकबर)

ऐसे बूढ़े बैलको कौन बांध भुस देय—जब मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, किसी कामका नहीं रहता और उसको खिलाना भारी पड़ जाता है, तब क०। पूरी मसल यह है :—

'दांत गिरे और खुर घिसे, पीठ बोझ ना लेय।
ऐसे बूढ़े बैलको, कौन बांध भुस देय॥'

ऐसे मियां रंगरेज होते तो अपनी ही दाढ़ी न रंगते—जब कोई अपना काम न कर सके और दूसरेका करने जाय तौभी न कर सके, तब कहते हैं। यदि काम करने लायक होते तो अपना ही न कर लेते।

ऐसे सुहागसे रंडापा भला—जिस स्त्रीका पति अत्याचारी हो और उसका भरण पोषण अच्छी तरह न कर सके, या जो सदा विदेशमें रहे, उसपर क०।

ऐसे ही तुमने सोंठ बेची है—ऐसे मनुष्यको कही जाती है जो बिना कुछ किये ही किसीसे कुछ मांगे और ऐसे मांगे मानो उसका पावना है।

ऐसे होते कंत, तो काहे जाते अंत—यदि हमारे कामके होते, तो दूसरी जगह क्यों जाते।

चार ...
चाहे ...

ए कूकर तू ...
(पू०) कि... जवाब मिला, ... इसीलिये।' ... घर दौड़ता फिरता ... वह कुत्ते के तुल्य ...

एकै साधे, सब सधै ...
एक कामको अच्छी ... और कई काम एक ... जाते हैं।

ऐँनवार जब जानिये जब ...
(पं०) पश्चिमोत्तर देश तथा ... जिनकी कच्ची दूकानें होती हैं ...

ऐंचन छोड़ घसीटनमें पड़े ...
आप ही घसीट गये। जब ... सुलझाने जाय और उलटा ... जाय, तब क०।

ऐब करनेको भी हुनर चाहिये
नेमें भी कुशलता चाहिये। बिना ... नहीं होता। जब कोई बुद्धिमान ... करे, और अपने बुद्धि-बलसे ... अपनी बड़ाई करनेके लिये कहता है।

> तू रीस जो साहबोंकी करता है या ...
> करते हैं तुझको बन्दरोंमें वो शुमार ...
> लेकिन आसान नहीं है नक़ली भी, ...
> करनेको ऐब भी हुनर है दरकार॥ (र...

(१) ऐब यह है कि करो ऐब हुनर दिखलाओ।
वर्ना यों ऐब तो सब फ़र्दे बशर करते हैं। (...

ऐ मेरे करम, जहां टटोलो वहीं नरम
जब किसी काममें नसीब साथ नहीं देता, तब क०

ऐरे ग़ैरे नत्थू ख़ैरे ऐरे ग़ैरे पचकल्यान ऐरे ग़ैरे फ़स्ल बहुतेरे	ऐसा मनुष्य जिसकी क... पूछ न हो, उसको कहते ... जो जातिमें हीन हो, ...

... भी क०। सब्ज़लोगोंको भी क०।

[illegible] बुरी बला।

[illegible] विषधर सा— ...

[illegible] —जब किसीके ... उसको कुछ भी तृ... लगा रहता है ...

मसल ...

किसी बनियेने एक लड़का गोद लिया। लड़का बनियेका नहीं है, यह कहकर उसके कुटुम्बियोंने उसे जातिच्युत करना चाहा। निर्णयके लिये मुकद्दमा राजाके पास गया। राजाने लड़केसे कहा, "तू बनिया न होकर बनियेकी गोद बैठ गया, इसलिये तुझे सज़ा दी जाती है। बोल, सूली दूं कि फांसी?" लड़केने कहा "बोल पड़े सो काम करो।" राजाने फ़ैसला किया कि, यह निश्चय बनियेका ही लड़का है, क्योंकि फांसीके समय भी यह नफ़े नुक़सानकी बात सोचता है। तात्पर्य यह है, कि बनियेका लड़का सभी कामोंमें फ़ायदा देखता है।

ओनामासी धं, गुरुकी टूटी टंग—जो छोटे लड़के पढ़ते नहीं, उनको क०।

ओनामासी धं, गुरु गये पतङ्ग।
पतङ्गमें लगी आग, गुरु गये भाग॥

ओनामासी धं, बाप पढ़े ना हम—ऊ० दे०।

ओसो चाटे प्यास नहीं बुझती—देखो 'ओसके चाटे प्यास नहीं बुझती'।

(१) जो पति रख सो सर्व न काम,
कहा सो नपिहै छत्रपति काम।
कहै पद्माजो जग सुख दाय,
ओसहि चाटे प्यास न जाय॥ (लो०र०कौ०)

(२) लालचहू ऐसी भली, जासों पूरै आस।
चाटेहु कहुं ओसके, मिटै काहुकी प्यास॥ (हन्द)

औ

औंधा खाय लौंडा—जो कमसमझ होता है, वही चकता है। शक्तिके बाहर प्रयत्न करना।

औंधे घड़ेका पानी, मूरखकी कही कहानी—किसी कामकी नहीं।

औंधे मुंह चिराग़ पांव—उलट पुलट हो जाना। जब कोई किसीका बुरा सोचता, है तब क०। औंधे मुंह गिरना और पांव तले चिराग़का होना ये दोनों एक तरहके श्राप हैं।

औंधे मुंह दूध पीते हैं—(च०) अभी बिल्कुल बच्चे हैं। जो बहुत भोला भाला बनता है, उसको क०।

औंधे मुंह शैतानका धक्का—शैतानके धक्केसे औंधे मुंह गिरना। यह भी श्राप है। किसीके बुरे सोचनेपर ऐसा क०।

औघट चले न चौपट गिरे—न टेढ़े रास्ते चलोगे, न नीचा देखोगे।

औंधी खोपड़ी उल्टी मत—बुरे आदमीका बुरा विचार होता है। मूर्खको क०।

औरकी खुटाई, अपने आगे आई—दूसरेकी बुराई करोगे, तो तुम्हारे आगे आवेगी।

औरकी फूली देखते हैं, अपना टेंटर नहीं निहारते—जो मनुष्य अपनेमें दोष होते हुए भी दूसरेमें ऐब ढूंढ़ता है, उसपर क०।

औरकी भूक न जाने, अपनी भूक आटा खाने—(ल०) स्पष्ट। स्वार्थी मनुष्यपर कही जाती है, अर्थात् अपने लिये करे, दूसरेका ख़्याल न करे।

औरकी बुराई अपने आगे आई—(१) जब कोई दूसरा मनुष्य दोष करता है और उसका फल अपनेको भुगतना पड़ता है, तब क०। (२) जो दूसरेकी बुराई करता है उसीका बुरा होता है।

औरत और ककड़ीकी बेल जल्दी बढ़ती है—स्पष्ट०।

औरत और घोड़ा रान तलेका—जो चीज़ अपने अधिकारमें रहे, वही अपनी है।

औरतका क्या इतबार—स्त्रीकी बातका विश्वास नहीं।

विश्वास पात्र न किमपि ? नारी (शङ्करा०)

औरतका खसम मरद, और मरदका खसम रोज़गार—बिना रोज़गारका मरद वैसा ही है, जैसे बिना खसमकी स्त्री।

औरतकी अक़्ल गुद्दी पीछे होती है—औरतको पीछे ज्ञान होता है।

औरतकी ज़ात बेवफ़ा होती है—स्त्रियां अपने मतलबकी हैं।

औरतको नादारीमें जांचे—औरतकी परीक्षा ग़रीबीमें होती है।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परखिये चारी॥
(तुलसी)

औरतको सिर न चढ़ावे—स्त्रियोंका बहुत दुलार न करना चाहिये।

पांवकी जूती है तू न इसको सिर चढ़ा।
खोजड़े पीटे तेरी जोरू खसम हो जायगी ॥ (राहत)

औरत मर्दका जोड़ा है—स्त्री और पुरुषका साथ है।

औरत रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बापसे—(१) यदि स्त्री चाहे तो अपने आप घरमें रह सकती है, नहीं तो अपने बापके सम्हाले भी नहीं रह सकती (२) यदि स्त्री पतिव्रता है, तो वह अपने आप रहेगी, नहीं तो वह अपने सगे बापके भी साथ निकल जायगी।

औरतोंके नाक न होती तो गू खातीं—(१) यदि दुर्गन्ध न आती तो गू भी खा लेतीं (२) यदि नाक कटनेका डर न रहता तो खुल खेलतीं। पहिले दुश्चरित्र स्त्रियोंकी नाकें काट ली जाती थीं। ऐसा कोई बुरा काम नहीं है जिसे स्त्रियां न कर सकें।

और दिनों खीर पूरी, पर्वके दिन दांत निपोरी—जिसे सब लोग कर रहे हैं, उसे न कर अपने मनकी करना।

सब दिन चङ्गे त्यौहारके दिन नङ्गे।

और बात खोटी, सही दाल रोटी—दाल रोटी ही सब बातोंमें मुख्य है।

और मज़ाक़ भूल गये, मेरे पास आइयो—(मु०) स्त्री पुरुषके प्रति कहती है। "सारी दिल्लगी भूल गये। जब पीटना होता है तो मुझे अपने पास बुलाते हो"।

और रंगका गिलहरा—अस्वाभाविक परिवर्तनपर क०।

औरहि तुकरी शकुन बतावे, आपुहिं कुकुरनसों चिथवावे—जो दूसरोंको उपदेश करे, किन्तु स्वयं अपने कार्योंके लिये दूसरोंसे अपनी दुर्गति कराये, उसके प्रति क०।

औलातीका पानी मंगरेपर नहीं चढ़ता—असंभव बात नहीं होती। औलाती=ओलती (छप्पर)। मंगरा=छप्परके ऊपरकी मेंड़।

औषधि जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः—(सं०) दवाको गंगाजल और वैद्यको साक्षात् विष्णु भगवान समझना चाहिये। तात्पर्य यह है, कि बिना विश्वासके रोग आराम नहीं होता।

औसरका चूका आदमी, और डालका चूका बन्दर नहीं संभलता—स्पष्ट।

औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल बेताल—गानेवाली जब सुरसे चूक जाती है, तो बेसुरी होकर गाने लगती है। जब कोई मनके उत्तेजित होनेपर अंडबंड काम करने लगे, तब क०।

यदि संकेत ठिंग लालकी गई न व्याकुल बाल।
औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल बेताल ॥
(अनुशयाना । लो० र० को०)

क

कंजूस मक्खीचूस—सूमको कहते हैं।

कंठी बाँधे हरि मिलें, तो बंदा बांधे कुन्दा—कंठी बांधनेसे यदि मुक्ति हो तो मैं गलेमें कुन्दा बांध लूं। कुंदा काठके बड़े टुकड़ेको कहते हैं और कंठी काठके छोटे छोटे दानोंकी बनती है। जो मनुष्य ऊपरसे तो तिलक माला धारण किये हुए हो, पर आन्तरिक ईश्वर-भक्ति न रखता हो, उसपर क०।

'नीकी नीकी बात कही, इक नाहक करते दुन्दा।
कण्ठी बांधे हरि मिलैं, तो बन्दा बांधे कुन्दा ॥ (.

कंत न पूछे बात, मेरा धना सुहागन नाम—(ज०) जो झूठमूठ मालिकका विश्वास .. होने दावा करता है, उसपर क०

चहै न पति नित कलह .सों, तऊ मानिनी बाम।
कन्त बात नहिं बूझई, धर्यो सुहागिनि नाम ॥
(लो० र० को०)

कहँ काशी कश्मीर कहँ, खुरासान गुजरात। तुलसी वहाँ तो जीवको, प्रारब्ध ले जात—प्रारब्ध मनुष्यको बड़ी बड़ी दूर ले जाती है।

ककड़ीके चोरकी गर्दन नहीं मारी जाती—सामान्य अपराधपर कड़ी सजा नहीं दी जाती।

चाहिये कठोरता ... बरजोर ऊधो,
ककरीके ... बियतु है।

... फाटे घरको
... है जिसमें कुछ
... होत

कचहरीका दरवाज़ा खुला है—जाओ नालिश कर दो। जब कोई बहुत तगादा करनेपर भी किसीका देना न दे और अदालतका भी भय न करे, तब क०।

कचौड़ीकी बू अभीतक नहीं गई—जो नीच आदमी अच्छे ओहदेपर पहुंच जानेपर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता, उसपर क०।

कच्चा दूध सबने पिया है—भूल सभीसे होती है।

कच्चा मीत कचौरी मांगे, पूरो मांगे पूरा। नोन मिर्च तो कायथ मांगे, बामन मांगे बूरा—स्पष्ट।

कच्ची कली कचनारकी, तोड़त मन पछिताय—क्योंकि वह किसी काममें नहीं आती। जब मनुष्यकी इच्छा भी पूरी न हो और चीज़ भी नष्ट हो जाय, तब क०।

कच्ची पेंदी दस्तरख़्वानका ज़रार—(मु०) जिस बरतनकी पेंदीमें छेद रहता है उससे दस्तरख़्वान (टेबुलकी चादर) खराब हो जाता है। जब लड़का कच्ची उमरमें बिगड़ जाता है, तब पीछे उससे कुछ भी उपकार नहीं होता।

कच्ची शीशी मत भरो, जिसमें पड़ो लकीर। बालेपनकी आशक़ी, गले पड़ी ज़ंजीर—अर्थ स्पष्ट है। लड़कपनसे ही भोग विलासमें लगा रहना मानो जीवनको नष्ट करना है।

कच्चे बाँसको जिधरको नवाओ नव जाय, पक्का कभी न टेढ़ा हो—बालकोंकी बुद्धि कोमल होती है, उस समय उन्हें जैसी शिक्षा दी जाय, वैसी मान लेते हैं। बड़ी उमर होनेपर आदत नहीं बदलती।

क़ज़ाके आगे हकीम अहमक़—(मु०) मौतके आगे वैद्यकी नहीं चलती।

क़ज़ाके तीरको ढालकी हाजत नहीं—क्योंकि वह किसीके रोके रुक नहीं सकती।

कटेगा काऊका, सीखेगा नाऊका
कटेगा बटाऊका, सीखेगा नाऊका
कटे सिर काऊका, बेग सुधरे नाऊका } जब एककी हानि होते हुए दूसरेका लाभ, हो तब क०।

कटेपर नमक छिड़कना—जलेको जलाना। जब कोई दुखी मनुष्यको लगती बात कहकर और भी उसका जी दुखावें, तब क०।

एकतो पियपर तियहित मानि, दूजे तू बोऽति रिसवानि।
ओग छकि साँची दरसावे, जों काटेपर लोन लगावे॥
(मध्यमान। लो०र०को०)

कड़ाकड़ बजें थोथे बाँस—खोखले बाँसमें आवाज़ बहुत होती है। जो आदमी निकम्मा है, वह बोलता बहुत और करता कम है।

कड़ुआ स्वभाव,डूबती नाव—दोनों ही खतरनाक हैं।

कड़ुएसे मिलिये, मीठेसे डरिये—कड़ुआ कहनेवाला खरा और मीठी बातें करनेवाला ख़ुशामदी होता है।

कढ़ीका सा उबाल आया और चला गया—जब किसी मनुष्यको ज़रा सी बातमें ग़ुस्सा आवे और आप ही जल्दी उतर जाय, तब क०।

कढ़ीमें कोयला—जब किसी अच्छी चीज़में बुरी चीज़ मिल जाय, तब क०।

कण्टकेनैव कण्टकम्—(स०) काँटेसे काँटा निकाला जाता है। शत्रुको शत्रु द्वारा ही नष्ट करना चाहिये।

क़तल मूज़ी क़ब्ल अज़ीज़ा—(मु० ज०) काटनेसे पहिले ही साँपको मार डालना चाहिये।

कतहुँ सुधरहु ते बड़ दोपू—(तुल०) कभी कभी सुघड़ मनुष्यसे भी बड़ी भूल हो जाती है।

क़द्र उल्लूकी उल्लू जानता है, हुमांके क़द्र चुग़द पहिचानता है—उल्लू उल्लूको ही पहिचानता है, हुमांको क्या जाने? मूर्ख बुद्धिमानको नहीं पहिचान सकता।

क़द्र खो देता है हरबारका आना जाना—किसीके यहाँ बार बार जानेसे मान नहीं रहता।

क़द्रदांके ख़ुदा पाँयते बिठाय, बेक़द्रके सिरहाने भी न बिठाय—स्पष्ट।

क़द्रे आफ़ियत कसे दानद कि बमुसीबते गिरिफ़्त आयद—(फा०) जो कभी दुःख उठा चुका हो वही सुखका मूल्य समझ सकता है।

कनक कनकतें सौगुनो, मादकता अधिकाय। वह खाये बौरात है, वह पाये बौराय—(बिहारी) सोनेमें धतूरेसे सौगुना अधिक नशा है, उसके खानेसे मनुष्य पागल हो जाता है, परन्तु इसके

पांवकी जूती है तू न इसको सिर चढ़ा।
खोजड़े पीटे तेरी नौज खसम हो जायगी॥ (राहत)

औरत मर्दका जोड़ा है—स्त्री और पुरुषका साथ है।

औरत रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बापसे—(१) यदि स्त्री चाहे तो अपने आप घरमें रह सक्ती है, नहीं तो अपने बापके सम्हाले भी नहीं रह सक्ती (२) यदि स्त्री पतिव्रता है, तो वह अपने आप रहेगी, नहीं तो वह अपने सगे बापके भी साथ निकल जायगी।

औरतोंके नाक न होती तो गू खातीं—(१) यदि दुर्गन्ध न आती तो गू भी खा लेतीं (२) यदि नाक कटनेका डर न रहता तो खुल खेलतीं। पहिले दुश्चरित्र स्त्रियोंकी नाकें काट ली जाती थीं। ऐसा कोई बुरा काम नहीं है जिसे स्त्रियां न कर सकें।

और दिनों खीर पूरी, पर्वके दिन दांत निपोरी—जिसे सब लोग कर रहे हैं, उसे न कर अपने मनकी करना।

सब दिन चङ्गे त्यौहारके दिन नङ्गे।

और बात खोटी, सही दाल रोटी—दाल रोटी ही सब बातोंमें मुख्य है।

और मज़ाक़ भूल गये, मेरे पास आइयो—(मु०) स्त्री पुरुषके प्रति कहती है। "सारी दिल्लगी भूल गये। जब पीटना होता है तो मुझे अपने पास बुलाते हो"।

और रंगका गिलहरा—अस्वाभाविक प्र[illegible] क०।

औरहि लुकरी शकुन बतावे, आपुहिं [illegible] चिथवावे—जो दूसरोंको उपदेश करे, किन्तु स्वयं अपने कार्योंके लिये दूसरोंसे अपनी दुर्गति कराये, उसके प्रति क०।

औलातीका पानी मंगरेपर नहीं चढ़ता—असंभव बात नहीं होती। औलाती=ओलती (छप्पर) मंगरा=छप्परके ऊपरकी मेंड़।

औषधि जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः—(सं०) दवाको गंगाजल और वैद्यको साक्षात् विष्णु भगवान समझना चाहिये। तात्पर्य यह है, कि बिना विश्वासके रोग आराम नहीं होता।

औसरका चूका आदमी, और डालका चूका बन्दर नहीं संभलता—स्पष्ट।

औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल बेताल—गानेवाली जब सुरसे चूक जाती है, तो बेसुरी होकर गाने लगती है। जब कोई मनके उत्तेजित होनेपर अंडबंड काम करने लगे, तब क०।

यदि संकेत ढिंग बालकी गई न व्याकुल बाल।
औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल बेताल॥
(चतुरयात्रा। लो० र० कौ०)

क

कंजूस मक्खीचूस—सूमको कहते हैं।

कंठी बांधे हरि मिलै, तो बंदा बांधे कुन्दा—कंठी बांधनेसे यदि मुक्ति हो तो मैं गलेमें कुन्दा बांध लूं। कुंदा काठके बड़े टुकड़ेको कहते हैं और कंठी काठके छोटे छोटे दानोंकी बनती है। जो मनुष्य ऊपरसे तो तिलक माला धारण किये हुए हो, पर आन्तरिक ईश्वर-भक्ति न रखता हो, उसपर क०।

'नीकी नीकी बात कहो, हक नाहक करते दुन्दा।
काण्ठी बांधे हरि मिलैं, तो बन्दा बांधे कुन्दा॥ (कबीर)

कंत न पूछे बात, मेरा धना सुहागन नाम—(ज०) जो झूठमूठ मालिकका विश्वासपात्र होनेका दावा करता है, उसपर क०

चहे न पति नित कलह सों, तऊ भामिनी बाम।
कन्त बात नहिं बूझई, धर्यो सुहागिनि नाम॥
(लो० र० कौ०)

कहँ काशी कश्मीर कहँ, खुरासान गुजरात। तुलसी वहाँ तो जीवको, परालब्ध ले जात—प्रारब्ध मनुष्यको बड़ी बड़ी दूर ले जाती है।

ककड़ीके चोरकी गर्दन नहीं मारी जाती—सामान्य अपराधपर कड़ी सज़ा नहीं दी जाती।

चाहिये कठोरता न ऐसी बरजोर ऊधो,
काकरीके चोरन कटारी मारियतु है।

कचरी खाये दिन बहलाये, कपड़े फाटे घरको आये—जब मनुष्य ऐसा काम करता है जिसमें कुछ लाभ नहीं होता, तब क०।

जिस जगह किसी कामके लिये बहुतसे लोग आते जाते हों, वहां कहते हैं।

कब्रका मुँह झांककर आये हैं—(मु०) कालके मुँहसे बचकर आये हैं।

कब्रमें पैर लटकाये हैं—(मु०) मरनेको बैठे हैं, बहुत बूढ़े आदमीको क०।

कब्रमें भी तीन दिन भारी होते हैं—(मु०) मुसलमानोंका विश्वास है कि क़ब्रमें गाड़े जानेके बाद तीन दिनतक उन्हें अपने जिन्दगीभरके कर्मोंका लेखा देना पड़ता है।

कब्रपर कब्र नहीं बनती—(मु०)(१) कब्रपर कब्र बनानेका नियम नहीं है। (२) एक घरमें दो मनुष्योंकी राय एक सी नहीं होती। (३) कोई विधवा पुनर्विवाह करे, उसे भी लांछना देनेके लिये क०। (४) फ़िज़ूलख़र्चमें जब क़र्ज़पर क़र्ज़ चढ़ता जाय, तब भी क०।

कभीके दिन बड़े, कभीकी रात बड़ी—कभी तुम्हारा दाँव, कभी हमारा।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना, कभी वह भी मना—जो कुछ ईश्वर दे, उसीमें सन्तुष्ट रहना चाहिये।

कभी न कभी टेसू फूले—जो मनुष्य सदा बुरे काम करता आया है और कदाचित् कोई अच्छा काम कर बैठे, तब क०।

कभी न गाँड़ू रन चढ़े, कभी न बाजी बम—कायर कभी लड़ाईमें भी न गये, और न उन्होंने कभी जुझाऊ बाजा ही सुना। कायरोंको क०। भाट लोग जिससे अपना उचित प्राप्य नहीं पाते, उसे क०। इसपर गंग कविका एक दोहा है जो उन्होंने मरते समय कहा था और फिर वह हाथीके पर तले कुचलवा डाले गये थे। दोहा यह है:—
कभी न गाँड़ू रन चढ़े, कभी न बाजी बम, सकल सभाको राम राम, विदा होत कवि गंग।

कभी न सोई साँथरे, सुपने आई खट्ट—(पं०) दे० "जनम न देखा बोरिया"।

कभी नाव गाड़ीपर, कभी गाड़ी नावपर—जब भिन्न भिन्न प्रकारके दो मनुष्य आपसमें एक दूसरेकी सहायता करें, तब क०। समयपर एकको दूसरेकी सहायताकी आवश्यकता पड़ती है। नाव जो सूखेमें बनाई जाती है उसे छकड़ेपर लादके दरयावमें ले जाते हैं, और छकड़ा जब दरयावके पार उतारा जाता है, तब नावपर चढ़ाके।

कभी रञ्ज, कभी गञ्ज—कभी दुःख और कभी सुख; जैसा आन पड़े भोगना ही पड़ता है।

कम ख़र्च बालानशीन—(व्यं०)(१) जिस चीज़का दाम तो कम लगे और देखनेमें भड़कीली और टिकाऊ हो, उसपर क०। (२) जिसका ख़र्च कम होता है, वही धनवान हो जाता है।

कम खाना, ग़म खाना, और किनारेसे चलना—(नीति) कम खानेसे शरीर आरोग्य रहता है, ग़म खानेसे किसीसे शत्रुता नहीं होती और किनारे होकर चलनेसे किसी तरहकी विपत्ति पड़नेका भय नहीं रहता।

तक़ल्लीले ग़िज़ामें ही पौधरमैण्ट बसी है।
कर ज़ब्त ख़्वाहिश सेल्फ़ गवर्नमैण्ट बसी है (अकबर)
तक़ल्लील=कम। ख़्वाहिश=वासना।

कम ज़ोर, मार खानेकी निशानी—निर्बलता बुरी होती है।

कमबख़्त गये हाट, न मिला तराज़ू न मिले बाट—कमनसीब मनुष्योंको क०।

कमबख़्तीकी निशानी, जो सूख गया कुएँका पानी—ऊ० दे०।

कमबख़्तीमें आटा गीला—जब विपत्तिपर विपत्ति पड़े, तब क०।

कमलीही नहीं छोड़ती—जब कोई मनुष्य या काम ऐसा पीछे लग जाय, कि छोड़नेपर भी न छूटे, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है:—किसी नदीमें एक रीछ तैरता चला जाता था। एक मनुष्यने उसे कम्बल समझकर आ पकड़ा। रीछ भी उससे चिपट गया। उसके गुरुने, जो किनारेपर खड़े थे, पुकार कर कहा, "बच्चा, कमलीको छोड़ दे," चेलेने उत्तर दिया, "बाबा जी! मैं तो कमलीको छोड़ता हूँ, पर कमली ही मुझे नहीं छोड़ती"।

(२) दृष्टि दंत हग अंब सों करो प्रेम पिय इच्छ।
भये भरम सुख दुःख मन, कामरि कैं सो रिच्छ॥
(पूर्वानुराग। जो०र०को०)

पानेसे ही पागल हो जाता है। धनगर्वित मनुष्य-को क०।

कनखजूरेके के पाँव टूटेंगे—कनखजूरे (गोजर) के बहुतसे पांव होते हैं, यदि दो चार टूट भी जायँ तो उसे चलनेमें कष्ट नहीं होता। जो मनुष्य धनवान है, उसका यदि थोड़ा नुकसान भी हो जाय, तो उसे नहीं अखरता।

कनिया लड़का गाँव गुहारो—लड़का अपनी गोदमें और उसे गांवमें खोजता फिरे। जब कोई चीज पास ही रक्खी हो और उसे इधर उधर खोजता फिरे, तब क०।

हरि हिरदै ढूंढ़त फिरै, जस घन प्रतिमा धाम।
ज्यों कंधे लरिका लिये, देत ढिंढोरा ग्राम॥

कनौड़ी बिल्ली चूहोंसे कान कटावे—जब बलवान-को निर्बलसे दबना पड़े, तब क०। जब कोई उच्च कर्मचारी कुछ दोष करे और उसके अधीनस्थ कर्मचारी उसे जानते हों, तब वह उनसे दबता रहता है, इस डरसे कि शायद वे उसका भेद न खोल दें।

कपटके मच्छड़ोंको धूनी देना—(व्य०) धूनी देनेसे मच्छड़ भाग जाते हैं। जब दूकानदार यह समझता है, कि दूसरे दूकानदारकी नजर लग गई, इसलिये माल नहीं बिकता, तब क०।

कपटीकी प्रीत, मरनकी रीत—कपटीसे मित्रता करना मौतके रास्तेमें जाना है।

दुष्टा भार्या, शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः। (चाणक्य)

कपड़ा कहे तू मुझे कर तह, मैं तुझे करूं शह—जो कपड़ेको इज्जतसे रखता है, कपड़ा भी उसकी इज्जत बना देता है।

कपड़े फटे गरीबी आई—(१) जब गरीबी आती है, तब कपड़े भी जल्दी फटते हैं (२) फटे कपड़े देखनेसे गरीबी हालत जान पड़ती है। (३) जो आदमी बहुत फटे कपड़े पहिनता है उसे जानो अब दरिद्र हो जायगा।

कपूत बेटा मरा भला—कपूतका मरना ही अच्छा। कहा भी है—कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न धार्मिकः, किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा।
अजातमृतमूर्खाणां मृताजातौ सुतौ वरं।
यतस्तौ स्वल्पदुःखाय यावज्जीवं जड़ो दहेत्। (हितोपदेश)

कफ़न सिरमें बांधे फिरता है—मरनेको तैयार है या मरनेसे नहीं डरता।

कबके बनिया कबके सेठ—कल आटा दाल बेचते थे, आज सेठजी बन गये। जिसकी नई बढ़ती होती है, उसे क०।

कब दादा मरेंगे, कब बेल बंटेगी / कब दादा मरेंगे, कब बैल बंटेगे } जब कोई किसीसे मिलनेकी आशा लगाये बहुत दिन तक बैठा रहे, तब उकताके क०। बेल एक तरहका नेग है जो शादी गमीमें नाई भाटोंको बाँटा जाता है। बैल बँटनेका तात्पर्य हिस्सा बँटनेसे है। जिस बूढ़ेके पास कई बैल हों और उसके मरनेपर उसके पोते उनको बांट लें।

कब मरे कब कीड़े पड़े / कब मरे कब राक्षस हुए } देखो 'कबके बनिया'।

कबसे राजा ईश्वर भये, कोदोंके दिन बिसर गये—देखो 'कबके बनिया……'

कबहुं भगे न स्यारपर, बर भूखो मृगराज—(वृन्द) सिंह भूखा रह जाता है, मगर सियारपर नहीं दौड़ता।

कबहुं भेक न जान ही, अमल कमलकी बास—(वृन्द) बुरा अच्छेका गुण नहीं जान सकता।

कबाड़ीके छप्परपर फूंस नहीं—जो कबाड़ा करता है, उसके पास कुछ नहीं रहता।

कबीरदासकी उल्टी बानी, आँगन सूखा घरमें पानी—जो ज्ञानी हैं, वे इस लोकमें सुख नहीं भोगते, परलोकके लिये संचय कर रखते हैं।

कबीरदासकी उल्टी बानी, बरसे कम्बल भीजे पानी—इस संसारमें प्रायः सज्जन दुःख पाते और असज्जन सुख भोगते देख पड़ते हैं।

कबीरदासकी उल्टी बान, मूते इन्द्री बांधे कान—संसारकी यह रीति है, कि दोष एक करता है और भुगतना दूसरेको पड़ता है।

कबूतरका सूनक—कहांतक माना जाय, रोज ही पैदा होते हैं और रोज ही मरते हैं।

कबूतरखानेका सा हाल है, एक आता है एक जाता है—जिस जगह बहुत आदमी काम करते हों या

मांगने आया। स्त्रीने उससे कहा,—'एक मनुष्य मेरे घरमें मर गया है, यदि तू उसे दरियावमें बहा आवे, तो मैं तुझे एक अशरफी दूंगी।' इसपर वह राजी हो गया। उसने एक लाश घरसे निकाल कपड़ेमें लपेट कर उसे दे दी। जब वह मुर्देको बहाकर आया और अशरफी मांगी, तब वह स्त्री बोली, कि वह मुर्दा तो फिर लौट आया।' यह कहकर दूसरी लाश उसे घरसे निकाल कर दी। इसी प्रकार जब वह चौथे मुर्देको बुबा चुका, तब वहां खड़ा रहा। वह जानता था, कि मुरदा थोड़ी देर बाद ऊपर उठेगा। उसी समय एक जुलाहा दरियावमें नहाने गया था। उसे तैरनेका बहुत शौक था और बहुत देरतक गोता लगाये रहता था। ज्योंही उसने पानीमेंसे सिर निकाला, कि उस फ़क़ीरने उसके सिरमें ज़ोरसे डण्डा मारा और कहा, कि अब पांचवीं बार मैं तुझे यहां न आने दूंगा। वह जुलाहा भी उससे लिपट गया और पकड़के हाकिमके पास ले गया। जब दोनोंने अपना हाल कह सुनाया, तब हाकिम बोला,—'करघा छोड़ नहाने जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय।'

करघा बीच जुलाहा सोहे, हलपर सोहे हाली, फ़ौजन बीच सिपाही सोहे, बाग़न सोहे माली—जिसका जिस जगह स्थान है, वह वहीं शोभायमान होता है।

पान पीक सोहै अधर, नैनन काजर जोग।

करछी हाथ सेलानेहीको करते हैं—करछी केवल हाथकी रक्षाके लिये ही बनाई गई है। जब कोई अपने सहायकसे कहे, कि हमने आरामके लिये ही तुम्हें नियुक्त किया था, पर तुम कुछ भी इसका ध्यान नहीं रखते, तब क०।

करतबकी विद्या है—विद्या अभ्यास करनेसे आती है, कोई काम हो, करनेसे ही आता है।

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द—जो काम करता रहता है,वही गुरु है और जो नहीं करता, वही शिष्य है, क्योंकि जो करता रहता है, वह जानता है, इसीलिये गुरु है और जो नहीं करता, उसे सीखनेकी ज़रूरत रहती है, इसीलिये शिष्य है।

कर तो डर, न कर तो खुदाके ग़ज़बसे डर—कोई बुरा काम करे तो डरे, न करे तोभी ईश्वरके कोपसे डरता रहे।

एक जगह दो साधु रहते थे। एकने कहा,—'कर तो डर, न कर तोभी डर।' दूसरा बोला—'यदि मैं न करूं तो क्यों डरूं।' एक दिन चोरोंने राजाके यहां चोरी की। उस चोरीके मालमेंसे एकने सोनेकी माला निकालके दूसरे साधुके गलेमें डाल दी। साधु ध्यानमें मग्न था, अतः उसे इस बातकी कुछ भी ख़बर न थी। दूसरे दिन जब लोगोंने साधुके गलेमें माला देखी, तब वे उसे राजाके पास पकड़ ले गये। राजाने उसीको चोर समझ कर फांसीका हुक्म दिया। अब लोग उसे फांसी देने ले चले, तब उसका मित्र पहिला साधु मिला और उससे बोला, अब तूने चोरी की ही नहीं,तब तुझे फांसी क्यों होती है, इसीलिये मैं कहता था, कि "कर तो डर, न कर तो भी डर।" तात्पर्य यह है, कि ईश्वरसे सदा डरते रहना चाहिये।

करदनी ख़ेश, आमदनी पेश, न की हो तो कर देख—जैसा करोगे वैसा पाओगे। यदि न किया हो तो करके देख लो।

करना है सो आज कर, कल कल मतना कर, चलता फिरता आदमी, छिनमें जावे मर—अच्छा काम करना हो, तो कलके लिये न छोड़कर आजही कर लेना चाहिये; क्योंकि जिन्दगीका कुछ भरोसा नहीं।

(१) कबिरा जो दिन आज है, सो दिन नाहीं काल।
चेत सके तो चेतियो, मोच परो है ख्याल॥
(२) तुलसी बिलम्ब न कीजिये, भज लीजे रघुबीर।
तन तरकसते जात है, स्वास सार सो तीर॥

करनी करे तो क्यों डरे, करके क्यों पछिताय, रोपे पेड़ बबूलके, आम कहांसे खाय—जब किसीको उसके किये हुए बुरे कामोंका फल मिले और उसपर वह पछताने लगे, तब क०।

करना ख़ाककी, बात लाखकी—जो करे कुछ नहीं और लंबी चौड़ी बातें करे, उसे क०।

करनी ना करतूत, चलिओ मेरे पूत—ऊ० दे०।

करनी ना करतूत, लड़नेको मज़बूत—निकम्मे आदमीको क०।

करनी ना धरनी, नाम गुलबिया—(ज० प०) जो स्त्री घरका काम धंधा न कर सके, उसे क०।

कमर टूटे रँडोकी, भड़ुवे ओढ़े दुशाला—जो वास्तवमें मेहनत करे, उसे तो कुछ न मिले और जो कुछ न करे उसे सब कुछ मिले, तब क०।

कमर न यूता, साँझे सूता—(पू०ज०) निखट्टू आदमी-पर क०। आलसी या नपुंसकको भी क०।

कमरमें तोसा, बड़ा भरोसा—जो धन अपने पास है, उसीका पक्का भरोसा है।

कमरमें लँगोटी, नाम पीताम्बरदास—(च०) गुण अथवा हैसियतके विरुद्ध नाम हो, तब क०।

कमरिज़्क़ बहुत हैं बे रिज़्क़ा कोई नहीं—कम आमदनीके मनुष्य बहुत हैं, बिना आमदनीका कोई नहीं।

कमल नालके तंतु सों, को बाँधे गजराज—सामान्य वस्तुसे बड़ा काम नहीं सरता।

कमली ओढ़नेसे फ़क़ीर नहीं होता—स्पष्ट।

कमाई न धमाई, मोके भूंजभूंज खाई—(पू०ज०) जो पति या लड़का निखट्टू या आलसी हो, उसे क०।

कमाऊ आवे डरता, निखट्टू आवे लड़ता—(ज०) स्पष्ट। निखट्टू लड़ाके लड़केको क०।

कमाऊ खसम किसने न चाहे—(ज०) सभी औरतें चाहती हैं, कि उन्हें कमाऊ पति मिले या कमाऊ पतिको सभी स्त्रियां चाहती हैं।

कमाऊ पूत, कलेजे सूत—(पू० ज०) कमाऊ लड़का माको बहुत प्यारा लगता है।

कमाऊ पूतकी दूर बला—कमाऊ मनुष्यसे विपत भागती है।

कमाऊ पूत किसको अच्छा नहीं लगता—काम करनेवालेको सब चाहते हैं।

कमानसे निकला तीर और मुँहसे निकली बात फिर हाथ नहीं आती—जब कोई किसीको कोई बात कहनेसे रोके, तब क०। जब बात मुँहसे निकल जाती है, तब फिर पीछे नहीं आती।

कमानी न पहिया, गाड़ी जोत मेरे भैया—(ग्रा०) जब कोई ऐसी चीज़को फ़रमाइश करे जिसका सामान तैयार न हो, तब क०।

कमावें खान खाना, उड़ावें मियाँ फ़हीम—(मु०) मालिक कमावे और नौकर उड़ावे या बाप कमावे और बेटा उड़ावे, तब क०। कहा जाता है, कि बहराम खां खान खाना (अकबर बादशाहके अमात्य और संचालक) के पास एक फ़हीम नामका गुलाम था जो बहुत उदार और शाहखर्च था।

कमावे धोतीवाला, उड़ावे टोपीवाला—(१) हिन्दू कमाता है और अङ्गरेज़ उड़ाते हैं। धोती हिन्दुओंका पहिरावा है और टोपीसे तात्पर्य्य हैटका है। यहां यूरोपियन हिन्दुस्थानियोंके ही धनसे मौज उड़ाते हैं। (२) मेहनती कमाता है और शौकीन उड़ाता है।

कर खेती परदेशको जाय, वाको जनम अकारथ जाय—(कृषी०) स्पष्ट।

करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट बिचारा खाय—जो मनुष्य अपना काम छोड़के व्यर्थके झगड़ेमें पड़ता है और उससे हानि उठाता है, उसको क०। यह मसल और भी कई तरहसे कही जाती है, जैसे; करघा छोड़ तमाशे जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय, या, करघा छोड़ नहाने जाय, नाहक जुलहा मारा जाय।

इसपर एक कहानी यों है:—एक कुलटा स्त्री सदा यही चाहती थी, कि मेरा पति अन्धा हो जाय। वह रोज़ क़ब्रिस्तानमें जाकर पीरोंसे यही मंगा करती। जब उसके पतिको यह बात मालूम हुई, तब एक दिन वह एक टूटी क़ब्रके भीतर पहिले से ही जा बैठा। जब स्त्रीने आकर वही दुआ मांगी, तब वह क़ब्रमेंसे बोला—'अच्छा, जा तू अपने पतिको एक महीने तक खूब बढ़िया बढ़िया माल बनाके खिला। जब महीना पूरा होगा, तब तेरी इच्छा पूरी हो जायगी।' वह स्त्री इसे किसी पीरकी बानी जानकर बहुत खुश हुई और रोज़ अपने पतिको नई नई अच्छी चीज़ें बनाकर खिलाने लगी, उसका पतिभी रोज़ कहता, कि मेरी आखें रोज़ बरोज़ कमज़ोर पड़ती जाती हैं। जिस दिन महीना पूरा हुआ, वह अन्धा बन गया, और कहने लगा, कि अब मुझे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। जब दुष्टाने समझ लिया, कि अब यह बिलकुल अन्धा हो गया, तब उसने अपने चार यारोंको बुलाया, और उनके साथ खूब शराब पी। जब पाचों नशेमें बेहोश हो गये, तब उसके पतिने तलवारसे चारोंको काट डाला और फिर अन्धा बनकर उसी तरह पड़ा रहा। जब स्त्री होशमें आई, तब यह हालत अपनी आखोंसे देखकर बहुत डरी। वह यही सोचती थी, कि किस तरह इस बातको छिपाऊं। इतनेमें एक फ़क़ीर उसके यहां भीख

मांगने आया। स्त्रीने उससे कहा,—'एक मनुष्य मेरे घरमें मर गया है, यदि तू उसे दरियावमें बहा आवे, तो मैं तुझे एक अशरफी दूंगी।' इसपर वह राजी हो गया। उसने एक लाश घरसे निकाल कपड़ेमें लपेट कर उसे दे दी। जब वह मुर्देको बहाकर आया और अशरफी मांगी, तब वह स्त्री बोली, कि वह मुर्दा तो फिर लौट आया। यह कहकर दूसरी लाश उसे घरसे निकाल कर दी। इसी प्रकार जब वह चौथे मुर्देको डुबा चुका, तब वहां खड़ा रहा। वह जानता था, कि मुरदा थोड़ी देर बाद ऊपर उठेगा। उसी समय एक जुलाहा दरियावमें नहाने गया था। उसे तैरनेका बहुत शौक था और बहुत देरतक गोता लगाये रहता था। ज्योंही उसने पानीमेंसे सिर निकाला, कि उस फ़क़ीरने उसके सिरमें ज़ोरसे डण्डा मारा और कहा, कि अब पांचवीं बार मैं तुझे वहां न जाने दूंगा। वह जुलाहा भी उससे लिपट गया और पकड़के हाकिमके पास ले गया। जब दोनोंने अपना हाल कह सुनाया, तब हाकिम बोला,—'करघा छोड़ नहाने जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय।'

करघा बीच जुलाहा सोहे, हलपर सोहे हाली, फ़ौजन बीच सिपाही सोहे, बाग़न सोहे माली—जिसका जिस जगह स्थान है, वह वहीं शोभायमान होता है।

पान पीक सोहे अधर, नैनन काजर लीग।

करछी हाथ सैलानेहीको करते हैं—करछी केवल हाथकी रक्षाके लिये ही बनाई गई है। जब कोई अपने सहायकसे कहे, कि हमने आरामके लिये ही तुम्हें नियुक्त किया था, पर तुम कुछ भी इसका ध्यान नहीं रखते, तब क०।

करतबकी विद्या है—विद्या अभ्यास करनेसे आती है, कोई काम हो, करनेसे ही आता है।

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द—जो काम करता रहता है, वही गुरु है और जो नहीं करता, वही शिष्य है, क्योंकि जो करता रहता है, वह जानता है, इसीलिये गुरु है और जो नहीं करता, उसे सीखनेकी जरूरत रहती है, इसीलिये शिष्य है।

कर तो डर, न कर तो ख़ुदाके ग़ज़बसे डर—कोई बुरा काम करे तो डरे, न करे तौभी ईश्वरके कोपसे डरता रहे। एक जगह दो साधु रहते थे। एकने कहा,—'कर तो डर, न कर तौभी डर।' दूसरा बोला—'यदि मैं न करूं तो क्यों डरूं।' एक दिन चोरोंने राजाके यहां चोरी की। उस चोरीके मालमेंसे एकने सोनेकी माला निकालके दूसरे साधुके गलेमें डाल दी। साधु ध्यानमें मग्न था, अतः उसे इस बातकी कुछ भी खबर न थी। दूसरे दिन जब लोगोंने साधुके गलेमें माला देखी, तब वे उसे राजाके पास पकड़ ले गये। राजाने उसेही चोर समझ कर फांसीका हुक्म दिया। जब लोग उसे फांसी देने ले चले, तब उसका मित्र पहिला साधु मिला और उससे बोला, जब तूने चोरी की ही नहीं, तब तुझे फांसी क्यों होती है, इसीलिये मैं कहता था, कि "कर तो डर, न कर तौ भी डर।" तात्पर्य यह है, कि ईश्वरसे सदा डरते रहना चाहिये।

करदनी ख़्वेश, आमदनी पेश, न की हो तो कर देख—जैसा करोगे वैसा पाओगे। यदि न किया हो तो करके देख लो।

करना है सो आज कर, कल कल मतना कर, चलता फिरता आदमी, छिनमें जावे मर—अच्छा काम करना हो, तो कलके लिये न छोड़कर आजही कर लेना चाहिये; क्योंकि जिन्दगीका कुछ भरोसा नहीं।

(१) कबिरा जो दिन आज है, सो दिन नाहीं काल।
चेत सके तो चेतियो, मौत परी है ख़्याल॥
(२) तुलसी विलम्ब न कीजिये, भज लीजे रघुबीर।
तन तरकसतें जात है, स्वास सार सो तीर॥

करनी करे तो क्यों डरे, करके क्यों पछिताय, रोपे पेड़ बबूलके, आम कहांसे खाय—जब किसीको उसके किये हुए बुरे कामोंका फल मिले और उसपर वह पछताने लगे, तब क०।

करनी ख़ाककी, बात लाखकी—जो करे कुछ नहीं और लंबी चौड़ी बातें करे, उसे क०।

करनी ना करतूत, चलिओ मेरे पूत—ऊ० दे०।

करनी ना करतूत, लड़नेको मज़बूत—निकम्मे आदमीको क०।

करनी ना धरनी, नाम गुलबिया—(ज० च०) जो स्त्री घरका काम धंधा न कर सके, उसे क०।

करनेको चाकरी, सोनेको घर—(पू०) जो मनुष्य बाहर जाकर कोई व्यवसाय करनेका उद्योग न करे, उसपर ताना है।

कर पानी न मुंह पानी—गंदे आदमीको कहते हैं, जो न हाथ धोता है, न मुंह धोता है।

कर भला हो भला, अंत भलेका भला—जो दूसरेके साथ भलाई करता है, अन्तमें उसका भला ही होता है।

करम रेख ना मिटै, करै कोई लाखों चतुराई—जो कर्ममें लिखा है, वह अवश्य होगा।

करमहीन खेती करे, मरे बैल या सूखा पड़े—(कृषी) कर्महीनके कोई काम सिद्ध नहीं होते।

करम हीन जब होत हैं, सभी होत हैं वाम। छाँह जान जहँ बैठते, तहाँ होत हैं घाम—ऊ० दे०

करमहीन सागर गये, जहां रतनका ढेर। कर छूअत घोंघा भये, यही करमका फेर—कमनसीब आदमी यदि सोनेमें भी हाथ डाले, तो वह मट्टी हो जाता है।

कर ले सो काम, भज ले सो राम—काम करनेवालेको आलस नहीं करना चाहिये।

कर सेवा, खा मेवा—गुरु वा बड़ोंकी सेवा करो, उसका अच्छा फल मिलेगा।

करा और कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती—(ज०) जो स्त्री किसी दूसरे पुरुषके प्रेममें फँसकर विपत्तिमें पड़े, उसपर कोई चतुर स्त्री कहती है।

करिया बाह्मन गोर चमार, तेकरा संग न उतरिये पार—काला ब्राह्मण और गोरा चमार दोनों खोटे होते हैं, इनका विश्वास न करना चाहिये।

करिये अपने मनकी और सुनिये सबकी—जब किसी काममें बहुतसे मनुष्य तरह तरहकी राय दें, तब क०। सबकी सुन लो, पर जो तुमने अपने मनमें निश्चय कर रखा है, वही करो।

करें कल्लू, भरें लल्लू—देखो, "करे दाढ़ीवाला पकड़ा......"

करे खेती भरे दण्ड—खेती करनेवालोंपर लगान बहुत लगता है, इसीसे क०।

करें परपंच, कहलायें पंच—जो अपनेको न्यायी कहके अन्याय करे, उसे क०।

करे एक भरें सब—अन्याय विचारपर क०, जहां एक मनुष्य दोष करे और घरभरको दण्ड हो।

करेगा सो भरेगा—जो करेगा उसीको भुगतना पड़ेगा।

करे दाढ़ीवाला, पकड़ा जाय मूछोंवाला—कसूर कोई करे और सजा किसीको मिले। जिसकी लम्बी दाढ़ी होती है, वह माननीय समझा जाता है और खाली मूंछवालेकी उतनी इज्जत नहीं समझी जाती।

करे बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय। रोपै पेड़ बबूरका, आम कहांसे होय—(कबीर) बुरे कामोंके बुरे ही फल मिलते हैं।

करो खेती बोवो बैल—(कृ०) यदि खेती करना हो तो पहिले अच्छे बैल उत्पन्न करनेकी फिक्र करो।

करो तो सवाब नहीं, न करो तो अज़ाब नहीं—जिस कामके करनेमें कोई लाभ नहीं और न करनेमें कोई हानि नहीं होती, उसपर क०।

कर्ज़ काढ़ मेहमानी की, लौंडों मार दिवानी की—(मु० ज०) कर्ज़ लेकर तो मेहमानी की, इसपर भी लड़कोंने पागल कर मारा। ग़रीब आदमी जो मेहमानका खर्चा मुश्किलसे उठा सके और घरके लड़के ही उन चीज़ोंको मांगने लगें, जो उसने मेहमानके लिये बनाई हैं, तब क०।

कर्ज़दार छातीपर सवार—जिसका पावना होता है, वह देनदारकी छातीपर सवार रहता है।

कर्ज़ा काढ़ करै व्यवहार, मेहरीसे जो रूठे भतार, वे बुलावल बोलै दर्बार, ये तीनों पशमके बार—(पू०) स्पष्ट।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करै सो तस फल चाखा—(तुलसी) कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

कल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पलमें परलै होयगी, बहुरि करेगा कब—देखो, "करना है सो आज कर।"

कलका लीपा देव वहाय, आजका लीपा देखो आय—(ज०) जो काम हो गया, उसे भूल जाओ, जो सामने उसे करो।

कल किसने देखी है—भविष्यत्की कौन जानता है। जो काम जल्दी करना होता है, उसके लिये भी क०।

कलके जोगी पैरतक जटा—जब कोई कम उमरका आदमी पुराने ज़मानेकी बातें हांकता है, तब क०।

कलवारीकी अगाड़ी और कसाईकी पिछाड़ी—कलवार अच्छी शराब पहिले बेचता है; इसीलिये उसके पास पहिले, और कसाई अच्छा मांस पीछे बेचता है; इसीलिये उसके पास पीछे जाना चाहिये।

कलहारी कलकल करे, छोहारी छो होय, अपनी अपनी बानसे, कभी न चूके कोय—कोई अपनी आदत नहीं छोड़ता।

कलालकी दूकानपर पानी भी पीओ, तो शराबका गुमान होता है—बुरी जगह बैठनेसे ही कलंक लगता है।

मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ। (वृन्द)

कलालकी बेटी डूबने चली, लोग कहें मतवाली—जब किसीके दुःखमें कोई दर्द न करे और उल्टी उसकी हंसी उड़ावे, तब क०।

कलियुगमें दो भक्त हैं, बैरागी अरु ऊँट। ये तुलसी बन काट हीं, इन किय पीपर टूंठ—बैरागी जो बड़े बड़े तुलसीके दानोंकी माला पहिनते हैं, उनपर ताना है। तुलसी और पीपल दोनों ही विष्णुके प्रिय हैं; इसलिये ये दोनोंही इनके शत्रु हैं।

कलौके बाह्मन मसखरे, कबहुँ न कीजै दान। कुटुम सहित नरकहिं चले, संग लिये जजमान—(कबीर) जो ब्राह्मण अपने धर्मसे च्युत हैं और जिनको दिया हुआ दान बुरे कामोंमें लगता है, उनपर क०।

कल्लरका खेत, कपटीका हेत—(कृषी) ऊसरकी खेती ऐसी है जैसे कपटीकी मित्रता, जो ठहरती नहीं।

कल्लर खेत रहे जिस पास, वाके होय नाज ना घास—(कृ०) स्पष्ट।

कवित सोहे भाटने और खेती सोहे जाटने—(मा०) कवित्त पढ़ना भाटोंको ही शोभा देता है और खेती करना जाटोंको अर्थात् जिसका जो काम है, वही उसे कर सकता है।

कश्मीरी बे पीरी, लज्जत न शीरी—कश्मीरी बड़े बेमुरव्वत और तोताचश्म होते हैं, इसलिये क०।

कश्मीरीसे गोरा सो कोढ़ा—कश्मीरियोंका रङ्ग बहुत गोरा होता है, इसलिये क०।

क़सम और तरकारी खाने हीके लिये हैं—जो लोग झूठी क़सम खाया करते हैं, उनको व्यंगसे क०।

कसाईका कुत्ता—जब कोई मुफ्तख़ोर आदमी बहुत मोटा हो जाता है, तब क०। कसाईके यहां कुत्तेको बहुत सा मांस खानेको मिलता है, इसलिये वह जल्दी मोटा हो जाता है।

यह बकह नहिं दूबरे होत, रसोईके बिग कसाईके कूकर।

कसाईका खूँटा और खाली रहे—कोई न कोई आही मरता है।

कसाईका बच्चा, कभी न सच्चा, जो सच्चा तो हरामीका बच्चा—कसाईकी सन्तान कभी सच नहीं बोलती। यदि वह सच कहे तो समझना चाहिये, कि वह कसाईकी सन्तान ही नहीं।

कसाईकी धासको कतड़ा खा जाय ?—कसाईका खेत पाड़ा नहीं खा सकता। बलवानका कोई अनिष्ट नहीं कर सकता।

कसाईकी बेटी दस वर्षकी उम्रमें बच्चा जनती है—जब किसी दुष्ट आदमीके कहनेसे दो दिनका काम एक दिनमें हो जाय, तब क०।

कसाईके भरोसे शिकरा पालना—अपने बूतेपर कार्य न कर जब दूसरेके बलपर कोई मनुष्य कार्य करता है, तब क०। शिकरा अर्थात् बाज पक्षीको अपना आहार आप ढूंढना चाहिये।

कहँ कुम्भज कहँ सिन्धु अपारा, सोखेउ सुयश सकल संसारा—(तुल०) तेजवान पुरुष छोटा होनेपर भी बड़ेको मात कर सकता है।

क़हत रहे थोड़े दिन, तो याद रहे बहुत दिन—अकाल थोड़े ही दिनोंतक रहता है, किन्तु उसका प्रभाव मनुष्यके हृदयपर इतना पड़ता है, कि वह बहुत दिनोंतक लोगोंको स्मरण रहता है। थोड़े दिनकी मुसीबत भी बहुत दिनतक याद रहती है।

कहते हैं, करते नहीं, मुंहके बड़े लबार। आखिर धक्के खात हैं, साहबके दरबार—दोष करनेवाला परमात्माके यहां दोषी ठहराया जाता है।

कहना आसान, करना मुश्किल—किसी बातकी प्रतिज्ञा करना जितना सहज है, उसका पूरा करना उतना ही कठिन है।

क़हरे दरवेश, बर जाने दरवेश—ग़रीबका गुस्सा ग़रीबपर ही उतरता है।

कहवैया ते चाहिये, सुनवैया हुशियार—कहनेवालेसे सुननेवाला होशियार होना चाहिये।

कह सुनाय विधि काह सुनावा, कह दिखाइ यह काह दिखावा—जब आशाके विपरीत कार्य हो, तब क०।

कहां झगड़ा पिजावेका, निकाला बाग़का काग़ज़—बिना औसर और बेहूदी बातपर क०।

कहां बीबी, कहां बांदी कहां बुढ़िया, कहां राजकन्या कहां राजा भोज, कहां गंगा तेली	(व्य०) इनमें समानता नहीं। तीनों कहावतें बेमेल चीज़ों-

पर व्यवहृत होती हैं।

काम वाम सचिसुख लिये नाम,
स्याम छाय किय सखि बड़ वाम।
कह्यो पखानो सुन्यो न हैली,
भोजराज कहं गङ्गा तेली॥ (मदनाव)

कहा न अबला करि सके, कहा न सिन्धु समाय। कहा न पावकमें जरै, काल काहि नहिं खाय—(सभाविलास) अर्थ स्पष्ट। इसके उत्तरमें किसीने कहा है—सत नहि अबला करि सकै, मन नहि सिन्धु समाय। धर्म न पावकमें जरै, नाम काल नहिं खाय।

कहानी जैसी झूठी नहीं, बात जैसी मीठी नहीं—बड़े बड़े लड़कोंको कहानी सुनाकर अन्तमें यह कहते हैं।

कहीं कहीं गोपालकी, गई चौकड़ी भूल, काबुलमें मेवा कियो, ब्रजमें कियो बबूल—जहां जिस वस्तुकी आवश्यकता है, वह वहां न हो और अन्यत्र हो, तब क०।

कहींकी ईंट कहींका रोड़ा, भानुमतीने कुनबा जोड़ा—जब कोई अनावश्यक बातोंको एकत्रित कर एक व्यर्थकी चीज़ तैयार करता है, तब क०।

कहीं डूबे भी तरे हैं?—(१) जो बिगड़ जाते हैं वे नहीं सुधरते। (२) जो डूब जाते हैं, वे नहीं तैर सकते।

कहीं तो सूहा चूनरी, औ कहिं ढेले लात—विवाहिता स्त्रीके भाग्यके सम्बन्धमें क०।

कहीं नाख़ून भी गोश्तसे जुदा हुआ है?—जब दो घनिष्ठ सम्बन्धियोंमें बिगाड़ हो जाता है, और दोनोंमें किसीके यहां कोई शुभाशुभ कार्य आ पड़ता है, तब समझानेवाले इसे कह दोनोंको मिला देनेका प्रयत्न करते हैं।

कहीं सूखे दरख़्त भी हरे हुए हैं?—बिगड़े हुए कभी नहीं सुधरते।

कहु रहीम कैसे निभे, बैर केरको संग वे झूमत रस आपने, इनके फाटत अंग—अच्छे बुरोंका साथ नहीं निभ सकता।

कदली बेर ढिग पकतात, पवन परसत हलत त्यों त्यों, गड़त कण्टक गात। (नागरीदास)

कहुं कहुं गुण दोष तें उपजत दुःख शरीर, मधुरी बानी बोलके, परत पींजरे कीर—(वृन्द) कभी कभी अच्छा काम करनेपर दुःख होता है, जैसे मीठी बोली बोलनेवाला तोता पींजरेमें बन्द किया जाता है।

कहूं तो मा मारी जाय, नहीं तो बाप कुत्ता खाय—जब मनुष्य बड़े संकटमें पड़ जाता है, तब क०। दो बातोंमें एक भी नहीं कर सकता।

कहा जाता है, कि एक स्त्रीने भूलसे बकरेके गोश्तके बदले कुत्तेका मांस अपने पतिके लिये पकाया था, और लड़केको यह बात मालूम पड़ गई थी। जब वह मनुष्य खाने बैठा, तब लड़केने सोचा, कि यदि मैं कहता हूं, तो मा मारी जाती है और नहीं कहनेसे पिता कुत्तेका मांस

खाता है। अतः वह बहुत असमंजसमें पड़ गया। तभीसे यह कहावत प्रचलित है।

कहे कबीर यह ज़माना खोटा हुवे…और मांजे लोटा—दे० 'कबीरदासकी उल्टी…'

कहे खेतकी सुने खलिहानकी—जब बात कही जाय कुछ और समझी जाय कुछ, तब क०।

दिखत ही बजकी सुगाइन भयो धौं कहा,
खेतकी कहेतें खरिहानकी समुझतीं। (ठाकुर)

कहेसे कुम्हार गधेपर नहीं चढ़ता—आदमी जो काम सदैव करता आया है, वही काम जब कहनेसे नहीं करता, तब क०। ज़िद्दी मनुष्य अपनी ख़ुशीसे काम भले ही करे, पर कहनेसे नहीं करता। कुम्हार-की जगह कोई कोई धोबी भी कहते हैं।

कहेसे कोई कुएंमें नहीं गिरता—कोई किसीके कहनेसे अपनेको जान बूझके ख़तरेमें नहीं डालता।

कहैं इहै श्रुति स्मृतिन सो, यहै सयाने लोग, तीन दबावत निलकही, राजा पातक रोग—(बिहारी) राजा, पाप और रोग ये तीनों निर्बल-को ही दबाते हैं, ऐसा वेद, धर्मशास्त्र और सयाने लोग कहते हैं। राजा पराक्रमहीनको, पाप ज्ञान-बलहीनको और रोग देह-बलहीनको दबाता है।

कहै कबीर दो नावें चढ़िये, एक डूबे तो एकै रहिये—कबीर कहते हैं, कि दो नावपर सवार रहना चाहिये, यदि एक डूब जाय, तो दूसरीपर रहकर बच सकता है। इसीको कहते हैं, "दो घोड़े सवार रहना।" परन्तु उसके लड़के कमालने इसका ठीक उल्टा कहा है। वह कहता है, "कहै कमाल दो नाव न चढ़िये, फटे जांघ उतान हो पड़िये।" कमालने अपने पिताके कहनेका खण्डन बहुत किया है, इसी लिये कबीरने झंझला कर कहा है, "बूड़ा वंश कबी-रका, उपजे पूत कमाल।"

कहे ज़मीनकी सुनै आसमानकी—दे० 'कहे खेतकी'

कांखमें लड़का शहरमें टेर—दे० 'कनिया लड़का…'

कांचे रंग ज्यों धूपमें, झटक झटक उड़ि जात—कच्चा रंग धूपमें उड़ जाता है, इसी तरह झूठी बात या झूठी प्रीति जांचनेपर नहीं ठहरती।

कांटा बुरा करीलका, और बदलीकी घाम, सौत बुरी है चूनकी, और साझेका काम—स्पष्ट।

काँटेकी सी तोल—बिलकुल ठीक बातके लिये क०।

परै थोर बेनी जेहि भार, तेहि थोर लचकै सुकुमार।
लोग चकित ज्यों जग विख्यात, काँटेकोसी तोल लखात।

तराजूकी कांटेसे ही तौल ठीक दीख पड़ती है।

काँटेसे कांटा निकाला जाता है—दे० 'कण्टके नैव…'

काका काहूके न भये—चाचा किसीके सगे नहीं होते।

काका काहूके नहिं मीत—ऊ० दे०।

काकाकी भैंसी, भतीजेकी तोंद—दूसरेके धनसे अपनी पुष्टि करनेपर क०।

काका ना करे साका—चाचा अक्सर भतीजेको गोद ले लेते हैं, मगर उनके विवाहादिमें उतना खर्च नहीं करते. जितना कि खास अपने लड़कोंके विवाहादिमें करते हैं।

काग़ज़की नाव आज न डूबी कल डूबी (व्य०)
काग़ज़की नाव नहीं चलती—जो चीज़ ज्यादे दिन नहीं ठहरती, उसपर क०। बेईमानीका काम अधिक दिन नहीं ठहरता।

झूठकी टहनी कभी फलती नहीं,
नाव काग़ज़की कभी चलती नहीं।

काग़ज़के घोड़े दौड़ाते हैं—(व्य०) जो हाथकी हुंडी बहुत लिखता हो, उसपर क०।

काग न कोयल [illegible] सके, जो विधि सिखवै आय—कैसा ही गुरु क्यों न मिले, मूर्ख ज्ञानवान नहीं होता।

(१) फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा बरसहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम। (तु०)
(२) जो मूरख उपदेशके, होते जोग जहान।
दुर्योधन कहँ बोधि किन, आये श्याम सुजान॥ (वृन्द)

कागा काको धन हरै, कोयल काको देइ। मीठे वचन सुनायके, जग अपनो करि लेइ—मीठा बोलनेके लिये क०।

तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुं ओर।
वशीकरन एक मन्त्र है, तजिये वचन कठोर॥

कागा कौवा और खरगोस, ये तीनों नहिं मानें पोस—स्पष्ट। काग और कौवेमें अन्तर होता है। काग बिलकुल काला होता है और कौवेकी गर्दन भूरी होती है।

कागा बोले, पड़ गये रौले—जब कौवे बोलते हैं, तब सारी दुनियां जग जाती है।

कागा रौल—जब बहुतसे लोग इकट्ठे होकर ज़ोर ज़ोरसे बातें करते हैं, तब क०।

कागे काग न भिखारी भीख—सूमको क०। कागको बलि देना और फ़क़ीरको चटकी देना हिन्दू मात्रका धर्म है।

का चुप साधि रहा बलवाना—(तुल०) उत्तेजना देनेके लिये क०।

काछै काछ और, नाचै नाच और—एक कामकी तैयारी कर दूसरा काम कर बैठे, तब क०।

किय सिंगार हित नेहको, छिन भई फिरिगी और।
काछी काछ कछु और हो, नची नाच कछु और॥
(लो० र० को०)

काजल कजलौटी और फूलोंका हार—(च०) रंग कजलौटी जैसा और पहननेको फूलोंका हार चाहिये। बदशकल जब शृंगार करे, तब क०।

काजलकी कोठरीमें, कैसोहु सयानो जाय, एक रेख काजलकी, लागि है पै लागि है—काजलकी कोठरीमें जायगा तो धब्बा लगेहीगा। बुरेके पास बैठनेसे कुछ न कुछ बुराई अवश्य होगी।

लखे रङ्ग हुव नवनकै, परत मराक्रम जानि।
क्यों नधि काजर कोठरी, लागै रेख निदान॥ (वीरा)।
(लो० र० को०)

काजल तो सब लगाते हैं पर चितवन भांत भांत—(ज०) स्पष्ट।

(१) काजी सखी कह चतुरई, करै न बस हिय प्रान।
काजर दीबो सहल है, चितवन माह निधान॥ गुणगवि ता
(२) अनियारे दीरघ नयन, किती न तरुनि समान।
वह चितवन औरै कछू, जिहि बस होत सुजान॥ (विहारी)

क़ाज़ीका न्याव—(व्य०) आधम-आध फ़ैसला करना। जब दो मनुष्योंके हिसाबमें कुछ फरक हो और आधी आधी कसर दोनोंको दी जाय, तो क़ाज़ीका न्याव कहलाता है।

क़ाज़ीका प्यादा घोड़े सवार—क़ाज़ीका प्यादा भी अपनेको घुड़सवार समझता है। अदालतके अमलोंकी ज़बरदस्तीपर क०।

क़ाज़ीकी घोड़ी क्या घी मूतती है?—क्या क़ाज़ीकी घोड़ीका भी आदर होना चाहिये?

क़ाज़ीको मूंज—जब कोई चीज़ एक बार दी जाय और देनेवालेका दावा उसपर सदा बना रहे, तब क०।

इसपर एक कहानी है। एक समय कोई नये शासक किसी ज़िलेमें आये। एक दिन उन्हें मूंजकी रस्सीको ज़रूरत पड़ी। क़ाज़ीने तुरत ही एक रस्सी ला दी। यद्यपि चीज़ बहुत सामान्य थी, तोभी उसकी क़ीमत खातेमें लिखकर क़ाज़ीके नामपर जमा कर दी गई। क़ीमत तो दी न गई लेकिन उसका जमा प्रति वर्ष खातेमें आता रहा।

क़ाज़ीको लौंडी मरे सारा शहर जाय, क़ाज़ी मरे कोई न जाय—जब कोई आदमी अपनी इच्छासे काम न करके केवल दूसरेके दबाव डालनेसे करता है, तब क०। जब क़ाज़ीकी लौंडी मरती है, तो शहरके सब मनुष्य सिर्फ़ उन्हें ख़ुश करनेके लिये ही जाते हैं, क़ाज़ीके मरनेपर कोई नहीं जाता, यह समझकर, कि जिसको दिखाना था वे तो अब रहे ही नहीं, अब जानेसे क्या लाभ?

क़ाज़ीके घरके चूहे भी सयाने—जब घरके सब आदमी चालाक होते हैं, तब क०।

क़ाज़ीके मरनेसे क्या शहर सूना हो जायगा?—एक मनुष्यके मर जानेसे समाजमें किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुंच सकती।

क़ाज़ीके मूसलमें नाड़ा—(मु०) नाड़ा इज़ारबंदको कहते हैं। मूसलमें इसका कुछ भी प्रयोजन नहीं पड़ता। जब कोई बड़ा आदमी अनुचित कामको भी उचित करनेके लिये अपने अधीनस्थको कहता है, तब क०।

क़ाज़ीजी अपना आगा तो ढकें, पीछे किसीको नसीहत करें—जो मनुष्य अपना दोष न देखकर दूसरेका ढूंढ़ निकालता है, उसे क०। पहले आप करो, पीछे दूसरेको करनेको कहो।

क़ाज़ीजी खाना आया, हमें क्या? तुम्हारे ही लिये है, फिर तुम्हें क्या?—(१) स्वार्थी मनुष्यके लिये ऐसा क०। (२) जब कोई किसी काममें लवलीन रहता है, तब भी क०।

क़ाज़ीजी दुबले क्यों ? शहरके अंदेशेसे— जब कोई अपना सोच न करके संसार भरका सोच करता है, तब क० ।

क़ाज़ी ब-दो गवाह राज़ी—(मु०) दो गवाह मिलनेसेही अदालत ख़ुश हो जाती है ।

काटनेवालेको थोड़ा, बटोरनेवालेको बहुत— (कृ०) जब एक मनुष्यको अधिक मेहनत करनेपर थोड़ी मज़दूरी मिले और दूसरेको थोड़ी मेहनत करनेपर अधिक मज़दूरी मिले, तब क० ।

काटा और उलट गया—कहा और पलट गया अर्थात् और भी बुरा किया, जैसे सांप काटकर उलट जाय, तो उसका ज़हर बहुत चढ़ता है ।

काटे कटे न मारे मरे—जिस चीज़से किसी तरह भी पिण्ड न छूटे, तब उसपर ।

काटे वार नाम तलवारका, लड़े फ़ौज नाम सरदारका—काम अधीनस्थ कर्मचारी करते हैं, पर नाम अफ़सरका होता है । जब काम तो कोई और करे, पर प्रशंसा उससे सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे मनुष्यकी की जाय, तब क० ।

काटे पै कदली फरे, कोटि यतन कर सींच विनय न मान खगेश सुन, डाँटे पै नवनीच— केला काटनेसे ही फलता है, सींचनेसे नहीं । इसी तरह नीच ताड़नासे ही मानता है, समझानेसे नहीं ।

काटो तो ख़ून नहीं—जो मनुष्य डरके मारे सन्न हो जाय, उसे क० ।

काठका उल्लू—मूर्खको क० ।

काठका घोड़ा नहीं चलता—भद्दा आदमी काम नहीं कर सकता ।

काठका घोड़ा लोहेकी ज़ीन, जिसपर चैठे लंगड़ दीन—लाठी या बैसाखीको कहते हैं, जिसके सहारेसे लगड़े चलते हैं ।

काठकी तरवार क्या काम करेगी—नक़ली चीज़ काम नहीं देती ।

काठकी हाँड़ी बार बार नहीं चढ़ती ?—(व्य०) जब कोई मनुष्य एक बार ठगाया जाकर होशियार हो जाय, तब वह कहता है, कि अब मैं दूसरी बार नहीं ठगाया जाऊँगा । काठकी हाँड़ी आगपर चढ़ानेसे ही जल जाती है, उसे दूसरी बार चढ़ानेकी नौबत नहीं आती ।

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्योपार ।
जैसे हांड़ी काठकी, चढ़ै न दूजी बार ॥ (वृन्द)

काठके घोड़े दौड़ते हैं—हवाके पुल बाँधते हैं ।

काठ छीलो तो चिकना, बात छीलो तो रूखी— स्पष्ट ।

काढ़े नीर पतालतें, जो गुण युत घट होय— (वृन्द) बुद्धिमान् और उद्योगी मनुष्यको क० । यदि लोटेमें लंबी डोरी होगी, तो कितना ही नीचा कुआं क्यों न हो, उसमेंसे पानी निकाल ही लेगा । इसी तरह बुद्धिमान् या परिश्रमी मनुष्य जिस कामके पीछे पड़ेगा, उसे कर ही लेगा । गुण युत्= गुणवान, रस्सी सहित ।

कातक कुतिया माह बिलाई, चैत चिड़ैआ सदा लुगाई—कुतिया कातिकमें, बिल्ली माघमें, चिड़िया चैतमें और स्त्री बारहो महीने बच्चा जनती है ।

कातक जो आंवर तर खाय, कुटुम सहित बैकुंठे जाय—कातिकमें आंवला बड़ा पुनीत माना जाता है, विशेषकर छदी ९ और ११, अर्थात् आंवला नौमी और देवोत्थान एकादशीको ।

कातक, बात कहा तक—कातिक महीना बात कहते बीत जाता है, क्योंकि इस महीनेमें त्यौहार बहुत होते हैं और ख़ुशीके दिन जाते मालूम नहीं पड़ते ।

कातकमें जो सीतको, पिये सो लाभा पाय, भादोंमें जो कोई पिये, तो देवे ताप चढ़ाय— कातिकमें मट्ठा पीनेसे लाभ है और भादोंमें हानि ।

काता और ले दौड़ी—(ज०) सूत काता और उसी दम बाजारमें बेचनेको ले दौड़ी, जिसे सब्र न हो और सब कामकी जल्दी हो, उसे क० । जिसके पेटमें बात न पचे, उसे भी क० । अर्थात् बात सुनी और सबको ख़बर पहुंचा दी ।

कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन— (वृन्द) जिसका काम उसीसे होता है ।

ब्रह्म बनाये बन रहै, ते फिर और बनैन ।
कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन ॥

कान छिदाय सो गुड़ खाय—जो कष्ट उठावेगा उसीको आराम मिलेगा।

रति दुख लहि यह सोभ निहार, भूषन वसन रतन जड़ तार।
लोग उक्ति सांची दरसावे, कान छिदावे सो गुड़ खावे॥

कान तो कुण्डल नहीं, कुण्डल तो कान नहीं—जब धन हो और औलाद न हो अथवा औलाद बहुत हो और धन न हो, तब क०।

कानपर जूं तक नहीं चलती—(आ०) जब कोई किसीका कहना न सुने, तब क०।

कान प्यारे तो बालियाँ, जोरू प्यारी तो सोलियां—स्पष्ट। जब मूल वस्तुसे स्नेह होता है, तभी उसके उपकरण भी अच्छे मालूम पड़ते हैं।

कानमें ठेंठियां दे ली हैं } कुछ सुनते ही नहीं।
कानमें तेल डाले बैठे हैं } जब कोई किसीकी सलाह न माने या किसीके कहनेसे कोई काम न करे, तब क०।

काना कुत्ता पीच हीसे आसूदा—काना कुत्ता मांड़ पाकर ही खुश हो जाता है, क्योंकि उसे और अधिक पानेकी आशा नहीं रहती। एक तो काना ही अशुभ है तिसपर भी कुत्ता, यदि उसे मांड़ जो फेंक दिया जाता है वही मिले, तो बहुत है।

काना कौआ—काले और बदशकल आदमी अथवा निन्दकको भी क०।

काना टट्टू, बुद्धू नफ़र—काना घोड़ा और मूर्ख नौकर दोनों ही दुखदायी हैं। जिसका सामान बिगड़ा रहता है, उसपर क०।

काना मुझको भाय नहीं, काने बिन सोहाय नहीं—(ज०) जो स्त्री अपने पतिको नहीं चाहती, उसका कहना है। जब कोई चीज अच्छी भी न लगे और छोड़ी भी न जाय, तब क०।

काना, याना, लाड़ला, तीनों हठकी खान, अंधा, गूंगा, कायरा, हैं पूरे शैतान—काना, अयाना (छोटा लड़का), लाड़ला (दुलारा) ये तो हठी होते ही हैं; परन्तु अंधे, गूंगे और कंजी आँखवाले पूरे शैतान होते हैं।

कानो अपने मने सुहानी—जो मूर्ख अपनेको ही बुद्धिमान समझे, उसे क०।

कानी आंख मटरका बीया, वह भी आँख भवानी लीया—(ज०) एक तो मटरके बराबर छोटी आँख थी, वह भी शीतलामें जाती रही। जब किसीका एक मात्र पुत्र मर जाय, तब क०।

कानी आँख, दिखे कुछ नहीं, दुःखे तो अच्छीसे ज्यादा—घरके जिस मनुष्यसे सहायता तो कुछ भी न मिले और कष्ट बहुत मिले, उसपर क०।

कानीके ब्याहको सौ जोखों—यदि वरवाले देख लें तो विवाह न हो। जिस कामके होनेमें शंका बहुत हो, उसमें विघ्न भी बहुत पड़ते हैं।

छिद्रे ष्वनर्थाः बहुली भवन्ति।

कानीको काना प्यारा, रानीको राजा प्यारा—अपनी अपनी चीज सभीको अच्छी लगती है।

कानीको कौन सराहे? कानीका मियां—ऊ० दे०। मियांकी जगह बावा या मैया भी कहते हैं।

कानी गायके अलगे बथान—(पू०) क्या कानी गौके रहनेके लिये स्थान अलग होता है! जब किसी मनुष्यको साधारण दोषके लिये उसके साथवाले छोड़ दें, तब क०। मैं उनके समान नहीं हूं तो क्या समाजसे बाहर किया जाऊँगा?

कानूनगोकी खोपड़ी मरी भी दगा दे—कानूनगो किसानोंको ऐसा चक्करमें डालते हैं, कि वे पुश्त दर-पुश्त भोगते हैं। जब किसान घबरा जाता है, तब क०।

कानेके एक रग सिवा होती है—कानेमें एक गुण विशेष होता है, वह है कुटिलता।

काने, खोरे, कूबड़े, कुटिल कुचाली जान—स्पष्ट।

काने चोट, कनौड़े भेंट—(व्य०) चोटपर ही चोट लगती है और जिससे मुँह छिपाया चाहो उससे अवश्य भेंट होती है।

चलौ ओन्ह निसि तजि चित चाव, परो सु दोठ टूटे पाव।
कहे पखानो सुधि बुधि ठेट, काने चोट कनौड़े भेंट॥
(लो०र०को०)

काने बनिये गुड़ दे, बड़े सुनावल बोल—(भो०) जब कोई किसीसे याचना भी करे और कठोर वचन भी कहे, तब क०।

कापर करूं सिंगार, पिया मोर आंधर—(ज०) जब कोई पुरुष कार्य करता है और उसकी कार्य-तत्परताकी प्रशंसा नहीं होती, तब क०। कोई कोई स्त्री अपने कर्कश स्वभावके पतिके सम्बन्धमें भी इसे व्यवहार करती है।

नयन विहीनैं भर्त रि लावण्यमिव स्त्र्यनाथीनाम् ।

(९) कोपै नपुंसक नाह मिलै,

सो कहं लगि नारि सिंगार बनावै ॥ (पुष्टो)

काबुल गये मुगल बन आये, बोलन लागे बानी आब आब कर प्राण निकल गये, सिरहाने रखा पानी—दे० 'आब आब कर...'

काबुलमें क्या गधे नहीं होते—जानकारोंमें जब कोई मूर्ख होता है, तब क० ।

काबुलमें मेवा भये, ब्रजमें भयो करील—दे० 'कहीं कहीं गोपाल......।'

काम करेगी बेटी, सुखसे खायेगी रोटी—माकी शिक्षा लड़कीके प्रति।

काम करे नथवाली, पकड़ी जाये चिरकुटवाली—(पू० उ०) जब बड़ेका दोष गरीबके गले पड़ता है, तब क० ।

कामका न काजका, दुश्मन अनाजका
कामका न काजका, ढाई सेर नाजका } निकम्मे और निठल्ले मनुष्यपर क० ।

कामके बेले सो गई, परनाद्के बेले जागी—काम न करे और खानेको तैयार हो, तब क० ।

कामको ऊँहीं, और खानेको हाँ—कामको नहीं और खानेके लिये हाँ। ऊ० दे० ।

कामको काम सिखाता है—काम करनेसे ही आता है।

काम कोढ़ी मुंह बज्जर—कार्य करनेके समय कोढ़ी बनना अर्थात् असमर्थता प्रकट करना और भोजनके समय सब कुछ खानेको तैयार रहना।

काम क्रोध मद लोभकी, जौ लौं मनमें खान, का पण्डित का मूरखा, दोऊ एक समान—स्पष्ट।

काम चोर, निवाले हाज़िर—दे० 'कामके बेले...।'

काम जो आवे कामरी, का ले करे किमांच—यदि छोटी चीजसे काम निकले, तो बड़ी चीज़की तलाश क्यों करे। जब किसी निम्न कर्मचारीसे काम निकल जाय, तो ऊंचे अफ़सरके पास क्यों जाय।

का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिये सांच ।

काम जो आवे कामरी, का लै करे किमांच ॥ (तुलसी)

काम न धंधा, तीन रोटी बंधा—(अ) "दे० कामके बेले"

काम परेही जानिये, जो नर जैसो होय—(बुन्द) मनुष्यकी परीक्षा काम पड़नेपर ही होती है।

काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं—(१) काम प्यारा है सूरत नहीं। जब कोई नौकर मन माफ़िक काम नहीं करता, तब क०। (२) चमड़ेको छूनेसे सब कोई घृणा करते हैं, पर जब उसका जूता, बेग, बक्स आदि कामकी चीजें बनती हैं, तब सभीको प्यारी लगती हैं।

काम रहे तक क़ाज़ी, न रहे तो पाजी—मतलबसे आदर होता है।

काम सरा दुख बीसरा, छाछ न देत अहीर—काम निकल जानेपर अहीर भी छाछ नहीं देता। कृतघ्न मनुष्यको क० ।

कामिनि तो वोही भली, जो परघर कभी न जाय।

भय राखे यों नाहका, ज्यों गलकटसे गाय—अर्थ स्पष्ट है। जो स्त्री दूसरोंके घर बहुत जाती है उसे रोकनेके लिये क० ।

कायथका बेटा, पढ़ा भला या मरा भला—कायस्थ प्रायः बेपढ़े नहीं होते, इसलिये क० ।

कायथका हथियार क़लम है—ऊ० दे० ।

कायथसे काला सो कौवा—कायस्थ प्रायः काले होते हैं, इसलिये क० ।

कायथोंका छोटा और भांड़ोंका बड़ा, दोनोंकी ख़राबी—कायस्थोंमें जो छोटा होता है, उसीको घरका काम बहुत करना पड़ता है और भांड़ोंमें जो बड़ा होता है उसीको नक़ल अच्छी करनी आती है, इसलिये उसे ही अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

काया कष्ट है, जान जोखों नहीं—बीमारीके समय रोगीको ढाढ़स देनेके लिये क० ।

काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा—कपटीसे कोढ़ी अच्छा।

काया मायाका क्या भरोसा—जान और धनका कुछ भरोसा नहीं, न जाने कब निकल जायं।

काया रखे धर्म, पूंजी रखे व्यवहार—शरीर बना रहनेसे ही धन हो सकता है और पूंजी बनी रहनेसेही कारबार चल सकता है।

रसिक कौन यह केलि अदेह, कामि सुधि बिसरावे देह।

नीति सुनि रस छलि बखानो, काया राखे धर्महु जानो ॥

(लो० र० को०)

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर। समय पाय तरुवर फले,केतक सींचे नीर—(वृन्द) काम अपने समयपर होता है, इसके लिये अधीर नहीं होना चाहिये। चाहे कितना ही क्यों न सींचा जाय, बिना समयके पेड़ भी नहीं फलता।

काल कढ़ाऊ, किसानका खाऊ—(कृ०) अकाल और क़र्ज़ा लेना दोनों ही किसानके लिये मौत हैं।

काल करंते आज कर, आज करंते अब—दे० 'कल करेसो......।'

कालका मारा, सब जग हारा—मौतसे सब हारे हैं।

कालके जोगी कलींदेको खप्पर—कोई कम उमरका आदमी पुराने ज़मानेकी बातें कहे, तब क०।
(१) तासों चढ़ाई करी चीज जाने न कालके जोगी कलींदेको खप्पर। (देव) कलींदा=तरबूज।
(२) 'ये सब सुनह भावें सिवा पर कालके जोगी कलींदेको खप्पर।' (भूषण)

कालके जोगी माई माई—ऊ० दे० पाखंडियोंको क०।

पावन चरित सुधारत नाहीं,
जग कहं उपदेशत न लजाहीं।
धिक पण्डितपन धिक् चतुराई,
"कालिके जोगी माई माई॥" (लो० सं०)

कालके हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान—काल किसीको नहीं छोड़ता।

काल गया पर कहावत रह गई—वक्त निकल जाता है, पर बात रह जाती है।

काल टले, कलाल न टले—शराबियोंको क०।

काल दण्ड गहि काहु न मारा, हरै प्रथम बल बुद्धि विचारा—(तुल०) स्पष्ट।

काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक—मौतके सामने जैसा राजा वैसा फ़क़ीर।

काल पड़े पै कुदवाँ मीठ—अकालमें कोदो भी मीठा लगता है। भूखमें बुरी चीज भी अच्छी लगती है। जब मनुष्य बिलकुल निरावलंब हो जाता है, उस समय यदि कुछ भी सहारा मिले, तो ग़नीमत समझता है। ऐसे ही समयपर क०।

कालस्य कुटिला गतिः—(सं०) कालकी गति जानी नहीं जाती।

काला अक्षर भैंस बराबर—अपढ़को क०।

काला बाह्मन गोरा शूद्र, इन दोनोंसे कांपे रुद्र—दे० 'करिया बाह्मन......'

काला मुंह करीलके दाँत—बदशकल काले आदमीको, क०।

काला मुंह नीले हाथ पाँव—जब किसी चीज़पर घृणा प्रकाश की जाय,तब क०। किसीको शाप देनेपर भी क०।

काली कुत्ती मरनेवाली, बन्देको यश—जब काम आप ही हो जाय और उसके करनेका यश मुफ्तमें मिले, तब क०।

काली घटा डरावनी, और धौली बरसनहार—जो गरजते हैं सो बरसते नहीं। असली और दिखावटी चीजमें बहुत फ़र्क़ होता है।

काली जुमेरातका वादा करना—(मु०) जब कोई लम्बा वादा करे, तब क०। काली जुमेरात कृष्ण पक्षके शेष बृहस्पतिवारको कहते हैं, जो मुसलमानी महीनेके अन्तमें पड़ती है।

काली भली न सेत—(१) यदि दो बुरोंसे काम पड़ जाय तो उचित है कि दोनोंको ही त्याग दे॥ (२) यदि काली वस्तु (बुरी चीज) सेंत ही (बिना मोल ही) मिले तौभी अच्छी नहीं।
(१) इस मसलका निकास इस कहानीसे है। एक राजाके दो रानियां थीं। दोनों दुश्चरित्र और जादूगरनी भी थीं। एक दिन दोनों आपसमें चील बनकर लड़ रही थीं, एकका रङ्ग सफ़ेद और दूसरीका काला था। अकस्मात् राजा भी अपने मन्त्री सहित उस स्थानपर आगये और जान गये कि ये दोनों मेरी ही स्त्रियां हैं। राजाने मन्त्रीसे कहा कि, 'इस समय इनको मारनेमें स्त्रीहत्याका पाप भी नहीं होगा, क्योंकि ये चीलके रूपमें हैं। कहो, कालीको मारूं या सफ़ेदको।' मन्त्री जो दोनोंको ही बुरा समझता था बोला, "कालो भलो न सेत, दोनों मारो एकही खेत।" इसपर राजाने दोनोंको मार डाला।
(२) श्यामघटा सुहावनी, जो बिरहिनके हेत।
कही कहावत ना सुनी, कारी भली न सेत॥"
काली घटा सुहावनी होती है, पर विरहिनीके लिये अच्छी नहीं।

काली मुरगी सफ़ेद अंडा—बुरे मनुष्यकी अच्छी औलादपर क०।

इसपर एक कहानी है:—लखनऊमें सौटी फ़ौलाद नामके एक रईस रहते थे। वह बड़े धनी थे और उनका रङ्ग बहुत काला था। एक दिन वह हरा दुशाला ओढ़े बरामदेमें बैठे थे, इतनेमें कोई सुथरा (नानकशाही फ़क़ीर) उनके पास आ पहुंचा और बोला, "क्यों भाई, हरे खेतके कौवे! कुछ फ़क़ीरोंसे भी हाथ मिलावेगा।" इसपर वह चिढ़कर बिना कुछ जवाब दिये घरके भीतर चले गये और थोड़ी देर बाद एक पीला दुशाला ओढ़े फिर उसी जगह आ बैठे। घूमता फिरता वही सुथरा फिर उनके समीप आकर बोला, "क्यों भाई, बहारके मैना! कुछ मिलेगा?" इस समय उन्होंने उसे एक रुपया दिया। जाते समय उस फ़क़ीरने कहा, "सूरत है तो काली, मगर अच्छा सफ़ेद देती है।"

काली हंडी पीछे—पुरानी हंडी पीछे फेंक दी जाती है। जब कोई मर जाता है तो उसके घरकी पुरानी हाँड़ी फोड़ दी जाती है। जब कोई अत्याचारी हाकिम विदा होता है, तब भी ऐसा क०।

कालेका काटा पानी नहीं मांगता—जिसे काला सांप काटे वह नहीं बचता। कपटी मनुष्य वा खोटी सलाह देनेवालेको क०। उसके कहनेमें आया और मारा गया।

कालेके आगे चिराग़ नहीं जलता—बलवानके सामने किसीकी नहीं चलती। काले सर्पके मणि होती है, जिसके प्रकाशके आगे दीया नहीं जलाया जाता।

'इम मोहन पिय मोहन काज, किये यतन तिय बहु तजि लाज। वर्यौं न ज्यौं मलग्न जग करै, कारे आगे दीपक बरै। (रूपमंजरी)। इसका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि इस मोहनको वश करनेके लिये बहुत स्त्रियोंने लज्जा छोड़के यत्न किया, परन्तु उनका सब यत्न निष्फल हुआ, जैसे काला पुरुष अपनी कालिमा छिपानेके लिये अपने आगे दीपक जलावे और उससे और भी कालिमा प्रगट हो, उसी प्रकार उन स्त्रियोंके यत्नसे और भी उनकी कुरूपता प्रगट हुई।

कालेके काटेका जन्तर न मन्तर—काले सांपका विष किसी यन्त्र मन्त्रसे नहीं उतरता। दे०, कालेका काटा...'

काले कोसों—बहुत दूरको क०। इतनी दूरकी यात्रा जहां सबेरेसे चलते चलते अन्धेरा वा रात हो जाय।

काले मुंह अन्धेरे—बड़े सबेरे। यह मसल दुमानी है इसमें गाली भी निकलती है, जैसे "काले मुंह अन्धेरे चिड़िया बोलतीके आना।"

काले सिरका एक न छोड़ा—कुलटा स्त्रियोंको क०। काले सिरका=युवा पुरुष।

काले सिरकी जो न करें सो थोड़ा—स्त्रियां सब कुछ कर सकती हैं। जब कोई स्त्री इधरकी उधर लगाके आपसमें विवाद करा दे, तब क०।

का बर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूक पुनि का पछताने—(तुलसी) औसरपर काम करनेसे ही सफलता होती है। जब किसीको सहायता करनेकी तत्काल ही आवश्यकता होती है, तब क०।

(१) खेतियां जलकर हुईं यारोंकी ख़ाक।
अब है घिरकर इधर आया अबर॥ (हाली)
(२) दीबो अवसरको भलो, जासों सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो, घनको कौने काम॥ (वृन्द)

कासा दीजे, वासा न दीजे—खिला दे, मगर घरमें न रखे। अपरिचित विदेशी मेहमानपर क०। कासा=थाली वासा=घर।

कासाभर खाना, आसाभर सोना—आनन्दी जीवपर क०।

काहे तुम धमधूसर मोट, धनकी फ़िकर न तनकी चोट—बेफ़िक्रीमें आदमी मोटा हो जाता है।

किमाश्चर्यमतः परम्—(सं०) इससे अधिक आश्चर्य और क्या होगा।

किया कराया, सब गुड़ माटी—किया कराया काम जब बिगड़ जाता है, तब क०।

किया कराया, यश नहिं पाया—सब कुछ करनेपर भी जब निन्दा होती है, तब क०।

किया चाहे चाकरी, सोया चाहे घर किया चाहे आशिक़ी, बाबूजीका डर—दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते।

किसको माने धौंसा खाया है—जब किसीको चुनौती देनी होती है, तब क०।

किस खेतकी मूली है
किस खेतका बथुआ है } नगण्य मनुष्यपर क०।
किस गलीका कुत्ता है।

किस विरतेपर तत्ता पानी—(ज०) जब किसी मनुष्यकी मांग उसकी करतूतसे अधिक होती है, तब क० ।

(१) 'खसम निखट्टू जोय निमानी,
किस विरतेपर तत्ता पानी ।'

माताका कहना निखट्टू पुत्रके प्रति । निमानी=सुकुमार ।

(२) बड़स दिनांपर बलमा आये,
ऊंची अटरिया सेज बिछाये ।
बलमा रहे पीठ दै सोय, लेना एक न देना दोय ।
भोर भये पिय उठे रिसाय, तत्ता पानी देहु चढ़ाय ॥
अबला है तिरिया मुसकानी, किस विरतेपर तत्तापानी

स्त्रीका कहना अपने नपुंसक पतिके प्रति ।

(३) आई निशि पिय सों करि मान,
भोरहि चहत नीर असनान ।
लोग लज्जि नहिं मनमें ठानी,
किस विरतेपर तत्ता पानी । (लो० र० को०)

किस बतपर गरम पानी चाहती है अर्थात् नायकसे तो मान किया अब किस गुनसे स्नानके लिये पानी चाहती है (लो० र० को०)

(४) नहिं सीखत सतगुन करि नेमा,
निज हठ तजि न प्रचारत प्रेमा ।
तापर सुख चाहत अज्ञानी,
किस विरतेपर तत्ता पानी । (लो० सं०)

किसीका आधा बिगड़े, इनका खदानेका खदाना बिगड़ गया—(१) जब किसी मनुष्यकी थोड़ी हानि होती है और दूसरेकी बहुत, तब क० । खदाना उस स्थानको कहते हैं, जहांसे कुम्हार मिट्टी खोदकर लाता है । (२) किसीके घरका एक आदमी खराब होता है और इनके घरके सबके सब बिगड़ गये हैं ।

किसीका घर जले गुंडे हाथ सेकें / **किसीका घर जले, कोई तापे**—जब कोई मनुष्य दूसरेकी विपत्तिपर हंसता है या उससे लाभ उठाया चाहता है, तब क० ।

किसीका मुंह चले, किसीका हाथ—कोई गाली देता है, कोई मार बैठता है ।

अब कुटकियां भी होंगी, तो हम देंगे गालियां,
प्यारे किसीका हाथ, किसीकी जुबां चले । (अमानत)

किसीका लड़का कोई मन्नत माने—स्पष्ट । अनधिकार चर्चापर क० ।

किसीकी कुछ नहीं चलती, कि जब तक़दीर फिरती है—भाग्यके सामने किसीका वश नहीं ।

किसीके पौ बारह, किसीके तीन काने—जब किसीको लाभ और किसीको हानि होती है, तब क०

किसीकी भेंड़—जब कोई ख़ुदग़रज़ आदमी किसी दूसरेकी चीज़ ईमानदार बनकर हड़प लेनेकी ख़्वाहिश करता है, तब क० ।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—कोई ख़ुदग़रज़ मुल्ला थे । उन्होंने किसी की भेंड़ कहीं पायी । उनके मुंहमें पानी भर आया । वे भेंड़को अपनानेकी ताकमें हो गये । लेकिन इस तरह किसीका माल ले लेना गुनाह समझ अज़ां देनेकी ठहराई । फिर आप मस्जिदके कंगूरेपर चढ़ गये और अज़ां देने लगे । 'किसीकी' तो ज़ोरसे चिल्लाते थे और 'भेंड़' बड़ी धीमी आवाज़में कहते थे । इस तरह तीन बार अज़ां देकर मुल्ला साहब भेंड़को हड़प गये ।

किसीको तवेमें दिखाई देता है, किसीको आरसीमें—जब किसीकी बुद्धिमत्ता दूसरेसे अधिक झलकती है, तब क० । आरसीमें तो सभी अपना मुंह देखते हैं, परन्तु उसीकी बुद्धि सराहनीय है, जो तवेमें अपना मुंह देख सके ।

किसीको बैंगन बायले, किसीको बैंगन पथ्य—जब एक ही चीज़ एकके लिये हितकर और दूसरेके लिये अहितकर हो, तब क० ।

(१) सीतिहि सुख सखि दुखद मोहि, सखि सारथके गथ्य ।
काहू बैंगन बायलो, काहूको है पथ्य ॥

(२) एक वस्तु गुन होत हैं भिन्न प्रकृतिके भाय ।
भटा एककों पित करत करत एककों बाय । वृन्द ।

किसीने यह भी नहीं पूछा, कि तुम्हारे मुंहमें के दांत हैं—जब किसीके दुःखमें कोई खड़ा न हो, तब क० ।

कीजे कहा पयोधिसों जाते प्यास न जाय—दे० 'काम जो आवे......।'

कुआं बेचा है, कुएं का पानी नहीं बेचा—जब कोई बेबातके लिये दूसरेसे झगड़े, तब क० ।

कुएंका ब्याह, गीत गावे मसीदका—बेमौक़े बात कहनेपर क० । मसीद=मस्जिद ।

कुएं की मिट्टी कुएं हीमें लगती है—जिस चीज़की कमाई उसीमें लग जाय, तब क०।

कुएंमें भांग पड़ी है—जहां सबकी अक़्ल मारी जाय, वहां क०, अथवा जहां सभी मूर्खताकी बातें करते हैं, वहां भी क०।

(१) एक जो होय तो ज्ञान सिखाइये,
कूप हिमें यहां भंग परी है। (हरिश्चन्द्र)

(२) दिय सदीवको दोष न धरें, लोगों बाद उपालभ करें।
कहै पखानो यों जग गाय, कूएं भांग परी दरसाय॥ (लो०र०को०)

कुएंमेंकी मेढ़की, करे सिन्धुकी बात—जब कोई तुच्छ आदमी लम्बी चौड़ी बातें करे, तब क०।

कुओंमें बांस डलवा दिये-बहुत खोजा। जब कोई मित्र बहुत तलाश करनेपर मिले, तब व्यंगसे कहते हैं।

कुंजड़नकी अगाड़ी, और कसाईकी पिछाड़ी-यदि तरकारी अच्छी चाहते हो, तो कुंजड़ेके पास पहले जाओ, क्योंकि उस समय तुम्हें चीज़ ताज़ी मिलेगी। यदि मांस अच्छा चाहते हो, तो क़साईके पास पीछेसे जाओ, क्योंकि वह अच्छी चीज़ शेषमें बेचता है।

कुंजड़ी अपने बेरोंको खट्टा नहीं कहती—अपनी चीज़को कोई बुरी नहीं कहता।

कस न गोयद कि दोग़ मन तुर्श अस्त।'

कुचकट पनही बतकट जोय, जो पहलौठी बिटिया होय, पातर कृषि बौरहा भाय, कहैं घाघ दुख कहां समाय—फुनगी कटा हुआ जूता, बात काटनेवाली स्त्री, पहलौठी लड़की, हलकी खेती और पागल भाई ये सब बहुत दुखदायी हैं।

कुचाल संग फिरना, आप मूतमें गिरना—बुरोंकी संगत दुखदायी होती है।

कुचाल संग हांसी, जीव जानकी फांसी-(ज०) ऊ० दे०।

कुछ कमान झुके, कुछ गोसा—(व्य०) कमान और गुन जब दोनों ही झुकते हैं,तब तीर छुटता है। जब हिसाबमें फ़र्क़ पड़ जाय, तो उसे निपटानेके लिये कुछ न कुछ दोनोंको घाटा सहना पड़ता है।
कुछ झुकके पर सोने लगी, कुछ झुककी मैं सोने लगा।

कुछ खोहीके सीखते हैं—बिना ठोकर खाये मनुष्यकी अक़्ल नहीं बढ़ती।

कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे—जब एक दूसरेकी आन्तरिक इच्छा समझ जाता है, तब क०।

इसपर एक कहानी यों है:—कोई पथिक सिरपर एक गठरी लिये कहीं जा रहा था। गरमीका दिन था, गठरी भी भारी थी। इसलिये वह एक झाड़के तले बैठ रहा। संयोगवश एक सवार उसी राहसे जा रहा था। पथिकने कहा, 'भाई! मेरा बोझ भारी है, इसलिये तुम इसे अपने घोड़ेकी पीठपर रख लो, मैं आगे मुकामपर पहुंचकर ले लूंगा।' सवार उसकी बात अनसुनी करके चला गया। पथिकने सोचा, कि अच्छा हुआ, यदि वह मेरी गठरी लेकर भाग जाता, तो मैं क्या करता। इधर सवारने अपने मनमें कहा, 'तुमने घर आई लक्ष्मी नाहक छोड़ी।' यह सोचकर वह लौट पड़ा और मुसाफ़िरसे बोला, 'मुझे तुमपर दया आ गई, ला मैं तेरी गठरी पहुंचा दूं।' इसपर पथिकने जवाब दिया, 'जाओ भाई! कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे। अब गठरी तुम्हें नहीं मिलती।'

कुछ तो ख़रबूज़ा मीठा, और ऊपरसे क़न्द—मीठेपर मीठा।

कुछ तो ख़लल है कि जिससे यह ख़लल है—जब कोई गुप्त रहस्य होनेका संदेह हो, तब क०।

कुछ तो गेहूं गीली, कुछ जिंदरी ढीली—जब दोनों तरफ़ कुछ खोट होता है, तब क०।

कुछ तो बावली कुछ भूतों खदेड़ी—(ज०) खिलाड़ी स्त्रियोंको क०।

कुछ दालमें काला है—जब किसी बातमें संदेह उपस्थित होता है, तब क०।

(१) रतिमानी संग नन्दकुमार, कोई हीत नहीं इतबार।
सीष पखानो विश्वासीसे, कछु दारमें कारो दीसे॥ (लो०र०को०)

(२) बादल है ख़ूब मेरा देखो भाला,
बतलाइये किसी चोरको चाला बाला।
ये हुज़ूर ए वजीनो इसको वेबजह नहीं,
कुछ दालमें है ज़रूर काला काला। (रंगूर)

कुछ बसन्तकी भी ख़बर है?—(१) जो बसन्तमें ख़ुशी नहीं मनाते, उनको क०। (२) जो मनुष्य दुःखके समय ख़ुशी मनावे, उसे भी व्यंगसे क०।

(२) जब असल बात न मालूम हो, तब क०।

कुछ मूसल नहीं बदलाना है—जब आदमीकी गरज् निकल जाती है, तब पीछेसे क०।

इसका निकास इस कहानीसे है। किसी समय एक मुसाफ़िरने लुटेरोंके भयसे मूसलमें अशरफ़ियां भरके यात्रा आरम्भ की। रातके समय वह किसी गांवमें एक बुढ़ियाके घर ठहरा। जब वह सो गया, तब उस बुढ़ियाने यात्रीके मूसलको अच्छा देखकर उससे अपना मूसल बदल लिया। सवेरे जब मुसाफिर उठा, तो उसे मालूम हुआ, कि मूसल बदला गया। उसने भेद न खुलनेके भयसे कुछ भी न कहा, वरं उसी बुढ़ियाका मूसल लेकर चल दिया। आगे जाकर किसी गांवमें उसने अच्छे मूसल बनवाये और फिर उसी गांवमें आकर रास्ते रास्ते घूम घूमकर कहने लगा, 'जिसे पुराने मूसलसे नया बदलना हो वह आवे।' इसी प्रकार कुछ मूसल उसने बदले। जब उस बुढ़ियाको भी यह हाल मालूम हुआ, तो उसने यात्रीवाला मूसल जो कुछ पुराना सा था, लाकर बदलाया। जब मुसाफ़िरको असली मूसल, जिसके लिये यह प्रपंच रचा गया था, मिल गया, तो और लोगोंसे जो मूसल बदलानेको खड़े थे, कहा, कि अब हमें मूसल नहीं बदलाना है।

"कुछ लेते हो?" कहा "अपना काम क्या है" "कुछ देते हो?" कहा "यह शरारत बंदेको नहीं आती"—स्पष्ट। स्वार्थीपर क०।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लुहार खोटा—जब दोनों तरफ़ कुछ खोट हो, तब क०।

कुछ स्वार्थी कुछ परमार्थी—कुछ ईश्वर निमित्त कुछ अपने हेत।

'दो गुन नीरा निधान सम, परमारथ स्वारथ साधन दीजा।' (गुलाब)

कुटनीसे तो राम बचावे, प्यारी होकर पत उतरावे—(ज०) स्पष्ट।

कुतिया चोरों मिल गई, पहरा किसका दे—

जब रक्षक ही भक्षक हो जाता है, तब क०।

करे न कोई आंखि सखि, रहे जो नीतहि नेह।
कुतिया चोरहि मिलि गई, पहरा काको देह॥

कुत्ताके आटा होय, तो लिट्टी लगाये खाय—(पू०) स्पष्ट।

कुत्ता घसीटीमें पड़ना—जब कोई ऐसे काममें फँस जाय जिसमें ज़िल्लत उठानी पड़े, तब क०। आप तो कामको छोड़े, पर काम उसे न छोड़े, तब क०।

कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें—यदि खर्च न हो, तो सभी शौक़ कर लें।

कुत्ता चौक चढ़ाये, चपनी चाटन जाये—नीचका कितना भी आदर करो, मगर वह अपनी बुरी आदत नहीं छोड़ता।

कुत्ता देखेगा, न भौंकेगा—छिपाकर रख दो, न कोई देखेगा न मांगेगा, ऐसे ही मौक़ेपर क०।

कुत्ता निज पीरां मरे, मांगे मियाँ शिकार—जो आप ही कष्टमें पड़ा है, उससे कोई अपना मतलब निकालना चाहे, तब क०।

कुत्ता पाय तो सवा मन खाय, नहीं तो दीया ही चाटकर रह जाय—स्पष्ट।

कुत्ता पाले वह कुत्ता, मामा घर भांजा कुत्ता, बहन घर भाई कुत्ता, सासरे जमाई कुत्ता, सब कुत्तोंका वह सरदार जो सौरा रहे जमाई द्वार—स्पष्ट। इन लोगोंकी क़द्र नहीं होती।

कुत्ता भी बैठता है, तो दुम हिलाकर बैठता है—जब कोई सफ़ाई न रखे, तब क०।

कुत्ता भौंके क़ाफ़ला सिधारे—अपना काम किये जाओ, बकनेवालोंको बकने दो।

कुत्ता मुंह लगानेसे सिर चढ़े—नीचको मुंह नहीं लगाना चाहिये।

कुत्तेका मग़ज़ खाया है—बड़े बकवादीको क०।

कुत्तेकी नींद—कम सोनेवालेको क०। कुत्तेकी नींद ज़रासे खटकेमें खुल जाती है।

कुत्तेकी दुम बारह वर्ष नलवेमें रखो तौभी टेढ़ीकी टेढ़ी—जिस आदमीकी बुरी आदत किसी तरहसे भी न जाय, उसे क०। कुत्तेकी पूंछ यदि ज़मीनमें सीधी करके गाड़ दी जाय, तौभी निकालनेपर टेढ़ी ही हो जायगी।

कुत्तेकी मौत मरना—बेमौत मरना अथवा बुरी तरह मरना। जब कोई आदमी चारों तरफ़से विपत्तिमें पड़ जाय और उससे किसी तरह भी छुटकारा पानेका रास्ता न मिले, तब क०।

कुत्तेके पैर जाना, बिल्लीके पैर आना—जल्दी ही जाना और जल्दी ही आना हो, तब क०। कुत्ता

और बिल्ली ये दोनों ही जल्दी चलते हैं। इन्हें पैरों जानेके लिये भी कही जा सकती है, क्योंकि दोनों हीके चलनेमें आवाज़ नहीं होती।

कुत्तेके भौंकनेसे हाथी नहीं डरते—बुद्धिमान् और गम्भीर मनुष्य ओछोंके तानोंसे नहीं डरते।

कुत्तेको घी नहीं पचता—(१) ओछेके पेटमें बात नहीं पचती। (२) ओछेके पास यदि धन हो जाय, तो वह उसे छिपा नहीं सकता।

कुत्तेको मस्जिदसे क्या काम—(मु०) जब कोई नीच सत्पुरुषोंके समाजमें जा बैठे या कोई पापी पुण्य करनेका ढोंग रचे, तब क०।

कुत्तेको मौत आवे, तो मस्जिदमें मूत आवे—(मु०) क्योंकि वहां मूतनेसे ही उसे बहुत मार पड़ेगी।

कुत्ताको हड्डी भली लगती है—गन्देको गन्दी चीजें ही अच्छी लगती हैं। हिन्दू लोग मांसाहारियोंको व्यंगसे क०।

कुत्ते तेरा मुंह नहीं, तेरे सांईका मुंह है—कुत्तेके भौंकनेपर कोई कहता है, यह भौंकना तेरा नहीं तेरे मालिकका है। जब कोई सामान्य मनुष्य किसी बड़ेकी शह पाकर चमकता है, तब क०।

कुनबेवालेके चारों पल्ले कीचड़में हैं—जिसका कुटुम्ब बड़ा होता है उसपर हर वक्त विपत्ति पड़नेकी संभावना रहती है। जब कोई गृहस्थ दूसरेके घरके ऐब दिखाता है, तब उसे क०।

कुम्हारका गधा जिसके चूतड़में मिट्टी देखे उसीके पीछे—क्योंकि उसीको वह अपना मालिक समझता है।

कुम्हार कहेसे गधेपर नहीं चढ़ता—दे० 'कहेसे कुम्हार...'

कुम्हारके घर चक्कीका दुख } जहां ऐसी चीज़-
कुम्हारके घर बासनका काल } का अभाव हो
जो वहां न होना चाहिये, वहां क०।

कुम्हारसे पार न बसाय, गधेके कान उमेठे—जब कोई बलवानपर आया हुआ गुस्सा ग़रीबपर उतारे, तब क०।

कुरसीका अहमक़—(१) मूर्ख बड़े आदमीको क०। (२) कुर्सीपर धनी मानी लोग ही बैठते हैं। (२) कुर्सी अवधमें एक छोटासा शहर है। वहांके लोग मूर्खताके लिये प्रसिद्ध हैं।

क़ुरानपर क़ुरान रखनेका क्या डर है—(मु०) कुछ नहीं, परन्तु दूसरी कोई चीज़ क़ुरानपर नहीं रखी जा सकती। जहां बराबरीका दावा हो, वहां क०।

कुलका दीपक पुत्र है, मुखका दीपक पान,
घरका दीपक इसतिरी, धड़का दीपक प्रान—स्पष्ट।

कुलेलमें गुलेल—ख़ुशीमें रंज। जब हर्षके समय एकाएकी विघ्न पड़ जाय, तब क०।

कुल्ला करे न दांतन फेरे, फिर कैसे हों दांत निखेरे—स्पष्ट।

कुल्हियामें गुड़ नहीं फूटता—बड़े काम छिपाये नहीं जा सकते। गुड़ बहुत बड़े और मज़बूत बरतनोंमें रखा जाता है, क्योंकि इसके बड़े बड़े ढोंके और चक्के बनाये जाते हैं।

सुरत खेद लखि मार नवीन, कह्यो चंगसों अति परबीन।
नेकु छिपै नहिं लाख छिपाईं, कुल्हियामें गुड़ फूटै नाहीं॥
(सच्छिता)

कुशतह कुश्तह मीकुनद—(फा०) कुश्ता आदमीको मार भी डालता और बलवान भी करता है। कुश्ता धातु घटित औषधिसे बनता है जिसे हकीम और वैद्य रोगियोंको देते हैं।

कुसमय पड़े दुश्मनसे हेत—(नीति) आपत्ति आनेपर शत्रुसे भी मित्रता करनी चाहिये।

इसपर एक कहानी इस तरह है—एक चूहा रातके समय खानेकी तलाशमें बिलसे बाहर निकला। एक उल्लूने, जो एक वृक्षकी डालपर बैठा था, उसे देख पाया। उसी समय एक नेवलेने देखा, कि उल्लू चूहेकी घातमें बैठा है और चूहा उसके डरसे अपने बिलमें घुसा चाहता है। वह नेवला बिलके मुंहपर जा बैठा, जिससे चूहेके आते ही उसे पकड़ ले। दैवात् उसी समय एक बिल्ली भी, बहेलियेके जालमें उसी जगह फंस गई थी। चूहेने अपनेको दोनों शत्रुओंसे घिरा जान तीसरे शत्रु बिल्लीके जालमें प्रवेश किया। उसने बिल्लीसे कहा, "मेरी जान तुम्हारे हाथ है। यदि तुम मुझे न मारो तो मैं तुम्हें छुड़ा दूं। इसमें दोनोंकी ही जान बच जायगी।" जब शिकारी अपने जालको देखने आया, तो उसके डरसे उल्लू और

बहेलिया भाग गये और चूहेने जाल काटकर बिल्लीको भगा दिया, तथा आप भी भागकर अपने बिलमें चला गया। दूसरे दिन बिल्ली चूहेके पास आई और बोली, "आओ मित्र ! हम तुम दोनों मिलें।" चूहेने कहा, "कुसमय पड़ने से ही दुश्मनके साथ हेल करना चाहिये, सब समय नहीं।" क्योंकि वह जानता था कि बिलके बाहर निकलते ही बिल्ली उसे खा जायगी।

कुसुमका रङ्ग तीन दिन, फिर बदरङ्ग—जो चीज़ स्थाई न हो, उसपर क०।

कूजे ढलें कि माट—कोई नहीं कह सकता, कि पहले बूढ़ा मरेगा या लड़का। जब किसी बूढ़ेको मरनेके लिये कहा जाय, तब वह चिढ़कर कहता है। "पहिले घड़ा फटे कि मटकैना" भी क०।

कूटनवारी कूटी गई, सास पतोहू एकी भई—जब दो आदमीकी लड़ाईमें तीसरेकी हानि हो जाय और वे दोनों एक हो जांय, तब क०।

कूटो तो चूना, नहिं खाकसे दूना—चूना जितना कूटा जाय उतना ही उसमें लस होता है, नहीं तो मट्टीके बराबर है।

कूड़ीके इस पार या उस पार—आलसी मनुष्यपर क०। किसी कामका वारा न्यारा करनेपर भी क०।

कूड़ेपर फुलेल डालना—(१) चीज़की बरबादी करना (२) कृतघ्नके साथ नेकी करना।

कूत थोड़ा मंज़िल बड़ी—जो काम सामर्थ्यके बाहर हो, उसपर क०।

कूद कूद मछली बगुलेको खाय—उलटे ज़माने-पर क०।

कूदते कूदते नचैया हो जाता है—अभ्यास करनेसे कुशलता आती है। गाते गाते कलावंत या कीर्तनिया हो जाता है।

कूद मुए कूद, तेरी नलियोंमें गूद, निकल गया गूद, तो रह गया मरदूद—(मु० ज०) स्पष्ट।

कूदे फाँदे तोड़े तान, ताको दुनिया राखे मान—जब गुणीकी कदर नहीं होती, तब क०।

कूप भेक जाने कहा, सागरको विस्तार—(वृन्द) स्पष्ट। भेक=मेंढक।

कूवत थोड़ी मंजिल भारी—दे० 'कूत थोड़ा'''

केऊके लेखे जेठ पूत केऊके लेखे कनवा—जो घर-वालोंके लिये तो बहुत कामका हो, पर बाहरवाले कम उमर जानके उसे बच्चा ही समझते हों, उसे क०।

केकर केकर धरों नाम, कमरी ओढ़ले सारो गाँव—(प०) किसका किसका नाम लिया जावे, सारा गांव कंबल ओढ़े है। जिस मण्डलीमें सबके सब खराब हों, वहां अलग अलग किसका नाम लिया जाय?

के करनी करे केकरा सिरे धोते—(पू०) काम करे कोई, मगर उसका उत्तरदायी कोई दूसरा हो, तब क०।

केकर खेती केकर गाय, बरबस कोई मारा जाय—जब कोई निर्दोषी मनुष्य किसी अन्य दोषीके कारण कष्ट पावे, तब क०।

कोई आइनेमें देखे तो कोई आरसीमें—स्पष्ट।

कोई ओढ़े शाल दुशाला, मोरा पियवा ओढ़े कालीकमरिया—कोई तो शाल दुशाला ओढ़ता है, पर मेरे स्वामी काले कम्बलमें ही मस्त हैं। जब किसीके पास दुनियांभरकी ऐश असरतका सामान मौजूद रहनेपर भी उसे सादगी ही पसन्द हो, तब क०।

कोइरीके गाँवमें धोबी पटवारी—(१) जैसा मालिक होता है, वैसा उसे कारिन्दा मिलता है। मूर्खको मूर्ख ही भाता है। (२) कोइरीसे धोबी हिसाब रखनेमें चतुर होता है, इसलिये क०। जैसे अन्धोंमें काना राजा।

कोई आँखका अन्धा, कोई हियेका अन्धा—जब कोई समझानेसे भी नहीं समझता हो, तब क०।

कोई कहके दिखाय, हम करके दिखायें—कोई तो केवल किसी कामके करनेको कहकर ही रह जाता है, पर मैं कार्यको सम्पूर्णतः समाप्त करके ही छोड़ता हूं।

कोई काम करे दामसे, हम दाम करें कामसे—कोई पूंजी लगाकर रोजगार करता है, हम परिश्रम करके पूंजी पैदा करते हैं।

कोई खींचे लांग लंगोटी, कोई खींचे मूछरियां, कोठे चढ़के दी दुहाई, कोई मत करियो दो जनियां—दो ब्याहवालोंपर व्यंग है।

कोई दमका दमामा है—मनुष्यके जीवनपर क०। क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है।

कोई दमका मेहमान है—थोड़ी देरतक रहनेवाला मेहमान। जब कोई आदमी मर रहा हो, तब क०।

कोई भी माके पेटसे लेकर नहीं निकला—काम सीखनेसे ही आता है, जन्मकालसे नहीं आता।

कोई मरे कोई जीये, सुथरा घोल बतासे पीये।
कोई मरे कोई मल्हार गावे—

स्वार्थीको क०। जब कोई दूसरेकी विपत्तिपर हंसता है, तब क०।

कोई मालमें मस्त, कोई ख्यालमें मस्त—कोई सम्पत्ति पाकर ही खुश रहता है, चाहे वह उसे काममें लावे या न लावे और कोई सम्पत्तिको अच्छे कामोंमें लगाकर ही खुश होता है।

कोई मुझे न मारे तो मैं सारे जहानको मार आऊँ—डरपोक आदमीको क०।

कोई हाल मस्त कोई माल मस्त—कोई अपनी बेफिक्रीमें मस्त रहता है और कोई अपने मालमें ही मस्त रहता है।

क्यों समझें तवङ्गरोंको हम बालादस्त।
क्या उनकी हमारे आगे है बूद ओ हस्त॥
किस बातमें रश्क हम उनसे कम हैं।
वो मालमें मस्त हैं हम ख्यालमें मस्त हैं॥

कोउ न काहु दुख सुखकर दाता, निजकृत कर्म भोग सब भ्राता—(तुलसी) इस संसारमें दुःख सुख देनेवाला कोई नहीं है। मनुष्य अपने पूर्वजन्मके किये हुए कर्मोंको ही भोग करते हैं।

कोउ नृप होउ हमें का हानी, चेरि छोड़ि नहिं होउब रानी—(तुलसी) जब कोई नौकर अपने मालिककी भलाईके लिये ही उन्हें कुछ कहता है मगर उसकी बात अनसुनी कर दी जाती है, तब क०।

को कहि सके बड़ेन सों, होत बड़ीए भूल। दीने दई गुलाबकी, इन डारन वे फूल—बड़ोंमें भी दोष पाया जाता है। यद्यपि गुलाब अच्छा फूल है, तो भी उसकी डालमें कांटे होते हैं।

कोखकी आंच सही जाती है, पेटूकी आंच नहीं सही जाती—(ज०) (१) प्रसव-वेदना सही जाती है परन्तु पेटका दर्द सहा नहीं जाता। (२) सन्तानकी मृत्यु सही जाती है, पर पतिकी मृत्यु नहीं सही जाती। (३) सन्तानकी मृत्यु सही जाती है किन्तु भूखकी ज्वाला नहीं सही जाती।

कोटि जतन कोऊ करे, परे न प्रकृतिहिं बीच। नल बल जल ऊंचो चढ़े, अन्त नीचको नीच—जब कोई नीच मनुष्य ऊंचे पदपर बैठकर भी नीच काम करे, तब क०। कोटि उपाय करनेपर भी किसीका स्वभाव नहीं बदलता, जैसे नलके जोरसे फुहारेका पानी ऊंचे चढ़ता है, अन्तमें नीचे ही आजाता है। उसी तरह नीच ऊंचा होनेपर भी नीच ही रहता है।

कोटिन दाख खवाइ मरो, पर ऊंटहिं काठ कठेरोइ भावे—ऊ० दे०।

कोटिन रङ्ग दिखावत है, जब अङ्गमें आवत भङ्ग भवानी—भंगेड़ियोंका कहना है।

कोठी कुठलेको हाथ न लगाओ, घरबार सब तुम्हारा—(१) जो स्त्री अपनी बहूको घर नहीं सौंपा चाहती, उसपर क०। (२) ओछी खातिरदारी अथवा झूठी खातिरदारीपर क०।

(१) छूना न चीज कोई घर भर है सब तुम्हारा।
(२) जो कछु है सो तिहारोइ है, पै इनानको नाम कहीं मत लीजिये।

कोठी धोये कीच हाथ लगे—बुरा काम करनेसे बुराई ही हाथ लगती है।

कोठीमें खाउर घरमें उपास—(पू० ज०) मूर्ख और सूमपर क०।

कोठीमेंसे मोठी नहीं निकली—(१) जब पूंजी, बिना खर्च ज्योंकी त्यों बनी रहे, तब क०। (२) जो युवक ब्रह्मचर्य्यसे रहे, उसे क०।

कोठेकी रहनेवाली, ज़ीने पै आगई, रफ़्ते रफ़्ते अपने क़रीने पै आगई—जब कोई मनुष्य उच्च स्थान प्राप्त कर पुनः अपने निम्न स्थानपर आ जावे, तब क०।

कोठेवाला रोवे, छप्परवाला सोवे—धनीसे निर्धन बेफिक्र होता है।

कोठेसे गिरा सम्हलता है, नज़रोंसे गिरा नहीं सम्हलता—जब कोई चार आदमियोंकी निगाहसे उतर जाता है, तब क०।

कोढ़में खाज—जब दुःखपर दुःख पड़ता है, तब क०।

कोढ़ीके जूं नहीं पड़ती—क्योंकि उसका ख़ून ख़राब होता है।

कोढ़ीको दाल भात कमासुनको फुटहा—(पू०) स्पष्ट। फुटहा=भुनी हुई ज्वार।

कोढ़ी डराये थूकसे—एक तो कोढ़ी, दूसरे उसका थूक, इसलिये लोग उससे डरते हैं।

कोढ़ी मरे संगाती चाहे—जो अपना सा बुरा दूसरोंका भी चाहे, उसे क०।

कोतवालको कोतवाली ही सिखाती है—कामको काम सिखाता है।

कोता गर्दन तङ्ग पेशानी, हरामज़ादेकी यही निशानी—स्पष्ट।

कोता गर्दन दुम दराज़, कंजी आंख कबूतरबाज़। सौमें एक, सहसमें काना, सवा लाखमें ऐंचा ताना। ऐंचा ताना करी पुकार, गंजेसे रहियो हुशियार। जाकी छाती एक न बार, वह मानव सबका सरदार—स्पष्ट। यह सब बुरे समझे जाते हैं।

क्वचित्काना भवेत् साधुः।

कोदोंका भात किन भातनमें, और ममियां सास किन सासनमें—(पू०) स्पष्ट।

कोदों देके पढ़े हो?—कम पढ़े लिखेपर क०।

को बड़ छोट कहत अपराधू, सुनि गुनि भेद समुझि हैं साधू—(तुलसी) जब दो वस्तुओंमें किसीको भी अच्छी बुरी कहते नहीं बनता, तब क०।

कोयल, काले कौवेकी जोरू—जब दोनों बराबर बुरे होते हैं, तब क०।

कोयला होय न ऊजला, सौ मन साबुन लाय—नीच लाख उपाय करनेपर भी अपनी आदत नहीं छोड़ता।

कोयलेकी दलालीमें हाथ काले—संगतका फल

कोरे गर्जे बून्द न एक—जो आदमी बकता बहुत और करता कुछ नहीं, उसपर क०। (२) जब बुरा काम करनेसे बदनामीके सिवा कुछ हाथ नहीं आता, तब अथवा कोई काम करनेमें व्यर्थ परिश्रम होता है और बदनामी मिलती है, तब क०।

कोलीका घर जले, कलन्दर गांड़ा मांगे—जो केवल अपना ही स्वार्थ देखे और दूसरेकी हानिपर कुछ भी परवाह न करे, तब क०।

कोल्हूका बैल—जो दिन रात काम करे, उसको क०।

कोल्हूके बैलको घरमें भी पचास कोस—जो मनुष्य घरमें रहकर दिन रात मेहनत करे, उसपर क०।

फिरति थकी हौं रहति नहिं, मानिनि मानमवास,
ज्यों कोल्हूके बैलको घर ही कोस पचास। (लो०र०को०)

कोल्हूसे खल उतरी, भई बैलों जोग—बूढ़े मनुष्यको, या जो मनुष्य अपने पदपरसे हटा दिया जाय, उसपर क०। जिस तरह तिलमेंसे तेल निकाल लेनेपर वह खल हो जाती है, उसी तरह बूढ़ा मनुष्य भी बलहीन होनेसे निकम्मा हो जाता है।

कोस चली न बाबा प्यासी—जो मनुष्य थोड़ी ही मेहनतसे थक जाय, उसे क०।

कोसे जियें, असीसे मरें—जिसे कोसा जाय वह जीये और जिसे आशीर्वाद दिया जाय, वह मर जाय, तब क०। कलियुगमें दुनियांकी उल्टी रीतिपर क०।

कौआ अपने शिशुन कों, सबतें जानत सेत—अपने बच्चे सभीको सुन्दर लगते हैं।

इसपर एक कहानी है:—एक रानीने अपने हाथसे मोतियोंकी टोपी बनाई। रानीके कोई लड़का न था। इसलिये उसने अपनी दासीसे कहा, कि शहर भरमें जो लड़का सबसे ख़ूबसूरत हो उसे ले आ, मैं अपने हाथसे उसे यह टोपी पहनाऊंगी। दासी अपने लड़केको जो काला, काना और चेचक मुंह दाग था, ले आई, और कहा इससे सुन्दर लड़का और कोई मेरी निगाहमें नहीं आया।

कौआ कान ले गया—जो मनुष्य बिना सोचे विचारे दूसरेकी बातका दृढ़ विश्वास कर लेता है, उसको क०।

ले गया" वह झट कौवेके पीछे दौड़ा। जब लोगोंने इसका कारण पूछा तो वह बोला कि "मेरा कान कौवा ले गया है इसीलिये उससे छीननेके लिये उसके पीछे दौड़ता हूं।" इसपर एक आदमीने कहा, "कान तो तुम्हारे दोनों हैं तीसरा कहांसे आया, जो कौवा ले आता।" जब उसने अपने दोनों कान हाथसे टटोलके देख लिये, तो वह बहुत लज्जित हुआ।

कौआ चला हंसकी चाल, अपनी चाल भी भूल गया—जो मनुष्य अपनी चाल छोड़कर बड़े आदमी-की नक़ल करता है और उससे उसकी हानि होती है, उसपर क०।

कौआ टरटराता ही है, धान सूखते ही हैं—(पू० ज०) जब अपना काम अच्छी तरहसे होता जाय और फ़ालतू लोगोंके अड़ङ्गा डालनेसे उसमें कुछ भी विघ्न न पड़े, तब क०।

कौआ पिंजड़ेमें परे, बोलत नहिं सुकबानी—कौआ यदि पिंजड़ेमें रखकर पाला भी जाय, तो वह तोतेकी सी बोली नहीं बोलता।

कौआ सों भेल गेल्ह बुधियार—(मै०) मैथिली भाषामें 'गेल्ह' चिड़ियोंके छोटे बच्चेको कहते हैं। इसका मतलब यह है, कि कौवेसे उसका बच्चा ही होशियार होता है।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—किसी कौवेने अपने बच्चेको सिखलाया कि जब कोई ईंट उठाकर तुम्हें मारने दौड़े, तो तुरत उड़ जाना नहीं तो चोट लगेगी। इसपर बच्चा बोला, कि यदि वह पहलेसे ही हाथमें ईंट छिपाये रहे, तो मैं कैसे जानूंगा। यह सुनकर कौवेने कहा, 'तुमसे तुही होशियार निकला।' जब बापसे बेटा अधिक बुद्धिमानीकी बात करे, तब क०।

कौएकी दुममें अनारकी कली—(प०) जब कोई काला या बदशक्ल आदमी लाल रङ्गकी या बढ़िया पोशाक पहने, तब व्यंगसे क०।

कौड़ीके तीन तीन—बहुत सस्ती चीज़पर क०। जिसकी कुछ क़दर नहीं होती, उसे भी क०।

कौड़ीके सब जहानमें नक़्शो नगीन हैं।
कौड़ी न हो तो कौड़ीके फिर तीन तीन हैं॥ (नज़ीर)

कौड़ी कौड़ीको मुहताज—बहुत गरीबी हालतपर क०।

कौड़ी कौड़ी जोड़के, निधन होत धनवान। अक्षर अक्षरके पढ़े, मूरख होत सुजान—स्पष्ट, दृष्टान्त है।

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर घातें छलकी, भारी बोझ धरा सिर ऊपर किस विध हो हलकी—स्पष्ट।

कौड़ी न रख कफ़नको विज्जूकी शक्ल बन रह—फ़ैलसफ़को क०।

कौड़ी नहीं गांठमें, चले बाग़की सैर—जब मनुष्य बिना सामानके किसी कामके लिये तत्पर हो जाय, तब क०।

कौड़ी न हो पास, मेला लगे उदास—स्पष्ट।

कौड़ी नहीं पास, पड़ी अफ़ीमकी चाट—एक तो अफ़ीम महँगी दूसरे उसपर तर माल खाने-को चाहिये।

कौड़ीपर खून नहीं होता—सामान्य चीज़पर कोई नियत नहीं बिगाड़ता।

कौन अभागे राम न भावे—स्पष्ट।

कौन किसीके आवे जावे, दाना पानी खैंच लावे—अन्न जल मुख्य है।

कौन गिने उड़गन आकाश—आकाशके तारे किसने गिने हैं।

कौनौं गुनमम गयो गुमान,
जेहि विधि मैं न परै भी मान।
कहै हरि ज्यों बृद्धि प्रकास,
कौन गनै उड़गन आकाश॥ (लो० र० को०)

कौनसा दरख़्त है जिसे हवा नहीं लगी—सभीको थोड़ा बहुत कष्ट होता है।

जिसे तावे हवस न हवा हो हवा,
ऐसा दुनियांमें कोई शजरही नहीं॥

कौनसी चक्कीका पीसा खाया है—बहुत मोटे आदमीको क०।

क्या आग लेने आये थे?—जब कोई आवे और तुरत चला जाय, तब क०।

क्या उधारकी मा मारी गई है?—(व्य०) जब क़र्ज़ नहीं मिलता, तब क०।

क्या कोयलोंकी नाव डूब जा रही—कौन ऐसी भारी हानि होगी। जब किसीको बहुत कम क़ीमतकी चीज़ खोई जाती है, तब क०।

क्या ख़ूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले—जब कोई बुरा काम करे और उसका फल तत्काल मिल जाय, तब क०।

'कलियुग नहीं करयुग है ये, यहां दिनको दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥'
(नज़ीर)

क्या गोमतीका पानी पिया है?—जिस पुरुषमें ज़नानापन हो, उसे क०। लखनऊवालोंको तानेसे क०।

क्या घोड़े बेचके सोये हो?
क्या लड़कीका विवाह कर सोये हो? } बेफ़िक्रपर क०।

'जगे रैन दम्पति हित काम, पौढ़े लपटि पाछिले याम।
कहै पखानो बुद्धि उजागर, घोड़ बेच सोये सौदागर॥'
घोड़े बिक जानेपर सौदागर सुखसे सोते हैं।

क्या जाने गँवार घुँघटवाका यार—(ज०) गँवार देहातीपर क०। क्योंकि वे प्रेमकी क़दर नहीं जानते।

क्या पानी मथनेसे घी निकलता है?—सूमके प्रति क०।

क्या मक्खीने छींक दिया?—जब कोई मनुष्य काम करते करते छोड़ दे, तब क०।

क्या मुँह और क्या मसाला—जब कोई मनुष्य ऐसी बात कहे वा वैसा काम करे जिसके कहने वा करने लायक, वह न हो, तब क०।

क्या मुँहसे फूल झड़ते हैं—जब कोई मुखसे कटु वचन निकालता हो, तब उसे व्यंगसे क०।

'बोलत बचन झरत जनु फूला' (तुलसी)

क्या सांपका पांव देखा है?—जब कोई असम्भव बात कहे, तब क०।

क्या सांप सूंघ गया?—जिसे सांप काटता है, वह बोलने लायक नहीं रहता। जब कोई बातका जवाब न दे, तब क०।

क्या सासूजी अटको मटको, क्या मटकाओ कूला। डोलीपरसे जब उतरूंगी, जुदा करूंगी चूल्हा—नई झगड़ालू बहू साससे कहती है।

क्या सोवे राजाका पूत, क्या सोवे योगी अवधूत—दो ही सुखसे सोते हैं।

क्या सौ रुपयेकी पूंजी, क्या एक बेटेकी औलाद—थोड़ी पूंजी जल्दी खर्च हो जाती है और एक

क्या हाथ पैरोंमें मेंहदी लगी है—आलसी मनुष्यपर क०।

क्या ही पिद्दी, क्या ही पिद्दीका शोरवा—किसी तुच्छ वस्तु वा मनुष्यपर क०।

क्योंकर री तू उतरी पार? क्योंकर री तू चाली बाट, क्योंकर री तूने यह घर जाना, क्योंकर री तूने मुझे पहचाना?—किसी चीज़से एकको नफ़रत होती है और दूसरा उसे प्यार करता है, तब क०।

इसका निकास एक कहानीसे इस प्रकार है—किसी स्त्रीका रोग कढ़ी खाते खाते भी जब गया था। इसलिये वह नदीके उस पार अपने किसी रिश्तेदारके यहां चली गई। दुर्भाग्यवश उसे वहां भी कढ़ी ही खानेको मिली, जिसे सम्बोधन करके उसने उपरोक्त बातें कहीं।

क्यों कही और क्यों कहाई?—जब कोई किसीको एक कहे और दूसरा चार सुनावे, तब क०।

क्यों काँटोंमें घसीटते हो?—जब कोई बड़ा आदमी किसी युवकका सम्मान करे, तो वह शर्मिन्दा होकर कहता है।

हर क़दम पांव पे सर रखते हैं ख़ार-ए-सहर-ए दश्त,
ऐ जनूं! तूने तो कांटों पे घसीटा हमको।
अर्थात् जङ्गलमें क़दम क़दमपर कांटे अपना सिर हमारे पांवपर रखते हैं। तू हमें क्यों कांटों पे घसीटता है? मतलब यह है कि हम इस प्रतिष्ठाके पात्र नहीं, हमें यह प्रतिष्ठा देना मानो कांटोंपर घसीटना है।

क्यों बहिश्तमें लात मारते हो?—(१) जो मनुष्य भोग विलासमें बहुत लगा रहता है, उसे क०। (२) झूठेको भी क०।

क्वार कासा झूला, आया बरसा चला—(पं०) जिस मनुष्यको एकाएकी क्रोध आवे और शान्त हो जाय, उसपर क०। आश्विनकी वर्षा बहुत देरतक नहीं ठहरती।

क्वार जाड़ेका द्वार—आश्विन माससे जाड़ा आरम्भ होता है।

क्वारी खाय रोटियाँ, ब्याही खाय बोटियाँ—(पं०) क्वारी लड़की केवल रोटी ही खाती है, लेकिन ब्याहीको हर त्योहारमें कुछ न कुछ देना ही

ख

खग जाने खगही की भाषा—(तुलसी) जो जिस सङ्गतमें रहता है, वह उसीका हाल जानता है।

खट्टन गये कमाऊ, कुछ खट्ट भी लाये, शकर चाँटो बीबी, मियाँ जो घर फिर आये—निखट्टू-को क०।

खड़े पीरका रोज़ा रक्खा है क्या ?—(मु०) जब कोई आदमी किसी मजलिस या सभामें जाता और वहां खड़ा ही रहता है, तब उसे व्यंगसे क०।

खता करे बीबी, पकड़ी जाय बाँदी—जब कसूर करे कोई, और उसका दण्ड पावे दूसरा, तब क०।

खत्रीसे गोरा सो पिण्ड रोगी—स्पष्ट। जब कोई अपनेसे अधिक बुद्धिमानको ठगनेकी चेष्टा करे, तब क०। खत्री जाति रंगरूपके लिये प्रसिद्ध है।

खरको गङ्ग न्हवाइये, तऊ न छाड़े छार—(वृन्द) किसीका जाति-स्वभाव नहीं छूटता।

खर गुड़ एक ही भाव—जहां भले बुरेका कुछ विचार न हो, वहां क०।

भले बुरे जहँ एकसे, तहां न बसिये जाय।
ज्यों अन्यायपुरमें बिकें, खर गुड़ एकै भाव॥ (वृन्द)

खरबूज़ा चाहे धूपको, और आम चाहे मेह। नारी चाहे ज़ोरको, और बालक चाहे नेह—स्पष्ट।

खरबूज़ेको देखकर खरबूज़ा रङ्ग पलटता है—जब कोई देखादेखी शौक करे तब, या एकको देखकर दूसरा बिगड़े, तब क०।

खरसा प्यारा बीजना, स्याले प्यारी आग। वर्षा प्यारी तीन चीज़, कंबल छावा राग—स्पष्ट खरसा=गरम ऋतु; बीजना=पंखा; स्याले=जाड़ा; छावा=छप्पर। राग=गाना।

खरा खेल फरुखाबादी—खरे आदमीको कहते हैं, जो किसीके देने लेनेमें नहीं रहता। किसी समय फर्रुखाबादमें बहुत खरी चांदीका रुपया बनता था, उसीपर इस मसलका निकास है।

खरादीका काठ काटे हीसे कटता है—ऋण देनेसे ही चुकता है, या काम करनेसे ही होता है।

खराब खस्ता, नाज सस्ता—भाग्यहीनको क०, उसे लोग सस्ते नाजकी तरह त्याग देते हैं। सस्ता=कम दामका, जैसे कोदो मड़ुआ वग़ैरह।

खरीस्ती कुतिया और मखमलकी झूल—(च०) जब बदसूरत आदमी अच्छी पोशाक पहने, तब क०।

खरी कहैया दाढ़ी जार—सच कहनेवाला बुरा समझा जाता है।

खरी कि होय सुरधेनु समाना—(तुलसी) गधी कामधेनुकी बराबरी नहीं कर सकती। नीच साधुके तुल्य नहीं हो सकता।

खरी मजूरी चोखा काम—नगद मजदूरी देनेसे काम अच्छा होता है।

जहँ राखन चाहहु व्यवहार, अधिक रखहु तहँ न्याय विचार।
लेहु न भूलि सकुच कर नाम, "खरी मजूरी चोखा काम"

खर्च घना और पैदा थोड़ी, फिसपर बाँधूं घोड़ा घोड़ी—स्पष्ट।

खर्च बड़ा और कम रुज़गार, मनई घरके सब सुकुमार; हँडिया घरमें लौका धरे, वही घर कुशल विधाता करे—स्पष्ट।

खलक़का हलक़ किसने बन्द किया—दुनियांके मुंहको कौन बन्द कर सकता है?

खलीलख़ाँ फ़ाख़ता उड़ा गये—अनहोनी बात हर घड़ी नहीं होती। दिल्लीमें एक खलीलखाँ हो गये हैं, जिन्होंने कवायदकी जगह फ़ाख़ता उड़ाई थी।

ख़ल्क़की ज़बान ख़ुदाका नक़्क़ारा—जनताकी रायको ईश्वरका हुक्म समझना चाहिये।

'बजा कहे जिसे आलम, उसे बजा समझो।
ज़बान ख़ल्क़को नक़्क़ार-ए-ख़ुदा समझो॥ (ज़ौक़)

ख़ल्क़ ख़ुदाकी मुल्क बादशाहका—सृष्टि ईश्वर-की और ज़मीन बादशाहकी है।

खस कम जहां पाक—(१) पापी मनुष्यपर क० (२) जिस चीज़में जितना ही कूड़ा करकट कम रहता है, वह उतनी ही शुद्ध रहती है।

पै जब आयँ हिजरत जो गाहदैमारे।
कहें मिलके "खस कम जहां पाक" सारे। (हाली)

ख़सम औरतकी ढाल है—औरत ख़समकी मौजदगीमें कोई नीचा काम भी कर बैठे, तो उसका बचाव हो जाता है।

ख़समका खायँ, भाईका गायँ—(ज०) हिन्दू स्त्रियां भाईपर बहुत स्नेह करती हैं और यही चाहती हैं जिससे उनकी सुख्याति हो।

ख़सम किया सुख सोनेको, कि पाटी लग लग रोनेको—(ज०) अभागी लड़की जिसकी शादी बूढ़े पुरुषसे हुई है, कहती है। अथवा जिसका पति घरमें नहीं रहता, उसका कहना है।

ख़सम देवर दोनों एक सासके पूत, यह हुआ या वह हुआ—(ग्रा० ज०) जाट जातिकी स्त्रीके प्रति कही जाती है, क्योंकि वह देवरके साथ रहनेमें कोई दोष नहीं समझती। (२) ख़सम और देवर दोनों एक ही माके लड़के हैं, इसलिये दोनोंका सम्मान बराबर है।

ख़समसे छूटे तो यारोंके जाय—स्पष्ट। व्यभिचारिणी स्त्रीको क०।

खाइये मन भाता, पहनिये जगभाता—अपनेको रुचे सो खाना चाहिये और सबको पसन्द आवे वह पहनना चाहिये।

खाई करे कमाई, कप्पड़ करे सिङ्गार—अन्नसे जान बचती और कपड़ेसे बदन सजाया जाता है।

खाई भली, कि माई भली—खाना मासे प्यारा है।

खाई मुग़लकी ताहरी, कहाँ जायगी बाहरी—मुसलमान बहुत उमदा खाना खाते हैं, उसीपर इस मसलका निकास है।

खाओ न पीओ, युग युग जीओ—कृपणपर क०।

खाऊँ तो गेहूं, न तो रहूं यहूं—जो खानेके शौकीन होते हैं, उनपर क०। जिद्दीको भी क०।

क° हंसा मोती चुगें कै लंघन कर जाहिं।

खाँड़ और राँड़का यौवन रातको—स्पष्ट।

खांड़की रोटी, जहां तोड़ो वहां मीठी—अच्छी चीज़पर क०।

लखो जु अंग अंग नवनार, भनकत कहा रूप रङ्ग भार।
कहै कहावत ज्यों सुंद गौर, रोटी खांड़ मधुर सब ठौर॥

खांड़ खारीका एक भाव है—अन्धेर हो, तब क०। चीनी और खारी नमक एक मोल बिकता है।

खाँड़ खूंदेगा सो खायगा—जो परिश्रम करेगा, उसीको मिलेगा।

खाँड़ भरे भुस खात है, बिन गुरुके उपदेश—स्पष्ट।

खाँड़ बिना सब रांड़ रसोई—स्पष्ट।

खांड़ा बजे रण पड़े, और दांता बजे घर पड़े—लड़ाईमें तलवार चलती है और घरू झगड़ेमें धुक्का फज़ीहत होती है।

खा कचौड़ी ओढ़ दुशाला, हो बैठेगा दम्मोवाला—जो आदमी दूसरेसे क़र्ज़ लेकर खाय ख़रचे, उसपर क०। दिवालियेको भी क०।

ख़ाक छानते, बेर बिनते—व्यर्थ परिश्रम करनेवालोंपर क०।

ख़ाक डाले चाँद नहीं छिपता—कीर्त्तिवान् मनुष्यकी निन्दा करनेसे उसकी कीर्त्तिमें बट्टा नहीं लगता।

ख़ाक न धूल, बकाइनके फूल—तुच्छ मनुष्यको या तुच्छ बातोंपर क०।

ख़ाकी अण्डेकी पैदाइश · } खोखले या निरस मनुष्यपर क०।
ख़ाकी अण्डेमें बच्चे नहीं होते

खाके जल्दी चलिये कोस, मरिये आप दैवके दोस—खाकर तुरत नहीं चलना चाहिये।

खात नियोरी दाख बतावे—जो अपने खानेकी झूठी प्रशंसा करता है, उसे क०। लखनऊमें ऐसे बहुतसे लिफाफिये रहते हैं जो अङ्गरखेकी जेबसे चने निकालकर खाते जाते हैं परन्तु दिखानेके लिये हाथमें थोड़ी सी रेवड़ियां रखते हैं, जब कोई उनसे पूछे कि आप क्या खाते हैं? तो कहते हैं कि लुटियां खा रहा हूं।

खाता भी जाय, बरौता भी जाय—स्पष्ट। बरौताकी जगह गुरांता भी कहते हैं, जिसका अर्थ है, खाय और आंख दिखावे।

खाते पीते जग मिले, औसर मिले न कोय—सुखमें ही सब साथी होते हैं, दुःखमें कोई नहीं। मित्र वही है जो विपत्तिमें काम आवे।

दोस्त आं बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त।
दर परेशां हाली व दरमांदगी॥

खाते रहो, कमाते रहो—स्पष्ट।

खाद पड़े तो खेत, नहीं भूड़का रेत—(कृ०) खेतमें खाद देनेसे उपज अच्छी होती है। तात्पर्य यह है, कि बिना विद्याका मनुष्य पशुके समान है।

ख़ान देश ख़ुर्देसे डूबा, दक्षिण डूबी दानेसे।
मारवाड़ मनसूबे डूबा, पूरब डूबी गानेसे—ख़ान देशकी अवनति नये नये सिक्कोंसे, दक्षिणकी अकालसे, मारवाड़की मनसूबेसे और बङ्गालकी अवनति गानेसे हुई है।

खाना और ऐंड़ना—आलसी मनुष्यपर क०।

खाना न कपड़ा, सेंतका भतरा—(पू० ज०) निखट्टू पतिको क०।

खाना पराया है, पेट तो पराया नहीं है—मुफ़्तका माल देखकर बहुत न खानेके लिये क०।

खाना पीना गांठका, निरी सलाम आलेक—झूठी शिष्टाचारीपर क०।

खाना मन भाता, पहनना जग भाता—जो अपनेको रुचे वही खाना और जो सबको अच्छा लगे वही पहनना चाहिये।

खाना यहां खाओ, तो पानी वहां पीओ—जल्दी चले आओ।

खाना शराफ़त, रहना फ़राफ़त—मिलजुल कर रहो, मगर हिसाब साफ़ रक्खो।

खानेकी सुध न पीनेका होश—जो आदमी काममें बहुत व्यस्त रहता है, उसे क०।

न खानेकी सुध, और न पीनेका होश,
भरा दिलमें उसके मुहब्बतका जोश। (मीरहसन)

खानेके दांत और, दिखानेके और—ऊपरसे शिष्टाचार और भीतरमें कपट। जब कोई कहे कुछ और करे कुछ, तब क०।

खानेको ऊद कमानेको मजनू—निकम्मे मनुष्यपर क०।

खानेको पीछे नहानेको पहले—खानेके पहले नहाना चाहिये।

खानेको बिसमिल्लाह, कामको अस्तग़फ़रुल्लाह—निकम्मे मनुष्यपर क०।

खानेको महुआ, पहननेको अमौआ—(१) जो खाते कुछ नहीं, पर बढ़िया पोशाक पहनते हैं, उनपर क०। (२) झूठी भड़क दिखानेवालेपर भी क०।

खानेको सेर कमानेको बकरी—जो खाय बहुत, पर काम थोड़ा करे, उसपर क०।

खानेमें चटनो, पलंगपर नटनी—स्पष्ट। शौक़ीनों-पर क०।

खानेमें शरम क्या, और घूसोंमें उधार क्या—खानेमें शरमाना नहीं चाहिये और मारका बदला उसी समय मारसे चुका लेना चाहिये।

खायं चने कहें खुंटियां—लखनऊवालोंपर क०। दे० "खात निबौरी..."

खायँ तो घीसे, नहीं जायँ जीसे—दे० "खाऊं तो गेहूं..."

खायँ भीम, हगें नकुल—करे कोई भोगे दूसरा, तब क०।

खाय कासा भर, चले आसा भर—आलसी और पेटार्थू पर क०। कासा=थाली ; आसा=छड़ी।

खाय बड़ियाँ, टांग रहे खड़ियां—(पं०) बड़ियों-की तारीफ़ है।

खाय चना, रहे बना—(कृ०) चना पुष्ट है, इसीसे क०।

खाय न खिलाय, खाला दीदों आगे पाय—(मु० ज०) चाची न आप खाय, न मुझे खानेको दे, इससे उसकी आंख और पैर दोनों बेकाम हो जायं। शाप है।

खाय पान, टुकड़ेको हैरान—जो वित्तके बाहर शौक़ करे, उसपर क०।

खाय बकरीकी तरह, सूखे लकड़ीकी तरह—जो बहुत खानेपर भी दुबला रहता है, उसपर क०।

खाय मूंग रहे ऊंघ—(कृ०) मूंग हलका और कमज़ोर नाज होता है, इसीलिये क०।

खाय मोट तोड़े कोट—मोट बहुत गुरुपाक और पुष्ट होता है।

खाय सो पछताय, न खाय सो पछताय—जो चीज़ ऊपरसे भड़कदार और भीतरसे ख़राब हो,

खेती पाती बीनती, औ घोड़ेका तङ्ग, अपने हाथ संवारिये, चह लाखों हों संग—स्पष्ट।

अच्छा काम चाहो, तो अपने हाथसे करो।

खेती राज रजाय, खेती भीख मंगाय—(कृ०) यदि फसल अच्छी हुई तो धनवान, नहीं तो कंगाल।

खेदी गिल्लो अन्तको पेड़ ही तले आती है—गिल्लो=गिलहरी। बेकार मनुष्य अन्तमें घूम घाम कर घरको ही फिर आता है।

खेप हारी, जनम नहीं हारा—उद्योगी पुरुष कहता है, इस खेपमें नुकसान हुआ तो क्या? जीते रहेंगे तो फिर कर लेंगे।

खेल खिलाड़ीका, पैसा मदारीका—खेलनेवाला खेल दिखाता है, पैसा मदारीको मिलता है। काम कर्मचारी करते हैं नाम अफसरका होता है।

तमाशा खतम, पैसा हजम।

खेल खिलाड़ीका, भगत भैयाजीकी—ऊ० दे०। भगत एक शौकिया मण्डली होती है जो भांड़ोंकी तरह नक़लका तमाशा दिखाती है। तमाशा तो खिलाड़ी दिखाते हैं, नाम संचालकका होता है।

खेलत मरे सो सुत क्यों जनै—स्पष्ट।

सुरति समय लखि व्याकुल बाल, हास उक्ति बोलै यों लाल।
सुनी पखानी ज्यों जग भनै, खेलत मरै सो सुत क्यों जनै। (हास)

खेल न जाने मुर्ग़ीका, उड़ाने लगा बाज़—जो सहज काम न कर सके और कठिन काम करने जाय, उससे क०।

खेलोगे कूदोगे होगे ख़राब, पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब—लड़कोंको पढ़नेके लिये क०।

खैरका बेड़ा पार है—स्पष्ट।

खैरकी जूती ख़ैरातका नाड़ा, पढ़दे मुल्ला अक़द उधारा—(मु० ज०) मांगेकी जूती और मांगेका ही पैजामा है, इसलिये मुल्ला तू उधार (बिना कुछ लिये ही) व्याह भी करा दे।

ग

गई जवानी फिर नहिं लौटे, लाख मलीदा खाय—स्पष्ट।

दुनियामें सब चीज़ जाती व आती देखी,
जो जाके न आय वह जवानी देखी,
जो आके न जाय वह बुढ़ापा देखा।

ख़ैर ख़ून खांसी ख़ुशी, बैर प्रीत मधुपान रहिमन दाबे ना दबै, जाने सकल जहान—स्पष्ट।

ख़ैरातके टुकड़े बज़ारमें डकार—(च०) जब को मंगनीकी चीज़, लेकर सर्वसाधारणको अपनी क कर दिखावे, तब क०। डकार पेट भरनेपर आत है। बाज़ारमें डकार लेनेसे सबको जान पड़ा कि ख़ब खाकर आये हैं, पर वास्तवमें भीखके टुक खाये हैं।

ख़ैरायादी बड़े फ़िसादी, नोन तेल पै बेचें दा ख़ैरायादी लड़ाके और कंजस होते हैं, इसलिये क०

ख़ोगीरकी भरती—जब बेकार चीजों या मनुष्यों जगह भरी जाय, तब क०। जहां बहुतसे नौकर ऐ हों जो कुछ काम न करते हों, वहां क०।

खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समयपर काम आता है—किसी चीज़को बेकार समझकर मत फेंको किसी समय वह भी काम आ सकती है।

खोदा पहाड़ और निकली चुहिया—जब बहु परिश्रम करके सामान्य लाभ हो, तब क०।

क्यों करिये प्रापति अलप, आगे श्रम अति होय।
कीन जु गिरवर खोदि यै, चूहो काढ़े जोय॥ (वृन्द

ख़ोन पाक, ख़ोनपोश पाक, खोलके देखो, तो ख़ाक ही ख़ाक—(मु० ज०) जहां ऊपरकी भड़क और भीतर कुछ न हो, वहां क०।

ख़ोन बड़ा ख़ोनपोश बड़ा, खोलके देखो तो आधा बड़ा—(मु० ज०) ऊ० दे०। आधा बड़ा= आधा टुकड़ा बड़ेका।

खोल खीसा, खा हरीसा—दाम खर्चेगा तो खायगा।

खोरहे सिरपर मखमलकी पगिया—(च०) बे- जोड़ चीज़पर या जहां बदशक्ल आदमी अच्छी पोशाक पहने, वहां क०। खोरहा=गंजा।

गई मांगने पूतको, खो आई भरतार—जब कोई

कुछ लेने जाय, वह तो न मिले पर गांठका भी खो आये, तब क० ।

गई सो गई अब राखु रहीको—जो बीत गई उसे भूल जाओ, जो मौजद है उसे संभालो।

बीतत आयी वृथा रस भोग, पढ़ित हैं सुमिले जप जोग।
बीतो जात्रावेद कहीको, गई सो गई अब राखु रहीको॥

गऊके मुंहमें दूध है—गऊको जितना जियादा खिलाओगे, उतना ही जियादा दूध देगी।

गंगा आवनहार भागीरथके सिर पड़ी—जब काम तो आपही हो जाय और मुफ्तमें किसीको उसके करनेका यश मिले, तब क०।

गंगा कर गौर गरीबनकी—गंगासे विनती है।

गंगा किसकी खुदाई है—मूर्खोंका प्रश्न है। जहां सबका समान अधिकार रहता है, वहां क०। दे० "खुदाकी खुदाई।"

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास—जिसके पास जाना उसीकी सी कहना।

गंगा गये मुड़ाये सिद्ध—
गंगा गये मुड़ाये सिर— } गंगा अथवा किसी दूसरे तीर्थस्थानमें जानेसे सिर मुड़ाना पड़ता है। जब कोई मेला देखने या परदेश जाता है तो वहांसे कुछ सौगात लाता ही है, ऐसे मौकेपर क०।

गंगाजीकी धारा, पाप काटनेको आरा—स्पष्ट।

गंगाजीको पैरिबो, विप्रनको व्यवहार। डूब गये तो पार है, पार गये तो पार—स्पष्ट। जब किसी ब्राह्मणके पास रुपया डूब जाय, तब क०।

गंगा नहाना—(१) सब झंझटोंसे छूट जाना। (२) दिवाला निकल जाने बाद, इनसालवेन्सीमें चले जानेपर क०।

गमसे कहीं नजात मिले चैन पायें हम,
दिल खूनमें नहायें तो गंगा नहायें हम। (दाग़)

गंगा नहाये क्या फल पाये, मूंछ मुड़ाये घरको आये—स्पष्ट।

गंगा नहाये मुक्त होय, तो मेंढ़क मच्छियां, मूंड़ मुड़ाये सिद्ध होय, तो मेंड़ कपट्टियां—नास्तिकोंका कहना है, कि यदि गंगानहानेसे मुक्ति मिलती हो, तो मेंढ़क और मछलियां भी मुक्ति पा सकती हैं और सिर मुड़ानेसे मोक्ष मिले, तो भेड़, मेमने इत्यादि भी मोक्ष लाभ कर सकते हैं।

गंगा बही जाय, कलवारिन छाती पीटे—गंगाका पानी निष्फल बहते हुए देखकर कलवारिन पश्चात्ताप करती है, क्योंकि उसे मदिरामें पानीका बहुत प्रयोजन पड़ता है। मूर्खोंपर क०।

गंज बेरंज नहीं—बिना कष्टसे धन नहीं मिलता अथवा परिश्रमके बिना सफलता प्राप्त नहीं होती।

गंजा मरा खुजाते खुजाते—स्पष्ट।

गंजी कबूतरी और महलमें डेरा—जब कोई अयोग्य आदमी उच्च पदको पाता है, तब क०।

गंजी पनिहारी और गोखरूका इंडुवा—(१) विपदपर विपद पड़नेपर क०। गोखरूमें कांटे बहुत होते हैं। इंडुवा उसे कहते हैं जिसपर कलसी रक्खी जाती है (ऐंडुरी)। (२) (व०) गंजी पनिहारीको गोखरूका इंडुवा। गोखरू गोटे या बादलेका बनारस और लखनऊमें बनता है, जो ब्याह शादीमें बढ़िया कपड़ोंपर लगाया जाता है।

गंजी यार किसके ? दम लगाये तिसके—जो जिसका साथी और समान गुणवाला होता है, वह उसीसे प्रीति करता है।

गंजी सती, ऊत पुजारी—जैसेको तैसा।

गंदी बोटीका गंदा शोरबा—(मु०) कपूतका बेटा कपूत होता है।

गंदुमनुमा जौफ़रोश—(फा०) गेहूं दिखाते हैं और जौ बेचते हैं। ठगको क०।

मैंने इन आंखोंसे ऐ नाइज़ सियाही बाज़में,
जौफ़रोशी करते देखे हैं बहुत गन्दुमनुमा। (हाली)

गंवारका हांसा, तोड़े पांसा—स्पष्ट।

गंवारको पापड़—जो जिस चीजके योग्य नहीं उसको वह चीज देना।

गंवारको पैसा दीजे, पर अक़्ल न दीजे—स्पष्ट।

गंवार गांडा न दे, भेली दे—स्पष्ट।

गंवार गौंका यार—गंवार भी अपना मतलब देखता है।

गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा, कीचहिं मिलै नीच जल संगा—(तुलसी) संगतके फलपर क०।

गगरी दाना सूद उताना—ओछा थोड़े वैभवसे इतरा जाता है।

चाहिय सम्यासिहि सन्तोषा,चतुर सो रहौ जु संचय कोषा।
यथा लाभ सन्तुष्ट भयाभा, गगरी दाना सूद उताना॥
(लो० सं०)

गज़ भर लुलड़ी,नौ गज़ पूंछ—बेहूदा पहनावेपर क०।

गठरी बांधी फूलकी, रही पवनसे फूल,
गांठ ज़तनकी खुल गयी, अन्त धूलकी धूल—
(१) भक्तिपक्षमें मानवशरीरपर क०। (२) जब कोई चालाकी करे और उसकी पोल खुल जाय, तब क०।

गड़सीकी सगाई, खुरपीका ब्याह—(१) जैसा काम वैसा उपचार। (२) दे० 'कहां झगड़ा पिजावेका'

गड़ाधन माथेपर चमकता है—ज़मीनका गड़ा धन गाड़नेवालेके माथेपर झलकता है।

पुना भौंके नधि मिग्रता वाम, लसत भाल सो लखिये स्राम।
यह उपखानो योग्य विचार, धनो धराधन दिपै लिलार॥
(वैस संधिरा। लो०र० को०)

गड़े कोयले उखाड़ना—
गड़े मुर्दे उखाड़ना—
भूली हुई बात याद दिलाना; जब कोई पुरानी बातें कहकर लड़ना चाहे, तब क०। (२) किसीके छिपे हुए दोषोंके प्रकाश करनेपर भी क०। बहुतेरे 'गड़ी ईंट उखाड़ना' भी कहते हैं।

गढ़ तो चित्तौर गढ़,और गढ़ गढ़ैया है-स्पष्ट।

गढ़ेके पानीमें मुंह धो आवो—जाओ अपना काम करो। किसीको अयोग्य वा असमर्थ समझकर क०।

गढ़े कुम्हार, भरे संसार—जब एकके कामसे बहुत-से लोग लाभ उठावें, तब क०। कुम्हार गगरी बनाता है और सब लोग उससे पानी भरते और पीते हैं।

गधा खरसामें मोटा होता है—(खरसा=गरम ऋतु) स्पष्ट। बरसातमें चारों तरफ़ हरी घास देखकर ही गधा तृप्त हो जाता है और खाता नहीं; गरम ऋतुमें जो कुछ सूखी घास पाता है वही खाता है और उसीसे मोटा होता है।

गधा खेत खाय, जुलाहा मारा जाय—एक क़सूर करे, दूसरा दंड भोगे, तब क०।

गधा गिरे पहाड़से और मुर्गीके टूटे कान—असम्भव बातपर क०।

गधा घोड़ा एक भाव—(व्या०) (१) जब अ... बुरी चीज़का एक ही दाम लगावे, तब क०। 'खर गुड़ एक भाव।'

गधा पीटे घोड़ा नहीं होता—(१) गधेको मा... घोड़ा नहीं हो जाता। तात्पर्य यह है, कि ... ताड़ना करनेसे भी नहीं सुधरता।

गधा धोयेसे बछड़ा नहीं होता—बनानेसे ... नहीं बदलती।

गधा मरे कुम्हारका, धोबिन सत्ती होय—... कोई आदमी ऐसे काममें पड़े जिससे उसका ... सम्बन्ध न हो, तब क०।

गधेको आँखमें नोन दिया, उसने कहा ... आँखें फोड़ीं—गधेकी आंखमें नमक आराम ... लिये दिया गया,उसने कहा,मेरी आँखें फोड़ डा... कृतघ्न मनुष्यपर क०।

गधेकी यारी लातकी सनसनाहट—बुरेकी ... तसे हानि होती है।

गधेके खिलाये न पुन न पाप—कृतघ्नके ... नेकी करना व्यर्थ है।

गधेको अंगुरी बाग
गधेको खुश्का
गधेको गुलक़न्द
गधेको ज़ाफ़रान
गधेको हलुआपूरी
(व०) जब किसी मनु... वह चीज़ दी जाय, जि... लायक़ वह न हो, तब ... खुश्का=भात ... ज़ाफ़रान=केशर

गधेको गधा ही खुजाता है—ओछोंकी ... ओछोंके ही साथ होती है।

कागको काग मराल मरालको कोध गधाको गधा ... बावे। (लख)

गधोंसे हल चले तो बैल कौन बिसाय—... छोटेसे बड़ोंका काम होय, तो बड़ेको कौन ... जब किसी मनुष्यको ऐसा काम दिया जा... उससे न हो सके, तब क०।

गप्पीका पूत गपक्कड़—जैसा बाप वैसा बेटा।

गम न दारी-बुज़ बख़र—(फा०) अगर तुझे ... तरह की चिन्ता न हो तो बकरी ख़रीद ले। ... पालने में बेफ़िक्र आदमी फ़िक्रमंद हो जाता ...

गया गाँव जहँ ठाकुर हँसा, गया रूख ...

बगला बसा, गया ताल जहँ उपजी काई, गया कूप जहँ भई अथाई—स्पष्ट।

गया पिंडे, प्रयाग मुंडे, काशी ढुंडे—गयामें पिण्ड-दान, प्रयागमें मुंडन और काशीमें घूमनेका माहात्म्य है।

गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं, सदा दौर दौरा दिखाता नहीं—समयपर न चूकना चाहिये।

रंज़ूर है क्यों भाइ अ बोंपर आता,
क्यों अपने किियेपर भाग है तू पछताता।
जो होना था हुआ अब आगेको सोच,
जो वक़्त गया वो फिर नहीं हाथ आता। (रंजूर)

गया मर्द जिन खाई खटाई, गई नारि जिन खाई मिठाई—स्पष्ट। खटाई खानेसे मनुष्यका पुरुषत्व जाता है और मिठाई खानेसे औरतका चरित्र बिगड़ जाता है।

गये ऊनके लेनको, आये बाल मुड़ाय—जब कोई कमाने जाय और घरका भी खो आवे, तब क०।

गये कटक, रहे अटक—जब किसीको कहीं कामके लिये भेजते हैं और वह वहां देर लगाता है, तब क०।

गये थे रोज़ा छुड़ाने नमाज़ गले पड़ी—जब कोई सुखके लिये जाय और दुःख पावे, तब क०।

गयो ज़मानो तीरको, अब आई बन्दूक़—स्पष्ट।

गरज़का बावला अपनी गावे—गर्ज़मन्द अपनी ही कहता है।

गरमी जाय जीरेसे, सरदी न जाय हीरेसे—स्पष्ट। वैद्योंकी बात है।

गरमी सबज़ह गोसे और घरमें भूनी भांग नहीं—पास कौड़ी भी नहीं और सुन्दर वेश्याओंपर मन चले। औक़ातके बाहर काम करनेकी इच्छा रखनेवालोंपर क०।

ग़रीबकी जवानी, गरमीकी धूप, और जाड़ेकी चाँदनी अकारथ जाय—स्पष्ट।

ग़रीबकी जोरू और उमदाख़ानम नाम—(मु० च०) यह नाम बेगमोंका होता है।

ग़रीबकी जोरू सबकी भाबी
ग़रीबकी लुगाई, सबकी भौजाई } ग़रीब और सीधे आदमीको लोग प्रायः दबाया करते हैं, इसलिये क०। बड़े भाईकी स्त्रीसे हंसी करनेका हिन्दुओंमें रिवाज है। ग़रीबको निबल पाकर सब उसकी स्त्रीसे हंसी करते हैं।

मुफ़लिसकी साथ सबके लड़' ये डिमाबी है,
मुफ़लिसकी जोरू सब है कि यां सबकी भाभी है।
(नज़ीर)

ग़रीबकी हाय बुरी है—ग़रीबको सताना न चाहिये।

'तुलसी हाय ग़रीबकी, कभी न खाली जाय।
मुए चामकी सांससे, सार भस्म ह्वै जाय।'

ग़रीबको सब कोई कहते हैं, बड़े आदमीको कोई नहीं कहता—जब ग़रीब आदमीकी सामान्य चूकके लिये निन्दा की जाय और बड़े आदमीको उससे अधिक चूक करनेपर भी कोई कुछ न कहे, तब क०।

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वह क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती॥

ग़रीब तेरे तीन नाम, झूठा, पाजी, बेईमान—स्पष्ट। ग़रीबको लोग बेधड़क इन विशेषणोंसे अलंकृत कर देते हैं और बड़ा आदमी यदि ऐसा हो भी, तो उसे कोई उससे नहीं कहता।

ग़रीबने रोज़े रखे, दिन भी बड़े हुए—(मु०) ग़रीबको सभी दुखदाई होते हैं। गर्मीमें दिन बड़ा होनेके कारण रोज़ा रखना कष्टकर हो जाता है।

गर्चे कंदीले सख़ुनको मढ़ लिया तो क्या हुआ, ढांचकी तो हैं वही अगले बरसकी तीलियां—जब कोई पहले कही हुई बातका रूप पलटकर उसे नये रूपमें प्रगट करे, तब क०। किसी पुराने कविकी उक्तिको नये शब्दोंमें कहे, तब क०।

गर्ज़ बन्दे नू गर्ज़ आन पैंदी गलियां दे कक्ख चुगांवदे—(पं०) जब गर्ज़ आन पड़ती है, तो गलियोंके कंकड़ चुनने पड़ते हैं।

गर्म खाय, ठंढा नहाय, ओसमें बसै, उसके सामने बैद बैठा हंसै—गर्म गर्म खानेसे, ठण्ढे पानीसे नहानेसे और ओसमें सोनेसे रोग होते हैं, ऐसी हालतमें बैद्यको बुलाना पड़ता है।

गर्म नहाय, ठंढा खाय, ओस बचाके सोवे, उसके पिछवाड़े वैद बैठा रोवे—गरम जलसे नहाय, ठंढा करके भोजन करे, और ओसमें न सोवे, तो बीमार न पड़े, इसलिये वैद्यको बुलानेकी कभी जरूरत न पड़े।

गर्म लोहेको ठंढा लोहा काटता है—क्रोधीको शान्त प्रकृतिवाला मनुष्य जीत लेता है। जब दो मनुष्य क्रोधित होकर आपसमें लड़ें, तब एकको ठंढा करनेके लिये क०। दे० "अक्रोधेन......"

ग़लत-उल आम फ़सीह—जिस भूलको सारी दुनियां करती हो, उसे भूल न समझना चाहिये। जिस पापका जनता अनुमोदन करे, उसे पाप न समझें। जो बोलचाल साधारणमें प्रचलित है, वह व्याकरणसे अशुद्ध होनेपर भी शुद्ध समझी जाती है।

गले पड़ी ढोलकी बजाये सिद्ध—चाहे जैसी विपद आ पड़े, झेलनी ही पड़ती है। जैसी संगतमें पड़ जाय वैसा ही व्यवहार करे। जब कोई मनुष्य मजबूर होकर कोई काम करे, तब क०।

गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त—उन गवाहोंपर कही जाती है जो रिश्वत लेकर झूठी गवाही देनेके लिये अदालतमें मुस्तैद रहते हैं।

गांजा पिये गुरु ज्ञान घटे, और घटे तन अंदरका, खोंखत खोंखत...फटे, मुंह देखो जैसे बंदरका—गंजेड़ियोंपर क०।

गांठका पूरा मतिका हीन—(व्य०) मूर्ख धनीको क०। दे० 'आंखका अन्धा......'

गांठ न मुट्ठी, फड़फड़ाय उट्ठी—(पू० ज०) किसी चीजके खरीदनेको मन चले पर पास पैसा न हो, तब क०।

गांठमें जमा रहे, तो खातिर जमा रहे—'पास धन रहनेसे फ़िक्र नहीं रहती।

खानेकी हमा रहे न काहकी तमा रहे,
सुगांठमें जमा रहे तो खातिर जमा रहे।' (ग्वाल)

गांठमें दाम ना, पतुरिया देख रुलाई आवे—(पू०) दे० 'गरमी सबजह रंगीसे...'

गांठमें पैसा नहीं, बांकीपुरकी सैर—(च०) स्पष्ट।

गांठसे दे पर अक्ल न दे—मूर्खोंको अपने पाससे पैसा दे, पर बुद्धि न दे।

गांवके गँवेले, मुंहमें खाक पेटमें ढेले—गंवारोंकी मैली सकल और मोटे खानेपर क०।

गांव बसंते भूतने, शहर बसंते देव—गांवमें रहनेवाले भूतोंके और शहरमें रहनेवाले देवताओंके समान हैं। दे० 'गांवके गँवेले—'

गांवमें घर न जंगलमें खेती—जिसके कुछ नहीं होता, वह कहता है।

गांवमें धोबीका छैल—गांवमें धोबीका लड़का ही शौकीन बना फिरता है, क्योंकि उसका बाप जो शहरवालोंके कपड़े धोनेको लाता है,उन्हें वह पहनता है, जो गांववालोंको नसीब नहीं होते।

गांवमें पड़ी मरी, अपनी अपनी सबको पड़ी—स्पष्ट।

गांव सदा गंवारनको—स्पष्ट।

गाओ बजाओ, कौड़ी न पाओ—स्पष्ट। सूमको क०।

गाओ बजाओ, बन्नेके ठोलो ही नहीं—जिसके लिये आडम्बर किया जाय वही न हो, तब क०।

गाऊँ न, गाऊँ तो बिरहा गाऊँ—(ज०) या तो कुछ करे ही नहीं, यदि करे तो वह काम जो न करना चाहिये। बिरहा शरमदार औरतोंको न गाना चाहिये।

गागरमें सागर भरना—जब कोई बात तो थोड़ी कहे, पर उसका मतलब बहुत हो, तब क०।

गाछमें कटहल, होंठमें तेल—जब कोई समयके पहले ही तैयार हो जाय, तब क०। कटहलका दूध हाथ या होंठमें लग जानेसे तेल लगाकर छुड़ाया जाता है, यह बँगला कहावत "गाछे कांटाल गोंपे तेल" का अनुवाद है।

गाजरकी पूंगी बजी तो बजी, नहीं तोड़ खाई—ऐसे कामपर कही जाती है जो हो जाय तो अच्छा, न हो, तो भी अच्छा।

गाज़ी मियां दम मदार, खिचड़ पका हम तैयार—(मु०) दोनों पीरोंकी कसम, मैं खिचड़ी खानेको तैय्यार हूं।

गाडर आनी ऊन...

लाभके लिये काम करे और उसमें हानि हो, तब क०

गाड़ीको देख लाड़ीके पैर फूले—सब कोई आराम चाहते हैं। गाड़ीको देखकर लौंडीके पैरमें भी दर्द होने लगता है।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कबाड़—चले तो गाड़ी, नहीं तो वह कड़ी (काठके टुकड़े) के समान है।

गाते गाते कलावंत (कीर्त्तनिया) हो जाते हैं—स्पष्ट। अभ्यास करनेसे ही आदमी निपुण हो जाता है। जब कोई नया काम करे और उससे करते न बने या कोई आदमी काम जल्दी सीखना चाहे और उससे न हो सके, तब उससे क०।

गाना और रोना किसको नहीं आता—सबको आता है।

गाना उत्तम बजाना मध्यम—स्पष्ट।

गाना न बजाना, पाद पादके रिझाना—जब किसीको कोई काम करना न आवे और वह भद्दी हंसी मजाक करके समय बितावे, तब क०।

गायका दूध, सो मायका दूध—गऊका दूध माके दूधके बराबर है।

गायका बछड़ा मर गया, तो खलड़ा देख पनहाई—जब किसी मनुष्यका किसी प्रियजनसे वियोग होता है, तो उसकी प्रतिमा देखकर मनमें शान्ति होती है; जसे मृत मित्रकी तसवीर। इसीकी पुष्टिके लिये उक्त मसल क०। गऊका बछड़ा जब मर जाता है तो उसकी खालमें भूसा भरके रख लेते हैं। दूहनेके समय उसीको गऊके सामने कर देते हैं जिसे वह अपना जीता बछड़ा समझकर दूध देने लगती है।

गायको अपने सींग भारी नहीं होते—अपने परिवारके लोगोंका किसीको बोझ नहीं लगता।

गाय न आवे बचवे लाज—(पू०) माको बेटेकी शरम नहीं होती।

गाय न बाछी नींद आवे आछी—(ग्रा०) बेफिकरीमें नींद अच्छी आती है।

गाय न हो तो बैल दूहो—कुछ न कुछ करते रहो।

गाल कट जाय, पर चावल न उगले—जो हानि होनेपर भी हठ न छोड़े, उसपर क०।

गाल बजायेहू करे, गौरी कंत निहाल—(वृन्द) जो उदारहृदय होते हैं, वे सहजमें ही सन्तुष्ट हो जाते हैं।

(१) कहै "पद्माकर" त्यों गालके बजाइबे तें,
काज करि देत जन जाचक जहरे को।
(२) बड़े सहजही बात सों, रीझ देत बकसीस।
तुलसी दल सों विष्णु ज्यों, आक धतूरे ईस॥ (वृन्द)।
(३) जे उदार ते देत हैं, रीझत जिहिं तिहिं चाल।
गाल बजायेहु करें, गौरीकन्त निहाल॥ (वृन्द)

गाली और तरकारी खाने हीके वास्ते हैं—गाली सुनकर क्रोध न आवे, इसलिये क०। खानेके दो अर्थ हैं, भोजन करना और सहना।

गाली मत दे किसीको, गाली करे फ़साद,
गालीसे लाखों हुए, लड़ लड़के बरबाद—(उप०) स्पष्ट।

गाले हाथ गोपालक माय—(पू०) (१) जो स्त्री सदा खुश रहे, उसे क०। स्त्रियां प्रायः गानेके समय गालपर हाथ रखती हैं। (२) चिन्ताके समय भी गालपर हाथ रक्खा जाता है।

गाहक और मौतका ठीक नहीं कब आवे—(व्य०) स्पष्ट।

गिन पोई, सम्हाल खाई—(ज०) जो कमाना सो खा लेना, कलके लिये न छोड़ना। मस्त आदमीको क०।

गिनी गायमें चोरी नहीं हो सकती—स्पष्ट (व्य०) संभालके रखी हुई चीज़ घट बढ़ नहीं सकती।

गिनी रोटी नपा सुरुवा—(१) जो आदमी सदा एक तरहसे चलता हो, उसको क०। (२) जिसे उतनी ही तनख़्वाह मिलती हो जितनेमें उसकी मुश्किलसे गुज़र होती हो, उसपर क०। (३) जिस कर्मचारीको तनख़्वाहके अलावा ऊपरी कुछ भी पैदा न हो, उसे क०। (४) जो मितव्ययितासे चलता हो, उसको भी क०।

गिने गिनावे, टोटा पावे—(व्य०) अन्धविश्वास, बहुतोंकी ऐसी धारणा है, कि रोज़ रोज़ मालके सम्हालनेसे उसमें घाटा हो जाता है।

गिने, पूये, सम्हाल खाये—दे० "गिन पोई..."

चेला पिटता है, क्योंकि वही भीख मांगने जाता है। (२) गुरुसे पहले चेला माल उड़ाता है, क्योंकि वही भीख मांगकर लाता है।

गुरुसों कपट मित्रसों चोरी, या हो निर्धन या हो कोढ़ी—स्पष्ट।

गुलामकी ज़ातसे वफ़ा नहीं—नौकरोंका विश्वास नहीं करना चाहिये।

गुलाम साथ, तो भी नाथ—गुलाम अक्सर भाग जाया करता है, इसलिये साथमें रहनेपर भी उसकी नकेल अपने हाथ रखे।

गुस्सा बहुत जोर थोड़ा, मारखानेकी निशानी—स्पष्ट।

गूंगा अंधा बुगदढ़िया और काना, कहे कबीर सुनो भाई साधो इनको नहिं पतियाना—स्पष्ट।

गूंगी जोरू भली, गूंगा नारियल न भला—जब नारियल (हुक्का) पीनेसे बोले नहीं, तब क०।

गूंगेका गुड़ खाया है—जब कोई मौन साध लेता है, तब क०।

गूंगेका गुड़ न खट्टा न मिट्ठा—क्योंकि वह मुंहसे बोल नहीं सकता। जब किसी बातका भेद न खुले, तब क०, या जो बात कहते न बने, उसपर भी क०।

ज्यों गूंगे मीठे फलको रस अन्तर गति ही भावै।
(सूरदास)

गूंगेकी बात गूंगा जाने या जाने उसके घरके—गूंगेकी बात गूंगा ही समझ सकता है।

कुहे चलक लखि लाल गुलाल, बनिता बैनी नहीं रसाल,
कहै पखानों ज्यों बुधिरम, गूंग लहै गूंगेकी सैन।
(लो०र०को०)

गूंगेने सपना देखा, मन ही मन पछताय—क्योंकि किसीसे कह नहीं सकता।

गूका कीड़ा गूहीमें खुश रहता है—जब किसीको बुरी संगतसे निकालके अच्छी संगतमें बैठा दे और वहां उसका मन न लगे, तब क०।

गूकी दारू मूत और मूतकी दारू गू—बुरेका इलाज भी बुरा ही होता है।

गूके कीड़ेको गुलाबजलमें डालो तो मर जाय—दे० 'गूका कीड़ा.....'

गूके पूत नौसादर—(१) क्योंकि वह पेटको साफ़ करता है। (२) ऊंट आदि जानवरोंकी विष्ठासे बनाया जाता है। इस मसलका प्रयोग तुलसीदासजीने भी किया है, यथा—

राम नाम को छांड़के, चोर करै की आप।
तुलसी साके सूकरमें, नौसादर की बाप॥

जब किसी कृपणका लड़का भी कृपण हो, तब क०।

गूदड़में गिंदौड़ा—जब कोई धनवान् मलीन वेशमें रहे या अनपढ़के घरमें कोई लड़का पढ़ा लिखा और बुद्धिमान हो, तब क०।

गू दर गू, मुरग़ीका गू—सबसे ख़राब चीज़को क०।

गू नहीं छी छी—एक ही बातपर क०।

गूपर रोज़ा खोलना—थोड़ी चीज़के लिये ईमान बिगाड़ना, जब कोई आदमी सामान्य रिश्वत लेकर किसीकी हानि कर दे, तब क०।

गूमें ईंटा फेंको न छींटा पड़े—जब कोई नीच मनुष्यसे तकरार या हंसी ठट्ठा करता हो, तो उसे मना करनेके लिये क०।

गूमें कौड़ी गिरे तो दांतसे उठाले—बड़े कंजूसको क०।

गूमें गोते खाये—बहुत ज़लील हुए। जब कोई अपनेसे बहुत नीचे घरमें सम्बन्ध कर लेता है, तब क०।

गूलड़का पेट क्यों फाड़ते हो—जब कोई छिपी बातोंको ज़ाहिर करता है, तब क०।

गूलड़का फूल, पीपलका गंद, घोड़ीकी जुगाली, कभी न पावे, और पावे तो रैन दिवाली—ये सब होते ही नहीं तो लोग देखें कहांसे। कहते हैं, कि जो दिवालीकी रातको गूलड़का फूल देख ले, वह राजा हो जाय।

गेहूं अच्छा नहरका, और चावल अच्छा डहरका—(कृ०) गेहूं नहरके किनारेका और चावल नीची ज़मीनका अच्छा होता है। डहर मिट्टीके घड़े घड़ेको भी कहते हैं, उसमें भी लोग चावल भरके रख छोड़ते हैं।

गेहूं कहे सुनो रे वीर! मैं हूं सब नाजनका मीर—(कृ०) सब अन्नोंमें गेहूं श्रेष्ठ है।

गेहूंकी बाल नहीं देखी—अभागीको क०।

ी रोटीको फ़ौलादका पेट चाहिये—
हूं देरमें हज़म होता है, इसलिये क०। धन पाकर
निरभिमान होना मुश्किल है। गेहूंकी रोटी गरी-
बोंको नहीं मिलती।

े साथ घुन पिस गया—जब दोषियोंके साथ
रहकर कोई निर्दोषी भी कष्ट पावे, तब क०।

का सिर कद्दू बराबर—पराई चीज़का दर्द नहीं
होता। जब कोई दूसरेकी चीज़ खराब कर दे,
तब क०।

पंजीरी और ही खायँ, जच्चा रानी पड़ी
ायँ—जब कोई चीज़ जिसको मिलनी चाहिये
से तो न मिले और ऊपरवाले ही उसे खा जायं,
ब क०।

ल गाँवको पैंड़ो न्यारो—जिस घर या गाँवकी
ीति निराली हो, वहाँ क०।

(१) "सुन्दर" कोउ न जान सकै,
यह गोकुल गांवको पैंडोइ न्यारो।'
(२) प्रभुको नर नन्दनन्दन जानै,
दारा दुरि रति रूपपति मानै।
भगत जु सुमति चलि जग सारी,
गोकुल गांवकी पैंडोइ न्यारी।'

ए शुतर न आसमानका न ज़मीनका—
े० 'ऊँटका पाद......'

ेका घाव, रानी जाने या राव—(ज०) छिपी
ातको हरएक जान नहीं सकता।

का खिलाया गोदमें नहीं रहता—स्पष्ट।

का छोड़के पेटकी आशा—जब कोई वर्त्तमान
छोड़कर भविष्यकी आशा करे, तब क०।

में बैठके आँखमें उँगली } कृतघ्न मनुष्यको
में बैठके दाढ़ी नोचे } क०।

में लड़का शहरमें ढिंढोरा—दे० 'कनिया
लड़का......'

में लिये फिसले पड़ते हैं—जब कोई मनुष्य
मनानेपर और भी दूना ऐंठता जाय, तब क०।
ज्यों ज्यों पिया करहि अति प्यार, त्यों त्यों रोस बढ़ावै नारि।
लोग उक्ति यह सांची करैं, लेते गोद पगनिमें परैं॥
(मान। लो० र० को०)

गोदीका लड़का मर जाय पेट आग बुझाय—
(ज०) (१) जब गोदका लड़का मर जाता है, तो
पेट उसके दुःखको भुला देता है अर्थात् भूखके आगे
लड़केका दुःख भी जाता रहता है। (२) गोदका
लड़का मर जाता है और पेटमें जो लड़का है उसकी
आशासे भी दुःख कम हो जाता है।

गोधन गजधन कनकधन, रतन खान बहु खान,
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान—
स्पष्ट।

गोधन तू हरख्यो फिरै, धरि इक लेइ पुजाय,
समुभि परैगी सीसपर, परत पशुनके पाय—
(बिहारी) कोई छोटा मनुष्य ऊँचा पद पाकर
अपनेको पुजवावे, तब क०।

गोनूझाक लड़का—(मैं०) निकम्मे आदमीको क०।
इसपर एक कहानी इस प्रकार है:—गोनूझाके एक
लड़का था। एक दिन किसीने उनसे पूछा, कि भाई!
तुम्हारे कै लड़के हैं? उन्होंने जवाब दिया, कि लड़का
तो एक है पर खानेके लिये दो आदमीका खाना खाता
है, सोनेके वक्त तीन आदमीकी जगह घेरता है और
काम एक आदमीका भी नहीं करता, इसलिये हम तो
समझते हैं कि हमारे लड़का ही नहीं है।

गोबरकी सांभी भी पहिरे ओढ़े अच्छी लगती है—
स्पष्ट। सजावट बड़ी चीज़ है।

गोबर गणेश—भोंदू आदमीको क०।

गोबर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—(व्य०)
जब कोई देनदार रुपये देनेके समय किसी तरहकी
अलसेठ डाल देता है, तब क०। क्योंकि लेनदार-
को अपना रुपया लेनेके लिये कुछ न कुछ कसर
खानी ही पड़ती है। गोबर जब ज़मीनमें गिरता है,
तो ज़मीनकी कुछ मट्टी ही लेकर उठता है।

गोर चमाइन गरबे मातल—(पू०) गोरी चमारी
अपने रूपके गर्वमें पागल रहती है। नीच वैभव
पाकर इतरा जाता है।

गोरमें छोटे बड़े सब बराबर—स्पष्ट।

गोरीका योवन चुटकियोंमें जाय—(१) जो
मनुष्य अपना सब धन दूसरोंको खिला दे, उसपर
क०। सुन्दर लड़कियोंको सब कोई दुलारसे चुटकी

भरते हैं। (२) अच्छी चीज़ चुटकी चुटकी ही में समाप्त हो जाती है।

मींज गाल कुच करी विहाल, यामें कहा रसिकाई लाल।
सांच पखानी गयी सु गाय, गोरी मांस चिहुटनि जाय॥
(लो॰ र॰ को॰)

गोरी तेरे संगमें, गई उमरिया बीत, अब चाली संग छोड़के, यह ना रीत पिरीत—अपनी आत्माके प्रति मरते समयका कहना है।

गोरी मत कर गोरे रंगका गुमान, यह है कोई दिनका मेहमान—जो अपने रूपका अभिमान करे, उसे क॰।

गोला बारूद कहीं जाय तलबसे काम—आलसी नौकरको क॰। तलबकी जगह धमाका भी कहते हैं।

गोश्त खाये गोश्त बढ़े घी खाये बल होय, साग खाये ओझ बढ़े तो बल कहांसे होय—मांस खानेसे मांस बढ़ता है, घी खानेसे बल बढ़ता है और साग खानेसे केवल पेट बढ़ता है बल नहीं होता। मांसाहारियोंका कथन है।

गोश्त खाये गोश्त बढ़े साग खाये ओझरी—ऊ॰ दे॰।

गोश्त खा लेते हैं हड्डियां फेंक देते हैं—मतलबकी चीज़ ले लेनी चाहिये, बेमतलबकी छोड़ देनी चाहिये।

गौं निकल गई आंख बदल गई—मतलब निकल जानेपर आदमीकी निगाह बदल जाती है।

"देखि लाग मधु कुटिल किराती।
जिमि 'गवं तक' लेउं केहि भाती'॥" (तुलसी)

गौरा रूठेंगी तो अपना सुहाग लेंगी, भाग तो न लेंगी—(उ॰) जब किसीका मालिक नाराज़ होकर नौकरी छुड़ा देनेकी धमकी देता है, तब नौकर अपनी स्वाधीनता जाहिर करनेके लिये कहता है।

गौवां देवां घास, मलीदा कुत्तियां—(पं॰) ईश्वरकी इच्छापर क॰। योग्यकी कदर न होकर अयोग्यकी हो, तब क॰।

ग्रह बिन हानि भेद बिन चोरी, बहुत नहीं तो थोरी थोरी—स्पष्ट।

ग्वार खायं गँवार—स्पष्ट। ग्वार (जिसकी फली होती है) मारवाड़ देशमें बहुत होती है।

ग्वालन अपने दहीको खट्टा नहीं कहती—अपनी चीज़को कोइ बुरा नहीं कहता।

ग्वालेका दही महतोंकी भेंट—जब मेहनत करे एक आदमी और फल दूसरेको मिले, तब क॰।

ग्वेंठा जले गोबर हंसे—मूर्खको कही जाती है, जो दूसरेका दुःख देखकर खुशी होता है और यह नहीं समझता, कि मेरा भी यही हाल होनेवाला है।

ग्वैंड़ा खेती, सीला सांप, माई भय कारन, बादी बाप—गांवके पासका खेत, मनुष्यभक्षी सांप, भयावनी मा और झगड़ालू बाप, ये सब दुःखदायी होते हैं।

ग्वैंड़े आई बरात, बहूको लगी हंगास—ज़रूरी कामके वक्त जब कोई कुछ बहाना कर बैठता है या गैरहाज़िर हो जाता है, तब क॰। बहूकी जगह समधिन भी कहते हैं।

घ

घंटेपरके गरुड़—लुंज आदमीको क॰ जिसका हाथ पांव न चले। जो खाली बैठा रहे कुछ भी काम न करे, उसे क॰। घंटेके ऊपर गरुड़की मूर्त्ति हाथ जोड़े बैठी रहती है।

घटत छिन छिन, बढ़त पल पल, जात ना लागत बार, कहत कबीर सुनो भाई साधो, सपना है संसार—स्पष्ट।

घड़ी भरकी बेशरमी, सारे दिनका आराम—(१) जिस कामके करनेमें खुद असमर्थ है, उसके लिये सिर्फ "ना" कह देनेसे यद्यपि दूसरेको कुछ देरके लिये बुरा लगता है, पर तकलीफ़से बचाव हो जाता है। (२) वेश्याओंके लिये भी क॰।

घड़ी महीना पल पखवाड़ा, चौघड़ियेका साल, जिसको लाला कल कहें, उसका कौन हवाल—वादेहन्दको क॰।

आज जो कहे तो आठ मास लौं न आवे ठीक,
काल जो कहे तो मास सोलह चलावही।

घड़ीमें औलिया घड़ीमें भूत—जिसका मिज़ाज

घड़ी घड़ी बदलता रहता है, उसपर क० ।

घड़ीमें घड़ियाल—(१) थोड़ी देरमें कुछका कुछ हो जाता है भविष्यका कोई ठीक नहीं कि क्या होगा। (२) जब दिन खोटे आते हैं, तब अनहोनी बात भी होने लगती है, जैसे—घड़ेमें घड़ियालका निकलना।

घड़ीमें घर जले नौ घड़ी भद्रा—(१) जब कोई जरूरतके वक्त टालमटोल करता है, तब क०। (२) ज्योतिषियोंकी हँसी करनेके लिये भी क०।

> तोरी सी हांसी उसे नहिं धीरज,
> नौ घरी भद्रा घरीमें जरै घर। (हरिश्चन्द्र)

घड़ीमें तोला घड़ीमें माशा—अव्यवस्थित चित्त-वालेको क०।

मिजाज क्या है कि एक तमाशा, घड़ीमें तोला घड़ीमें माशा।

घड़ेसे घड़ा नहीं भरा जाता—(व्य०) ऐसा करनेसे बहुतसा पानी गिर जाता है।

घमंडीका सिर नीचा—अहंकारी सदा नीचा देखता है।

> तकब्बुर क्या बुरी शै है जो फ़ौरन टूट जाता है।
> हुबाबे बहरको देखा सो आँखें बस उठाता है॥

घयेकी मेरी, तयेकी तेरी—(ज०) स्वार्थी मनुष्यको क०। घया=अंगारा।

घर आई लक्ष्मीको लात मारना—(१) मिलता धन छोड़ देना। (२) जब कोई सगाई-सम्बन्ध होते हुए भी उसको छोड़ देता है, तब क०। (३) जो मिलती हुई नौकरीको नहीं करता, उसे भी क०।

घर आये कुत्तेको भी नहीं निकालते हैं—जब कोई किसीको अपने घर आनेपर आश्रय नहीं देता, तब क०।

घर आये जिजमान, बीबी गई करौंदे खान—समयानुसार काम न करे, या कामके वक्त बहाना करके टल जाय, तब क०।

घर आये नाग न पूजे, बाँबी पूजन जाय—मौकेको हाथसे न जाने देना चाहिये। जब आसानीसे काम होता हो, तब न करके फिर उसी कामको कठिन परिश्रमसे करनेपर क०।

> 'पिय आये मानी नहीं, पनी पाप पछिताय,
> आयो नाग न पूजिये, बाबी पूजन जाय।'
> (कलहन्तरिता। लो०र० को०)

घर आये वैरीको भी न मारिये—स्पष्ट।

घर आवे सो साला, घर जाय सो साला—जो दूसरेके घर जाता है उसे और जो अपने घर आता है, उसे दबना ही पड़ता है।

घर कर घर कर सत्तर बला सिर कर—व्याह करनेमें और घर बनवानेमें बहुत सी आफतोंका सामना करना पड़ता है।

घरका आटा कौन गीला करे—(१) अपनी चीज़को कौन बिगाड़े और कौन बनाकर खिलावे।

घरका और मनका भेद हरएकके सामने न कहे—स्पष्ट।

घरका खेत न खेतीबारी, कहें मियाँ मेरी नम्बरदारी—(कु०) शेख़ीबाज़को क०।

घरका घरवाहा कर दिया—घरका नाश कर देनेपर क०।

घरका द्वार ख़समके हाथ—क्योंकि वह जो चाहे सो कर सकता है।

घरका परसैया, अंधेरी रात—जब कोई मनुष्य सब तरहसे दूसरेकी चीज़ अपने क़ाबूमें कर ले और जैसे चाहे उसे अपने काममें लावे, तब क०। एक तो अंधेरी रात, दूसरे परोसनेवाला अपना, जितना चाहो खाओ और उठा ले जाओ, कोई देखनेवाला नहीं।

> देखि घटा सब सुन्दरि बाल, करौ किन दूरि मिलि संग लाल।
> सखि सखि कह्यो परवानो अपनो, निसिकारी परसैया अपनो॥ (परकीया। लो० र० को०)

घरकी आधी भली, बाहरकी सारी कुछ नहीं—स्पष्ट। आलसी आदमी कहते हैं, जिनसे परदेश जाकर कुछ रोजगार नहीं होता।

घरकी खांड़ किरकिरी, बाहरका गुड़ मीठा—वेश्याके यहाँ जानेवालोंपर क०। जिसे बाज़ारके दोनेकी चाट पड़ जाती है, उसे भी क०।

घरकी खेती—वालोंको क०। जब चाहो रख लो, जब चाहो कटा लो।

घरकी जोरूकी चौकसी कहाँतक—स्पष्ट।

घरकी जोरू चबैना खाय, रण्डी खाय बताशा—स्पष्ट।

रकी पुटकी वासी साग—डींग हांकनेवालोंको क०।

रकी फूट बुरी—स्पष्ट।

फूटे तें भरद वड आन वाजी चौसरकी,
आपहके फूटे कहो कौनको भलो भयो। (गङ्ग)

रकी बिल्ली घर हीमें शिकार—जब घरका आदमी घरवालोंको ही धोखा देता है, तब क०।

रकी बीबी हांडनी घर कुत्तों जोगा—(ज०) जिस घरकी मालकिन बाहर घूमती रहती है, वह घर कुत्तोंके लायक हो जाता है।

रकी मुरग़ी दाल बराबर—घरकी चीज़की क़दर नहीं होती। वह मुफ्त दाखिल है।

रकी मूँछें ही मूँछें हैं—(व्यं०) बिना पूंजीवाले मनुष्यको क०। जो कोरी डींग मारता है, उसे भी क०।

रके खीर खाये, और देवता भला मनायें—हिन्दुओंके प्रति अन्य धर्म्मावलम्बियोंका आक्षेप है, क्योंकि वे देवताको भोग लगाकर खाते हैं।

रके घर ही न समायें और ढटींगर पाहुने—जब किसीके घरमें ही इतने आदमी हों कि जिनका निर्वाह होना मुश्किल हो, तिसपर भी बाहरके लोग आ जावें, तब क०।

रके जले वन गये, और वनमें लगी आग। घर बिचारा क्या करे, जो कर्मों लगी आग—जब कर्महीन मनुष्य बहुत प्रयत्न करनेपर भी सफल-मनोरथ नहीं होता, तब क०।

रके जोगी जोग ना, आन गांवके सिद्ध—घरमें किसीकी क़दर नहीं होती।

(१) छांड़ि सुपति उपपतिहि तिय, जानत है सुभ इड।
घरको जोगी जोग ना, आन गांवको सिद्ध।
(कुदा। लो० र० कौ०) जोग ना = वाजिब नहीं।
(२) तुलसी वहां न जाइये, जहां जनमको ठाम।
गुन औगुन जाने नहीं, धरे पाछलो नाम॥

रके पीरोंको तेलका मलीदा—(मु०) जब बाहरके आदमीसे अच्छा बर्ताव किया जाय और घरवालोंसे बुरा, तब क०।

रके रोवें बाहरके खायँ, दुआ देत कलंदर जायँ-दे० 'घरके पीरोंको तेलका मलीदा'

घर खीर तो बाहर खीर—(१) बड़े आदमीका सब जगह आदर होता है। (२) जो दूसरेको खीर खिलाता है, दूसरेके घर उसे भी खीर खानेको मिलती है। जैसा दोगे वैसा पाओगे, नेकीका बदला नेक है।

घर खोवें और आस पास, तिनका नाम धर्म-दास—जो लोग अपना और दूसरोंका काम बिगाड़ते फिरते हैं और अपनेको सज्जन कहते रहते हैं, उनपर क०।

घर खोदे ईंधन बहुत—घर खोदनेसे काठ किवाड़ बहुत मिल जाता है। जब कोई घर बिगाड़नेपर हो तो उसे ख़र्च करनेको बहुत मिलता है।

घर घरका, साथ नरका—किरायेके मकानमें न रहे और स्त्रियोंका साथ न करे।

घर घरके जाले बुहारती फिरती है—(१) जो औरत घर घर फिरा करती है (२) जो मनुष्य नित्य घर बदला करता है और (३) जो मनुष्य हरएककी ख़ुशामद करता फिरता है, उसपर क०।

घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन जांचत जाइ। दिये लोभ चशमा चखनि, लघु पुनि बड़ो दिखाइ—(बिहारी) हे मन! तू दीन होके घर घर फिरता है और जने जनेसे मांगता है। लोभका चश्मा आंखोंमें लगाये है इससे तुझे छोटा आदमी भी बड़ा दिखाई पड़ता है। लोभीको क०।

घर घर प्रीत न कीजे, तो गाँव गाँव तो कीजे—स्पष्ट।

चहै न स्वाद सिंगार रस, बहु पुरुषनि सों प्रीत।
घर घर प्रीत न करि सकै, गांव गांव इक मीत॥
(कुलटा। लो० र० कौ०)

घर घर मटियाले चूल्हे—(ज०) सब घरोंमें एक ही हाल है। जब कोई किसीके घरकी बुराई करता है, तब क०।

कोउ तिय करै नहीं रस रीत, ही हो करो महा मद प्रीत।
लोग पखानों मनमें समझे, घर घरमें मटियाले चूल्हे॥
(परकीया। लो० र० कौ०)

घर घर यही लेखा—(ज०) ऊ० दे०। पूरी मसल यह है—"ऊंचे चढ़के देखा, घर घर येही लेखा"

घर घर शादी घर घर ग़म—दुःख सुख सभी घरोंमें होता है।

घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनोंका दाम खड़ा खड़ी—(व्य०) घर, घोड़ा और गाड़ी इन तीनोंका दाम नगद ले लेना चाहिये।

घर घोड़ा, नखास मोल—(व्य०) घरमें तो घोड़ा बंधा है और बाजारमें उसका मोल करते हैं। जब कोई बिना माल दिखाये ही उसका दाम कहे, तब क०

घर चैन तो बाहर चैन—स्पष्ट।

घर जल गया तब चूड़ियां पूछीं—जब कोई काम बिगड़ जानेपर सुध लेता है, तब क०।

इसपर एक कहानी है। किसी मूर्ख स्त्रीने नई चूड़ियां बनवाकर पहिनीं। उसकी बड़ी इच्छा रहती कि सब कोई उसकी चूड़ियोंकी प्रशंसा करें। किसीका ध्यान उसपर न जाते देखकर, एक दिन उसने अपने घरमें आग लगा दी। जब वहां बहुत भीड़ जमा हो गई तब उस स्त्रीने अपना हाथ उठाकर घरकी तरफ़ इशारा करके लोगोंको आग बुझानेको कहा। ऐसा करनेपर कुछ लोगोंकी निगाह उसकी नई चूड़ियोंपर पड़ी और किसीने पूछा—"क्या यह चूड़ियां तुमने नई बनवाई हैं?" तब उस स्त्रीने उपरोक्त मसल कही।

घर जले घूर बुताये—जब जरूरतका काम न करके फ़िजूल काम किया जाये, तब क०।

घर जले तो जले चाल न बिगड़े—लकीरके फ़कीरोंपर क०।

घर तङ्ग, बहू जबरजङ्ग—जब निर्धन घरमें शाहखर्च औरत होती है, तब क०। जिस घरमें आदमी बहुत हों और रहनेकी जगह थोड़ी हो, वहां भी क०।

घर न बार, मियां मुहल्लेदार—(च०) नामके अनुसार काम न हो, तब क०।

घर फूंककर बिर्रा मारना—(पू०) जब कोई थोड़े फ़ायदेके लिये बहुत नुक़सान कर बैठे, तब क०।

घर फूंक तमाशा देखना—जो फ़ैलसूफ़ीमें अपना घर बिगाड़ देता है, उसपर क०।

घर फूटे गंवार लूटे—स्पष्ट।

घर बैठे आधा भला—(व्य०) बिना परिश्रम थोड़ा भी मिले तो अच्छा।

घर बैठे गंगा आई—बिना परिश्रम काम सफल हो, तब क०।

घर ब्याह, बहू कंडोंको डोले—जब कोई कामके समय बेपरवाही करे, तब क०।

घर भी बैठो और जान भी खाओ—निखट्टू को क०।

घर भाड़े, हाट भाड़े, पूंजीको लागे ब्याज, मुनीम बैठा रोटियां भाड़े, दिवाला काढ़े काहे लाज—(व्य० मा०) स्पष्ट। बिना पूंजीवालेको क०।

घर मटकी तो बाहर माठा—जिसके घरमें कुछ होगा, उसे बाहरसे भी मिल जायगा।

घर मिलता है तो वर नहीं मिलता, वर मिलता है तो घर नहीं मिलता—स्पष्ट। जब लड़कीके विवाहका कहीं ठीक नहीं होता, तब क०।

घरमें आई जोय, टेढ़ी पगिया सीधी होय—(१) ब्याह होनेसे ऐंठन निकल जाती है। (२) ब्याह होनेसे मनुष्यकी इज्जत हो जाती है। टेढ़ी पगड़ी सौहदे पहनते हैं और सीधी इज्जतदार।

घरमें खर्च नहीं, ड्योढ़ीपर नाच—झूठी भड़क दिखानेवालेपर क०।

घरमें घर, लड़ाईका डर—(ज०) पास रहनेसे लड़ाईका डर रहता है।

घरमें चनेका चून नहीं, गेहूंकी दो पो लाइयो—(च०) झूठी भड़क दिखानेवालेको क०। चना गेहूंसे सस्ता होता है।

घरमें चिराग़ नहीं, बाहरमें मशाल—झूठी भड़क दिखानेवालेपर क०।

घरमें चूहे डंडौत करते हैं, (या एकादशी करते हैं)—जिसके यहां खानेको न हो, उसे क०।

घरमें जोरूका नाम बहू बेगम रख लो—अपने घरमें जो ख़ुशी चाहो, सो करो।

घरमें दवा, हाय हम मरे—मूर्खोंपर क०। जो चीज़ रहते हुए भी उसको काममें न लाकर इधर उधर भटकते फिरते हैं।

घरमें दीया न बाती, मुंडो फिरे इतराती—(ज०) झूठी भड़कपर क०।

घरमें दीया तो मस्जिदमें दीया—(मु० ज०) पहले अपना घर सम्भालना चाहिये, फिर बाहर।

घरमें देखो चलनी न छाज, बाहर मियां तीरन्दाज़—(ज०) झूठी भड़कपर क०।

धन सिरपर ऋण—जब कंजूस आदमी पैसा स रहते हुए भी दूसरेका कर्ज नहीं चुकाता, क० ।

धान न पान, बीबीको बड़ा गुमान—ा०) जब किसी गरीब औरतको घमंड हो जाता तब क० ।

नहीं तागा, अलबेला मांगे पागा—दिखावेपर क० ।

नहीं तिनका, बिजली मेहमान—गरीबके घर ी मेहमान आवें, तब क० ।

नहीं दाने, बुढ़िया चली भुनाने—(ज०) दिखावेपर क० ।

नहीं चूर, बेटा मांगे मोतीचूर—हैसियतसे ादा चाहनेवाले पर क० ।

बिलौटा बाघ—घर बैठे जो अपनी वीरता ाता है, उसपर क० ।

पूंजी भांग नहीं और बाहर न्योते सब—कोई ऐसा काम करे जिसके करनेमें वह बिल- असमर्थ हो, तब क० ।

हे न तीरथ गये, मूड़ मुड़ाकर जोगी भये—अपने चलते कामको छोड़कर दूसरा काम करना कर दे और वह भी पूरा न हो सके, उसपर क० ।

हे न तीरथ गये, मूड़ मुड़ाय फज़ीहत भये—आधा काम करके उसको पूरा नहीं कर पाता, नुकसान उठाना पड़ता है ।

रके, पूत भतारके—व्यभिचारिणी स्त्रियोंपर ।

, घरको खाय, बाहर रहे बाहरको खाय—लसी या मुफ्तखोरको क० ।

न तीरथ गये, मूंड़ फोड़ते मर रहे—ठिकाने रहकर दुःख पाना ।

टेका एक घर बिधरेके सौ घर—छड़े मनु- को क० । जिसकी गृहस्थी नहीं, वह जहां चाहे सकता है ।

के मर्द हैं—डरपोक आदमीको क० ।

में वैद, मरे कैसे—जब प्रबन्धकर्त्ताके रहते घरका बन्दोबस्त ठीक न हो, तब क० ।

घाट गये मुर्दे लौटके नहीं आते—(व्यं०) जो ग्राहक चला जाता है, वह फिर लौटकर नहीं आता ।

घाट घाटका पानी पीया है—बहुत चतुर आदमी- को अथवा जो मनुष्य बहुत तजुर्बेकार होता है, उसको क० ।

बायें बायें तोरा, मनहा बाजे मोरा—(पू० ज०) भीतरसे तो तेरा है दिखानेके लिये मेरा है । जब किसीका पति दूसरेको चाहता है और ऊपरसे उस- पर प्रेम करता, तब एक स्त्री दूसरी स्त्रीसे ताना देती है ।

घायलकी गत घायल जाने—जिसपर बीतती है वही जानता है ।

घासके गंजका कुत्ता, खाय न खाने दे—दुष्टोंपर क० ।

घी कहां गया खिचड़ीमें—अपनी चीज़ जब अपने ही काम आ जाय, तब क० ।

> सुनि निज बानि बीति वर बाल,
> काको हिये धरि हर्ष विशाल ।
> लौंग पखाले सुन्यो सुभाहि,
> घी कहं गयौ खिचड़ी माहि ॥ (लो० र० को०)

घी कहां गया ? खिचड़ीमें, खिचड़ी कहां गई ? प्यारोंके पेटमें—उ० दे० ।

घीका लड्डू टेढ़ा भी भला—स्पष्ट । (१) विशेषतः लड़कोंपर क०, यदि वह बदशक्ल और मूर्ख भी निकले तोभी उससे पिण्डदानकी आशा की जाती है । (२) रूप देखकर गुण नहीं पहिचाना जा सकता ।

घीके कुप्पेसे आ लगा है—बड़े आदमीसे सम्बन्ध रखनेवालोंपर क० ।

घी खाया है बापने, सूंघो मेरा हाथ—दूसरेकी की हुई कीर्त्तिपर डींग मारनेवालोंपर क० ।

घी खिचड़ी हो रहे हैं—दोनोंका गुट्ट एक हो रहा है ।

घी गिर गया "मुझे रूखी भाती है"—लाचारी अवस्थापर क० ।

घी जाटका, तेल हाटका—घी गांवका और तेल दूकानका अच्छा होता है, क्योंकि गांवके घीमें मिलावट नहीं होती और दूकानका तेल पुराना होनेसे साफ़ रहता है ।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रखो—इज्ज़त सँभालकर खर्च करो।

घी संवारे काम, बड़ी बहूका नाम—(ज०) स्पष्ट।

'सो गुण घच्यो सुतिय यच्यो कहै कहावत जोइ,
घीव संवारे सालनहि नाम बहूको होइ।' (लो०र०को०)

घुटने नवेंगे तो पेट हीको—जब कोई घरवालोंकी तरफ़दारी करता है, तब क०।

घुसिया हाकिम रुसिया चाकर—रिशवत खानेवाले हाकिम, रूठे हुए नौकर इन दोनोंसे भय रहता है।

घूसोंमें उधार क्या—(१) घूसेका बदला उसी समय दिया जाता है। (२) घूस या रिशवत देनेमें उधार नहीं होता।

घोंचेमें पकाया सींपीमें खाया—जो आदमी अपने हिसाबसे चले, उसपर क०।

घोकन्त विद्या, खोदन्त पानी—विद्या घोकनेसे और पानी खोदनेसे मिलता है।

घोड़ा अड़ा क्यों, पान सड़ा क्यों, रोटी जली क्यों?—फेरा नहीं गया। (अमीर खुसरू)। तीन प्रश्नोंका एकही उत्तर।

घोड़ा घाससे यारी करे तो खाय क्या—(व्य०) (१) मिहनताना मांगनेमें लिहाज़ नहीं करना चाहिये। (२) जो जिस चीज़का व्यापार करता है, यदि उसमें मुनाफ़ा न करे, तो उसका खर्च कैसे चले।

घोड़ा घुड़साल हीमें बिकता है—(व्य०) जहांकी चीज, वहीं बिकती है।

घोड़ेका गिरा संभल सकता है, नज़रोंका गिरा नहीं संभलता—ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिसमें किसीकी नज़रसे उतर जाय।

घोड़ेकी दुम बढ़ेगी तो अपनी ही मक्खियां उड़ायेगा—जब किसीकी ऐसी बढ़ती हो जिससे किसीका मतलब न निकले, तब क०।

घोड़ेकी सवारी चलता जनाज़ा—(१) घोड़ेपर चढ़े तो धीरे धीरे हांके जैसे जनाज़ा चलता है। (२) घोड़ेकी सवारी ख़तरनाक है। जनाज़ा=अर्थी; चलता जनाज़ा=जीतेका जनाज़ा इसलिये कहा, कि जनाज़ा मुर्देका ही होता है।

घोड़े मरे दलालन परे—(व्य०) जब कोई दो आदमियोंका झगड़ा मिटाने जाय और उसीके सिर आफत आय, तब क०।

कौन नीति यह करत प्रवीन,
तियकि पलटे मोहि गहि लीन।
व्यंग कहावति जग चित हरे,
घोरे मरे दलालन परे। (लो० र० को०)

घोड़ोंको घर कितनी दूर—कारण यह है, कि उनकी चाल तेज़ होती है। काम करनेवालोंको काम करते देर नहीं लगती।

च

चंचल नारकी चाल छिपे नहिं, नीच छिपे ना बड़प्पन पाये—स्पष्ट।

चंचल नार छैलसे लड़ी, छन अन्दर छन बाहर खड़ी—स्पष्ट।

चंडाल चौकड़ी—दुष्टोंकी समाजको क०।

चंडी घर लीपेगी? नहीं निगोड़े खोदूंगी, चंडी घर खोदेगी? नहीं निगोड़े लीपूंगी—कलहप्रिय स्त्रियोंपर क०।

चंदनकी चुटकी, न गाड़ी भर काठ—अच्छी चीज़ थोड़ी ही अच्छी है, निकम्मी बहुतसी हो तो भी अच्छी नहीं।

चंदन पड़ा चमारके, नित उठ कूटे चाम। रोरो चंदन कहि फिरे, पड़ा नीचसे काम—स्पष्ट।

चंपाके दस फूल, चमेलीकी एक कली, मूरखकी सारी रात, चतुरकी एक घड़ी—स्पष्ट।

चकवा चकवी दो जने, इन मन मारो कोय। यह मारे करतारके, रैन बिछोया होय—यह बात प्रसिद्ध है, कि चकवा चकवीका रात्रिके समय वियोग हो जाता है। एक नदी या तालाबके इस पार रहता है दूसरा उस पार। जब कोई सतायेको सताता है, तब क०।

चकमक दीदा खाय मलीदा—(अ०) बच्चोंको क०।

चक्की तले घर तेरा, निकल सास घर मेरा—(ज०) जबर्दस्त बहूको क०। ग़रीब आदमियोंमें रिवाज है, कि जब लड़केका ब्याह हो जाता है, तो मा उसके लिये भीतरका घर छोड़ देती है और बाहर घरमें अपना डेरा डालती है जिसमें चक्की रहती है।

चक्कीपर चक्की, मेरी सौगन्द पक्की—हठीले आदमीको क०।

चक्कीमें कौल डालोगे, तो चून पाओगे—बिना पैसेके कोई काम नहीं होता।

चख डाल माल धनको, कौड़ी न रख कफ़नको। जिसने दिया है तनको, देगा वही कफ़नको—स्पष्ट। मस्त आदमीका कहना है।

संदूकमें जो ज़र है उसको भी ले मंगादे।
मयकी बहाके नाले गमलोंको खड़ खड़ादे।
कोठे मकां हवेली सब खोदके खिलादे।
कड़ियों तलक जलादे ईंटों तलक उड़ादे।
दिलकी ख़ुशीके ख़ातिर चख डाल माल धनको।
गर मर्द है तो आशिक़ कौड़ी न रख कफ़नको।
(नज़ीर)

चचेरे ममेरे, बड़ तले बहुतेरे—मालदारोंके सब नातेदार बन जाते हैं।

चटक न छांड़त घटतहू, सज्जन नेह गंभीर। फीको परै न बरु घटै, रंग्यो चोल रंग चीर—सज्जनका नेह ऐसा गहिरा है, कि सम्पत्ति-हीन होनेपर भी मनोरंजनता नहीं छोड़ता, जैसे मजीठसे रँगे हुये कपड़े का रङ्ग जीर्ण होनेपर भी फीका नहीं पड़ता।

चट मगनी पट ब्याह, टूट गई टंगड़ी रह गया ब्याह—(ज०) अनिश्चित कामपर तथा होनहारपर क०।

चट मगनी पट ब्याह
चट रोटी पट दाल } तुरत फुरत जो काम हो, उसपर क०।

चटोरा कुत्ता अलोनी सिल—चटोरे आदमीको जो मिल जाय वही खा लेता है।

चटोरा खावे अपना घर, चटोरा खावे दोनों घर—चटोरा अपना घर खाता है पर मुफ़्तख़ोरा अपना और पराया दोनों ही घर खा लेता है।

चटोरी ज़बान दौलतकी हान—ऊ० दे०।

चट्टे बट्टे लड़ाना—इधरकी बात उधर करना।

चढ़ती कला जागती जोत—देवतापर कही जाती है और आशीर्वाद भी है।

चढ़ते पित्त उतरते बाई, ताते गोरख भूनके खाई—भांगपर क०।

चढ़ते बरसे आर्द्रा, उतरत बरसे हस्त, कितना राजा दण्ड लें, रहे अनन्द गृहस्थ—(कृ०) आर्द्रा नक्षत्रके चढ़ते और हस्तके उतरते यदि बरसा हो, तो राजा कितना ही दण्ड क्यों न ले तो भी किसानको फ़ायदा रहता है।

चढ़े रङ्ग तीसरी बारके बोरे—तीसरी बार रंगनेसे रङ्ग अच्छा होता है।

पहिली रति, दुति, प्रीत लखात,
पब दिन हैतें हगन सुहात।
बोरत उलि ज्यों कछुक उमंग,
तीजे बीर चढ़े बहु रंग॥ (मुग्धा। लो० र० को०)

चतुरको चौगुनी, मूरखको सौगुनी—(१) दूसरेके धनका परिमाण चतुरोंको चौगुना और मूर्खोंको सौगुना दीखता है। (२) चतुरका धन लोगोंको चौगुना और मूर्खका सौगुना दीखता है।

चतुर नार नर कुढ़से, ब्याह हुए पछिताय, जैसे रोगी नीमको, आंख मीच पी जाय—स्पष्ट।

चतुर शत्रु उपाय ही नासे—चतुर शत्रु उपायसे ही नष्ट होता है वा मारा जाता है।

चतुराई सब विद्यामूल—सब विद्या चतुराईसे आती है।

लखो प्रौढ़ताई परवीन, नैन सैनमें पिय बस कीन।
कहि पखांनो रस अनुकूल, चतुराई सब विद्यामूल॥
(प्रौढ़ा। लो० र० को०)

चना और चुग़ल मुँह लगा छूटता नहीं—खाने और सुननेमें पहले आनन्द और पीछे कष्ट देते हैं।

चना कहे मेरी ऊंची नाक, एक घर दलिये दो घर हांक। जो खावे मेरा इक टूक, पानी पीवे सौ सौ घूंट—स्पष्ट। चना खानेसे प्यास बहुत लगती है।

चना चबैना गङ्ग जल जो पुरवै करतार। काशी कबहुं न छांड़िये विश्वनाथ दरबार—काशीकी प्रशंसामें क०।

चना खाकर हाथ चाटना—नदीदे आदमीको क०।

चना पकत है चैतमें, अरु गेहूं बैसाख। कातिक पाके बाजरा, मंगसिर पाके ज्वार—(कृ०) स्पष्ट।

चना मर्द नाज है—चना बहुत पुष्ट होता है।

चने चिरौंजी हो गये, गेहूं हो गयीं दाख। घरमें गहने तीन हैं, चरखा पीढ़ी खाट—कुसमय पड़नेपर क०।

चपनी लिखकर सिरपर धरी, निकल पड़ा या निकल पड़ी—(मु० ज०) स्त्रियोंका विश्वास है, कि इस मसलके साथ शेख फरीदका नाम एक चपनीपर लिखकर प्रसूतिके सिरपर रख देनेसे लड़का या लड़की सहजमें हो जाती है।

चप्पे जितनी कोठरी, मियाँ मुहल्लेदार—(प० पं०) डींग हांकनेवालेपर क०।

चमगीदड़ोंके घर महमान आये, हम भी लटके तुम भी लटको—जैसी संगतमें पड़ो वैसा करो।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—कंजसोंको क०।

चमड़ेकी ज़बान है—भूल चूक हो ही जाती है। जब कोई भूलकर कुछका कुछ कह बैठे, तब क०।

चमरन कोसे ढोर न मरहीं—चमारोंके कोसनेसे पशु नहीं मरते।

चर्बी छाई आंखनमें, नाचन लागी आंगनमें—(मु०) बेशर्म आदमी क्या नहीं करता? मदोन्मत्त औरतोंपर क०।

चमारकी छोकरी चन्दन नाम—(प०) नामानुसार गुण न हो, तब क०।

चमारको अर्शमें भी बेगार—दुखियाको हर जगह दुःख ही मिलता है।

चमार चमड़ेका यार—(१) मतलबी आदमीपर क०। (२) चमारकी गुज़र चमड़ेसे होती है, इसलिये वह उसीको अपना यार समझता है। (३) चमार जूतेसे ही मानता है, बातसे नहीं।

चमेली चावमें आई, बख्तावर रेवड़ियां बांटे—सूम खुशीमें आकर जब खर्च करने लगता है,तब क०।

चमेली चावमें आई, बख्तियारे साथ लाई—(मु०) जब एक आदमीको आदर करनेपर वह घर भरको ले आता है, तब क०।

चमोटी लागे चमचम विद्या आवे झमझम—लड़के जब गुरुके यहां पढ़ते हैं, तब क०।

चलै जाय अत्तारी, झक मारे चकलेदारी—दवा बेचनेवालेको मुनाफ़ा बहुत होता है।

चलत फिरत धन पाइये बैठे देगा कौन?—उद्यम करनेसे धन मिलता है, बैठे रहनेसे नहीं।

चलता चरखा—जिसका रोज़गार अच्छी तरह चलता हो, उसपर क०।

चलता पुरज़ा—चालाक आदमीको क०।

चलता फिरता ना मरे बैठा ही मर जाय—(पू०) मेहनती भूखा नहीं मरता, आलसी ही मरता है। होनहारपर भी क०।

चलतीका नाम गाड़ी, गाड़ीका नाम उखड़ी—दुनियांकी उल्टी रीतिपर क०। जो चलती है उसे तो गाड़ी कहते और जो गड़ी हुई है उसको उखड़ी कहते हैं। उखड़ी=उखली।

चलती गाड़ीमें रोड़ा अटकाना—चालू काममें विघ्न डालना।

चलती चक्की देखके, दिया कबीरा रोय, दो पाटनके बीचमें साबित रहा न कोय—संसारकी अनित्यतापर क०। आसमान और ज़मीनके बीचमें जो आवेगा, उसे मरना ही पड़ेगा।
कह रहा है आसमां, यह सब समां कुछ भी नहीं।
पीस दूंगा एक गर्दिशमें निशां कुछ भी नहीं॥

चलतीमें कौन कसर करता है?—हरएक आदमी अपनी उन्नतिकी चेष्टा करता है।

चलते चोर लंगोटी लाभ—चोर भागते समय जो हाथ पड़ता है, वही ले जाता है।

चलते बैलके चूतड़में लकड़ी करना—जब कोई काम करते हुए आदमीको छेड़ता है, तब क०।

चलते हाथ पांव उठा लो—ईश्वरसे प्रार्थना करना जिसमें अपाहज होकर न मरें।

चलना है रहना नहीं, चलना बिस्वे बीस, ऐसे सहज सुहागपर कौन गुंधावे सीस—स्पष्ट। सहज सुहाग=थोड़ी देरका सुहाग।

चलनीमें गाय दुहै, कर्मोंको दोष दे—जान बूझकर बुरा काम करे और तक़दीरको दोष दे, तब क०।

चलनो भलो तो कोसको, दुहिता भली तो एक
मांगन भलो तो बाप सों, जो मांगेपर देत—
स्पष्ट।

चलवो भलो न कोसको, दुहिता भली न एक,
मांगन भलो न बाप सों, जो विधि राखे टेक—
स्पष्ट। ऊपरका उल्टा।

चल मरघटको लकड़ी सस्ती है—(च०) कंजूस बनियेको क०।

चल मेरे चरखे चरखचूं, कहांकी बुढ़िया कहांका तूं—अपने ही मनकी कहे जाना दूसरेकी न सुनना।

इसपर एक कहानी है जो अक्सर छोटे लड़कोंका मन बहलानेके लिये कही जाती है। किसी जंगलमें एक बुढ़िया शेर, भालू आदि हिंसक जन्तुओंसे घिर गई। जब वे उसे मारनेपर उतारू हुए, तो बुढ़िया बोली, "भाई! इस समय मैं बहुत दुर्बल हूं। मैं अपनी लड़कीके यहां जा रही हूं। तुम लोग कुछ दिन ठहरो, जब मैं खापीकर खूब मोटी ताजी होकर लौटूंगी तब तुम मुझे खा लेना, तो तुम्हारा पेट भी भरेगा।" सबने बुढ़ियाकी बातका विश्वास करके उसे छोड़ दिया। जब वह बुढ़िया लौटी, तो अपने साथ एक चरखा लेती आई और उसीके भीतर बैठ गई। जब कोई जानवर उसे कहता कि 'आ बुढ़िया! अपना वादा पूरा कर' तभी वह चरखेके भीतरसे जवाब देती, कि "चल मेरे चरखे चरख चूं, कहांकी बुढ़िया कहांका तूं।" यह सुनकर वह समझता, कि यह बुढ़िया नहीं, कुछ और बला है, तब डरके मारे वहांसे भाग जाता। इसी तरह बुढ़ियाने अपनी जान बचा ली। इसमें शिक्षा यह है कि बलसे बुद्धि बड़ी है।

चला चलीकी राहमें, भला भली कर लेहु—
मृत्युलोकमें आकर कुछ भलाई कर लो।

चली चली आई सौतके पीहर—(ज०) जब कोई बरबादीकी राहपर चले, तब क०।

चली चली थी मालो आई—जब कोई अफवाह उड़ते उड़ते यहांतक भी पहुंच जाय, तब क०।

चले जाहु यहां को करै, हाथिनको व्योपार।
जानत नहिं यहि पुर बसैं, धोबी औंड़ कुम्हार—
(बिहारी) चले जाओ, यहां कौन हाथीको मोल लेता है? तुम नहीं जानते, कि इस नगरमें धोबी, बेलदार और कुम्हार रहते हैं। तात्पर्य यह है कि वहां गधोंके गाहक हैं। कोई गुणी ऐसे स्थानमें रहा चाहे, जहां उसकी क़दर न हो, तब क०।

चले जोंक जिमि वक्र गति,यद्यपि सलिल समान—
(तुलसी) स्पष्ट। नीच अपनी प्रकृति नहीं छोड़ता।

चलै न जाने आंगन टेढ़ा—(पू० ज०) मूर्ख कारीगर अपने औजारोंके ही दोष बताता है। जब किसी कामके करनेकी युक्ति तो न जाने और सामानको दोष दे, तब क०।

चलै न पावै कूदन नाम—नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

चलै बहुत सो वीर न होई—स्पष्ट।

चलै रांड़का चरखा और चले बुरेका पेट—
रांड दुखियारी पेटके लिये सदा चरखा चलाया करती है और बुरे मनुष्यका बदपरहेजीके कारण सदा पेट चला करता है। जब कोई किसीसे चलनेके लिये कहता है और वह नहीं जाया चाहता, तब उपरोक्त मसल कहता है; जैसे "हम क्यों चलें चले रांडका चरखा" इत्यादि।

चवोकड़ सो लड़ोकड़—हंसीसे ही लड़ाई होती है।

चश्म बद दूर आंखें मोती चूर—इन सुंदर आंखों-पर किसीकी बदनिगाह न पड़े। आशीर्वाद है।

चश्मे मा रौशन दिले मा ख़ुश—(फा०) लड़केके लिये क०। इसीकी हिन्दी है, "आंखों सुख कलेजे ठण्ढक।"

चसका दिन दसका, पराया ख़सम किसका—
(ज०) स्पष्ट। पराया अपना नहीं होता।

चहार चीज़ अस्त तोहफ़ये मुल्तान, गर्द, गर्मा,
गदा, ओ गोरिस्तान—(फा०) धूल, गरमी, फ़क़ीर और क़ब्रोंके लिये मुलतान मशहूर है।

चहार शम्बह नदारद—(फा०) चहार शम्बह फ़ार-सीमें बुधवारको कहते हैं और हिन्दीमें बुध अक्ल-को कहते हैं। जब किसीको व्यंगसे मूर्ख बनाना हो, तब क०।

चांदको भी ग्रहण लगता है—जब किसी सच्चरित्र मनुष्यकी कीर्त्तिमें धब्बा लगे, तब क०। जब स्त्री

पुरुषमें एक सुन्दर और दूसरा कुरूप हो, तब भी क०।

चांद चढ़े कुल आलम देखे—बात खुल जानेसे सभीको मालूम हो जाती है।

चांदपर ख़ाक डालनेसे नहीं छिपता—गुणीको दोष लगानेसे नहीं लगता।

चांदमें मैल और इसमें मैल नहीं—बहुत सुन्दर स्त्रीको क०।

बाम पर नंगे न जाओ, तुम बड़े नज़ाकतमें।
चांदनी पैठ जायगी, मैला बदन हो जायगा—बामऽहत।

चांदीका चश्मा लगाते हैं—रिश्वत लेते हैं।

चांदीका जूता सिरपर—रुपयेसे सब कुछ हो सकता है।

चाक कुनम, गिरह कुनम देखो, मेरा हुनर—मैं काट भी सकता हूं, सी भी सकता हूं। चतुरको क०।

चाकरके आगे कूकर, कूकरके आगे पेशखेमा—जब मालिक अपने नौकरको किसी कामके करनेकी आज्ञा दे, पर वह स्वयं न करे और किसी दूसरेको कर देनेके लिये कहे, तब क०।

चाकरको उज्र नहीं, कूकरको उज्र है—नौकरको मालिकके हुक्मकी तामील करनी ही पड़ती है।

चाकरसे कूकुर भला, जो सोवै अपनी नींद—जब नौकर आठों पहर काम करते करते तङ्ग हो जाता है, तब कहता है।

चाकर है सो नाचा करे, ना नाचे तो ना चाकर—क० दे०।

चाकरीमें ना करी क्या?—नौकरको मालिकका हुक्म बजाना ही पड़ता है।

चाकी फेरी, हुई चूनकी ढेरी—(ग्रा० ज०) स्पष्ट।

चाचहिं चाचा किमि कहे सगे बाप नहिं बाप—जो अपनोंका ही सम्मान नहीं करता वह दूसरोंका कैसे करेगा।

चाचा चोर भतीजा क़ाज़ी, चाचाके घर नौबत बाजी—जब कोई काम तो बुरा करे और आपसवाले दूसरोंके सामने उसकी तारीफ़ करें, तब क०।

चातक चाहे स्वांतिकी बूंद—जिसकी जिससे लौ लगी हो, वह उसीके मिलनेकी इच्छा करता रहता है।

पिय आवत सिगरी निय जान, तजि सिङ्गार हरे मन आनि।
लखो न लोग तजि ज्यों कहे, चातक स्वाती बूंदहिं चहै॥
(लो० र० को०)

चातुरका काम नहीं पातुरसे अटके। पातुरका काम यही लिया दिया सटके—जो लोग चतुर होते हैं, वे वेश्याके फंदेमें नहीं पड़ते; क्योंकि वेश्याका काम द्रव्य खींचकर अपनी ओर कर लेनेका है।

चातुरका क़र्ज़ मनमें निस्तार—चतुरको क़र्ज़ा देनेसे रुपये डूबनेका डर नहीं रहता, क्योंकि वह कमाकर अदा कर सकता है।

चातुरकी चेरी भली, मूरखकी नारसे—मूर्खकी स्त्री होनेसे चतुरकी लौंडी होना अच्छा।

चातुर तो वैरी भला, मूरख भला न मीत, साध कहैं हैं "मत करो कोइ मूरखसे प्रीत"—स्पष्ट।

चामका चमोटा, कूकर रखवाल—जब कोई अपने जानी दुश्मनके हाथमें पड़ जाता है, तब क०।

चामके दाम—बहुत सस्ती चीज़पर क०। दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुग़लक़ने १३३० ई० में चमड़ेका सिक्का चलाया था। उसी विषयको लेकर यह मसल क०।

चार अफ़ीमी और तीन हुक्का—जब ज़रूरतसे चीज़ कम होती है, तब क०।

चार कानकी बात ब्रह्मा भी छिपा नहीं सकता—जो बात दो आदमियोंको मालूम हो, वह छिप नहीं सकती।

चारगोड़वा बांधा जाय, दोगोड़वा न बांधा जाय—पशुको जहां चाहो बांध रक्खो, मनुष्य नहीं बांधा जा सकता।

चार घर चौ-भैया, तेकरा बीचमें भोलन भैया—(पू० ज०) चार भाई चारों घरमें रहते हैं जिनमें एक भिलमङ्गा है। तात्पर्य्य यह है कि सब आदमी एकसे नहीं होते।

चार चूढ़े चार चमार, दो मुग़ल, चार चण्डाल, इन चौदहका बांधा घड़ा, जिसका नाम चौधरी पड़ा—जातिके चौधरियोंको व्यंगसे क०। क्योंकि यह कभी कभी अन्याय कर बैठते हैं।

चार चोर चौरासी बनिये,एक एक करके लूटा-चार चोरोंने चौरासी बनियोंको एक एक करके लूट लिया, इसकी कहानी इस तरह है :—

किसी समय चार चोरोंने रास्ते में चौरासी बनियोंको जाते देखा। बनिये स्वभावतः डरपोक होते हैं और विपत्ति आनेपर एक दूसरेकी मदद नहीं करता। जब चोरोंने सबमेंसे एकको लूटा तो बाकी उसकी मदद न कर अलग हो गये। इससे चोरोंको और भी सुभीता हो गया। आखिर चार चोरोंने सब बनियोंको लूट लिया। भाव यह है, कि एकता ही बल है। अगर चोरोंकी नाईं बनियोंमें भी मेल होता, तो चौरासी बनियों-को चार चोर नहीं लूट सकते।

चार जने चारहु दिशातें चारों कोन गहि, चाहैं जो सुमेरुको उखारें तो उखड़ जाय—(ठाकुर) एकतासे कठिनसे कठिन काम भी हो सकता है।

चार ज़ात गावैं हर भोंग, अहिर, डफाली, धोबी, डोम—ये चारों हर वक्त गाते रहते हैं।

चार दिनका रङ्ग चङ्ग, छोड़ दईअरवा मोरा सङ्ग—(पू० ज०) स्पष्ट।

चार दिनकी आइयां गोर सोंठ बिसाहन जाइयां-(पं० ज०) ब्याह हुए तो चार दिन हुए और जायेके लिये सोंठ लेने चली।

चार दिनकी चमार चौदस है—देखो, 'चार दिनकी चाँदनी......'

चार दिनकी चान्दनी, फेर अन्धेरी रात—जब कुछ दिन सुख होकर फिर दुःख पड़ता है, तब, अथवा जब कोई आदमी अच्छा वसीला पाकर घमण्ड करने लगता है, पर कुछ दिनमें वह दुःखी हो जाता है, तब क०।

(१) बरस पन्द्रह या कि सोलहका सिन।
मुरादोंकी रातें जवानीके दिन॥
कहां यह जवानी कहां फिर यह सिन।
मसल है कि है चांदनी चार दिन॥ (मीरहसन)
(२) मन मोहनको लिखिबो लिखबो,
दिना चारकी चांदनी ह्वै गईरी। (ठाकुर)
(३)कहौं परोसिनसों लिया, निरखि सखी सुखदैन।
चार दिनाकी चांदनी, बहुरि अंधेरी रैन॥

चार पांवका घोड़ा चौंकता है, दो पांवका आदमी क्या चला है?—आदमीके चौंकनेपर क०।

चार महीने हालका, चार महीने तालका, चार महीने पालका—बरसातमें ताज़ा, जाड़े में तालाबका और गरमीमें रक्खा हुआ पानी पीना चाहिये।

चार साल बुरा हवाल—घोड़े पर क०। क्योंकि चार वर्ष घोड़ेके लिये बुरे होते हैं।

चार हाथ पांव सबके हैं—स्पष्ट। जब लड़ाई होती है, तब क०।

चारू सो भारू—(मा०) जो बहुत खाते हैं वे भार भी बहुत ज़्यादा उठाते हैं।

चारों रास्ते मोकले-आज़ाद मनुष्यको क०, जिसके चारों रास्ते खुले हैं।

चालीस वर्षका रेज़ा-मूर्खको क०।

चिहल साल उम्रे अज़ीज़त गुज़श्त,
मिज़ाजे तु अज़ हाल तिफ़्ली न गश्त। (शेखसादी)

चालीस सेरा ऊत—पूरे मूर्खको क०।

चालीस सेरी बात कहते हैं—पक्की या तुली हुई बात कहते हैं।

चाव घटे नितके घर जाये, भाव घटे कुछ मुखसे मांगे, रोग घटे कुछ औषधि खाये, ज्ञान घटे कुसङ्गत पाये—स्पष्ट

चाह करूं, प्यार करूं, चूतर तले अंगार धरूं, जल जाय तो मैं क्या करूं-(ज०) जब कोई किसीका झूठा दुलार करता है, तब क०।

चाह चमारी चूहरी सब नीचनकी नीच—लोभ सबसे बुरा है।

चाहतकी चाकरी कीजे, अनचाहतका नाम न लीजे-जो अपना सम्मान करे, उसकी गुलामी करना अच्छा, पर जो अपमान करे उसका नाम भी न लेना चाहिए।

(१) दाता कहा सूर कहा, सुन्दर सुजान कहा,
आपको न चाहै ताके बापको न चाहिए। (बोधा)
(२) रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावै मान बिन।
बरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो॥"

चाहनेके नाम गधी भी खेत खाना छोड़ देती है--

लगन बुरी होती है। मनुष्योंकी कौन कहे, पशु भी लगन लगनेसे बेचैन हो जाते हैं।

चिंता सांपिन काहि न खाया, को जग जाहि न व्यापी माया—(तुलसी) चिन्ता किसीको नहीं छोड़ती।

चिकना घड़ा हो गया है—उस बेशर्म आदमीपर कही जाती है, जिसपर उपदेश कुछ काम न करे।

चिकना देख फिसल पड़े—(अ०) किसीकी सुन्दरतापर मोहित हो जानेपर क०।

चिकनियां फ़क़ीर मखमलका लंगोट—(पू०अ० प०) फ़क़ीर होनेपर भी शौक़ न जाय, तब क०।

चिकनी होत मज़ेदार चिकनी होत ख़तरनाक—स्पष्ट।

चिकने गलवा मलवाके—मालवालेके गाल चिकने होते हैं।

चिकने गाल तिलिनियांके और जरे बरे भुरजिनियांके—(पू० अ०) स्पष्ट।

चिकने घड़ेपर पानी नहीं ठहरता—जब कोई बेशर्मको शर्मिन्दा किया चाहे और उसपर उसका कुछ असर न हो, तब क०।

चिकने मुंहको सब चूमते हैं—जब कोई बड़े आदमोकी हांमें हां मिलावे, तब क०।

चिकने मुंह पेट ख़ाली—खाली दिखावट करनेपर क०।

चिट्ठी न परवाना, मार खाय मुल्क बेगाना—जब कोई बिना कहे सुने पराई चीज हथिया ले, तब क०।

चिड़ा मरन गंवार हांसी—जब एककी हंसीमें दूसरेका नुक़सान हो जाता है, तब क०। मुरगा, बुलबुल, तीतड़, बटेर आदि चिड़ियोंको लड़ानेवालोंको भी क०।

व्याकुलताई सोहि निहार, हरषित खाल भीह मन धारि।
सुनो पखानी मादिन भास, चिरियन मरन बिकारी हास॥
(भीड़ा। सी०र०को०)

चिड़िया करे खोंचा चिड़ा करे नौचा—जब स्त्री संचय करनेवाली और पुरुष शाहख़र्च होता है, तब क०।

चिड़ियाकी जान गई, लड़केका खिलौना—स्पष्ट।

चिड़ीमारटोला, भांत भांतका पंछी बोला—(१) चिड़िमारोंके मुहल्लेमें तरह तरहकी चिड़ियोंकी आवाज सुनाई देती है। (२) शहर आगरेमें चिड़ीमारटोला नामका एक बाजार है, जहां सब तरहके आदमी शामको दिखाई पड़ते हैं और बहुत चहल पहल रहती है। जिस सभा या कमेटीमें सभीकी राय जुदी जुदी हो, वहां क०।

चिराग़ गुल पगड़ी ग़ायब—(फा०) जिस जगह इन्तज़ाम ठीक नहीं होता, वहां क०। क्योंकि समाजमें जब भलेमानुषको थोड़ी सी असावधानीके कारण हानि पहुंचती है, तब क०।

चिराग़ जला, दांव गला—चोरके लिए क०।

चिराग़ तले अन्धेरा—जहां विशेष विचारका स्थान हो और वहां ही अन्धेर हो, तब क०। जैसे कोतवालीके पास चोरी होना, किसी बड़े विद्वानसे साधारण भूल होना, किसी पुण्यवान् मनुष्यका पाप कर्म करना इत्यादि।

एक दिन अकबर बादशाह बीरबलके साथ अपने महलमें बैठे मुल्कके इन्तज़ामकी बातें कर रहे थे। वह इस बातसे बहुत ख़ुश थे, कि उनके राज्यमें चोरी और राहज़नी बहुत कम होती है। इतनेमें ही उन्हें महलके नीचे शोरगुल होते सुनाई दिया। दर्याफ़्त करनेपर मालूम हुआ, कि एक बटोहीको एक लुटेरेने अभी उसी जगहपर लूट लिया और उसका माल लेकर भाग गया। बादशाहको बहुत क्रोध आया और वह बोले, 'मेरे महलके नीचे और मेरी ही आंखोंके सामने यह अंधेर!' बीरबलने कहा, "हुज़ूर! चिराग़ तले अंधेरा होता ही है।"

चिराग़में बत्ती और आंखमें पट्टी—जो सन्ध्यासे ही सो रहे, उसे क०।

चिराग़से चिराग़ जलता है—यह मसल उस समयकी बनी है, जब दियासलाईका आविष्कार नहीं हुआ था और दीयेसे ही दीया जलाया जाता था। इसका अर्थ यह है, कि मनुष्यसे मनुष्य पैदा होता है अथवा पुत्रसे वंशकी रक्षा होती है।

चिलड़ मारे कुत्ता खाय—जो थोड़ी सी चीज़के लिये अपनेको निर्लोभ बतावे और बड़ी चीज हड़प जाय, उसे क०।

चींटा मारे पानी हाथ—बेफ़ायदेका काम करनेपर क०।

चींटियोंके घर नित मातम—चींटियां बहुत मरती हैं, इसलिये क० ।

चींटीकी आवाज़ अर्शपर—ग़रीबकी पुकार ईश्वर-तक पहुंचती है ।

चींटीके पर निकले और मौत आई—जब कोई सामान्य धन या विद्या पाकर इतराने लगे, तब क० ।

हाथी इतर चली पिय प्यार, समता करन लगी सघुनार ।
कहै पखान खान बुधि भाखें, चींटी मरै पंख परकासें ।
(लो० र० को०)

चींटीको यिनका, कुत्तेको टुकड़ा, हाथीको मनभर—जिसे जितनी चीज़की जरूरत होती है, उसे उतनी ही मिलती है ।

जिहिं जितो उनमान तिहिं, तेती रिजक मिलाय ।
कनकौड़ी कूकर टुकर, हाथी मनभर खाय । (इन्द)

चींटी चाहे सागर थाह—जब कोई सामान्य मनुष्य बड़ा काम किया चाहे जो उसके करने लायक न हो, तब क० ।

चीरे चार बघारे पांच—चतुर मनुष्यपर क० । सास अपनी चतुर बहूको कहती है, कि यह चार चीज़ बनाती है और पांचमें बघार देती है । (२) व्यंगसे उस मनुष्यको कही जाती है, जो कहता है अधिक, पर करता है थोड़ा ।

चीलका मूत ढूंढ़ना—ऐसी चीज़ मांगना जो किसी तरह न मिल सके ।

चीलके घर पारस होता है—चीलके घोंसलेमें सोना मिलता है । ऐसी किम्वदन्ति है, कि चील सोनेका गहना उठा ले जाती है और उसे अपने घोंसलेमें इसलिये रखती है कि जबतक सोना पास न हो उसके बच्चे आंखें नहीं खोलते ।

चीलके घर मांस कहां ?—चीलके घरमें मांस नहीं बचता, क्योंकि यह सब खा जाती है । जब कोई किसीके यहांसे ऐसी चीज़ पानेकी आशा करे, जिसका वहां पूरी तरहसे अभाव हो, तब क० ।

(१)बचै न बड़ी सबील हू, चील्ह घोसुवा मांस । (विहारी)

(२) गई रही पिय पै नव बास,
बचो नहीं किहि हाल विहाल ।
सुनो पखानो नाहिन खास,
ह घोसुवा बचै न मांस । (० र० को०)

(३) दिरमो दाम अपने पास कहां ? चीलके घोंसलेमें मांस कहां ? उक्त शेर मिरज़ा ग़ालिबने उस समय कहा था जब उनके एक छोटे बच्चेने उनसे मिठाईके लिये पैसे मांगे थे । उस समय वास्तवमें उनके पास कुछ न था ।

चील सा मंडराया और कबूतर सा बीनता फिरता है—जो मनुष्य इस फ़िराक़में रहे, कि जो मिले वही उठा ले, उसपर क० ।

चुकतेका खाइये उकटेका न खाइये—(उप०) ऐसेका खाय जिसे आप खिलाया हो वा खिला सकें; ऐसेका न खाय जो खिलाके ताना दे कि मैंने तुम्हें खिलाया है । कोई कोई "चुटकेका खाइये" कहते हैं, जिसका अर्थ ग़रीब आदमी है ।

चुका वायदा कि दिखाया फ़ायदा—(व्या०) काम निकल जानेपर जब कोई बेमुरव्वत हो जाता है, तब क० ।

चुक्की दाढ़ी गाल पचकी, नहिं छातीमें बार, लंबी टंगड़ी होवे जिसकी, ये चारों हत्यार—स्पष्ट ।

चुग़ल ख़ोरका मुंह सांप डसे—जो दूसरेकी चुग़ली करे, उसे क० ।

चुग़लख़ोर ख़ुदाका चोर— ऊ० दे० ।

चुग़ल ख़ोर चुग़ली खाय, बीच बज़ारमें जूते खाय—ऊ० दे० ।

चुग़ला बैठा नीमपै, दे सालेके तीन सै—ऊ० दे० ।

चुटियाको तेल नहीं, पकौड़ोंको जी चाहे—(ऊ० व्य०) स्पष्ट ।

चुड़ैलपर दिल आ जाय तो परी क्या चीज़ है—स्पष्ट ।

चुनिये छुदिये पासलों धीया, आइल दमाद ले गइल धीया—(मागधी ज०) लड़कीको खिला पिला-कर पाला पोसा, दामाद आया और ले गया ।

चुप आधी मरज़ी—दे० "अल ख़ामोशी नीमरज़ा" मौनं सम्मति लक्षणम् ।

चुपकी दाद ख़ुदा देगा—जो मनुष्य दूसरेके दिये कष्टोंको चुपकेसे सह लेता है उसका बदला ईश्वर उसको देता है ।

चुपड़ी और दो दो—बढ़िया माल और बहुत सा मीठा और भर कठौती। प्रायः उस मनुष्यको कही जाती है जिसका अख़्त्यार भी हो और तनख़्वाह भी बहुत हो।

चुरावे नथवाली, नाम लगे चिरकुटवालीका—(पू० ज०) जब कोई बड़ा आदमी दोष करे और नाम गरीबका हो, तब क०। चिरकुट=चीथड़ा।

चुल्लू चुल्लू साधेगा। दरवाज़े हाथी बांधेगा—जो थोड़ा थोड़ा संचय करेगा उसके द्वारपर हाथी बंध सकता है। भांग पीनेवाले भी इसको क०।

चुल्लू पानी, तङ्ग ज़िन्दगानी—जिसे बहुत अर्थ-कष्ट होता है, वह कहता है।

चुल्लू भर पानीमें डूब मरो—जब किसीको बहुत शर्मिन्दा किया जाय, तब क०।

डूब मरो क्यों न जा चुल्लू भर पानीमें।

चुल्लूमें उल्लू लोटेमें गड़गप—भांग पीनेवालेको क०।

टुकड़ा ही बहुत है हमें पूरा न चाहिये,
चुल्लूके उल्लुओंको अधूरा न चाहिये।

चूक अजानेसे परे, बांधें गांठ सयान—(१) अजानके दोषसे सयाना बांधा जाता है। छोटे दोष करते हैं बड़ोंको भोगना पड़ता है। (२) छोटेसे चूक होती है तो सयाना होशियार हो जाता है। गांठ बांधना=याद रखना।

चूक गये धुनियत है सीस—चूक जानेपर जब कोई पछतावा करे, तब क०।

तुम मानो नहिं पिया मनाये, अबका होत काम पछताये।
कहे पजाको विथा बीस, चूक गये धुनियत है सीस॥
(कलहंतरिता। श्री० र० को०)

चूका और गया } जो चूकता है उसीकी खराबी
चूका और मरा } होती है।

चियोंमें हाड़ टटोलना—(व्य०) जहां जो चीज़ रहनेकी सम्भावना न हो, वहां उसे तलाश करना। जब कोई गाहक उस मालका दाम और भी कमाना चाहे जिसमें कम करनेकी गुंजाइश न हो, तब दूकानदार कहता है।

ड़से कान गांठना—जो मनुष्य झरोखेमें कान लगाकर दूसरोंकी बातें सुने या जो किसी बातका सिर पैर एक किया चाहे, उसे क०।

चूतिया मर गये औलाद छोड़ गये—जब कोई मूर्ख किसी कामको गड़बड़ कर देता है वा समझानेसे भी नहीं समझता, तब उसे क०।

चूना और चमार कूटेपर ठीक रहता है—स्पष्ट।

चूना चूची दही ये बंगाला नहीं—स्पष्ट।

चूनी कहे मुझे घीसे खा—छोटा आदमी भी चाहता है, कि मेरी इज्जत हो। जब कोई योग्यतासे बढ़कर दावा करे, तब क०।

(१) चेरी सौतिन देख सिंगार। कही गुवाल ईर्षा धारि।
सांधु पचाओ काढो लखाउ। चूनी कहे घीउ सौं खाउ।
(अन्य संभोग दुःखिता) (श्री० र० को)

(२) एक गूरा छटके बैठी, हुंड बनवाओ,
कहे चूनो भी, "मुझको," घीसे खाओ। (गौक़)

चूम चाटके खा लिया—जब कोई किसीको बिलकुल बरबाद कर देता है, तब क०।

चूरा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो—(व्य०) ब्याज या मुनाफा खा लो, पूंजीको न बिगाड़ो।

चूल्हा छोड़ भरसाईमें जाओ—जब किसीसे किसी तरहका मतलब न रखना हो, तब क०।

चूल्हा झोंके छावर हाथ—जैसा काम वैसी प्राप्ति। दे० "कोयलेकी दलाली......"

चूल्हे आग न घड़े पानी—(मु० ज०) दे० "आलमगीर सानी।"

चूल्हेका फूकना और दाढ़ीका रखना—दोनों काम नहीं निभ सकते।

चूल्हेका राख लाय ही लाय पुकारे—पेटक या बहुत खानेवालेको क०।

चूल्हेकी ना चक्कीकी—(ज०) जो स्त्री खाना बनाना न जाने और घरका काम धंधा न करे, उसे क०।

चूल्हे चक्की सब ही काम पक्की—(ज०) पक्की गृहस्थिनको क०।

चूहा बजावे चपनी और जात बतावे अपनी—कामसे जात जानी जाती है।

चूहा बिल न समा सके कानों बांधा छाज—(ज०) जो अपना पेट भरने लायक भी न उपार्जन कर सके और ब्याह करे, तब क०।

चूहेका बच्चा बिल ही खोदेगा—जाति स्वभाव नहीं छूटता।

चूहेका बिल ढूंढ़ना—कहीं घुस जाने या छिप जानेकी कोशिश करना।

चूहेके चामसे कहीं नगाड़े मढ़े जाते हैं?—छोटेसे बड़ा काम नहीं हो सकता।

कैसे छोटे नरनहीं, सरे बड़नको काम।
मढ्यो दमामा जात क्यों, लै चूहेके चाम। (बिहारी)

चूहेके हाथ लगी हल्दीकी गांठ, पसारी ही बन बैठा—(उ०) चूहेको एक हल्दीकी गांठ मिल गई वही लेकर वह अपनेको पसारी ही समझ बैठा। जो थोड़ी सी पूंजीसे अपनेको सेठ समझता है या थोड़ी सी विद्यासे अपनेको विद्वान समझता है, उसे क०।

"हरद गांठ चूहे मिली पंसारी ह्वै बैठ।"

चेना जीका लेना चौदह पानी देना, बयार चाले तो लेना ना देना—(कृ०) चेनेकी खेती अधिक परिश्रम लेती है। इसे चौदह पानी देना होता है। जब गर्म वायु चलने लगती है, तो फिर इसमें अधिक परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं रहती।

चेनेके वंशमें सपूत भये माढ़ा—(पू०) जब अपने बापसे कहीं बढ़ चढ़कर गुण रखनेवाला पुत्र हो, तब क०।

चेले लावैं मांगकर बैठा खाय महंत, राम भजनका नाम है पेट भरनका पंथ—स्पष्ट।

चोट लगी पहाड़की, और तोड़ै घरकी सिल—(उ०) जो दूसरेका गुस्सा अपनी स्त्रीपर उतारता है, उसपर क०।

चोट्टी कुतिया जलेबियोंकी रखवाली—जो भक्षक हो वही रक्षक बनाया जाय, तब क०।

चोर उचक्का चौधरी कुटनी भई परधान—जब नीच मनुष्योंकी चलती हो, तब क०।

चोर और मोट कसके बांधेके चाहे—(पू०) स्पष्ट।

चोरका कोई हिमायती नहीं—चोरका साथी कोई नहीं होता।

चोरका जी कितना—चोरकी हिम्मत नहीं होती।

चोरका भाई गठकटा—गठकटा=गिरहकट, पाकिट मार। जब दो बुरे आदमी आपसमें मिलकर एक दूसरेकी सहायता करें, तब क०।

चोरका मन बुकचेमें—चोरकी नजर गठरीपर रहती है।

चोरका माल चण्डाल खाय—जब कोई आदमी बेईमानीसे धन उपार्जन करे और उसे दूसरे लुच्चे लफंगे खा जायं, तब क०।

इसपर एक कहानी है। चार चोर कहींसे बहुत सा धन चुराकर लाये। एक गांवके बाहर बैठकर उन्होंने कहा, कि आज बहुत माल मिला है। खूब मिठाई खानी चाहिए। उनमेंसे दो तो गांवमें मिठाई लाने गये और जो दो बचे वे आपसमें कहने लगे, कि हम लोगोंने जन्मभर चोरी करी पर कङ्गाल ही रहे, आजका धन बहुत है, यदि उन दोनोंको मार डालें तो आधा आधा धन दोनोंके हाथ लगे। उधर मिठाई लानेवाले भी यही बात सोचकर मिठाईमें विष मिला लाये। जैसे वे मिठाई लेकर पहुंचे कि इन दोनोंने उन्हें तलवारसे काट डाला। फिर इन दोनोंने मिठाई खाई और उसके विषसे वे पंचत्वको प्राप्त हुए। जब किसीने चार आदमियोंको मरे देख गांवमें खबर दी, तब डोमड़ोंको जलानेकी आज्ञा दी गई और उन्होंने चोरोंका सब माल लेकर आपसमें बांट लिया।

चोरका माल सब कोई खाय, चोरकी जान अकारथ जाय—उ० दे०।

चोरका मुंह चांद सा—(१) क्योंकि वह चेहरेसे अपनेको निर्दोष साबित करता है। (२) क्योंकि उसके चेहरेमें चांदकी तरह स्याही रहती है, अर्थात् उसके चेहरेसे उसका चोर होना साबित होता है।

चोरका शहीद चिराग—रोशनी चोरके लिए अहितकर है।

चोरका सिर नीचा—चोर किसीके सामने आंख नहीं उठा सकता।

चोरकी ज़मानत नहीं होती—(१) चोरकी कोई जमानत नहीं करता। (२) चोरीके मामलेमें ज़मानत नहीं ली जाती।

चोरकी जोरू कोनेमें मुंह देकर रोवे—अपनेकी बुराईसे आदमी मन ही मनमें दुखी होता है।

ऐसेउ पीर बिहँसि तेहि गोई।
चोर नारि जिमि प्रगट न रोई॥ (तुलसी)

चोरकी दाढ़ीमें तिनका—जब किसी मनुष्यमें कोई अवगुण होता है और कोई अपरिचित मनुष्य भी उसके सामने उस अवगुणकी समालोचना करता है, तो वह अपने ही ऊपर समझकर उससे लड़ने लगता है। ऐसे ही समयपर यह कहावत क०।
इसका निकास इस कहानीसे है। एक क़ाज़ी किसी चोरीके मामलेमें विचार कर रहा था। जिन मनुष्योंपर संदेह था सभी वहां खड़े थे। जब क़ाज़ीको चोरका कुछ पता न चला, तो उसने कहा चोर वह है जिसकी दाढ़ीमें तिनका है। सब तो ज्यों के त्यों खड़े रहे, परन्तु जो चोर था वह अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरकर देखने लगा कि कहीं मेरी ही दाढ़ीमें तो तिनका नहीं है। यह देख क़ाज़ीने उसीको चोर ठहराया और उसके ही पाससे चोरीका माल भी बरामद हुआ।

चोरकी मा कबतक खैर मनावे—क्योंकि एक न एक दिन वह पकड़ा ही जायगा।

चोरके खायमें बुकचे—दे० "चोरका मन बुकचेमें"

चोरके घरमें छिछोर—बड़े चोरोंका माल छोटे चोर चुराते हैं।

चोरके घरमें मोर—जब कोई अपना ही आदमी धोका दे, तब क०।
इस कहावतका सम्बन्ध उस कहानीसे है जिसमें एक चोरका हार उसका मोर निगल गया था जो वह रानीके घरसे चुराकर लाया था।

चोरके पेटमें गाय, आप ही आप रंभाय—जब कोई अपनी बातोंसे अपना क़सूर साबित कर दे, तब क०।

चोरके पैर नहीं होते—चोर खड़ा नहीं रहता अर्थात् भाग जाता है। दोषी जांच करनेपर नहीं ठहरता। "चोरके पैर कितने" भी क०।

चोरके मनमें चोरी बसे—बुरेके मनमें बुराई ही रहती है।

दुरे हंसति प्रियसों नव नारि,
लखि सखि कह्यो धन्य यह नारि।
बोली सकुचि गाथ जग लसै,
चोरनके मन चोरी बसै। (लो० र० को०)

चोरके हाथमें दीया—उसे मदद भी पहुंचा सकता है और पकड़वा भी सकता है।

चोरको अंगारी मीठ—(भो० ज०) चोरको जलता अङ्गारा भी मीठा ही लगता है। किसी समय यह प्रथा थी, कि जब किसीपर चोरीका सन्देह होता था तो उसे अपनी निर्दोषिता दिखानेके लिये अङ्गारा मुंहमें रखनेके लिये दिया जाता था। यदि चोर होता तो उसकी जीभ जल जाती। जो अपने बुरे कामोंको भी भला समझे, उसे क०।

चोरकों अन्धियारी प्यारी—क्योंकि उसका मतलब उसीमें सिद्ध होता है।

लखि सखि पावस घन अंधियारि,
मिली चाल बड़ सुन्दरि नारि।
कह्यो कहावत जग विख्यात,
चोर चहै अन्धियारी रात।
(अभिसारिका। लो० र० को०)

चोरको चोर पहिचानता है—चोर चोरको जल्दी पकड़ता है।
सुन्यो जगमें नयवान प्रसिद्ध है चोरनकी गति जानत चोर
(रघुनाथ)

चोरको चोर ही सूझे—जैसा जो होता है वह दूसरेको भी वैसा ही समझता है।

चोरको चौकीदार करना—भक्षकको रक्षक बनाना।

चोरको पकड़िये गांठसे, छिनालको पकड़िये खाटसे—नहीं तो प्रमाण करना मुश्किल हो जाता है। गांठसे=माल सहित। खाटसे=बिछौनेपर।

चोर गठरी ले गया बेगारियोंने छुट्टी पाई—जब बेमनके कामसे किसी कारणवश छुटकारा मिल जाय, तब क०।

चोर चकार चूके लेकिन चुगल न चूके—चुगलखोरको क०।
बान किरवानकी चलैया पूरी चूकि जात एक नहीं चूकत है चुगलखोरकै.........

चोर चुरावे गर्दन हिलावे—चोर चुराकर मुकरता है।

चोर चोर मौसेरे भाई—एक पेशे या स्वभाववाले मनुष्य आपसमें जल्दी मिल जाते हैं। एककी भ्रष्ट बातको जब दूसरा पुष्ट करता है, तब क०।

चोर चोरीसे गया तो क्या हेराफेरीसे भी गया—किसीका जातीय स्वभाव बिल्कुल नहीं छूटता। यदि वह सत्संगवश अपने कुव्यसनोंको छोड़ भी दे तो भी कुछ चेष्टा उसके अनुकूल किया ही करता है।

एक चोरने कई बार पकड़े जाने और सज़ा पानेके कारण चोरी करना छोड़ दिया और साधु हो गया। भला, साधुओंके पास चुरानेको क्या रक्खा था इसलिये उसे चैन न पड़ती। उसने उनकी चीज़ोंके उलट पुलट करनेसे ही अपने मनको शांत करना ठहराया। जब सब साधु सो जाते तो वह एकके सिरके नीचेकी गठरी निकालके दूसरेके सिरके नीचे रख देता और दूसरेकी पहिलेके। एक दिन साधुओंको पता लग गया, कि यही मनुष्य हमलोगोंकी चीज़ोंको बदल बदल कर देता है। जब उससे पूछा गया, कि तू ऐसा क्यों करता है? तब उसने कहा, कि मैं पहिले चोर था, यद्यपि मैंने चोरी करना छोड़ दिया है तो क्या हेराफेरी भी न करूं?

चोर जाते रहे कि अंधियारो—दे० 'अंधियारी गई कि चोर'।

चोर जाने चोरका सार (वा हाल)—चोर ही चोरका हाल जानता है।

चोर जाने मंगनीके बासन—उसे तो चुरानेसे काम, वह क्या जाने तुम्हारे अपने हैं या मंगनीके।

चोर जुआरो गठकटा, जार और नार छिनार। सौ सौगन्द खाय जो, भूल न कर इतबार—स्पष्ट।

चोर ढोर दोनों हाजिर हैं—प्रमाण सहित चोरी पकड़नेपर क०।

चोरको पगड़ी दूरसे सूझे—क्योंकि उसीसे वह पीटा जायगा। जब कोई खोटा काम करने जाता है तो उसका बुरा नतीजा उसे पहिले ही नजर आता है।

चोर लाठी दो जने, हम बाप पूत अकेले—जब कोई अपने बचावके लिये ऊटपटांग बात कहे, तब क०। चोर और लाठी दो आदमी थे और हम बाप बेटे अकेले थे इसलिये उसका मुकाबला कैसे कर सकते।

चोर ले, न साधू पूछे—चोरको चोरीसे काम, चाहे चीज़ किसी साधकी क्यों न हो।

चोर ले न, शाह तके—(व्यं०) जायदाद या मकानको कहते हैं, जिसे चोर ले नहीं सकता और साहूकारके पास भरम बना रहता है।

चोरसे कहे चोरी करो शाहसे कहे जागते रहो—उस बीचवाले मनुष्यको कही जाती है जो किसी झगड़ेमें दोनों तरफ़के लड़नेवालोंको उसकाता रहता है।

चोरहिं चाँदनी रात न भावा—(तुलसी) चोरका मतलब अन्धेरी रातमें सधता है इसलिये उसको चाँदनी अच्छी नहीं लगती।

> स्याम साज सजि तजि गृह नारि।
> पियपै चली हर्षि मन धारि॥
> लोग चकित ज्यों कहै उज्यारी।
> चोरनको सुख रैन अंध्यारी॥
> (लो० र० कौ०। कृष्णाभिसारिका

चोरी और मुंहज़ोरी—जब कोई चोरी भी करे और जवाब भी दे, तब क०।

चोरी और सीनाज़ोरी—कसूर भी करे और जबरई भी दिखावे, तब क०।

चोरी करे और आंख दिखावे—ऊ० दे०।

चोरीका गुड़ मीठा—चोरीकी चीज़पर ममता बहुत होती है। विषयी लोगोंपर क०।

> जो पति तरुन महा द्युतिमान, पै उपपति रस सरस सुजान।
> लोग कहावत यह मन पागे, चोरीको गुड़ मीठो लागे।
> (परकीया। लो० र० कौ०)

चोरीका धन मोरीमें जाय—बुरे कामकी कमाई बुरे ही काममें खर्च होती है।

चोरी बेथांग नहीं होती—बग़ैर मिले चोरी नहीं होती।

चोरी बेसुराग़ नहीं निकलती—बिना छान बीनके चोरीका माल नहीं बरामद होता।

चोरी सा रोज़गार नहीं जो मार न होवे। जूए सा ब्योपार नहीं जो हार न होवे—स्पष्ट। जब कोई जूएमें हार जाता है, तब क०।

चोरों कुतिया मिल गई पहरा किसका दे—जो रक्षक हो वही भक्षक हो जाय, तब क०।

> करै न कोई सोच मखि रहै सो भीतिहि गेह।
> कुतिया चोरहि मिल गई पहिरा काको देह (लो० र० कौ०)

चोली दामनका साथ—एकसे दूसरा अलग नहीं हो सकता। निकट सम्बन्धीको क०।

चौबे गये छब्बे होने दुब्बेही रह गये—जब लाभके लिये कोई काम किया जाय और उसमें उलटी हानि हो, तब क०।

ये बेकको फ़िक्रमें सो रोटी भी गई।
थाढ़ी थी बढ़ी सो छोटी भी गई॥

वाइज़की नसीहत क्यों न मानी आख़िर
पतलूनकी ताक़में लंगोटी भी गई॥ (अकबर)

चौबे मरें तो बन्दर हों, बन्दर मरें तो चौबे हों—मथुराके चौबोंपर व्यंगसे क०। मथुरामें चौबे और बन्दर दोनों ही यात्रियोंको बहुत तङ्ग करते हैं।

छ

छछूंदरके सिरमें चमेलीका तेल—जिस मनुष्यको भाग्यवश ऐसी चीज़ मिल जाय जिसके लायक वह न हो, उसे क०

(१) "अजब तेरी क़ुदरत, अजब तेरा खेल।
छछूंदरके सिरमें चमेलीका तेल।
(२) सो कुबरी कुच कोर चढ़ें ज्यों चमेलि फुलेल
छछुन्दरके सिर। (उ० प०)

छछूंदर छोड़ना—लड़ाई लगानेको क०।

छज्जेकी बैठक बुरी, परछांवनकी छाँह। धोरेका रसिया बुरा, नित उठ पकड़े बाँह—छज्जेकी बैठक, दूसरेकी छाँह और पासका रसिया बुरा होता है।

छटाँक चून चौबारे रसोई—भठा भड़म्बा दिखानेवालेको क०।

छटाँक सतुआ मथुरामें भंडार—ऊ० दे०।

छटीका दूध याद आ गया—बहुत मेहनत करनेपर या बहुत कष्ट उठानेपर क०।

छटीके पोतड़े अबतक न धुले—(च०) अभीतक बचा ही है।

छट्टी न चिल्ला हरामका पिल्ला—हरामके लड़केके संस्कार नहीं किये जाते।

छड़ी लागे चट, विद्या आवे पट—दे० "चमोटी लागे"

छत्तीस प्रकार के भोजन में सत्तर दो बहत्तर रोग भरे रहते हैं—अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करनेसे रोग होने की संभावना होती है।

छत्रपती घटे पाप बढ़े रत्ती—मयोंकि छींकनेपर क०

छत्रीका भगत, मूसलका धनक—जैसे मूसलका धनुष नहीं बन सकता उसी प्रकार छत्री कभी भगत नहीं हो सकता।

छत्रीका सोहदा, कायथका घोड़ा, ब्राह्मणका बैल, बनियेंका ऊत—चारों जातिके गुण कहे गये हैं।

छदाममें लड़ाई पैसेमें सुघड़ भलाई—थोड़ेमें ही काम बिगड़ जाता है और थोड़ेमें ही बात बन जाती है।

छप्परपर फूस नहीं ड्योढ़ीपर नक़्क़ारा—(च०) शेख़ीबाज़ोंपर क०।

छप्परपर फूस नहीं रहा—बिल्कुल दिवालिया हो गया।

छब गठरीमें योवन रकाबीमें—(मु० ज०) खूबसूरती अच्छी पोषाकसे होती है जो गठरीमें बंधी रहती है और यौवन अच्छे भोजनसे होता है जो रकाबीमें परोसा जाता है।

छाजा बाजा केश, तीन बङ्गाले देश; चूना चूंची दही, तीन बङ्गाले नहीं—स्पष्ट।

छातीपर बाल नहीं भालूसे लड़ाई—(पू०) जब कोई शक्तिसे बाहर काम करना चाहता है, तब क०। छातीपर बाल होना मर्दुमीकी निशानी है।

छातीपर मूंग दलना—जब कोई ऐसा काम करता है, कि जिससे अपनेको कष्ट पहुंचे, तब क०।

मिलते हो दिखाकर हमें यूं रौंके गलेसे.
क्या फ़ायदा छाती पे मेरे मूंग दलेसे।

छातीपर रखकर कोई नहीं ले गया—धनके लिये क०। सूमको भी क०।

छातीपर सांप लोट गया—ईर्षा या मनमें जलन होनेपर क०।

पति अकाल न सो टीको ताम, भेंट भये कहुं सुन्दर श्याम।
[illegible]॥
([illegible])

छानका क्या घर, और मेंढ़कका क्या डर—स्पष्ट।

छाया हुआ घर पाया और बांधी पाई टट्टी, दूसरेका जन्मा लड़का पाया, चुम्मा लें कि चट्टी—जो मनुष्य विधवा विवाह करता है, उसपर क०।

छाया बड़ी माया है—आश्रय बड़ी चीज़ है।

छावत में डुबा गावत गीत, पिया विन लागत सब अनरीत—(पू० ज०) स्पष्ट।

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति—(सं०) जहां एक दोषने घर कर लिया हो वहां सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेसे बहुत दोष दिखाई देते हैं।

छिनालका बेटा बबुआरे बबुआ—(पू० ज०) छिनाल औरतके लड़केको सभी छेड़ते हैं।

छिनाल लुगाई, चतुर सिपाही—ये अपनेको छिपा नहीं सकते।

छिली छिलाई तैयासी—घुटी हुई चांदको क०।

छींकत नहाइये, छींकत खाइये, छींकत रहिये सोय। छींकत परघर न जाइये चाहे सर्व सोनेका होय—स्पष्ट।

छींकतेकी नाक नहीं काटी जाती—यद्यपि छींकना अपशकुन होता है, तोभी छींकनेवालेकी कोई नाक नहीं काट लेता।

छुआ और मुआ—दुष्ट मनुष्यको क०।

छुपे रुस्तम—व्यंगसे डरपोकको क०।

छुरी ख़रबूज़ेपर गिरी तो ख़रबूज़ेका ज़रर ख़रबूज़ा छुरीपर गिरा तो ख़रबूज़ेका ज़रर—जब दोनों ही तरहसे अपना नुक़सान होते दीखता है, तब क०।

छुरी तले दम लो—शेषतक बर्दाश्त करो।

छूअत मरैं धायके कारैं का जानैं परपीरा, दुख दैनेको दोऊ जन्म लें, कायथ अरु खटकीरा—कायस्थोंकी स्वार्थपरता और खटमलोंके काटने पर क०।

छूछाका संग न साथी, भइला द्वारे झूमले हाथी (भो०) जब मनुष्य ग़रीब रहता है तब उसका कोई साथी नहीं होता, पर वही जब धनवान हो जाता है, तब उसके द्वारपर हाथी झूमने लगते हैं।

छूछा कोई न पूछा—ग़रीबको कोई नहीं पूछता।

छूछी हांडी बाजे टनटन—बुद्धिहीन बहुत बोलता है।

छूछे फटके उड़ उड़ जायँ—कम बुद्धिवाला मनुष्य जांचमें नहीं ठहर सकता।

छूट भलाई सारे गुन—(ज०) बुरे आदमीको क०।

छूटा बाज न आवे हाथ—गई चीज फिर हाथ नहीं आती।

पिय बिदेश तिय करत अंदेश, कैसे मिलै बहुरि प्राणेश।
यहै मसिल लोगनमें गाथ, छूटो बाज न आवै हाथ।
(चित्रा। लो० र० कौ०)

छूटी घोड़ी भूसौले खड़ी—जिसे और कहीं ठिकाना न हो और घूम फिर कर उसी जगह आ जाय, उसे क०।

छूटे मल कि मलहिंके धोये, घृत कि पाव कोउ वारि बिलोये—(तुलसी) मैलसे धोये जानेपर मैल नहीं छूटता और पानीके मथनेसे घी नहीं निकलता

छूना न चीज़ कोई, घरभर है सब तुम्हारा—जो झूठी लल्लो चप्पो दिखाते हैं, उनपर क०।

छै चावल नौ पखाल—जब छोटे कामके लिये बहुत सा सामान होता है, तब क०।

छैल छींट बग़लमें ईंट—ऊपरी भड़क्या दिखानेवालेको क०। जो अपनेको मोटा ताज़ा दिखानेके लिये बग़लमें ईंट दबाये फिरते हैं।

छोटा घर बड़ा समधियाना
छोटा मुंह बड़ा निवाला } (ज०) बेजोड़ बातपर क०।

छोटा सो खोटा—नाटा आदमी ख़राब स्वभाववाला होता है।

छोटा सो मोटा—ठिगना आदमी मज़बूत होता है।

छोटी ननद अंगियाका बन्द, बड़ी ननद बिजली बसन्त—(ज०) स्पष्ट। क्योंकि छोटीको प्यार करती है और बड़ीसे डरती है।

छोटी मोटी कामनी, सब ही विषकी बेल बैरी मारे दाँवसे, ये मारैं हँस खेल—स्पष्ट।

छोटी सी गौरैया बाघोंसे नज़ारा—(पू०) कोई मामूली आदमी किसी बड़ेसे मुक़ाबिला करे, तब क०।

छोटीसी बछिया बड़ी सी हत्या—जो अपराध

बड़ी गायके मारनेसे होता है वही छोटीसी बछियाके मारनेसे होता है।

छोटे मियां सो छोटे मियां, बड़े मियां सुभान अल्लाह—जब छोटेसे भी बढ़कर बड़े में ऐब हो, तब क०।

छोटे मुंह बड़ी बात—जब कोई मनुष्य अपनी योग्यतासे बढ़कर बात करता है, तब क०।

मेरे खामीसे यह उफ़ों शिकायात,
कहावत है कि छोटा मुंह बड़ी बात (बेताब)

छोटेसे गाज़ी मियां बड़ीसी दुम—बेमेल बातपर क०।

छोड़ चले बंजारेकी सी आग—जब कोई आदमी मतलब निकल जानेपर किसीका साथ छोड़ देता है, तब क०

छोड़ जाट, पराई खाट—अत्याचार वा अन्याय करनेसे बाज़ आनेके लिये क०।

छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे—(ज०) ऐ झाड़! मत पकड़, मैं जरूर डूबूंगी। जब कोई आदमी अपनी इच्छाके विरुद्ध दूसरोंसे चिढ़कर कोई काम करता है और पीछे कोई बहाना कर अपनी बेवकूफ़ी छिपाता है, तब क०।

इसपर एक कहानी इस प्रकार है—एक स्त्रीने घरमें लड़ाई झगड़ा हो जानेसे कारण तालाबमें कूदकर आत्महत्या करनेकी इच्छा की। वह तालाबमें कूद तो पड़ी, पर भयके मयसे उसने एक झाड़ी पकड़ ली और बहाना कर बोली, झाड़ी ही मुझे डूबने नहीं देती।

छोड़े गाँवसे नाता क्या?—जिससे कुछ प्रयोजन ही न हो, उसकी चर्चा क्यों करे?

ज

जंगल जाट न छेड़िये, हट्टी बीच किराड़। भूखा तुरक न छेड़िये, हो जाय जीका झाड़—जङ्गलमें जाटको, दूकानमें दूकानदारको और भूखे तुर्कको नहीं छेड़ना चाहिए, नहीं तो ये जानके गाहक हो जाते हैं।

जंगलमें मंगल बस्तीमें कड़ाका—स्पष्ट। उल्टी बातपर क०।

जंगलमें मोर नाचा किसने देखा—जब कोई गुणी अपना गुण ऐसी जगह दिखावे, जहां उसका समझनेवाला कोई न हो, तब क०।

जख्मी दुश्मनोंमें दम ले तो मरे, न ले तो मरे—स्पष्ट।

जंग जीता मोरी कानी, घर ठाढ़ होय तब जानी—जब दोनों ही तरफ़ खोट हो, तब क०।

इसपर एक कहानी है:—किसी पुरोहितने धोखा देकर एक कानी लड़कीका ब्याह किसी युवा पुरुषके साथ ठीक किया। जब वरपक्षको मालूम हुआ, कि यह लड़कीके पितासे रुपये लेकर हमलोगोंको ठगना चाहता है, तो वे एक लंगड़ेको दूल्हा बना बरात सजाकर ले गये। जब विवाह हो गया तो पुरोहितने कहा, "जंग जीता मोरी कानी।" जिसके जवाबमें वर पक्षके एक मनुष्यने कहा, "घर ठाढ़ होय तब जानी"

जग जानी देश बखानी—जिस बात या स्त्रीको सब कोई जानते हों और उसकी तारीफ़ करते हों, उसपर क०।

जगत जनायो जिहिं सकल, सो हरि जान्यो नाहिं। ज्यों आंखिन सब देखिये, आंख न देखी जाहिं—(बिहारी) जिसने संसारको उत्पन्न किया, उस हरिको न जाना, जैसे आंखोंसे सब देखते हैं, पर आंखें नहीं देखी जातीं।

जगदर्शनका मेला है—स्पष्ट।

जगन्नाथका भात जिसमें झगड़ा न भात—जैसे जगन्नाथजीका प्रसाद जिसके लेनेमें किसी तरहका झगड़ा नहीं, क्योंकि यहां जाति विचार नहीं है।

जगन्नाथके भातको जगत पसारे हाथ—ऊ०दे०। प्रसादकी महिमाके लिये भी क०।

जगमें देखतहीका नाता—जबतक मनुष्य जीता है, तभीतक नाता है।

जगमें सांचे दो जने, एक राम और दाम। इक दाता है मोक्षके, एक सुधारे काम—स्पष्ट।

जट्टी रोवे यारोंको, लेले नाम भिरावोंका—(पं०) जाटनी भीतरसे तो यारोंके लिये रोती है, पर दुनियांको दिखानेके लिये भाइयोंका नाम लेती जाती है। जब कोई दिखानेको दूसरोंके लिये,

जब दाँत न थे तब दूध दयो, जब दाँत दये का अन्न न देइ हैं ?—(चहार दरवेश) ग़रीब आदमीको ईश्वरपर भरोसा रखनेके लिये क० ।

जब दिया दिल तो फिर अन्देशा-ए रुसवाई क्या ?—जब किसीसे प्रेम किया, तब बदनामीसे क्या डरना ।

लाज और कुलाज कहा हिन्दू और मुसलमान
"जासौं कियो नेह फेर तासौं भजबो कहा ?" (ग्वाल)

जब देगा तब छप्पर फाड़कर देगा—ईश्वर जब देता है तब हरएक रास्तेसे देता है। जब कोई मनुष्य उद्यम तो कुछ भी न करे और लक्ष्मी उसके पास आप ही आ जाय, तब क० ।

इसपर एक कहानी है:—किसी मनुष्यने यह प्रण किया कि "हम काम कुछ भी न करेंगे, जब ईश्वरको देना होगा, तब छप्पर फाड़कर देगा।" ऐसी प्रतिज्ञा कर वह घरको बन्द करके लेट रहा। दो तीन दिनोंके बाद जब उसे पाखानेकी हाजत हुई, तो गया और जब दस्त न उतरा तो उसने एक झाड़को पकड़कर दस्त निकालनेका उपाय किया जिससे वह झाड़ जड़से उखड़ पड़ा। उसके नीचे दो घड़े अशरफ़ियोंके भरे गड़े थे, पर उसने उन्हें न उठाया और प्रतिज्ञापर दृढ़ रहकर आ लेटा। जब रातको चोर आये और दीवार खोदने लगे, तो उसने कहा—"क्यों व्यर्थ परिश्रम करते हो, यदि धन चाहो, तो पाखानेमें अमुक स्थानसे उठा लाओ।" जब वे वहां गये, तो देखते क्या हैं, कि उन घड़ोंमें सांप बिच्छू भरे हैं क्योंकि वह धन उनके भाग्यका न था। चोरोंने क्रोधित होकर उन सांप बिच्छू भरे घड़ोंको छप्पर काटकर उसके ऊपर डाल दिया। उसके भाग्यका वह धन था, इसलिये गिरते ही अशरफ़ियां हो गईं, तब उसने प्रतिज्ञानुसार धन पाकर अपने घरमें रक्खा।

ज़बरदस्त मारे, और रोने न दे—स्पष्ट।

ज़बरदस्त सबका जमाई—बलवानसे सभी दबते हैं।

जब लग पैसा गांठमें, तबलग उसके यार। साईं इस संसारमें, स्वारथका व्योहार—स्पष्ट।

जब लगी चाट, तब सूझी हलवाईकी हाट—चटोरे आदमियोंपर क० ।

जब लौं जाकी अवधि है, पूजा नहीं करार। तब लौं ताको माफ़ है, औगुन करे हज़ार—स्पष्ट।

जब लौं निबही तब लौं खाय, नाहिं तो अपने घरकों जाय—जो आदमी कुछ जानता नहीं, केवल दूसरेको ठगकर अपना काम चलाता है, उसे क० ।

इसपर एक कहानी इस प्रकार है:—कोई निरक्षर पण्डित त्रिपुण्ड्र लगाये, माला आदि गलेमें लटकाये, किसी राज दरबारमें पहुंचा। उसने राजासे प्रार्थना की, "धर्मावतार! मैं एक प्रसिद्ध पण्डित हूं। इस प्रान्तमें ऐसा कोई नहीं है जो मेरा नाम न जानता हो; अतः आपसे निवेदन है, कि आप मुझे कोई पुरश्चरणका भार दें।" राजाने उनसे देवालयमें जाप करनेको कहा। पण्डितको तो अक्षरका भी ज्ञान न था, इसलिये वहां जाकर "जाप जपौ भाई जाप जपौ" इसी मन्त्रसे जप करने लगे। दूसरे दिन पहिले सरीखा एक और पण्डित राज दरबारमें आया और उसे भी राजाने देवालयमें जाप करनेको भेज दिया। वह बेचारा डरता हुआ देवालय गया क्योंकि अगर वहां कोई विज्ञ पण्डित होता तो उसकी पोल खुल जाती। वहां जाकर पहिलेको भी अपने ही सा जान वह "तुम जपौ सो हमूं जपौ" इसी तरह जप करने लगा। तीसरा पण्डित भी उसी तरह आकर "यह अन्धेर कब लौं निबही" कहकर जप करने लगा। चौथा पण्डित भी मन्दिरमें जाकर "जब लौं निबही तब लौं खाय" जपने लगा। अन्तमें पहिलेके जैसा पांचवां पण्डित भी राजासे जप करनेकी आज्ञा पाकर देवालय पहुंचा वहां अपने सरीखे सबको जान, तथा एक दूसरेका उत्तर देता देखकर, वह भी चौथे पण्डितके उत्तरमें "नाहिं तो अपने घरको जाय" कहने लगा। संयोगवश एक दिन जब राजा मन्दिरमें गये, तो उन बेचारे पण्डितोंकी पोल खुल गई। राजाने उन्हें थोड़ी थोड़ी दक्षिणा दे विदा किया।

जब सब पन हारी तो पनहारी कहाई—जब सब काम करके थक गयी, तब पनिहारीका काम उठा लिया।

जबसे उगे बाल, तबसे यही हवाल—(ज०) बचपनसे यही हाल है। अक्सर बुरे कामोंके वास्ते ही क० ।

ज़बानके आगे लगाम नहीं—जब कोई अनकहनी बात कहे, तब क० ।

ज़बानके नीचे ज़बान है—जो दो तरहकी बातें करता है, उसे क० ।

ज़बान क्या चली दो हल चल गये—जो बिना विचारे बात करे, उसे क०।

ज़बान जने एकबार, मां जने बार बार—एकबार कहकर उससे कभी न फिरे।

ज़बान तुर्की ब तुर्की—मुंहतोड़ जवाब देनेपर क०।

ज़बान शीरीं, मुल्क गीरी, ज़बान टेढ़ी मुल्क बांका— मीठी बोलीसे आदमी सबको वशमें कर लेता है और कटुवचन बोलनेवालेके सब शत्रु हो जाते हैं।

ज़बानसे बेटा बेटी पराये हो जाते हैं—जिसे ज़बान देते हैं उसीके साथ ब्याह करते हैं, जब कोई कहकर नटने लगता है, तब क०।

ज़बान ही लाल हैं ज़बान ही मुरदार है—ज़बानसे ही न्याय अन्याय दोनों बातें निकलती हैं।

ज़बान ही हाथी चढ़ावे जबान ही सिर कटावे स्पष्ट। दे० "बातों हाथी पाइये"।

ज़बानी जमा खर्च करना—जो कहता है बहुत और करता कुछ नहीं, उसे क०।

जमना किनारे घर किया, क़र्ज़ काढ़के खाय जब आवे कोई मांगने गड़प जमनामें जायं—बगला भगतको या जो देनेके डरसे साधू बन बैठे, उसे क०।

जमसे बुरी जनेत—स्पष्ट।

जमाई जमका भाई—हिन्दुओंमें प्रायः जमाई ससुरालवालोंको कष्ट दिया करते हैं, इसलिये उनको यमका भाई क०।

जमात करामात—संगठन ही बल है।

जमा लगी सरकारकी, और मिरज़ा खेले फाग—जो दूसरेके सिर मौज उड़ाते हैं, उनपर क०।

ज़मींदारको किसान, बच्चेको मसान—ज़मींदारके लिये किसान ऐसा है जैसे बच्चोंके लिये भूत प्रेत।

ज़मीन सख़्त और आसमान दूर है—मैं कहां जाऊँ। जब कोई बहुत मुसीबतमें पड़ता है, तब क०

ज़रका ज़ोर पूरा है, और सब अधूरा है—धनबल ही बड़ा बल है।

ज़रके दियेसे पीर और उस्ताद नर्म हों,
ज़रकी सबबसे दुश्मने नाशाद नम हों।
बों मोसी एक दिन है, परीज़ाद नम हों।
ज़र वह है जिसको देखके, फ़ौलाद नम हों। (नज़ीर)

ज़रका ज़ायल करना, जीते जी है मरना—धनको बरबाद करना जीतेजी मरना है।

ज़रको ज़र ही खींचता है—(व्य०) दे० "रुपयेसे रुपया पैदा होता है"।

ज़र गया ज़र्दी छाई, ज़र आया सुरख़ी आई—स्पष्ट।

सबसे ज़ियादा इश्क़से उल्फ़तका दाम है।
ज़र वह है जिसका इश्क़ भी अदना ग़ुलाम है॥

ज़र, ज़मीन, ज़न, झगड़ेकी जड़ हैं—जब झगड़ा होता है, तो रुपया, ज़मीन और स्त्री इन्हीं तीन चीज़ोंके लिये होता है।

ज़र, ज़ोर, ख़ुदा दाद है—धन और बल ईश्वरकी देन है।

ज़रदारका सौदा है, बेज़रका ख़ुदा हाफ़िज़। परदार पड़े उड़ते हैं बे परका ख़ुदा हाफ़िज़—स्पष्ट।

ज़र दीजे हज़ार मगर दिल न दीजे। उलफ़त बुरी बला है किसीसे न कीजे—स्पष्ट।

ज़र नेस्त इश्क़ टें टें—बिना पैसे इश्क़ नहीं होता।

ज़र फैलाया, और कार बराया—रुपया ख़र्चा और काम हुआ।

ज़रबल न ज़ोर बल—न धनबल न शरीर बल।

ज़रदार ज़ेब लगा है बेज़र बिगड़ा नज़र आता है—स्पष्ट।

ज़र है तो घर है नहीं तो खंडर है
ज़र है तो नर है नहीं तो पूरा ख़र है
ज़र है तो नर है नहीं तो पंछी बे पर है

बिना द्रव्यके कोई नहीं पूछता।

ज़रा ज़रा सा कर लिया, और अपना पल्ला भर लिया—स्पष्ट।

ज़रा न ज़हूर गांठ मेरी भरपूर—पास कुछ नहीं और कहे मैं मालदार हूं।

ज़रा सा खावे बहुत बतावे, वह है बहू सुघड़ैली। बहुता खावे कम बतलावे वह बहुअड़ बिगड़ैली—स्पष्ट।

ज़रा सा मुंह बड़ा सा पेट—पेटार्थू वा द्वेष रखने-वाले लड़केको क०।
जलकी मछली जलहीमें भली—जहांकी चीज़ वहीं अच्छी रहती है।
जलते की जाई, ग़रीबके गले लगाई—कम नसी-बकी लड़की ग़रीबको ब्याह दी। जैसेको तैसा मिलता है।
जल्दीका काम शैतानका और देरका काम रहमानका—स्पष्ट। जब जल्दी करनेसे कोई काम बिगड़ जाय, तब क०।
जलमें खड़ी पियासों मरे—(ज०) चीज़ होते कष्ट पावे, तब क०।
जलमें मछली नौ नौ कुटिया बखरा—जब कहीं कामकी सिद्धिका पता निशान न हो और हिस्से-दार लोग हिस्सा लगा लें, तब क०।
जलमें बसे कुमोदनी, चन्दा बसे अकाश। जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास—स्पष्ट।
जलमें रहकर मगरसे वैर—जिसके आश्रयमें रहे उसीसे वैर करे, तब क०।
कैसे निभ है निबल जन करि सबलनसों गैर,
जैसे बसि सागर विषे करत मगरसों बैर। (वृन्द)
जलानेको फूस नहीं तापनेको कोयला—ऊंची आकांक्षावालेको क०।
जलेको जलाना नमक मिर्च लगाना—कष्ट पाते हुएको और कष्ट पहुंचाना।
जले घरकी बलैंडी—जिसके घरके सब मनुष्य उसके सामने ही मर जांय, उसे क०।
जले पराई धी, और हंसें बटाऊ लोग—किसीका नुक़सान हो और कोई हंसे, तब क०।
जले पांवकी बिल्ली—(मु० ज०) जो स्त्री दूसरोंको बुराई ताकती फिरे, उसे क०।
जले फफोले फोड़ते हैं—जब कोई एकका गुस्सा दूसरेपर उतारे, तब क०।
जवान जाय पतार, बुढ़िया मांगे भतार—पतार=पाताल। जवान तो मरी जाती है और बुढ़िया ब्याह किया चाहती है। उल्टी बातपर क०।

जवान गांड़ बूढ़े सांड़—ऊ० दे०।
जवानीमें गधीपर भी यौवन आता है—स्पष्ट।
प्राप्ते षोडशे वर्षे गिद्धनी भवति सुन्दरी।
जवानोंको चला चली बुढ़ियाको ब्याहकी पड़ी—दे० "जवान जाय पतार।"
जवाबे जाहिलां बाशद ख़मोशी—(फा०) मूर्खकी बातका जवाब चुप हो जाना है।
जस किया तस पाया—जैसा किया वैसा फल मिला।
जस जस सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दुगुन कपि रूप दिखावा—(तुलसी) स्पष्ट।
जस दूलह तस बनी बराता—(तुलसी) जैसा आदमी हो, वैसे ही उसके साथी हों, तब क०।
जस पसु तस बंधना—जैसा पशु हो वैसी ही उसे बांधनेके लिये रस्सी चाहिए।
जस मनई तस पनही—जैसा आदमी देखे वैसा व्यवहार करे।
जस मुकुन्द तस पावल घोड़ी, विधना आन मिलावल जोड़ी—स्पष्ट।
जहं जहं चरन पड़ें सन्तनके तंह तंह बंटाधार करें—सब्ज़क़दम अथवा मनहूस आदमीको क०।
जहांका पीवे पानी, वहींकी बोले बानी—(१) जिसका खाय उसीकी सी बोले (२) जिस देशमें रहे वहींकी बोली बोले।
जहांकी मिट्टी वहीं ले जाती है—जहां मरना बदा रहता है काल वहीं खींचकर ले जाता है।
जहांके मुरदे वहीं गड़ते हैं—(व्य०) जहांकी चीज़ वहीं बिकती है। जहांके झगड़े वहीं तै होते हैं।
जहां खर्च नहीं वहां हरएक गांठका पूरा—जहां खर्च नहीं होता वहां धन जमा हो जाता है। जहां खर्चकी ज़रूरत नहीं, वहां सबकी जेब भरी रहती है और जहां ज़रूरत होती है वहां खाली हो जाती है।
जहां खाना वहां सबका ठिकाना—जहां खानेको मिले वहां सबका निर्वाह हो जाता है।

जहां गंग वहां रंग—जहां गंगा है वहाँ आनन्द है।

जहां गंज वहां रंज—विना कष्ट उठाये लाभ नहीं होता।

जहां गढ़ा होगा वहीं पानी मरेगा—जहां पानी मरेगा वहीं कीचड़ होगी।

(१) जलइ कीच तहां जहं पानी। (तुलसी)

(२) पानी वहीं मरेगा जहांपर नशेब हो।

जहां गाय तहां गायका बच्चा—जहां मा वहां बेटा।

जहां गुड़ होगा वहीं चींटे होंगे—जहां गुण होगा वहीं उसके चाहनेवाले होंगे। जहां धन होगा वहीं मंगते पहुंचेंगे।

कैसे रखियन घरको नाज,
लोग दृष्टि तें छूटन न पाज।
सुनो पखानो माहिम ओड़,
जहां सगुड़ तहं माखी होय।

जहां गुल होगा वहां खार भी होगा—गुलाबमें कांटा ज़रूर होता है।

जहां चार बासन होंगे वहीं खड़केंगे—जिस घरमें चार आदमी होंगे वहां झगड़ा भी ज़रूर होगा।

जहां जाय भूखा वहां पड़े सूखा—दुःखीको सब जगह दुःख है। कर्मनसीब आदमीपर क०।

जहां जाय मूसर वहीं खेत ऊसर—मूसर=मूर्ख जहां जाता है, वहीं बनी बनाई बातको बिगाड़ देता है। मूसर=चूहा लग जानेपर खेत उजाड़ हो जाता है। मूसर=लट्ठ चलने अर्थात् आपसकी लड़ाईसे रोज़गार बिगड़ जाता है।

जहां जायें बालेमियां तहां जाय पूंछ—बड़े आदमीके साथ पुछल्ला ज़रूर जाता है।

जहां जिसके सींग समायें, वहां निकल जायें—जहां जिसका गुज़ारा हो वहां चले जाओ, ऐसा जवाब देनेपर क०।

जहां डर, वहां हमारा घर—निडर आदमीको क०।

जहां ढाक वहां डाकू—ढाकके जंगलमें डाकू ज़्यादा रहते हैं।

जहां तमा है वहां आदमियत कहां?—क्रोध आनेपर मनुष्यकी बुद्धि जाती रहती है।

जहां तुम्हारा पसीना गिरे वहां हम ख़ून गिरावें—हमदर्दी दिखानेवाला या जो तनलगू मित्र होता है, वह कहता है।

जहां दल, तहां बादल—जहां आदमियोंकी भीड़ होती है वहां धूलका बादल उठता है।

जहां देखी रोटी, वहां मुड़ाई चोटी—रुपये पाते ही जो आदमी हरएककी तरफ़दारी करने लगता है, उसपर क०।

जहां देखे तवा परात, वहीं गावे सारी रात
जहां देखे गुआ पूरी, वहां जाय लुढ़ी लुढ़ी }

(पू० ज०) मालदारोंके पास सभी जाते और ख़ुशामद करते हैं।

जहां न जाय सुई वहां भाला घुसेड़ते हैं—जहां गुंजायश नहीं, वहां ज़्यादःकी आशा करते हैं, तब क०। जब कोई बात हो बहुत बढ़ाकर कहे, तब भी क०।

जहां न जाको गुण लहे, तहां न ताको ठांव,
धोबी बसकर क्या करे, दिगम्बरोंके गांव—जहां अपनी प्रतिष्ठा न हो, वहां न रहना चाहिए। बिना प्रयोजन भी कहीं न रहना चाहिए। दे० "चलेजाहु"

जहां न पहुंचे रव, वहां पहुंचे कव—(१) जहां सूर्यकी भी पहुंच नहीं, वहां कविकी कल्पना पहुंच जाती है। (२) जहां सूर्य नहीं पहुंचता वहां और कौन पहुंच सकता है। कब=कवि; किस समय।

जहां न भाका जाया, वह सब ही देश पराया—जहां भाई नहीं है वहां परदेश ही समझना चाहिये।

जहां पड़े मूसल, वहीं खेम-कुशल—(१) तगड़ा या मस्त आदमी जहां रहता है वहीं उसको आनन्द है। (२) जहां अनाज कूटनेके लिये मूसल चलता है, वहां भी क्षेम-कुशल होती है। (३) मार पड़नेसे झगड़ेको शान्ति हो जाती है।

जहां पुष्प तहं बास है, जहां बास तहं भौंर—जहां धन होगा वहीं साहखर्ची होगी और जहां साहखर्ची होगी वहीं गुणी पहुंचेंगे।

जहां बड़ी सेवा वहां ओछा फल—जहां ज़्यादः ख़ुशामद होती है, वहां नतीजा अच्छा नहीं निकलता।

जहां बहूका पीसना वहीं ससुरकी खाट—अनुचित काम करनेपर क०।

जात पांत पूछे नहिं कोई, हरिको भजे सो हरिका होई—स्पष्ट। । व्यंगसे दोगलोंको क०।

एक दिन अकबर बादशाहके यहां पांच साधू आये। जब उनकी जात पूछी गई, तो उन्होंने जवाब दिया कि साधुओंकी जात क्या? अकबरने बीरबलसे कहा, 'इनकी जातका पता लगाओ।' बीरबलने उन साधुओंसे कहा कि, "ईश्वरके विषयमें अपनी अपनी कुछ कविता आप लोग सुनाइये" पहलेने कहा—"राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी, हरका नाम मिश्री तू घोल घोल पी।" बीरबल बोला, 'यह ब्राह्मण है।' दूसरेने कहा—"राम नाम शमशेर पकड़ ले हाथ कटारा बांध लिया। दया धर्मकी ढाल बना ले यमका द्वारा जीत लिया।" बीरबलने इसे क्षत्रिय समझा। तीसरेने कहा—साहब मेरा बानियां, सहज करे व्योपार। बिन डण्डी बिन पालड़े, तोले जग संसार।" बीरबलने इसे वैश्य ठहराया। चौथेने कहा—"राम झरोखे बैठके सबका मुजरा लेय। जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देय।" बीरबल बोले—'यह शूद्र है।' पांचवेंने कहा—"जात पांत पूछे नहिं कोई। हरिको भजे सो हरिका होई।" बीरबलने इसे वर्णसंकर ठहराया। जब साधुओंसे पूछा गया, तो उन्होंने भी अपनी अपनी वही जात बताई जो बीरबलने कही थी। बादशाहने बीरबलसे पूछा, कि तुम्हें इनकी जातका पता कैसे लगा। तब बीरबल बोले, कि जातीय स्वभाव किसीका नहीं छूटता। यद्यपि सभी साधु हैं और कविता भी सबकी ईश्वरके विषयपर है, तोभी इससे इनके कर्म झलकते हैं। ब्राह्मण खानेके लालची होते हैं, इसलिये अपनी कवितामें लड्डू घी मिश्री ले आये, जो क्षत्रिय है यह ढाल तलवार ले आया, वैश्य डण्डी तराजू और शूद्र चाकरी ले आया और यह महात्मा जिनकी जातका ठीक नहीं, वर्ण भेदकी कोई जरूरत ही नहीं समझते।

जात पांत पूछे नहिं कोई, जनेऊ पहिनके ब्राह्मन होई—स्पष्ट।

जातमें कौन बड़ा कौन छोटा—सब समान हैं।

जातमें तुरक, और बाजेमें हुडुक—बहुत हल्ला मचानेवाले होते हैं।

जात स्वभाव न छूटते, टांग उठाकर मुतते—कुत्तेको क०। जो अपनी बुरी आदत नहीं छोड़ता, उसे क०।

जानका सदका माल, इज्जतका सदका गला—माल देकर जान बचे और जान देकर इज्जत बचे तो बचाना चाहिये।

जानके लाले पड़ गये—जीना मुश्किल हो गया।

जानके साथ जेवड़ा-जेवड़ा=रस्सा। जबतक जान है, यह फांसी मेरे गलेसे न छूटेगी। जब किसीकी स्त्री या पति बहुत दुखदाई हो, तब क०।

जान जाय, पर माल न जाय—कृपणको क०।

जानता चोर गाँव उजाड़े—स्पष्ट।

जानतेका दिल, अनजानतेका कलेजा—(ज०) बुद्धिमानका दिल और मूर्खका कलेजा कहलाता है

जान न पहिचान बड़ी बीबी सलाम—बिना पहिचानके जब कोई किसीसे सम्बन्ध जोड़कर बात चीत करता है, तब क०।

जाननवाले जानिये मूरख मन पछिताय, करनी भूली आपनी औरों दोष लगाय—स्पष्ट।

जान बची और लाखों पाये—आलसी आदमीपर क०।

जानवरोंमें कौआ और मनुष्योंमें नौआ—किसी आदमीकी चालाकी प्रगट करनेके लिये, उदाहरण रूपसे क०। जानवरोंमें कौवा और मनुष्योंमें नाई धूर्त्त होता है।

जान बूझकर कुएंमें गिरना (या ढकेलना)—(१) जब कोई अपनेको झंझटमें फंसाता है, तब क०। (२) जब कोई लड़कीको अयोग्य वरके हाथ सौंप देता है, तब क०।

जान मारे बानियाँ, पहिचान मारे चोर—बनिये जान पहचानवालोंको ही अधिक ठगते हैं क्योंकि वह मुलाहिजेसे कुछ नहीं कहते और चोर भेद मिलनेसे ही चोरी करता है।

जान सबको प्यारी है
जान सबमें बराबर है } स्पष्ट। जब कोई किसी जीवको सताता है तब उसको उपदेश देनेके लिये क०।

जानसे जहांन है
जान है तो जहांन है } दुनियांकी तमाम कैफियत जानके साथ है। मर जानेपर फिर किसीसे कुछ सम्बन्ध नहीं रहता।

जान मिले तो जहान मिले,
नहिं जान मिले तो जहान कहांको। (गोधा)

जानसे हाथ धो बैठे हैं—जीनेकी उम्मेद नहीं।

जाना अपने बस, आना पराये बस—जाना, जब जी चाहे, तब हो सकता है; आना, तभी हो सकता है, जब दूसरा आने दे।

जाना है रहना नहीं, मोहिं अंदेशा और। जगह बनाई है नहीं, बैठोगे किस ठौर—अच्छा काम करके परलोकके लिये पुण्यरूप-स्थान सबको बना लेना चाहिए।

जानि न जाय निसाचर माया—जब किसी दुष्ट मनुष्यका भेद न जान पड़े कि वह क्या करेगा, तब क०।

जाने ऊख मिठासको, जब मुख नीम चबाय—जो दुःख भोग लेता है, वह सुखका अनुभव कर सकता है।

जानेका आना है—तुम किसीके घर जाओगे तो वह भी तुम्हारे घर आवेगा। जो मनुष्य शादी ग़मीमें किसीके घर नहीं जाता, उसके यहां यदि कुछ काम हो और लोग न आवें, तब क०।

जानेली चिलम जिनका पर चढ़ेले अंगारी—(पू०) जिसपर विपत्ति पड़ती है वही उसकी वेदनाको जानता है।

जानेवालेके हज़ार रास्ते, ढूंढनेवालेका एक—भागनेवाला न मालूम किस रास्तेसे गया होगा; पर ढूंढनेवाला एक ही रास्ता देखता है।

जापके बिरते पाप—जो पुण्यके बलपर पाप करता है, उसपर क०। धर्मकी ओटमें पाप करना।

ज़ाफ़र जटल्लीने ऐसा किया,पिस्सूको मल मलके भैंसा किया—जो ज़रासी बातको बढ़ाकर कहता है, उसपर क०। पिस्सू=छोटा मच्छड़।

जा मन होय मलीन सो न सहे पर सम्पदा—जिसका मन मैला होता है, वह दूसरेके वैभवको नहीं देख सकता।

जामाता दशमोग्रहः—(सं०) जैसे नौ ग्रह विमुख होनेपर मनुष्यको कष्ट देते हैं, वैसे ही जमाई भी दसवां ग्रह है। जब कोई दामादसे कष्ट पाता है, तब क०।

जामिन दुनियां पाप है, तिरिया महापाप, दोनोंको तू फूंक दे, नाम निरंजन जाप—स्पष्ट। दुनियांमें निष्कलङ्क रहनेके लिये जामिन उपदेश देते हैं।

जामिन दे या दिलाये—जब किसीकी ज़मानत दे, तब आप देनेकी सामर्थ्य रक्खे वा दूसरेसे दिला दे।

ज़ामिन मत हो चोरका, और सींग पकड़ मत ढोरका—स्पष्ट।

ज़ामिन मत हो बापका, भला जो चाहे आपका—स्पष्ट।

ज़ामिन होना, धनका खोना—स्पष्ट।

जाय ईमान रहे सब कुछ—(१) ईमान साथ जाता है और सब कुछ यहीं छूट जाता है। (२) ईमानके जानेसे अगर सब कुछ बच जाता है, तो जाने दो ईमानको।

जायगा साहूका, रहेगा साहूका—जब कोई मालिकके काममें बेपरवाही करता है, तब क०।

जाय जान, रहे ईमान—स्पष्ट।

जाय लाख, रहे साख—(व्य०) टोटा होनेपर भी यदि बात बनी रहे तो रोजगार चलता रहता है।

कहन लगी सखि सखि बहुबार,
अतिहिं सराहत पिय तव प्यार।
मोती सीप गये इमि भाख,
जाइ लाख जो रहै सुसाख। (मुदिता)

जार खावे मार—परस्त्रीसे गुप्त प्रेम करनेवालेकी दुर्दशा होती है।

ज़ालिमकी उम्र कोता—अत्याचारीकी उमर थोड़ी होती है, क्योंकि मालूम नहीं उसे लोग कब मार डालें।

ज़ालिमकी रस्सी दराज़ है—ज़ालिम (अत्याचारी) मनुष्य अधिक दिनतक जीता रहता है।

जासु दूत बल बरणि न जाई, तिहि पुर आये कौन भलाई—(तुलसी) स्पष्ट।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी—(तुलसी) जिस राजाकी प्रजा कष्ट पाती है, वह अवश्य नरकगामी होता है।

जा सूलीपर चढ़ जा—किसीको खतरनाक काममें भेजनेपर क०।

जासे जाको काम, सोई ताको राम—जिसका नमक खाय उसको ईश्वरतुल्य समझे।

जासों निबहै जीविका, करिये सो अभ्यास। वेश्या पाले सील तौ, कैसे पूरै आस—(वृन्द) स्पष्ट।

जाही तें कछु पाइये, करिये ताकी आश— (वृन्द) स्पष्ट।

जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये— दुखीको धैर्य देनेके लिये क०।

आजके जमानों सबहीमें मिल जानों आप,
आनतें विरानों तब पाव जाके गहिये।
दोष नाहिं दीपतको दोष कर्म आपनेको,
मन अपनेकी बिथा काहूसों न कहिये॥
जबलग दीनानाथ कृपाकै न करैं नेक,
तबलग ऊँच नीच सबहीकी सहिये।
हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरिनाम,
जाही बिधि राखे राम ताही बिधि रहिये॥

जिठानीका भैंसा अगड़ धों धों—जिठानीका लड़का हमेशा मोटा ताजा रहता है, क्योंकि घरमें जिठानीकी ज्यादा चलती है।

जितना ऊपर उतना नीचे—चालाक आदमीको क०।

जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा— जितनी ज़्यादा लागत लगाई जायगी उतनी ही चीज़ अच्छी मिलेगी और जितनी ज़्यादा मजूरी दी जायगी उतनी ही चीज़ अच्छी बनेगी। जब कोई थोड़े दाममें बढ़िया चीज़ लेना चाहता है, तब क०।

अधर मधुर है प्रथम हीं, बानी मधुर समीय।
जेतो मीठा डारिये तेतो मीठो होय।

जितना छानो उतना ही किरकिरा—जितना जांचोगे उतने ही ज़्यादा ऐब निकलेंगे।

जितना छोटा उतना ही खोटा—स्पष्ट।

मुगध बेसरति प्रौढ़ति मानै, बिन ब्याहे उपपति रति ठानै,
कहै कहावत जगमें मोटी, जेती छोटी तेती खोटी।
(चमूटा लो०र०को०)

जितना देगा, उतना पायेगा—दिया निष्फल नहीं जाता।

जितना पानी पिलावे उतना पीये—जब कोई सब तरहसे किसीके अधीन हो जाता है, तब क०।

जो पानी पिलाना तो पीना उसी,
गरज़ गैरके हाथ जीना उसी। (मीरहसन)

जितना बड़ोंने पुण्य किया उतनी लड़कोंने भीख मांगी—जब किसी इज़्ज़तदारका लड़का बदनामीका काम करे, तब क०।

जितना मैंने दूध पीया है उतना तुम्हें पानी भी न मिला होगा—बड़ोंका लड़कोंके प्रति कहना है।

जितना रला सो चुग लो—(पं०) जो तुम्हारा है सो ले लो, और उसीमें संतोष करो।

बापी कूप सरिता भरे हैं सात सागर पै,
तू तो तेरे बासन-समान पानी भर ले। (देवीदास)

जितना सस्ता उतना ख़राब—स्पष्ट।

जितना सांप लम्बा उतनी ही गोह चौड़ी— जब दो चीज़ की तुलनाकी जाती है, तब क०।

जितना स्याना, उतना दीवाना-जो ज़्यादा स्याना होता है वह उतना ही वहमी होता है।

जितनी आमद उतना लोभ
जितनी आमदनी उतना ख़र्च } स्पष्ट।

जितनी गंगा नहाई उतना फल पाया--(ज०) जब कोई किसीके साथ नेकी करे और वह उसको न माने, तब क०। कहनेका मतलब यह है, कि जो कुछ किया सो किया और आगे न करूंगी।

जितनी चादर देखो उतने ही पैर पसारो— समाईके भीतर ख़र्च करनेके लिये क०।

(१) एती टांग पसारिये, जेती लम्बी सौर। (वृन्द)
(२) पिय सुभाव चित धारिकै, मानि मिमान विचार।
जेती चादर जानिये, तेतो पांय पसार।
(जिया। लो० र० को०)

जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत—स्पष्ट।

जितने काले उतने मेरे बापके साले—(१) जब कोई दूसरेकी चीज़को अपनी बताता है, तब क०। (२) काले सभी बुरे होते हैं। जिसका रंग काला या जो पेटका काला होता है, उसे क०।

(१) ऊधो कारे सब ही बुरे (सूरदास)
(२) सखीरी स्याम सबै इक सार,
मीठे बचन सुहाये बोलत अन्तर जारनहार॥

भँवर कुरंग काक अरु कोकिल कपटिनको सरदार।

(सूरदास)

(२) सखीरी स्याम कहा हित जाने।

सूरदास सरबसु जो दीजै कारो कृतहि न मानै। (सूरदास)

जितने घने, उतने भले—जितने लड़के हों उतना ही अच्छा।

जितने मुंड, उतने पिण्ड—सभी लड़कोंको पिण्डदान देना चाहिये।

जितने मुंह उतनी ही बातें—जब एकसे दूसरेकी बात न मिलती हो, तब क०। अफ़वाह यों ही उड़ा करती है।

जिधर जलता देखें तिधर तापें—मतलबी आदमियोंपर क०।

जिधर मौला, उधर आसफ़उद्दौला—कोई आदमी कितना ही परिश्रम क्यों न करे, पर उसे उतना ही मिलता है जितना उसके तक़दीरमें बदा है।

इसका निकास इस कहानीसे है :—लखनऊके नवाब आसफ़उद्दौला बड़े ही दानी थे। एक दिन किसी फ़क़ीरने आकर उनसे एक हज़ार रुपये माँगे। इसपर नवाबने उसको दस रुपये देकर कहा कि "तुम्हारे भाग्यमें इतना ही बदा है"। जब फ़क़ीरने रुपये लेनेसे इनकार किया, तब नवाबने कहा, कि "कल आना।" दूसरे दिन फ़क़ीरके आनेसे पहले ही नवाबने एक रुपयोंकी और एक पैसोंकी थैली भरवाकर रख दी। फ़क़ीर आया और रुपये माँगने लगा। नवाबने उन दो थैलियोंमेंसे एक उठा लेनेको कहा। दुर्भाग्यवश फ़क़ीरने पैसोंकी ही थैली उठा ली। नवाबने कहा, "तक़दीरमें था, सो मिल गया।

जिधर रब, उधर सब—जिसका ईश्वर साथी है, उसके सभी साथी हैं।

जिनकी बोलीमें दग़ा, उनके दिलमें क्या दग़ा न होगी—पठानोंपर क०। क्योंकि वे दग़ा दग़ा बहुत कहा करते हैं।

जिनके लाड़ घनेरे, उनके दुख बहुतेरे—जिन लड़कोंका दुलार बहुत होता है उनको दुःख भी बहुत होते हैं।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा—जिनको जितनी ज़्यादा आकांक्षा होती है उनको उतना ही ज़्यादा दुःख होता है।

जिन जाये, उनहीं लजाये—कुपात्र या नालायक़ लड़केपर क०।

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ। मैंबौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ—(व्यं०) लाभ तभी होता है, जब कुछ जोखम और मेहनत उठाई जाती है। ईश्वरके विषयमें भी क०।

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीत बहार, अब अलि रही गुलाबमें, अपत कटीली डार—(बिहारी) जिन दिनोंमें फूल देखे थे वह बहारके दिन गये। हे भौंरे! अब गुलाबके पेड़में बिन पत्तोंकी काँटे भरी डालियां रह गई हैं। जब कोई धनहीन, यौवनहीन वा रूपहीन हो जाय, तब क०।

जिन पाये पनहीं नहीं, तिन्हें देत गजराज। विष देते विषया मिले, साहब गरिब निवाज—ईश्वरकी कृपा होनेपर भिखारी भी राजा हो जाता है।

इस मसलका निकास इस कहानीसे है :—एक कंजूस धनाढ्य सौदागरके पास कोई भिखारी हमेशा भीख माँगने आया करता था। एक दिन सौदागरने उस भिखमंगेसे तंग होकर अपने अढ़तियेको लिख भेजा कि "इसे चिट्ठी लानेवालेको विष दे दो"। विषया उस अढ़तियेकी लड़कीका नाम था। उसने सेठजीकी सम्मति पाकर उस भिखारीको अपनी कन्या ब्याह दी और हाथीपर चढ़ाकर बिदा कर दिया। जब सेठजीने यह हाल सुना, तो उन्होंने उक्त मसल कही।

जिन मोलों आई, उन्हीं मोलों गंवाई—जिन दामोंमें ली उन्हीं दामों बेच दी।

जिन मोहि मारा तेहि मैं मारा—(तुलसी) बदला चुकाने पर क०।

जियत न देहौं कौरा, मरे डुलैहौं चौरा—नीचे देखो।

जियत पितासे दंगम दंगा, मरे पिता पहुंचा वहिं गंगा। जियत पिताको पूंछ न बात, मरे पिताको दूध और भात—ईसाइयोंका कहना हिन्दुओंके प्रति। श्राद्धके विषयमें कुपात्रको भी क०।

जियत महोबे हम ऊवेंना कागा मरे हाड़ ले जाय—जीते जी महोबेको जाऊंगी नहीं, मरनेपर कौवे भले ही हमारी हड्डी महोबेको पहुंचा देवें।

जिय बिन देह, नदी बिन वारी, वैसहि नाथ, पुरुष बिन नारी—(तुलसी) बिना पुरुषके स्त्रीको शोभा नहीं।

ज़ियारते बुज़ुर्गा, कफ़ारहे गुनाह—(फ़ा० मु०) बड़ोंका सम्मान करना पापोंका प्रायश्चित है।

जिये सो खेले फाग, मरे सो लेखे लाग—होली खेलनेवाले कहते हैं। वसन्त ऋतुमें चेचक आदि रोगोंके कारण बहुत लोग मरते हैं, इसलिये क०

जिसका आंडू बिके वह बधिया क्यों करे—(व्या०) जो माल जिस अवस्थामें है उसी तरह बिक जाय, तो उसका रूपान्तर करके बेचनेका कष्ट क्यों उठाया जावे।

जिसका खाइये अन्न पानी, उसकी कीजिये आबादानी—(ज०) स्पष्ट।

जिसका खाना उसका गाना—जिसका अन्न पानी खाय उसीका पक्ष ले।

जिसका ख़ून उसीकी गर्दन पर—ख़ून करनेका पाप ख़ून करनेवालेको ही होता है।

जिसका गुइयां नहीं उसका कूकर गुइयां—(ज०) जिसका कोई मित्र नहीं उसका कुत्ता ही मित्र है।

जिसका चिकना देखा फ़िसल पड़े—स्वार्थी और ठकुरसुहाती कहने वालों पर क०।

जिसका चूएगा, सो छवा लेगा—स्पष्ट।

जिसका चुन्न, उसका पुन्न—चुन्न=आटा पुन्न=पुण्य। दानमें जिसका धन ख़र्च होगा, पुण्य उसीका होगा।

जिसका जावे, वही चोर कहावे—पुलिसवालोंको क०। क्योंकि जब वे चोरका पता नहीं लगा सकते, तो जिसका जाता है उसीको चोर बनाते हैं।

जिसका डर, वही नहीं घर—(ज०) जब पति घरमें नहीं है, तो जो चाहे कर सकती है।

जिसका तेज, उसका सेज—(कु०) बलवान ही मालगुज़ारी वसूल कर पाता है।

जिसका दूध बिकेगा, वह दही क्यों जमावेगा—(व्य०) दे० "जिसका आंड बिके"।

जिसका पल्ला भारी वही झुके—जिसके पास धन होता है, वही दे सकता है। इज़्ज़तदार हीको दबना पड़ता है।

उठा रहता है ऊंचा कम वज़न पल्ला तराज़ू का।

जिसका पाप, उसका बाप—पाप मनुष्यका बाप है उसके अनुसार चलना पड़ता है अर्थात् भोगना पड़ता है।

जिसका फ़िक्र, उसका ज़िक्र—जो बात मनमें रहती है। वही ज़बानपर भी रहती है।

जिसका बनियां यार, उसको दुश्मन क्या दरकार—स्पष्ट। बनियोंपर ताना है।

जिसका ब्याह उसका गीत—स्पष्ट। समयानुकूल काम करनेके लिये क०।

जिस कारन मूंड मुड़ाया, सो दुःख आगे आया—जब कोई मनुष्य कोई दुःखसे छूटनेके लिये हानि सहके अन्य उपाय अवलम्बन करे, फिर भी वह दुःख उसका पीछा न छोड़े, तब क०।

कोई आदमी मनुष्य मजदूरी करके जीविका निर्वाह करता था। नित प्रति कठिन परिश्रम करके खाना उसे दुश्वार जान पड़ा, इसलिये वह सिर मुड़ा कर साधू हो गया। वह जानता था, कि साधू होनेमें कुछ परिश्रम न करना पड़ेगा। परन्तु जब उसे दरवाज़े दरवाज़े भीखके लिये घूमना पड़ा, तब उसने यह मसल कही।

जिसकी आंख नहीं, उसकी साख नहीं—(१) अंधा बेईमान होता है। (२) जो चीज़ आंखसे न देखो हो उसका एतबार नहीं।

जिसकी आंखमें तिल, वह बड़ा बेदिल—आंखमें तिलवाला निर्दयी होता है।

जिसकी खइये चँदिया, उसकी रहिये बँदिया—जिसका खाय उसकी तावेदारी करे। चँदिया=चांदी, रुपया। बँदिया=बांदी।

जिसकी गोदमें बैठे, उसकी दाढ़ी नोचे—कृतघ्नको क०।

जिसकी जीभ चलती है उसके नौ हर चलते हैं—डींग हांकनेवालेको या बड़बोलेको क०।

जिसकी जूती उसीका सिर—उसीके मुंहसे उसीको झूठा बनानेपर या उसीका पैसा ख़र्च कराके उसीकी दावत करनेपर क०।

जिसकी जोरू अन्दर, उसका नसीवा सिकन्दर—मेहतर लोग आपसमें कहा करते हैं। तात्पर्य यह है, कि जिस मेहतरकी जोरू अङ्गरेज़के घर आया बनकर घुस गई उसकी तक़दीर बड़ी है।

जिसकी तरफ़ रब, उसकी तरफ़ सब—जिसपर ईश्वरकी कृपा है उसके सब साथी हैं।

जिसकी तेग़, उसकी देग़—दे० "जिसकी लाठी"। तेग़=तलवार।

जिसकी थाली खोई जाती है, वह कलसोंमें हाथ डालकर देखता है—जिसकी चीज़ खो जाती है उसकी अक़्ल ठिकाने नहीं रहती है।

जिसकी देग़ उसकी तेग़—जिसके पास खानेको है, उसीके सिपाही फ़तह करते हैं।

जिसकी बंदरी वही नचावे—जिसका काम है वही कर सकता है। जब एकका काम कोई दूसरा करने लगे और उससे न हो सके, तब क०।

जिसकी बहिन अन्दर, उसका भाग सिकन्दर—जिसकी बहिन बड़े आदमीके घर बैठी हो उसका आदर बहुत होता है।

जिसकी वाल्दः बोलेगी, उसका क़िब्लेगाह क्यों न बोलेगा—वाल्दः माको और क़िब्लेगाह बापको कहते हैं। थोड़ा पढ़कर विदेशी भाषा बोलने लगते हैं पर उसका अर्थ नहीं समझते उनपर ताना है किसी मूर्खने एक थोड़ा फ़ारसी सीखी थी, उसमें भी उसने भ्रमसे वाल्दःका अर्थ औरत और क़िब्लेगाहका अर्थ मर्द समझ लिया। एक दिन किसी पड़ोसिनसे उसकी स्त्रीकी लड़ाई हुई, तो वह भी बीचमें बोल उठा। इतनेमें पड़ोसिनके मर्दने कहा—"मस्तूरातोंकी लड़ाईमें मर्दोंके बोलनेका क्या काम?" उत्तरमें उस मूर्खने कहा "जिसकी वाल्दः बोलेगी उसका क़िब्लेगाह क्यों न बोलेगा?" इसपर सब कोई हंस पड़े।

जिसकी बीबीसे काम उसकी लौंडीसे क्या काम?—जब बड़ोंतक पहुंच है तब छोटोंकी खुशामद न करनी चाहिये।

जिसकी महलमें मैया, मांगे पैसा मिले रुपैया—दे० "जिसकी बहन।"

जिसकी लाठी उसकी भैंस—बलवान आदमीको ही विजय प्राप्त होती है।

(१) एकनिमि दूर ल्यावै हरि देख,
किधौ युद्ध सब बरन विसेख,
को रजपूत बुंदेलै बैस,
जिसकी लाठी उसकी भैंस। (लो० र० को०)

(२) उन्हींकी भैंस है भाई कि जिनकी लाठी है।
उन्हींका गाँव है अकबर जो बन सके ठाकुर॥ (अकबर)

जिसके कारन जोगिन भई, वह सइयां परदेश—जिस चीज़को लालचमें आकर सब कुछ छोड़ बैठे और वही चीज़ न मिले, तब क०।

जिसके घर भोज उसको भात नहीं—क्योंकि वह आदर सत्कारमें लगा रहता है।

जिसके घरमें माई उसकी राम बनाई—जिसके घरमें मा है, उसे किसी बातका दुःख नहीं।

जिसके चार भैया, मारे धौल छीन ले रुपैया—एकता ही शक्तिको बढ़ाती है।

जिसके धी नहीं उसकी देहली धी—जिसको लड़की नहीं है उसे देना हो तो जो दरवाज़ेपर आवे उसे ही देवे।

जिसके पल्ले हिमियानी, वही रन्न स्यानी—(पं०) जिसके पास पैसा है वही स्याना है। हिमियानी=कमरसे बांधनेकी पतली रुपयोंकी थैली।

जिसके पास छिबुआ, वही मोर बबुआ—(अ०) जिसके पास धन है उसकी सब खुशामद करते हैं।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा?—पैसेसे ही भलमनसाहत है।

जिसके पेटमें होय गायका गोश्त, वह क्या होय हिन्दूका दोस्त—स्पष्ट है। मुसलमानोंकोक०।

जिसके पेटमें वान, उसका गुरु शैतान—स्पष्ट।

इसका निकास इस प्रकार है—एक दिन बादशाह अकबरने बीरबलसे कहा, "जिनके पेटमें "वान" आता है, वे सब शैतान होते हैं, जैसे कोचवान, फ़ीलवान, शुतरबान वग़ैरह।" इसपर बीरबलने जवाब दिया "जी हां मेहरबान।"

जिसके पैसा नहीं हो पास, उसको मेला लगे उदास—क्योंकि मेलेमें पैसेका ही खर्च है।

जिसके बारह बीघा बाँगा उसकी कमरमें नहीं तागा—(ग्रा०) बाँगा=कपासका खेत। कंजूस आदमियोंपर क०।

जिसके मा बाप जीते हैं वह हरामका नहीं कहलाता—जब कोई मनुष्य किसीको कुछ दोष लगाये और उसका प्रमाण नहीं रखता हो, तब क०।

जिसके लिये चोरी की वही कहे चोर—जब कोई किसीके लिये बुरा काम करे और वही उसको बुरा काम बतावे, तब क०। यह मसल बंगलाकी इस मसलसे बनी है—"जार जन्य चूरी कोरी सेई बले चोर!"

जिसके वास्ते रोये उसकी आंखोंमें आंसू नहीं—कृतघ्नको क०।

जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नहीं, कांटा है घरमें सीका या गुल कनेरका—सी=सेई। जिसके कारण घरमें लड़ाई हो वह कनेरके फल या सेईके कांटेकी तरह होता है।

जिसके सिर पड़ती है वही जानता है—स्पष्ट।

जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई—डोई=कलछी। धनवानकी सब खुशामद करते हैं।
कोई किसीका और किसीका न कोई है,
सब कोई है उसीका जिस हाथ डोई है। (नज़ीर)

जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी—(मु०) रुपया पास होनेपर सब काम होता है।

जिसको खुदा बचाये, उसपर कभी न आफ़त आये—दे० "जाको रक्खे साइयां।"

जिस घर नारी फूढ़ी, वह घर जानो कूड़ी—जिस घरमें औरत फूहड़ है उस घरकी कभी उन्नति नहीं होती।

जिस घर बड़े न बुझिये, दीपक जुरे न सांभ।
सो घर ऊजड़ जानिये, जिनकी तिरिया बांभ—स्पष्ट।

जिस घर बूढ़ा न बड़ा वह घर डिग्गम डिग्गा—बुज़ुर्ग आदमीके बिना घरका बन्दोबस्त ठीक नहीं रहता।

जिस घर होय कुचलिया नारी, सांभ भोर हो उसकी ख्वारी—बदचलन औरतसे जल्दी घर बिगड़ जाता है।

जिस घर होवे पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीरका दलिया—दे० "जिस घर होय कुचलिया।"

जिस डालीपर बैठे उसीको काटे—जिसकी बदौलत अपनी गुज़र हो उसीका अनिष्ट करना। कृतघ्न आदमीपर क०।

जिस तरफ़ लाडू उस तरफ़ हम—जब खुशामदी आदमी जिस तरफ़ दो पैसेकी आमदनी देखते हैं उसी तरफ़ चापलूसी और लल्लो चप्पो करने पहुंच जाते हैं, तब क०।

जिस दरख़्तकी छांहमें बैठे उसीकी जड़ काटे—कृतघ्नको क०।

जिसने की शर्म, उसके फूटे कर्म—मुलाहिज़ा करनेवालोंको नुक़सान उठाना पड़ता है।

जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा—ईश्वरपर भरोसा रखनेवाले ऐसा कहते हैं। आलसी आदमी भी कहता है।

जिसने चीरा वही नीरेगा—जिसने पैदा किया वही खानेको देगा। आलसी कहता है। जब कोई अर्थ संकटमें पड़ता है, तब उसे ढाढ़स देनेके लिये क०।

जिसने दिया उसने पाया—जिसने उस जन्ममें दान दिया है वही इस जन्ममें पाता है।

जिसने न देखा हो बाघ, वह देखे बिलाई
जिसने न देखा हो ठग, वह देखे क़साई
स्पष्ट।

जिसने न देखा हो जम वह देखे जमाई—हिन्दुओंमें प्रायः जमाइयोंसे बहुत कष्ट मिलता है, इसलिये क०।

जिसने न देखी हो कन्या वह देख ले कन्याका भाई—भाई बहिनकी सूरत अक्सर मिलती है, इसलिये क०।

जिसने न पी गांजेकी कली, उस लड़केसे लड़की भली—गंजेड़ियोंका कहना है।

जिसने बेटी दी उसने सब कुछ दिया—स्पष्ट।

जिसने रंडीको चाहा उसे भी ज़वाल और जिसको रंडीने चाहा उसकी भी तबाही—स्पष्ट।

जिसने लगाई वही बुझावेगा—जिसने काम छेड़ा वही उसको पूरा करेगा।

जिसने सालिग्राम भूंजे उसे भाटा भूनते क्या देर—जो बहुत कठिन काम कर चुका है उसे साधारण काम करते क्या देर लगती है।

जिस वन सुवा न सांवरा, वहां कागा खाय कपूर—जहां कोई विद्वान नहीं होता, वहां साधारण आदमीकी ही पूजा होने लगती है।

जिस बरतनमें खाना उसीमें छेद करना—कृतघ्नको क०।

जिस बहुअड़की बहरी सास, उसका कधी न हो घर वास—स्पष्ट।

जिस मुंहसे पान खाइये, उस मुंहसे कोयले न चबाइये—जिसे अच्छा कह चुके उसकी बुराई न करनी चाहिये।

जिस राह हीं नहीं चलना उसके कोस क्यों गिनना—जो काम ही नहीं करना उसका ज़िकर क्यों करना।

जिस शहरमें फूल बिछाइये, वहां धूल न उड़ाइये—जहां इज्जत हो, वहां बदनामीका काम न करना चाहिए।

जिस हंडीमें खाय, उसीमें छेद करे—कृतघ्नको क०

जिस हंडीमें साझा नहीं वह चढ़ते ही फूटे—जिस काममें अपना स्वार्थ नहीं है, वह चाहे बने चाहे बिगड़े।

जिसे कर उसे डर—(१) जिसे अपना बनाये रखना हो उससे डरता रहे। (२) जिसे कर देना पड़े उसे डर लगा रहता है।

जिसे खानेको मिले यों, वह कमाने जाये क्यों—आलसी वा निखट्टू को क०।

जिसे ख़ुदा रक्खे, उसे कौन चक्खे—स्पष्ट।

जिसे पिया चाहे वही सोहागन, क्या सांवरी क्या गोरी—जिसपर मालिककी निगाह होती है वही ऊंचे दरजेपर पहुंच जाता है।

जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं—बेशर्म बेईमान होता है।

जिहि घर जिते बधावनो, तिहि घर तितनो सोग—जहां खुशी बहुत होती है वहां ही दुःख भी बहुत होता है।

जिहि पितु देहि सो पावहि टीका—(तुलसी) जिस राज-पुत्रको पिता तिलक दे वही राजा होता है। दे० "जिसे पिया चाहे वही सोहागन"।

जी कहीं लगता नहीं, जब जी कहीं लग जाय है—स्पष्ट।

जी कहो, जी कहलाओ—दूसरेकी ख़ातिर करो तुम्हारी भी ख़ातिर होगी।

तू मरा हाजी बगोयम मनतुरा हाजी बगो।

जीका वैरी जी—जीवका भक्षक जीव है।

जीके बदले जी—(१) जानके बदले जान लेना (२) (व्य०) जब कोई रुपया उधार लेकर एवज़में माल रख देता है, तब क०।

जी चलता है पर टट्टू नहीं चलता—बुढ़ापेमें विलासी मनुष्य कहता है।

जी जलानेसे हाथ जलाना बेहतर है—स्पष्ट।

जीजाके मालपर साली मतवाली—(ज०) झूठा दावा।

जी जाय, घी न जाय—कंजूसको क०।

जीतकी हवा भी अच्छी—स्पष्ट।

जीता सो हारा, और हारा सो मरा—(व्य०) मुकद्दमेबाजोंको क०।

जीती मक्खी नहीं निगली जाती—(१) जानबूझकर कोई विष नहीं खाता (२) जानबूझकर कोई आपत्ति नहीं उठाता। (३) जानबूझकर कोई झूठ नहीं बोलता।

जीते आसा, मुए निरासा—स्पष्ट।

जीते चाव चाव, मुए दाव दाव—जीते जी तो चाव रहता है मरनेपर गाड़नेकी फ़िक्र पड़ जाती है।

जीते जीका नाता है—जब कोई किसी आत्मीय जनकी मृत्युपर बहुत शोक करता है, तब उसे धैर्य्य देनेके लिये क०।

जीते जीका मेला है—जबतक ज़िन्दगी है तभीतक मिलना है फिर तो अकेले जाना है।

जीते जी खांव खांव, मर गये तो हाय हाय—स्पष्ट।

जीते तो हाथ काला हारे तो मुंह काला—जुआरियोंको क०।

जीते बात न पुच्छियां,मुए धड़ाधड़ पिट्टियां—(पं०) (१) कृतघ्न औलादको क०। (२) आदमीकी क़दर मरे पीछे जानी जाती है।

जीतेसे दूर मरनेसे नज़दीक—एक पैर क़ब्रमें लटकाये हैं।

जीते हैं न मरते हैं, सिसक सिसक दम भरते हैं—उ० दे०।

जीना थोड़ा आशा बहुत—स्पष्ट।

जीभ जली, न स्वाद आया—जब किसीको बहुत थोड़ी सी चीज़ खानेको दी जाय, तब क०।

जीभ बड़ी जुवाना नाम, जिसपर जीता सारा गाँव—बड़बोली स्त्रीको क०।

जीयेंगे तो भीख मांग खायंगे—आलसी आदमियों पर ताना है।

जीये न माने पित्र और मुये करें श्राद्ध—ईसाई लोग हिन्दुओंको कहते हैं। कुपात्रको भी क०।

जीव किसीका मत सता, जबलग पार बसाय—भरसक किसीको न सताना चाहिए।

जीवनके दिन सफल जो, बीतें सहित हुलास—खुशीमें ज़िन्दगी कटे यही अच्छा है।

जीव भी प्यारा पीव भी प्यारा किरिया काकी खांय—जब दोमेंसे एक काम भी करते न बने,तब क०।

जीवसे जीविका प्यारी—जानसे भी रोज़गार प्यारा होता है।

जीवे मेरा भाई, गली गली भौजाई—भाई रहेगा तो भौजाई बहुत मिल जायंगी।

जुआ बड़ा रोजगार जो इसमें हार न होवे—दे० "चोरीसा........।"

जुआ.युद्ध व्यापार, फिर फिर करे तो पावे पार—एक दफ़े हारने.या नुक़सान देनेसे निरुत्साह न होना चाहिए।

जुआरी आया जित्त, मंझे चार ज्वारी इक।
ज्वारी आया हार, मंभा इक्क ज्वारी चार—(पं०) जुआरीकी अवस्थापर क०। जीता जुआरी ऐसा फूल जाता है कि उसके सोनेके लिये चार खाटें चाहिये और हारे जुआरी चार मिल कर एक खाटमें सो सकते हैं।

जुआरीको अपना ही दांव सूझता है—स्वार्थी पर क०।

आरत कहहिं विचार न काऊ,
सूझ जुआरिहिं आपन दाऊ। (तुलसी)

जुआरी हमेशा मुफ़लिस—जुआरी सदा कंगाल रहता है।

जुएमें बैल भी हारा है—जुआ खेलनेवालेके लिये उपदेश है।

जुएमें हार मीठी होती है—जुआरी हारनेपर भी बार बार खेलता है।

अद्भुत रीत सुरतिमें पाई, मार मारतें सुख -सरसाई।
कह्यो पखानो ज्यों चित धारि, जूआमें है मीठी हार।

जुग जुग जीओ, दूध बतासा पीओ—आशीर्वाद भी है और मुंहचट्टकी बोली भी है।

जुग टूटा नर्द मरी—जबतक एका है तभीतक बल है, अलग हुए और मारे गये। चौसरमें जुग या दो गोटियां एक साथ होती हैं तो उसे कोई नहीं मार सकता।

(१) फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपड़की,
आपसके फूटे कहो कौनको भलो भयो। (गङ्ग)
(२) चाहे जो ज़िन्दगी तो न हो यारसे जुदा।
चौपड़में जुग जो टूट गया नर्द मर गई॥ (कबीर)

जुड़ती नाहीं घुरकी टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी—जब आयु पूरी हो जाती है, तब कोई दवा काम नहीं करती।

जुत जुत मरें बैलवा बैठे खांय तुरंग—(कृ०) कर्मचारी खटते हैं और अफ़सर बैठे खाते हैं। ग़रीब मेहनत करके खाता है और धनवान बैठके।

जुलाहा जाने जौ-काट?—जुलाहा क्या जाने जौ काटना।

इसपर एक कहानी है:—किसी जुलाहेपर क़र्ज़ बहुत हो गया था उसके महाजनने उससे मेहनत लेकर रुपये

वसूल करनी चाहिए। जुलाहा राज़ी होकर खेतमें जौ काटने को गया, तो वह जौ काटनेके बदले उसकी भुकी हुए बालोंको इस तरह सुलझाने लगा कि जैसे महीन सूतको सुलझाते हैं।

जुलाहेका बेगारी पठान—उल्टी या अनहोनी बात हो, तब क०। क्योंकि जुलाहा बहुत साधारण और पठान बलवान होते हैं।

जुलाहेकी जूती, सिपाहीकी जोय, घरी घरी पुरानी होय—जुलाहेकी जूती और सिपाहीकी स्त्री, दोनों काम न आनेके कारण बिगड़ जाती हैं।

ज़ुल्मकी टहनी कभी फलती नहीं, नाव काग़ज़की कभी चलती नहीं—अन्यायसे उपार्जन किया हुआ धन उसी तरह डूब जाता है, जिस तरह काग़ज़की नाव डूब जाती है।

जूंके डरसे गुदड़ी नहीं फेंकी जाती—साधारण तकलीफ़के लिये अपना काम नहीं छोड़ा जाता।

नाम धरै सपपति हित नाम, इत बचनन सों नाहीं काम।
लोक पखानो ऐसो भजे जू, ऋनिकि डर कथरी तजै।
(कुलटा लो० र० को०)

जूठा खाय मीठेके लालच—स्वार्थके लिये नीच काम भी किया जाता है।

"जूठी खाय सुमीठको, यहै बात ठिक ठाम। (उद्माकर)

जूता पहिने नरीका, क्या भरोसा करीका—नरीका=बकरीके चमड़ेका। करीका=रक्खी औरतका। घटिया दामके जूते और रखेली औरतका कोई भरोसा नहीं, न जाने कब ये धोखा दें।

जूता पहिने साईका, बड़ा भरोसा ब्याहीका—फ़रमायश देकर बनवाया हुआ जूता और विवाहिता स्त्रीका विश्वास करना ठीक है, क्योंकि ये ही काम आते हैं।

जेकर पुरखा न देखल पोय, तेका घर खुरखंदी होय—(भो०) जिसके पुरखोंने पोईका साग भी नहीं देखा, उसके घर घोड़ा बंधता है। नये बड़े आदमी पर और जिसने अपने पुरुषार्थसे धन कमाया हो उसपर क०। यह मसल, कोई कोई इस प्रकार कहता है। 'जेकरे बाप न देखल पोय, ओकरे पुत खंड़खंदी होय।'

जेकर मैया पूआ पकावे, तेकर धीया लिलके—(पू०) जिसकी मा पूआ बनाते उसीकी लड़की तरसे, जैसे मोचीकी लड़कीको जता और दर्ज़ीकी लड़कीको अच्छे अच्छे कपड़े पहिरनेको नहीं मिलते।

जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस—(पू०) जिसकी स्त्री है उसीको सुख मिलता है दूसरा ताकता रहता है।

जेकरे घुड़वां चैठिन, तेकर आँड़ दागिन—जिसका खाय उसीका नुक़सान करे। कृतघ्नको क०।

जे गरीबपै हित करैं, ते रहीम बड़ लोग, कहां सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग—(रहीम) स्पष्ट।

जेठके भरोसे पेट—निखट्टू छोटे भाईकी ओपर क०।

जेठ जिठानी देवरा, सब मतलबके मीत। मतलब बिन तो कोई भी, राखै नाहीं प्रीत—स्पष्ट।

जेठे जेठे अषाढ़ हेटे—जेठमें मौसम अच्छा रहता है पर अषाढ़में ख़राब हो जाता है।

जेठ तपत हो वर्षा गहरी, हँसें बांगरू रोवें नहरी—जेठ ज़ोरोंसे तपनेपर वर्षा ज़्यादा होती है जिससे ऊंची ज़मीनवाले खेती अच्छी होनेके कारण हंसते और नीची ज़मीनवाले खेतमें पानी जम जानेसे रोते हैं।

जे डरे भिन्न भेली, सेह परल बखरा—(म०) जिस डरसे जुदे हुए वही हिस्सेमें आया।

जेती सम्पति कृपणकी तेती तू मत जोर, बढ़त जात ज्यों ज्यों उरज त्यों त्यों होत कठोर—(बिहारी) कृपणपर क०। जितनी सम्पत्ति सूमके है उतनी तू मत इकट्ठी कर। जितना धन बढ़ता जाता है उतना ही वह और भी कृपण होता जाता है, जैसे कुच जितने बढ़ते हैं उतने ही कठोर होते जाते हैं।

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी, तिनहिं बिलोकत पातक भारी—(तुलसी) जो मित्रके दुःखमें साथ नहीं देते उनका मुंह न देखना चाहिए।

जे पांड़ेके पत्रामें, ते पंड़ियाइनके अंचरामें— (पू० ज०) जब पुरुषसे स्त्री चतुर होती है, तब क०।

जे पूत परदेशी भैले, देव पितर सबसे गैले— (पू० ज०) जो देशान्तरको चले जाते हैं उनका धर्म नष्ट हो जाता है।

जेवड़ेसे नाड़ा घिसना है—दे० "गले पड़ी ढोलकी।" गलेमें रस्सी पड़नेपर सिवा उससे गला घिसनेके और कोई उपाय नहीं। गाय भैंस आदि पालतू जानवर और स्त्रियोंपर क०।

जैसन देखे गांवकी रीत, तैसन करे लोगसे प्रीत— स्पष्ट।

जैसा अन्न वैसी बुद्धि—जैसा अन्न खाओगे वैसी बुद्धि होगी।

याहृशं भक्षयेदन्नं बुद्धिर्भवति ताहृशी।
दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते ॥

मनुष्य जिस प्रकारका अन्न खाता है उसकी उपज (बुद्धि) भी वैसी ही होती है। दीपक अंधकारको खा जाता है इसलिये कज्जल उत्पन्न करता है।

जैसा ऊंट लंबा वैसा गधा खवास—एक सी जोड़ी मिल जाय, तब क०। लम्बा आदमी अहमक़ समझा जाता है।

जैसा कन भर, वैसा मन भर—हांड़ीका एक चावल टटोलनेसे मालूम हो जाता है कि गल गया या नहीं।

जैसा करेगा, वैसा पायेगा—कर्मका फल अवश्य मिलेगा।

सुनि धनरस पत्नी प्रिय प्राण, बोली चलभावति सुख खान।
लोग उक्ति यह सब जग गावै, जैसो करै सो तैसो पावै ॥

जैसा काछ काछे, तैसा नाच नाचे—समाई मूजिब काम करे अथवा जैसा वेष हो उसीके अनुसार काम करे।

(१) ऊधो सुनी यह प्रीतकी रीत
जु काछिये काछ सुई नचिये (ठाकुर)
(२) सज्यो साज पिय हेत जौं, धरो हिये दृढ सांच।
जैसे काछिये काछकौं तैसो नचिये नाच ॥
(वासकसज्जा)

जैसा कारन, तैसा कारज—जैसा सामान रहता है उसीके अनुसार काम करना पड़ता है।

जैसो कारन होत है, तैसो कारज थाप।
कर सर धनु प्रानी हनत, कर माला हरि जाप (वृन्द)

जैसा किया, वैसा पाया—जब किसीको बुरे कामका फल मिलता है, तब क०

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करै सो तस फल चाखा (तुलसी)

जैसा जामन, वैसा दही—वीर्यका असर होताही है।

जैसा तेरा खोट रुपैया, वैसा मेरा खोखर पैसा

जैसा तेरा घूंघर वीया, तैसी हींग हमारी— जब किसी आदमीके बुरे बर्त्तावके बदले बुरा ही बर्त्ताव किया जाता है और इसलिये वह उलहना देने लगता है, तब क०।

जैसा तेरा देना लेना, वैसा मेरा गाना बजाना— ऊ० दे०।

जैसा तेरा नोन पानी, तैसा मेरा काम जानी ऊ० दे०।

जैसा दाम, वैसा काम—जैसी मज़दूरी दोगे वैसा ही काम होगा।

जैसा दुद्ध, वैसी बुद्ध—जैसी माका दूध पीओ वैसी बुद्धि होगी।

तिफ़लमें बू आये क्या मां बापके अतवार की।
दूध तो डब्बे का है, तालीम है सरकार की ॥ (अकबर)

जैसा दे वैसा पाय, पूत भतारके आगे आय— एक स्त्रीने दो रोटियोंमें विष मिलाकर किसी साधुको दिया। उसने उन रोटियोंको लेजाकर अपनी कुटीमें रख छोड़ा। दैवात् उसी स्त्रीका पति और लड़का उस स्थानपर कहींसे थके हुए आ पहुंचे और उन्होंने साधुसे पानी पीनेको मांगा। साधुने वही दोनों रोटियां उन दोनोंको खिला दीं और पानी पिला दिया।

जैसा देश, वैसा वेष—जब कोई एक देशसे जाकर दूसरे देशमें रहने लगे पर व्यवहार वहांके अनुसार न करे तो वहांके लोग उसको हंसते हैं उन्हींके शिक्षार्थ यह मसल क०। जिस देशमें रहे वहांकी रीति ग्रहण करे।

जैसा बीज, वैसा गाछ—जब बापका गुण बेटेमें भी मिले, तब क०।

उत्पत्ति बीज रूप करि जान, वाही ते रस होइ प्रमान।
कहै पखानो बुधिवर ऐसो, जैसो बीज वृच्छ गुन तैसो ॥
(स्थायीभाव)

जैसा बोवेगा, वैसा काटेगा—कर्मके अनुसार फल भोगना पड़ेगा।

जैसा मन हराममें, वैसा हरिमें होय। चला जाय.वैकुण्ठको, रोक सके ना कोय—स्पष्ट।

जैसा मान, वैसा दान—मानके अनुसार दान दिया जाता है।

जैसा मुंह, वैसा तमाचा—जैसा आदमी देखे वैसा ही व्यवहार करे। जितना बोझ उठा सके उतना ही लादे। उपयुक्त दंड देने वा मुंहतोड़ जवाब देनेपर भी क०।

जैसा राजा वैसी प्रजा—स्पष्ट।

जैसा लीकड़ा भर, वैसा ठीकरा भर—खराब काम ख़राब ही है जैसा थोड़ा किया वैसा बहुत।

जैसा सांचा, वैसा ढांचा—जैसा सांचा होता है वैसी ही चीज़ ढलकर निकलती है।

अपनी ही यह खता है, हमने तो ,खूब जांचा।
लड़के ढले हैं वैसे, जैसा बना था सांचा। (चकबस्त)

जैसा साजन पाय, तैसी सेज बिछाय—स्पष्ट।

जैसा सूई चोर, वैसा बज्जर चोर—चोरी सब ही बुरी है क्या थोड़ी क्या बहुत।

जैसा सूत तैसा फेटा, जैसा बाप तैसा बेटा—जैसेके तैसे ही होते हैं।

जैसा सूत वैसी फेंटी, जैसी मा वैसी बेटी—ऊ० दे०।

जैसा सोता वैसी धारा—ऊ० दे०।

जैसी ओढ़ी कामली, वैसा ओढ़ा खेश—संतोषीका या मर्द आदमीका कहना है।

गर उसने उढ़ाया तो लिया ओढ़ दुशाला,
कम्बल जो दिया तो वही कंधे पे है डाला।
चादर जो उढ़ाई तो वही हो गई बाला,
बंधवाई लंगोटी तो वहीं हंसके संभाला।
पोशाकमें दस्तारमें रूमालमें ,खुश हैं,
पूरे हैं वही मर्द जो,हर हालमें,खुश हैं॥ (नज़ीर)

जैसी करनी, वैसी पार उतरनी
जैसी करनी, वैसी भरनी— } कर्मानुसार भोगना पड़ता है।

चोरी कियो जो हया अंसमाल, अब पछतावति है कौं काज।
सुनो उक्ति ज्यों जगमत बरनी, जैसो तानी तैसी भरनी॥

दे० "अपनी करनी पार उतरनी।"

जैसी गईं थीं वैसी आईं, इक महरका बोरिया लाईं—(मु० ज०) कमनसीबीपर क०। उम्मेद करके जाय और कुछ न मिले।

जैसी झूंठी बधाई, वैसी फ़ुड्डी मिठाई—बदला चुकानेपर क०।

जैसी तेरी आव भगत वैसा मेरा आशिर्वाद—स्पष्ट।

जैसी तेरी तानो बानी, वैसा मेरा बुनना—दे० "जैसी करनी।"

जैसी तेरी तिलचावरी, वैसे मेरे गीत—जैसी मजूरी वैसा काम।

जैसी तेरी काफड़ कोदो वैसी मेरी हींग—दे० "जैसा तेरा घूंघर बीया।"

जैसी दाई आप छिनार, वैसी जाने सब संसार—(ज०) जो जैसा होता है वैसा ही सबको समझता है।

जैसी देखे गांवकी रीत, तैसी उठावे अपनी भीत—स्पष्ट।

जैसी देवी शीतला तैसे वाहन खर—संस्कृत-'यादृशी शीतला देवी तादृशो वाहनो खरः' का अनुवाद है। दे० "जैसा ऊंट लम्बा"

जैसी नीयत वैसी बरकत—स्पष्ट।

राजा होय, राव होय, कैधों उमराव होय,
जैसी होत नेति तैसो होत बरकति है।

जैसी फूअड़ आप छिनार, तैसी लगावे कुल व्यवहार—(ज०) दे० "जैसी दाई"

जैसी बन्दगी वैसा इनाम—दे० "जैसी तेरी आव भगत"

जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै—(गिरधर) रुख देखकर काम करनेके लिये क०।

जैसी माई, वैसी जाई—(ज०) जैसी मा वैसी बेटी।

जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते—(मु०) जैसी जीवात्मा होती है वैसे ही यमके दूत उसे लेनेके लिये आते हैं। जोड़ मिलानेपर क०। अक्सर बुरे भावपर क०।

जैसी लवली बंदरिया वैसे मनत्रां भौंड़—ऊ० दे०।

जैसी संगत करो तैसी इज्जत मिले—स्पष्ट।

जैसी संगत तैसिये इज्जत मिलि है आय;
सिरपर मखमल सोहवे पनही मखमल पाय (हन्द)

जैसे अन्नकी तैसा डकार—जब जैसे आदमीको वैसा ही संगी मिल जाय, तब क०।

जैसे उदई तैसे भान, उनको चुटिया न इनके कान—जब दोनों एकसे ही निकम्मे हों, तब क०।

जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे विदेश—जिससे पास रहनेपर भी किसी तरहकी सहायता न मिले, उसे क०। निकम्मे आदमीका घर और बाहर रहना एकसा है।

कबहुं न सेज सवार कै सीध्यो काम कलेश,
जैसे कंता घर रहे वैसे रहे बिदेश।

जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर—जब किसीको एकके सिवा दूसरा ठिकाना न हो, तब क०।

निस प्रति पिय बैठी रहै, तज्यो कहै सुख गौर।
ज्यों जहाजके कागको, सूझत और न ठौर।
(स्वाधीनपतिका। लो० र० को०)

जैसेकी सेवा करै तैसी आशा पूर—स्पष्ट।

जैसेको जैसा, परखनेको पैसा—सवालका जवाब। पैसा परखनेके ही वास्ते है।

जैसेको तैसा मिले, सुनियो राजा भील। लोहा चूहा खा गया, लड़का ले गई चील—जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये।

यह मसल इस कहानीसे निकली है :—एक आदमी कुछ लोहेके टुकड़े अपने एक मित्रको सौंपकर परदेश चला गया। जब कई वर्ष बाद वह आया, तो उसने अपनी अमानत मांगी। उसके मित्रने कहा, कि तुम्हारा लोहा सब चूहे खा गये। यह सुनकर वह चुप रह गया, पर इसका बदला लेनेका अवसर ढूंढने लगा। एक दिन उसने अपने उसी मित्रके एक छोटे लड़केको घरमें छिपा रक्खा। जब उसका मित्र लड़केको खोजता हुआ उसके पास आया और पूछा, कि तुमने लड़केको देखा है? तो वह बोला, कि हां! उसे तो चील ले गई। मित्रने कहा, कि चील लड़केको ले जाय यह असंभव है। तब उसने उत्तर दिया, कि यह कब संभव है कि लोहा चूहा खा जाय? यह सुनकर उसका मित्र बहुत लज्जित हुआ।

जैसेको तैसा—(१) जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। (२) जो जैसा होता है उसे वैसा ही दीखता है।

(१) पीय सदोष कह्यो दुखदाई, भौंह कुटिल क्योंकरी धताई।
बोली सत्य वचन जग गाई, जैसेको तैसो दरसाई।
(अधीरा लो० र० को०)

(२) जो जैसी तिहिं तैसिये, करिये नीति प्रकास।
काठ कठिन भेदै भ्रमर, मृदु अरविन्द निवास॥ (हन्द)

जैसेको तैसा, बाबूको भैंसा—जैसा आदमी देखे, वैसा सम्मान करे। राजाको भैंसा भेंट करे, जो गौसे अधिक मूल्यवान है।

जैसेको तैसा मिले, ज्यूं बामनको नाई, इसने कही आशीर्वाद, उसने आरसी काढ दिखाई—ब्राह्मणको आशीर्वाद देनेसे दक्षिणा दी जाती है और नाईको आइना दिखानेसे कुछ दिया जाता है।

जैसे देवता वैसी पूजा—स्पष्ट।

जैसे नीमनाथ, वैसे बकायननाथ—जब दोनों एकसे हों, तब क०।

जैसे पानी बह गये सेतुबंध केहि काम—समय निकल जानेपर होशियार होना किस कामका।

गते पये किं खलु सेतुबन्धः।

जैसे पीड़ित कीजिये, ऊख तऊ रस देत—सज्जन सताये जानेपर भी भलाई ही करते हैं।

जैसे बक सोहत नहीं, हंसमंडली मांहि—पंडितोंकी मंडलीमें मूर्खका बैठना भी शोभा नहीं देता।

सभामध्ये न शोभंते हंसमध्ये बको यथा। (चाणक्य)

जैसे माने दूध सब, सुरा अहीरी पास—संगतका फल है। अहीरोंके पास यदि सुरा भी रहे तो लोग उसे दूध ही समझते हैं, क्योंकि उसका पेशा दूध बेचनेका ही है।

जैसे मारकंडे वैसे कंडेमार—जहां दोनों एक ही से हों, वहां क०।

जैसे मियां काठ वैसी सनकी दाढ़ी—ठीक जोड़ मिले, तब क०।

जैसे मुर्देपर सौ मन मट्टी वैसी हज़ार मन—क्योंकि उसे कुछ बोझ नहीं जान पड़ता।

जैसेमें तैसा मिले मिले नीचमें नीच। पानीमें पानी मिले, मिले कीचमें कीच—स्पष्ट।

जैसे सांपनाथ, वैसे नागनाथ—जब दो आदमी एक से हों, तब क०। दोनों नामका अर्थ एक है।

जैसे सांप नाथा वैसे नाग नाथा—जब दोनों काम करनेकी क्रिया एक हो, तब क०।

जैसे हरगुन गाये, तैसे गाल बजाये—जिसके नीचे चार आदमी काम करते हैं और वह कामकी देख रेख न रखकर भले बुरे सबको एक दृष्टिसे देखता है, तब क०। गाल बजाना सिर्फ़ शिवकी पूजामें होता है।

जैसे हसन, वैसे हुसेन—(मु०) जब दो आदमी एक से माने जाते हैं, तब क०। क्योंकि हसन और हुसेन दोनों एक पिताके पुत्र होनेसे दोनों एक से पूजे जाते हैं।

जैसेमें तैसे, आप जैसेके तैसे—जब कोई हर एक तरहके आदमियोंमें मिलकर भी अपने रंगमें क़ायम रहता है, तब क०।

जैसोंको तैसा मिले, तब पूरा संग्राम—बराबरीके जब मिल जाते हैं, तब क०।

जैसो घर है तैसो फरिका, जैसो बाप तैसो लड़िका—स्पष्ट।

जो अति आतप.व्याकुल होई, तरु छाया सुख जाने सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

जो अपने काम न आय, सो चूल्हे भाड़में जाय—मतलबी आदमी और भंझटसे बचनेवाले लोग ऐसा कहते हैं।

जो आके न जाय वह बुढ़ापा देखा, और जो जाके न आय वह जवानी देखी—क्योंकि बुढ़ापा आकर जाता नहीं और जवानी जाकर लौटती नहीं।

रहती है कब बहारे जवानी, तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥
जो जाकर न आये, वह जवानी देखी।
जो आकर न जावे, वह बुढ़ापा देखा॥ (दाग़)

जो ईश्वर किरपा करें तो खड़े हिलावें कान अरहड़के खेतमें—ईश्वर जब देता है तब अनायास देता है।

इसपर एक कहानी है—एक दिन राजाका ख़ज़ाना गधोंपर लदकर जा रहा था। संयोगवश उनमेंसे एक गधा अरहरके खेतमें घुस गया और चरने लगा। दूसरे दिन खेतके मालिकने आकर देखा, कि एक गधा खेतमें खड़ा कान हिला रहा है। पास आकर देखा तो उसपर रुपये लदे थे। उसने सब रुपये तो लेकर अपने घरमें रख लिये और गधेको मार भगाया। इसपर उसने उक्त मसल कही।

जो कबीर काशीमें मरि हैं, रामहिं कौन निहोरा—(पू०) हिन्दुओंका ऐसा विश्वास है, कि काशीमें मरनेसे मुक्ति होती है, उसमें ईश्वरका कोई एहसान नहीं। जब कोई आदमी किसीसे कुछ कामके लिये सहायता मांगने जाय और वह "इसमें क्या है तुम हीं कर लोगे" ऐसा कहकर टाल दे तब यह मसल इस अभिप्रायसे कही जाती है कि "अगर मुझसे ही हो जाता तो तुमारे पास क्यों आता।"

जो करनी समुझे प्रभु मोरी, नहिं निस्तार कलप शत कोरी—ईश्वरके आगे अपनी अधीनता प्रगट करना है।

जो करे लिखनेमें ग़लती, उसकी थैली होगी हलकी—(व्य०) रोकड़ लिखनेमें ग़लती न करनी चाहिये।

जो काम हिकमतसे निकलता है वह हुकूमतसे नहीं निकलता—स्पष्ट।

जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय है?—जो दूसरोंको सताता है उसे शान्ति नहीं मिलती।

जो औरको कल देवेगा, वह भी सदा कल पावेगा,
कल देवेगा कल पावेगा, कलपायेगा कलपायेगा।"
(नज़ीर)
काहु कलपाइ है सो कैसे कल पाइ है (घन आनन्द)

जो कोई खाय चनेका टूँक, पानी पीवे सौ सौ घूँट—चने खानेसे प्यास बहुत लगती है।

जो कोई खाय निवाहके ज्वार, मूल बने वह मूढ़ गँवार—जो जन्म भर ज्वार खाता रहता है वह सदा गँवार बना रहता है क्योंकि ज्वार बहुत मोटा अनाज होता है।

जो कोसत बैरी मरें, मन चितये धन होय, जलमें घी निकसन लगे, तो रूखी खाय न कोय—सब काम यदि अनायास हो जांय तो उसके लिये कोई परिश्रम न करे।

जो .खुशामद करे ख़ल्क उससे सदा राज़ी है। सच तो यह है कि .खुशामदसे .खुदा राज़ी है—(नज़ीर) .खुशामद बड़ी चीज़ है और तो क्या .खुशामदसे ईश्वर भी राज़ी हो जाता है।

जो गँवार पिंगल पढ़ै, तीन वस्तुके हीन। बोली चाली बैठकी लीन विधाता छीन—जब गंवार आदमी व्यवहारकुशल नहीं होता, तब क०।

जोगमें भोगकी आस—बेजोड़ कामपर क०।

अनमिलती जोई करत ताहीको उपहास,
जैसे जोगी जोगमें करत भोगकी आस। (छन्द)

जो गरजते हैं सो बरसते नहीं—डींग हांकनेवालों-से काम नहीं होता।

तुम कहते तो हो कि सुमुलई क़ौम हैं हम,
लेकिन मालूम है तुम्हारा दम खम।
सच है यह मसल ज़रा नहीं शक इसमें,
जो अब्र गरजते हैं बरसते हैं कम। (अंजुर)

जो गिरा खाईके अन्दर सो पड़ा फेरीमें—जो झंझटमें पड़ता है वह मुश्किलसे निकलता है।

जोगीका लड़का खेलेगा तो सांपसे—संपेरेका लड़का सांपसे ही खेलता है।

जोगी किसके मीत और पातुर किसकी नार—ये दोनों अपने नहीं होते।

जोगी किसके मीत कलन्दर केहिके साथ—हिन्दू साधुओंको जोगी और मुसलमान फ़क़ीरोंको कलंदर क०। ये दोनों किसीके साथी नहीं होते।

(१) मुसाफ़िरसे कोई भी करता है प्रीत,
मसल है कि जोगी हुए किसके मीत?" (मीरहसन)

(२) तजै मोह ममता घर लाज,
फिरै सुधारि बारि हित काज।
तामें निबहै नाहिन रीत।
जोगी कहो कवनके मो। (पृष्ट नायक)
(लो० २० कौ०)

जोगीकी सी फेरी—मुहब्बती आदमी जब कम आने जाने लगता है, तब क०।

जोगीको बैल बला—जोगीको बैल दिया जाय तो उसके लिये वह बला हो जाता है।

जोगी-जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ?—बिना गुण सीखे केवल भेष बनानेसे काम नहीं चलता।

जोगी जोगी लड़ें खप्परोंको हानि—(१) क्योंकि उनके पास और है ही क्या। नङ्गोंकी लड़ाईमें विशेष हानि नहीं होती। बड़ोंकी लड़ाईमें ग़रीबकी हानि होती है।

खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु। (सं०)

जोगी था सो उठ गया आसन रही भभूत—जोगी=आत्मा। आदमीके मरनेके पीछे उसकी कीर्त्ति रह जाती है।

जोगी बढ़े तो तूँबा बोवै—जिस चीज़का अभाव होता है, लोग उसीको पैदा करनेकी चेष्टा करते हैं।

लखि घन उपवन पति किरसान,
काटि करै तहं खेती धान।
नारि सोच कह्यो सांच सुहोवै,
जोगी बढ़ै तो तूंबा बोवै। (अनुशयना)
(लो० १० कौ०)

यह देखकर कि जो घना जङ्गल था उसी किरसानका पति खेती करनेवाला काटकर वहां धानकी खेती करता है। फिर सोचकर कहने लगी कि सच बात है जहां जोगी लोग बहुत बढ़ जाते हैं वहां लोग तूंबाको ही बोते हैं। यहां पहला वाक्य तो सूचन कराता है कि घना जङ्गल कटनेसे संकेत स्थान नष्ट हो गया इसलिये उसे चिन्ता हुई कि अब नायकसे कहां समागम होगा। दूसरा वाक्य धैर्यावलम्बनके लिये है।

जोगी मारे छार हाथ—ग़रीबके मारनेसे कोई लाभ नहीं।

जो गुड़ खाय सो कान छिदाय—कान छिदवाते समय लड़कोंको क०।

जो गुड़ दीन्हें ही मरे, क्यों विष दीजे ताहि—दे० "गुड़ दिये मरे"

जो चढ़ेगा, सो गिरेगा—जो काम करेगा तो कभी हानि भी होगी। जब कोई नुक़सान देता है तो उसे हिम्मत बंधानेके लिये क०। जानकारसे ही भूल होती है अनाड़ीसे नहीं। साधारणतः कहा जाता

है कि जो चढ़ेगा वही गिरेगा, जो लिखेगा वही भूलेगा, जो कुश्ती लड़ेगा वही पछाड़ा जायगा।

गिरते हैं सह सवार ही मैदाने जङ्गमें,
वह तिफ़्ल क्या गिरेगा जो घुटनों के बल चलें।

जो चप चपकर आंख झपावे, वह क्या रणमें सेल चलावे—आलसी आदमियोंपर क०।

जो चोरी करता है, वह मोरी भी रखता है—जब बुरा काम करनेवाला अपने बचावके लिये झूठ बोलता है, तब क०।

जो जल पाढ़ लगत ही बरसे, नाज नियार बिन कोई न तरसे—(कृ०) असाढ़के प्रारंभमें पानी बरसनेसे फसल अच्छी होती है।

जो जाय कलकत्ते वह खे खाय अलबत्ते—खे=(१) विष्ठ। (२) नावका खेना। (१) जो कलकत्ते जाता था उसे गू अवश्य खाना पड़ता था, क्योंकि पहिले जब कलकत्तेमें पानीकी कल नहीं थी तब तमाम शहरका मैला गंगामें बहाया जाता था और वही पानी सबको पीना पड़ता था इसलिये यह मसल बनी है (२) कलकत्ते जाता है तो कमा खाता है क्योंकि यह बड़े व्यापारकी जगह है।

जो टका देगा, उसका लड़का खेलेगा—इसपर कहानी है:—कोई मनुष्य परदेश जाता था, उसे सबने फरमाइश दी और एक आदमीने दो पैसे (टका) देकर कहा, 'इसका झुनझुना ले आना।' उसने कहा "तेरा ही लड़का खेलेगा"।

जो टट्टू जीतें संग्राम, तो क्यों खरचैं तुरकीके दाम—जब कोई छोटे कर्मचारीके ज़रिये अफ़सरका काम कराया जाय और वह न कर सके, तब क०।

जोड़ जोड़ मर जायंगे, माल जमाई खायंगे, जमाई भी न होगा तो खालसे लग जायंगे—(पं०) कंजूस आदमीपर क०। महाराज रणजीतसिंहके समयमें जब कोई बेवारिस मरता था, तब उसका धन खालसा सरकारमें जप्त हो जाता था।

भी जो बख़ील कुहम ज़र जोड़के मरेगा,
'या खायेगा जमाई या खालसे लगेगा'।
तेरा तो है वही जो राहे ख़ुदामें देगा,
खाता खिलाता हंसता तू भी सदा रहेगा।

दिलको ख़ुशीके खातिर चख़ डाल माल धनको
गर मर्द है तो चाशिक़ कौड़ी न रख कफ़नको।"

(नज़ीर)

जो तिल हदसे ज़्यादा हुआ तो मस्सा हुआ—हदसे ज़्यादा धर्म करनेसे भी अधर्म होता है। चेहरेपर तिलका होना अच्छा माना जाता है और मस्सा होना बुरा है।

जोतिसी ग्रह पीड़ा कहे, वैद बतावें रोग—जिसका जो काम है वही करता है।

जो तू ही राजा हुआ अपना सुख मत ठान, कंगाड़ और फ़क़ीरके दुख सुखपर कर ध्यान—स्पष्ट।

जो तैरेगा, सो डूबेगा—जो कुछ काम करेगा उसीसे भूल भी होगी।

जो तोको कांटा बुवे, ताहि बोइ तू फूल। तोहि फूलको फूल हैं, वाको हैं तिरशूल—बुराई करनेवालेके साथ भलाई करनेके लिये क०।

जो तोलों कम, सो मोलों कम—जो चीज़ तौलमें कम होती है उसका दाम भी कम होता है।

जो दिन जात अनन्दसों जीवनको फल सोय—देखो, 'जीवनके दिन।'

जो दूसरेके लिये कुआं खोदे उसके लिये खाई तैय्यार है—स्पष्ट। औरोंका बुरा करनेवालोंका स्वयं बुरा होता है।

श्रवन सुन्यो नयनन लख्यो, यामें संशय नाहिं।
कूप जो खोदे आनहीं, परे आपु तेहि माहिं। (हन्द)

जो देखा, सो पेखा—दोनों एक ही बात है।

जो धन जाता देखिये, तो आधा दीजे बांट—नष्ट होती हुई संपत्तिमेंसे ख़र्च करके बचा लेना चाहिए।

बनि आवे निरधार करि, तिय सौतिन सों बाट।
जो धन जाते जानिये, सो धन दीजे बांट॥ गिधा।

(लो० र० को०)

जो धरतीपर आया, उसे धरतीने खाया—जो पृथ्वीपर जन्म लेता है वह पृथ्वीपर ही मरता है, इसीसे इसका नाम मृत्युलोक है।

सुख पाके मर गया, कोई दुःख पाके मर गया।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया। (नज़ीर)

जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे—जो मेहनत करेगा वही कमावेगा और जो आलस्य करेगा वह घरका भी खोवैठेगा।

जो नहिं करहिं रामगुन गाना, जीह सो दादुर जीह समाना—(तुलसी) स्पष्ट।

जो निकले सो भाग धनीके—(व्यं०) जो कुछ मिले सो मालिकका भाग अर्थात् हमें उससे क्या ? जो नौकर तनलग नहीं होता वही यह मसल कहता है।

जो परनाला सोई मोरी—दोनों एकसे ही हैं। जब दोनों चीज़ें खराब हों, तब क०।

जैसे लिबरल वैसे टोरी, जो परनाला सोई मोरी।
दोनोंका है पंथ अघोरी, होली है भई होली है।
(बालमुकुन्द गुप्त)

जो पहिले मारे सो मीर—पहिले मारता है सो जीतता है।

जो पारससे कंचन उपजे सो पारस है कांच, जो पारससे पारस उपजे सो पारस है सांच—महात्मा वही है जो दूसरेको अपने समान कर ले।

जो पियाज़ काटेगा सो आप रोवेगा—जो दूसरेको कष्ट देगा उसका फल उसीको भोगना पड़ेगा। प्याज़में भांफ बहुत होती है, आंख तक पहुंचनेसे आंखोंसे पानी निकल आता है।

जो पूत दरबारी भये, देव पितर सबसे गये—जो सरकारी नौकरी करते हैं वे देव पित्रोंके कामके नहीं रहते अर्थात् अङ्गरेज़ोंकी सोहबतसे उन्हें अपने धर्मपर निष्ठा नहीं रहती ; ऐसा ही कट्टर हिन्दुओंका ख्याल है।

जो पैसेकी हंड़िया लेता हैं, सो भी ठोक बजाकर लेता है—(व्यं०) जांचकर माल लेनेपर क०।

जो फल चक्खा नहीं वही मीठा है—जो चीज़ नहीं मिलती उसीपर जी चलता है।

जो फलेगा सो झड़ेगा, जो बलेगा सो बुतेगा—दुनियांके स्वभाव तथा ज़िन्दगीके उतार चढ़ाव पर क०।

धराका सभाव यही तुलसी
जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना। (तुलसी)

जो बरसेगी स्वांत बिसांत, चले न चरखा बजे न तांत—स्वांत नक्षत्रमें वर्षा होनेसे रुईकी खेती नष्ट हो जाती है—"जो बरसेगी स्वांती, रहंटा चले न तांती" ऐसा भी क०।

जे बहुत क़रीब सो ज्यादा रक़ीब—घर हीके लोग दुश्मन होते हैं।

जो बामनकी जीभपर सो बामनकी पोथीमें—जब ब्राह्मण लोग अपने मतलबकी जैसी चाहें वैसी व्यवस्था शास्त्र देखकर देते हैं, तब क०।

जो बामनकी पोथीमें सो यारोंकी ज़बानपर—ऊ० दे०।

जो बिंध गया सो मोती, रह गया सो सीप—जो काम पूरा हो जाय वही काम है जो अधूरा रह जाय सो कुछ नहीं।

जो बिन सहारे खेले जूआ, आज न मूआ कल मूआ—स्पष्ट। जुआरियोंपर क०।

जो बिल्ली पहिरे दस्ताना तो चूहेको पकड़े कौन—जब किसी काम करनेवालेके काममें ऐसा अड़ंगा लगे कि उसका काम रुक जाय, तब क०।

जो वैरी हों बहुतसे अरु तू होवे एक। मीठा बनकर निकल जा यही जतन है नेक—स्पष्ट।

जो बोले, सो कुंडा खोले—जो पुकारनेसे बोलता है वही कुंडा खोलता है। जब घरके मर्द बाहर चले जाते हैं तब स्त्रियां भीतरसे कुंडा बंद कर लेती हैं, जिसमें कोई चोर न घस आये, जब मर्द बाहरसे आता है तो पुकारता है, जो पहिले उसका जवाब देती है वही प्रायः कुंडा खोलने जाती है, जो सोई या मटियाये पड़ी रहती हैं, उन्हें नहीं जाना पड़ता। जो काम बनानेकी सलाह दे उसीसे वह काम करनेको कहा जाय, तब क०।

जो बोले सो घीको जाय—ऊ० दे०। जो सलाह दे उसी के सिर पड़े।

इस मसलपर कई कहानियां हैं। (१) एक दिन चार मनुष्योंने मिलकर साझेमें खिचड़ी बनाई। जब वे खाने बैठे तो एकने कहा कि बिना घीके खिचड़ीमें स्वाद नहीं होता। इसपर तीनों बोल उठे, कि आप ही घी ले आइये तो डाल दें। यह सुन उसने उपरोक्त मसल

कही। (२) चार मूर्खोंने एक साथ मिलकर रसोई बनानेकी ठानी। चारोंमेंसे घी कौन लावेगा, इस बातपर आपसमें झगड़ा होने लगा। उन्होंने यह निश्चय किया, कि जो पहले बोलेगा उसीको घीके लिये जाना पड़ेगा। जब वे चारों मौन साधे बैठे थे, एक पहरेवालेने उनसे पूछा, "तुम लोग कौन हो, कहांसे आये हो और क्या करते हो?" अपने प्रश्नका उत्तर न पाकर सिपाहीने उन लोगोंको गिरफ़ार करके चालान कर दिया। अदालतमें मजिस्ट्रेटके पूछनेपर भी जब उन्होंने कुछ जवाब न दिया, तो उन्हें कोड़े लगानेका हुक्म हुआ। उनमेंसे एक, जो कोड़ोंकी मार न सह सका, ज़ोरसे रोने लगा। तब वह तीनों बोल उठे कि तुम्हींको घीके लिये जाना पड़ेगा। जब यह हाल हाकिमको मालूम हुआ तो उन्होंने उनको मूर्ख और आलसी जानकर छोड़ दिया।

जो भादोंमें बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय—(कु०) भादोंमें वर्षा होनेसे अकाल पड़नेका डर नहीं रहता।

जो मासे सिया चाहे सो डायन—सबसे अधिक स्नेह माताका ही होता है। जब कोई उचितसे अधिक चाहना दिखावे तो समझना चाहिए कि कुछ दालमें काला है।

जो मेरे सो तेरे, काहे दांत निपोड़े—जब कोई किसीका ऐब देखकर हंसे और वही ऐब उसमें या उसके घरवालोंमें भी हो, तब क०।

इसपर एक कहानी है। एक दिन कोई भारतीय रमणी खुले स्थानमें नंगी होकर स्नान कर रही थी। एक यूरोपियन उसे देख देखकर बहुत ख़ुश होता था। इसपर उस स्त्रीने उक्त मसल कही, जिसका अभिप्राय यह है, कि जो चीज़ तू मेरेमें देखता है वही तेरी मा बहनोंके पास भी है, तब क्यों वृथा दांत निपोड़ता है।

जो मेरे हैं सो राजाके नहीं—अभिमानी मनुष्यपर क०।

जो मैं ऐसा जानती, प्रीत किये दुख होय। नगर ढिंढोरा फेरती, प्रीत न कीजो कोय—स्पष्ट।

ज़ोरकी लाठी सिरपर—ज़बर्दस्तकी लाठी सिर ही पर पड़ती है।

जो रक्षक, वही भक्षक—जब रखवाला ही चोरी करे या विश्वासी ही विश्वासघात करे, तब क०।

रक्षको यत्र भक्षकः। (सं०)

ज़ोर थोड़ा गुस्सा बहुत मार खानेकी निशानी—स्पष्ट।

ज़ोर न ज़ुल्म अक़्लकी कोताही—मूर्खपर कही जाती है जो बिना ज़ोर ज़ुल्मके भी अधिक कष्टदायक होता है।

ज़ोर बादशाह और दांव वज़ीर—कुश्ती लड़नेवाले कहते हैं। यद्यपि ज़ोर बादशाह है तथापि बिना दांव वज़ीरके उसका काम अच्छी तरह नहीं चल सकता।

जोरूका घघला बेचकर तंदूरी रोटी खाई है—(मु०) स्वार्थी मनुष्यको क०।

जोरूका मरना और जूतीका टूटना बराबर है—क्योंकि पुरानी हो जानेसे तुरत नई मिल जाती है। ढाई घर खत्रियोंमें यह मसल बहुत कही जाती है; क्योंकि उनका कोई लड़का जब भाजू होता है तो तुरत उसका दूसरा ब्याह हो जाता है।

जोरूका मरना घरका ख़राबा—स्त्री मरनेसे घर बिगड़ जाता है।

जोरू किसकी, जो पास रक्खे उसकी—स्त्रीको जो साथ रखता है उसीकी होती है।

जोरू ख़समकी लड़ाई क्या?—घड़ीमें लड़ाई घड़ीमें मेल होता ही रहता है।

जोरू चिकनी मियां मज़ूर—जब किसी ग़रीबकी स्त्री शौक़ीन हो, तब क०।

जोरू टटोले गठरी और मां टटोले अंतड़ी—जोरू यही देखती रहती है कि मेरे पतिके पास कितना धन है और मा यही देखती रहती है कि मेरे लड़केका पेट भरा है या नहीं। तात्पर्य्य यह है कि जोरू धन चाहती है और मा अपने लड़केकी तन्दुरुस्ती।

जोरू न जांता अल्लामियांसे नाता—छड़े आदमीको कही जाती है जिसका कोई न हो।

जोवन गयो तो भल भयो सिरसे गई बलाय। जने जनेको रूठनो हमपर सह्यो न जाय—वृद्ध वेश्याओंका कहना है।

जोवन था जब रूप था, गाहक थे सब कोय। जोवन रतन गंवायके, बात न पूंछे कोय—स्पष्ट।

जो घर देख ताप मुझे आवे, सो ही घर मुझे ब्याहन आवे—जिस कामसे नफ़रत हो वही काम यदि करना पड़े, तब क०।

जो सावनमें बरखा होवे, खोज कालका बिल्कुल खोवे—(कृ०) श्रावणके महीनेमें बरसा हो तो अकाल पड़नेका डर नहीं रहता।

जो सिर उठाकर चलेगा सो ठोकर खायेगा—जब कोई आदमी घमण्डसे बिना समझे कोई काम करता है और उससे हानि होती है, तब क०।

जो सिर धरि महिमा सही, लहियत राजा राउ। प्रगटत जड़ता आपनी, मुकुट सु पहिरत पाउ—(बिहारी) जो गुणियोंका निरादर करते हैं वे अपनी मूर्खता प्रकाश करते हैं।

जो सुख छज्जूके चौबारेमें, सो बलख न बुखारेमें—जो आराम अपने घरमें है वह दूसरी जगह नहीं है। दे० "जननी जन्मभूमिश्च।"

जो सुतधन सिखाता है, वह मूतनेको रास्ता रख लेता है—दे० "जो चोरी करता।"

जो हरदी जरदी तजे, तजे खटाई आम। तो असील सीलहिं तजे, औगुन तजे गुलाम—नीच जब अपनी नीचता नहीं छोड़ता, तब क०।

जो हांड़ीमें होगा, सो रकाबीमें आयेगा—जो मनमें होगा वही मुंहसे निकलेगा।

जो हाथी अंकुश तजै, औ घोड़ा तजै लगाम। जो असील सीलहिं तजै, तो औगुन तजै गुलाम दे० "जो हरदी जरदी।"

ज़ौक़में शौक़ दस्तूरीमें लड़का—खुशीमें खुशी और मुफ़्तमें लड़का। जब शौक़के लिये कोई काम और उसमें लाभ हो जाय, तब क०।

जौको गये सतुआनीको आये—(पू०) हक़से ज़्यादा मांगनेवाले पर क०।

जौ लौं तेल प्रदीपमें, तौलौं जोति प्रकाश—स्पष्ट

जौहरको जौहरी पहचाने—जिसका काम उसीसे होता है।

जौ हैं खेत, लला हैं पेट, मूड़नके दिन देखो आय स्पष्ट। काम होनेके पहिले ही जो उसके नतीजेका शुमार बांधता है, उसे क०।

ज्ञान बढ़े सोचसे, रोग बढ़े भोगसे—विचारते रहनेसे ज्ञान और भोग भोगते रहनेसे रोग बढ़ता ही जाता है।

ज़्यादा जी कर क्या आक़बतके बोरिये समेटोगे! (मु०) उस बूढ़े मनुष्यको कहते हैं जिसको जीनेकी हविस ज़्यादह हो।

ज्यों केराके पातमें, पात पातमें पात। त्यों ज्ञानीकी बातमें बात बातमें बात—बातकी करामातपर क०।

ज्यों ज्यों कंचन ताइये, त्यों त्यों निर्मल होय—सज्जनपर ज्यों ज्यों दुःख पड़ता जाता है त्यों त्यों उसके गुण प्रकाश होते जाते हैं।

ज्यों ज्यों बाय बहै पुरवाई, त्यों त्यों अति दुख घायल पाई—पुरवैया हवा चलनेसे घायल आदमीके घावोंमें दर्द होने लगता है इसलिये यह मसल बनी है।

ज्यों ज्यों भीजे कामरी, त्यों त्यों भारी होय—(व्य०) जब किसी आदमीपर क़र्ज़ बहुत हो और वह उसका ब्याज़ तक न दे और क़र्ज़ बढ़ता ही जाय, तब क०।

विरह बिथा बाढ़ी बहुत, नयन नीर तैं जोर।
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों गरुइ होइ॥(लो०र०को०)
अति हठ मतकर हठ बढ़े बात न करिहै कोय,
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय। (वृन्द)

ज्यों ज्यों मुरगी मोटी हो त्यों त्यों दुम सुकड़े—जब किसी कंजसके पास धन बढ़ता जाय और साथ ही उसकी कृपणता भी बढ़ती जाय, तब क०।

ज्यों ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों त्यों मारा सारा गांव—अत्याचारी शासनकर्त्तापर क०।

ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध—ऐबीके ऐबोंको दिखानेसे उसे बुरा लगता है।
हितहूकी कहिये न तिहिं जो नर होय अबोध,
ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध॥ (वृन्द)

ज्यों भुजंग गन संग तऊ, चन्दन विप न धरन्त—जो सच्चे साधु हैं वे असाधुओंकी संगतमें रहकर भी नहीं बिगड़ते।

ज्यों सपने सिर काटे कोई, बिन जागे दुख दूर न होई—मनुष्य जबतक मोह-जालमें फंसा रहता है, तबतक दुःख ही भोगता रहता है और जब ज्ञान प्राप्त होता है, तब वह सुखी हो जाता है।

झ

झगड़ा झूंठा कब्ज़ा सच्चा—अधिकार ही सच्चा है क्योंकि क़ानूनसे लड़नेपर भी लोग हार जाते हैं।

झगड़ेकी तीन जड़, ज़न ज़मीन ज़र—दे० "ज़र ज़मीन"

झटपटकी घानी, आधा तेल आधा पानी—जल्दीका काम अच्छा नहीं होता।

झट मंगनी पट व्याह—तुरत फुरत काम करनेपर क०।

झड़बेरीका कांटा—जो ऐसा चिमटे कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो, उसे क०।

झड़बेरीके जङ्गलमें बिल्ली शेर—छोटी जगहमें छोटे ही बड़े होते हैं

झाँसी गलेकी फाँसी, दतिया गलेका हार, ललितपुर ना छाड़िये, जबलग मिले उधार—स्पष्ट है। ललितपुरमें रुपयेका देन लेन बहुत होता है।

झाड़ बिछाई कामली, और रहे निमाने सोय—फ़क़ीरोंकी उक्ति है।

झाड़ भी बनियेका बैरी है—बनियेसे सब बुरा मानते हैं।

झाड़ों फूकों रक्षा करौं, दई ले जाय तो मैं क्या करौं—होनहार ही बलवान है उसके सामने पुरुषार्थ-की कुछ नहीं चलती।

झिड़की तो मुद्दतसे मसावात हो गई, गाली कभी न दी थी सो अब बात हो गई। बाक़ी है मार खाना सो आजकलके बीच, सुन लोगे उसे तुम भी के औक़ात हो गई—जब दिनोंदिन आदमीका मान घटता जाता है, तब क०।

यों रफ़्ता: रफ़्ता: हमक़ौमें बेघारद हुये,
पहिले थे आप आपसे तुम तुमसे तू हुये।

झुके कोई उससे झुक जाय, रुके कोई उससे रुक जाय—स्पष्ट।

होय मगुरर ताऐ दूनो मगुरी कीजै,
लघु ह्वै चलै तासों लघुता निबाहिये। (बोधा)

झूंठ कहना और जूठा खाना बराबर है—स्पष्ट।

झूंठके पाँव नहीं होते—झूठा आदमी बहसमें नहीं ठहरता।

झूंठ तितोही बोलिये ज्यों आटेमें नोन—स्पष्ट।

झूंठ न बोले तो पेट अफ़र जाय—झूठेको क०।

झूंठ बोलना और खे खाना बराबर है—स्पष्ट। खे=विष्ठा।

झूंठ झूंठ ही है सच सच ही है—स्पष्ट।

सामान्या सुबिया सम बैठं, पंतर बीच गजल मधि जौ मै।
कहे पखानो युधिवर पाच, झूंठ सो झूंठ साच सो साच।
(लो० र० को०)

झूंठ बोलनेमें सरफ़ा क्या?—झूठ बोलनेमें किफ़ायत क्या? झूठेको क०।

बोली लिधा लखो सुकुमार, झूं है सेर भारको भार।
सखियन डंडिके गाथा कहा, कहिबे झूंठ तो सरफ़ो कहा।

झूंठ साँचका फ़र्क़ यों जैसे रज औ भोर—झूठ और सचमें रात दिनका अन्तर है।

झूंठा जूठनसे बुरा जो सोनेका होय—स्पष्ट।

झूंठा मरे न शहर पाक होय—झूठेसे शहर गंदा होता है।

झूंठी तो होती नहीं कभी भी साँची बात, जैसे टहनी ढाकमें लगे न चौथा पात—स्पष्ट।

झूंठी बात बना ले, पानीमें आग लगा ले—झूठ बोलना ऐसा है जैसे पानीमें आग लगाना।

झूंठेका मुँह काला सच्चेका बोलबाला—जब झूठा हारता है और सच्चा जीतता है, तब क०।

झूंठेकी कुछ पत नहीं सज्जन झूंठ न बोल। लाखपतीका झूंठसे दो कौड़ी हो मोल—झूठका विश्वास नहीं होता।

झूंठकी नाव मझधारमें डूबे—स्पष्ट।

जोवन था जब रूप था, गाहक थे सब कोय।
जोवन रतन गंवायके, बात न पूंछे कोय—
स्पष्ट।

जो वर देख ताप मुझे आवे, सो ही वर मुझे ब्याहन आवे—जिस कामसे नफ़रत हो वही काम यदि करना पड़े, तब क०।

जो सावनमें बरखा होवे, खोज कालका बिल्कुल खोवे—(कृ०) श्रावणके महीनेमें बरसा हो तो अकाल पड़नेका डर नहीं रहता।

जो सिर उठाकर चलेगा सो ठोकर खायेगा—जब कोई आदमी घमण्डसे बिना समझे कोई काम करता है और उससे हानि होती है, तब क०।

जो सिर धरि महिमा सही, लहियत राजा राउ।
प्रगटत जड़ता आपनी, मुकुट सु पहिरत पाउ—
(बिहारी) जो गुणियोंका निरादर करते हैं वे अपनी मूर्खता प्रकाश करते हैं।

जो सुख छज्जूके चौबारेमें, सो बलख न बुखारेमें
जो आराम अपने घरमें है वह दूसरी जगह नहीं है। दे० "जननी जन्मभूमिश्च।"

जो सुल्थन सिलाता है, वह मूतनेको रास्ता रख लेता है—दे० "जो चोरी करता।"

जो हरदी जरदी तजे, तजे खटाई आम। तो भसील सीलहिं तजे, औगुन तजे गुलाम—
नीच जब अपनी नीचता नहीं छोड़ता, तब क०।

जो हांड़ीमें होगा, सो रक़ाबीमें आयेगा—जो मनमें होगा वही मुंहसे निकलेगा।

जो हाथी अंकुश तजे, औ घोड़ा तजै लगाम।
जो असील सोलहिं तजै, तो ओगुन तजै गुलाम
दे० "जो हरदी जरदी।"

ज़ौक़में शौक़ दस्तूरीमें लड़का—खुशीमें खुशी और मुफ़्तमें लड़का। जब शौक़के लिये कोई काम और उसमें लाभ हो जाय, तब क०।

जौको गये सतुआनीको आये—(पू०) हकसे ज़्यादा मांगनेवाले पर क०।

जौ लौं तेल प्रदीपमें, तौलौं जोति प्रकाश—
स्पष्ट

जौहरको जौहरी पहचाने—जिसका काम उसीसे होता है।

जौ हैं खेत, लला हैं पेट, मूड़नके दिन देखो आय
स्पष्ट। काम होनेके पहिले ही जो उसके नतीजेका शुमार बांधता है, उसे क०।

ज्ञान बढ़े सोचसे, रोग बढ़े भोगसे—विचारते रहनेसे ज्ञान और भोग भोगते रहनेसे रोग बढ़ता ही जाता है।

ज़्यादा जी कर क्या आक़बतके बोरिये समेटोगे!
(मु०) उस बूढ़े मनुष्यको कहते हैं जिसको जीनेकी हविस ज़्यादह हो।

ज्यों केराके पातमें, पात पातमें पात। त्यों ज्ञानीकी बातमें बात बातमें बात—बातकी करामातपर क०।

ज्यों ज्यों कंचन ताइये, त्यों त्यों निर्मल होय—
सज्जनपर ज्यों ज्यों दुःख पड़ता जाता है त्यों त्यों उसके गुण प्रकाश होते जाते हैं।

ज्यों ज्यों बाय बहै पुरवाई, त्यों त्यों अति दुख घायल पाई—पुरवैया हवा चलनेसे घायल आदमीके घावोंमें दर्द होने लगता है इसलिये यह मसल बनी है।

ज्यों ज्यों भीजे कामरी, त्यों त्यों भारी होय—
(ब्य०) जब किसी आदमीपर क़र्ज़ बहुत हो और वह उसका ब्याज़ तक न दे और क़र्ज़ बढ़ता ही जाय, तब क०।

विरह बिथा बाढ़ी बहुत, नयन नीर ते जोइ।
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों गरुर होइ॥ (लो०र०की०)
पति हठ मनकर हठ बढे बात न धरि है कोय,
ज्यों ज्यों भीजै कामरो, त्यों त्यों भारी होय। (वृन्द)

ज्यों ज्यों मुरगी मोटी हो त्यों त्यों दुम सुकड़े—
जब किसी कंजसके पास धन बढ़ता जाय और साथ ही उसकी कृपणता भी बढ़ती जाय, तब क०।

ज्यों ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों त्यों मारा सारा गांव—अत्याचारी शासनकर्त्तापर क०।

ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध—
ऐबीके ऐबोंको दिखानेसे उसे बुरा लगता है।
हितहू की कहिये न तिहिं जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध॥ (वृन्द)

ज्यों भुजंग गन संग तऊ, चन्दन विष न धरन्त— जो सच्चे साधु हैं वे असाधुओंकी संगतमें रहकर भी नहीं बिगड़ते।

ज्यों सपने सिर काटे कोई, बिन जागे दुख दूर न होई—मनुष्य जबतक मोह-जालमें फंसा रहता है, तबतक दुःख ही भोगता रहता है और जब ज्ञान प्राप्त होता है, तब वह सुखी हो जाता है।

झ

झगड़ा झूठा कब्जा सच्चा—अधिकार ही सच्चा है क्योंकि क़ानूनसे लड़नेपर भी लोग हार जाते हैं।

झगड़ेकी तीन जड़, ज़न ज़मीन ज़र—दे० "ज़र ज़मीन"

झटपटकी घानी, आधा तेल आधा पानी—जल्दीका काम अच्छा नहीं होता।

झट मंगनी पट ब्याह—तुरत फुरत काम करनेपर क०।

झड़बेरीका कांटा—जो ऐसा चिमटे कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो, उसे क०।

झड़बेरीके जङ्गलमें बिल्ली शेर—छोटी जगहमें छोटे ही बड़े होते हैं।

झाँसी गलेकी फाँसी, दतिया गलेका हार, ललितपुर ना छाड़िये, जबलग मिले उधार—स्पष्ट है। ललितपुरमें रुपयेका देन लेन बहुत होता है।

झाड़ बिछाई कामली, और रहे निमाने सोय—फ़क़ीरोंकी उक्ति है।

झाड़ भी बनियेका बैरी है—बनियेसे सब बुरा मानते हैं।

झाड़ौं फूकौं रक्षा करौं, दई लै जाय तो मैं क्या करौं—होनहार ही बलवान है उसके सामने पुरुषार्थकी कुछ नहीं चलती।

झिड़की तो मुद्दतसे मसावात हो गई, गाली कभी न दी थी सो अब बात हो गई। बाक़ी है मार खाना सो आजकलके बीच, सुन लोगे उसे तुम भी के औक़ात हो गई—जब दिनोंदिन आदमीका मान घटता जाता है, तब क०।

यों रफ़्त: रफ़्त: हमक़ों बेबाक हुये,
पहिले थे आप आपसे तुम तुमसे तू हुये।

झुके कोई उससे झुक जाय, रुके कोई उससे रुक जाय—स्पष्ट।

होय मगरूर तापै दूनो मगरूरी कीजै,
लघु ह्वै चलै तासों लघुता निभाइये। (बोधा)

झूंठ कहना और जूठा खाना बराबर है—स्पष्ट।

झूंठके पाँव नहीं होते—झूठा आदमी बहसमें नहीं ठहरता।

झूंठ तितोही बोलिये ज्यों आटेमें नोन—स्पष्ट।

झूंठ न बोले तो पेट अफ़र जाय—झूठेको क०।

झूंठ बोलना और खे खाना बराबर है—स्पष्ट। खे=विष्ठा।

झूंठ झूंठ ही है सच सच ही है—स्पष्ट।

सामान्या सुखिया सम कैसे, अंतर कोच कलश मणि जैसे।
कहै पखानो बुधिवर पांच, झूंठ सो झूठ सांच सो सांच।
(लो० र० को०)

झूंठ बोलनेमें सरफ़ा क्या?—झूठबोलनेमें किफ़ायत क्या? झूठेको क०।

बोली तिया लखो सुकुमार, ह्वै है ऐर गारको भार।
सखियन हंसिके गाथा कहा, कहिये झूंठ सो सरफ़ो कहा।

झूंठ साँचका फ़र्क़ यों जैसे रज औ भोर—झूठ और सचमें रात दिनका अन्तर है।

झूंठा जूठनसे बुरा जो सोनेका होय—स्पष्ट।

झूंठा मरे न शहर पाक होय—झूठेसे शहर गंदा होता है।

झूंठी तो होती नहीं कभी भी साँची बात, जैसे टहनी ढाकमें लगे न चौथा पात—स्पष्ट।

झूंठी बात बना ले, पानीमें आग लगा ले—झूठ बोलना ऐसा है जैसे पानीमें आग लगाना।

झूंठेका मुँह काला सच्चेका बोलबाला—जब झूठा हारता है और सच्चा जीतता है, तब क०।

झूंठेकी कुछ पत नहीं सज्जन झूंठ न बोल। लाखपतीका झूंठसे दो कौड़ी हो मोल—झूठका विश्वास नहीं होता।

झूंठकी नाव मझधारमें डूबे—स्पष्ट।

भूठेकी क्या दोस्ती, लंगड़ेका क्या साथ; बहरेसे क्या बोलना, गूंगेसे क्या बात—चारों ही बेकार हैं।

भूठेके आगे सच्चा रो मरे—झूठेके आगे सच्चा हार मान लेता है।

भूठेको घरतक पहुंचाना चाहिये—झूठेसे तब तक बहस करे जबतक वह सच न बोले।

भूठे घरको घर कहे सच्चे घरको गोर, हम चाले घर आपने लोग मचावें शोर—संसारकी अनित्यतापर क०।

भूठे जग पतियाय—(१) जब सच्चेकी बात नहीं मानी जाती, तब क०। (२) भूठे (मिथ्या) संसारको लोग पतियाते हैं अर्थात् सच्चा करके मानते हैं।

भूठे हाथसे कुत्ता भी नहीं मारता—कंजूसको क०।

भूठोंका बादशाह—बहुत झूठेको क०।

झोंपड़ीमें रहे, महलोंका ख्वाब देखे—असम्भव कल्पना या उच्चाकांक्षापर क०।

ट

टँगी रहे कि टके बिकाय—(व्यं०) दाम आनेपर ही बिकेगी, नहीं धरी रहेगी।

पिय सनेह सों बहुतिय पागी, परतें मान करन बहुलागी।
कहियी लोग वलि ज्यों गाइ, टंगी रहैके टकि बिकाय।
टंगी रहै या तो टांककर (सी कर) तब बिकै।

टंटा बिषकी बेल है—स्पष्ट।

टका ब्याज बाबाजी खोवै, रांडै खोवै हांसी। आलस नींद किसानै खोवै, चोरै खोवै खांसी—स्पष्ट।

टकामें टका और ढकामें ढका—जब पैसेवालोंके पास पैसा आता है और दुःखियोंको दुःख और नुक़सान पहुंचता है, तब क०।

टका सा जवाब दे दिया—साफ़ मुकर जानेपर क०।

टका हर्त्ता, टका कर्त्ता, टका मोक्ष विधायका, टका सर्वत्र पूज्यन्ते, बिन टका टक टकायते—(सं०) दुनियामें रुपयेसे ही सब काम निकलता है।

टका करै कुलहल टका मिरदङ्ग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै॥
टका माइ अरु बाप टका भाइनको भैया।
टका सास अरु ससुर टका सिर लाड़ लड़ैया॥
एक टके बिन टुक टुका होत रहत नित रात दिन।
बैताल कहै बिक्रम सुनो धिक जीवन इक टके बिन॥

टका हो जिसके हाथमें, वह बड़ा है ज़ातमें—धनवानोंका सम्मान सर्वत्र होता है।

टकेका सारा खेल है—दे० "टका हर्त्ता टका कर्त्ता"।

लाभके लिये अधिक खर्च करना। (२) सस्ती चीज़ ख़रीदकर जब उसकी मरम्मतमें असलसे भी ज़्यादा खर्च हो जाता है, तब क०।

टकेकी मुर्गी छः टके महसूल—जब असलसे अधिक व्यय होता है, तब क०।

टकेकी लौंग बनियाइन खाय, कहो घर रहे कि जाय?—कंजूस बनियोंपर ताना है। जिस घरकी मालकिन ज़्यादा खर्च करती है उसका घर बिगड़ जाता है।

टकेके वास्ते मस्जिद ढाना—लोभके वश अनुचित काम करनेपर क०।

टके तीतर गैलापर, पांच रुपया भैलापर—(भो०) जो चीज़ ग़रीबोंके लिये टकेकी है, वही चीज़ अमीरोंके लिये रुपयेकी है।

टट्टू खोल निखट्टू आये—जब निखट्टू आदमी रोब जमाता है, तब क०।

टट्टीकी ओट शिकार—छिपकर बुरा काम करनेपर क०

(१) है दिलकी दांव घातमें मिज़गांसे चश्मयार।
करती है क़स्द टट्टीकी ओझल शिकारका। (ज़ौक़)
(२) खेलते फिरते हैं सैदाने जहांमें सब शिकार।
आड़में टट्टीके लाखों और हज़ारों बरमला। (हाली)

टट्टूको कोड़ा और ताज़ीको इशारा—मूर्ख दंडसे मानता है और समझदार इशारोंसे ही समझ जाता है।

टट्टू जो मारै संग्राम, खर्चें क्यों ताज़ीके दाम—दे० "जो टट्टू"

का डर नहीं है। जब किसीके मनमें कोई ख़ास डर समा जाय जिसके सबब वह कोई काम न कर सके, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है:—एक बूढ़ा सिपाही अपने दुबले-पतले टट्टूपर सवार हो कहीं जा रहा था। शामको वह एक जङ्गलमें जहां शेर आदि हिंसक जानवर रहते थे, एक बुढ़ियाकी झोंपड़ीमें ठहर गया, और पूछने लगा—"यहां किसी बातका डर तो नहीं है?" बुढ़िया बोली—"हुज़ूर! डर तो किसी बातका नहीं है, है तो टपकेका डर है।" झोंपड़ीके पीछे एक शेर खड़ा खड़ा इस बातको सुन रहा था, उसने समझा "टपका" कोई मुझसे भी ज़बर्दस्त जानवर है जिसके सामने मेरे डरकी कुछ परवाह ही नहीं की गई। संयोगवश आधी रातको पानी बरसा जिससे सिपाहीका घोड़ा खूंटेसे छूट गया। सिपाही अंधेरेमें घोड़ा खोजने गया तो उसके हाथ बाघ पड़ गया। वह उसे ही टट्टू समझ पोषकर झोंपड़ीमें ले आया और खूंटेसे बांध दिया। शेर भी "टपका" समझ उससे कुछ न बोला। सुबह होते ही यह बात तमाम फैल गई जिससे बड़े बड़े आदमी इस आश्चर्य दृश्यको देखने आये। राजाने उस बूढ़े सिपाही-की प्रशंसा की और मुंह मांगा इनाम देकर उसको फ़ौजका कप्तान बना दिया।

टपका मिज़ग़ांसे लहू होके जिगर आख़िरकार।
एक मुद्दतसे यही टपकेका डर था हमको। (ज़ौक़)

टहल करो फ़क़ीरकी देवे तुम्हें असीस, रैन दिना राज़ी रहो जुगमें बिस्वाबीस—स्पष्ट।

टहल करो मां-बापकी, हो सम्पूरन आश। यही टहलसूं जो फिरे, नरक उन्हींका बास—स्पष्ट।

टहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी—मुफ़्तख़ोरों को क०।

टहलियेको टहल सोहे, बहलियेको बहल सोहे—जिसका काम उसीको शोभा देता है।

टांका पाना मिल गया—जब झगड़ा तै हो जाता है, तब क०।

टांकोका घाव सहे तब ईश्वर—तकलीफ़ उठानेके बाद लाभ होता है। जो लोग तकलीफ़के डरसे अपना नफ़ा या प्रतिष्ठाको छोड़ देते हैं, उनको शिक्षार्थ कही जाती है।

टांकी बज रही है—मकान जल्दी तैय्यार हो रहा है

टांग उठे ना, चढ़ुल चाहे हाथी—जब कोई अपनी शक्तिसे बाहर काम करना चाहता है, तब क०।

टांगकी जगह लङ्कड़ेकी लाठी—जब किसी उपयोगी पदार्थके नष्ट हो जानेपर उसके बदले जैसे बने वैसे दूसरेके द्वारा काम चलाया जाये, तब क०।

टांगके नीचेसे निकाल दिया—जब किसीको अपने क़ाबूमें कर लिया जाता है, तब क०।

टांग पकड़कर लाये, और पूंछ पकड़कर बहा दिया—(व्यं०) जब कोई रोज़गारी माल लाते ही उसका निकास कर देता है, तब क०।

टांटेसे नाटा भला, जो देवे तुरत जवाब। वह टांटा किस कामका, जो बरसों करे ख़राब—(व्यं०) टंटा करनेवालेसे नट जानेवाला अच्छा है क्योंकि वह बरसों झगड़ा डाले रहता है।

टांय टांय फ़िस्स—जब काममें हुल्लड़ बहुत हो और काम कुछ न हो, तब क०।

टाट, कामला, दोलड़ा, तीनों जात गुलाम। जित चाहे तित बैठकर, तुरत करो विश्राम—(ग्रा०) तीनों चीज़ें बड़े कामकी और टिकाऊ होती हैं।

टाट कामले घरमां घाले, बाहर बतावे शाल दुशाले—झूठी शेख़ी मारनेवालोंपर क०।

टाटका लंगोटा नवाबसे यारी—(च०) छोटा होकर बड़ोंकी मुसाहिबी करे, तब क०।

टाटकी अंगिया मूंजकी तनी, देख मेरे देवरा मैं कैसी बनी—(ज०) जब कोई औरत भद्दी पोशाक पहिनकर उसे दिखाती फिरती है, तब उसको नीचा दिखानेके अभिप्रायसे क०।

टाटकी अंगिया, मूंजकी बखिया—ऊ० दे०।

टाटपर पंचके सब बराबर, क्या अमीर क्या ग़रीब—जातिमें छोटा बड़ा कोई नहीं, सब बराबर हैं।

टायर, टट्टू, गज, गऊ, पूत, नीत, धन, माल। कोई संग न जात है, जब ले जीउ निकाल—मरते समय कुछ भी साथ नहीं जाता।

टायर भला न लांगड़ा, रूख भला ना झांगड़ा—लंगड़ा घोड़ा और कांटेदार पेड़ बुरे होते हैं।

टाल न भूखेको कभी, जो दे तुझे खुदा। आधीमेंसे पास जो, उसे बांटकर खा—स्पष्ट।

टाल वता उसको न तू, जिससे किया क़रार। चाहे वैरी होय वह, चाहे तेरा यार—वायदा करके किसीसे टालमटोल न करना चाहिये।

टालमटोला मत करे, किये वचन भुगताय। जो नर वचनोंसे गिरे, वह पत देत गवांय—(व्य०) वायदा ख़िलाफ़ीसे विश्वास घट जाता है।

टालीमें बहाली और चिट्टेमें मुंह फिट्टा—(व्य०) थोड़ा देकर टाल देनेपर क०। टाली=अठन्नी चिट्टा=रुपया।

टिक टिक घोड़ा खेलना—जो लड़के पढ़ते लिखते नहीं बेकार मारे मारे फिरते हैं, उन्हें क०।

'टिक टिक' समझे 'आ आ' समझे, कहे सुनेसे रहे खड़ा। कहें कबीर सुनो भाई साधो, अस मानससे बैल भला—मूर्ख और निकम्मे मनुष्यको क०।

टिकुली सेन्दुर गैल तो खाने भी बज्जर पड़ब?—(पू० ज०) शृङ्गारकी सामग्री गई तो क्या पेटभर अन्न भी नहीं मिलेगा।

टिड्डीका आना कालकी निशानी—(कृ०) टिड्डियोंके उड़नेसे अकाल पड़नेकी संभावना होती है।

टीम टामकी पगड़ी बांधी, वह भी सरकी जोरूका। नेक पाकका चौका दीना, गोवर गाये-गोरूका—मुसलमानोंका हिन्दुओंके प्रति ताना है। गोबरका चौका लगा कर पवित्र होना ऐसा है जैसे जोरूके दहेज़मेंसे कपड़ा लेकर बांकी पगड़ी बांधना। तात्पर्य्य यह है कि बिना आत्मशुद्धिके पवित्रता नहीं आती।

टुक जीया तो फिर क्या?—(१) करना और न करना बराबर है। (२) तलवारके नीचे दम लेना। जब कोई कठिन काम करनेके लिये हिम्मत करके जाय और हाथ लगाते ही छोड़ दे, तब क०।

टुक टुक करके मन भर खावे, तनक-बेगमा नाम बतावे—(च०) नाम तो सुकुमार बेगम है पर थोड़ा करके मनभर खा जाती है।

टुकड़ा तोड़ जवाब देना—(१) साफ़ मुकर (२) थोड़ेमें जवाब देना। (३) ऐसा जवाब देना कि फिर सवाल न हो।

टुकड़े खाये दिन बहलाये, कपड़े फाटे घरको आये—जब कोई ऐसा काम करे जिसमें केवल पेटभर खानेको ही मिले और कुछ लाभ न हो, तब क०।

टुकड़े टुकड़े काम चले तो मेहनत कौन करे—आलसी और मुफ़्तख़ोरको क०।

टुकड़े दे दे बछड़ा पाला, सींग लगे तब मारन चाला—कृतघ्नको क०।

टूट चांप नहिं जुरहिं रिसाने—(तुलसी) जब किसीसे कोई काम बिगड़ जाय और फ़िर उसपर क्रोध करता ही जाय, तब क०। तात्पर्य्य यह है कि जो बिगड़ना था सो तो बिगड़ गया अब क्रोध करनेसे नहीं सुधर सकता। श्रीरामचन्द्रजीने परशुरामजीसे कहा था।

टूटत ही धनु भये विवाहू—(तुलसी) जिस काम या चीज़के अभावसे कोई काम अटका रहे और फिर उसके मिलते ही पूराकर दिया जाय, तब क०।

टूट न रख रे बालके, सबसे मिलकर चाल। टूटा ढोवर देत हैं, गांव गलीमें डाल—(उप०) सबसे मिलकर चलो किसीसे बिगाड़ मत करो, जो टूट (बिगाड़) करता है उसे लोग ऐसे त्याग देते हैं जैसे टूटी हांड़ी गलीमें फेंक दी जाती है।

टूटले तेली, तो कमरमें अधेली—बिगड़े तेलीकी कमरमें अधेली ही रहती है। जब आदमीका दिन ख़राब आता है, तब उसकी पूँजी सब निकल जाती है।

टूटीका क्या जोड़ना? गांठ पड़े और ना रहे—टूटी चीज़ कभी जुड़ती नहीं, गाँठ पड़ जाती है पर टिकती नहीं। जब दो मित्रोंका आपसमें आंतरिक बिगाड़ हो जाय उस समय कोई मेल करनेकी चेष्टा करे, तब क०।

टूटीकी क्या व[illegible] —मौतकी दवा नहीं।

टूटीकी बूटी [illegible]—जब जीनेकी कोई आशा न [illegible]

[illegible]ग ५ [illegible] साथ"

करने जाय जिसे उससे कहीं अच्छे मनुष्य भी न कर सकते हों।

टूटी दाढ़ बुढ़ापा आया, टूटी खाट दरिद्दर छाया दाढ़ टूटनेसे बुढ़ापेका और खाट टूटनेसे दरिद्रका आगमन समझना चाहिये।

टूटी बाँह गले पड़ी—बाँह जब टूट जाती है तब उसे रस्सी या पट्टीके सहारे गलेमें लटका लेते हैं। जब कोई घरका आदमी या रिश्तेदार बिगड़ रहे और उससे किसी तरह छुटकारा भी न हो, तब क०।

टूटी है तो किसीसे जुड़ती नहीं, और जुड़ी है तो कोई तोड़ सकता नहीं—बहुत बीमार आदमीको सान्त्वना देनेके लिये क०।

टूटे टांग कि होय निबेड़ा— किसी कष्टसे छुटकारा पानेके लिये क०।

किसी मनुष्यके पैरमें दर्द होनेपर वह अस्पताल गया। वहां उसके पैरपर बहुत तेज़ तेज़ दवाइयां लगाई गईं जिससे उसका दर्द और भी बढ़ गया। जब डाक्टर साहबने उससे दर्दका हाल पूछा, तब उसने उपरोक्त मसल कही।

टूम फापड़े जिस घर पावें, एक छोड़ दस बैयर आवें—टम या टूंम=गहना जैसे टूंम छल्ला। बैयर या बैयर=स्त्री जैसे बैयरबानी। दोनों बातें ठेठ हिन्दी के प्रसि[illegible]द्ध हैं। अर्थ स्पष्ट है।

टूम बिना बैयर है तैसी, बिन पानीकी खेती जैसी स्पष्ट। टम और बैयरके लिये ऊ० दे०।

टेंट आंखमें मुंह खुरदीला, कहे पिया मोरा छैल छबीला—स्पष्ट

टेंट, बरबा, कालके मीत, खायें किसान और गावें गीत—(कृ०) दुर्भिक्षमें जङ्गली फल ही खाकर किसान ख़ुश रहते हैं।

टेक उन्हींकी राखे साईं, गरब कपट नहिं जिनके माहीं—स्पष्ट।

टेढ़ जानि शंका सब काहू, बक्र चन्द्रमा ग्रसहिं न राहू—(तुलसी) टेढ़ेसे सब डरते हैं; यहांतक कि टेढ़े चन्द्रमाको राहु भी नहीं ग्रसता। यह वचन श्री रामचन्द्रजीने परशुरामसे कहा है, जब वह लक्ष्मण की कटूक्तियोंका उत्तर न देकर उनसे विवाद करने लगे थे। जब कोई कडूए स्वभाववालेसे तो डरके मारे न बोले और ग़रीबको दबावे, तब क०।

बांके नर तें डरत है, बन्द भीक सब लोय।
नमत दुतीया चन्द कों, पूरनचन्द न कोय॥ (छन्द)

टेढ़ी खीर है—मुश्किल काम है। जब कोई मनुष्य ऐसा काम करने जाय, जिसके करने लायक़ वह न समझा जाय, तब कहते हैं कि यह काम करना टेढ़ी खीर है अर्थात् तुम्हारे लिये बहुत मुश्किल है।

इसपर एक कहानी यों है—किसी जन्मके अन्धे फ़क़ीरसे एक मनुष्यने कहा, 'सूरदासजी! खीर खाओगे?' उसने जवाब दिया, 'बाबा! खीर कैसी होती है?' उत्तर मिला, 'सुफ़ेद रंगकी।' फ़क़ीरने पूछा, 'सुफ़ेद रंग कैसा होता है?' उत्तर मिला, 'जैसा बगला।' फ़क़ीरने पूछा, 'बगला कैसा होता है?' इसपर उस मनुष्यने अपना हाथ टेढ़ा करके दिखाया कि जिसकी ऐसी गर्दन होती है। उस अन्धेने उसके टेढ़े हाथको टटोलके कहा, 'नहीं बाबा! मैं ऐसी खीर नहीं खाऊंगा, यह तो मेरे गलेमें ही फंस जावेगी।'

टेर टेरके रोवे, अपनी लाज खोवे—(व्य०, अपने घाटेको किसीसे न कहे; जो सबसे अपने नुक़सानको कहा करता है उसकी साख जाती रहती है।

टोटा कर दे मुहनू काला, टोटे वाल जगतदा साला—(पं०व्य०) घाटा होनेसे मुंह काला होता है, क्योंकि उसका दिवाला निकल जाता है और दिवालिया सबका दबैल होता है, क्योंकि उसे बहुतोंका देना रहता है जिसलिये वह हिक़ारतकी निगाहसे देखा जाता है।

टोटा, टामक, टोटरू, छाने रहें न मूल। यूं परघट हों जगत मां, ज्यूं लश्करकी धूल—(मा०) घाटा, ढोल और फ़ाख़्ता (पिंडकी) यह छिपाये नहीं छिपते अपनेको आप ही प्रगट कर देते हैं जैसे लश्करकी धूल।

टोटा टाला ना टले, जब लग मिटे न लेख। साध कहैं रे बालके, लाख यतन कर देख—स्पष्ट

टोटे मारा बंजिया, धर जोगी दा भेष। हांडे भिक्षा मांगदा, घर घर देश विदेश—(पं०) स्पष्ट। जो लोग देनेके डरसे साधु हो जाते हैं, उनपर क०।

ही होते हैं। जब किसी कुरूप स्त्रीको कुरूप पति मिले, तब क०। अक्सर कुरूप वेश्याओंपर क०।

डायनको बच्चा सौंपना—किसीको जोखिममें डालना।

डायनको भी दामाद प्यारा—अपनी लड़कीके कारण।

डायन खाय तो मुंह लाल, न खाय तो मुंह लाल-क्योंकि उसका मुंह ही लाल होता है। बदनाम मनुष्यपर क०। चाहे बुराकाम करे या न करे बुराई उसीको मिलती है।

डायन बेटा बेटी दे कि ले-जब कोई बुरे आदमीसे भलाईकी आशा करता है, तब क०।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है—(ज०) दुष्टजन भी अपने पड़ौसियोंका लिहाज़ रखते हैं। जब कोई किसी अपने हीको खाता है, तब क०।

डायन भी अपने बच्चेको नहीं खाती—अपने बच्चे सभीको प्यारे होते हैं।

तो माया बैलोक्य समाय, हौं प्रभु तुम दासनकी दास।
लीक पखानों मनमें लाय, डाकिन हू निज सुत नहिं खाय।

डालका चूका बन्दर और बातका चूका आदमी फिर नहीं संभलता—जब कोई आदमी मौक़ेपर चूक जाय और उससे हानि उठावे, तब क०।

डालते देर नहीं सिरपर कोतवाल—जब कोई क़सूर करते ही पकड़ा जाय, तब क०।

डाबर डूबे जग तिरे, जग डूबे डाबर तिरे—(कृ०) जब डाबर बरसातके कारण डूब जाता है, तब बहुत अन्न पैदा होता है और संसार सुखी हो जाता है और जब संसारमें सूखा पड़ता है तब उस नीची ज़मीनमें अन्न प्रचुर रूपसे होता है।

डिगै न शंभु सरासन कैसे, कामी वचन सती-मन जैसे—(तुलसी) जब कोई चीज़ अडिग हो जाय अर्थात् हटाये न हटे, तब क०।

डील डौल गुंबज, आवाज़ दर फ़िस्स—जो देखनेमें ख़ूब मोटा ताज़ा, पर आवाज़ बहुत धीमी हो, उसे अथवा जिसका भरम बहुत और करतूत बहुत ही सामान्य हो, उसको क०।

मोगि अब साय तीज मरि जाय बाप बाको हैत नहिं
दमरी भी काढ़ देत खिस्स,-मसनद-बिछाय बैठे हुक्का
गुड़गाय भाके डौलदार गुंबज आवाज़दार फ़िस्स।

डुग डुग बाजे बहुत नीकी लागे, नौआ नेग मांगे उठा बैठी लागे—(पू० ज०) जब नाई डुगडुगी बजाता है तो सुननेमें बहुत अच्छी लगती है, पर वह जब अपना नेग मांगता है तब बगलें झांकते हैं। जो मज़ा लूटनेमें मुस्तद पर ख़र्च करनेसे दूर भागता है, उसपर क०।

डूबतेको तिनकेका सहारा—डूबता आदमी तिनकेको भी पकड़ लेता है। जब किसी विपद्ग्रस्तको कुछ भी सहारा मिलता है, तब क०।

उड़ गया बादे ख़िज़ांसे आशियां,
मुझको तिनकेका सहारा चाहिए। (दाग़)

डूबा वंश कबीरका, जो उपजा पूत कमाल—जो मनुष्य अपने पूर्वजोंकी चाल या धर्मको छोड़ देता है, उसपर क०।

इसका निकास इन बातोंसे है। कबीरने अपने पुत्र कमालको लड़कपनमें ही उपदेश दिया था कि सब मनुष्योंको अपना भाई और सब स्त्रियोंको मा, बहिन और लड़कीके समान समझना चाहिए। जब कमाल बालिग़ हुआ तो पिताने उसे विवाह करनेके लिये कहा। कमाल बोला, संसारमें मुझे मा बहिन और बेटी छोड़कर और कोई चौथी स्त्री नहीं दीखती जिससे मैं ब्याह करूं। इसलिये उसने ब्याह ही नहीं किया और कबीरका वंश लोप हो गया। (२) कमाल कबीरके वचनोंका बहुत खंडन किया करते थे इसलिये कबीरने क्रोधित होकर यह बात कही थी। कहैं कबीर दो नावें चढ़िये, एक बूड़े तो एकै रहिये। कहैं कमाल दो नाव न चढ़िये, फटे जांघ कि बूड़ै मरिये।

डूबो कंत भरोसे तेरे—(ज०) स्पष्ट। जब किसीके भरोसेपर हानि होती है, तब क०।

सो हित हौं तजि दई कुल रीति।
तुम्ह सुधिहू न लई कछु प्रीति॥
लोग उतरि ज्यों सो गति मेरी।
उबरो कंत भरोसो तेरो॥ (लो० र० कौ०)

डूबे कहां उतराय चटगांव हीमें—(स्पष्ट)

डूबेगा भाड़का भाड़, रात समयने देसै भाड़-

(ग्रा० या०। रातको भाड़ न देना चाहिए।

डेढ़ ईंटकी मस्जिद जुदी ही बनाते—(मु०) जो अपने ही मनकी करे वा सबसे निराली चाल चले, उसे क० ।

डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते हैं—ऊ० दे० ।

डेढ़ पहोली रमतिला मिरज़ापुरकी हाट—जब कोई आदमी थोड़ा सा पदार्थ पाकर उसके लिये बड़े बड़े बन्धन बांधता है, तब क० ।

डेढ़ पाव आटा पुलपर रसोई—दे० "छटांक घृत"

डेढ़ पेड़ बकायन मियां बाग़ तले—दे० "डेढ़ पहोली"

डोडो आई बाल थुतराये—गन्दी वा बुरे भेषवाली-को क० ।

डोम डोली पाठक प्यादा—डोम डोलीमें और पुरोहित पैदल। समाजकी उलटी रीतपर क० । जबकिसी मूर्ख मालिकको नौकर ज्ञानी मिले, तब भी क० ।

हंस बंस बकतंस मधि यह अचरज अभिराम,
गोपी तो हाथी चढे बन वाहन सुन्दर श्याम।

डोमनीका पूत चपनी बजाय, अपनी जात आप ही जताय—जो जिसका ज्ञातीय स्वभाव है, वह नहीं छूटता ।

डोम, बनियां, पोस्ती, तीनों बेईमान—इन तीनोंका विश्वास न करना चाहिए ।

डोली आई डोली आई, मेरे मन चाव । डोली-मेंसे निकल पड़ा, मोंकड़ा बिलाव—(ज०) जब बहू सयानी और भदेसड़ आती है, तब क० ।

डोली न कहार, बीबी भई हैं तैय्यार—(पू० ज०) जो बिना बुलाये जानेको तैय्यार हो, उसे क० ।

डौल डालकर शामिल होना—ज़रा सी चीज़ देकर साझी होना।

ढ

ढंढावाला जाड़ा टाला—(ग्रा०) लकड़ जलानेसे जाड़ा भाग जाता है। उपाय करनेसे काम सिद्ध होता हैं।

ढटींगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा—बेफिक-रोंको क० ।

ढपोल संख—जो कोई मुंहसे तो बहुत लम्बी चौड़ी हांके, पर करे कुछ नहीं उसे क० ।

इसपर एक कहानी है:—किसी मनुष्यको बहुत आराधना करनेपर एक संख मिला। उसका यही गुण था, कि जो कुछ उससे मांगा जाता था वही मिलता था। किसी धूर्तको इस बातकी खबर लगी। उसने एक शंख ऐसा बनवाया, कि जो बात उसके सामने कही जाय उसीकी प्रतिध्वनि उसमेंसे निकलती थी। जब कोई कहता कि "लाखो सौ रुपये।" शंख कहता, 'लो दो सौ रुपये।' वह धूर्त उस मनुष्यके पास अपना शंख ले गया और बोला कि अपने शंखसे हमारा शंख बदल लो। उसने कहा, कि मेरे शंखमें यह गुण है कि इससे जो कुछ मांगा जाय वही मिलता है। तुम्हारे शंखमें क्या गुण है ? धूर्तने जवाब दिया कि मेरे शंखका नाम "ढपोल शंख" है और इससे जितना मांगा जाता है उसका दूना यह देता है। उस सीधे सादे आदमीने उससे वह शंख बदल लिया। जब उससे कुछ काम लिया और उसने शंखसे मांगा तो शंखने उससे दूना देनेको कहा। पर वहां देनेको क्या धरा था, खाली बोली थी। इसलिये वह पछताकर रह गया। जो मनुष्य लालचवश एकको छोड़ कर दोके लिये दौड़ता है उसका एक भी चला जाता है।

ढलती फिरती छांह—मनुष्यकी अवस्थाके परि-वर्तन होनेपर क० ।

ढाई अक्षर प्रेमके पढ़े सो पण्डित होय—स्पष्ट ।

ढाई ईंटकी मस्जिद बनाते हैं—जो अपने ही मनका काम करे दूसरेकी न माने, उसे क० ।

ढाई चावलकी खिचड़ी अलग ही पकाते हैं—ऊ० दे० ।

ढाकके तीन पात—सदा एक ही हालतमें रहनेपर क० । निम्नस्थ कर्मचारी जिनकी तनख्वाह कभी नहीं बढ़ती उनपर क० । ढाक वृक्षमें पतझड़ बहुत होता है और इसमें पत्ते भी कम रहते हैं।

ढाक तलेकी फूहड़, महुए तलेकी सुघड़—(ज०) दोनों बराबर ही हैं क्योंकि ढाकमें छांह नहीं मिलती है और महुएके तले खाने योग्य पदार्थ नहीं मिलते।

ढाकेके बंगाल, कुजेके कंगाल—(पू०) जिस जगह कोई चीज़ बहुतायतसे पैदा हो और यहींके आद-मीको न मिले, तब क० । कूजा=सराही, मज्भर ।

ढाल तलवार सिरहाने, और चूतड़ बन्दीखाने--(पू०) डरपोकको क०।

ढाल बांधू तलवार बांधू खींचके बांधू फेंटा बीच बज़ारमें डाका मारूं तो बापका बेटा--खरी कहनेवाले दृढ़ मनुष्यका कहना है जो कहे वही करे।

ढालमें शेर—जब कोई असंभव बात हो जाती है, तब क०।

ढूंढ़ लाओ बता देंगे—उड़नझाईं बताना।

ढेंड्स और कद्दू, लानत बा हर दू-दोनोंको लानत है।

ढोर मरे न कौवा खाय—झूठी आशा रखनेवाले-को क०.

ढोलके भीतर पोल—बहुत बकनेवालोंके भीतर पोल रहती है। (व्यं०) जिनका ऊपरी आडम्बर बहुत रहता है वह भीतरसे खाली रहते हैं।

ढोल, गवांर, शूद्र, पशु, नारी। सकल ताड़नाके अधिकारी—(तुल०) इनपर ताड़ना करते रहनेसे ही ठीक रहते हैं।

ढोल न ढाक हर हर गीत—बिना सामानके कोई काम किया जाय, तब क०।

ढोल बज दमामें बजे—जब किसी आदमीके बुरे चालचलनको पहिले थोड़े ही आदमी जानते हों और पीछे सब जान जांय, तब क०।

ढोवेके टोकरी गावेके गीत—(पू० च०) अपनी हैसियतसे बाहर काम करनेपर वा थोछा आदमी बड़ोंकी बराबरी करे, तब क०।

त

तईकी तेरी घईकी मेरी—दे० "घयेकी मेरी"

तंगीके साथ फ़राख़ी और फ़राख़ीके साथ तंगी लगी हुई है—दुःखके साथ सुख और सुखके साथ दुःख लगा हुआ है।

तंगी गई फ़राख़ी आई-दरिद्रताके चले जानेपर उदारता आती है।

तक तिरियाको आपनी, पर तिरिया मत ताक। पर नारीके ताकने, पड़े सीसपर ख़ाक़—दूसरेकी स्त्रीको बुरी निगाहसे मत देखो।

तक़दीरके आगे नहीं तदबीरकी चलती—नसीबके आगे उद्योग काम नहीं देता।

चाबको तक़दीरके मुमकिन नहीं करना रफ़ू।
सोज़नें तदबीर सारी उम्र गो सीती रहे॥

तक़दीरके लिखेको तदबीर क्या करे, गर हाकिम ख़फ़ा हो वज़ीर क्या करे—स्पष्ट।

तक़दीर सीधी है तो सब कुछ—स्पष्ट।

तक़दीरी बाज़ी है—हार जीत नसीबसे होती है।

तकल्लुफ़में रेल चल दी—मर्यादासे अधिक शिष्टाचार करनेसे हानि होती है।

इसपर एक कहानी है :—दो सभ्य मनुष्य कहीं जानेके लिये स्टेशन पहुंचे, और टिकट कटा लिये। रेल भी प्लेटफार्मपर आ पहुंची। एकने दूसरेको शिष्टाचारी दिखानेके लिये कहा—"हज़रत! सवार हूजिए।" दूसरेने कहा—"क़िबला आप!" इसी तरह शिष्टाचार दिखाते दिखाते रेल छूट गई। अङ्गरेज़ी 'रेल' शब्दके रहनेसे यह मसल पुरानी नहीं जान पड़ती।

तकल्लुफ़में है तकलीफ़ सरासर—दे० "तकल्लुफ़में रेल"

तकले कासा बल निकल गया—जब कोई ज़िद्दी लड़का सज़ा पाकर सीधा हो जाता है, तब क०।

तक़ाज़ेका हुक़ा भी नहीं पिया जाता—उधारकी चीज़ बुरी होती है।

तका पराया हाथ और गया नरक—स्पष्ट।

तख़्तपर बैठे या तख़्तेपर लेट जांय—आदमीको चाहिए कि इज़्ज़तसे रहे या मर जाय। गुलामी करनेसे मरना अच्छा। बहुतसे हिन्दुओंमें चाल है, कि मुर्देको तख़्तेपर ले जाते हैं।

तख़्तीपर तख़्ती, मियांजीकी आई कमबख़्ती—(मु०) मकतबमें पढ़नेवाले लड़के कहते हैं। पट्टीपर पट्टीका रक्खा जाना मौलवीके लिये हानिकारक समझा जाता है।

तज गज-मुक्ता भीलनी, पहिरत गुंजा हार—जो जिसे रुचता है वही वह करता है। जैसे भीलनी

गज-मुक्ताको छोड़कर गुंजाका हार पहिनती है।

जो जाही सों रमि रहै, सोतेहि आदर देत।

कोकिल अम्बहिं लेत है, काक निमौली लेत। (वृन्द)

तजल्लीको तकरार नहीं—प्रत्यक्षमें प्रमाणकी ज़रूरत नहीं।

तड़के उठकर खाटसे, छोड़ छाड़ सब काम।
माला लेकर हाथमें, जप साईं का नाम—स्पष्ट।

तड़केका भूला सांझको आ जाय तो भूला नहीं कहाता—जो आदमी सवेरेका खोया हुआ शामतक घर लौट आवे, वह खोया नहीं कहलाता। जो बात सवेरेकी भूली शामतक याद आ जाय, वह भूली नहीं कहलाती। जब कोई मनुष्य संयोगवश खोटी संगतमें पड़कर फिर सुधर जाय, तब क०।

ततड़ीने दिया, जनमजलीने खाया, जीभ जली न सवाद आया—(ज०) जब दो कमनसीब आदमी एक दूसरेकी सहायता करना चाहते हैं तब और जब कोई बहुत कम खानेकी चीज़ दे, तब क०।

तत्ता कौर निगलनेका, न उगलनेका—जब नई दोस्तीमें खलल आवे, तब क०। क्योंकि न उसे छोड़ते ही बने न निभाते ही बने।

तत्ती खिचड़ी घी न पाया, अबका सियालायूं हीं गंवाया—खिचड़ी अक्सर जाड़ोंमें ही खाई जाती है, और घी बिना उसमें स्वाद नहीं आता। ग़रीबीकी हालतमें क०।

तन उजला मन सांवला, बगलेका सा भेक।
तोसें तो कागा भला, बाहर भीतर एक—स्पष्ट।
कपटी या ढोंगी आदमीपर क०।

तन कसरतमें, मन औरतमें—दोनों बेजोड़ काम एक साथ नहीं हो सकते।

तनका वैरी ताप है, मनका वैरी नेह। जिस तनमें ये दो रमें, तो गये जीव और देह-स्पष्ट।

तनकी कर ले तुनतुनी, और मनके कर ले तार। फिर जश गा हरिनामके, जो तुरत मिले कर्त्तार—स्पष्ट।

तनकी तनक सरायमें, नेक न पावो चैन।
सांस नकारा कूंचका, बाजत है दिन रैन—
मौतका ठीक नहीं कि कब आवे।

तनको कपड़ा न पेटको रोटी—निहायत ग़रीब आदमीपर क०। जिस स्त्रीकी परवरिश उसका स्वामी भली भांति नहीं करता हो वह भी कहती है।

तन गुदड़ी मन धागा, कोई कुछ ही लखे मन लागा—फ़क़ीरोंका ऐसा कहना है।

तन तकिया अरु मन विश्राम, जहां पड़ रहे वहीं आराम—उ० दे०।

तन ताज़ा, कलन्दर राजा—फ़क़ीरका भी जब पेट भर जाता है, तब वह अपनेको राजा समझने लगता है।

तन दे, मन ले—मेहनत करेगा तो मन चढ़ेगा।

तनपर नहीं धागा, नाम चन्द्रभागा—(व्यं०) नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

तनपर नहीं लत्ता, पान खाय अलबत्ता—(व०) हैसियतसे बाहर काम करनेवालेपर क०। कोरी शेख़ीका काम करना।

तनपर लीर न घरमां नाज, दद-खुसरेका रोपा काज—(ज०) जब कोई ऐसा काम करे जिसके करने लायक़ वह न हो, तब क०।

तनपर सोहे कापड़ा, और रन सोहे रनजीत।
बीर पुरुष वोही भले, (जो) सबसे राखे प्रीत—स्पष्ट।

तन पिंजरा मन तीतरा, सांस जीवनका मूल।
जब तीतर उड़ जात है, तो हो जा पिंजर धूल-स्पष्ट।

तन पुतला है ख़ाक़का, इसे देख मत फूल।
इक दिन ऐसा होयगा, मिले धूलमें धूल—शरीर नश्वर है।

तन फूअड़का भैंस सूं भारी, कहे कहो मोहिं नाजो प्यारी—(ज०) देखनेमें तो भैंसकी सी शरीरवाली तथा फूहड़ है, परन्तु कहती है कि मुझे नाजो प्यारी कहकर बुलाओ।

तन लगी घुपड़ी, तो बलाय छाय झुपड़ी—ज़रूरतके वक्त काम हो जाता है, फिर नहीं। एक बुढ़ियाने रातको जाड़ा लगनेपर विचारा, कि सुबह होते ही झोंपड़ी छा लूंगी परन्तु जब सुबह हुआ और धूप निकल पड़ी, तब वह भूल गई।

तन शीतल हो शीतसूं, मन शीतल हो मीतसूं—
(मा०) स्पष्ट।

तन सुखाय पिंजर करे, धरै रैन दिन ध्यान। तुलसी मिटै न वासना, बिना बिचारे ज्ञान-स्पष्ट।

तन सुखी तो चैन है, ना तो दुख दिन रैन है—
दे० "तन्दुरुस्ती हजार"।

तन सुखी तो मन सुखी—स्पष्ट।

तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़ेपर ज़ीन धरो बाबा। अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलनेकी फ़िक्र करो बाबा—(नज़ीर) बुड्ढोंके लिये उपदेश है।

तनूर बाज़ी और अल्लाह राज़ी—(मु०) फ़क़ीरोंका कहना है। तनूर=रोटी सेकनेकी एक प्रकारकी भट्ठी जिसकी दीवारपर थापकर रोटी सेकी जाती है।

तपे जेठ, तो बरखा हो भर पेट—(कृ०) जेठ ज़ोरोंसे तपनेपर वर्षा ज़्यादा होती है। दे० "जेठ तपत हो वर्षा गहरी"।

तपे नखत मृगशिरा जोय, तब बरसा पूरन जग होय—(कृ०) मृगशिरा नक्षत्रमें अगर धूप ज़्यादा हो, तो वर्षा ज़्यादा होती है।

तबके नरपति वे रहे, रीझैं तो कछु देयँ। अबके नरपति वे भये, रीझैं अरु लिख लेयँ—
स्पष्ट। कलयुगके दानियोंपर क०।

तब लग झूंठ न बोलिये, जब लग पार बसाय—
जहांतक बस चले झूठ बोलनेसे बचना चाहिये।

तमाचा मारे मुंह लाल रखते हैं—तमाचा मारकर ग़रीबीको छिपाना। जब कोई ऊपरी ठाट बनाकर अपनी ग़रीबीको छिपाता है, तब और जब कोई दण्ड मिलनेपर उसकी याद रखता है, तब क०।

तमोलनकी लड़कीसे कीजे न यारी, सरौता दिखाकर कतर ले सुपारी—दुमानी है।

तरकशमें तो तीर नहीं पर शरमा शरमी लड़ते हैं—
निराशामें भी आशा करनेवालेपर क०।

इस सादगी पै कौन न मर जाय ऐ ख़ुदा।
लड़ते हैं और हाथमें तलवार भी नहीं। (ग़ालिब)

आंखोंपर कही गई है।

तल धरती ऊपर राम—क़सम है।

तल धार, ऊपर धार—(पू० कृ०) मूसलधार पानी बरसना।

तल मुंडिया, पताल ढुंडिया—(पं) ठग वा लुच्चेको क०। जो नीचा सिर किये नक़ ढूंढ़ा करता है।

तलवरिया वाको मत कहो, जो खाँडा लेकर हाथ। रनसे भागे एकला, छोड़ टोलका साथ-
स्पष्ट।

तलवरिया वो ही भला, जो रनमें हाथ दिखाय, वैरीके टुकड़े करे, और आप साफ़ बच जाय—
स्पष्ट।

तलवारका खेत हरा नहीं होता—तलवार द्वारा नष्ट हुआ खेत कभी नहीं पनपता।

तलवारका घाव भरता है बातका घाव नहीं भरता—जब कोई किसीको ऐसा कुवचन कहे कि वह उसे असह्य हो जाय, तब क०।

(१) तेग़में बुर्रिश यह ऐ ज़ाली नहीं,
जिस क़दर तेरी ज़ुबां करती है काट। (ज़ाली)
(२) छुरीका तीरका तलवारका तो घाव भरा।
लगा जो ज़ख़्म ज़ुबांका रहा हमेशा हरा।

तलवार किसकी, मारेगा उसकी—स्पष्ट। जिसके हाथ जो पदार्थ होता है, वह उसीके काम आता है।

तलवारकी आंचके सामने कोई विरला ही ठहरता है—तलवारके सामने ठहरना बड़े साहसी आदमीका काम है।

तलवार तो दे दी पर म्यान मरे मारे देंगे—
जब कोई असली चीज़ तो ख़ुशीसे दे दे पर सामान्य चीज़ देनेके लिये अड़ जाय, तब क०।

तलवार मारे एकबार, एहसान मारे बार बार—
जब कोई आदमी किसीका उपकार करके पीछे बार-बार अपना एहसान ज़ाहिर कर उसे दबाता है, तब क०।

तलुओंकी सी कहूं या जीभकी सी—घूस वा रिशवत खानेवालेको क०।

किसी हाकिमने एक मुक़द्दमेमें फ़रियादी और असामी दोनोंसे ही रिशवत ली। एकने उसे मिठाई और खानेकी चीज़ें भेंट कीं और दूसरेने चुपकेसे उसके पैर

तले एक अशर्फी सरका दी। वह इसी बातका सोच करने लगा जो इस मसलमें कही गई है।

तलेका दम तले रह गया ऊपरका ऊपर—जब कोई ख़राब ख़बर सुनकर सन्न रह जाय, तब क०।

तलेके दाँत तले रह गये ऊपरके ऊपर—डर या आश्चर्य्य होनेपर क०।

तले पड़ीका मोल क्या?—(१) जो चीज़ पैर तले अर्थात् अपने अधीन है उसका मोल क्या। (२) सीधी और आज्ञाकारी स्त्रीका कहना है। (३) गई बातोंकी चर्चा करके वृथा समय नष्ट करनेपर क०।

तवंगरी बदिलस्त न बमाल, बुज़ुर्गी बअक़लस्त न बसाल—(फ़ा० शेख़ सादी) अमीरी दिलसे होती है दौलतसे नहीं; बुज़ुर्गी अक़्लसे होती है उम्रसे नहीं।

तवा बढ़ा, और जीव बढ़ा—स्पष्ट।

तवा चढ़ा बैठी मिसरानी, घरमें नाज अगन ना पानी—जब कोई बिना सामानके काम करनेपर तैय्यार हो जाय, तब क०।

तवा, तगारी, आग, जल, अन्न, ईंधन जित होय। घारा दून उजाड़ मां, भूखो मनुख न रोय—ये चीज़ें अगर किसी घने जंगलमें भी हों तो वहां भी आदमी भूखा नहीं मरता।

तवा न कुंडा ना चुलहारी, कहे नार मैं हूं भटियारी—(ज०) स्पष्ट।

तवा न तगारी, काहेकी भटियारी?—स्पष्ट।

तवेकी तेरी हाथकी मेरी
तवेकी तेरी तगारीकी मेरी } जल्दी करनेवाले पर तथा स्वार्थी मनुष्यपर क०।

तवे परकी बूंद—जो चीज़ बहुत जल्दी नष्ट हो जाय, उसपर क०। रोटी करते समय स्त्रियां तवा गरम हुआ या नहीं, इस बातको जाननेके लिये तवेपर पानीकी बूंद डालती हैं। यदि वह बूंद तुरत सूख जाय तो तवा तप गया समझा जाता है।

तवेलेकी बला बन्दरके सिर—सबकी बुराई एकहीके सिर मढ़ना। जब घरमें कोई भी बुरा काम करे पर दोष उसीके सिर मढ़ा जाय जो पहिले बदनाम हो चुका हो, तब क०। तबेले या अस्तबलमें घोड़ोंकी आरोग्यताके लिये एक बन्दर बांध दिया जाता है, इससे घोड़ोंपर किसी तरहकी बीमारी नहीं आती, ऐसा लोगोंका विश्वास है।

इसपर एक कहानी है:—एक सिपाही किसी सरायमें जा ठहरा। उसने भटियारीसे रोटी बनानेको कह दिया। भटियारी जब जोरसे आटा गूंधने लगी, तब उसकी वाव सर गई। उसका ८।१० वर्षका लड़का पास बैठा था। अपनी हरकत छिपानेके लिये उसने पैरसे जूती उतारकर लड़केकी चांदपर लगाई और बोली, "गुस्ताखी करता है?" सिपाही इस बातको ताड़ गया। थोड़ी देर बाद सिपाहीने भी जोरसे भर्राटा लिया और अपना जोलदार पैरसे उतार उसी लड़केकी खोपड़ी पर जमाया। लड़का तिलमिला उठा। इसपर सिपाहीने कहा, "गुस्ताखी करता है?" भटियारी आपेसे बाहर होकर बोली, "वाह साहब! हरकत तो आपने की और मारा मेरे लड़केको।" सिपाही बोला, "चुप हरामजादी, इस सरायका कायदा यही है, कि हरकत कोई करे पर जूता इसीके सरपर पड़ेगा।"

तसलवा तोर कि मोर?—(मैं०) मैथिल या भोजपुरियोंको लोग व्यंगसे कहा करते हैं।

इस मसलका निकास इस कहानीसे है:—किसी समय मिथिलापुरीमें अकाल पड़नेपर वहांके लोगोंकी हत्ति लुटेरोंसे खानेकी हो गई थी। उस समय जब कोई भात बनाता था, तब कुछ आदमी उससे आकर कहते थे "तसलवा तोर कि मोर?" यदि वह "तोर" यानी तेरा कहता था तो उसे माफ़ कर देते थे अन्यथा ('मोर' कहनेसे) छीनकर खा लिया करते थे।

तसलवा=तसला, थाली।

तसबीह फेरूं, किसको घेरूं—(मु०) बगुला भगत पर क०।

ताई बिलाई, कुत्ते नोंच नोंच खाई—छोटे लड़के ताईको चिढ़ानेके लिये कहा करते हैं।

तांत बाज़ी और राग बूझा—आदमीके बोलते ही उसकी योग्यता तथा मनका हाल मालूम पड़ जाता है।

करी कखाई नाहिं न बाम. बैंगहिं ले आक घनश्याम,
काहे पखानों जुत अनुराम, बाजे तांत बूझिये राग। (दूतो)
कुबजे सुहाग दियो, हमको बिराग जभो,
बाजी तांत जानो गई, राग रीति बावरी।

तांत सी देह पांव न हाथ, लड़न चली सूरजके साथ—जब कोई अपनी ताक़तसे बाहर काम करना चाहता है, तब क०।

तांबा देखे चीतना, मन देखे व्योपार—(व्य०) व्यापार आदमीको देखकर या नगद रुपयेसे होता है।

सखि स्वरूप पिय वश भई, ज्यों गाथा परचार।
तामां देखे चेतना, सुख देखे व्यवहार। (बालमुकुन्द)

तांबेकी मेख, तमाशा देख—जब पैसेवाला आदमी सब कुछ संभव असंभव काम कर लेता है, तब क०।

ताल झांककर चाल मत, यह है बुरा सुभाव। जार कहैं या चोरटा, या कहे ऊद बिलाव—स्पष्ट।

ताक़त कमरमें चाहिए औलादके लिये, रखते नहीं हैं सिर्फ भरोसा मदार का—उस पुरुषार्थी आदमीपर कही जाती है जो अपने बूतेसे सब काम करता है, किसीका भरोसा नहीं करता।

ताक पर बैठा उल्लू, मांगे भर भर चुल्लू—जब नीच आदमी किसी ऊंचे आदमीपर हुक्म चलाता है, तब क०।

ताकी, न रक्खे बाक़ी—ताकी घोड़ा मनहूस होताहै।

ताज़ी को मारा तुरकी कांपा—एक पर शासन करनेसे दूसरोंका भी सुधार होता है।

ताज़ी पर बस नहीं, तुर्की के कान उमेठे—जबर्दस्तके साथ न भिड़कर कमज़ोरों पर गुस्सा उतारना।

ताज़ी मार खाय तुरकी आश पाय—जब योग्य मनुष्योंपर आफ़त आवे और नालायक़ आदमी मौज करने लगें, तब क०।

ताज़ीमें कारीगरां मुआफ़—(फा०) काम करने वालोंको अदब करना मुआफ़ है।

ताता, तीता, आमला, तीनों धात विनास—गरम, तीता और खट्टी चीजें धातुको नुक़सान पहुंचानेवाली हैं।

ताते दूध बिलार नाचे—गरम दूध देखकर बिल्ली नाचा करती है, न तो उसे छोड़ सकती है और न पी सकती है।

तान न पड़वा कुरेवा घर लट्ठम लट्ठा—बिना बातकी लड़ाई लड़नेपर क०।

इसका निकास इस कहानीसे है:—एक कोरीने कोई जगह तानी बनानेके लिये नियतकी, इसपर कोलिनने कहा—"नहीं, यहां तो मैं पड़रा बांधूंगी"। इसी बात पर दोनोंमें लाठी चल गई, पर न तो कोरीके पास तान भरनेको सूत था और न कोलिनके पास पड़वा। कुरेवा=कोरी।

ताना बाना, सूत पुराना—वृथा परिश्रम करनेपर क०।

ताना शाह दिवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना—जो व्यापारी अपनी लिखा पढ़ी ठीक नहीं रख सकता, उसे बहुत झंझटोंमें फंसजाना पड़ता है।

तानी घाट, या बानी घाट?—जब दोनों तरफ़ दोष होता है, तब क०।

तापब, तुपुक, तलाये जाब—तापना, बन्दूक़ चलाना और टट्टी जाना ये तीन काम लिहाफ़ ओढ़ कर नहीं होते।

ताम झाम लगे—जब कोई झगड़ा दिखाय या व्यर्थका घमंड करता है, तब क०।

इस मसलका निकास इस कहानीसे है:—एक मूर्खके हाथ एक पालकी लग गई। वह सब कामके लिये पालकी पर बैठ कर जाता था। और तो क्या उसकी स्त्री जब कहती कि "मिर्च नहीं है" तो वह कहता "ताम झाम लगे" फिर जब वह कहती कि "नमक मंगाना भूल गई" तो वह झट कहता कि "ताम झाम लगे" अर्थात् लाओ पालकी।

ताल उझल कर उझले पमार, जब बरषा हो पूरमपार—(कृ०) तालाब उझल कर जब खेतोंकी क्यारियां भी उझल जायं, तब समझना चाहिये कि बरसात पूरी हुई।

ताल तो भूपाल ताल और तो तलैयां हैं—स्पष्ट।

ताल न तलैया, बोओ सिंघाड़े भैया—(कृ०) बिना सामानके जब कोई काम करता है, तब क०।

ताल बजा कर मांगे भीख, उसका जोग रहा क्या ठीक—जो साधू घंटा बजाकर भीख मांगते हैं उनका योग ठीक नहीं रहता।

ताल में चमके ताल मछरिया, रण चमके

तलवार। तंबुआ चमके सैंया पगड़िया, सेज पै बिंदिया हमार—सब चीज़ें अपने अपने स्थानपर शोभा देती हैं।

ताल सूख पटपर भयो, हंसा कहीं न जाय। मरे पुरानी पीत को, चुन चुन कंकड़ खाय—(१) उस कृतज्ञ नौकरपर कही जाती है जो मालिककी ख़राब अवस्थामें भी उसका साथ नहीं छोड़ता। (२) अपना घर किसीसे नहीं छूटता।

ताल से तलैया गहरी, साँपसे संपोला ज़हरी—जब बापसे बेटा बढ़कर निकले, तब क०।

ताली दोऊ कर बाजे—(प०) दे० "एक हाथ ताली नहीं"।

ताली बिन कैसा ताला, जोरू बिन कैसा साला?—स्पष्ट।

ताया तोर, कठौती मोर—दे० "तवेकी तेरी"

ताशकी अंगिया, मूंजकी बखिया—बेजोड़ काम पर क०

तिल्लर बिल्लर हो गये, सगर डोमके काम। निमड़ गये जिजमान जब, गांठ गिरहके दाम—जब पैसे बिना कोरी बातोंसे काम नहीं चलता, तब क०। डोम धाड़ियोंका ऐसा कहना है।

तिनका उतारेका अहसान होता है—निःस्वार्थ भावसे कोई भी काम किया जाता है उसमें एहसान माना जाता है।

उतारा तूने तो सिर तनसे, ज़ामनके मारेका।
करें एहसान मानूं सरसे मैं, तिनका उतारेका। (ज़ौक़)

तिनका गिरा गयन्द मुख, नैंक न घटो अहार, सो ले चली पिपीलिका पालनको परिवार—दे० "अमीरका उगाल"

तिनका होतो तोड़लूं, पीत न तोड़ी जाय, पीत लगत टूटत नहीं, जब लग मौत न आय—स्पष्ट।

यह दर्द सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये।
उल्फ़तका नशा जब कोई मर जाये तो जाये॥ (ज़ौक़)

तिनकेकी ओट पहाड़—(ज०) आंखके सामने तिनका रखनेसे पहाड़ भी छिप जाता है। थोड़े सहारेसे जब कोई बड़ा काम सिद्ध होता है, तब क०।

सिगरे तन तोहिमें मोह रहै, तम ओट पहार न देख परे।
(मतिराम)

तिरिया जात कमान है जित चाहे तित तान—स्पष्ट।

तिरिया तुझमें तीन गुन, अवगुन हैं लख चार, मंगल गावे सतरचे और कोखन उपजें लाल—स्पष्ट।

तिरिया तुझसे जो कहे, मूल न तू वह मान।

तिरिया मतपर जो चले, वह नर हैं निर्ज्ञान-स्पष्ट।

तिरिया तेरह मरद अठारह—तेरह वर्षकी स्त्री और अठारह वर्षका पुरुष इनका जोड़ा ठीक है।

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार—दृढ़ प्रतिज्ञापर क०। पूरी मसल यह है—"सिंह गमन सुपुरुष वचन, कदलि फरै इकबार। तिरिया तेल······" ये सब काम एक ही बार होते हैं।

इसका निकास एक ऐतिहासिक घटनासे है:—राजपूतानेके अन्तर्गत जयपुरके पास रणथम्भगढ़ नामका एक प्राचीन स्थान है। यह पहिले बादशाह अलाउद्दीन खिलजीके समयमें हम्मीरदेव नामक चौहान वंशीय राजपूतके अधीन था। अलाउद्दीनके मीर मुहम्मद महोल नामके एक अपराधीने भागकर राजा हम्मीरदेवकी शरण ली। उस समय राजाने अपने मित्रोंसे उक्त पूरी मसलके साथ यह भी कहा।"धड़ नचै लोह बहै, परि सीस सिर मोल, कटि कटि तन रनमें परै, तहु नहिं देहुं महोल।" अन्तमें बादशाहका फ़रमान आनेपर भी महोलको नहीं दिया। निदान सन् १३०० ई० में बड़ा भारी युद्ध हुआ।

तिरिया तो है शोभा घरकी जो हो लाज रखावा नरकी—जो स्त्री अपने पतिकी इज्जत रख सके उसीसे घरकी शोभा है।

तिरिया थिरकत जो चले, वाको भला न जान जैसे हाथ लिखेरका, काँपत हो नुक़सान-स्पष्ट।

तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राह बटाऊ होवे जैसा—बिना स्त्रीके मनुष्यके रहनेका कोई ठिकाना नहीं।

तिरिया भली वही है भाई, जो पुरुषा संग करे भलाई—स्पष्ट।

तिरिया भी नर बिन है ऐसी, बिना धनीके खेती जैसी—स्पष्ट।

तिरिया रोवे पुरुष विना, खेती रोवे मेह विना—(कृ०) स्पष्ट।

तिरिया विषकी बेल हैं, यासूं बचकर चाल, याका नेहा खोत है, दीन, धरम, धन माल–स्पष्ट।

तिलका ताल करना—थोड़ी बातको बहुत बढ़ाकर कहना।

तिल गुड़ भोजन, तुरक मिताई, आगे मीठ पाछे कड़ुवाई—मुसलमानोंकी तलाक़ देनेकी रस्म-पर क०।

तिल ज्यों बारू पेरिये नाहीं निकसे तेल—बालू पेलनेसे तेल नहीं निकलता। दे० 'इनतिलों'।

तिल, तीखर, दाना घी शक्करमें साना, खाय बूढ़ा होय जवाना—स्पष्ट।

तिल रहे तो तेल निकले—(व्य०) गुंजायश हो तब तो घटाया जाय। जब ग्राहक मालका दाम घटाया चाहे पर उसमें घटानेकी गुंजायश न हो, तब दूकान दार कहता है।

तीज़ पड़े खेतमें बीज—(कृ०) सावनकी तीजको खेतमें बीज पड़ता है।

तीतड़के मुंह लक्ष्मी—हाकिमकी ज़बानमें सब कुछ है। मुक़द्दमेके समय क०।

कटत विपति वियोग, पिय तिय तन बतरान में।
कहो कहावति लोग, ज्यों तीतर मुख लच्छमी॥

जब प्रसूतिकाके बच्चे को यम घेरता है उस समय तीतरका शब्द सुनते ही यम भाग जाता है। इसीसे यह कहावत प्रचलित है कि तीतरके मुंह लक्ष्मी बसती है।

तीतड़की सी बोली है—चाहे सो अर्थ निकाल लो।

एक तीतर किसी वृक्षपर बैठा हुआ अपने स्वाभाविक स्वरसे बोल रहा था। संयोगवश एक पथिक उधर आ निकला और उस स्वरको न समझ भौंचक्का हो रहा। इतनेमें एक मुसलमान वहां आ पहुंचा और पथिकको अर्थप्रार्थी देख 'सुभान तेरी क़ुदरत' नामक अर्थ बताया। पर इससे पथिकको शान्ति न हुई और उधरसे गुजरते हुए एक हिन्दूसे भी उसका वही प्रश्न रहा। हिन्दूने उसे 'राम लछमण दशरथ' कह टाल दिया। पर उसे इतने पर भी चैन न मिला और कुछ देर बाद गुज़रते हुए एक पहलवानसे भी उसका वही सवाल था जिससे उसे 'खाना कुश्ती कसरत' उत्तरमें मिला। पर उसे फिर भी आराम कहां? और उसी राह गुज़रते हुए एक कसाईसे प्रश्नकर उत्तर पाया 'ज़िबह कर और ढक रख'। तनिक देर बाद एक कुंजड़ेको भी उधर आया देख उससे भी वही प्रश्न कर बैठा और जवाबमें 'गाजर मूली अदरख' पाया। अन्तमें उसने एक जुलाहेसे जो वहां आ पहुंचा था अर्थ पूछा और 'चरखा पूनी चमरख' सबसे भिन्न उत्तर पाया। सारांश यह है कि "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी" (तुलसी०)

तीतड़ बाएं बोल जा, तो सगर कार हों ठीक। दहने बोलत ना भला, सांच जान यह सीख—शकुन है।

तीन गुनाह ख़ुदा भी बख़्शता है—जब कोई क़सूर करे और माफ़ी मांगे, तब क०।

तीन टांगका घोड़ा बनाना—(व्य०) मालमें झूठा ऐब निकालना। जब कोई ग्राहक माल लेकर नटना चाहे या दाम घटाना चाहे तो प्रायः मालमें दोष दिखाता है, उसीको दूकानदार लोग तीन टांगका घोड़ा बनाना कहते हैं।

तीन टांगकी घोड़ी नौ मनकी लदनी—जब किसी अनुपयुक्तको बड़ा काम सौंपा जाय, तब क०।

तीन टिकट, महा विकट, चारका मुंह काला, पांच हों तो भाला—(ज०) तीन चीज़ देना ख़राब, चार उससे भी ख़राब और पांच सबसे ख़राब। लड़कोंको जब कोई चीज़ दी जाय, तब वह और ज़्यादा लेनेके लिये ऐसा कहा करते हैं।

तीन तिरहुतिया मिले पकना रह गया—मैथिल ब्राह्मणोंमें कच्ची रसोईका बहुत परहेज होता है।

तीन तेरह हो गये—तितर बितर हो गये। बरबाद हो गये।

तीन थान, चौथी जान, उनको अल्लाह निगह-बान—तीन लड़के चौथा में ईश्वर रक्षा करे।

तीन दिन क़ब्रमें भी भारी होते हैं—(मु०) दे० "क़ब्रमें भी........"

तीन दिये, और तेरह पाये, कैसे लोभ ब्याजका जाये—(व्य०) सूदख़ोरोंको व्यंगसे क०।

तीन नरीमें तेरह गज़—तीन बकरियोंका चमड़ा फैलानेसे तेरह गज़ होता है।

तीन पाव आटा तूलपर रसोई—थोड़ी सामग्रीके लिये बहुत ठाट बाट।

तीन पावकी तीन पकाईं सवा सेरकी एक, जेठ निपूता तीनों खा गया मैं सन्तोखन एक—जब कोई ज़्यादा लेकर थोड़ा बतानेकी चेष्टा करे, तब क०। तीन पावकी तीनोंसे एक सवा सेरकी बहुत भारी है।

तीन पाव भीतर, तो देवता और पितर—पेट भरनेपर धर्म सूझता है।

तीन पेड़ बकायनके मियां बाग़बान—जब कोई थोड़ी ही चीज़से अपनेको भरा पूरा समझे, तब क०

तीन बुलाये तेरह आये, देखो यहांकी रीत। बाहरवाले खा गये, और घरके गावें गीत—जब एकको बुलाओ और चार आ जायें, तब क०।

तीन बुलाये तेरह आये दे दालमें पानी—ऊ० दे० दालमें पानी अधिक डालनेसे वह पतली होकर बढ़ जाती है, इसलिये सभीको परोसी जा सकती है। पूरी मसल यह है "तीन बुलाये तेरह आये, सुनो ज्ञानकी बानी। रावो चेतन यों कहैं, तू दे दालमें पानी।"

तीनमें न तेरहमें—जो किसी गिन्तीमें न हो। दूरके रिश्तेदारको कहते हैं जिसका सूतक तीन दिनका हो न तेरह दिनका। नगण्य मनुष्यको भी क०।

तीनमें न तेरहमें, बावनमें न बहत्तरमें। न सेर भर सुतलीमें, न करवा भर राईमें—ऊ० दे०।

इसपर एक कहानी है।—किसी वेश्याने अपने यारोंको श्रेणियोंमें विभक्त किया। तीन ऐसे थे जिन्हें वह सबसे अधिक चाहती थी। उनके पीछे तेरह, फिर बावन फिर बहत्तर थे। इसके बाद वे थे जिनके नामकी गांठें उसने एक सेर सुतलीमें बांध रखी थीं। अन्तमें वे लोग थे जिनके नामसे वह एक एक दाना राईका एक करवेमें डालती जाती थी। एक दिन एक मनुष्य उसके पास आया और बोला, कि मैं बहुत दिन पीछे आया हूं, मैंने पहिले तुम्हें बहुतसा धन दिया है। उस वेश्याने उसे नहीं पहिचाना और अपने गुमाश्तेसे कहा, कि देखो यह किसमें है। तिसपर गुमाश्तेने यह मसल कही। रसिया जाने आपको, तिहनोंको सिरताज, गनै न तेरह तीनमें बाम सुजार समाज। रसिया तो समझता है कि नायिका सबसे अधिक मुझीको चाहती है और नायिकाको जो अत्यन्त प्रिय तीन उनसे उतरकर तेरह जार थे उन दोनों कोटिमें वह इसकी गिनती ही न थी।

तीनमें न तेरहमें मृदङ्ग बजावें डेरेमें—जो सबसे अलग रहते हैं किसीके झगड़ेमें नहीं पड़ते, उन्हें क०। जिसकी कोई बात भी नहीं पूछता अपने घरमें ही पड़ा रहता है, उसे भी कही जा सकती है।

तीन लोकसे मथुरा न्यारी—जब कोई नियम विरुद्ध काम करे, तब क०।

तीन हैं साह किसानके जड़, जाल अरु कैर—(कृ०) जब दुर्भिक्ष पड़ता है तो इन्हीं तीनोंसे इनकी गुज़र होती है।

तीनोंपन एकसे नहीं जाते—लड़काई, जवानी और बुढ़ापा ये तीनों अवस्था सबसे नहीं कटतीं।

तीनों लोक दिखाई दे गये—तीनों लोकमें सब चीज़ें देखीं, परन्तु खानेकी चीज़ न देखी। भूखा मनुष्य कहता है।

तीर जुदाई आ लगा, दिया कलेजा छेद। पी अपना परदेश मां, किससे कहिये भेद—विरहकी अवस्थामें क०।

तीर, तुरमटी, इसतिरी, छूटत बश ना आयँ। झूठ जो माने यह वचन, वे नर कूढ़ कहायँ—तीर, बाज़ और स्त्री हाथसे छूटनेपर फिर हाथ नहीं आतीं।

तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध (वा सिर)—तीर्थस्थानमें जाकर मुंडन कराना ही पड़ता है। जब कोई खर्चका काम आन पड़े तो उसमें खर्च करे बिना पिण्ड नहीं छूटता। ऐसे ही मौकेपर क०। जब कोई मेला देखने या विदेश जाय तो कुछ न कुछ सौगात लानी ही पड़ती है, तब भी क०।

तीरथ गये सो तीन जन, मन चंचल चित चोर। एको पाप न काटिया, सौमन लादा और—स्पष्ट। बुरे दिलका मनुष्य अच्छी जगहसे भी बुराई सीखता है।

तीरथ मूरत पूजकर, मत ना उमर गंवाय। पूजा कर करतारकी जो तुरत मुक्ति हो जाय—एकेश्वरवादियोंका सिद्धान्त है।

तीर न कमान काहेके पठान—झूठी शेखी हांकने

वालेको क० । पठानसे मतलब सिपाहीसे है।

तीर न कमान मियांका अल्लाह निगहबान—(मु०) ऊ० दे०।

तीर न कमान मेरे चाचा ख़ूब लड़े—ऊ० दे०।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही—यदि कार्य हो जाय तो अच्छा, नहीं तो ख़ैर। जिस कामका फल अनिश्चित हो, उसपर क०।

तीवन बिन न रोटी सोहे, गूंधे बिन ना चोटी सोहे—स्पष्ट।

तीस मारखां बने फिरते हैं—जो मनुष्य अपने को बहुत लगाता और झूठी शेख़ी हांकता फिरता है। उसे क०।

इसका निकास इस कहानीसे है:—किसी बुड्ढे और आलसी सिपाहीको उसकी स्त्री रोज कहा करती थी, कि तुम घरमें ही बैठे रहते हो, कुछ रोज़गार करने नहीं जाते। जब वह उसके तानोंसे तङ्ग आ गया तो विदेश जानेको तैयार हुआ। उसकी स्त्रीने एक महीनेके खाने लायक़ उसे ३० लड्डू बना दिये। उस स्त्रीके अनजानतेमें उसमें कोई ज़हरीली चीज़ मिल गई, जिससे सब लड्डू विषाक्त हो गये। जब पहिली ही मंज़िलमें वह ठहरा, तो ३० चोरोंने उसको घेरा, पर जब उसके पास सिवाय लड्डुओंके और कुछ न पाया तो वही लेकर तीसोंने बांट खाये, जिसके ज़हरसे वे सबके सब मर गये। जब उस सिपाहीने सबको मरे देखा, तब तीसोंकी नाक काटकर अपनी जेबमें भर ली। जब यह समाचार उस देशके राजाको ज्ञात हुआ तो उसने इस मामलेकी तहक़ीक़ात की। "ये ही तीसों चोर उस देशमें बहुत दिनसे उपद्रव करते थे और राजा उनको पकड़नेकी फ़िक्रमें था। जब उस सिपाहीने कहा, कि मैंने अकेले ही तीसोंको मारा है और उनकी नाक काट ली है, जो आपके सामने हाज़िर हैं, तब राजा उसकी बहादुरीसे बहुत ख़ुश हुआ और उसे तीसमारखां" की पदवी देकर अपना वज़ीर बनाया। तीसमारखां नाम हमारा, पै कमहूं मूसहूं नहिं मारा।

तीसरे दिन मुरदा भी हलाल है—(मु०) मुसलमानी शरहसे तीन दिनका भूखा आदमी मुर्दा भी खा सकता है।

तीसीके खेतमें जुलाहा मुतलाने—(पू०) जुलाहे मूर्खताके लिये प्रसिद्ध हैं।

तुई तो मुई, नहीं तुई तो मुई—जब दोनों तरहसे ख़राबी हो, तब क०।

तुंतुनी बजाते मियां खाते शक्कर घी, नौकरी की ऐसी तैसी अबके बचे जी—किसी सिपाहीको स्त्रीका कहना है जो लड़ाई पर गया है। मुफ़्तख़ोर भी कह सकता है।

तुख़्म तासीर, सोहबत असर—बीज और सोहबतका असर अवश्य होता है। जब खोटेकी खोटी औलाद हो, प्रायः तब भी क०।

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू—जब कोई अपना काम छोड़कर दूसरेका काम करने जाय, तब क०।

(१) लेकिन यह ज़िक्र ग़ैर है इसको न छेड़िये,
हासिल पराई फ़िक्रसे अपनी निबाहिये।

(२) रिन्द-ए ख़राब हालको ज़ाहिद न छेड़ तू।
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू। (ज़ौक़)

तुझपर पड़े जो औदसा, दिल बिच मत घबराय, जब साईंकी हो दया काम तुरत बन जाय—स्पष्ट। हिम्मत न हारे।

तुम काटो मेरी नाक औ कान, मैं न छोड़ूं अपनी बान—(ज०) हठीको क०।

तुमको हमसी अनेक हैं, हमको तुम सा एक। रविको कमल अनेक हैं, कमलनको रवि एक—नेक और पतिव्रता स्त्रीका कहना अपने पतिके प्रति।

मोहि तुम एक तुम्हें मोसम अनेक आहिं, कहा कछु चन्दकी चकोरनको कमी है। (घन आनंद)

तुम क्यों फटेमें पांव देते हो—पराया झगड़ा अपने सिर क्यों लेते हो।

तुम गायन गायन बड़े, यह गायन परवीन। यह गाहक झरबीनके, तुम लीन्हें कर बीन—तुम गवैयोंमें बड़े गवैये हो, यह पुरानी गऊ हैं; यह झड़बेरीके गाहक हैं, तुम हाथमें बीन लिये हो। जब कोई गुणी मूर्खके दरबारमें जाता है और वहां उसकी क़दर नहीं होती, तब क०।

तुम जानो तुम्हारा काम जाने—जब कोई किसीका कहना नहीं मानता अपने मनकी करता है, तब क०।

तुमने उड़ाई, हमने भून भून खाई—तुमने अपने धनका दुरुपयोग किया और उसे बरबाद कर डाला, मैंने अपने धनका सदुव्यवहार किया और उससे लाभ उठा रहा हूँ।

तुम भी कहोगे मुझे चरखा ले दो—जब कोई मूर्खताकी बात करता है, तब क०। जो मनुष्य मर्दोंसे औरतोंका काम अच्छी तरह कर सके, उसे भी कहते हैं।

तुम भी कोरे चालीस सेरे ऊत हो—पूरे मूर्ख हो। चालीस सेर=पूरा एक मन।

तुम रूठे हम छूटे—(मु० ज०) लड़ाईके समय क०।

तुम सरीखे सैकड़ों फिरते हैं—जब कोई किसीको तुच्छ समझता है, तब क०।

तुम्हरेहि भाग राम वन जाहीं—(तुलसी) जब कोई कार्य किसीके बड़े कामका निकल पड़ता है, तब क०।

तुम्हारी दाढ़ी जलने दो, हमारा दीया बलने दो—स्वार्थीको क०।

तुम्हारी बराबरी वह करे जो दौड़ते हिरनको पकड़े—कुत्ता बनाना। शेखी बाजोंको व्यंगसे क०।

तुम्हारी बराबरी वह करे जो टांग उठाकर मूते—ऊ० दे०।

तुम्हारी बात न उठाई जाय न रक्खी जाय—जब कोई बेहूदा या बेमेल बात कहे, तब क०।

तुम्हारी बात थल की, ना बेड़ेकी—ऊ० दे०।

तुम्हारे पेटमें चींटेकी गांठ है—तुम बहुत कम खाते हो।

तुम्हारे फ़रिश्तोंको भी ख़बर नहीं—(मु०) तुम किसी तरह नहीं जान सकते। सब मनुष्योंके साथ दो फ़रिश्ते हैं, जो उनके सब कामोंकी ख़बर रखते हैं।

तुम्हारे बैल हमारे भैंसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा—बैल भैंसेसे जल्दी चलता है इसलिये दोनोंका साथ नहीं निभ सकता।

तुम्हारे भतार न हमारे जोय, आस कुछ करो कि बेटवा होय—(पू०) रंडुएका कहना विधवाके प्रति।

पति हीनस्तु या नारी पत्नि हीनस्तु या पुमान।
उभाभ्यां दर्पणाभ्यां नदीषोमनुरब्रवीत॥

तुम्हारे मरे देश ख़ाक, हमारे मरे देश पाक—अधीनता दिखाना।

तुम्हारे मुंहमें घी शक्कर—जब कोई अच्छी ख़बर सुनावे, तब क०।

तुम्हें ग़ैरोंसे कब फ़ुरसत हम अपने ग़मसे कब खाली, चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली—मित्रका कहना मित्रके प्रति। जब बहुत दिनपर मिलते हैं तब उलहनेके तौर पर क०।

तुम ग़ैरोंके संग बैठकर दिन याद करोगे।
हम कौन हैं जो हमको भला याद करोगे॥

तुरई कहूँ, लानत हरदू—(मु०) दोनों ही प्रकार हैं।

तुरक काके मीत, सरपसे क्या प्रीत—स्पष्ट।

तुरक तलैया तोतड़ा, ना यह किसीके मीत। भीड़ परत मुंह फेर लें, राखें नाहीं प्रीत—(ग्रा०) मुसलमान, बर्रें और तोता किसीके सगे नहीं होते।

तुरक तेली ताड़, यह सूबे बिहार—बिहारमें मुसलमान, तेली और ताड़ बहुत हैं।

तुरक तोता खरगोश, कभी न माने पोश—स्पष्ट।

तुरकी पीटे, ताज़ी कांपे—एकको मज़ा होनेसे दूसरा सचेत हो जाता है।

तुरत दान महा कल्यान—स्पष्ट।

बेगि बात परसब ग्रह, है रस सरस सिंगार।
तुरत दान महापुन्य है, याथा जग परचार।

तुरत फ़तह हो उसके ताईं, जिसका हामी हो गोसाईं—स्पष्ट।

तुरत फुरत हो सगरे काम, जब होवे मुट्ठीमें दाम—स्पष्ट।

तुरत फुरत हो वह भी कार, मदत करे जिसकी सरकार—स्पष्ट।

तुरत भलाई वह नर पावे, जो धन दाता नाम लुटावे—जो ईश्वर निमित्त ख़र्च करता है उसका जल्दी नाम हो जाता है।

तुरत मजूरी जो परचावे, याका काज तुरत हो जावे—स्पष्ट।

तुरतहिं पीवो तुरतहिं खावो, बासी खा मत ओझ बढ़ावो—रोटी ताजीही खानी चाहिए, बासी खानेसे पेट फूलता है।

तुलसी अपने जानके, कीन्हीं थी परतीत। धोको दे न्यारे भये, भलो निवाही प्रीत—स्पष्ट।

तुलसी अपने रामको, रीझ भजेके खीज। खेत पड़े सब ऊगजें, उल्टे सीधे बीज—स्पष्ट।

भाव कुभाव अनख आलसहूं,
राम जपत मंगल दिश दसहूं।

तुलसी इक दिन वे हुते, मांगे मिले न चून। कृपा भई भगवान की, लुचई दोनों जून—स्पष्ट।

तुलसी कहत पुकारके, सुनो सकल दे कान। हेम दान गज दानसे, बड़ो दान सनमान—स्पष्ट।

रहिमन मोहि न सुहाय अमी पियावे मान बिनु,
वह विष देइ बुलाय मान सहित मरिबो भलो।

तुलसीके पत्तेमें कौन छोटा कौन बड़ा—सभी समान हैं। जहां कई मालिक हों, वहां क०।

तुलसी चंदन विटप वसि, विष नहिं तजत भुजंग। नीच निचाई नहिं तजे, जों पावे सत संग—जब कोई अच्छी संगतमें रहकर भी न उधरे, तब क०।

तुलसी छल बल छांड़के, कीजे राम सनेह। अंतर पतिसे है कहा, जिन देखी सब देह—स्पष्ट।

तुलसी जगमें आयके, अवगुन तज दे चार। चोरी जारी जामिनी, और पराई नार—स्पष्ट।

तुलसी जगमें आयके, सीख ऊखसे लेव। जो तुमको अनरथ करे, वाको रस तुम देव—स्पष्ट।

तुलसी जपे तो राम जप, और नाम मत ले। राम नाम शमशेर है, जमके सिरमें दे—स्पष्ट।

तुलसी तहां न जाइये, जहां न वर्ण विवेक। रांग रूप रूआ भुआ, सेत सेत सब एक—रांगा, चांदी, रुई, और घास का फूल, सब ही सफ़ेद होते हैं, यद्यपि इनके गुणोंमें बहुत अन्तर है।

तुलसी तहां न जाइये, जहां जनम को ठाम। गुण औगुण जाने नहीं, धरो पाछिलो नाम—जन्मभूमिमें आदर नहीं होता। तुलसी दास जी जब रामायण आदि बना चुके और भारत भरमें महात्मा करके प्रसिद्ध हो चुके थे, तब एकबार यह अपने गाँव में गये। वहां सब लोग कहने लगे, कि तुलसिया आया। इसीपर उन्होंने यह दोहा कहा है।

तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घटमें प्रान। कबहूं तो दीन दयालके, भनक पड़ेगी कान—दयाका महात्म कहा गया है।

तुलसी धीरजके धरे, कुंजर मन भर खाय। टूक टूकके कारने, कुत्ता घर घर जाय—स्पष्ट।

तुलसी पर घर जाय के, दुःख न कहिये रोय। भरम गवांवे आपनो, बांटि न लेहैं कोय—कोई कोई इस दोहे को रहिमन का क०।

तुलसी प्रतिमा पूजिबो, ज्यों गुड़ियोंका खेल। भेंट भई जब पीउसे, धरो पिटारी मेल—स्पष्ट।

तुलसी बिरवा बाग में, सींचत हू कुम्हिलाय। राम भरोसे बैठिके, पर्वत पर हरियाय—स्पष्ट।

तुलसी भरोसे रामके, लिये पाप भरि मोट। ज्यों व्यभिचारी नारिको, बड़ी खसमकी ओट—स्पष्ट। जो पुन्यकी ओटमें पाप करते हैं, उन्हें क०।

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजे चहुं ओर। बसी करन यह मंत्र है, तजि दे वचन कठोर—स्पष्ट। कटु वचन न कहनेके लिये क०।

तुलसी मूर्ख न मानहीं, जब लग खता न खाय। जैसे विधवा इसतरी, गर्भ रहे पछताय—स्पष्ट।

तुलसी या संसार में, पाखंडी को मान। सीधों को सीधा नहीं, झूठों को पकवान—स्पष्ट।

तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार। साधुमिलन अरु हरि भजन, दया धर्म उपकार—स्पष्ट।

तुलसी या संसारमें, सबसे मिलिये धाय। ना जाने किस भेषमें, नारायण मिल जाय—स्पष्ट।

तुलसी रामकी भक्तिबिन, धिक दाढ़ी अरु मूंछ। पशू गढ़न्ते नर भयो, भूल्योसींग औ पूंछ—स्पष्ट।

तू कर अपना काम तबलिया भूकन दे—(प०)

अपना काम करो कुत्तोंको भौंकने दो।

तू कहे सो सच, बुड्ढी तू कहे सो सच्च—जब कोई मनुष्य सरासर झूठ बोलता हो, उस समय उसकी बातको झूठी न कह कर व्यंगसे सच्ची बतावे, तब क०।

इसपर एक कहानी है:—किसी समय होलीके दिनोंमें कई चोरोंने एक बुढ़ियाके घरकी सब चीजें लूट लीं, और उसे कन्धेपर चढ़ाकर रास्ते रास्ते घुमाते फिरे। बुढ़िया तो चिल्ला चिल्ला कर यह कहती थी, कि इन्होंने मुझे लूट लिया, पर चोर उसकी बात अनसुनी करनेके लिये इस मसलको कहते जाते थे। होलीका अवसर जान लोगोंने इसे भी एक स्वांग समझा और इसपर कुछ ध्यान न दिया।

तू खोल मेरा मकना, मैं घर संभालूं अपना—(मु० ज०) जब कोई बहू ससुराल में आते ही घरपर अपना क़ब्ज़ा करले, तब क०।

तू गधी कुम्हार की, तुझे राम से कौथ—जब कोई तुच्छ मनुष्य ऐसी बातमें दख़ल दे जिसमें बोलने लायक़ वह न समझा जाय, तब क०।

तू गोर खोद मोकों, मैं गाड़ आऊं तोकों—स्पष्ट। पूरा बदला चुकानेके लिये क०।

तू चाह मेरी आईको, मैं चाहूं तेरे खाटके पायेको—(ज०) सास का कहना जमाई से। यह सूचित करनेके लिये कही जाती है कि तुम हमारे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो हम भी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।

तू चूंना कर मैं तेरा यार कत्था—श्लेष है। तू चूं मत कर मैं तेरा यार कब था।

तू डाल डाल मैं पात पात—यह सूचित करने के लिये कही जाती है कि हम तुम्हारी चालोंको ख़ब समझते हैं।

तूती चुगे तो ऊंच चुग, नीच चुगन मत जा। कुले लजावे आपने, कहैं अकब्बर साह—यदि अधीनता ही स्वीकार करनी हो तो किसी अच्छे की करो, ओछे का एहसान कभी न उठाओ।

तूती पाले चूतिया, और आशक़ पाले लाल। कबूतर पाले चोट्टा, जो तके पराया माल—स्पष्ट। कबूतरबाज़ अक्सर दूसरोंका कबूतर फँसा लेते हैं, इसी लिये क०।

तू तेलीका बैल,तुझे क्या सैल,लगा रह घानीसे—जो रात दिन काममें लगा रहता है, उसे क०।

तू देवरानी मैं जेठानी, तेरे आग न मेरे पानी—स्पष्ट।

तूने कीती रामजनी, मैंने कीता रामजना—(पं०) स्त्रीकी फटकार अपने परस्त्रीगामी स्वामीके प्रति।

तू भी रानी, मैं भी रानी, कौन भरे कूए'का पानी—आलसी स्त्रियोंको कही जाती है जब वे घरका काम नहीं करतीं।

तू मुझको, तो मैं तुझको—समान व्योहारके लिये क०।

" मन तुरा हाजी बगोयम तू मरा क़ाज़ी बगो "

तू मेरा लड़का खिला, मैं तेरी खिचड़ी पकाऊं—ऊ० दे०।

तू मेरी जिकरमें, मैं तेरी फ़िकरमें—ऊ० दे०। जब कोई किसीकी बदनामी करे और वह भी उसको हानि पहुंचाने की फ़िक्र में हो, तब क०।

तू मेरे बालेको चाहे, तो मैं तेरे बूढ़ेको चाहूं—दे० 'तू मुझको'

तूल, तेल, तापना, पूस माघ है आपना—रूई के कपड़े, तेल और तापने को मिले, तो पूस माघ अपना ही है।

तू सच्चा, तेरा पीर सच्चा—सच्चे आदमीको क० कभी कभी व्यंगसे झूठेको भी क० जब वह अपनी बात सत्य करनेके लिये हठ करता हो।

तेज़ घोड़े को एड़ी कैसी?—उसके लिये एड़ी लगाके चलाना वृथा है। जो नौकर इशारेसे काम करे उसे न धमकावे।

तेतरी बेटी राज रजावे,तेतरा बेटा भीख मंगावे—दो लड़कोंके बाद यदि लड़की हो तो अच्छा, दो लड़कियोंके बाद लड़का होतो अच्छा नहीं।

तेते पांव पसारिये, जेती लांबी सौर—(वृन्द) समाई अनुसार काम करना चाहिए। जब कोई वित्तसे बाहर काम करता हो, तब क०।

तेरा किया तेरे आगे आवे—शाप देना है।

तेरा ढका रहे मेरा दिक जाय—(व्य०) स्वार्थी को क० ।

तेरा पानी मैं भरूं, मेरा भरे कहार—(ज०) आत्म-श्लाघापर क० ।

तेरा पी तोमें वसे, ज्यों पत्थरमें आग । देखा चहे दीदारको, चकमक होके लाग—स्पष्ट ।

तेरा माल, सो मेरा माल, मेरा माल सो हें हें—स्पष्ट । जो दूसरे की चीज़को अपनी समझे, पर अपनी चीज़ दूसरेको न दिया चाहे, उसपर क० ।

तेरा हाथ और मेरा मुंह—(ज०) कमाओ और मुझे खिलाओ । स्वार्थ ।

तेरा है सो मेरा था वराय ख़ुदा टुक देखने दे-(मु० ज०) सासका कहना बहूके प्रति जिसने पूरी तरहसे उसके लड़केको (अपने स्वामीको) वशमें कर लिया हो ।

तेरी आन या तेरे गुलइयां की—न तेरा डर है न तेरे मालिकका । सिर चढ़े नौकरको क० ।

तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे—जब कोई मनुष्य किसी ऐसेके साथ नेकी करता है, जो सदा उसके साथ बदी करता आया हो, तब क०

तेरी क़ुदरतके आगे कोई ज़ोर किसीका चले नहीं, चींटीपर हाथी चढ़ बैठे तब वह चींटी मरे नहीं—स्पष्ट ।

चींटीके पांवमें बांध गजंदहि चाहे समुद्रके पार लगावे ।
(देव)

तेरी जौ तेरी दरांती चाहे जैसे काट—दे० "तुम जानो तुम्हारा काम"

तेरे बैंगन मेरी छाछ—जब कोई अपनी थोड़ी चीज़के बदले दूसरेकी बहुत चाहे, तब क० ।

तेरे मेरे सदक़े मैं उसकी जोरू पेट से—नपुंसक की व्यभिचारिणी स्त्रीपर क० ।

तेलकी जलेबी मुआ दूरसे दिखाय—(मु० ज०) जब कोई आया तो बहुत दे, पर कुछ करे नहीं, तब क० ।

तेलकी मिठाई, देखनेमें अच्छी पर खानेमें बुरी—जो चीज़ देखनेमें भड़कीली पर टिकाऊ न हो, उसपर क० ।

तेल जल चुका—माल बड़ गया अब खर्च के लिये भी कुछ नहीं है ।

तेल जले घी, घी जले तेल—तेल जलनेसे घीके तुल्य, और घी जलनेसे तेलके तुल्य होता है ।

तेल डाल कमलीका साझा—जब कोई आदमी किसीसे कोई काम कराता है और वह अपनेको उसका हिस्सेदार समझने लगता है, तब क० ।

किसी गड़ेरियेने एक कम्बल तैयार कर उसे चिकना करने के लिये दूसरे आदमीसे उस पर तेल मलनेको कहा । जब उसने तेलसे कम्बलको चिकना कर दिया, तब बोला कि इस कम्बलमें मेरा भी साझा है, क्योंकि इसे चिकना करनेका काम मैंने ही किया है ।

तेल तिलों ही मेंसे निकलता है—(व्य०) दे० "तिल रहे तो तेल निकले"

तेल देखो तेलकी धार देखो—हर एक कामको धीरजके साथ सोच समझकर करो ।

किसी राजकुमारके चार मित्र थे, सिपाही, पुरोहित, ऊंट हांकने वाला और तेली । पिता के मरनेपर जब वह गद्दीपर बैठा, तो उन चारोंको अपना मंत्री बनाया । जब दूसरे राजोंने उसे ऐशमें डूबा और निकम्मे मंत्रियों से घिरा हुआ पाया, तो उसपर चढ़ाई कर दी । राजकुमारने अपने चारों मंत्रियोंको बुलाया और इस बारेमें सबको अपनी अपनी राय देनेको कहा । जो सिपाही था उसने तुरत युद्ध करनेको कहा । पुरोहितने कहा, जैसे बने सन्धि कर लो । ऊंटवानने कहा, देखिये ऊंट किस करवट बैठता है । इसीका समर्थन करते हुए तेलीने कहा, घबड़ाइये नहीं, अभी तेल देखिये तेलकी धार देखिये अर्थात् जल्दी न कीजिये ।

हिरदे धीर धरो सुकमारि, ज्यों पिय नेह लियो परमारि ।
लोग कहाउत यह निरधार, देखो तेल तेल की धार ।

(शिक्षा लो० र० को०)

तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढ़ाई—बिना सामानके कोई काम करनेको तैयार हो, तब क० ।

तेलनसे क्या धोबन घाट, इसके मूसल उसके लाठ—(ज०) जहां दोनों ही ख़राब हों कोई किसीसे कम न हो, वहां क० ।

तेलीका काम तमोली करे, चूल्हेमें आग उठे—दे० "जाको काम वाहीको साजै ।"

तेलीका तेल गिरा दूना हुआ, बनियेका नोन गिरा दूना हुआ—तेल गिरा तो ज़मीन सोख गई और नोन गिरा तो उसके साथ मट्टी मिल गई जिससे वज़न बढ़ गया।

तेलीका तेल जले, मसालचीका दिल जले—जब एकको खर्च करते देख दूसरेका दिल दुखे, तब क०।

तेलीका तेल, भगत भैयाजीकी—जब काम करे एक आदमी और नाम हो दूसरेका, तब क०। तेलीने तो तेल मंदिरमें जलानेको दिया, पर नाम पुजारीका हुआ। दे० "खेल खिलाड़ीका भगत।"

तेलीका बैल लेके, कुम्हारिन सती होय—(पू० ज०) झूठी लच्छो पच्चो दिखाने पर क०।

हाय हाय करिकै पछताय आंसू भरिकै कहै,
सैकै बैल तेलीको कुम्हाइन सती भई। (ज० ग०)

तेलीका बैल हो गया—जो रात दिन मेहनत करता है, उसको क०।

तेलीके घर तेल तो चुपड़े नहीं पहाड़—कोई अपना माल लुटा नहीं देता।

तेलीके तीनों मरें, और ऊपरसे टूटे लाठ—दोनों बैल और तीसरा हांकनेवाला। जिससे अपना कोई प्रयोजन नहीं वह भले ही मर जाय।

तेलीके बैलको घर ही कोस पचास—जिसे घरमें रहकर भी दिन रात काम करना पड़े, उसे क०।

फिरत थकौ ही रहत नहीं, मानिनि मान मवास।
ज्यों तेलीके बैलको, घरहीं कोस पचास। (लो० र० को०)

तेली खसम करा और रूखा खाया—(मु० ज०) जबकोई बड़ेका आसरा लेकर भी कष्टमें रहे, तब क०।

स्याम सनेह नाम बिख्यात, पियसों चमखाई न सुहात।
ग्रुमी पचामी भवरज माय, करे तेली पति रूखो खाय।
(लो० र० को०)

तेली जोड़े पली पली, रहमान लुढ़ावे कुप्पे—(१) जब कोई कृपण बहुत कष्टसे थोड़ा थोड़ा करके धन संचय करे और एक ही काम ऐसा आन पड़े कि उसका सब धन निकल जाय, तब क०। (२) जब दूसरेका धन खर्च करते किसीको दर्द नहीं होता, तब क०। (३) जब घरमें एक कमानेवाला और दूसरा लुटानेवाला हो, तब भी क०।

तेली रोवे तेलको, मकसूदन रोवे खलीको—सबको अपने अपने स्वार्थकी पड़ी रहती है। मकसूदन तेलीके नौकरका फ़र्ज़ी नाम है।

तैरेगा सो डूबेगा—स्पष्ट।

तोको न भुनाऊं, तेरा मइया और बंधाऊं—(पू०) कंजसको क०।

कोई पूर्बिया एक रुपया भुनानेके लिये बाज़ारमें गया। रुपया भुनाते उसके मनमें बहुत कष्ट होता था। इस तरहसे वह कई दूकानोंमें घूमता फिरा, पर रुपया उसके हाथसे न छोड़ा गया। जब उसके हाथमें पसीना आ गया, तब उसने समझा, कि रुपया मेरी जुदाईके लिये रोता है। इसीपर उसने यह मसल कही।

तोड़ डाल तागा, तू किस भड़ुवेके मुंह लागा—(मु० ज०) तागा विवाह सूत्रको कहते हैं। जब कोई स्त्री विवाह होते ही कुपथ गामिनी हो, तब क०। किसी खोटेका साथ छोड़नेके लिये भी क०।

तोड़न आये चारा, और खेतपर इजारा—असंगत दावेपर अथवा बेजा क़ब्ज़ेपर क०।

तोते कीसी आंखें फेर लेता है—इसीको तोते-चश्म भी कहते हैं। जिसे दया माया नहीं होती, उसे कहते हैं। तोतेको चाहे कितने ही प्यारसे पालो, पर वह ज्योंही मौक़ा पाता है त्यों ही उड़ जाता है।

तोरी बनत बनत बनि जाई, तू हरिसे लगा रहु भाई—स्पष्ट।

तोलेके पेटमें घुंगची—बड़ेमें छोटा समाता है।

तोले भरकी आरसी, नानी बोले फ़ारसी—अत्युक्ति या लम्बी चौड़ी बातपर क०।

तोले भरकी चार कचौड़ी, खुरमा मासे ढाईका,
घरमें रोवें बहिन भानजी, बाहर रोवे नाईका।
धीरे धीरे जीमो पंचों, देखो गज़ब खुदाईका।
लालाजीने ब्याह रचाया, लँहगा बेच लुगाईका—
किसी ग़रीब या कंजसके यहां ब्याह हो, तब क०।

तोले भरकी तीन चपाती, कहे जिमाने चालो हाथी—दे० "छटांक सतुआ मथुरामें भंडारा।"

तो सम पुरुष न मो सम नारी, यह संयोग विधि रचा विचारी—(तुलसी) सूपनखाका कहना

खसमपाजीसे। जोड़ा मिलनेपर क०।

तोसा, सो भरोसा—गांठमें जमा रहे, तो खातिर जमा रहे।

तौबह कर बंदे इस गंदे रोज़गारसे—जब कोई ऐसा काम करे जिससे बदनामी होती हो, उसे छोड़नेके लिये क०।

तौबह बड़ी सिपर है गुनहगारके लिये—दोषी मनुष्यके लिये पश्चात्ताप ढालका काम करता है।

त्रिया चरित्र और चोरकी घात, पार पड़ेना, कह गये नाथ—त्रियाचरित्र और चोरकी घातका कोई पता नहीं पाता।

त्रिया चरित जानै ना कोई, खसम मारके सत्ती होई—स्पष्ट।

त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः—(सं०) स्त्रियोंका चरित्र और पुरुषोंके भाग्यका हाल कोई नहीं कह सकता। पूरा श्लोक इस तरह है :—

"नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, मनोरथं दुर्जनं मानवानाम्।
त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

त्रिया पुरुष बिनु है दुखी, जैसे अन बिनु देह। जले बले है जीवड़ा, ज्यों खेती बिनु मेह—स्पष्ट।

त्रिया सके नहिं बात पचाय—औरतके पेटमें बात नहीं पचती।

थ

थकल पैराकू फेन चाटै—(पू०) थका तैराक फेन चाटता है। जब किसी मनुष्यकी सारी सम्पदा नष्ट हो जाती है, और वाध्य होकर थोड़े पर सन्तोष करना पड़ता है, तब क०।

थका ऊंट सराय ताकता है—दिन भरके परिश्रमके बाद मनुष्यको अपना घर याद आता है।

थके बैल गौन भई भारी, अब क्या लादोगे ब्योपारी—जब शरीर अवश हो जाता है, तब क०।

थाली गिरी झनकार सबने सुनी—किसी घटनाके होनेपर जब खबर चारों ओर फैल जाती है, तब क०।

थाली परसे भूका नहीं उठा जाता—स्पष्ट।

थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी—(१) किसीपर झूठी तोहमत लगाना। पहले कहा, कि इसने थाली तोड़ दी, जब थाली साबुत दिखा दी गई, तब कहा थाली चाहे टूटी हो या न टूटी हो, मैंने गिरनेकी आवाज़ तो सुनी है। (२) जब दो मनुष्योंमें बिगाड़ हो जाता है, तब भी क०। कहनेका तात्पर्य यह है, कि चाहे वे जुदे हो जांय या न हों पर बिगाड़ हो गया है, यह सब जानते हैं। भाई भाई या साझीदारोंके विषयमें क०।

था सोच जो कुछ अव्वल, वही आखिर पेश आया—जिस बातका पहलेसे सन्देह हो, वही सामने आवे, तब क०।

थुरमोल और उधार—जब कोई थोड़े दाममें ज़्यादा दामकी चीज़ लिया चाहे, तब क०।

थूककर चाटना—कहकर मुकर जानेपर क०।

थूक दाढ़ी फिट्ट मुंह—(पं०) किसीको लानत देनी हो, तब क०।

थूक बिलोना—बेहूदा बात बकना।

थूकों सत्तू नहीं सनता—थोड़े खर्चसे बड़ा काम नहीं हो सकता।

थैलियाँ सिला लाओ—जब कोई रुपया मांगता हो और उसे न देना हो, तो हंसीसे क०।

थैली चोट बानियां जाने—धनकी हानि बनियेको ही बहुत अखरती है।

थैलीमें रुपया मुंहमें गुड़—पास धन हो और ज़बान मीठी हो, इन्हीं दोसे मनुष्य सुखी होता है।

थोड़ मोलकी कामली, करे बड़ोंका काम। महमूदी और बाफता, सबके रक्खे मान—स्पष्ट।

थोड़ा आपको, बहुत गैरको—(१) जो अपने घरवालोंके साथ तो कम सलूक करे पर बाहरवालोंके साथ अधिक करे, उसे क०। (२) जो व्यवसायी थोड़ा अर्थात् अपने कब्ज़ेका काम करता है वह तो अपने लिये करता है और जो बहुत अर्थात् विसके बाहर काम करता है वह दूसरोंके लिये करता है

पहिलेका किया हुआ मुनाफ़ा उसीके पास रहता है और पिछलेका दूसरे खा जाते हैं।

थोड़ा करें गाज़ी मीयां, बहुत करें डफ़ाली—जब किसी साधु वा महात्माके चेले उसके महात्मको बहुत अधिक बढ़ाकर कहते हैं, तब क०।

गाज़ी सालार उर्फ़ गाज़ी मियां, जिनका स्थान अवधके बहराइच शहरमें है, महमूद ग़ज़नवीके भतीजे थे, जो वहीं सन् १०३३ ई० में विद्रोहियों द्वारा मारे गये थे। इनकी गिनती बड़े पीरोंमें है।

थोड़ा खाना इज्ज़तसे रहना—जब कोई खाने पीनेमें अधिक ख़र्च करे, तब नसीहतके लिये क०।

थोड़ा खाना जवानीकी मौत—थोड़ा खानेसे मनुष्य दुबल होकर जल्दी मर जाता है।

थोड़ा खाना और बनारसमें रहना—धार्मिक हिन्दूकी यही इच्छा रहती है। प्रायः ऐसे मौक़ेपर कही जाती है, जब कोई थोड़ी आमदनीसे संतुष्ट होकर घरमें रहना पसन्द करे, पर अधिककी उम्मेद होनेपर भी विदेश न जाना चाहे।

पतिसे पति दुइलोक बखाने, कुलटा का या सरको जाने।
लोग उक्ति यह मनमें गनिये, थोरा खाय बनारस बसिये।

थोड़ा माल खाय दूकानदारको, बहुत माल खाय गाहकको—(व्य०) बहुत माल देखकर गाहक रोबमें आ जाता है और जल्दी पट जाता है; थोड़ा माल रहनेसे मुनाफ़ा कम होता है और ख़र्चके मारे दूकानदारका दिवाला निकल जाता है।

थोड़ी आस मदारकी, बहुत आस गुलगुलोंकी—जो कोई प्रसादके लालच मन्दिरमें दर्शन करने जाय, उसे क०।

शाह मदारकी गिनती बड़े पीरोंमें है जो सन् १४३२ ई० में मरे हैं। उनकी दरगाह मकनपुरमें है। जब वहां मेला होता है, तब गुलगुले बँटते हैं। पीर साहबकी भक्तिके लिये तो लोग कम जाते हैं पर गुलगुलोंके लालच बहुत। इसीलिये यह मसल क०।

थोड़ी पूंजी खसमों खाय—(पं० व्य०) दे० "थोड़ा माल खाय दूकानदारको"।

थोड़े धनमें खल इतराय—दे० "आध सेरके पात्रमें कैसे सेर समाय।"

छुद्र नदी भर चलि उतराई,
जिमि थोरे धन खल बौराई।" (तुलसी)

थोड़ेसे बहुत होता है—जब कोई थोड़े धन वा कामसे सन्तुष्ट नहीं होता, तब उसे बढ़ावा देनेके लिये क०।

थोड़ेहिमें जानिये सयाने—(तुलसी) जो सयाने हैं वे थोड़े हीमें समझ जाते हैं।

थोथा चना, बाजे घना—जो आदमी कुछ कर नहीं सकता, वह बकता बहुत है।

थोथे फटके उड़ उड़ जायँ—पोला या घुना हुआ अनाज फटकनेसे उड़ जाता है। मूर्ख या झूठे जांच करनेसे नहीं ठहरते।

द

दंडासी पूंछ छुड़ानेका रास्ता—जब कोई किसी कामके अयोग्य हो, तब क०। छुड़ानेका रास्ता मरुमय होनेसे चलनेमें कठिन है। दण्डासी पूंछ पूढ़े बैलकी होती है।

दक्खन गये न बाहुरे, रहे चंदेरी छाय—जब कोई अपना घर छोड़कर बहुत दिन विदेशमें रह जाय, तब क०। औरङ्गज़ेबकी फ़ौज दक्खिन जाते समय १२ वर्ष तक चन्देरीमें पड़ी रही थी।

दगा किसीका सगा नहीं—दग़ाबाज़ किसीको भी दग़ा करनेसे नहीं छोड़ते।

दद्दा नहीं पढ़े हैं, लल्ला पढ़े हैं—देना नहीं जानते लेना ही जानते हैं। नादिहन्द और कंजूसको क०।

दामको चर्म ना त्यौंही दोया सों विराम करैं
दैवेके डरते जो ददा ना कहत हैं। (बालीराम)

दबक शीरेके मटकेमें—जब कोई बड़े आदमीकी ख़ुशामदमें रहता है, तब क०।

दबतेको सब दबाते हैं—स्पष्ट।

दबा पाई गूजरी "गहरा बासन लाओ"—किसीको दबा जानकर न्यायसे अधिक वसूल करनेपर क०। गूजरी=ग्वालिन।

दबा बनियां पूरा तोले—दबा हुआ बनियां पूरा तौलता है।

दबा हाकिम महकूमके तावे—रिश्वतख़ोर हाकिम अपने मुलाज़िमोंसे भी दबता है।

दबी बिल्ली चूहोंसे कान कटाय—कोई बलवान यदि क़ुसूरवार हो, तो निर्बलकी भी बातें सहता है। रिश्वतख़ोर अफ़सर जब अपने मुलाज़िमोंसे दबता है या कोई कनौड़ा आदमी दूसरोंकी बातें सुनता है, तब क०।

दबेपर चींटी भी चोट करती है—सतानेसे दुर्बल भी बदला लेता है।

दबेपर सब शेर हैं—जो दबता है उससे सभी ज़बर्दस्त बन जाते हैं।

दमका क्या भरोसा आया न आया—ज़िन्दगीकी अस्थिरतापर क०।

दमड़ीका पान पिटरियामें, मेरी तेरी बात अटरियामें—मुफ़लिस ऐय्याशोंपर क०।

दमड़ीकी अरहड़, सारी रात खड़हड़—(ज०) ज़रासे कामको बहुत करके दिखावे, तब क०।

दमड़ीकी गुड़िया टका डोलीका—ग़रीबके ब्याहके समय क०।

दमड़ीकी घोड़ी छः पसेरी दाना—जितनेका माल न हो उससे ज़्यादा उसपर ख़र्च पड़े, तब क०।

दमड़ीकी दाल, आपही कुटनी आप ही छिनाल—जब चीज़ इतनी थोड़ी हो, कि एकका पेट भी न भरे, तब दूसरेको कहांसे दे।

दमड़ीकी निहारीमें टाटके टुकड़े—(मु० ज०) सूमके खानेको क०।

दमड़ीकी पाग, अधेलीका जूता—उल्टा काम करनेपर क०। जूतेसे पगड़ीकी क़ीमत अधिक होनी चाहिये।

दमड़ीकी बुढ़िया, टका सिर मुड़ाई—दे० "दमड़ीकी घोड़ी"

दमड़ीकी बुलबुल, टका हलाली—काम थोड़ा निकले और ख़र्च अधिक हो, तब क०।

जहं देखहु निज अधिक बिगार,
लघु लाभहु कर तजहु बिचार।
नहिं यह बुद्धिमानकी चाल,
"दमड़ीकी बुलबुल टका हलाल॥" (लो० र०

दमड़ीकी मुरग़ी, नौ टका निकियाई—ऊ० दे०।

दमड़ीकी लाई, बनैनी खाय, यह घर रहे कि जाय—बनियोंकी कृपणतापर क०।

दमड़ीकी सूई, और सवा मनका मलीदा—थोड़ेसे लाभके लिये बहुत ख़र्च करनेपर क०।

किसी दर्ज़ीकी एक सूई खो गई। उसने मन्नत मानी, कि या पीर साहब! अगर मेरी सूई मिल जाय, तो मैं सवा मनका मलीदा चढ़ाऊं। यह सुनकर एक मनुष्य बोला, कि एक सूईका दाम ही कितना होगा जिसके लिये सवा मनका मलीदा चढ़ाओगे? दर्ज़ीने उत्तर दिया, कि यदि मेरी सूई मिल जायगी तो सब पीरोंको दग़ा दूंगा।

दमड़ीकी हंडिया गई, कुत्तेकी जात पहचानी गई—जब कोई थोड़ीसी चीज़के लिये बेईमानी करे, तब क०।

लाज लागी कहत बनै ना बिना कहे बात,
जाति जानी, कुत्तेकी हांडि गई दमरीकी (उ० प०)
(उद्धवकी प्रति-गोपियोंका कहना)।

दमड़ी पास न लखपत राय—(घ०) नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

दमदमेमें दम नहीं, अब ख़ैर मांगो जानकी।
बस ज़फ़र अब हो चुकी, शमशेर हिन्दुस्तानकी—निराश अवस्थामें क०।

दिल्लीके अन्तिम बादशाह बहादुर शाह जब सन् १८५७ के ग़दरमें अंगरेज़ों द्वारा पकड़े गये थे, तब उन्होंने क़िलेसे बाहर निकलते समय उपरोक्त शेर कहा था

दम नहीं बदनमें, नाम ज़ोरावरख़ाँ—नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

दम बना रहे, फूंक निकल जाय—आशीर्वाद और श्राप एक साथ।

दममार यार किसके, दम लगाया खिसके—गंजेड़ी और चरसबाज़ोंको क०।

दम्मो ढेर कि हड्डो ढेर—(पं०) दे० "दामो ढेरी।"

दया धर्मको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घटमें प्रान—दयाके महात्मपर क०।

दया धर्म नहिं तनमें मुखड़ा क्या देखे दर्पनमें—ऊ० दे०।

दरयाको कूज़ेमें भरना—थोड़े शब्दोंमें बहुत कहना। असंभव काम करनेकी कोशिश करना।

दरयापर जाना, और प्यासे आना—मूर्खतापर क०। जब कोई धनकी इच्छासे किसी धनवानके पास जाय, और ख़ाली फिर आवे, तब भी क०।

दरयामें रहना, और मगरमच्छसे बैर—जिसका आश्रित होकर रहें उसीसे दुश्मनी करे, तब क०।

कहा कही सखि दई सुकाम,
ताज रीझि राखत बहु धाम।
कहो बसावत जिहि बहु बैर,
समिबो सिंधु मगरसों बैर। (मध्या०ओ०र०कौ०)

दरवाजेपर आई बरात, समधनको लगी हगास—दे० "ग्वेड़े आई बरात"

दरस परस मज्जन अरु पाना, हरे पाप कह बेद पुराना—(तुलसी) गंगाजलका महात्म है।

दरोगको फ़रोग नहीं—झूठा फलता फूलता नहीं।

दरोग़ गो को हाफ़िज़ा नहीं होता—झूठेकी स्मरण शक्ति नहीं रहती।

दर्ज़ीका क्या कूंच और क्या मुक़ाम—दर्ज़ीको अपने कामके लिये विशेष सामान नहीं रखना पड़ता, इसलिये क०।

दर्ज़ीकी सूई कभी ताशमें कभी टाटमें—(व्य०) सीनेसे काम, जैसा कपड़ा आया सो दिया। व्यवसायी मनुष्यका कहना है, जिसे व्यवसायसेही काम है चाहे किसी तरहका हो तथा लाभ अधिक हो या कम।

दर्दको वह समझे जो ख़ुद दर्दमन्द हो—स्पष्ट।

दर्शन मोटा, पैंडा खोटा—श्रीबद्रीनाथजीकी यात्रापर क०।

दलालका दिवाला क्या, मसजिदमें ताला क्या—दलालके घरकी पूंजी नहीं होती, इसलिये उसका क्या दिवाला निकलेगा और मसजिदमें धरा ही क्या है जो उसमें ताला लगाया जाय।

दलिद्दर घरमें नोन पकवान—(ज०) स्पष्ट।

दवसो सो हारसी—(मा० व्य०) जो दबेगा उसकी हार होगी। कोई कोई इस तरह भी कहते हैं "दबसी सो हारसी यही मियांकी फ़ारसी"

दवा और दुआ दोनों—जब एक साथ दोनों काम सधें, तब क०। दवा भी हो और ईश्वराराधन भी हो।

दवाकी दवा, और ग़िज़ाकी ग़िज़ा—ऊ० दे० ऐसी चीजको कहते हैं जिसके खानेसे दवाका भी काम हो और पेट भी भरे।

दस नकटोंमें नाकवाला नक्कू—जैसोंके साथ रहे उन्हींकीसी चाल चले। दस नकटोंमें जब कोई नाकवाला जाता है, तो वे कहते हैं "नक्कू आया" नक्कूके दो अर्थ हैं; बदनाम और बड़ी नाकवाला।

दसों उंगलियां घीमें—जिसे सब तरहसे फ़ायदा हो उसे क०।

दसों उंगलियां दसों चिराग़—(मु० ज०) जो सब तरहसे होशियार और काम करनेवाली हो, उसे क०।

दस्त थम गये तो बुख़ार आया—जब एक आफ़त के जाते ही दूसरी आ जाय, तब क०।

दस्तरख़्वानकी बिल्ली (या मक्खी)—मुफ़्तख़ोर, दूसरेके सिर खानेवाला, ख़ुशामदी। जो मनुष्य बिना बुलाये हर जगह जाफ़तमें पहुंच जाय, उसे कहते हैं।

दस्तार, रफ़्तार, गुफ़्तार जुदी जुदी—पगड़ी बांधना, बोलनेका तरीक़ा और चलनेका ढंग सबका जुदा जुदा होता है

दहदर दुनियां सहदर आख़िरात—(मु०) इसलोकमें दस देनेसे परलोकमें सौ मिलता है। मुसलमान फ़क़ीरोंका कहना है।

दहना धोवे बायेंको, और बायां धोवे दहनेको—एकका काम बिना दूसरेके सहारे नहीं चलता।

दहने सुर भोजन करे, बायें पीये नीर, बायीं करवट सोइये, तब सुख होय शरीर—स्पष्ट।

दहीका गवाही चूड़ा—दोनोंका मेल है।

दहीकी फुट्टी, जिन पाई तिन लुट्टी—(पं०) स्पष्ट।

दहीके धोखे चूना खाना—(व्य०) ठगे जाना। अच्छी समझके बुरी चीज़ लेना।

दही बेचन चली पीठ पिछाड़ू कमोरिया—(पू० ग्रा० ज०) सिरपर रखनेमें शर्माती है। बेढङ्गा काम करनेपर क०।

दही भातका मूसल—निष्प्रयोजन बातपर क० । दही भात दोनों ही मुलायम हैं इनके लिये मूसलकी जरूरत नहीं ।

दाईकी दोस्ती पोतनोका प्यार—दे० "कोयलेकी दलाली"

कोई शौकीन एक दाईसे आशनाई करने गया । दाई उस वक्त चौका लीप रही थी । जब उस आदमीने दाई से दिल्लगीकी, तब उसने प्यारसे पोतना उसके मुंहपर फेर दिया ।

दाई चमेलीके मिरज़ा मोगरा—जो नीच मनुष्य अपनेको ऊंचा करके प्रसिद्ध करे, उसे क० । चमेली और मोगरा फुलोंके नाम हैं और मनुष्योंके नाम भी होते हैं ।

दाई जाने अपनी हाई—दाई ही अपना दुख जानती है, क्योंकि उसे प्रसूतीकी बहुत सेवा करनी पड़ती है ।

दाईसे पेट नहीं छिपता—जब कोई ऐसे मनुष्यसे अपनी बात छिपाता है जिसका सब भेद वह जानता हो, तब क० ।

सुरति चिन्ह किमि दुरै सुनारि ।
नेक कपट पट सुखते टारि ॥
लोग उक्ति जिमि जगमें छिपै ।
दाई सों क्यों पेट जु छिपै ॥ (लो० र० को०)

दांत आते भी दुःख दें, जाते भी दुःख दें—दांत निकलते समय बच्चोंको बहुत कष्ट होता है और जब गिरनेको होते हैं, तब भी बहुत पीड़ा होती है ।

जिन दांतोंसे हंसते थे हमेशा, खिल-खिल ।
अब दर्दसे हैं वही रुलाते, हिल-हिल ॥
पीरीमें रहा, अब वह जवानीके मज़े ।
ऐ ज़ौक़, बुढ़ापेमें है दांता-किल-किल ॥

दांत काटी रोटी है—बहुत घनिष्टता होनेपर क० । एक दूसरेका जूठा तक खाता है ।

दांत खट्टे हो गये (वा कर दिये)—परास्त हो गये वा कर दिया ।

भेजा मैंने अचार यूं उनको,
दांत खट्टे हों ता रक़ीबोंके । (अहमद)

दांत गिरे और खुर घिसे, पीठ बोझ ना लेइ । ऐसे बूढ़े बैलको, कौन बांध भुस देइ—बहुत बूढ़े और निकम्मे बैल या आदमी पर क० । क्योंकि उससे कोई काम नहीं निकलता ।

दांतमें तिनका पकड़ाना—अपने अधीन कर लेना ।

दांतोंमें पैसा चिपकता है—बड़े कृपणको क० । लोग सरावगियोंको भी कहते हैं जो जीव हिंसाके भयसे दांत नहीं मलते ।

दांतों पसीना आ गया—बहुत मेहनत पड़नेपर क० ।

दाग़ लगाय लंगोटिया यार—क्योंकि वह तुम्हारा सब हाल जानता है ।

दागेके सांड़ तो दाग ले लोहार—(पू०) जिसका काम उसीसे ठीक होता है ।

दाढ़ी है या राजकी कूंची—लंबी दाढ़ीवालेको क० ।

दाताकी नाव पहाड़ चढ़े—स्पष्ट । क्योंकि उसके सभी मनोरथ सफल होते हैं ।

दाताके घर लक्ष्मी, ठाढ़ी रहत हजूर । जैसे गारा राजको भर भर देत मजूर—दाता जितना दान करता है, ईश्वर उसे उतना ही देता है ।

दाताके तीन गुण, दे, दिलावे, देके छीन ले—ईश्वर देता है, दिलाता है और देकर छीन भी लेता है । राजा वा मालिकके प्रति भी क० ।

दाता तें सूमहिं भलो, जल्दी देइ जवाब—जब कोई देनेको कहे और उसके लिये बहुत दौड़ावे, तब क० ।

चले न पिय पै मित कहि, लोग उक्ति सुनि लेहि ।
दाता तें सूमहि भलो उत्तर तुरतहिं देहि ।

दाता थे सो मर गये, रह गये मक्खीचूस । लेना देना कुछ नहीं, लड़नेको मज़बूत—स्पष्ट ।

दाता दातार, सुथनी उतार—(मु० ज०) मेरा स्वामी ऐसा दाता है, कि काम पड़े तो मेरी सुत्थन (पायजामा) भी उतारके दे दे ।

दाता दे भंडारी पेट पीटे (वा भंडारीका पेट फूले) मालिक तो देनेका हुक्म दे, पर खज़ांची आला-टाली करे, तब क० ।

जबसे स्वामी सों रति मानी,
तब तें खामिन हिय अनखानी ।
कहे पखानो ज्यों नर नारी,
दाता देत दुखी भण्डारी ।
(ज्यो० क०—लो० र० को०)

दाता देवे और शरमाय, बादल बरसे और गर्माय—दाता देकर शरमाता है कि मैंने बहुत कम दिया, इसी तरह बादल बरसकर गर्माता है। गर्मानेसे सूचित होता है, कि भारी वृष्टि होगी।

दाता पुण्य करे, कंजूस फुरफुर मरे—दाताको देते देख सूम दुखी होता है।

दाता सदा दलिद्री—क्योंकि वह अपने पास कुछ नहीं रखता

दादा कहनेसे बनियां गुड़ देता है—खुशामद बड़ी चीज़ है।

दादा मरिहैं, तो भोज करिहैं—(पू०) जब कोई बहुत दिनका वादा करे, तब क०।

दादा मरेंगे, तब बैल बटेंगे—ऊ० दे०।

दादा मरेंगे, तो पोता राज करेंगे—ऊ० दे०।

दादा ले और पोता बरते—(व्य०) बहुत मजबूत चीज़के लिये क०।

दादू दुनियां बावरी, पाथर पूजन जाय। घरकी चक्की ना पुजे, जाका पीसा खाय—मूर्त्तिपूजाके विरोधमें क०।

दान पीछे कल्यान—स्पष्ट। अक्सर बहुत बीमार आदमीको दान करनेके लिये क०।

दान वित्त समान—स्पष्ट। सामर्थ्यके अनुसार दान देना चाहिये।

दाना खा मोठका, पानी पी सोंठका—मोठ गुरुपाक होती है इसलिये उसपर सोंठका पानी पीना चाहिये।

दाना खाय न पानी पीये, वह आदमी कैसे जीये-स्पष्ट।

दाना छितराना तहां जाना है जरूर, और पाना भी वही है जो दिलाना ह क़तालाने—(ग्वाल) स्पष्ट।

दाना दुश्मन, नादान दोस्तसे बेहतर—स्पष्ट।

दाना न घास, खरहरा छै छै बार—जब कोई बेकार चीज़ तो देनेको तैय्यार हो, पर जो चीज़ मांगी जाय वह न दे, तब क०।

दाना न घास, घोड़े तेरी आस—जब किसी चीज़की हिफ़ाजत तो न करे, पर उससे अपने आरामकी आशा रक्खे, तब क०।

दाना न घास, हिन हिन करे—स्पष्ट।

दानेको टापे, सवारीको पादे—जब कोई खानेको तैय्यार हो पर काम न कर सके, तब क०।

दाने दानेपर मोहर है—बिना भाग्यका एक दाना भी नहीं मिल सकता।

दाने पानीका अख्त्यार है—जब और जहां चाहे ले जाय।

दाबिल मांजरी बैठ चुपै चुप चूहनसों निज कान कटावे—दे० 'दबी बिल्ली।'

दाम करे सब काम, (वा दाम संवारे काम)—पैसेसे सब काम होता है।

जानि मानिनी सुबरन गात, पिय मुक्ता माल सौगात।
लइ मुसक्यात मनोहर बाम, करै दाम सब जगके काम।

दाम दीजे काम लीजे—स्पष्ट।

दामहीमें राम है—ईश्वरका वास भी धनहीमें है।

दामों ढेरी, या हाड़ों ढेरी—यातो बहुत धन कमा लेंगे या हाड़ोंका ढेर लगा देंगे। ऐसा काम करनेपर कहते हैं, जिसमें जान जोखिम हो।

दामों रूठा, बातोंसे नहीं मानता—पावनेदार अपने पावनेके लिये रूठ जाय तो खाली बातोंसे नहीं संतुष्ट होता।

दारूये ग़ज़ब ख़ामोशी—(फा०) क्रोधको दवा है चुप रहना अर्थात् चुपचाप रहनेसे क्रोध शान्त हो जाता है।

दाल भातमें मूसलचन्द—जहां दो मनुष्य कामकी बातें करते हों वहां तीसरा मनुष्य (जिसकी आवश्यकता न हो) बीचमें बोल कर बाधा डाले, तब क०

रमत हुते पिय तिय सुखवास।
चाहे घर थाली तहँ सांस॥
लोग पखानी सुनि रस भग्यो।
दूध भातमें मूसर पग्यो॥ (लो० र० कौ०)

दाल भात बिन खाँग रसोई—बिना दाल भातके रसोई फीकी लगती है।

मिलन चपते सकल सिंगार। काजर बेंदी बेसरि हार॥
कहत पखानो ज्यों सब कोई। दारि भात बिनु खाँग रसोई॥
(विदित हास)

दाल भात रोटी, और बात खोटी—स्पष्ट।

दालमें काला है—कुछ सन्देह अवश्य है। दे० "कुछ दालमें काला है"

दालमें नमक, सचमें झूठ—दे० "आटेमें नोन…"

दावत नहीं अदावत है—दावत नहीं दुश्मनी है।

दासी करम कहारसे नीचा—स्पष्ट।

दिन अच्छे होते हैं तो कंकड़ जवाहिर हो जाते हैं—स्पष्ट।

दिन आये सुदिनके, घन भूंजे पाये मोर। चोरन लड्डू खा लिये, घर भैंस बियानी घोड़—जब दिन अच्छे आते हैं, तब सभी काम अच्छे हो जाते हैं। इसपर एक कहानी है :—एक मनुष्य दिनोंकी गर्दिशका मारा रोज़गारकी तलाशमें विदेश गया। उसको स्त्रीने रास्तेमें खानेके लिये थोड़े लड्डू बना दिये थे जिसमें अनजानेमें कोई विषैली चीज़ मिल गई थी। जब वह एक जङ्गलमें पहुंचा जहां कुछ देर पहिले आग लग चुकी थी, तो वहां उसने कई मोर जलकर भुने हुये पाये। वह भूखा तो था ही, इसलिये भुने हुए मोरोंका मांस भर पेट खाकर एक गाछकी छायामें सो रहा। एक डाकुओंका दल बहुत सा लूटका माल लेकर उधरसे गुज़रा और इसे भी लूटना चाहा। जब इसके पास सिवाय लड्डुओंके और कुछ न पाया तो उसीको लेकर सबने बांट खाया। विषैले लड्डू खाते ही वे सबके सब मर गये और लूटका माल उस मनुष्यको मिल गया। वह अपने घरको लौटा जहां पहुंचकर उसने सुना कि मेरी भैंस बियाई है और उसके घोड़ा पैदा हुआ है जिससे उसे दूध तो मिला ही पर घोड़ा चढ़नेको मुफ़्तमें मिल गया।

दिन ईद और रात शबरात—सदा प्रसन्न रहनेवालेको क०।

दिन कटा फ़रियादसे, और रात ज़ारीसे कटी उम्र कटनेको कटी, पर क्या ही ख़्वारीसे कटी—जिसकी जिन्दगी बुरी तौरसे कटती है उसका कहना है।

दिनका भूला साझहिं आवे, सो भूला नहिं तनिक कहावे—जब कोई अपनी भूल आप ही सुधार ले, तब क०।

दिनको ऊनी ऊनी, रातको चरखा पूनी—जब कामका वक्त हो तब न करे और बेवक्तमें करे, तब क०।

दिनको शरम, रातको बगल गरम—जब कोई स्त्री अपने पतिके सामने घूंघट काढ़ती है, तब क०।

दिनको सोवे, रोज़ी खोवे—दिनका सोना बुरा है।

दिन खसा, मजूर हंसा—इसलिये कि कामसे छुट्टी मिल गई।

दिन जब बुरे आते हैं तो सोना छूये मिट्टी हो जाता है—स्पष्ट।

दिन जब भले आते हैं तो मिट्टी छूये सोना हो जाता है—स्पष्ट।

दिन जाते देर नहीं लगती—स्पष्ट।

> दिवस जात नहिं लागहिं बारा,
> सुन्दरी सिखवन सुनहु हमारा। (तुलसी)

दिन दस आदर पायके, करले आप बखान। जौ लग काग सराध पख, तौ लग तो सनमान—(बिहारी) जब किसीको थोड़े दिनकी साहिबी मिले और वह उसीपर अभिमान करने लगे, तब क०।

दिन दूना, रात चौगुना—आशीर्वाद है। जब किसीकी बेपरिमान वृद्धि होती जाय, तब क०। जो लड़का रोज़ बरोज़ ढीठ या ख़राब होता जाय, उसे भी क०।

दिननके फेरसे सुमेर होत माटीको—जब दिन ख़राब आते हैं तो सोना मट्टी हो जाता है।

> सार सुत सेर होत, निधन कुबेर होत, दिननको फेर होत मेरु होत माटीको। (शिवनाथ)

दिन भले आयंगे, तो घर पूंछते चले आयंगे—बुलाना न पड़ेगा।

दिनों उड़ाती मैं फिरौं, बाटबाटमें धूल। जबसे पीके देशकी, गई डगरिया भूल—स्पष्ट।

दिया गुल पगड़ी गायब—दे० "चिराग गुल"

दिया जगतमें सार है, दिया करो सब कोय, करका धरा न पाइये, जो कर दिया न होय—श्लेषमें दानका महात्म कहा गया है। जो कर दिया न होय=जो हाथमें दीया न हो (अंधेरेमें) और जो हाथसे न दिया होय।

दिया तो चांद था, न दियातो मुंह मांद था—खुशामदीपर क०।

दिया दान, मांगे मुसलमान—मुसलमान ही दिया हुआ दान वापिस कर लेते हैं, क्योंकि मुसलमानोंमें यह रिवाज़ है कि लड़कीके मरनेपर देहज़में दिये हुए धनको फिर वापिस मांग लेते हैं।

दिया फ़ातिहाको, लगे लुटाने—(मु०)दे० "अमानतमें ख़यानत"।

दिया लिया ही आड़े आता है—दान ही अन्त समयमें रक्षा करता है।

दिया हाथ, खाने लगा साथ—दे० "उंगली पकड़ते पहुंचा"।

चंदन चन्दन लाई कलाइन गावन आई तो हो गई गोतिन। (उ० प० गोपियोंका कहना उद्धवसे इति कुबजाके विषयमें)।

दियेका प्रकाश स्वर्ग तक } दिये शब्दमें श्लेष है
दियेकी रोशनी महशर तक } जिसका अर्थ दीपक और दान है। चिराग़ रोशनी जगमें झलक है। दियेको रोशनी महशर तलक है"।

दिलका दिल आईना है—स्पष्ट। जितना तुम हमें चाहोगे उतना ही हम तुम्हें चाहेंगे।

दिलकी थी मैं सादी, जिसका पाती उसका गाती—स्पष्ट।

दिलके फफोले फोड़ना—मनकी ग़ुबार मिटानेपर क०
मयख़ाने बीच आके सीसे तमाम तोड़े,
ज़ाहिदने आज अपने दिलके फफोले फोड़े। (ख़ां साहब)

दिलको दिलसे राहत है—मनको मन पहिचानता है। जब कोई अपने मित्रको याद करता है और वह उसी समय उसके पास आ जाता है, तब क०।

दिलको हो क़रार, तो सब सूझें तेहवार—चितको जब शान्ति हो, तब तिहवार अच्छा लगता है।

दिल जाने सो दिलदार—जो सब दुःखपर ध्यान रक्खे वही अपना है।

दिल दुनियांकी दम धमकीजे, जिसको शादी घो तिसका ग़मकीजे—सबसे रहनेपर क०।

दिलभर खाना, सिर फोड़ लड़ना—जब कोई आपसमें लड़ें खाय नहीं, तब क०।

दिलमें आईको रक्खे सो भड़वा—मनमें आई बात को छिपाना न चाहिए। जो मनका साफ़ होता है वह कहता है।

दिलमें नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सर—जिसके मनमें डर नहीं वह सबकी इज़्ज़त उतारनेको तैय्यार रहता है।

दिल लगा गधीसे तो परी क्या चीज़ है—प्रेममें दोष नहीं दिखाई पड़ते।

दिल लगा मेंडकीसे तो पद्मिनी क्या चीज़ है—ऊ० दे०।

दिल सोज़ ख़ाना तराश—कलेजेमें आग और घरमें छुरी। कुपात्र लड़कोंको कहते हैं।

दिलोंमें ख़ाक उड़ती है फ़क़त मुंहपर सफ़ाई है—कपटीको क०। दिवालियोंको भी क०।

दिल्लगी अच्छी भी है बुरी भी—दिल्लगीमें मन भी बहलता है और दुःख भी होता है। दिल्लगी=हंसी; दिल्लगी=किसीसे दिल लगाना।

(१) ये सतर तो है यही, कि न दुनियासे दिल लगे।
पर क्या करें, जो काम न बे दिल्लगी चले॥ (ज़ौक़)

(२) मज़ा भी आता है दुनियासे दिल लगाने में।
सज़ा भी मिलती है दुनियासे दिल लगानेकी॥ (अकबर)

दिल्लीकी कमाई, दिल्लीहीमें गंवाई—जहां कमाया वहीं ख़र्च कर दिया बचाके घर कुछ न लाये

दिल्लीकी बेटी मथुराकी गाय, कर्म फूटे तो अन्ते जाय—स्पष्ट।

दिल्लीके दिलवाली, मुंह चिकना पेट ख़ाली—दिल्लीके सिफारिसों पर क०। खानेको चाहे न मिले पर कपड़ा बढ़िया ज़रूर पहिनते हैं।

दिल्लीके बांके, जिनकी जूतीमें सौ सौ टांके—ऊ० दे०।

दिल्लीसे मैं आऊं ख़बर कहे मेरा भाई—ऐसेके सामने किसीका हाल कहना जो उससे अधिक जानता हो, तब क०।

दिवस जलाये चन्द्रमा, रैन जलाये सूर। ऐसो साधन नित करे, अमर होय भरपूर—स्पष्ट।

दिवालियेकी साख पतालमें—दिवालियेकी साख नष्ट हो जाती है।

दीदम वले न गोयम—(फा०) देखा है मगर कहूंगा नहीं।

एक मूर्ख मनुष्यने इतनी ही फ़ारसी सीखी थी। एक दिन किसी मुग़लका ऊंट खोया गया। वह उसे खोजता फिरता था। इतनेमें वह मूर्ख उसके सामने आता दिखाई पड़ा। उसने उससे पूंछा कि जिधरसे तुम आ रहे हो उधरको कोई ऊंट तुम्हें जाता दिखाई पड़ा? उसने उसका उत्तर फ़ारसीहीमें देना मुनासिब समझा। वह बोला "दीदम वले न गोयम" यह मुग़ल उसकी बातको हंसी समझ कर उससे मिनती करता जाता था कि मुझे बता दो कि ऊंट किधर गया है, मगर वह यही उत्तर देता जाता था। जब मुग़लको उसकी इस धृष्टतापर क्रोध आया तब उसे पीटने लगा, इसपर बहुतसे आदमी वहां जमा हो गये। जब उससे पूंछा गया कि तू इसे ऊंटका पता क्यों नहीं बता देता, तब वह बोला कि मैंने ऊंटको नहीं देखा तो कैसे बताऊं। वह न तो मुग़लकी बोली ही समझता था न अपने उत्तर का अर्थ ही जानता था, इसीलिये उसकी दुर्गति हुई। जो लोग विदेशी भाषा तो अच्छी तरह नहीं जानते, पर उसी भाषामें विदेशियोंके साथ बात चीत करने लगते हैं; उन्हींपर यह मसल लागू होती है।

दीदार बाज़ी, और मौला राज़ी—आंखसे देखनेसे ईश्वर भी मालूम नहीं होता। ऐसा कहना लम्पटों-का है।

दीन दुनियां दोनोंसे गये—जिसका यहलोक पर-लोक दोनों बिगड़ जाय, उसे क०।

दीनसे दुनियां रखनी मुश्किल है—ईश्वर तो सहज ही प्रसन्न किया जा सकता है पर संसारको प्रसन्न रखना बड़ा ही कठिन है।

दीपककी रविके उदय, बात न पूछे कोय—(वृन्द) बड़ेके सामने छोटेकी क़दर नहीं होती।

दीपकके भावे नहीं, जरि जरि मरैं पतंग—जब कोई किसीके लिये प्राण देनेको तैय्यार हो पर वह उसका कुछ ख्याल भी न करे, तब क०।

(१) लहै न पियसों एक पल, रहै जु देह अनंग।
ज्यों दीपक भावे नहीं, जरि बरि मरे पतंग।
(व्याधि)

(२) चाहि दई कैसी भई, अनचाहतके संग।
दीपक मन भावै नहीं, जरि जरि मरै पतंग।

(३) प्रीत पतंग करी दीपकसों आपै देह दह्यो।
(सूरदास)

दीपक तले अंधेरा होवै—दे० "चिराग तले"

दीपमाल निज लखत नहिं दीपक देखत आन—अपने घरकी दीवाली नहीं देखता दूसरेके घरका दीया देखता है। ईर्षा रखनेवालेको क०। दे० 'अपना टेंटर'।

बिनु बिवाह ही कामवस परकिय दोपहि जानि।
दीपमाल निज लखत नहिं दीपक देखन आनि। (अनूढ़ा)
अपनी दीपमाल शरीरकी कान्ति नहीं देखती किन्तु घरका दीप देखती है कि कब बुझे और मुझे अवसर मिले।

दीवानोंके सिर क्या सींग होते हैं—जब कोई पागलों कीसी बात वा काम करे, तब क०।

दीवारके भी कान होते हैं—गुप्त बातको प्रकाश नहीं करनेके लिये क०।

दीवाल खाय आला, और घर खाय साला—जो सालोंको घरमें रखता है, उसको नसीहतके लिये, क०।

दीवाल रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे—जान बचेगी तो शरीरमें मांस भी हो जायगा। जब कोई आदमी बीमार होकर बहुत दुबला हो जाता है, तब क०।

दीवालीका दीया चाटके आये और होलीकी जूतियां खाकर जायंगे—मनहूस आदमीको क०।

दीवालीकी मिठाई—जो चीज़ देखनेमें तो अच्छी पर गुणमें ख़राब हो, उसको क०। दीवालीमें मिठाई बहुत बिकती है इसलिये हलवाई लोग अधिक लाभके लिये उसमें मीठा बहुत मिला देते हैं और कई दिन पहिलेसे बनाई जाती है इसलिये ख़राब भी हो जाती है।

न रीझें भूलकर भी आप, ज़ाहरकी सफ़ाई पर।
वरक़ सोनेका चिपकाया है गोबरकी मिठाई पर॥

दीवालीकी रातको बूटी बूटी पुकारती है—स्पष्ट

दीवाली के चोखेसे पड़ा मोटा नहीं होता—एक दिनके खानेसे कुछ नहीं होता।

दीवाली जीत, साल भर जीत—जुआरियोंका ऐसा ही विश्वास है।

दीवाली नहीं दिवाला है—दीवालीमें खर्च अधिक होता है, इसलिये क० ।

दीवाली वर्षमें एक दिन—खुशीका दिन रोज़ रोज़ नहीं होता ।

दीसै ज्यों जल माहिं तरंग—पानी और उसकी तरंग यद्यपि जुदी जुदी दिखाई पड़ती है परंतु वास्तवमें एक ही चीज है । जब एक ही चीज़ दो अलग अलग रूपमें दिखाई दे, तब क० ।

(१) गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ।
(तुलसी)

(२) पिय सुमिरन में विरहिन बार । होति सुमति कैयो संचार ।
कहै पखानो बुधि उमंग । दीसै ज्यों जल माहिं तरंग ॥
(संचारी भाव—खो० र० कौ०)

दुखते दांतको उखेड़ना ही चाहिये—जिससे रोज कष्ट मिले, उसे निकाल बाहर करे ।

दुख भरें बी फ़ाख़्ता और कौए मेवे खायँ—जब एककी मेहनतका फल दूसरा भोगे, तब क० ।

दुखमें तो सब कोऊ भजे, सुखमें भजे न कोय । जो सुखमें हरको भजे, तो दुख काहेको होय—स्पष्ट ।

दुखमें सुखकी क़दर होती है—स्पष्ट ।

दुख सुख बहन भाई हैं—बिना दुःखके सुख नहीं होता

दुख सुख निस दिन संग है, मेट सकेना कोय । जैसे छाया देहकी, न्यारी नेक न होय—स्पष्ट ।

दुख सुख मानने हीका है—दुःख और सुखको जितना अधिक करके माना जाय, उतना ही अधिक व्यापता है । विरक्तोंका कहना है । किसी दुखीका दुःख या मोह ममता घटानेके लिये भी क० ।

इसपर एक दृष्टान्त है :—एक वैश्य किसी कार्यवश विदेश चला गया । वहाँ उसे पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो गये । जब वह गया था तब उसके वर्ष दिनका एक लड़का था । अब वह लड़का युवा हो गया और अपने पितासे मिलने चला । उसी अंतरमें उसका पिता भी परदेशसे घरको आता था । संयोगवश वह लड़का एक स्थानपर किसी सरायमें दिनसे ही अच्छी कोठरी देखकर उतर रहा । सायंकालको वह वैश्यभी वहां पहुंचा । जिस कोठरीमें वह लड़का उतरा था वही बनियेको भी पसंद आई और कुछ अधिक देकर लड़केको उसमेंसे निकलवा दिया । सरायमें और जगह न रहनेके कारण लड़का रातभर मैदानमें पड़ा खेदसे रोता रहा, परंतु बनियेने एक भी न सुनी । जब सवेरा हुआ तो बनियेने लड़केको देखा और उससे पूछा कि तू कहांसे आया है ? लड़केने अपना देश, मुहल्ला, जाति और पिताका नाम बताया । सुनते ही बनियेने कहा कि तू मेरा लड़का है । अब उसे गलेसे लगा लिया और जो रात्रिको उसे दुःख दिया था उसका वह अत्यन्त पश्चात्ताप करने लगा । देखो ! वही लड़का रात्रिमें था पर उसे लड़का करके नहीं माना, इसलिये कुछ दुःख सुख न हुआ । प्रातःकाल उसीको लड़का समझकर दुखी सुखी हुआ ।

दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेब टोवे—वकीलोंको क० ।

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे—स्पष्ट ।

दुधार गऊकी लात भी भली—जो काम करनेवाला या कमाऊ पूत होता है उसकी दो बातें भी सही जाती हैं ।

जिन खाय कैसे सहैं, औगुन कहवे बैन ।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेन । (वृन्द)

दुनियाका मुंह किसने बंद किया है—कहतेका मुंह कोई नहीं बंद कर सकता । जब किसीकी निन्दा होती है, तब क० ।

दुनियांको किसी तरह चैन नहीं—दुनियांका स्वाभाव केवल दोष देखना ही है ।

इसपर एक कहानी है :—एक बूढ़ा मनुष्य और उसका लड़का एक कमज़ोर टट्टूपर बैठे जा रहे थे । लोगोंने कहा, "तुम्हें तरस नहीं आता ? दो दो मुस्टंडे कमज़ोर जानवरपर चढ़ बैठे हो !" यह सुनकर लड़का घोड़े परसे उतर गया और पैरों चलने लगा । आगे चलकर लोगोंने बूढ़ेसे कहा, "तू बड़ा निर्दयी है । आप तो घोड़ेपर बैठ गया और लड़केको पैरों चलाता है ।" इसपर बूढ़ा घोड़ेपरसे उतर पड़ा और लड़का चढ़ बैठा । थोड़ी दूर आगे चलकर लोगोंने लड़केसे कहा, "तू बड़ा बेशर्म है, आप तो घोड़ेपर चढ़ बैठा और बुड्ढे बापको पैरों चलाता है ।" तब लाचार दोनों पैदल चलने लगे । अभी जागेपर लोग कहने लगे, "तुम लोग बड़े बेवक़ूफ़ हो, कि घोड़ा रहते पैदल चलते हो ।" अब उन दोनोंने देखा, कि दुनियांको किसी तरह कहे बिना चैन नहीं, तब उन्होंने घोड़े

पैर रस्सीसे बांधकर उसे एक बांसमें लटका लिया और कंधों पर उठाकर वे धीरे धीरे चलने लगे। यह तमाशा देखकर सब कोई तालियां बजाने लगे। आखिर उन लोगोंने झुंझलाकर पुलपरसे घोड़ेको दरियामें फेंक दिया।

दुनियां ठगिये मक्करसे, रोटी खाइये शक्करसे—जो फ़रेबसे दुनियांको ठगते हैं, और मौजसे दिन काटते हैं, उनपर क०। तात्पर्य्य यह है कि सीधे आदमीका गुज़ारा नहीं होता।

दुनियां दुरङ्गी मकारा सराय, कहीं खैर खूबी कहीं हाय हाय—स्पष्ट।

क्वचिद्वीणावादः क्वचिदपि च हाहेति रुदितं। (भर्तृहरि)

दुनियांमें साढ़े तीन दल हैं—चिंउटी दल, टिड्डी दल, बादल, आधेमें और सब।

दुनियां बा-उम्मेद क़ायम है—स्पष्ट।

जो हैं बीमार उन्हें है उम्मीदे शफ़ा,
जो हैं बेज़र उन्हें है उम्मीदे ग़नी।
उम्मीद न हो तो ख़ुद कुछ हो एक खेल,
सच है उम्मीदपर है क़ायम दुनिया (रंजूर)

दुनियां धोकेकी टट्टी है—संसार मिथ्या है। सूफ़ी मज़हबवालोंका तथा वेदांतियोंका कहना है।

गुल शोर बबूला आगहवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनियांको सब धोके की सी टट्टी है॥ (नज़ीर)

दुनियां मुर्दा पसन्द है—जब आदमी मर जाता है तब पीछेसे लोग उसकी तारीफ़ करते हैं, इसलिये क०

दुनियांमें हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा, मर जाना पै उठकर कहीं जाना नहीं अच्छा—आलसीको क०।

दुबला कुनबा सराबकी आस—जब कोई जबर्दस्त किसी निर्बलकी सम्पत्ति छीन ले, तो उसके पास सिवा कोसनेके और कोई आशा नहीं रहती।

दुविधामें दोऊ गये, माया मिली न राम—जब कोई मनुष्य दो काम किया चाहता हो, या दो आदमियोंसे कुछ मिलनेकी आशा रखता हो, पर उनमेंसे एक भी पूरा न पड़े, तब क०।

माया मिली नहिं राम मिले दुविधामें गये सजनी सुनो दोऊ (अज्ञात)

दुरंगी छोड़के इक रंग हो जा, सरासर मोम हो या संग हो जा—दुरंगी चाल छोड़नेके लिये क०। या तो मोमकी तरह नरम हो जाय या पत्थरकी तरह कड़ा हो जाय।

दुलहाको पत्तल नहीं, बजनियेंको थाली—(व०) स्पष्ट। मुख्यपात्रको कुछ न मिले और ऊपरवाला मार ले जाय, तब क०।

दुलहा साथेसजे बरात—दे० 'दुल्हा गल'

दुलारी तिरिया ईंटका लटकन—(व०) स्पष्ट। जब कोई दुलारमें आकर अनुपयुक्त चीज़से काम लेता है, तब क०।

दुवा और दवा नित करनी चाहिए—ईश्वरकी उपासना और आरोग्य रहनेका उपाय रोज़ करना चाहिए।

दुशालेमें लपेटके मारना—मीठी बोलीमें लानतदेना।

दुश्मनकी निगाह जूतीपर—अर्थात् दुश्मन कभी मुंहकी तरफ़ नहीं देखता।

दुश्मनको कभी न छोड़े—जैसे बने शत्रुका संहार ही करना चाहिये।

छलबल समय विचारके, अरि हनिये अनयास।
कियो अश्वत्थामा द्रोण सुत, निशि पांडव कुलनास (वृन्द)

दुश्मन कौन? कि मांका पेट—सगे भाईके बराबर दुश्मन कोई नहीं होता।

दुश्मन सोय न सोने दे—स्पष्ट।

सीखे कहां रसिक रसिकाई, सर निसि काम केलिमें जाई
सांची कही जगत रस भेद, बैरी सोय न सोवन देय।

दुश्मनोंमें यों रहिये जैसे बत्तीस दांतोंमें जीभ—स्पष्ट।

दुष्ट देवकी भ्रष्ट पूजा—स्पष्ट। जो दुष्ट समझानेसे नहीं माने, ठोंकनेसे सीधा रहे, उसको क०।

दुष्ट न छोड़े दुष्टता, कैसी हू सिख दो। धोये हू सौ बेरके, काजल श्वेत न हो—स्पष्ट।

(१) दुष्ट न छोड़े दुष्टता, सज्जन तजे न हेत।
कज्जल तजे न स्यामता, मोती तजे न सेत।

(२) दुष्ट न छांड़े दुष्टता, बड़ी ठौर हू पाय।
जैसे तजै न स्यामता, बिष शिव कंठ बसाय॥ (वृन्द)

दूधका उफान ठंढे जलके छींटेसे दब जाता है—ठंढी बातोंसे गुस्सा दूर हो जाता है।

मधुर वचनतें जातु मिट, उत्तम जन अभिमान।
तनक सीत जलसों मिटै, जैसे दूध उफान। (वृन्द)

दूधका जला छाछ फूंक के पीता है—एक बार किसी काममें बहुत हानि होनेसे दूसरी बार सामान्य काममें भी मनुष्य सावधान हो जाता है, ऐसे समयपर क०।

(१) भई अनोखी लखो सुचाल, दुखते होइ प्रथम रतिकाल
पीय संग सुनि रीवे फूके, दाझ्यो दूध छाछ ज्यों फूंके।
(लो० र० को०)

(२) 'जबसे मुझे यारीसे सरर पहुंचा है,
अपनी सायेसे भी मुझे खटका है।
जल जाती है गरम दूधसे जिसकी जुबां,
वह छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है।' (नज़ीर)

दूधका दूध पानीका पानी—इन्साफ़ करने पर क०।

दूधका सा उबाल आया और चला गया—अव्यवस्थित चित वालेके क्रोधपर क०।

दूधकी नदी बहना—चंचलाश्री रहना।

दूधकीसी मक्खी निकाल कर फेंक दी—बिल्कुल अलग कर दिया, कोई वास्ता न रखा।

दूध पूत क़िसमतसे-धन और औलाद भाग्यसे होती है।

दूध फटे कांजी परे, सो फिर दूध बने न—(वृन्द) बिगड़ी बात नहीं सुधरती, मन फटनेसे फिर नहीं मिलता।

सहज मिले मन मिलत है, मन मिलतें न मिलाय।
दूध दही तें जमत है, कांजी तें फट जाय। (वृंद)

दूध भी धौला, छाछ भी धौली—जब दो मनुष्य या चीज़ें देखनेमें तो एक सी हों पर उनके गुणमें बहुत अन्तर हो, तब क०।

पिय दक्षिण समता गहि टेक, तियगण मोहित करे विवेक
कहै पखानी ओ बुधिवंत, दूध स्वेत, अरु छाछौ स्वेत।
(दक्षिणनायक)

दूधों नहावो पूतों फलो—आशीर्वाद है। लक्ष्मी और औलादकी वृद्धि हो।

दूरके ढोल सुहावने—दूरकी बातें अच्छी लगती हैं।

(१) बनि दूर भट ह्वाँ हया भटकी लगें दूरके ढोल सुहावनेरी
(२) सुनि नीके चतुराई बाम, जो लों परो कुलो नहिं काम,
तौलौं धन्नि ज्यों कहें सुजान, दूरके ढोल सुहावे कान।

दूर गये की आस क्या—जो विदेश गया उसका क्या ठीक कि कब आवे।

दूल्हा गैल बरात—सब बराती दूल्हेके पीछे चलते हैं, जैसे अफ़सरके पीछे फौज।

ज्योति पाछिलो सुधिकर लखो, सबके पियबिनु।नीरस लखौ
कहै पखानो जग विख्यात, कौटे दूलह संग बरात।

दूल्हा ढाई दिनका बादशाह है—क्योंकि ब्याहके समय वही मुख्य समझा जाता है।

दूल्हा दूल्हन पाय, सहबाला लातें खाय—स्पष्ट। सहबाला=जो लड़का दूल्हेके पीछे घोड़ीपर बैठता है; साथका खेलनेवाला। अक्सर छोटा भाई ही सहबाला बनता है।

दूल्हा दूल्हन मिल गये, झूठी पड़ी बरात—जब दो मनुष्य आपसमें लड़ें और बहुतसे लोग उनकी तरफ़ हो जायँ फिर जब वे दोनों आपसमें मिल जाते हैं, तो उनलोगोंको कोई नहीं पूछता।

दूसरेका सेंदुर देख अपना कपाल फोड़े—जो दूसरेकी बढ़ती देखकर जल मरे, उसे क०।

दूसरेकी आस, सदा निराश—जो दूसरेकी आशा रखता है, उसकी आशा पूरी नहीं होती।

दूसरोंका ऐब बड़ी जल्दी दीखता है—जब किसी को अपना ऐब न दिखाई पड़े, तब क०।

देखतकी धन नौनी, रांटा करें पौनी—जो अपनी सुन्दरताके घमण्डमें कुछ काम न करे, उसे धिक्कारनेको क०।

देखता है सो कहता नहीं कहता है सो देखता नहीं—आंख और जीभपर क०। दे० "गिरा अनयन नयन बिन बानी"।

देख तिरियाके च्याले, सिर मुंड़ा मुंह काले।

देख मर्दोंकी फेरी, मां तेरी कि मेरी—

किसी समय एक पुरुष और उसकी स्त्रीमें इस बातकी बहस हुई कि स्त्री और पुरुष दोनोंमें कौन बुद्धिमान और चालाक है। स्त्री अपनी जातिकी प्रशंसा करती और पुरुष अपनेको श्रेष्ठ बतलाता था। एक समय वह स्त्री बहाना करके बीमार पड़ी। उसके स्वामीने बहुत इलाज किया परन्तु उसे आराम न हुआ। एक दिन उसने अपने स्वामीसे कहा कि यदि अपनी मांको सिर मुंड़ा सबेरे

सवार कराके मेरे सामने लाओ तो मैं अच्छी हो जाऊंगी अन्यथा नहीं। वह समझ गया कि वह मुझसे चालाकी करना चाहती है। इसलिये उसने अपनी ससुराल जाकर सासुसे कहा कि तुम्हारी लड़की मरणापन्न है, यदि तुम सिर मुड़ाकर गधेपर सवार हो उसके सामने चलो तो वह आराम हो सकती है इसके सिवा दूसरा कोई इलाज नहीं है। मांको लड़कीकी माया बहुत होती है। उसने सिर मुड़वा लिया और गधेपर चढ़कर लड़कीके दरवाजे पर आई। उस मनुष्यने अपनी स्त्रीसे कहा कि "मां, आ गई"। उस स्त्रीने अपनी सास समझ हंसकर पहिली आधी मसल कही, जिसके उत्तरमें उसके स्वामीने पिछली आधी मसल कही। यह सुन वह अपनी मांको ही ऐसी बुरी अवस्थामें देख बहुत लज्जित हुई।

देखतेकी लुगाई अंधा ले गया—आश्चर्यकी बात पर क०।

देख देख चद्दरको लूट, कौन करौटा बैठे ऊंट—दे० ऊंट किस करवट बैठे।

देखना सो पेखना—दोनों एक ही बात हैं।

देखनेको बुलबुल निगलनेको दोमरिया बड़—जो मनुष्य देखनेमें तो कमज़ोर हो पर काम सहज़ोरका करे, उसे क०।

देखनेमें ना सो चखनेमें क्या—जो देखने लायक़ नहीं वह खाने लायक़ कैसे होगी।

देख पराई चूपड़ी, गिर पड़े बेईमान, एक घड़ीकी बेहई, दिन भरका आराम—चटोरे वा खानेके लालचीको कहते हैं।

देख पराई चूपड़ी, मत ललचावे जी। मिस्सी कुस्सी खायकर, ठंडा पानी पी—ऊ० दे०।

देखा देख सेठनियांकी, घरियक सीख ओठनियांकी बाहर पड़ौसनकी और घरमें जिठानीकी सीख माने।

देखा न भाला, सदके गई खाला—स्पष्ट। झूठी सहानुभूति दिखानेपर क०।

देखा भाला तोपची औ चपरा सैयद होय—तोपची कहला कर सैयदको हानि पहुंचावे। बल पाकर भले आदमीको सतावे, तब क०।

देखे भाले शेख़जी औ चिड़ियें सईद होयं—बगुला भगतको क०।

देखा मीरदाद तेरा रंवा, गाजरोंकी रेल पेल रोटियोंका चंवा—झूठा महत्त्वा दिखानेवालोंपर क०।

देखा शहर बंगाला, दांत लाल, मुंह काला—बंगाली पान बहुत खाते हैं और उनका रंग काला होता है, इसलिये क०।

देखा सीखी कीना जोग, छीजी काया बाढ़ा रोग—जो दूसरेकी देखा देखी करके कष्ट पाते हैं उनको क०।

देखा सो खाया, न मुंह पांव जोगा—जो देखा सो खा लिया, मुंह पांवके लिये कुछ भी न बचा।

देखिये दीदार, और मारिये पैज़ार—(मु० ज०) वेश्याओंके लिये क०।

देखी ठोक बजाके दुनियां तालिब ज़रकी—दुनियांमें सभी धनकी ख़्वाहिश रखते हैं।

देखी तेरी कालपी और बावन पुरा उजाड़—कोरा नाम तत्व कुछ नहीं।

देखी पीर तेरी करामात—ऊ० दे०।

देखेके बौरहिया आवें पांचों पीर-(पू० ज०) देखनेमें पागल लगती है, पर विचित्र गुणोंसे भरी हुई है। जो देखनेमें अनाड़ी जान पड़े पर गुणसे सम्पन्न हो, उसे क०।

देखेको बूढ़ी, कामको आंधी-दे० 'देखनेको बुलबुल...

देखे राही, बोले सिपाही-स्पष्ट राहगीर सिर्फ देखता रहता है परन्तु काम सिपाही ही करता है। चोरी वा मारपीटके समय क०।

देखो मियांके छन्द वन्द, फाटा जामा तीन बन्द-लिफाफियेको क०।

देता भला न लेता—देखनेवाला अच्छा, लेनेवाला अच्छा नहीं।

देता भूले न लेता—(व्य०) सीधे हिसाबपर क०।

दे दालमें पानी, पैगा बह चले चुहानी—(पू०) दालमें ऐसा पानी डालो जिसमें काठ तैरने लगे। पड़ौसीकी नज़र न लगे, इसलिये क०।

दे दिलावे देदे करे, वह प्राणी भवसागर तरे—स्पष्ट।

दे दुआ समध्यानेको, नहीं फिरती दो दो दानेको—(ज०) स्पष्ट। जिसकी बदौलत खानेको मिले उसका मान्य करना चाहिये।

दे दे बारूदमें आग, किसकी रही और किसकी रह जायगी—अन्याय क०।

देनहार समरत्थ है सो देवे दिन रैन—ईश्वर ही सबको देता है; मनुष्य जो कुछ किसीको देता है सो उसीकी प्रेरणासे देता है।

गर वह दिलाया चाहे तो दुश्मनसे जा दिलाय।
श्री जो न दे तो दोस्त भी फिर अपना मुँह छिपाय॥
बिन हुक्म उसके रोटीका टुकड़ा न हाथ आय।
गर चिल्लू पानी माँगे तो हरगिज़ न कोई पिलाय॥
ग़ैर अज़ ख़ुदाके किसमें है क़ुदरत के हाथ उठाय।
मक़दूर क्या किसीका वही दे वही दिलाय॥ (नज़ीर)

एक मनुष्य सदैव सदावर्त दिया करता था, जब वह किसीको कुछ देता तो आँखें नीची कर लेता था। किसी फ़क़ीरने यह देखकर कहा:—

'ऊँचे पँगुल दैत हौ नीचे करके नैन।
कासों सीखी सीखना ऐसी विधिसे दैन'।

उस दाताने जवाब दिया:—

'देनहार समरत्थ है सो देवै दिन रैन।
लोग नाम मेरा कहैं तासों नीचे नैन'॥

देना और मरना बराबर है—(व्य०)(१) देनदार शरमके मारे आत्मघात तक कर बैठता है। (२) सूमको भी कहते हैं जिसे देनेके नाम मौत आती है।

देना थोड़ा, दिलासा बहुत—जो आशा तो बहुत दे पर दे थोड़ा, उसे क०।

देना पठानोंका, लेना जुलाहोंका—(व्य०) पठान अपना पावना तुरत अदा कर लेता है, और जुलाहोंसे रक़म मुश्किलसे वसूल होती है क्योंकि वे बहुत ग़रीब होते हैं।

देना भला न बापका, बेटी भली न एक—देना किसीका भी अच्छा नहीं और बेटी एक भी अच्छी नहीं।

देना लेना काम डोम धाड़ियोंका मुहब्बत बड़ी चीज़ है—नादिहन्दोंको क०।

देनी पड़ी सुनाई, तो घटा बतावे सूत—जो देनेके समय अलसेट करे, उसे क०।

देनेके नाम तो दरवाज़ेके किवाड़ भी नहीं देते—सूम वा नादिहन्दोंको क०।

देनेवालेसे दिलानेवालेको ज़्यादह सवाब है—स्पष्ट।

देरायद दुरुस्तायद-(फ़ा०) जो काम देरसे होता है वही ठीक होता है।

देवता बासनाके भूखे हैं—देवता कुछ खाते नहीं वे सच्चे विश्वाससे प्रसन्न होते हैं।

देव सबै फल देत हैं, जाको जैसो भाय।
जैसे मुख करि आरसी, देखौ सोइ दिखाय।
(छन्द)

देवाको रिन मिले सुहेला, अन देवाको मिले न धेला—(व्य०) जो लेकर दे उसको मुफ़्त उधार मिलता है और जो लेकर न दे उसे अधेला भी नहीं मिलता।

देवान धूपान, नीचान कूटान—देवता धूप देनेसे और नीच प्रहार करनेसे सन्तुष्ट होते हैं।

देवाय न पित्राय—व्यर्थ ख़र्च करनेपर क०। सूमके धनपर, भी क०।

(१) न देवाय न विप्राय न बन्धुभ्यो न चात्मने।
कृपणस्य धनं याति वह्नि तस्कर पार्थिवे॥
(२) खाय न खर्चै सूम धन, चोर सबै लैजाय।
पीछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ मलै पछताय॥ (छन्द)

देवी दिन काटे लोग परवा माँगे—स्पष्ट।

देवी पित्तर, मेरे पेटके भित्तर—पेट भरनेसे ही देवताओंकी सुधि आती है।

देवी मज़ारका कौन साथ—जब दो बेमेल काम किये जाँय, तब क०।

देवेगा सो पावेगा, बोवेगा सो काटेगा—स्पष्ट।

देवेमें कंजूस हैं, धर्मदास है नाम—नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

देश चोरी, परदेश भिक्षा—जब कोई बहुत दरिद्र हो जाता है, तब कहता है। चोरीमें बिना जाने सफलता नहीं होती, इसी प्रकार परदेशमें भीख माँगनेमें लज्जा नहीं आती।

अवधि मदी तुलसी हितनाम, मिलेसु आनवाम संग त्याग
कह्यो कहावत ज्यों बुधिनेश, चोरी देस भीख परदेश।

देशपर चढ़ाव, सिर दुखे न पाँव—घर जानेके लिये न सिर दुखता है न पाँव।

देशा देशा चार, कुला कुला व्यवहार—देश देशकी चाल और कुल कुलका व्यवहार अलग।

अलग होता है।

देशी कुतिया विलायती बोली—जब कोई मूर्ख विदेशी भाषा बोले, तब क०।

देशी गधा पंजाबी रेंक—उ० दे०।

देह धरेके दंड हैं—शरीर रहनेसे ही बीमारी होती है। बीमार आदमीको क०।

देहमें न लत्ता, लूटेके कलकत्ता—(पू० ज०) बिना पूंजीवालेको क०। तात्पर्य यह है कि कलकत्तेमें रोज़गार करनेके लिये पूंजी चाहिये, परन्तु मारवाड़ियोंने इस मसलको झूंठी साबित कर दिया।

दैव दैव आलसी पुकारा—आलसी मनुष्य दैव या भाग्यकी दुहाई दिया करते हैं।

कादर मन कर एक अधारा, दैव दैव आलसी पुकारा। (तुलसी)

दैवन मारे हाथसे, कुमति देत चढ़ाय—दैव किसीको हाथसे नहीं मारता। जब समय खराब आता है, तब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

दैवो अवसरको भलो, जातें सुधरे काम। खेती सूखे बरसियो, घनको कौने काम—जब ज़रूरत हो उस वक़्त चीज़ न मिले, तब क०।

दैवो दुर्बल घातकः—(सं०) दैव भी दुर्बलको ही कष्ट देता है। दे० 'मरेको मारे........'

हरत दैवहू निबल बल, दुर्बल हीके प्रान।
बाघि सिंह को छाड़ि कै, देत छाग बलदान॥ (वृन्द)

दो क़साइयोंमें गाय मुरदार—स्पष्ट। क्योंकि वह आप ही मर जाती है।

दो ख़समकी जोरू, चौसरकी गोट—जिसका दाव पड़ा उसीने मार ली।

दो घरका पाहुना भूखा रह जाता है—साझेका काम बहुत खराब होता है।

छोड़ि पिया रे नारि गृह, तू न मिली सुख दाय।
ज्यों दुई घरको पाहुनो, भूखो ही रहि जाय।

दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आना कानी—मुसलमान लड़ाके बहुत होते हैं, इसलिये क०।

दो चूनके भी बुरे होते हैं—जब कोई एक साथ दो आदमियोंसे लड़नेको तैयार हो, तब क०।

दो जोरूका ख़सम चौसरका पासा—एक तरफ़से दूसरी तरफ़ ढकेल दिया जाता है, इसलिये क०।

दो दिल राज़ी, तो क्या करेगा क़ाज़ी—(मु०) जब दो लड़के आपसमें रज़ामन्दी कर लें, तब क०।

दोना पात बबूरके, तामे तनक पिसान। लाला जू लागे करन, कबहुं कबहुं यह दान—कंजूसताकी हद कही गई है।

दोनों आँख बराबर—जब दोनोंको समान बताना हो, तब क०।

कहा भरम उपज्यो मन बाम,
पिय सों सरस न चाहति स्याम।
सब बखाने यह बुधि आगर,
मेरे तो दोउ आंख बराबर।

दोनों खोई जोगिया, मुद्रा और आदेश—जब कोई अपने धर्म या उद्देश्यसे च्युत होनेपर निन्दित या अपमानित हो, तब क०।

दोनों तरहसे मौत है—जब दो कामोंमेंसे कोई भी काम करे तो उसमें हानि या बदनामी होती दिखाई दे और एक काम किये बिना पिंड न छूटे; तब क०।

'कह अंगद लोचन भरि बारी,
दुहुं भांति भई मृत्यु हमारी।' (तुल०)

दोनों दीनसे गये पाँड़े, हलुआ मिला न मांड़े—जब कोई लोभवश एक कामको छोड़ दूसरा करने जाय और वह भी न हो, तब क०।

दोनों पलले बराबर—दे० 'दोनों आंख बराबर।'

दोनों बैरी दीनके, रांगड़ और शैतान। बुरा करावे औरसे, और आप बुरेसे काम—रांगड़ और शैतान दोनों बेईमान होते हैं आप तो पाप करते ही हैं दूसरोंसे भी कराते हैं।

दोनों हाथ लड्डू हैं—जब दोनों तरफ़से फ़ायदा हो, तब क०।

मिलो सु बहुत जतन जो बाल,
दौरि दोऊ कुच गहि लयें लाल।
मनो पखानो जो जग गायो,
दोऊ हाथनि लाडू पायो।

दोनों हाथोंसे ताली बजती है—जब दो आदमियों में लड़ाई होती है, तब दोनोंको दोषी बनानेके लिये क०।

'कैसे पिय सों करौं पियार, वे रति मानैं नित नवनार।
सुन्यो पखानो नाहिन प्यारो, दुई हाथ सों बाजे तारी।
(लघुमान)

दोनों हाथोंसे पगड़ी संभालनी पड़ती है—जब कोई मुश्किलसे अपनी इज़्ज़त बचाता है, तब क०।

दो मुल्लामें मुरग़ी हराम—(मु०) मुरग़ी ज़िबह करनेपर मुल्लाको कुछ दक्षिणा दी जाती है, तब वह हलाल होती है, पर जब दो मुल्ला आपसमें लड़ने लगें और बिना कुछ लिये मुरग़ी उनके हाथोंसे मारी जाय तो हराम होती है।

दोमें तीसरा, आँखोंमें ठीकरा—जब दो आदमी आपसमें बात करते हों और तीसरा बीचमें बोल उठे, तब क०। तीसरेका बोलना बुरा मालूम पड़ता है।

दो रक़ाबा घोड़ा बख़शीका दामाद—जो बड़ेका आश्रित रहता है, उसपर क०।

दो सिर इकट्ठे करनेका बड़ा सवाब है—किसीका ब्याह करा देनेमें बड़ा पुण्य है।

दोस्त आवे तो हड्डी बिकाय—दोस्तके आनेपर बहुत ख़र्च होता है।

दोस्तका दुश्मन दुश्मन, और दुश्मनका दुश्मन दोस्त—स्पष्ट।

दोस्त मिले खाते, दुश्मन मिले रोते—दोस्त खाता और दुश्मन रोता भला।

दोस्तीमें लेन देन बैरका मूल—स्पष्ट।

दोस्तोंका हिसाब दिलमें—स्पष्ट।

दोही चीज़ हैं बेटा या बेटी—जब किसीके बेटी हो और उसका मन छोटा हो, तब क०।

दोही चीज़ हैं हार या जीत—जब कोई हार जाय तब उसकी हिम्मत मिटानेको क०।

दौड़ चले न चौपट गिरे (वा औंधा गिरे)—स्पष्ट।

दौड़ो कोस हज़ार लौं, बसे लक्ष्मी पास। बिना दिये रघुनाथके, मिले न तुलसी दास—स्पष्ट

दौलत अंधी होती है—स्पष्ट।

समरक़न्दके बादशाह अमीर तैमूर जब दिल्लीमें आये, तब उनके पास एक अंधा गवैया आया। बादशाहके पूछनेपर उसने अपना नाम दौलत बताया। बादशाह बोले कि कहीं दौलत भी अंधी होती है? उसने जवाब दिया, 'जहाँ पनाह! अगर दौलत अन्धी नहीं होती तो लंगड़ेके यहां क्यों आती।' उसको इस हाज़िर जवाबीपर बादशाह बहुत खुश हुए और उन्होंने उसे बहुत सा इनाम देकर बिदा किया। याद रहे कि तैमूर बादशाह लंगड़े थे इसीलिये वे तैमूरलंग करके मशहूर हैं। दौलतमंद आदमी ग़रीबोंके दुखको नहीं देखता, इसीलिये क०।

दौलत मंदकी डेवढ़ी सब सिजदा करते हैं—रुपयेवालेकी देहली सब चूमते हैं अर्थात् सब रुपयेवालेकी ख़ुशामद करते हैं।

द्वार धनीके पड़ रहे, धका धनीके खाय—स्पष्ट।

ध

धड़ी भरका सिर तो हिला दिया, पैसे भरकी ज़बान न हिलाई गई—जब किसी मनुष्यको सलाम या प्रणाम किया जाय और वह गर्दन हिला दे पर मुंहसे उसका जवाब न दे, तब क०।

धधायगा सो बुतायगा—जो आग ज़ोरसे जलती है वह जल्दी बुझती है। जो बहुत अत्याचार करता है उसका विनाश जल्दी ही होता है।

धनका धन गया मीतकी मीत गई—दे० 'दोस्तीमें लेन देन'।

धनके पन्द्रह मकर पचीस, जाड़ा चिल्ला दिन चालीस—पन्द्रह दिन धनके और पचीस दिन मकरके यह चालीस दिन जाड़ा ज़ोरसे पड़ता है। इसीको चिल्ला क०।

धन चाहे तो धर्म कर, मुक्ति चाहे भज राम—स्पष्ट

धन जोरनके काममें, योंही उमर न खो। मोती बरसे मोलके, कभी न ठीकर हो—(उप०) धन जोड़ा चाहो तो वृथा उमर मत खो। कंकड़ कभी बेशक़ीमती मोती नहीं हो सकते। इस लोकमें

जो धन जमा होता है, वही सच्चा धन है।

धन दे जीको राखिये, और जी दे राखे लाज— (नीति) धन देकर प्राणकी रक्षा करे और प्राण देकर इज्ज़त बचाना चाहिये।

धन नाते हुक्का, पोशाक नाते जुल्फ़— बहुत निर्धन आदमी हो पर ऊपरसे लिफ़ाफ़ा बनाये रहे, तब क०।

धन बाढ़े मन बढ़ि गयो, नाहिन मन घट होय। ज्यों जल संग बढ़े जलज, जल घटि घटे न सोय— जब कोई धनी मनुष्य निर्धन हो जाय और उसकी क़ादर पहिलेकी सो ही बनी रहे, तब क०।

बढ़त बढ़त सम्पत सलिल, मन सरोज बढ़ि जाय।
घटत घटत पुनि ना घटे, बरु समूल मिलजाय॥ (बिहारी)

धनमें धन, तीन आंटी सन— नहींके समान। बहुत ग़रीबको क०।

धनवन्तोंके कांटा लगा, दौड़े लोग हज़ार। निर्धन गिरा पहाड़से, कोई न आया कार— धनवानके सब सगे हैं ग़रीबका सगा कोई नहीं।

धनि रहीम जल पंकको, लघु जिहि पियत अघाय उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय— धनवान होना उसीका सार्थक है जिससे किसीका काम निकले।

धन्ना सेठके नाती बने हैं— थोड़ी पूंजीवाला अपनेको बड़ा साहूकार समझे, तब क०।

धन्नू करें बजाजी, नौ गज लावें दस गज बेचें तभू गाहक नहिं राजी— (व्य०) अनाड़ी या अभागे दूकानदारको क०।

धन्य जुलाहन तेरा हिया, जीता खसम धरतीमें दिया— स्पष्ट।

धन्य मेरी बालको, जिन बाप चढ़ाये पालकी— (च०) जब किसी मनुष्यकी लड़की या जमाईकी बदौलत प्रतिष्ठा होती हो, तब व्यंगसे क०।

आपने भाग कछू न भयो भगिनी भग भाग तुरंग चढ़े।

धप्पा लगाकर माफी मांगना— नुकसान पहुंचाकर आरजू मिनती करनेपर क०।

छांड़ो अब झूंठा मनुहारि, तब दइ मद्दा मारकी मारि।
कहै पखानो जेहि रस चाह, प्रथम डुबाय गहत बर बांह॥
(प्रौढ़ाकी सुरतांत। लो० र० कौ०)

धमकाया धनिया धर दी डेढ़सेरी— जब कोई किसीको धमकाके पावनेसे अधिक अदा करे, तब क०। "दवा पाई गुजरी"।

धमधूसड़ काहे मोटा, घनंज करें न आवे टोटा— दे० 'काहे तुम'।

धर चल सिर कोल्हूकी लाट, मर्द चले साथ कुचालके बाट— स्पष्ट।

धरजा मरजा— विश्वासघातीको कहते हैं जिसकी यही इच्छा रहती है कि कोई उसके पास धरोहर रख जाय और मर जाय, तो उसका धन पचा लें।

धरती माता बोझ संभाले— आशीर्वाद है, जिसका अर्थ है दीर्घजीवी हो।

धरनीकी माँ सांझ— सन्ध्या होनेपर सभीको शान्ति मिलती है। दिनभर मेहनत करके सन्ध्या बाद सभी पेट भरके खाते हैं इसलिये सन्ध्याको मा कहा।

धरनेकी मर्य्यादा सांझ— सभी कामकी सीमा है। कोई धरना भी दे तो सन्ध्या तक हद है।

तजी केलि अब नन्दकिशोर, लखौ भई उजियारी भोर।
सुनिहो लोक कहति रस सांझ, धरनेकी मरजादा सांझ॥

धराका स्वभाव यही तुलसी जो फरा सो झरा औ बरा सो बुताना— दे० "जो फलेगा सो"।

धर्मका धर्म, कर्मका कर्म— जब स्वार्थ परमार्थ दोनों सिद्ध हों, तब क०।

धर्मकी जय होती है— जब कोई धर्मसे जीता चाहे, तब क०। यतो धर्मस्ततो जयः

धर्मके दूने— (व्य०) बिना धोका दिये जब दूना लाभ हो, तब क०।

धर्म छोड़ धन कोई खाय— जब कोई बेईमानी करके किसी दूसरेको प्राप्य धन आप ले ले, तब क०।

धर्म पाप सब मनुषके धोवत है इस तौर, जल साबुन ज्यों धोत हैं सब कपड़ोंका घोर— जैसे साबुनसे कपड़ोंका मैल कटता है, वैसे ही धर्मसे मनुष्यका पाप कटता है।

धर्म रहे तो ऊसरमें जुरे— धर्मके ज़ोरसे ऊसरमें भी खेती हो सकती है।

धर्म सनेह उभयमति घेरी, भई गति सांप छछुन्दरकेरी— दे० "उगले तो अंधा।"

धाओ धाओ धाओ, कर्म लिखा सो पाओ—चाहे कितनी ही दौड़ धूप करो, मगर मिलेगा वही जो नसीबमें लिखा है। आलसियोंका कहना है।

(१) चखने को मुद्दतों गर्दिश की पाया एक मित्र,
रिज़क इन्सांके मुक़द्दरसे सिवा मिलता नहीं॥

(२) करम कमंडल करगहे, तुलसी जहं लगि जाय।
सागर सरिता कूप जल, बून्द न अधिक समाय॥

धान कहे मैं हूं सुलतान, आये गयेका राखूं मान—स्पष्ट।

धानका गांव पुआलसे जाना जाता है—(कु०) गांवके बाहर जो पुआलका ढेर लगा रहता है उससे जाना जाता है कि इस गांवमें धान हैं। ऊपरके ठाट बाटसे मनुष्यकी हालत जानी जाती है।

धान पान पनियउले, और नान्ह जात लतियउले—(पू० कु०) धान और पान अच्छी तरह सींच देनेसे ठीक रहते हैं और नीच लतियानेसे ठीक रहता है। दे० "काटे पे"

धान पान पानी, कातक सवाद जानी—धान पान और पानीका सवाद कात्तिकमें मिलता है।

धान बिचारे भल्ले, जो कूटा खाया चल्ले—धान बहुत अच्छी चीज़ है। कूटा खाया और अपना रास्ता लिया। व्यंगसे ऐसा कहा गया है। वास्तव में धानका कूटकर चावल निकालना और उसका भात करके खा लेना ऐसा सहज नहीं है।

इसपर एक कहानी है। एक सरायमें दो मुसाफ़िर ठहरे थे। एकके पास थोड़ा सत्तू था और दूसरेके पास कुछ धान थे। जब उन लोगोंकी आपसमें खाने पीने की बात चीत हुई तो एकने कहा कि मेरे पास सत्तू है मैं उसीको खाकर यात्रा आरंभ कर दूंगा। दूसरा बोला कि तुम्हें बहुत देर लगेगी, मेरे पास धान है जिसे मैं तुरंत कूट काटके खा लूंगा क्योंकि "सत्तू मन मत्तू जब घोलो तब खाओ और धान बिचारे भल्ले कूटे खाये चल्ले।" पहिला मनुष्य बहुत सीधा था, इसलिये वह दूसरेके झांसेमें आ गया और उसे अपना सत्तू देके बदलेमें उससे धान ले लिया। वह तो सत्तू घोल घाल कर खाके चलता बना और यह बिचारे धान कूटते ही रह गये। जो मनुष्य झूठा तर्क करके झूठको सच बनाना चाहता हो, उसपर क०।

धान सूखता है कौआ टरटराता है—(पू०अ०)स्पष्ट।

धाये धन न मांगे पून—दौड़नेसे धन और मांगनेसे लड़का नहीं मिलता, जो भाग्यमें है वही मिलता है

धावेगा सो पावेगा—दौड़ेगा (मेहनत करेगा) उसे मिलेगा वा जो ध्यावेगा (आराधना करेगा) उसे फल मिलेगा।

धींग धींगो बल्लूका राज—ज़बर्दस्ती बल्लूके राज में होती है। बल्लू एक जाट राजा था जिसके राजमें "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली मसल चरितार्थ होती थी। धींग धींगी करनेके समय क०।

धी छोड़ दामाद प्यारा—लड़कीसे जमाई प्यारा होता है। हिन्दुओंमें ऐसी ही चाल है। अंगरेजोंमें ठीक इसका विपरीत है। वह कहते हैं कि लड़का तभी तक अपना लड़का रहता है जब तक उसका विवाह नहीं होता। परन्तु लड़की जब तक जीती है तब तक अपनी लड़की रहती है।

धी, जमाई, भानजा, यह तीनों नहीं आपने—क्योंकि इनके क़रीबी रिश्तेदार दूसरे ही हैं।

धी न धौंकड़ अल्ला मियांका नौकर—मोटा आदमी ईश्वरका नौकर है। मोटा आदमी आलसी होता है, उससे कुछ काम नहीं हो सकता, वह ईश्वरके भरोसे पर ही रहता है, इसलिये क०।
(२) धी न धौंकड़=बेटी न बेटा।

धी न धियाना, आपही कमाना, आपही खाना—(ज०) उसके लड़की है न जमाई, आपही जो कमाता है आपही खाता है।

धी न बेटी, उधल गई समधेटी—(ज०) उसके कोई लड़की नहीं है तो भी कहती है कि मेरी लड़कीकी ननद निकल गई। समधन=लड़कीकी सास। समधेटी=उसकी लड़की। बिना सिरपरकी बात करना।

धी पराई, आंख लजाई—लड़कीका विवाह कर देनेपर समधीसे दबना पड़ता है।

धी बेटी अपने घर भली—(ज०) लड़कियोंका अपने (अपने स्वामीके) घरमें रहना अच्छा।

धीमरके बस पड़ी—कुरूप पर क०।

धी मरी जमाई चोर—(पं०) लड़की मरनेपर जमाई चोरके समान हो जाता है, यह

तभी कही जाती है जब अपनी लड़कीके कोई लड़कावाला नहीं रहता। पूरी मसल यह है:—
"धी मरी जमाई चोर, टूट गई डाली उड़ गया मोर।"

धी मारू पुतोहले तरास—(मै० ज०) बहूको डराने के वास्ते मैं अपनी लड़की को मारती हूं। एकका शासन करनेसे दूसरेको चेत होता है।

धीया तोको कहूं बहुरिया तू कान धर—अर्थात् तू भी सीखले। ऊ० दे०।

धीया पूतके न गाँतो, घिलैयाके गाँती—(प०ज०) बेटा बेटीके लिये तो कपड़े नहीं मगर उसकी बिल्लीके लिये कपड़ा मौजूद है; बिल्लीसे तात्पर्य्य स्त्रीका है।

धीरज धरिय तो पाइय पारू, नाहित बूड़त सब परिवारू—(तुलसी) धीरज धरनेके लिये क०।

धीरज धर्म मित्र अरुनारी, आपद्काल परखिये चारी—(तुलसी) धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इनकी परीक्षा विपत्ति पड़नेपर करनी चाहिए।

धीरज बनिज उतावल खेती-व्यापार धैर्य्य से और खेती जल्दीकी अच्छी होती है।

धीरा काम रहमानी, शिताब काम शैतानी—धीरा काम अच्छा और जल्दीका काम बुरा होता है।

धीरा सो गंभीरा—दे० "उतावला सो बावला"

धनी पानीका संयोग है—खाने पीनेमें साझा है।

धूप पड़त जो दायें चलावे, रासनाज वह तुरत उठावे—(कृ०) स्पष्ट।

धूपमें बाल सफ़ेद नहीं किये हैं—उमर योंही नहीं गँवाई है। जब किसी तजुर्बेकार आदमीको कोई धोका दिया चाहे, तब यह कहता है। तात्पर्य्य यह है कि मैं तुम्हारी चालोंको समझता हूं।

धूमउ तजइ सहज करुआई, अगरु प्रसंग सुगन्ध बसाई—(तुलसी) सुसंगतसे दुष्ट भी अपनी दुष्टता छोड़ देता है।

धूम कुसंगति कारिख होई, लिखिय पुरान मंजु मसि सोई—(तुलसी) सोहबतके असरपर क०। जो धूआँ कालिख समझ कर पुतवा जाता है, उसीकी स्याही बनती है तो उससे पुराण लिखे जाते हैं।

धूलकी रस्सी बटना—हवाके घोड़े दौड़ाना। असंभव कामके करनेकी चेष्टा करना। बहुत चालाक आदमीको भी क०। जो ख़ाली बातोंका रोज़गार करके खाता हो।

धूलकोटका ख़रबूज़ा, जैसे मिश्रीका कूज़ा—प्रान्तिक मसल है। धूलकोट दिल्लीके पास एक जगहका नाम है।

धूल डालनेसे सूरज नहीं छिपता—अच्छे मनुष्य की निन्दा करनेसे वह निन्दित नहीं होता।
पीतम मोहि सदा अनुकूल। देहु दोष मति साजन भूल॥
जो उपखाने पाठ अग करै। धूर सूर तन कैसे परै॥
(खकौया। लो० र० को०)

धेला सिर मुड़ाई, टका बदलाई—जब असल कामसे ऊपरका ख़र्च बहुत हो, तब क०। अधेला तो सिर मुड़ाईका हुआ दो पैसे रुपया भुनाईका बट्टा देना पड़ा।

धोई धाई भेंड़ी पाँके लगी—(पू०) भेड़को धो धाके साफ़ किया फिर वह कीचड़में चली गई।

धोकेकी टट्टी—जैसी समझते थे वैसी नहीं है। नये धर्म मत या गुरु पर क०।

धोतीके भीतर सब नंगे—ऐब सभीमें होता है। जब कोई किसीका ऐब दिखाता है, तब क०।

धोती भी पहिने जब कि कोई ग़ैर पिनहा दे, उमराको हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा—(हरिश्चन्द्र)। आलसियोंपर ताना है।

धोती थी दो पाँव, धोने पड़े चार पाँव—(ज०) दो अपने और दो अपने पतिके। आलसी पतिपर कही जाती है जो अपना पैर भी नहीं धो सकता।

धोबिनपर बस न चले, गधइयाके कान अमेठे—जब बलवानसे बस न चले और निर्बलपर ज़ोर दिखावे, तब क०।

धोबीका कुत्ता, घरका न घाटका—जिस मनुष्यके रहनेका कोई पक्का ठिकाना न हो, उसे क०। जो मनुष्य दोनों तरफ़की चाल चले, न इधरका रहे न उधरका, उसे भी क०।

(१) दुनियाकी सलतमें हुए बन्नाहसे दूर,
लेकिन दुनियाको हमसे है सहस नफ़ूर।
धोबीके कुत्तेकी तरह सद अफ़सोस,
हम घरके रहे न घाटके हैं मंजूर॥
(२) ना अहीर बंसिनमें ना तो यदु बंसिनमें धोबी कैसो कूकर न घरको न घाटको। (उ० प०)

धोबीका घर ईदपर देखा जाता है—(व्य०) क्योंकि ईदके दिन सभी सफ़ेद और धुले हुए कपड़े पहिनते हैं, इसलिये धोबीके यहांसे सब कपड़े निकल जाते हैं। जो कुछ बचा रह जाय वही समझो धोबीका है

धोबीका छैला, एक उजला एक मैला—क्योंकि वह दूसरोंके कपड़े पहिनता है जैसा मिला और जो उसके बदनमें आया वही पहिन लिया। धोबीकी जगह बनिया भी क०।

धोबीका भाई पत्थर—क्योंकि उसीसे उसे हरदम काम रहता है।

धोबीके घर पड़े चोर, वह न लुटा लुटे और—जिनके कपड़े चोरी जाते हैं वही लुटते हैं धोबीका क्या लुटेगा।

धोबीके घर ब्याह गधेके माथे मौर—धोबियोंमें ऐसी चाल है।

धोबी गीतको धोबी जाने—जिसका काम वही जानता है।

धोबी छोड़ सक्का किया, रही खिज़रके घाट—(मु० क०) धोबी छोड़के भिश्तीसे ब्याह किया फिर भी पानीसे सम्बन्ध न छूटा। दोनोंहीका काम घाटपर जाना है। ख्वाजाखिज़र जलके देवता समझे जाते हैं।

धोबीपर धोबी बसे, तब कपड़ेपर साबुन पड़े—धोबीपर धोबी बदलना ऐसा है जैसा गुदड़ीमें साबुन लगाना। घड़ी घड़ी नौकर न बदलना चाहिये।

धोबी बसिके क्या करे दिगम्बरोंके गांव—जहां क़दर न हो वहां न रहना चाहिये। जब कोई ऐसी जगह रहे जहां उसकी आवश्यकता न हो, तब क०।

धोबी बेटा चांदसा, सीटी और पटाक—धोबीका बेटा दूसरोंके उज्वल कपड़े पहिनकर चांदसा बना रहता है, उसके पास निजकी दोही चीज़ें हैं सीटी और पटाक। धोबी जब धोते समय कपड़ेको पत्थरपर "पटाक" से पछाड़ते हैं तब सीटी भी बजाते हैं। जो दूसरेके ख़र्चसे छैल चिकनियां बने फिरते हैं उनपर क०।

धोबी रोवे धुलाईको, मियां रोवें कपड़ोंको—प्रायः ऐसा देखा जाता है कि धोबी तो धुलाईका तगादा करता है और जिसका कपड़ा खोया गया हो वह अपने कपड़ेका तगादा करता है। जहां दोनों ही अपनी अपनी शिकायत करते हों वहां क०। दे० "तेली रोवे।"

धोये गधा बछा नहिं होय—गधेको धोनेसे बछड़ा नहीं होता। ऊपरके बनावसे असलियत नहीं जाती।

धोये हूं सौ बारके, काजर होय न सेत—(वृं०) क० दे०। मूर्खको कितना ही समझाओ उसे ज्ञान नहीं होता।

धौला बाल मौतकी निशानी—बाल सफेद हों तो समझो मौत क़रीब आ गई। बाल सफ़ेद बुढ़ापेमें होते हैं।

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार। काली आछी कामली, काली भली न नार—सफ़ेद कपड़े अच्छे होते हैं पर सफ़ेद बाल अच्छे नहीं, काला कँबल अच्छा होता है पर काली स्त्री अच्छी नहीं।

न

न ईंट डालो, न छीटों भरो—न किसीको बुरा कहो न सुनो। जब कोई नीचको दुर्वचन कहे और वह पलटेसे जवाब दे तब क०।

नंग बड़े परमेश्वरसे—नंगेसे ईश्वर भी डरता है। नंगेसे जितना डर लगता है उतना ईश्वरसे नहीं।

नंगा खड़ा उजाड़में, है कोई कपड़े ले—जिसके पास कुछ नहीं है उससे जो मिलनेकी आशा करे, उसे क०।

नंगा चला बज़ारको, चोर बलैया लेय
नंगा नाचे खोरमें, चोर बलैया लेय } ऊ० दे०

नंगा नाचे फाटे क्या?—जिसके पास कपड़ा ही नहीं है उसका क्या फटेगा।

नंगा साठ रुपये कमाय, तीन पैसे खाय—उस आदमीको कही जाती है जिसकी गृहस्थी नहीं है, तथा कमाता बहुत है और खर्च बहुत कम करता है।

नंगी क्या नहायगी, क्या निचोड़ेगी—जिसके पास कुछ है ही नहीं वह क्या आप खायगा, क्या दूसरे-को देगा।

पिय परदेस न देस न पाऊं, तजि सिंगार तन काहि दिखाऊं
सुन्यौ पखानो लोगनि कहा, नांगी न्हाय निचोरै कहा।
(प्रोषित पतिका) लो० र० कौ०)

नंगी देखे सरसै काम—स्पष्ट।

कैसो सामान्या करि व्यंग, जानि रिसाव रसिया इहि ढंग
लोन उक्ति सांचौ अभिराम, नागी देखे सरसे काम।
(लो० र० कौ०)

नंगीने घाट रोका, नहाय न नहाने दे—स्पष्ट।

नंगी भली कि छींके पाव—दो बुरे कामोंमेंसे जो कम बुरा हो, उसे करो। नंगी रहना और छींकेपर पैर रखकर खड़े होना दोनों ही बुरे हैं। कोई पहलेको बिलकुल बेपर्द और दूसरेमें कुछ परदा समझते हैं, और कोई दूसरेको पहलेसे भी बुरा समझते हैं, क्योंकि पहली अवस्थामें लोग नंगी देखकर आंख फेर लेते हैं, पर दूसरीमें विशेषता देखकर उसपर निगाह डालते हैं।

नंगी भली कि टटक मचवा—(पू०) ऊ० दे० टटक मचवा=टूटा मचाना। इसपर एक कहानी भी है जो अश्लील होनेके कारण नहीं लिखी गई।

नंगी भली कि मूसल आड़े—ऊ० दे०।

नंगी होके काता सूत, बूढ़ी होके जाया पूत—यदि पहले ही कातती तो नंगी क्यों रहती और पहले ही जनती तो बुढ़ापेमें कष्ट क्यों पाती।

नंगेसे खुदा भी हारा है—मु०दे० 'नंग बड़े परमेश्वरसे'।

नंगोंको भूखोंने लूट लिया—असंभव बातपर क०।

नकटा जावे बुरे हवाल—बेशरमको क०। जो सबका कनौड़ा रहता है, उसे भी क०।

नकटा बूचा सबसे ऊँचा—ऊ० दे०।

नकटीके सामने नाक पकड़ना—उसको चिढ़ाना है।

नकटी बुढ़िया पानी पिला, बेटा आगे चलकर दूध मिलेगा—जो काम मीठी बोलीसे निकलता है सो कटु वचन बोलनेसे नहीं निकलता। किसीने एक बुढ़ियाको नकटी कहकर पानी मांगा, उसने व्यंगसे कहा पानी तो क्या आगे चलकर तुझे दूध मिलेगा।

नकटी मैया पानी पिला, पूता इन्हीं गुनोंसे—ऊ० दे०।

नकटेकी नाक कटी, सवा गज़ और बढ़ी—निर्लज्जको क०।

नक़्दह हुरमतह—(अरबी) नगद दो और साख रक्खो।

नक़्ल राचे अक़्ल—(फा०) नक़ल करना कोई अक्लका काम नहीं है।

नक़्ले कुफ़्र, कुफ़्र न बाशद—(फा०) काफ़िरकी नक़ल करनेसे कोई काफ़िर नहीं होता। स्वांग बनानेवालोंका कहना है जो मनोरंजनार्थ सभीकी नक़ल करते हैं।

न कूटे न पीसे न दुखड़ा करे, ख़ुदा ऐसी औरतको ग़ारत करे—स्पष्ट।

न कोई आता था घरमें, न कोई जाता था, न कोई गोदमें लेकर मुझे सुलाता था—दुमानी है।

एक मनुष्य अपनी जवान स्त्री और छोटे बच्चेको घरमें छोड़कर विदेश गया। उसकी अनुपस्थितिमें एक अजनबी मनुष्य उसकी स्त्रीके पास आया जाया करता था। एक दिन उस छोटे बच्चेने अपनी मांसे पूछा, जो अभी आया था और चला गया, वह कौन है। मांने कहा न कोई आया न कोई गया। लड़का यही समझा कि इसका नाम "न कोई" है। जब वह मनुष्य कुछ दिन बाद अपने घर आया तो लड़केको गोदमें लेकर प्यार करने लगा, और थपथपा कर सुलाने लगा। उसने लड़केसे पूछा मेरे पीछे तुझे इस तरह कौन सुलाता होगा। लड़केने ऊपर लिखी मसलकी कहा। बाप तो यह समझा कि मेरे पीछे लड़केको प्यार करनेवाला कोई न था, मगर लड़केने तो सब हाल कह ही दिया।

न कोई संग लाया है न कोई ले जायगा—
धनपर क० ।
क्रम करि माँगहि पाइवे सुख सम्पति धन धाम ।
ल्यायो कोउ न जायगो निज संग श्वजा निशान ॥
(लो० र० को०)

नक़्क़ार ख़ानेमें तूतीकी अवाज़ कौन सुनता है—बड़े आदमीकी बातके आगे ग़रीबकी कोई नहीं सुनता ।

न ख़ुदा ही मिला, न विसाले सनम्, न इधरके हुए न उधरके हुए—निराश फ़क़ीरका कहना है। न इस लोकके रहे न परलोकके ।

न गायके धन, न किसानके भांड़—बेकार चीज़-पर क० ।

नगीनेसे नक़्श जुदा नहीं होता—पत्थरपर खुदी हुई नक़्काशी मिटानेसे नहीं मिटती, जो बात जीमें जम जाती है वह नहीं हटती ।
जुदा जुदा न करें तुझ परीके सीनेसे,
कभी हुआ है जुदा नक़्श नगीनेसे ।

न जीनेकी शादी न मरनेका ग़म—त्यागी मनुष्य को क० ।

नटका बच्चा तो कलाबाज़ी ही करेगा—दे० "बहेका बचा ।"

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय—जाटोंकी चालाकी पर क० ।
एक राजाने किसी नटनीसे प्रतिज्ञा कर दी कि यदि तुझे नट विद्यामें कोई नहीं जीत सकेगा तो मैं तुझे अपना राज्य दे दूंगा। उस जगहपर एक साधारण जाट खड़ा था। उसने नटनीके ओढ़के दखाने अपने हाथोंमें पकड़ लिये और झट बांसपर चढ़ गया। ऊपर जाकर उसने चारों तरफ़ घूमकर खूब पेशाब किया। उसका यह तमाशा देखकर सब कोई हंसने लगे; और वह नटनी बहुत लज्जित हुई। इस तरह उसने नटनीको परास्त किया और अपने राजाका राज्य भी बचा लिया ।

नटनी जब बांसपर चढ़ी तो घूंघट क्या ?—जब बेशर्मीका काम ही उठाया तो शर्म क्या करना ?

न तेल तली न ऊपरचली—बहुत क्षुद्र दान पर क० ।

नदिया उतरे नावमें क्या ले करै जहाज, जो जाको स्वारथ करे सो ताकों महाराज—दे० "काम जो आवे कामरी ।"

नदिया नाव घाट बहुतेरा, कहैं कबीर "नामके फेरा"—नदी नाव और घाट बहुतसे हैं पर सबके नाम जुदे जुदे हैं ।

नदी किनारे रूखड़ा जब तब होत विनास—जो जोखिमका काम करता है, उसे क० ।
भवसागर कबि निज तन, रहै न ताहि विचार ।
नदी किनारे रूखड़ा जब तब होत विनास ॥

नदी तू गुर्राती क्यों है, मैं गांव ही नहीं रखता—जब कोई किसीको अपना रोष दिखावे और वह उसकी कुछ भी परवाह न करे, तब क० ।

न दीनके रहे, न दुनियाके—जब कोई ऐसा काम करे जिसमें धर्म भी जाय और बदनामी भी हो, तब क० ।

नदी नाव संयोग—इत्तिफ़ाक़से मिलने पर क० ।
(१) जो दीखत सब मिथ्या मानि,
कारत जीव जनि मनमें आनि ।
दारा सुत सब भ्राता बंधु,
नदी नावको है सनबंधु ।
(२) जभी कछु दिन बसि जियो, का कपटी संग भीत ।
कहा कान्ह अब हम कहाँ, नदी नाव संयोग । (चं०ह०)

नदीमें जल यों, फुनवा हुआ क्यों—दे० "हिसाब ज्योंका त्यों० ।"

नदीमें रहकर मगरसे बैर—बलवानके पास रहकर उससे बैर नहीं करना चाहिये ।

न दौड़ चलोगे, न ठेस लगेगी—स्पष्ट ।

ननदका नन्दोई, गले लाग लाग रोई—जब कोई ऐसेसे स्नेह दिखावे जिससे उसका कोई संबंध न हो, तब क० ।

न नाम लेवा, न पानी देवा—जिसका कोई न हो, उसे क० । निःसन्तानको भी क० ।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी—जब कोई मनुष्य अपनी अज्ञानता छिपानेके लिये ऐसी शर्त-पर काम करनेको कहे जो नामुमकिन हो, तब क० ।
किसी शहरमें राधा नामकी एक वेश्या बहुत मशहूर हो गई थी। वह जानती थी कि मुझे नाचना अच्छा

-नहीं चाता। इसलिये उसे जब कोई नाचनेको कहता तब वह यही कहती कि नौ मन तेलके चिराग़ जलाओ तब मैं नाचूंगी, जिसे असम्भव वा कष्ट-साध्य समझ कर कोई नहीं करता था। बहुत लोग इस मसलको श्रीराधिकाजीपर घटाते हैं जिनके लिये यह काम कुछ मुशकिल न था क्योंकि तेल उस समय आमकल्पके पानीके मोल बिकता था।

नपूतीका घर सूना, मूरखका हृदय सूना। दरिद्रीका सब कुछ सूना—स्पष्ट।

नफ़रीमें नख़रा क्या ?—रोज़ाना तनख़्वाहमें झगड़ा क्या ?

न भूतो न भविष्यति—(सं०) न हुआ और न होगा। बहुत आश्चर्य जनक कामपर वा बड़े भारी पंडितको क०।

नमकका सहारा ही बहुत है—थोड़े ही सहारेसे काम चल सकता है।

नमाज़ छुड़ाने गये थे रोज़े गले पड़े—(मु०) दे० "गये थे रोज़ा छुड़ाने"

किसी समय मुसलमानोंने मूसा पैग़म्बरसे कहा कि ख़ुदा से सिफ़ारिश करके पाँचों नमाज़ोंसे हमारा छुट-कारा करा दीजिये। ख़ुदाने उनको धर्मपर ऐसी अरुचि देखकर सज़ाकी तौरपर उन्हें एक महीने तक रोज़ा रखनेको कहा।

नमाज़ीका टका—

एक दुष्ट लड़केका यह स्वभाव पड़ गया था कि जब कोई मसजिदमें जाकर नमाज़ पढ़ने लगता तो वह पीछेसे उसका पैर पकड़कर घसीट लेता। जब उसने एक बूढ़े नमाज़ीके साथ यह बर्ताव करना चाहा तो उसने लड़केको एक टका दिया। इसी तरह सब नमाज़ी इस आफ़तसे पिण्ड छुड़ानेके लिये उसे दो पैसे देते थे। इससे लड़केकी हिम्मत बहुत बढ़ गई और उसने अपना यह काम एक पठानपर आज़माना चाहा। ज्यों ही उसने पीछेसे उसका पैर पकड़ा त्यों ही पठानने घूमकर ऐसे ज़ोरसे घूंसा मारा कि लड़केका वहीं ढेर हो गया।

न मारे मरे, न काटे कटे—अभेद्य वा वज्रतुल्य कठिन पदार्थ वा मनुष्यको क०।

न मिली नारी, तो सदा ब्रह्मचारी—[illegible]

न मैं कहूं तेरी न तू कह मेरी } (ज०)
न मैं जलाऊं तेरी न तू जला मेरी } जब झगड़ा निपट जाता है, तब क०। न मैं तेरी बुराई करूं न तू मेरी कर।

नयन दोष जा कहं जब होई। पीत वरन शशि कहं कह सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

नया अतीत पेड़ पर अलाव—जिससे वह जल्दी थक जाता है। साधू लोग सहारेके लिये काठका वैरागन बना लेते हैं जिसपर हाथ रक्खे वह दिन दिन भर बैठे रहते हैं और नहीं थकते।

नया चिकनियां रंडीका फुलेल—नवीदे मनुष्यको क०।

नया जोगी और गाजरका संख—(ग०) जब कोई नौसिखुआ अनुपयुक्त चीज़से काम लेता है, तब क०। यदि असली संख न हो तो तांबे पीतल वा सींगका होना चाहिये।

नया दाना नया पानी—जब मालिक बदल जाय या नई नौकरी लगे, तब क०।

नया धोबिया धोवही, गुदड़ी साबुन लाय—फअड़को क०।

एवमि धोबिन या ब्रजमें गुदरी मई साबुन लावन चाँदे। (उ० प० गोपियोंका कहना उद्धवके प्रति)

नया धोबी नाई पुराना—दोनों अच्छे होते हैं।

नया नया राज, ढव ढब बाज—नया राज होता है तो शोर गुल बहुत होता है।

नया नया राज भइल, मगरिन अनाज भइल—(पू०) नयी अमलदारीमें नयी नयी बातें होती हैं, तब क०।

नया नौ गण्डा, पुराना छे गण्डा—पुरानेसे नयेकी क़दर ज़्यादा होती है।

नया नौकर मारे हिरन (वा शेर)—बानगी दिखानेके लिये।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन—नई चीज़का एतबार [illegible] दिनमें पुरानी हो जाती [illegible]

[illegible] पुकारे—नये मत

नया हकीम, दे अफ़ीम—हकीम जितने रोगियोंको आराम नहीं करते उससे ज्यादाको मारते हैं। जो नया हकीम होता है और सब रोगियोंको अफ़ीम ही दवा बतलाता है, उसे क०।

नयी घोड़िया फोठीमें बछेड़—(पू० च०) नये शौक़में चाव बहुत होता है। घोड़ेके बच्चेको कोठीमें रखना उसका अत्यधिक दुलार है। नये शौक़ीनपर व्यंगसे क०।

नयी घोसन, उपलोंका तकिया—नौसिखुआ जब चीज़का उपयोग ठीकसे न करे, तब क०।

नयी जवानी मांभा ढीला—जो जवान होकर आलसी या सुस्त हो, उसे क०।

नयी जवानी बाराबाट, कभी न खाया भट्टा भात—(ग्रा०)—स्पष्ट

नयी जुलाहिन कानमें छुछी—दे० "नयी घोसन"।

नयी दुलहन और मुंह पोपा—(च०) नयी दुलहन और मुंह बुढ़ियोंका सा।

नयी नागिन टांगेपर फन—जब कोई मूर्खतासे ऐसा काम करे जिसे वह बिलकुल न समझता हो, तब क०।

नयी नाइन बांसकी नहरनी—जिसे न तजुरबा हो और न काम करनेका ठीक साधन हो, उसे क०।

नयी नाव बांसका न होना—बहुत बड़ी भूलपर क०। सभी नावमें बांस होता है। नयी नावमें बांसका न होना आश्चर्य है।

नयी नौ, दाम, पुरानी छैदाम—पुरानी चीज़से नयीका दाम बहुत होता है।

नयी फ़ौजदारी और मुरग़ीपर नक़ारा—नये क़ानूनपर वृथा प्रकाश करनेपर क०।

नयी बस्ती रेंड़ोका फुलेल—मूर्खतापर क०।

करि फुलेलको आचमन मीठो कहत सराहि।
रे गन्धी मति अन्ध तू, अतर दिखावत काहि॥ (बिहारी)

नयी बहू टाटका लहँगा—जब अच्छी जगह बुरी चीज़का उपयोग किया जाय, तब क०।

नये चौंडे अगन लगी है—(पं०) जब कोई ग़रीब एकाएकी बड़ा आदमी होकर इतराने लगे, तब क०। चौंडा=सिर। अगन=आग।

नये छैला लीदके फक्के—(च०) दे० 'नया चिकनियां...'

नये नमाज़ी और बोरियेका तहमद—(च०) दे० 'नया जोगी...'

नये नये हाक़िम नयी नयी बातें—जब हाक़िम नये होते हैं, तब क़ानून भी नये बनते हैं। नया हाक़िम या अफ़सर जब कोई नयी बात करे, तब क०

नये नवाब आसमानपर दिमाग़—नयेके पास जब धन होता है, तब वह इतराने लगता है।

नये बावरची सागमें शोरबा—(च०) फूहड़को क०।

नये बिलसिये अति नये, दुर्जन दुसह सुभाय, आँटेपर प्राणन हरत, काँटे लौं लगि पाँव—दुष्ट और विश्वासघातीको बहुत नम्र होनेपर भी विश्वास न करना चाहिये क्योंकि वह दांव मिलनेपर कांटेकी तरह (पांवमें लगकर) दुःख देता है।

नवनि नीच कै अति दुखदाई। (तुलसी)

नये शौक़ीन खलीतीमें गाजर—(च०) दे० 'नये जोगी......'

नये सिपाही मूंछमें ढाटा—ऊ० दे०। ढाटा दाढ़ीमें बांधा जाता है जिससे दाढ़ी ऊँची और जमी रहती है।

नर बानरहिं संग कहु कैसे—(तुलसी) बेजोड़ बातपर क०।

न रहेगा बांस न बाजेगी बांसरी—जिसके रहनेमें नुक़सान होता हो, उस चीज़को जड़से मिटा देनेके समय क०।

न रहे मान न रहे मानी, आख़िर दुनियां फ़नाफ़नी (मु०) स्पष्ट। संसारकी अस्थिरतापर क०।

न रामके न रहीमके—न हिन्दू न मुसलमान। जो किसीका संगी नहीं, उसे क०।

बानी बेद बानकै न, कलमा क़ुरानकै न।
राम रहमानकै न, भजन मलीरकै।

नर्क परें उनके पुरखा, परपंच करें पर पंच कहावें—जब कोई पंच या चौधरी अन्याय करता है, तब क०।

नर्म चोबरा किर्म मी ख़ुरद—(फ़ा०) नर्म काठको कीड़े खा जाते हैं।

नहीं आता। इसलिये उसे जब कोई नाचनेको कहता तब वह यही कहती कि नौ मन तेलके चिराग़ जलाओ तब मैं नाचूंगी, जिसे असम्भव वा कष्ट-साध्य समझ कर कोई नहीं करता था। बहुत लोग इस मसलको ग्रीराधिकाजीपर घटाते हैं जिनके लिये यह काम कुछ मुशकिल न था क्योंकि तेल उस समय आजकलके पानीके मोल बिकता था।

नपूतीका घर सूना, मूरखका हृदय सूना। दरिद्रीका सब कुछ सूना—स्पष्ट।

नफ़रीमें नख़रा क्या?—रोज़ाना तनख़्वाहमें झगड़ा क्या?

न भूतो न भविष्यति—(सं०) न हुआ और न होगा। बहुत आश्चर्य जनक कामपर वा बड़े भारी पंडितको क०।

नमकका सहारा ही बहुत है—थोड़े ही सहारेसे काम चल सकता है।

नमाज़ छुड़ाने गये थे रोज़े गले पड़े—(मु०) दे० "गये थे रोज़ा छुड़ाने"

किसी समय मुसलमानोंने मूसा पैग़म्बरसे कहा कि .ख़ुदा से सिफ़ारिश करके पांचों व.क़्की नमाज़से हमारा छुट-कारा करा दीजिये। .ख़ुदाने उनकी धर्मपर ऐसी अरुचि देखकर सज़ाकी तौरपर उन्हें एक महीने तक रोज़ा रखनेको कहा।

नमाज़ीका टका—

एक दुष्ट लड़केका यह स्वभाव पड़ गया था कि जब कोई मसजिदमें जाकर नमाज़ पढ़ने लगता तो वह पीछेसे उसका पैर पकड़कर घसीट लेता। जब उसने एक बूढ़े नमाज़ीके साथ यह बर्ताव करना चाहा तो उसने लड़-केको एक टका दिया। इसी तरह सब नमाज़ी इस आफ़तसे पिण्ड छुड़ानेके लिये उसे दो पैसे देते थे। इससे लड़केका हिम्मत बहुत बढ़ गई और उसने अपना यह काम एक पठानपर आज़माना चाहा। ज्यों ही उसने पीछेसे उसका पैर पकड़ा त्यों ही पठानने घूमकर ऐसे ज़ोरसे घूंसा मारा कि लड़केका वहीं ढेर हो गया।

न मारे मरे, न फाड़े फटे—अमोघ वा वज्रतुल्य कठिन पदार्थ वा मनुष्यको क०।

न मिली नारी, तो सदा ब्रह्मचारी—लाचारीसे

न मैं कहूं तेरी न तू कह मेरी }
न मैं जलाऊं तेरी न तू जला मेरी } (ज०) जब झगड़ा निपट जाता है, तब क०। न मैं तेरी बुराई करूं न तू मेरी कर।

नयन दोष जा कहं जब होई। पीत बरन शशि कहं कह सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

नया अतीत पेड़ पर अलाव—जिससे वह जल्दी थक जाता है। साधू लोग सहारेके लिये काठका बैरागन बना लेते हैं जिसपर हाथ रक्खे वह दिन दिन भर बैठे रहते हैं और नहीं थकते।

नया चिकनियां रेंडीका फुलेल—नदीदे मनुष्यको क०।

नया जोगी और गाजरका संख—(अ०) जब कोई नौसिखुआ अनुपयुक्त चीज़से काम लेता है, तब क०। यदि असली संख न हो तो तांबे पीतल वा सींगका होना चाहिये।

नया दाना नया पानी—जब मालिक बदल जाय वा नई नौकरी लगे, तब क०।

नया धोबिया धोवही, गुदड़ी साबुन लाय—कम्बख़्तको क०।

एवनि धोबिन या ब्रजमें लुगरी मईं साबुन लावन पायी। (ब० प० गोपियोंका कहना उद्धवके प्रति)

नया धोबी नाई पुराना—दोनों अच्छे होते हैं।

नया नया राज, ढब ढब बाज—नया राज होता है तो शोर गुल बहुत होता है।

नया नया राज भइल, नगरिन अनाज भइल—(पू०) नयी अमलदारीमें नयी नयी बातें होती हैं, तब क०।

नया नौ गण्डा, पुराना छे गण्डा—पुरानेसे नयेकी क़दर ज़्यादा होती है।

नया नौकर मारे हिरन (वा शेर)—बानगी दिखानेके लिये।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन—नई चीज़का एतबार नहीं। सभी चीज़ें थोड़े दिनमें पुरानी हो जाती हैं इसलिये उनसे घृणा न करनी चाहिये।

नया मुसलमान अल्लाही अल्ला पुकारे—नये मत

नया हकीम, दे अफ़ीम—हकीम जितने रोगियोंको आराम नहीं करते उससे ज्यादाको मारते हैं। जो नया हकीम होता है और सब रोगियोंको अफ़ीम ही दवा बतलाता है, उसे क०।

नयी घोड़िया कोठीमें बछेड़—(पू० च०) नये शौक़में चाव बहुत होता है। घोड़ीके बच्चेको कोठीमें रखना उसका अत्यधिक दुलार है। नये शौक़ीनपर व्यंगसे क०।

नयी घोसन, उपलोंका तकिया—नौसिखुआ जब चीज़का उपयोग ठीकसे न करे, तब क०।

नयी जवानी मांझा ढीला—जो जवान होकर आलसी या सुस्त हो, उसे क०।

नयी जवानी बाराबाट, कभी न खाया मट्ठा भात—(भा०)—स्पष्ट

नयी जुलाहिन कानमें छुछी—दे० "नयी घोसन"।

नयी दुलहन और मुंह पोपा—(च०) नयी दुलहन और मुंह बुढ़ियोंका सा।

नयी नागिन टांगेपर फन—जब कोई मूर्खतासे ऐसा काम करे जिसे वह बिलकुल न समझता हो, तब क०।

नयी नाइन बांसकी नहरनी—जिसे न तजुरबा हो और न काम करनेका ठीक साधन हो, उसे क०।

नयी नाव बांसका न होना—बहुत बड़ी भूलपर क०। सभी नावमें बांस होता है। नयी नावमें बांसका न होना आश्चर्य है।

नयी नौ दाम, पुरानी छैदाम—पुरानी चीज़से नयीका दाम बहुत होता है।

नयी फ़ौजदारी और मुरग़ीपर नक्कारा—नये क़ानूनपर वृथा प्रकाश करनेपर क०।

नयी बस्ती रेंड़ोका फुलेल—मूर्खतापर क०।

करि फुलेलकौ आचमन मीठो कहत सराहि।
रे गन्धी मति अन्ध तू, अतर दिखावत काहि॥ (बिहारी)

नयी बहू टाटका लहँगा—जब अच्छी जगह बुरी चीज़का उपयोग किया जाय, तब क०।

नये चौंडे अगा लगी है—(पं०) जब कोई ग़रीब एकाएकी बड़ा आदमी होकर इतराने लगे, तब क०। चौंडा=सिर। अगा=आग।

नये छैला लीदके फक्के—(च०) दे० 'नया चिकनियां…'

नये नमाज़ी और बोरियेका तहमद—(च०) दे० 'नया जोगी…'

नये नये हाक़िम नयी नयी बातें—जब हाक़िम नये होते हैं, तब क़ानून भी नये बनते हैं। नया हाक़िम या अफ़सर जब कोई नयी बात करे, तब क०

नये नवाब आसमानपर दिमाग़—नयेके पास जब धन होता है, तब वह इतराने लगता है।

नये बावरची सागमें शोरबा—(व०) फूहड़को क०।

नये बिलसिये अति नये, दुर्जन दुसह सुभाव, आँटेपर प्राणन हरत, काँटे लौं लगि पाँव—दुष्ट और विश्वासघातीको बहुत नम्र होनेपर भी विश्वास न करना चाहिये क्योंकि वह दाँव मिलनेपर काँटेकी तरह (पाँवमें लगकर) दुःख देता है।

नवनि नीच कै अति दुखदाई। (तुलसी)

नये शौक़ीन ख़लीतीमें गाजर—(प०) दे० 'नये जोगी……'

नये सिपाही मूंछमें ढाटा—उ० दे०। ढाटा दाढ़ीमें बांधा जाता है जिससे दाढ़ी ऊंची और तनी रहती है।

नर बानरहि संग कहु कैसे—(तुलसी) बेजोड़ बातपर क०।

न रहेगा बांस न बाजेगी बांसरी—जिसके रहनेमें नुक़सान होता हो, उस चीज़को जड़से मिटा देनेके समय क०।

न रहे मान न रहे मानी, आख़िर दुनियाँ फ़नाफ़नी (मु०) स्पष्ट। संसारकी अस्थिरतापर क०।

न रामके न रहीमके—न हिन्दू न मुसलमान। जो किसीका संगी नहीं, उसे क०।

बाभो बेद बामके न, कलमा कुरानके न।
राम रहमानके न, चरन मझोरके।

नर्क परें उनके पुरखा, परपंच करें पर पंच कहावें—जब कोई पंच या चौधरी अन्याय करता है, तब क०।

नर्म चोबरा किर्म मी ख़ुरद—(फा०) नर्म काठको कीड़े खा जाते हैं।

नलका मारा नलवा टूटे—तिनकेकी चोटसे पिंडुली टूट जाती है (यदि नस कट जाय)। किसी समय ज़रा सी बातमें भारी नुक़सान हो जाता है, तब क०।

नवन नीचके अति दुखदाई—(तुलसी) दे० "नये विससिये"

नव रसाल बन विहरन सीला, सोह कि कोकिल विपिन करीला—(तुलसी) आमके बनमें विचरनेवाली कोयल टेंटीके जंगलमें शोभा नहीं देती। जब कोई ज्ञानी मनुष्य मूर्खोंके साथ बैठे, तब क०।

नशा उसने पीया ख़ुमार तुम्हें चढ़ा—बड़े आदमीके रिश्तेदारको कही जाती है जो उसके धनसे अपनेको भी बड़ा आदमी समझते हैं।

नलकट खटिया दुलकन घोर, कहैं घाघ यह विपतक ओर। बाछा बैल पतुरिया जोय, ना घर रहै न खेती होय—(नीति) छोटी खाट, कूदके चलनेवाला घोड़ा, छोटा बैल और छिनाल स्त्री ये बुरे होते हैं।

नसीबवरका भूत हल जोतता है—नसीबवरके काम आपही हो जाते हैं।

भाग्यवानके खेतको जोत जात है भूत (वृन्द)

न सूप दूधे जोग, न चलनी सराहे जोग—स्पष्ट।

नहाकर खावे खाकर सोवे, उसको औसक कमी न होवे—जो नहाके खाता है और खाके सोता है, वह कभी बीमार नहीं होता।

नहानेसे पहिले खानेके पीछे—सरदी लगती है।

नहिं अस कोउ जनम्यो जगमाहीं, प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं—(तुल०) प्रभुता मिलनेपर सभीको अहंकार हो जाता है।

नहिं असत्य सम पातक पुंजा—(तुलसी) झूठ बराबर पाप नहीं।

नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू, राम नाम अवलम्बन एकू—(तुल०) कलियुगमें राम नाम ही मुक्ति पानेका एक मात्र उपाय है।

नहिं दरिद्र सम दुःख जग माहीं, संत मिलन सम सुख कछु नाहीं—(तुल०) स्पष्ट।

नहि विष बेलि अमिय फल फरहीं—(तुल०) स्पष्ट

नाईकी बारातमें जने जने ठाकुर—(१) नाई सबकी बारातमें छोटा काम करते हैं, पर उनकी बारातमें कौन करे। जहां सब आदमी बराबरके हों वहां कोई छोटा या मेहनतका काम आ पड़े और उसे कोई भी न करना चाहे, तब क०। (२) नाईको ठाकुर कहते हैं और नाईकी बारातमें नाई ही रहते हैं।

नौकरोंकी धूम है और फ़ालोवर कोई नहीं।
सब तो जनरल हैं यहां आखिर सिपाही कौन है॥
(अकबर)

नाई,दाई,वैद,कसाई,इनका सूतक कभी न जाई—स्पष्ट।

नाई नाई बाल कितने, जिजमान आगे आयेंगे—जब कोई ऐसी बातके लिये पूछे जिसका हाल तुरंत ही उसके सामने आने वाला हो, तब क०।

नाईसे सयाना सो कौवा—पक्षियोंमें कौवा और मनुष्योंमें नौवा बहुत सयाना होता है।

नाऊ कीसी आरसी हर काहूके पास—ऐसी चीज़ जिसका उपयोग सब कोई करे, उसपर क०। नाऊका शीशा अभी एकके हाथमें है थोड़ी देरमें दूसरेके हाथमें चला जाता है।

नाक कटी पर घी तो चाटा—बेहया आदमीको क०। किसीने कमिलेमें मुंह डालकर घी चाट लिया जिससे उसकी नाक कट गई, तब उसने यह मसल कही।

नाक कटी, पर हठ न हटी—ज़िद्दी आदमीको कहते हैं जो बहुत हानि होनेपर भी अपनी हठ नहीं छोड़ता।

नाक कटी बलासे दुश्मनकी बदशकुनी तो हुई—यात्राके समय नकटेको देखना अपसगुन होता है। उस बेशर्म आदमीको कही जाती है जो अपना नुक़सान करके भी दूसरेकी बुराई करनेपर खुश होता है।

नाक कटी मुबारक, कान कटे सलामत—(मु० ज०) निर्लज्ज या ढीठ मनुष्यको क०।

नाक काटके दुशालेसे पोंछना—हानि करके हमदर्दी दिखानेपर क०।

नाकके बाल हो रहे हैं—बहुत मुंहलगे हैं।

नाक दबानेसे मुंह खुलता है—(१) दबाव पड़नेसे बात खुलती है। (२) बच्चे जब दवा पीनेके लिये

मुंह नहीं खोलते उस समय यह मसल बड़ा काम देती है।

नाक दे या नहरनी दे—किसीको असमंजसमें डाल दे, तब क०।

नाक नंगी गले हमेल—(घ०) ज़रूरतकी चीज़ तो न हो और जिसकी विशेष ज़रूरत न हो वह हो, तब क०। नाकमें नथुनी अवश्य होनी चाहिये। गलेमें हमेल हो चाहे न हो। हमेल=मोहरोंका हार।

नाक पकड़े दम निकलता है—बहुत सुकुमारको क०।

नाक पकौड़ा माथा चौड़ा—भद्दी शकल को क०।

नाकपर दीया बालके आये हैं—बहुत देर करके अर्थात् सन्ध्या हो जानेपर आये हैं।

नाकपर मक्खी नहीं बैठने देते—जो किसीका एहसान न लिया चाहे, उसे क०।

नाकपर सुपारी तोड़ते हैं—(ज०) चिड़चिड़े मिज़ाज वाले या तुनकमिज़ाजीको क०।

नाकसे नथुनी बड़ी—बेमेल बातपर क०।

नाक हो तो नथिया सोहे—स्पष्ट।

ना कोई साथ लाया है न ले जायगा—धनपर क०।

नाकों चने चबाना—किसीको बहुत दुःख देनेपर क०।

नाग डरावत गरुड़को हर उर हार प्रभाव—बड़ेका आसरा पाकर निर्बल भी बलवानको डराता है।

नाग मंत्रके सुनत ही, विष छोड़त है व्याल—स्पष्ट।

नाग मंत्र नहिं जानहीं देत पिटारी हाथ—दे० "साँपका मंत्र"

नाच न जाने आंगन टेढ़ा—दे० चले न जाने......'

(१)समय बिरुझ भई को काम, भयो संकेत गमन लिए बाम
कहै पखानों ज्यों रस बे ढा,नाच न जाने आंगन टेढ़ा।
(विमलसुधा)

(२)करत नहीं श्रम निज हित हेत,आप कर्म बढ़ दूषण देत
बुद्धि आलसिनकी गई बेढ़, "नाच न जाने, आंगन टेढ़"

नाचने निकली तो घूंघट काहेका—नीचा काम करने चले, तो लाज क्या।

[illegible]

[illegible]

नाचने वालेके पांव थिरकते हैं—काम करनेवाला चुपके नहीं बैठ सकता।

अच्छी चली गति परकिय नैन रीको रहै न छिन इक चैन
लोग पखानों सांची कहै, नाचनहारको पांव न रहै।
(सचित्र सो० र० को०)

नाचे, कूदे, तोड़े तान, वाका दुनियां राखेमान—जब कोई गुणवानको न पूछे और पाखंडियोंका सम्मान करे, तब क०।

नाचे कूदे बानरा, माल मदारी खाय—मेहनत कोई करे और फल कोई भोगे, तब क०।

नाचेगा सो पावेगा—जो मेहनत करेगा उसे मिलेगा।

नाचे ब्राह्मण देखे धोबी—उलटी बातपर क०।

नाटा सबसे टांटा—(१) नाटा सबसे मज़बूत होता है। टांटा=मज़बूत। (२) नाटा सबसे टंटा या झगड़ा करता है।

नाटी बछिया सदा कलोर—दे० 'ठुमकी गैया'''

नाड़ीकी कुछ सुरत नहीं है, दवा सभोंकी करते हैं, बैदोंका क्या जाता है, बीमार बिचारे मरते हैं—स्पष्ट।

नातका न गोदका, बांटा मांगे पोथका —(ग्रा०) अनुचित मांगपर क०।

नाता न गोता, खड़ा होकर रोता—(ज०) निष्प्रयोजन दख़ल देनेपर क०।

नातिन सिखावे आजीको कि बारह ड्योढ़े आठ (पू० ज०) जब छोटा बड़ेको ज्ञान बतावे, तब क०।

नाथ बैर कीजे ताही सों, बुधिबल जीत सकिय जाही सों—(तुल०) जिससे जीत सके उसीसे बैर करना चाहिये।

नादानकी दोस्ती जीका ज़ियान—स्पष्ट।

नादान दोस्तसे दाना दुश्मन भला—नादानसे मित्रता नहीं करनी चाहिये।

है दोस्त तुम्हारा जैसे नादां बच्चा,
कहता है उसको एक ज़माना बच्चा।
वाक़िफ़ उसके भी वो पहर है नादान,
उससे है कहीं दुश्मने दाना अच्छा। (रंज ?)

नादान यार करे, दाना क़यास करे—मूर्ख विचार करता और ज्ञानी उसका अनुसरण करता है।

नानक दुखिया जग संसारा, सुखिया वही जो नाम अधारा—संसारमें केवल वही सुखी है जो भगवानकी उपासना करता है।

नानक नन्हां हो रहो, जैसी नन्हीं दूब। बड़ी घास जल जायगी, दूब ख़ूबकी ख़ूब—नम्र होकर चले। बड़ी घास जल जाती है और दूब जो नीची होती है बनी रहती है।

नानाकी दौलतपर नवासा ऐंड़ा फिरे—दूसरेके धनपर ऐंठनेपर क०।

नानाके टुकड़े खावे, दादाका पोता कहलावे—स्पष्ट। दे० 'खाय ननाको ददाको बतावे।'

नानी कुंवारी मर गई नवासेके नौ नौ ब्याह—क्यों व्यर्थ शेख़ी मारता है।

नानीके आगे ननिहालकी बातें—(ज०) अपनेसे अधिक जाननेवालेसे बात करनेपर क०।

सखा जाको लाल दाऊ कालह कहौ सो कैसे,
नानी जूके आगे क्यों बखान ननिसौरेको।
(ज० प० गोपियोंका कहना उद्धवके प्रति)

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे—(ज०) दोष कोई करे और दण्ड कोई भरे, तब क०।

नानी मरी नाता टूटा—नानीका जैसा दोहतेपर प्रेम रहता है वैसा मामा मामीका नहीं रहता।

नाप न तोल, भर दे झोल—अपने मतलबकी कहना।

नापे सौ गज़, फाड़े नौ गज़—(व्य०) जो कहे बहुत और करे थोड़ा, उसे क०।

नाम अमृत, पिलाय विष—नामसे विपरीत गुण हो, तब क०।

नाम कपूरचन्द ख़ुशबू गोबरकी नहीं—ऊ० दे०।

नामकी नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी—नन्ही=छोटी; धन्नी=कड़ी। जो देखनेमें छोटी हो पर काम बड़ा करे, तब क०।

नामके बाबाजी करनी छावर—नाम बड़ा और करनी कुछ नहीं। छावर=खाक।

"नाम क्या?" "शकरपारा" "खाय क्या?" "सेर दसबारा" "पानी कितना पीये?" "मटका सारा" "काम करनेको?" "लड़का बिचारा"—(ज०) जो लड़का खाय बहुत पर काम कुछ न करे, उसे क०।

नाम पहाड़ खां घोलें तब चीं—नामसे विपरीत गुण होनेपर क०।

नाम पृथ्वीपाल पालें चिड़िया भी नहीं—ऊ० दे०।

नाम बड़ ऊँचा, कान दोनों बूचा | नाम बड़ा और दर्शन थोड़े } जब कोई किसीका बड़ा नाम सुनके जाय और उसे कुछ भी न मिले, तब क०।

नाम बढ़ावे दाम—(व्य०) नामी दूकानदारका माल अधिक मोलपर बिकता है

नाम बसन्ती मुंह कूकर अस—(पू० ज०) नामानुसार गुण न हो, तब क०।

नाम भानमती और झोलीमें सिर—झूठी बड़ाई मारनेपर क०।

नाम मेरा, गांव तेरा—जो दूसरेकी सम्पत्तिसे अपना लाभ उठाया चाहे, उसपर क०।

नाम रतनकुंवर मुंह कुतियों जैसा—नामानुसार गुणके नहीं रहनेपर क०।

नामर्दो तो दी ख़ुदाने, मार मारसे चूके क्यों—अशक्त होनेपर भी कुछ न कुछ करना चाहिये।

नाम हीरामल, दमके कंकड़ सी भी नहीं—नामसे गुण विपरीत हो, तब क०।

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कमा खाय—कहीं नाम अच्छा होता है कहीं बुरा। ख़ुशनामीसे लाभ होता है बदनामीसे हानि। व्यवसायमें जब किसीकी दूकानदारी अच्छी चलती है, तब क०। अथवा बदनाम आदमीपर जब बिना किये ही दोष लगता है, तब भी क०।

नामी नर होत गरुड़, नामीके हेरेते—ईश्वर जिसपर निगाह करे वही यशस्वी होता है।

नारने निकाला दंत, मर्दने ताड़ा अंत—स्त्रीने दांत निकाला और मर्द उसका नतीजा समझ गया। जब स्त्री हंसी, तो समझो कि वशमें हो गई।

नार सुलक्षनी कुटुम छकावे, आप तलेकी खुरचन खावे—अच्छी स्त्रियां कुटुम्बियोंको भर पेट खिला देती हैं और आप बची खुची खाकर ही संतुष्ट होती हैं।

नारि नहीं तहं कानी रानी—दे० 'जहां रूख नहीं...'

नारि धर्म पति देव न दूजा—स्त्रियोंके लिये पतिके सिवाय दूसरा देवता नहीं है।

नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं, तेहि प्रताप निज अमर डराहीं—(तुल०) स्पष्ट।

नारि विवश नर सकल गुसाईं, नाचहिं नर मरकटकी नाईं—(तुल०) स्त्रियां पुरुषोंको वशमें कर बन्दरकी तरह नचाया करती हैं।

नारि मुई कुल सम्पति नासी, मूंड़ मुड़ाय भये सन्यासी—(तुल०) कलियुगके संन्यासीपर कही जाती है। जो स्त्रीके मरनेपर या घरकी सम्पत्ति खो देनेपर संन्यासी बन जाते हैं।

नारियलमें पानी, नहीं जानता खट्टा कि मीठा—जब कोई बात छिपी हुई हो और संदेहयुक्त हो, तब क०।

नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं, अवगुण आठ सदा उर रहहीं—(तुल०) स्पष्ट।

साहस, अनृत, चपलता, माया।
भय, अविवेक, अशौच, अदाया। (तुलसी)

नाले मूंज बगड़, नाले देवी दा दर्शन—(पं०) एक पन्थ दो काजपर क०। मूंज और बगड़ घास-की किस्ममें होती है जो रस्सी बनानेके काम आती है। यह नदीके किनारे होती है जहां देवीके मन्दिर भी होते हैं। इसी जोड़की बंगला मसल है "रथ देखा आर कला बेचा।"

नाव चढ़े झगड़ालू आवें, साखी आवें पैरत—असामी फ़रियादीकी निसबत गवाहको बहुत तक-लीफ़ होती है।

नाव भर गई जल गई, अपने लेखे फुस—किसीका नुक़सान हो अपनी बलासे।

नाहीं करिबे तें कछू करिबो ही नीको है—कुछ भी न करनेसे कुछ करना अच्छा है।

निकली हलक़से चली ख़लक़में—बात मुखसे निकलते ही संसारमें फैल जाती है।

निकली होठों चढ़ी कोठों—ऊ० दे०।

निकरन द्वार बहुरिया दुर्गोधाका दोष—दे० 'बधलो बहू........'

निकसत हैं इक आंकसे, धोई, धोबी, धान, आछे भोंड़े हो गये, सब करतबके तान—धोई, धोबी और धान तीनों शब्दोंके प्रारंभमें एक ही अक्षर है पर अपने अपने कर्त्तव्यसे भले बुरे कहलाते हैं। धोई=ठग।

निकसो चंदा, तो अंधेरो भयो मन्दा—सबके सामने झूठ नहीं ठहर सकता।

निकाही न ब्याही, मुंडो बहू कहांसे आई—(मु०) स्पष्ट। झूठा रिश्ता जोड़नेपर क०।

निकौड़िया गये हाट, ककड़ी देख जीवरा फाट—(पू०) क्योंकि उसके पास ख़रीदनेको दाम न था।

निखट्टू आवें लड़ने, कमाऊ आवें डरते—(ज०) स्त्रियां निखट्टुओंको कहा करती हैं, जो पैदा तो कुछ नहीं करते पर हर बातमें दुःख देते हैं।

निगल जाते हैं ऊंट और दुमसे हिचकी लें }
निगल जांय हाथी सकल, पर दुमसे परहेज }

दे० 'गुड़ खांय गुलगुलों........'

निज कवित्त केहि लागन नीका, सरस होय अथवा अति फीका—(तुल०) अपनी चीज़ अच्छी हो वा बुरी सभीको अच्छी लगती है।

निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई, जानि न जाइ नारि गति भाई—(तुल०) स्त्री-चरित्रपर क०।

निज भुधिबल भरोस मोहि नाहीं—(तुलसी) अधीनता दिखानेके लिये क०।

निज सुगन्ध गुण मृग नहिं जाने—अपना गुण अपनेको नहीं मालूम पड़ता।

'इतिया उनहीं भवि सुखदाई,
बूझत जाय रोग भय पाई।
लोक रुचि ज्यों कहैं सयाने,
निज सुगन्ध गुन मृग नहिं जाने।'

निज हित अनहित पसु पहिचाना—(तुलसी) अपना अच्छा बुरा सभी समझते हैं।

निठल्ला बनियां पत्थर तोड़े—बनियां कामके बिना ख़ाली नहीं रहता। कुछ न कुछ किया ही करता है। जब कोई निष्प्रयोजन काम करे, तब क०।

निशानवेके फेरमें पड़ गये—जब आदमी दूसरेकी

नानक दुखिया जग संसारा, सुखिया वही जो नाम अधारा—संसारमें केवल वही सुखी है जो भगवानकी उपासना करता है।

नानक नन्हां हो रहो, जैसी नन्हीं दूब। बड़ी घास जल जायगी, दूब खूबकी खूब—नम्र होकर चले। बड़ी घास जल जाती है और दूब जो नीची होती है बनी रहती है।

नानाकी दौलतपर नवासा ऐंड़ा फिरे—दूसरेके धनपर ऐंठनेपर क०।

नानाके टुकड़े खावे, दादाका पोता कहलावे—स्पष्ट। दे० 'खाय ननाको ददाको बतावे।'

नानी कुंवारी मर गई नवासेके नौ नौ ब्याह—क्यों व्यर्थ शेखी मारता है।

नानीके आगे ननिहालकी बातें—(ज०) अपनेसे अधिक जाननेवालेसे बात करनेपर क०।

सखा नाको चाख दाई' अबलों कही सो कैसे,
नानी जू के आगे क्यों बखान ननिआरेको।
(उ० प० गोपियोंका कहना उद्धवके प्रति)

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे—(ज०) दोष कोई करे और दण्ड कोई भरे, तब क०।

नानी मरी नाता टूटा—नानीका जैसा दोहतेपर प्रेम रहता है वैसा मामा मामीका नहीं रहता।

नाप न तोल, भर दे झोल—अपने मतलबकी कहना।

नापे सौ गज़, फाड़े नौ गज़—(व्य०) जो कहे बहुत और करे थोड़ा, उसे क०।

नाम अमृत, पिलाय विष—नामसे विपरीत गुण हो, तब क०।

नाम कपूरचन्द खुशबू गोबरकी नहीं—ऊ० दे०।

नामकी नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी—नन्ही=छोटी; धन्नी=कड़ी। जो देखनेमें छोटी हो पर काम बड़ा करे, तब क०।

नामके बावाजी करनी छावर—नाम बड़ा और करनी कुछ नहीं। छावर=खाक।

"नाम क्या?" "शक्करपारा" "खाय क्या?" "सेर दसबारा" "पानी कितना पीवे?" "मटका सारा" "काम करनेको?" "लड़का बिचारा"—(ज०) जो लड़का खाय बहुत पर काम कुछ न करे, उसे क०।

नाम पहाड़ खां बोलें तब चीं—नामसे विपरीत गुण होनेपर क०।

नाम पृथ्वीपाल पालें चिड़िया भी नहीं—ऊ० दे०।

नाम बड़ ऊँचा, काम दोनों बूचा
नाम बड़ा और दर्शन थोड़े
} जब कोई किसीका बड़ा नाम सुनके जाय और उसे कुछ भी न मिले, तब क०।

नाम बढ़ावे दाम—(व्य०) नामी दूकानदारका माल अधिक मोलपर बिकता है

नाम बसन्ती मुंह कूकर अस—(पू० ज०) नामानुसार गुण न हो, तब क०।

नाम भानमती और झोलीमें सिर—झूठी बड़ाई मारनेपर क०।

नाम मेरा, गांव तेरा—जो दूसरेकी सम्पत्तिसे अपना लाभ उठाया चाहे, उसपर क०।

नाम रतनकुंवर मुंह कुतियों जैसा—नामानुसार गुणके नहीं रहनेपर क०।

नामर्दों तो दी खुदाने, मार मारसे चूके क्यों—अशक्त होनेपर भी कुछ न कुछ करना चाहिये।

नाम हीरामल, दमक कंकड़ सी भी नहीं—नामसे गुण विपरीत हो, तब क०।

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कमा खाय—कहीं नाम अच्छा होता है कहीं बुरा। खुशनामीसे लाभ होता है बदनामीसे हानि। व्यवसायमें जब किसीकी दूकानदारी अच्छी चलती है, तब क०। अथवा बदनाम आदमीपर जब बिना किये ही दोष लगता है, तब भी क०।

नामी नर होत गरुड़, गामीके हेरेते—ईश्वर जिसपर निगाह करे वही यशस्वी होता है।

नारने निकाला दंत, मर्दने ताड़ा अंत—स्त्रीने दांत निकाला और मर्द उसका नतीजा समझ गया। जब स्त्री हंसी, तो समझो कि वशमें हो गई।

नार सुलखनी कुटुम छकावे, आप तलेकी खुरचन खावे—अच्छी स्त्रियां कुटुम्बियोंको भर पेट खिला देती हैं और आप बची खुची खाकर ही संतुष्ट होती हैं।

नारि नहीं तहं कानी रानी—दे० 'जहां रूख नहीं...'

नारि धर्म पति देव न दूजा–स्त्रियोंके लिये पतिके सिवाय दूसरा देवता नहीं है।

नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं, तेहि प्रताप निज अमर डराहीं—(तुल०) स्पष्ट।

नारि विवश नर सकल गुसाईं, नाचहिं नर मरकटकी नाईं—(तुल०) स्त्रियां पुरुषोंको वशमें कर बन्दरकी तरह नचाया करती हैं।

नारि मुई कुल सम्पति नासी, मूंड मुड़ाय भये सन्यासी—(तुल०) कलियुगके संन्यासीपर कही जाती है। जो स्त्रीके मरनेपर वा घरकी सम्पत्ति खो देनेपर संन्यासी बन जाते हैं।

नारियलमें पानी, नहीं जानता खट्टा कि मीठा—जब कोई बात छिपी हुई हो और संदेहयुक्त हो, तब क०।

नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं, अवगुण आठ सदा उर रहहीं—(तुल०) स्पष्ट।

साहस, अनृत, चपलता, माया।
भय, अविवेक, अशौच, अदाया। (तुलसी)

नाले मूंज वगड़, नाले देवी दा दर्शन—(पं०) एक पन्थ दो काजपर क०। मूंज और वगड़ घासकी किस्ममें होती है जो रस्सी बनानेके काम आती है। यह नदीके किनारे होती है जहां देवीके मन्दिर भी होते हैं। इसी जोड़की बंगला मसल है "रथ देखा आर कला बेचा।"

नाव चढ़े झगड़ालू आवें, साखी आवें पैरत—असामी फ़रियादीकी निसबत गवाहको बहुत तकलीफ़ होती है।

नाव भर रुई जल गई, अपने लेखे फुस—किसीका नुक़सान हो अपनी बलासे।

नाहीं करिबे तें कछू करिबो ही नीको है—कुछ भी न करनेसे कुछ करना अच्छा है।

निकली हलक़से चली खलक़में—बात मुखसे निकलते ही संसारमें फैल जाती है।

निकली होठों चढ़ी कोठों—ऊ० दे०।

निकरन हार बहुरिया दुरौंधाका दोष—दे० 'उघलो बहू........'

निकसत हैं इक आंकसे, धोई, धोबी, धान, आछे भोंड़े हो गये, सब करतबके तान—धोई, धोबी और धान तीनों शब्दोंके प्रारंभमें एक ही अक्षर है पर अपने अपने कर्तव्यसे भले बुरे कहलाते हैं। धोई=ठग।

निकसो चंदा, तो अंधेरो भयो मन्दा—सबके सामने झूठ नहीं ठहर सकता।

निकाही न ब्याही, मुंडो बहू कहांसे आई—(मु०) स्पष्ट। झूठा रिश्ता जोड़नेपर क०।

निकौड़िया गये हाट, ककड़ी देख जीवरा फाट—(पू०) क्योंकि उसके पास ख़रीदनेको दाम न था।

निखट्टू आवें लड़ने, कमाऊ आवें डरते—(ज०) स्त्रियां निखट्टुओंको कहा करती हैं, जो पैदा तो कुछ नहीं करते पर हर बातमें दुःख देते हैं।

निगल जाते हैं ऊंट और हुमसे हिचकी लें
निगल जांय हाथी सकल, पर हुमसे परहेज़

दे० 'गुड़ खांय गुलगुलों.........'

निज कवित्त केहि लागन नीका, सरस होय अथवा अति फीका—(तुल०) अपनी चीज़ अच्छी हो या बुरी सभीको अच्छी लगती है।

निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई, जानि न जाइ नारि गति भाई—(तुल०) स्त्री-चरित्रपर क०।

निज भुधिबल भरोस मोहि नाहीं—(तुलसी) अधीनता दिखानेके लिये क०।

निज सुगन्ध गुण मृग नहिं जाने—अपना गुण अपनेको नहीं मालूम पड़ता।

'इतिया जगको मवि सुखदाई,
बुझत जाय रोग भय पाई।
लोक चकि भी कहैं सयाने,
निज सुगन्ध गुन मृग नहिं जाने।'

निज हित अनहित पसु पहिचाना—(तुलसी) अपना अच्छा बुरा सभी समझते हैं।

निठल्ला वनियां पत्थर तोड़े—बनियां कामके बिना खाली नहीं रहता। कुछ न कुछ किया ही करता है। जब कोई निष्प्रयोजन काम करे, तब क०।

निशानवेके फेरमें पड़ गये—जब आदमी दुर्रकी

किफ़ायत कर रुपया इकट्ठा करनेमें लग जाता है, तब क० ।

१ किसी शहरमें दो बहिनें थीं। एकका ब्याह धनवानके साथ हुआ था और दूसरीका गरीबके साथ। जो गरीब थी उसने अपनी बहिनसे सहायता मांगी, तो उसने उसे निन्नानवे रुपये दिये। यद्यपि वह गरीब थी पर अभी-तक उसे सन्तोष था। जब उसने निन्नानवे रुपये देखे, तब जिस कामके लिये सहायता मांगी थी, उसमें खर्च न कर वह सौ रुपये पूरे करनेकी फ़िक्रमें लग गई, जिससे उसका कष्ट पहिलेसे भी बढ़ गया। (शिक्षा) धनसे संतोष अच्छा। कहा भी है "जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।" (२) किसी शहरमें एक सन्तोषी और उसकी स्त्री दोनों चार पैसे रोजमें अपना गुज़र करते थे। इसपर भी वे बहुत सुखी थे। उसकी एक भौजाई बहुत धनाढ्य थी जिससे उनका यह सुख न देखा गया और उसने उन लोगोंको तकलीफ़में डालनेके लिये छिपके एक थैलीमें निन्नानवे रुपये भरकर उसके घरमें रख दिये। वे गरीब तो थे ही, रुपया देखकर बहुत ख़ुश हुए। जब गिना तो एक कम सौ रुपये पाये। अब वह इस बातकी फ़िक्रमें लगे, कि किसी तरह सौ रुपये पूरे करें। उन्होंने अपना खर्चा घटा कर तीन पैसे रोजका किया। जब दो महीनेमें सौ रुपये पूरे हो गये, तब उन्होंने विचारा कि यदि दो पैसे होमें गुज़र करते तो इसका दूना हो जाता। ज्यों ज्यों उनका लालच बढ़ता गया वे पेट काटकर जोड़ने लगे। इस तरह उनकी चिन्ता और दुर्बलता बढ़ती गई और वह सुख सदाके लिये तिरोहित हो गया।

निन्नान्वे घड़े दूधमें एक घड़ा पानी क्या जाना जाय—दे० "सौ सयाने एक मत"

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे पूछा, कि सब पेशेवालोंमें सयाना कौन होता है। बीरबलने कहा, सबसे सयाने ग्वाले होते हैं। अपनी बात प्रमाणित करनेके लिये उसने एक दिन शहरके एक सौ ग्वालोंको बुलवाया और उन्हें एक हौज दिखाकर कहा, कि रातको सब कोई एक एक लोटा दूध इसमें डाल जाना। ग्वालोंने अपने अपने मनमें सोचा कि निन्नानवे आदमी तो दूध डालेंहींगे यदि मैं इसमें एक लोटा पानी डाल दूंगा तो कुछ भी न जान पड़ेगा। यही समझकर किसीने भी दूध न डाला और सबेरे ... बीरबलने उस ... कि हौजको इसने भरा नहीं है ...

निपट सवेरे खेतमा, जाकर हलको वाह, जब सूरज हो सीसमा, बैठ छांहमें जा—(कृ० उप०) स्पष्ट।

निपूतीके मुख देख ले सात उपास—(पू० ज०) स्त्रियोंका ऐसा विश्वास है कि सब सवेरे बांझ स्त्रीका मुंह देखनेसे खानेको नहीं मिलता।

निर्बलको जबर जबरको सबर—निर्बलको सबल मारता है और सबलको सबर मारता है।

निम्बू निचोड़—उस मनुष्यको कहते हैं जो किसी काम या चीज़में अपनी तरफ़से कुछ मिलाकर बराबरका हिस्सेदार बन जाय। स्वार्थी और मुफ़्तख़ोरोंकोभी क०।

किसी समय लखनऊ शहरमें ऐसे बहुत आदमी सराय और मुसाफ़िरखानोंमें घूमा करते थे जो अपनी जेबमें एक नीबू और एक छुरी सदा रखते थे। जब देखते कि किसी मुसाफ़िरने खिचड़ी बनाई है और खानेके लिये थाली परोसी है तो वह उनके पास आकर कहते कि बिना खटाईके खिचड़ीमें मज़ा नहीं; जब वह मुसाफ़िर कहता कि भाई यह परदेश है कहां खटाई खोजने जायं तभी आप कहते कि यदि आप परहेज़ न समझें तो यह हाज़िर है। यह कहकर जेबसे नीबू निकाल छुरीसे काटकर खिचड़ीमें निचोड़ देते थे। मुसलमानोंका यह क़ायदा है कि खाते समय जो कोई आ जाय उसे भी शरीक कर लेते हैं। तब मुसाफ़िर कहता कि आप भी बैठ जाइये "अब घरमें खाना तैयार हो गया होगा, पर आपका हुक्म भी नहीं टाल सकता" यह कहते हुए वह झट बैठ जाते और सपासप खिचड़ी उड़ाकर अपना पेट भर लेते थे। इसीसे यह लोग नीबू निचोड़ कहलाते थे।

नियारे चूल्हे बलबल जाऊं, सारा खाती आधा खाऊं—(ज०) नई बहूका कहना सासके प्रति। चूल्हा तो अच्छा चाहे आधा पेट ही खाने-

पथ ... सोह

निहंग लाड़ला सदा सुखी—स्वाधीन मनुष्य सदा सुखी रहता है।

निहचै जानो सिंहवल स्यार न कबहूं खाय—सबलका भाग निबल नहीं ले सकता।

नीक नीक मोरे भाग एक एक मछलियाकी दो दो मछलियां—(पू० अ०) जब किसीको एककी जगह दो मिले, तब खुशीमें क०।

नीक लगे ससुरालकी गारी—सहरालकी गाली भी प्यारी लगती है।

गारिको मजा तो ससुरार हीको गारिहिमें,
जाड़ेकी मजा तो भवनारि हीको जाड़ेमें। (पद्माकर)

नीकीपै फीकी लगे बिन अवसरकी बात, जैसे बरनत युद्धमें रस सिंगार न सुहात—(वृन्द) बेमौक़े अच्छी बात भी बुरी लगती है।

नीकोइ लागत बुरो, बिनु औसर जो होय।
प्रात भये फीको लगै ज्यूं दीपकको लोय॥ (नागरीदास)
नीकोइ फीको लगै जो जाकें नहिं काज।
पंथ अहारी जीवकै कौन कामको नाज॥ (नागरीदास)

नीकेको सब लागत नीको—सुन्दर मनुष्यके मुंहपर सभी चीज़ खुलती हैं।

सजे साजु तिय सहज सिंगार। सोभा लह्यो जु नन्दकुमार॥
कहै पखानो जग सुख जीको। नीकेको सब लागै नीको॥

नीच जात एक न एक उत्पात—स्पष्ट।

नीच जात छछूंदरी नाक धरे पछिताय—जैसे छछून्दरको छूकर सूंघनेसे पछताना पड़ता है उसी तरह नीच जातिको मुंह लगानेसे पछताना पड़ता है।

नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई—स्पष्ट।

नीच हिये हुलसे रहैं, लिये गेंदके पोत, ज्यों ज्यों माथे मारिये, त्यों त्यों ऊंचो होत—(बिहारी) नीच मनुष्य मनमें गेंदका सा गुण लिये हुए प्रसन्न रहते हैं। ज्यों ज्यों उनकी ताड़ना करते जाओ त्यों त्यों वे ऊंचे उठते जाते हैं।

धातइ मारे चढ़ति सिर, नीचको धूरि समान। (तुलसी)

नीचेकी सांस नीचे ऊपरकी सांस ऊपर—जब कोई बहुत दुःखकी बात सुने, तब क०

नीचेसे जड़ काटना, ऊपरसे पानी देना—जब कोई ऊपरसे भला बनकर भीतर ही भीतर नुक़सान पहुंचावे, तब क०।

नीम न मीठी होय सींच गुड़ घीसे, जिसका जो स्वभाव जाय नहिं जीसे—स्पष्ट। जब कोई नीच बहुत समझानेपर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता, तब क०।

मधुर वचन संग बानी बसै, अति तीखे उनके गुन ग्रसै।
कहो कहावत जप सब कोई, गुड़तें नीम न मीठी होई॥
अधमा। (लो० र० को०)

दे० "जाको जो स्वभाव"

नीम हकीम खतरे जान, नीम मौलवी खतरे ईमान—(फा०) अधूरा ज्ञान बहुत हानिकर होता है। जब किसी अयोग्य मनुष्यसे काम बिगड़ता है, तब क०।

नीयतकी बरकत है—ईमानदारीसे धन बढ़ता है। जब बेईमानी करनेसे किसीकी हानि हो, तब क०।

जैसी होय नेति वैसी होत बरकत है।

नीयत साबित मंज़िल आसान—जिसकी नीयत अच्छी रहती है उसके सब काम सहजमें होते हैं।

नीलकंठ कीड़ा भखै, मुखै विराजै राम। जात पांतसे क्या पड़ी, दरसन हीं सों काम—किसी की बुराईको न देखकर उसके गुणकी तरफ़ देखना चाहिये। नीलकंठ एक पक्षी होता है जिसका दर्शन करना दशहरेके दिन बड़ा पुनीत माना जाता है।

नीलका टीका और कोढ़का दाग़—यह दोनों कभी नहीं छूटते। जब किसीके चरित्रमें ऐसा धब्बा लग जाय कि मिटाये न मिटे, तब क०।

नील टांस जिससिर मंडरावे, मुकटपती सूं लाभा पावे—(मा०) लोग ऐसा विश्वास करते हैं, कि नील टांस (पक्षी विशेष) जिसके सिरपर फिर जावे उसे राजासे बहुत लाभ होता है।

नीव परी खरवर नहीं, मगरा डेरा कीन्ह—किसी अच्छे कामका प्रारम्भ होते ही जब उसे बिगाड़नेवाले आकर जुट जायं, तब क०।

नेक अन्दर बद, और बद अन्दर नेक—(मु०) अच्छोंके बुरे और बुरोंके अच्छे होते हैं। जैसे, उग्रसेनके कंस और हिरण्यकश्यपके प्रहलाद।

किफ़ायत कर रुपया इकट्ठा करनेमें लग जाता है, तब क०।

१ किसी शहरमें दो बहिनें थीं। एकका ब्याह धनवानके साथ हुआ था और दूसरीका गरीबके साथ। जो गरीब थी उसने अपनी बहिनसे सहायता मांगी, तो उसने उसे निन्नानवे रुपये दिये। यद्यपि वह गरीब थी पर अभी-तक उसे सन्तोष था। जब उसने निन्नानवे रुपये देखे, तब जिस कामके लिये सहायता मांगी थी, उसमें खर्च न कर वह सौ रुपये पूरे करनेकी फ़िक्रमें लग गई, जिससे उसका कष्ट पहिलेसे भी बढ़ गया। (शिक्षा) धनसे संतोष अच्छा। कहा भी है "जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।" (२) किसी शहरमें एक सन्तोषी और उसकी स्त्री दोनों चार पैसे रोजमें अपना गुज़र करते थे। इसपर भी वे बहुत सुखी थे। उसकी एक भौजाई बहुत धनाढ्य थी जिससे उनका यह सुख न देखा गया और उसने उन लोगोंको तकलीफ़में डालनेके लिये छिपके एक थैलीमें निन्नानवे रुपये भरकर उसके घरमें रख दिये। वे गरीब तो थे ही, रुपया देखकर बहुत ख़ुश हुए। जब गिना तो एक कम सौ रुपये पाये। अब वह इस बातकी फ़िक्रमें लगे, कि किसी तरह सौ रुपये पूरे करें। उन्होंने अपना खर्चा घटा कर तीन पैसे रोज़का किया। जब दो महीनेमें सौ रुपये पूरे हो गये, तब उन्होंने विचारा कि यदि दो पैसे हीमें गुज़र करते तो इसका दूना हो जाता। ज्यों ज्यों उनका लालच बढ़ता गया वे पेट काटकर जोड़ने लगे। इस तरह उनकी चिन्ता और दुर्बलता बढ़ती गई और वह सुख सदाके लिये तिरोहित हो गया।

निन्नान्वे घड़े दूधमें एक घड़ा पानी क्या जाना जाय—दे० "सौ सयाने एक मत"

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे पूछा, कि सब पेशेवालोंमें सयाना कौन होता है। बीरबलने कहा, सबसे सयाने ग्वाले होते हैं। अपनी बात प्रमाणित करनेके लिये उसने एक दिन शहरके एक सौ ग्वालोंको बुलवाया और उन्हें एक हौज़ दिखाकर कहा, कि रातको सब कोई एक एक लोटा दूध इसमें डाल जाना। ग्वालोंने अपने अपने मनमें सोचा कि निन्नानवे आदमी तो दूध डालेंहीगे यदि मैं इसमें एक लोटा पानी डाल दूंगा तो कुछ भी न जान पड़ेगा। यही समझकर किसीने भी दूध न डाला और सवेरे जब [illegible] और बीरबल उस [illegible]

निपट सवेरे खेतमा, जाकर हलको बाह, जब सूरज हो सीखमा, बैठ छांहमें जा—(कृ० उप०) स्पष्ट।

निपूतीके मुख देख ले सात उपास—(पू० ज०) स्त्रियोंका ऐसा विश्वास है कि जब सवेरे बांझ स्त्रीका मुंह देखनेसे खानेको नहीं मिलता।

निर्बलको जबर जबरको सबर—निर्बलको सबल मारता है और सबलको सबर मारता है।

निम्बू निचोड़—उस मनुष्यको कहते हैं जो किसी काम या चीज़में अपनी तरफ़से कुछ मिलाकर बराबरका हिस्सेदार बन जाय। स्वार्थी और मुफ़्तख़ोरोंकोभी क०।

किसी समय लखनऊ शहरमें ऐसे बहुत आदमी सराय और मुसाफ़िरखानोंमें घूमा करते थे जो अपनी जेबमें एक नीबू और एक छुरी सदा रखते थे। जब देखते कि किसी मुसाफ़िरने खिचड़ी बनाई है और खानेके लिये थाली परोसी है तो वह उनके पास जाकर कहते कि बिना तुर्शीके खिचड़ीमें मज़ा नहीं; जब वह मुसाफ़िर कहता कि भाई यह परदेश है कहां खटाई खोजने जायं तभी आप कहते कि यदि आप परहेज़ न समझें तो यह हाज़िर है। यह कहकर जेबसे नीबू निकाल छुरीसे काटकर खिचड़ीमें निचोड़ देते थे। मुसलमानोंका यह क़ायदा है कि खाते समय जो कोई आ जाय उसे भी शरीक कर लेते हैं। जब मुसाफ़िर कहता कि आप भी बैठ जाइये "तब घरमें खाना तैयार हो गया होगा, पर आपका हुक्म भी नहीं टाल सकता" यह कहते हुए वह झट बैठ जाते और सपासप खिचड़ी उड़ाकर अपना पेट भर लेते थे। इसीसे यह लोग नीबू निचोड़ कहलाते थे।

नियारे चूल्हे बलबल जाऊं, सारा खाती आधा खाऊं—(ज०) नई बहूका कहना सासके प्रति। चूल्हा अलग हो जाय तो अच्छा चाहे आधा पेट ही खानेको मिले।

निराचार जो श्रुति पथ त्यागी, कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी—(तुलसी) आजकलके साधुओंपर क०।

निर्धनके धन गिरिधारी—गरीबका धन ईश्वर है।

निस दिन खाना, कामको असकताना—स्पष्ट।

निहंग लाड़ला सदा सुखी—स्वाधीन मनुष्य सदा सुखी रहता है।

निहचै जानो सिंहबल स्यार न कबहूं खाय—सबलका भाग निबल नहीं ले सकता।

नीक नीक मोरे भाग एक एक मछलियाकी दो दो मछलियां—(पू० उ०) जब किसीको एकको जगह दो मिले, तब खुशीमें क०।

नीक लगे ससुरालकी गारी—ससुरालकी गाली भी प्यारी लगती है।

गारिकी मजा तो ससुरार होकी गारिहिमें,
गारीकी मजा तो मरमारि होकी गारीमें। (पद्माकर)

नीकीपै फीकी लगै बिन अवसरकी बात, जैसे बरनत युद्धमें रस सिंगार न सुहात—(वृन्द) बेमौक़े अच्छी बात भी बुरी लगती है।

नीकोइ लागत बुरो, बिनु औसर जो होय।
प्रात भये फीको लगै ज्यूं दीपककी लोय॥ (नागरीदास)

नीकोइ फीको लगै जो जाकैं नहिं काम।
यश आहारी जीवके कौन कामको नाम॥ (नागरीदास)

नीकेको सब लागत नीको—सुन्दर मनुष्यके मुंह-पर सभी चीज़ खुलती हैं।

सजे सानु तिय सहज सिंगार। छोभा लख्यो शु नन्दकुमार॥
कहे पद्माको नग सुख नीको। नीकेको सब लागै नीको॥

नीच जात एक न एक उत्पात—स्पष्ट।

नीच जात छछूंदरी नाक धरे पछिताय—जैसे छछून्दरको छूकर सूंघनेसे पछताना पड़ता है उसी तरह नीच जातिको मुंह लगानेसे पछताना पड़ता है।

नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई—स्पष्ट।

नीच हिये हुलसे रहैं, लिये गेंदके पोत, ज्यों ज्यों माथे मारिये, त्यों त्यों ऊंचो होत—(बिहारी) नीच मनुष्य मनमें गेंदका सा गुण लिये हुए प्रसन्न रहते हैं। ज्यों ज्यों उनकी ताड़ना करते जाओ त्यों त्यों वे ऊंचे उठते जाते हैं।

लातहु मारे चढ़ति सिर, नीचको धूरि समान। (तुलसी)

नीचेकी सांस नीचे ऊपरकी सांस ऊपर—जब कोई बहुत दुःखकी बात सुने, तब क०।

नीचेसे जड़ काटना, ऊपरसे पानी देना—जब कोई ऊपरसे भला बनकर भीतर ही भीतर नुक़सान पहुंचावे, तब क०।

नीम न मीठी होय सींच गुड़ घीसे, जिसका जो स्वभाव जाय नहिं जीसे—स्पष्ट। जब कोई नीच बहुत समझानेपर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता, तब क०।

मधुर वचन संग बानी बसै, अति नीचे उनके गुन रसै।
कही कहावत जप सब कोई, गुड़तें नीम न मीठी होई॥
कथमा। (औ० र० कौ०)

दे० "जाको जो स्वभाव"

नीम हकीम ख़तरे जान, नीम मौलवी ख़तरे ईमान—(फा०) अधूरा ज्ञान बहुत हानिकर होता है। जब किसी अयोग्य मनुष्यसे काम बिगड़ता है, तब क०।

नीयतकी बरकत है—ईमानदारीसे धन बढ़ता है। जब बेईमानी करनेसे किसीकी हानि हो, तब क०।

जैसी होत नीयत वैसी होत बरकत है।

नीयत साबित मंज़िल आसान—जिसकी नीयत अच्छी रहती है उसके सब काम सहजमें होते हैं।

नीलकंठ कीड़ा भखै, मुखै विराजै राम। जात पांतसे क्या पड़ी, दरसन हीं सों काम—किसी की बुराईको न देखकर उसके गुणकी तरफ़ देखना चाहिये। नीलकंठ एक पक्षी होता है जिसका दर्शन करना दशहरेके दिन बड़ा पुनीत माना जाता है।

नीलका टीका और कोढ़का दाग़—यह दोनों कभी नहीं छूटते। जब किसीके चरित्रमें ऐसा धब्बा लग जाय कि मिटाये न मिटे, तब क०।

नील टांस जिससिर मंडरावे, मुकटपती सूं लाभा पावे—(मा०) लोग ऐसा विश्वास करते हैं, कि नील टांस (पक्षी विशेष) जिसके सिरपर फिर जावे उसे राजासे बहुत लाभ होता है।

नीव परी सरवर नहीं, मगरा डेरा कीन्ह—किसी अच्छे कामका प्रारम्भ होते ही जब उसे बिगाड़नेवाले आकर जुट जायं, तब क०।

नेक अन्दर बद, और बद अन्दर नेक—(मु०) अच्छोंके बुरे और बुरोंके अच्छे होते हैं। जैसे, उग्र-सेनके कंस और हिरण्यकश्यपके प्रहलाद।

नेक नाम बनियां बदनाम चोर—जो वाणिज्य करता है उसकी नेकनामी और जो चोरी करता है उसकी बदनामी होती है। यद्यपि दोनों ही व्यापार हैं।

नेकी और पूंछ पूंछ—भलाई करनेमें पूछना क्या। जब कोई किसीसे पूछे कि मैं तुम्हारा अमुक काम कर दूं, तब क०।

नेकी कर दरयामें डाल—जब किसीका कोई उपकार करे तो उसे मुंहपर न लावे। जो लोग अपने किये उपकारको बारबार कहते हैं उनके शिक्षार्थ यह कहावत है।

नेकीका फल बदी—जब कोई किसीका उपकार करे और वह उलटी उसकी बुराई करे, तब क०।

नेकीका बदला नेक है, बदसे बदीको बातले—(नज़ीर) स्पष्ट।

नेकी करो ख़ुदासे पाओ—स्पष्ट। मुसलमान फ़क़ीर कहा करते हैं।

नेकीकी जड़ पातालमें—अर्थात् बहुत गहरी है।

नेकी बदी रह जाती है—मनुष्य तो मर जाता है पर उसका यश अपयश संसारमें रह जाता है।

हरिनाम चलै संगमें "शिवनाथ"
सो नेकी बदी रहि जात जहानमें।'

नेकी बरबाद गुनाह लाज़िम—(मु०) दे० 'नेकीका फल...'

नेमी पांड़े कमरमें जटा—ख़ाली दिखावा या ढोंगके लिये क०।

नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर—(पू०) ब्राह्मणको नेवता दिया मानों घरमें दुश्मनको बुलाया। ब्राह्मणोंके लालची स्वभावपर ताना है।

नेस्तीमें बरख़ुरदारी—जब ग़रीबीमें बाल बच्चे हों और उनका पालना माता पिताके लिये कठिन हो जाय, तब क०।

नेह भरो दीपक तऊ गुन बिन जोति न होत—(वृन्द) यदि दीयेमें तेल भरा हो, पर बत्ती न होतो रोशनी नहीं होती। कैसेहो अच्छे कुलका मनुष्य क्यों न हो पर निर्गुणी हो तो उसकी शोभा नहीं होती। अगाध धन होनेपर भी यदि सत्कर्म न करे, तो उसका नाम नहीं होता।

नैन छिपाये ना छिपैं, पट घूंघटकी ओट।
चतुर नार और सूरमा, करें लाखमें चोट—स्पष्ट

नैन सलोने अधर मधु, कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावे लोनपर, अरु मीठेपर लोन—स्पष्ट।

नैना तोहे पटक दूं, टूक टूक ह्वै जाय।
पहिले नेह लगायके, पाछे अलग ह्वै जाय—स्पष्ट

नैना देत बताय सब, हियको हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत—स्पष्ट

नौआके घर चोरी भेल, तीन चोंगा बार गेल—(पू०) और उसके यहां धरा ही क्या था।

नौआ देखले कांखेवार—(भो०) जब साधन देखकर कामपर मन चले, तब क०।

नौकर आगे चाकर, चाकर आगे कूकर—नौकरका नौकर कुत्तेके तुल्य है।

नौकरको चाकर, और मड़ईका ओसारा—दोनों ही बातें भद्दी और बेकार हैं। निष्प्रयोजन बातपर क०।

नौकर लाट कपूरके होंठ मलें और हक़ लें—लाट कपूरके नौकर ज़बरदस्ती हक़ लेते हैं। ढीठ नौकरको क०।

अकबरके समयमें लाट कपूर नामक एक बड़े गवैया हो गये हैं। जब वे किसी अमीरके यहां मुजरा करने जाते और उनको कोई इनाम देता और आदर पूर्वक यह कहता कि आपके नौकरोंके वास्ते है, तो उनके नौकर ढिठाई करके वह रकम उनसे ले लेते यह कहकर कि यह हम लोगोंको मिली है।

नौकरी अरंडकी जड़ है नौकरीकी जड़ आसमानमें नौकरीकी जड़ ज़बानमें नौकरी ताड़की छांह	नौकरीका कुछ ठीक नहीं जब चाहे छूट जा सकती है।

इसलिये नौकरीका कुछ भरोसा न करना चाहिये।

नौकरी है कि भाईबन्दी—जब नौकर ग़ैरहाज़िर हो वा काममें बहाना करे, तब क०।

नौका, दूती, बैद प्रवीन, काम सरे पुछियत नहीं तीन—नाव, दूती और बैदको, काम निकल जानेपर कोई नहीं पूछता।

नौ की लकड़ी नव्वे खर्च
नौ की लकड़ी नव्वे ढुलाई } ज़रासे कामके लिये बहुत आडम्बर करनेपर क० ।

नौ कुंडे और दस नेगी—जितनी चीज़ हो उससे मांगनेवाले बहुत हों, तब क० ।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस—(१) बहुत सुस्त काम करनेवालेको क० ।

एक आदमीने किसी पोस्तीसे कहा, कि "पोस्तीने पी पोस्त, नौ दिन चले अढ़ाई कोस।" पोस्तीने जवाब दिया कि वह पोस्ती न होगा डाकका हरकारा होगा। अगर पोस्ती होता तो कूंडीके उस पार रहता या इस पार।

गोवर्धन् श्री अस्तर कहा, करि विलंब मन मोहन महा।
लोग जु ही मतवारिन दोस, नौ दिन चले अढ़ाई कोस।

(२) केदारनाथसे बद्रीनाथकी यात्रा पर क०। दोनों स्थानोंका अन्तर ढाई कोस है परन्तु रास्ता सीधा न होनेसे प्रायः पचास कोस चलना पड़ता है जिसमें नौ दिन लगते हैं।

नौ नगद न तेरह उधार—(व्य०) उधार तेरहमें बेचनेसे नगद नौमें बेचना अच्छा है।

'रखो इस नकूले पै कारोमदार,
कि नौ नकद अच्छे न तेरह उधार।'

नौ मन तेल न नारि सिंगार—दे० 'न नौमन तेल........'

नौ महीने मांके पेटमें कैसे रहा होगा—चंचल और उत्पाती लड़कोंको क० ।

नौमो गोगा पीर मनाऊं, न चरखेके हाथ लगाऊं जब कोई काम न करनेके लिये झूठा बहाना करे, तब क० । गोगा एक पीर हो गये हैं जिनकी मृत्यु सन् १०२४ ई० में हुई है। भादों बदी नौमीको उनकी यादगारीमें एक मेला होता है।

नौ सौ चूहे खाके बिल्ली हजको चली—(मु० ज०) जिसने जन्मभर पाप किया हो, अन्तमें साधु बनके बैठे, उसे क० । प्रायः जब वेश्या और दुश्चरित्र स्त्रियां भक्तिन बनती हैं, तब उनको व्यंगसे क० ।

वृद्ध वेश्या तपस्विनी (सं०)

अमल अगोचर अमन बनी अनु न अब,
सातमृग खायके बिलारि बनी भगतिन ।
(उ० श० गोपियोंका कहना ऊधवके प्रति)

नोह भर खाया तो खाया, मुंहभर खाया तो खाया खानेका नाम तो हुआ चाहे चुटकी भर खाया चाहे पेट भर। चोरी करने वा रिश्वत लेने पर क० ।

न्यारा पूत पड़ोसी दाख़िल—जो लड़का अपनेसे जुदा हो गया वह पड़ोसीके तुल्य हो जाता है।

न्योतें गांव पास नहिं कौड़ी—(व०) डींग हांकनेवालेको क० ।

प

पंच कहें बिल्ली, तो बिल्ली ही सही—जो सबकी राय सो अपनी राय। अपनी अनिच्छा रहनेपर भी जब कोई काम सबकी रायसे किया जाय, तब क० ।

इसपर एक कहानी इस प्रकार है.—रातके समय किसी बनियेने एक चोर पकड़ा। चोर जब बिल्लीकी तरह म्यौं म्यौं करने लगा तो बनियेने कहा, यदि सवेरे पंच तुझे बिल्ली कहें तो तू बिल्ली ही समझकर छोड़ दिया जायगा। अभी तो मैं तुझे चोर समझकर घरमें बन्द किये देता हूं।

(१) लाल साज सजि बाल सिंगार, चली चहति दिगपर तिय वार। सखि सखि कही पठानी खिसे, पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली। (अधीरा) सखि कहती है कि लाल बालका सिंगार करके दूसरी स्त्रीके द्वारपर जाते हैं देख, उसपर उसने कहा अच्छा, यही सही अर्थात् मेरी समझमें बात नहीं है, परन्तु तुम कहती हो तो यही सही।

(२) जो कछु लखि न परे निज हानि,
तौ समाजको तजइ न कानि।
ज्यों बिन स्वारथ कहिये खिल्ली,
"पंच कहैं बिल्ली तो बिल्ली" (लो० सं०)

पंच जहां परमेश्वर
पंचनके मुख हैं परमेश्वर } पंचमें परमेश्वरका वास होता है।

जहां पांच सत्यवादी इकट्ठे होकर निर्णय करते हैं वहां न्याय ही होता है, तब क०,

पंच बराबर टाटपर, हैं अमीर कंगाल—पंचके टाटपर अमीर ग़रीब सब बराबर हैं। विचार सबके लिये एक सा है। जातिमें छोटा बड़ा कोई नहीं।

पंच माने खुदा खुदा माने पंच—(मु०) पंच खुदा-

परस्त होता है इसलिये खुदाको भी पंचोंका कहना मंजूर है।

पंचोंका कहना सिर माथेपर मगर परनाला यहीं रहेगा—उस हठी मनुष्यको कहते हैं जो चार आदमियोंके मना करनेपर भी अपने ही मनका काम करे।

किसी मनुष्यके घरकी मोरीका पानी उसके पड़ोसीके घरमें जाता था। जब पड़ोसीके कहनेपर उसने अपनी मोरी न हटाई तो इस झगड़ेको निपटानेके लिये पांच पंच नियुक्त हुए। पंचोंने फ़ैसला किया कि तुम अपनी मोरी इधरसे हटाकर दूसरी तरफ़ बनवा लो। जिसके उत्तरमें उसने उक्त मसल कही।

पंचोंका जूता और मेरा सिर—मैं पंचोंका हुक्म माननेको तैय्यार हूं। जो दण्ड पंच मुझे दें, मैं भोगनेको तैय्यार हूं। प्रायः निर्दोषी मनुष्य अपनी निर्दोषिता दिखाकर पंचोंके सामने ऐसा कहते हैं।

पंचों शामिल मर गये जानो गये बरात—सबके साथ मिलकर कष्ट भोगना वैसा ही है जैसा बरात में जाना। जो कष्ट सभीको हो वह अखरता नहीं।

पंडित और मसालची, दोनों उल्टी रीत। और दिखावें चांदनी, आप अंधेरे बीच—संसारकी उल्टी रीतिपर क० जो दूसरोंको रोशनी दिखाता है वह खुद अंधेरेमें रहता है, जो दूसरोंको खिलाता है वह खुद भूखा रहता है।

पंडित पोथी बांचते, मुल्ला पढ़े क़ुरान। लोग भुलावा लख करो, नाह मिले भगवान—बिना सच्ची भक्तिके ईश्वर नहीं मिलते। (दे०) "पड़े भटकते..."

पंडित भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत। भाव भगत जानी नहीं, भये जंगलके भूत—बिना सच्ची भक्तिके ऊपरी दिखावेसे ईश्वर नहीं मिलता।

पंडित सोई जो गाल बजावा—(तुलसी) आज कल वही पण्डित माने जाते हैं जो बहुत बकते हैं।

पकले गूलर कौएके नीद आवाला—(भो०) जब मन चाही चीज़ मिलनेके लिये कोई बेचैन हो, तब क०। कौए गूलर बहुत खाते हैं।

पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और। दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और—जो मेहनत करेगा सो फल पावेगा।

पक्का पान खांसी न ज़ुकाम—कच्चा पान कफ़ पैदा करता है पक्का नहीं।

पक्का होना चाहे तो, पक्के के संग खेल। कच्ची सरसों पेलके, खरी होय ना तेल—स्पष्ट।

पक्के आमके टपकनेका डर है—बूढ़े मनुष्यको क०।

पखालका लादना और डांक चलाना एक सा—दोनों ही काम जल्दी किये जाते हैं।

पगड़ी दोनों हाथोंसे थामी जाती है—इज्ज़तको मज़बूतीके साथ बचाना चाहिए।

पगड़ी रख, घी चख—इज्ज़त रखकर खर्च करना चाहिए।

पग पवित्र तीरथ गमन, कर पवित्र कुछ दान। मुख पवित्र तब होहिंगे, भजले श्रीभगवान—तीर्थाटनसे पैर, दानसे हाथ और ईश्वरका नाम लेनेसे मुंह पवित्र होता है। तोते मैनाको सिखाई जाती है।

पग बिन कटे न पंथ—बिना चले मंज़िल ते नहीं होती। बिना किये कोई काम नहीं होता।

पछवां चले, खेती फले—(कृ०) स्पष्ट।

पठानका पूत, घड़ीमें औलिया घड़ीमें भूत—पठान वहमी और निर्दई होते हैं।

पठान लड़ाई मारें, और बहिने दाढ़ी फटकारें—क्योंकि इस ज़ातमें सब ही लड़ाके होते हैं।

पठानोंने गांव मारा, जुलाहोंकी चढ़ बनी—इसलिये कि उनको नौकरी लग जायगी क्योंकि उच्च श्रेणीके मनुष्य विजेताकी नौकरी नहीं करते।

पड़ली पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने बस—(पू० ज०) आज्ञाकारी स्त्रीका कहना, क र पतिके प्रति।

पड़वा गमन न कीजिये, जो सोनेकी होय—पड़वाको विदेश यात्रा न करे; चाहे कैसाही लाभ होता क्यों न दिखाई पड़े।

पड़िया मोल भैंस सुगौना—पड़िया खरीदे और भैंस रूकनमें मांगे। जब कोई थोड़े दामकी चीज़ खरीदे और बहुत दामकी चीज़ मुफ़्तमें मांगे, तब क०

पड़े भटकते हैं लाखों पंडित, हजारों मुल्ला

करोड़ों स्याने। जो खूब देखा तो यारो आख़िर, ख़ुदाकी बातें ख़ुदा ही जाने—(नज़ीर)
ईश्वरकी सृष्टिपर क०।

पढ़े रहे दरबारमें, धका धनीके खाय। एक दिन ऐसा होयगा, आप धनी हो जाय—
बड़ेके आसरेमें रहना लाभ दायक है।

हरि तुमसों विनती यही, कीजत बार हजार।
जेहि तेहि भांति पर्यो रहौं, पर्यो रहौं दरबार॥ (बिहारी)

पड़ोसीके मेह बरसेगा तो बौछार यहां भी आयेगी—मालदारके पास रहनेसे किसी न किसी तरहका फ़ायदा ही होगा।

पढ़ना लिखना साढ़ेबाईस—जो लड़का पढ़ता लिखता नहीं, उसको क०।

पढ़ पढ़के पत्थर भये, लिख लिखके भये ईंट। हो होके गारा भये, चुनन लगे तब भींत—
जब पढ़ लिखकर किसीको सफलता नहीं होती, तब क०।

पढ़िये भैया सोई, जामें हड़िया खुदबुद होई—(पू० ज०) वही सीखो जिसमें घरका ख़र्चा चले।

ख़्वाह साहबकी तुम सलाम करो।
ख़्वाह मन्दिरमें राम राम करो।
भाईजी का फ़कत यह मतलब है,
जिसमें रुपया मिले वह काम करो। (अकबर)

पढ़ेके आगे ठोकरा डाला, उसने कहा मुझे उपलोंको भेजा—बुद्धिमान इसारेमें बात समझता है

पढ़े घरकी पढ़ी बिल्ली—सोहबतका असर होता है।

पढ़े तोता, पढ़े मैना, कहीं सिपाहीका पूत भी पढ़ा है—हिन्दुस्थानी सिपाही प्रायः पढ़े नहीं होते, इसीसे क०।

पढ़े तो हैं पर गुने नहीं—विद्या तो पढ़ी पर उसका मनन नहीं किया। जो पढ़ा लिखा मनुष्य अपनी शिक्षाका उद्देश्य न समझे अथवा विद्वान होकर भी सांसारिक व्यापारोंको न समझे, उसपर क०। उदाहरणके लिये दो छोटी छोटी कहानियां नीचे दी जाती हैं।

(१) एक ज्योतिषीने अपने लड़केको ज्योतिष अच्छी तरह से पढ़ाया। जब वह सब विद्या सीख गया, तो एक दिन किसी धनवानके पास पहुंचा। वहां उसने अपनेको ज्योतिषी बता कर परीक्षा लेनेको कहा। उस धनी मनुष्यने अपने हाथमें एक अंगूठी लेकर कहा "बताओ मेरे हाथमें क्या है?" उसने गणित करके बताया कि आपके हाथमें जो चीज़ है वह गोलाकार है, उसमें धातु भी है, उसके बीचमें छेद भी है तथा उसके साथ पाषाण भी है। यहां तक तो उसका कहना ठीक था। उसने कभी अंगूठी नहीं देखी थी, अपने घरमें चक्की देखी थी; इसलिये वह झट बोल उठा कि आपके हाथमें चक्कीका पाट है। पंडित होनेपर भी उसकी बुद्धिमें यह नहीं आया कि चक्कीका पाट मुट्ठीमें नहीं आ सकता। वह धनी बोला कि आप पढ़े तो हैं मगर गुने नहीं।

(२) एक वैद्यने अपने शिष्यको वैद्यक ख़ूब अच्छी तरहसे पढ़ा दी। एक दिन वैद्यराज रोगीको देखने गये और अपने शिष्यको भी साथ लेते गये। उन्होंने रोगीकी नाड़ी देखकर कहा कि इसको सर्दी हुई है। उपरान्त अपने शिष्यको भी नाड़ी दिखाई। उसने भी वैसा ही कहा। फिर वैद्यराज बोले, इसने गंडेरियां ज़्यादा खाई हैं इसीसे सर्दी हुई है। रोगीने क़बूल किया। घर आकर शिष्यने कहा, आपने मुझे सब विद्या नहीं पढ़ाई, कुछ अपने हाथमें रखली है, नहीं तो आपने कैसे कहा कि रोगीने गंडेरी खाई है। गुरुने जवाब दिया, ये सब बातें चालाकी और ऊपरी व्यवहारसे जानी जाती हैं, शास्त्रोंमें नहीं लिखी रहतीं। उस रोगीके घरमें ऊखके छिलके और गंडेरीकी सीठी पड़ी थी, वही देखकर मैंने अनुमानसे कह दिया था। शिष्यको यह अभिमान हुआ कि यह काम तो मैं भी कर सकता हूं। इसमें विद्याका विशेष प्रयोजन नहीं है। एक दिन वह किसी रोगीको देखने गया। नाड़ी देख कर उसने कहा तुम्हारी नाड़ीमें भारीपन है। तुमने कोई भारी चीज़ खाई है। घरमें चारों ओर देखा तो उसे कोनेमें घोड़ेका साज़ रखा देख पड़ा। उस जगह घोड़ेको न देखकर वह समझा कि यह घोड़ेको खा गया है, इसलिये झट बोल उठा कि मैं जानता हूं कि तुमने घोड़ा खाया है। यह सुनकर रोगीने उसको अपने घरसे बाहर निकलवा दिया।

पढ़े न लिखे नाम विद्याधर (वा विद्यासागर)—
(प०) नामके अनुसार गुण नहीं होनेपर क०।

पढ़े फ़ारसी बेचें आटा,
यह देखो क़िसमतका घाटा—
पढ़े फ़ारसी बेचें तेल,
यह देखो कुदरतका खेल—
(जब विद्वान मनुष्य कोई छोटा काम करता है,)
तब क०। भाग्यसे पढ़े लिखे मनुष्य भी मारे मारे फिरते हैं।

पढ़े लिखे कुछ नहीं, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल—नामके अनुसार गुण नहीं होने पर क०।

पढ़े लिखे बेवक़ूफ़—जो कोई पढ़ा लिखा मनुष्य मूर्खताकी बातें करे, उसे क०।

हम चन्दां कि बेश्तर खानी।
चूं अमल नेस्त दर तो नादानी॥
नमुहक्क़िक़ बुवद न दानिशमन्द।
चार पाये बरो किताबे चन्द॥

जो पढ़े-लिखे मनुष्य मूर्खोंकेसे काम करते हैं, वे पढ़े लिखे मूर्ख हैं। किसी गधेपर यदि कुछ ग्रंथ लाद दिये जायँ, तो क्या वह उनसे विद्वान बन सकता है?

पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे खराब—लड़कोंको पढ़नेकी रुचि उपजानेके लिये क०।

पढ़ो तो पढ़ो, नहीं तो पींजरा खाली करो—तोतेको पढ़ाते समय क०। निकम्मे नौकरको या बूढ़े बीमारको जिससे जी उकता गया हो, उसे क०।

पढ़ों में अनपढ़ा, जैसे हंसोंमें कौवा—स्पष्ट।
सभा मध्ये न शोभन्ते हंस मध्ये बको यथा (चाणक्य)

पतली नार खाय चार, मुंस कहे मेरी निराधार, मोटी नार खाय अधी, मुंस कहे मेरी कोठी भखी—(पं०) दुबली स्त्री चार रोटी, खाय तो भी पति कहता है कि यह कुछ नहीं खाती और मोटी स्त्री यदि आधी रोटी भी खाय तो पति कहता है यह मेरा घर खा गई।

पति और परमेश्वर बराबर—स्पष्ट। स्त्री पतिके सामने अपनी सचाई प्रगट करनेके समय कहती है।

'सुखहि सौति सों करै पिआर,
मोहि पतिके सुखसों सुख सार।
कैसे मनमें धारों आन,
पति परमेश्वर कहत समान॥
(सवैया, स्त्री० र० कौ०)

पतुरिया रूठी, धरम बचा—क्योंकि फिर उसके पास न जायगा।

पतुरियोंका डेरा, जैसे ठगोंका घेरा—क्योंकि वहां जाकर भी आदमी लुट जाता है।

पत्ता खड़का, बन्दा सड़का—आहट पाई और खिसक दिये। जब किसीके ऊपर कोई बात आती हो यह समझकर वह चल दे, तब क०।

पत्थरकी लकीर—जो कभी नहीं मिटती, सच्चोंकी बात पर क०।

पत्थरको जोंक नहीं लगती—मूर्खको उपदेश नहीं लगता। निर्दयीके आगे रोनेसे उसे दया नहीं आती।

'जार सुभाव कहा रस जानै,
तजि हटि व सिख काहू न मानै।
उपखानो प्रसिद्ध तिहु लोक,
पाथरकी नहिं लागहि जोंक।

पत्थर डारे कीचमें उछरि बिगारे अंग—दे० 'न ईंट डालो न........'

पत्थर पूजे हरि मिले, तो बंदा पूजे पहाड़।
माला फेरे हरि मिले, तो बंदा फेरे झाड़—(कबीर) नास्तिकोंका कहना है।

पत्थर मारे मौत नहीं आती—बिना मौतके आये कोई नहीं मरता।

पत्थर मोम नहीं होता—जिसका हृदय कठोर है वह जल्दी नहीं पसीजता।

पद्नी आइल, न पेठिया लागल—(पू०) बिना वेश्याके हाट नहीं लगती

पनिहारी की लेजसे, सहजे कटे पखान—पनिहारीकी रस्सीसे पत्थरपर भी निशान पड़ता है। अभ्यास करनेसे सब कुछ हो सकता है।

करत करत अभ्यास ते, जड़मत होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर पड़त निशान॥ (वृंद)

पर अकाज भट सहसबाहुसे—(तुल०) दुष्टोंको क०।

पर अघ सुने सहस दस काना—(तुल०) ऊ० दे०।

पर आस, नित उपास—जो दूसरेकी आशामें रहता है, वह भूखा मरता है।

पर उपकारी, धरमधारी—परोपकारी ही धर्मात्मा होते हैं। व्यंगसे भी क०।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहि ते नर न घनेरे—(तुल०) जो कोई दूसरेको तो उपदेश दे पर आप उसके अनुसार काम न करे, उसे क०।

' परोपदेशे पाण्डित्यम्'

परफल घोड़ भुसौले ठाढ़—(पू०) दे० छूटो घोड़ी...

परकी आसा सदा निरासा—दे० 'पर आस'

परकी खेती परकी गाय, वह पापी जो मारन जाय—दे० 'अनकर खेती'।

परके धनपर चोर रोवे—जब उससे छिन जाता है। दे० 'रोवे चोर'।

पर घर कूदें मूसलचंद—जो बिना बुलाये किसीके यहां जाय और बिना कहे उसके काममें दखल दे, उसे क०।

पर घर नाचें तीन जने, कायथ, वैद्य, दलाल—लेखक, वैद्य और दलाल यह तीनों दूसरों हीके भरोसेपर पेट पालते हैं।

परचे परतीत है—देखनेसे या जाननेसे विश्वास होता है।

परजा मरन, राजाकी हंसी—जब राजा अपने सुखके लिये ऐसा काम करे जिसमें प्रजाको कष्ट हो, तब क०।

पर तिरिया पर धनके ऊपर, जो कोई सुता धरे हैं। जब छूटे हैं, प्राण पियारे, जाके नरक परे हैं-स्पष्ट।

परदाफाश करना—किसीका गुप्त भेद खोलना।

परदेकी बीबी और चटाईका लंहगा—(प०) इज्जतके तुल्य पोशाक न हो, तब क०।

परदेश कलेस नरेशनको—विदेशमें राजाओंको भी कष्ट होता है।

परदेसीकी प्रीतको, सबका मन ललचाय। दोई बातकी खोट है, रहे न संग ले जाय—विदेशीसे प्रीति करना वृथा है, क्योंकि वह अधिक कालतक नहीं निभ सकती।

परदेसीकी प्रीत फूसका तापना, दिया कलेजा काढ़ हुआ नहिं आपना—ऊ० दे०।

प्रीत अवाहिर यों इनको ज्यों उधारेको खाव पुआरेको तापन। (उ० ५०)

परदेसी बालम तेरी आस नहीं, बासी फूलोंमें बास नहीं—(ग्रा०) ऊ० दे०।

परद्रोही कि होय निसंका, कामी पुनि कि रहै अकलङ्का—(तुलसी) जो दूसरोंसे दुश्मनी रखता है उसे सदा डर बना रहता है और कामी पुरुष कभी निष्कलंक नहीं रह सकता।

पर धन राखे मूरखचन्द—जो दूसरेका धन धरोहर रखता है वह मूर्ख होता है क्योंकि उसके रखनेसे उसका कुछ लाभ नहीं होता और यदि खो जाय तो अपने पाससे दण्ड भरना पड़ता है।

पर नारी पैनी छुरी, कोई मत लाओ अंग। दसों सीस रावनके ढहि गये, इस नारीके संग—पर स्त्रीसे बचनेके लिये क०। सीता हरनके लिये रावण मारा गया।

पर नारी पैनी छुरी, तीन जगहसे खाय। द्रव्य लेय योवन हरे, मुये नर्क ले जाय—स्पष्ट। ऊ० दे०।

पर पतरीको नीक बरा—पराई चीज़ अच्छी लगती है।

पर बसमें सुख है नहीं, निज बस ही सुख भोग। यातें पर बस त्यागकैं, रहैं सुबस बुधलोग दे० "पराधीन सपने सुख नाहीं"

पर मुई सासू, एसों आये आंसू—(पू० ग्रा०) बनावटी दुःख प्रकाश करनेपर क०।

पर मुंडे फलहार—जो मनुष्य दूसरोंके सिरपर हाथ फेरकर अपना मतलब निकालते हैं, उनको क०। इसीके जोड़की बंगला मसल है—'मोदेर बुद्धि तोदेर कड़ि, सवाइ मिले फलार करि।' ढोंगी देश हितैषियों-पर खूब फबती है क्योंकि उनका काम ही है देश हितके लिये चन्दा करना और उसे हड़प जाना।

परमेश्वर जो करता है सो अच्छे हीके लिये करता है—जो कुछ होता है सो ईश्वरकी इच्छासे होता है। आस्तिकों और संतोषियोंका कहना है। जब किसीपर कष्ट पड़ता है, तब उसे सान्त्वना देनेके लिये क०।

एक राजा अपने मन्त्री सहित शिकारके लिये जङ्गलमें गया। किसी अस्त्रसे राजाकी उंगली कट गई जिसे उसने मन्त्रीको दिखाया। मन्त्रीने कहा, परमेश्वर जो करता है अच्छे हीके लिये करता है। राजाको मन्त्रीके इस कथन-

पर बड़ा क्रोध आया और उसे पदच्युत करके यहांसे निकाल दिया। राजा जब जङ्गलमें एक शिकारके पीछे पीछे बहुत दूर निकल गया तब चोरोंके एक गिरोहने उसे गिरफ़्तार कर लिया। बलि देनेके लिये चोर राजाको देवीके सामने ले गये। चोरोंमें जो पण्डित था उसने राजाकी उंगली कटी देखकर कहा कि इसका अङ्ग भङ्ग है इसलिये यह बलिदानके उपयुक्त नहीं। इसपर चोरोंने राजाको छोड़ दिया। राजा जब अपने शहरमें आया, तब उसे मन्त्रीकी बात याद आई और उसे बुलवाकर कहा कि तुमने ठीक ही कहा था, यदि मेरी उंगली न कटी होती तो मैं मार डाला जाता। मुझे तुम्हें निकाल देनेका बड़ा अफ़सोस है। मन्त्रीने कहा कि परमेश्वर जो करता है, अच्छे होके लिये करता है। यदि आप मुझे निकाल न देते तो मैं भी आपके साथ ही रहता और आपके बदले मेरा ही बलिदान होता।

परवतको राई करै राई परवत मान—ईश्वरकी क़ुदरत है। जब कोई धनवान निर्धन हो जाय या निर्धन धनवान हो जाय, तब क०।

चाहै सुमेरको छार करै, और छारको चाहै सुमेर बनावे।
चाहै तो रंकको राउ करै, अरु राउको द्वारहिं द्वार फिरावे।
रीत यही करुणानिधि की, कवि "देव" कहै विनती मोहि भावे।
चींटीके पांवमें बांधि गयंदहिं, चाहै समुद्रके पार लगावे।

परवतपर खोदे कुवां कैसे निकसे तोय—वृथा परिश्रम करनेपर क०।

क्यों कीजे ऐसे यतन जासों कार्य न होय।
परवतपर.........तोय। (वृन्द)

परहित घृत जिनके मन माखी—(तुलसी) जो दूसरेकी बढ़ती देखकर जलते हैं, उनको क०।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर निन्दा सम नहिं अधमाई—(तुलसी) स्पष्ट।

परहेज़ बड़ी दवा है—रोगमें परहेज़ करना दवासे अधिक काम करता है।

परहेज़ भी दवासे ज़ियादः मुफ़ीद है।

परहेज़ भी आधा इलाज है—ऊ० दे०। रोगियोंको कही जाती है जिसमें वे बदपरहेज़ी न करें।

पराई जेबसे अपनी जेबमें धरना मुश्किल है—दूसरेका धन लेना सहजनहीं है।

पराई तोंदका घूंसा—जिसका कष्ट अपनेको नहीं होता।

पराई थैलीका मुंह सकरा—अपना धन कोई जल्दी नहीं दिया चाहता। दे० "पराई जेबसे"

पराई नौकरी करना और सांपका खिलाना बराबर है—दोनों ही जोखिमके काम हैं।

पराई बद शकुनीके वास्ते अपनी नाक कटाना—दुष्टोंका काम है।

पराई सरायमें कौन धुआं करता है—जब कोई किसीकी मदद नहीं करता, तब क०। धुआं करना=आग बालकर उसको मदद पहुंचाना।

पराई हांसी गुड़सी मीठी—दूसरोंकी हंसी अच्छी मालूम पड़ती है।

पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं—(तुलसी) जो पराई नौकरी करे या दूसरेके अधीन रहे उसे कभी सुख नहीं मिलता।

पराया खाइये गा बजा, अपना खाइये टट्टी लगा—स्पष्ट।

पराया घर थूकका भी डर—पराये घरमें थूकनेका भी डर रहता है, अपने घरमें जो चाहो सो करो।

पराया दिल परदेश बराबर—जिसका हाल नहीं मालूम।

पराया दिल, समुन्दरके पार—ऊ० दे०।

पराया सिर कद्दू बराबर—जब कोई किसीका माल खर्च करनेमें ज़रा भी दर्द नहीं करता, तब क०।

पराया सिर क़ुरानकी जगह—(मु०) क़सम खानेके लिये। मुसलमान लोगोंमें क़ुरानकी क़सम बहुत खाई जाती है।

पराया सिर पसेरी बराबर—दे० "पराया सिर, कद्दू"।

पराया सिर लाल देख, अपना सिर फोड़ डालेंगे (ज०) दे० "पराई बदशकुनीके वास्ते।"

पराये धनपर झींगुर नाचे—जो दूसरेके धनपर ऐंठता है, उसे क०।

पराये धनपर लक्ष्मीनारायण—दूसरेके धनको ख़ैरात।

पराये पीरको मलीदा, घरके देवताको धतूरा—जब अपनेको छोड़कर दूसरेकी खातिर होती है, तब क०।

पराये वरधे आज़ाद करते हैं—दूसरेके नौकरोंको मुक्त करते हैं। दूसरेका नुक़सान करके वाह वाही लेनेवालेको क०।

परित्राणाय मूर्खानाम् विनाशायच धनीनाम्, आत्म स्वार्थ साधनाय संभवामि कलियुगे—स्वार्थी देशोद्धारकोंको कही जाती है जिनका काम धनिओंको मूर्ख बनाकर देशोद्धारके नामसे चन्दा उगाहना और उसे हड़प जाना ही है।

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे—(गीता) भगवानका कहना है कि मैं साधुओंके उद्धारके लिये और दुष्टोंके संहारके लिये अवतार लेता हूं।

परे झोंपरो देखहीं सत महलोंका स्वप्न—ऊंची आकांक्षा रखनेवालेको क०।

परोपकाराय सतां विभूतयः—(सं०) साधुओं (सज्जनों) की विभूति दूसरोंकी भलाई करनेमें है।

रत्नाकरः किं कुरुते स्वरत्नैः विन्ध्याचलः किं करिभिः करोति
श्रीखंड खंडं मलया चलः किं परोपकाराय सतां विभूतयः

पहाड़की उतराई चढ़ाई, दोनों पर लानत—बदमिज़ाज आदमी पर क०।

पहाड़ सुहावनो दूरते लागै—स्पष्ट।

पहाड़ी गधा पूर्वी रेंक—(व०) दे० 'देशी कुतिया...'

पहिली जीत मंगाये भीख—जुआरी कहते हैं।

पहिली बहुरिया, दूसरी पतुरिया, तीसरी कुकरिया—पहले विवाहकी स्त्री ही स्त्री होती है, दूसरे विवाहकी पतुरिया और तीसरे विवाहकी कुतियाके समान है।

पहिली बोहनी गुसैयांकी आस—दूकानदार और जुआरी लोग क०। मुसलमान लोग कहते हैं कि पहिली बोहनी अल्लामियांकी आस।

पहिले अपनी ही दाढ़ीकी आग बुझाई जाती है—पहले अपना ही काम संभाला जाता है।

पहिलेका झगड़ा अच्छा, पीछेका झगड़ा बुरा—(व्य०) काममें पहिले सफाई करलेनेके लिये कहते हैं, जिसमें पीछे विवाद न हो।

'पूर्वे रक्षा विवादः स्यात्।'

पहिले खाना, पीछे बात करना—जो काम सामने है पहले उसे पूरा करो।

पहिले ग्रासहिं मांछी गिरी—जब किसी कामके प्रारम्भ हीमें विघ्न हो, तब क०। यह संस्कृतके 'प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः' का उल्था है।

पहिले घड़ा फूटे कि मटकेना—दे० "कूजे ढलें कि माट।"

पहिले घरमें, तो पीछे मस्जिदमें—पहले घर देखो पीछे बाहर।

पहिले चुममे गाल काटा—(व्य०) जब कोई किसीको पहले ही पहल कोई काम दे और वह उसे बिगाड़ दे या पहले पहल किसीको उधार दे और वह रक़म मार बैठे, तब क०।

पहिले नहाना, पीछे खाना—हिन्दुओंका कहना है।

'स्नातं विहाय भोक्तव्यं सदस्यं वाममाचरेत्।'

पहिले पहरे सब कोइ जागे, दूजे पहरे भोगी। तीजे पहरे चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी—रातके पहिले पहरमें सब कोई जागते हैं, दूसरेमें भोगी, तीसरेमें चोर, और चौथेमें योगी जागता है।

पहिले पीवे जोगी, बीचमें पीवे भोगी, पीछे पीये रोगी—खाते समय पानी पीनेके लिये क०। तमाखू पीनेके लिये भी क०।

पहिले पीवे भकवा, फिर पीवे तमखवा, पीछे पीवे चिलमचट—तमाखू पीनेवालोंका कहना है। पहिले पीना धुआं पीना है, फिर तमाखू पीना है, और पीछे चिलम चाटना है।

पहिले बो पहिले काट—(कृ०) स्पष्ट।

पहिले मित्तर, तब देवता पित्तर—पेट भरेपर देवता पित्तर सूझते हैं।

पहिले मारे सो मीर—स्पष्ट।

देखि सुभंवर भञ्ज न मीर, हियमें धरि चकाइ गयो तीर।
कह्यो करे चपखानो धीर, पहिले मारे सोई मीर।

पहिले लिख और पीछे दे, कमती हो तो मुझसे ले—काग़ज़ कहता है कि जो लिखकर देता है उसकी

पर बड़ा क्रोध आया और उसे पदच्युत करके वहांसे निकाल दिया। राजा जब जङ्गलमें एक शिकारके पीछे पीछे बहुत दूर निकल गया तब चोरोंके एक गिरोहने उसे गिरफ्तार कर लिया। बलि देनेके लिये चोर राजाको देवीके सामने ले गये। चोरोंमें जो पण्डित था उसने राजाकी उंगली कटी देखकर कहा कि इसका अङ्ग भङ्ग है इसलिये यह बलिदानके उपयुक्त नहीं। इसपर चोरोंने राजाको छोड़ दिया। राजा जब अपने शहरमें आया, तब उसे मन्त्रीकी बात याद आई और उसे बुलवाकर कहा कि तुमने ठीक ही कहा था, यदि मेरी उंगली न कटी होती तो मैं मार डाला जाता। मुझे तुम्हें निकाल देनेका बड़ा अफसोस है। मन्त्रीने कहा कि परमेश्वर जो करता है, अच्छे हीके लिये करता है। यदि आप मुझे निकाल न देते तो मैं भी आपके साथ ही रहता और आपके बदले मेरा ही बलिदान होता।

परवतको राई करे राई परवत मान—ईश्वरकी कुदरत है। जब कोई धनवान निर्धन हो जाय वा निर्धन धनवान हो जाय, तब क०।

चाहे सुमेरको छारकरै, और छारको चाहे सुमेर बनावै।
चाहे तो रंकको राव करै, अरु रावको द्वारहिं द्वार फिरावै।
रीत यही करुणानिधि की, कवि"देव"कहै विनती मोहि
चींटीके पांवमें बांधि गयंदहिं, चाहे समुद्रके पार लगा

परवतपर खोदे कुआं कैसे निकसे तोय
वृथा परिश्रम करनेपर क०।

क्यों कीजे ऐसे यतन जासों कार्य न होय।
परवतपर.........तोय। (छन्द

परहित घृन जिनके मन माखी—(तुलसी)
दूसरेकी बढ़ती देखकर जलते हैं, उनको क०।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर निन्दा स
नहिं अधमाई—(तुलसी) स्पष्ट।

परहेज़ बड़ी दवा है—रोगमें परहेज़ करना दव अधिक काम करता है।

परहेज भी दवासे जियादः मुफ़ीद है।

परहेज़ भी आधा इलाज है—ऊ० दे०। रोगियों कही जाती है जिसमें वे बदपरहेज़ी न करें।

पराई ऊंधसे अपनी जेबमें धरना मुश्किल है—
दूसरेका धन लेना सहजनहीं है।

पराई तोंदका
होता।

पराई थैलीय
जल्दी नहीं

पराई नौक
बराबर है—

पराई बद
हुयों

पराई
कि

कुदरत

अपनी
उससे बहुत

समय चार
जा
इ पर सवार
पूछा कि
सवार

पांड़ेजी पछितायंगे सूखे चने खायँगे—ऊपर देखो।

पांड़े दोऊ दीनसे गये—जब कोई एक काम छोड़ कर दूसरा काम करने जाय, और उसमें भी विफल मनोरथ हो, तब क०।

एक ब्राह्मण मुहम्मदीय मज़हबको अच्छा समझ कर मुसलमान हो गया। कुछ दिन बाद उसने अपने इस नये मज़हबको निस्सार पाया तो फिर हिन्दू होने की इच्छा प्रकटकी। परंतु हिन्दुओं ने अपनी प्रथाके अनुसार उसे हिन्दू बनाना अस्वीकार कर दिया। इसलिये वह दोनों तरफ़से गया।

पांवके नीचे आया रोड़ा,तले सवार ऊपर घोड़ा—स्पष्ट।

पांवमें जूती न सिरपर टोपी—(१) बहुत ग़रीबी हालत पर क०। (२) बंगालियोंको क० (३) जो सिर पर टोपी पहने रहे और नंगे पैर हो, उसे क०।

पांव लों विनती, सौ लों गिनती—जिस तरह सौ से ज़्यादा गिनती नहीं होती उसी तरह पैर पड़नेसे ज़्यादह विनती नहीं होती। जब कोई अपना क़सूर माफ़ करानेके लिये किसीके पांव पड़े और इसपर भी वह न माने, तब क०।

पाक नाम अल्लाहका—(मु०) बे-ऐब नाम ईश्वरका है।

पाक रह, बेबाह रह—(मु०) निर्दोषीको डर नहीं।

पात पात करि आप लुटावे, काला मुंह कर जग दिखलावे तब लालोंमें लाली पावे—यह पहेली पलास वृक्ष पर है। पहिले वह अपने सब पत्ते गिरा देता है अर्थात् नङ्गा हो जाता है फिर उसमें काले रङ्गकी कलियां लगती हैं, अर्थात् संसारमें अपमानित होकर उसका मुंह काला होता है, पीछे लाल रङ्गके फूल खिलते हैं, जिससे सारा वन दहक उठता है अर्थात् अपने गुणोंसे बड़ोंमें भी सम्मान योग्य होता है। तात्पर्य यह है कि विना कष्ट उठाये मनुष्यको प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती।

पान और ईमान फेरे हीसे अच्छा रहता है—स्पष्ट।

पान पुराना घी नया, और कुलवंती नार। चौथी पीठ तुरंगकी, स्वर्ग निशानी चार—पुराना पान, नया घी, कुलवन्ती स्त्री, और घोड़े की सवारी जो ये चारों मिलें तो समझो कि स्वर्ग मिला। इसीकी उल्टी मसल यह है :—चढ़े बाल और मैले कपड़े और करकसा नार, सोनेको धरती मिले नरक निसानी चार।

पानीका सा बुलबुला है—क्षणभंगुर चीज़पर क०।

पानीका हगा ऊपर आता है—जब कोई छिपकर किसीकी बुराई करे और वह प्रगट हो जाय, तब क०।

पानी पीकर जात पूंछना—काम करनेके पहिले उसका परिणाम सोच लेना चाहिये, काम हो चुकनेपर जब उसका विचार किया जाय, तब क०।

सुरति करी तिय पति बत्र काम, जब बूझत रसियाको नाम।
लोक छकि मन मह नहिं रुझे, पानी पिये जात तब बूझे।
(परकीया)

पानी पीजे छानके, गुरु कीजे जानके—पानी छान कर पीना चाहिये और गुरु जानकर करना चाहिये।

पानी पीनेको पुरवा नहीं, आब दस्तको गड़ुआ—(स्त्र०) हैसियतसे ज़्यादा मांगपर क०।

पानी पीपीके कोसना—श्राप देनेपर क०।

पानी पीवें छानके, जीव मारें जानके—जैनियोंको क०। कपड़ेमें जो कीड़े रह जाते हैं वह मर जाते हैं।

पानी बाढ़े नावमें, घरमें बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम—(गिरधर) स्पष्ट सूमसे क०।

पानी मथनेसे घी नहीं निकलता—सूमकी सेवा करनेसे धन लाभ नहीं होता। मूर्खको उपदेश करनेका कुछ फल नहीं होता। असम्भव बातपर क०।

बारि मथे बरु होय घृत, सिकतातें बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल। (तुल०)

पानीमें पत्थर नहीं गलता (या सड़ता)—(व्य०) (१) कुछ रक़म डूबी नहीं जाती। किसी धनीके पास रक़म बाक़ी हो, तब क०। (२) निर्दयी किसी तरह नहीं पसीजता।

असर करता कहां रोना बुतोंपर,
भला गलता कहीं पानीमें पत्थर।

पानीमें पाषाण भीजे पर छीजे नहीं, मूरखके आगे ज्ञान रीझे पर बूझे नहीं—स्पष्ट।

पानीमें मछली नौ नौ टुकड़ा हिस्सा—(पू०) काम होनेके पहिले ही किसी बातका शुमार बांधने पर क०।

रोकड़में रुपया नहीं घटता।

पहिले सोच विचार पीछे कीजे कार—(व्या०) स्पष्ट।

पहिले ही गस्सेमें बाल आया—बदसगुन होना। दे० पहिले ग्रासहि......'

पहुंचे चंग आकासलों, जो गुन संयुत होय—गुन=डोरी। जिस तरह गुड्डी डोरके सहारे आकाशमें पहुंच जाती है, वैसे ही गुणवान मनुष्य ऊंचेसे ऊंचे पदपर पहुंच जाता है।

पहुना आये घर बसे, गये न ऊजड़ होय—स्पष्ट

पांच जूतियां और हुक्केका पानी—किसीको लानती देना हो, तब क०। जब कोई उचित प्राप्यसे अधिक मांगे, तब भी क०।

पांच दिन पचभीखम न्हाई, मैं जानू सारा कतक न्हाई—स्त्रियां कहती हैं जो पूरा कातिक महीना भर गंगा स्नान नहीं कर सकतीं। पंच भीखम कातिक सुदी ११ से १५ तक पांच दिन रहता है।

पांच पंच मिलि कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज—पांच आदमी मिलकर जो काम करते हैं, उसमें हानि भी हो, तो किसी एक के सिर बदनामी नहीं आती।

पांच पचासे ले गया, पांचे ले गया एक। टका रुपैया ले गया, तू बैठा बैठा देख—(व्य०) सूद खोरों पर क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—एक मनुष्यके पास पचास रुपये थे। उसने उन्हें सूदमें लगाना चाहा। एक आदमीको उसने पचास रुपये एक महीनेके वादेपर दिये और पांच रुपये सूदके पहिले काट लिये। फिर दूसरे आदमीको उसने एक रुपया सूद लेकर पांच रुपये उधार दिये। अब उसके पास एक रुपया रह गया तो उसने व्याजके लालचमें वही दो पैसे लेकर तीसरे आदमीको दे दिये। तीनों आसामियोंमें उसका रुपया मारा गया, तब उसने उपर्युक्त मसल कही।

पाँच महीने व्याहको बीते पेट कहां से लाई—दुश्चरित्रा स्त्री को क०।

पांचे आम पचीसे महुआ, तीस बरसमें इमली औ कहुआ—पांच वर्षमें आम, पचीस वर्षमें महुआ और तीस वर्षमें इमली और कहुआ फलता है। कोई कोई इमलीको कहुआ भी क०।

पांचे मीत पचासे ठाकुर—पांच रुपयेके लिये मित्र से और पचास रुपयेके लिये राजा वा ज़मींदारसे बिगाड़ न करे।

पांचों उंगलियां घी में तर—जिसकी खूब पौ बारह हो, उसे क०।

पांचों उंगलियां घी में, छटा सिर कड़ाहेमें—ऊ० दे०।

पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती—सब मनुष्य समान नहीं होते।

'पिय रुचिन हित सकल समान, पर न हूँ बर तिय उपमान
विधि गति देखि जगतके मांहि, पांचो उंगली एकसी नाहि'
(लो० र० कौ०)

पांचों उंगलियोंसे पहुंचा भारी—पांचके सहारे एककी प्रतिष्ठा होती है।

पांचों पंडे छठे नारायण—पांचों पांडवोंमें श्रीकृष्ण छठे हैं। जब कोई मनुष्य अकस्मात् ऐसे मनुष्योंमें जा मिले जहां उसकी बहुत क़दर हो तथा ज़रूरत भी हो, तब क०।

पांचों सवारोंमें मिलना—जब कोई मनुष्य अपनी तुलना ऐसे मनुष्योंके साथ करे जो उससे बहुत ऊंचे दरजेके हों, तब क०।

इसका निकास नीचेकी कहानीसे है:—किसी समय चार बादशाही सवार हथियार बांधे खूब सजधजकर कहीं जा रहे थे। एक निठल्ला मनुष्य एक लड़ियल टट्टू पर सवार हो उनके पीछे हो लिया। जब उससे किसीने पूछा कि तुम कहां जाते हो, तब वह बोला कि हम पांचों सवार दिल्लीसे आते हैं।

पांड़े जी पछितांयगे, वही चनेकी खायंगे—जब कोई मनुष्य हार कर वही काम करे जो पहिले उसने बहुत समझानेपर भी अपनी ज़िद्दसे न किया हो, तब क०।

किसी ब्राह्मणको चनेकी दाल अच्छी नहीं लगती थी। एक दिन और कोई दाल घरमें न रहनेके कारण ब्राह्मणीने चनेकी ही दाल बनाई। पांड़ेजीने रोटी खाना अस्वीकार किया। पंडाइनके बहुत समझाने पर भी वह राज़ी न हुए। इसपर उसने यह मसल कही। जब उनको बहुत भूख लगी, तब उन्होंने झख मारकर उसी चनेकी दालके साथ वह रोटी खाई।

पांडेजी पछितायंगे सूखे चने खायँगे—ऊपर देखो।

पांड़े दोऊ दीनसे गये—जब कोई एक काम छोड़ कर दूसरा काम करने जाय, और उसमें भी विफल मनोरथ हो, तब क०।

एक ब्राह्मण मुहम्मदीय मज़हबको अच्छा समझ कर मुसलमान हो गया। कुछ दिन बाद उसने अपने इस नये मज़हबको निस्सार पाया तो फिर हिन्दू होने की इच्छा प्रगट की। परंतु हिन्दुओंने अपनी प्रथाके अनुसार उसे हिन्दू बनाना अस्वीकार कर दिया। इसलिये वह दोनों तरफ़से गया।

पांवके नीचे आया रोड़ा,तले संचार ऊपर घोड़ा—स्पष्ट।

पांवमें जूती न सिरपर टोपी—(१) बहुत ग़रीबी हालत पर क०। (२) बंगालियोंको क० (३) जो सिर पर टोपी पहने रहे और नंगे पैर हो, उसे क०।

पांव लौं विनती, सौ लों गिनती—जिस तरह सौ से ज़्यादा गिनती नहीं होती उसी तरह पैर पड़नेसे ज़्यादह विनती नहीं होती। जब कोई अपना क़सूर माफ़ करानेके लिये किसीके पांव पड़े और इसपर भी वह न माने, तब क०।

पाक नाम अल्लाहका—(मु०) वे-ऐब नाम ईश्वरका है।

पाक रह, बेबाक रह—(मु०) निर्दोषीको डर नहीं।

पात पात करि आप लुटावे, काला मुंह कर जग दिखलावे तब लालोंमें लाली पावे—यह पहेली पलास वृक्ष पर है। पहिले वह अपने सब पत्ते गिरा देता है अर्थात् नङ्गा हो जाता है फिर उसमें काले रङ्गकी कलियां लगती हैं, अर्थात् संसारमें अपमानित होकर उसका मुंह काला होता है, पीछे लाल रङ्गके फूल खिलते हैं, जिससे सारा बन दहक उठता है अर्थात् अपने गुणोंसे बड़ोंमें भी सम्मान योग्य होता है। तात्पर्य यह है कि बिना कष्ट उठाये मनुष्यको प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती।

पान और ईमान फेरे हीसे अच्छा रहता है—स्पष्ट।

पान पुराना घी नया, और कुलवंती नार। चौथी पीठ तुरंगकी, स्वर्ग निशानी चार—पुराना पान, नया घी, कुलवन्ती स्त्री, और घोड़की सवारी जो ये चारों मिलें तो समझो कि स्वर्ग मिला। इसीकी उल्टी मसल यह है :—बड़े बाल और मैले कपड़े और करकसा नार, सोनेको धरती मिले नरक निसानी चार।

पानीका सा बुलबुला है—क्षणभंगुर चीज़पर क०।

पानीका हगा ऊपर आता है—जब कोई छिपकर किसीकी बुराई करे और वह प्रगट हो जाय, तब क०।

पानी पीकर जात पूंछना—काम करनेके पहिले उसका परिणाम सोच लेना चाहिये, काम हो चुकनेपर जब उसका विचार किया जाय, तब क०।

सुरति करी तिय परि बस काम, अब बूझत रसिया को नाम।
छोक छकि मन भई नहिं सूझे, पानी पिये जात तब बूझे।
(परकीया)

पानी पीजे छानके, गुरु कीजे जानके—पानी छान कर पीना चाहिये और गुरु जानकर करना चाहिये।

पानी पीनेको पुरवा नहीं, आबदस्तको गडुआ—(व०) हैसियतसे ज़्यादा मांगपर क०।

पानी पीपीके कोसना—श्राप देनेपर क०।

पानी पीवें छानके, जीव मारें जानके—जैनियोंको क०। कपड़ेमें जो कीड़े रह जाते हैं वह मर जाते हैं।

पानी बाढ़े नावमें, घरमें बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम—(गिरधर) स्पष्ट सूमसे क०।

पानी मथनेसे घी नहीं निकलता—सूमकी सेवा करनेसे धन लाभ नहीं होता। मूर्खको उपदेश करनेका कुछ फल नहीं होता। असम्भव बातपर क०।

बारि मथे बरु होय घृत, सिकताते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल। (तुल०)

पानीमें पत्थर नहीं गलता (या सड़ता)—(व्य०) (१) कुछ रक़म डूबी नहीं जाती। किसी धनीके पास रक़म बाक़ी हो, तब क०। (२) निर्दयी किसी तरह नहीं पसीजता।

असर करता कहीं रोना बुतोंपर,
भला गलता कहीं पानीमें पत्थर।

पानीमें पाषाण भीजे पर छीजे नहीं, मूरखके आगे ज्ञान रीझे पर बूझे नहीं—स्पष्ट।

पानीमें मछली नौ नौ टुकड़ा हिस्सा—(पू०) काम होनेके पहिले ही किसी बातका शुमार बांधने पर क०।

रोकड़में रुपया नहीं घटता।

पहिले सोच विचार पीछे कीजे कार—(व्या०) स्पष्ट।

पहिले ही गस्सेमें बाल आया—बदसगुन होना। दे० पहिले ग्रासहि......'

पहुंचे चंग आकासलों, जो गुन संगुन होय—गुन=डोरी। जिस तरह गुड्डी डोरके सहारे आकाशमें पहुंच जाती है, वैसे ही गुणवान मनुष्य ऊंचेसे ऊंचे पदपर पहुंच जाता है।

पहुना आये घर बसे, गये न ऊजड़ होय—स्पष्ट

पांच जूतियां और हुक्केका पानी—किसीको लानती देना हो, तब क०। जब कोई उचित प्राप्यसे अधिक मांगे, तब भी क०।

पांच दिन पचभीखम न्हाई, मैं जानू सारा कतक न्हाई—स्त्रियां कहती हैं जो पूरा कातिक महीना भर गंगा स्नान नहीं कर सकतीं। पंच भीखम कातिक छदी ११ से १५ तक पांच दिन रहता है।

पांच पंच मिलि कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज—पांच आदमी मिलकर जो काम करते हैं, उसमें हानि भी हो, तो किसी एक के सिर बदनामी नहीं आती।

पांच पचासे ले गया, पांचे ले गया एक। टका रुपैया ले गया, तू बैठा बैठा देख—(व्य०) सूद खोरों पर क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—एक मनुष्यके पास पचास रुपये थे। उसने उन्हें सूदमें लगाना चाहा। एक आदमीको उसने पचास रुपये एक महीनेके वादेपर दिये और पांच रुपये सूदके पहिले काट लिये। फिर दूसरे आदमीको उसने एक रुपया सूद लेकर पांच रुपये उधार दिये। जब उसके पास एक रुपया रह गया तो उसने व्याजके लालचमें वही दो पैसे लेकर तीसरे आदमीको दे दिये। तीनों आसामियोंमें उसका रुपया मारा गया, तब उसने उपरोक्त मसल कही।

पांच महीने व्याहको बीते पेट कहां से लाई—दुश्चरित्रा स्त्री को क०।

पांचे आम पचीसे महुआ, तीस बरसमें इमली औ कहुआ—पांच वर्षमें आम, पचीस वर्षमें महुआ और तीस वर्षमें इमली और कहुआ फलता है। कोई कोई इमलीको कहुआ भी क०।

पांचे मीत पचासे ठाकुर—पांच रुपयेके लिये मित्र से और पचास रुपयेके लिये राजा वा ज़मींदारसे बिगाड़ न करे।

पांचों उंगलियां घी में तर—जिसकी खूब पौ बारह हो, उसे क०।

पांचों उंगलियां घी में, छटा सिर कड़ाहेमें—ऊ० दे०।

पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती—सब मनुष्य समान नहीं होते।

'पिय दखिन हित सकल समान, मन न दे वर तिय उपमान
विधि गति देखि जगतके मांहि, पांचो उंगली एकसी नाहि'
(लो० र० को०)

पांचों उंगलियोंसे पहुंचा भारी—पांचके सहारे एकको प्रतिष्ठा होती है।

पांचों पंडे छठे नारायण—पांचों पांडवोंमें श्रीकृष्ण छठे हैं। जब कोई मनुष्य अकस्मात् ऐसे मनुष्योंमें आ मिले जहां उसकी बहुत क़दर हो तथा ज़रूरत भी हो, तब क०।

पांचों सवारोंमें मिलना—जब कोई मनुष्य अपनी तुलना ऐसे मनुष्योंके साथ करे जो उससे बहुत ऊंचे दरजेके हों, तब क०।

इसका निकास नीचेकी कहानीसे है:—किसी समय चार बादशाही सवार हथियार बांधे खूब सजधजकर कहीं जा रहे थे। एक निहत्था मनुष्य एक मड़ियल टट्टू पर सवार हो उनके पीछे हो लिया। जब उससे किसीने पूछा कि तुम कहां जाते हो, तब वह बोला कि हम पांचो सवार दिल्ली जाते हैं।

पांड़े जी पछितायंगे, वही चनेकी खायंगे—जब कोई मनुष्य हार कर वही काम करे जो पहिले उसने बहुत समझानेपर भी अपनी ज़िद्दसे न किया हो, तब क०।

किसी ब्राह्मणको चनेकी दाल अच्छी नहीं लगती थी। एक दिन और कोई दाल घरमें न रहनेके कारण ब्राह्मणीने चनेकी ही दाल बनाई। पांड़ेजीने रोटी खाना अस्वीकार किया। पड़ाइनके बहुत समझाने परभी वह राजी न हुए। इसपर उसने यह मसल कही। जब उनको बहुत भूख लगी, तब उन्होंने झख मारकर उसी चनेकी दालके साथ वह रोटी खाई।

पियें रुधिर पय ना पियें, लगी पयोधर जोंक—(वृन्द) नीच मनुष्य दूसरेके गुणोंको न ग्रहणकर अवगुण को ही ग्रहण करता है जैसे स्तनमें जोंक लगा दी जाय तो वह दूध न पीकर खून ही पी लेती है

पिसनहारीके पूतको चबेना ही लाभ—स्पष्ट।

पिसनहारीका बेटा और केसरका तिलक—(च०) जब कोई ग़रीब आदमी बड़े आदमीकी रीस करे, तब क०।

पी कारन पीरी भई लोग कहैं पिंड रोग, छिप छिप लंघन मैं किये पी मिलनेके जोग—विरहिनी नायिकाका कहना है।

पीच पी निमात खाई—मांड़ पीया और उसे दुनियां भरकी नियामत समझा। जब कोई बहुत कष्ट उठाकर दूसरेके साथ सलूक करते करते ऊब जाता है, तब क०।

पीठ पीछे कुछ ही हो—मेरे पीछे जो चाहे सो हो।

पीतम तू मत जानियो, भयो दूरको वास। देह गेह कितहूं रहै, प्राण तिहारे पास—विरहिनी नायिकाका अपने पतिके प्रति कहना।

कहा भयो जो बीछुरे मोमन तो मन साथ,
गुडी उडी चलि जात कित तऊ उड़ायक हाथ। बिहारी

पीतम तेरी पीतको, झुक झुक करूं सलाम। जबसे तो संग नेह करो, सुन्यों न सुखको नाम—स्पष्ट।

पीतम बसे पहाड़ पर, हम यमुनाके तीर। अबका मिलना कठिन है,(कि) पांव पड़ी जंजीर—स्पष्ट।

पीनेको पानी नहीं छिड़कनेको गुलाब—(च०) बाहरी दिखावे पर क०।

पीपल काटे, पाल विनासे, भगवान भेस सतावे, काया गढ़ीमें दया न व्यापे, जड़ा मूलसे जावे—(मा०) स्पष्ट।

पीपलकी चौखट—जो आदमी जल्दी पिंड न छोड़े, उसे क०। पीपलकी चौखट जल्दी टूटती नहीं।

पीपल पूजन मैं चली, निगम-बोधके घाट। पीपल पूजत पी मिले, एक पन्थ दो काज—स्पष्ट।

पी प्याला, मार भाला—प्याला पीलेतब युद्ध कर, जिसमें उत्तेजित हो जाय।

पीयाकी कमाई मोहे नहीं लहना, मोपै बाजूबन्द नहीं और सब गहना—झूठी शिकायत पर क०।

पीर आप ही दरमांदह, शफ़ात किसकी करेंगे?—जिसकी सहायता चाहे वह खुद ही विपदमें फंसा हो, तब क०।

पीरकी सगाई मीरके यहां—(मु० ज०) अच्छों का सम्बन्ध अच्छों हीसे होता है।

पीरको न शहीदको, पहिले नकटे देवको—(मु० ज०) जब कोई नगराय आदमी ऐसी चीज़ पहिले ही मांगे जो दूसरे अच्छे आदमियोंके लिये तैयार की गई हो, तब क०।

पीर मियां बकरी, मुरीद मियां यांगा। आगई बकरी खाय गई यांगा—(पू०) गुरु चेलोंकी कमाई खाते हैं।

पीर बबरची भिस्ती खर—ब्राह्मणको क०। पुरोहिताई करना, रसोई बनाना, पानी भरना या पिलाना और एक जगहसे दूसरी जगह संदेशा ले जाना या चीज़ ले जाना।

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे कहा, कि 'लाव बीरबल ऐसा नर, पीर बबरची भिस्ती खर' बीरबलने एक ब्राह्मणको ले आकर खड़ा कर दिया और कहा कि हुजूर! यह चारों काम कर सकता है। आजकलके ब्राह्मणों पर लागू है।

पीसनेवालियां पीस ले जायंगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ ले जायंगी—परोपकारीका कहना है

एक स्त्रीने दूसरीसे चक्की मांगी, तीसरीने देनेके लिये मांजी मारी, तब दूसरीने उक्त वचन कहीं।

पीस मुई, पका मुई, आये लौंडे खा गये—(ज०) मांका कहना निखट्टू लड़कोंसे।

पीहर घर सुवस बसे, जब लग है संसार—स्त्रियोंका कहना है।

पुन्नकी जड़ सदा हरी—अर्थात् कभी नहीं सूखती।

पुन्नि मिलै मनिच्छित भोग—मनके इच्छानुकूल भोग बड़े पुण्यसे प्राप्त होता है।

दम्पति दाहि भागके या
करैं केलि अति अति रति · ज

पानीमें मिल गया बतासा—बिलकुल घुल मिल जानेपर क०।

'मेरो मन पियके तन माहिं, भयो लीन क्यों दीसै नाहिं। कहे पखानो क्यों सुधि राखा, पानीमें मिल गयो बतासा।' (लोकता)

पानीसे पतला कर डाला—किसीको बहुत ज़लील या शर्मिन्दा करनेपर क०।

पानीसे पहिले पुल बांधते हो—दे० 'पानीमें मछली·········'

पाप उभड़े पर उमड़े—पाप छिपता नहीं।

पापका घड़ा भरकर डूबता है—दे०'पापीकी नाव'

पाप छिपाये, ना छिपे, जस लहसुनकी बास—स्पष्ट।

पाप डुबोवे धरम तिरावे, धरमी कभी नहीं दुख पावे—स्पष्ट।

पाप पहाड़पर चढ़के पुकारे—दे० 'पाप उभड़े···'

पापियोंके मारनेको पाप महाबली है—पापी अपने कर्मोंसे ही मारा जाता है।

पापीका माल अकारथ जाय—बुरी कमाई बुरे काममें ही खर्च होती है।

पापीका माल पराछित जाय, दण्ड भरे या चोर ले जाय—स्पष्ट।

पापीकी नाव भरके डूबे—पापीकी पहिले उन्नति होती है और पीछे अधःपतन होता है।

पापीके मनमें पाप ही बसे—स्पष्ट।

पाय कुल्हाड़ो आपने, मारत मूरख हाथ—मूर्ख अपना नुक़सान आप ही करता है।

पाये सोनेकी छुरी पेट न मारत कोय—सोनेकी छुरी अपने पेटमें नहीं मारी जाती।

पार उतरूं तो बकरा दूं—जब कोई विपत्तिके समय तो देवी देवता मनावे पर काम निकल जानेपर भूल जाय, तब क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है :—एक मुसलमान नावमें बैठकर नदी पार जा रहा था। जब बीचमें पहुंचा तब बड़े ज़ोरसे तूफ़ान आया। उसने किसी पीरकी मन्नत मानी कि यदि सकुशल पार पहुंच जाऊं तो बकरा चढ़ाऊंगा। तूफ़ान मन्द हुआ तो उसे बकरेका लोभ हुआ, बाद उसने कहा कि बकरा तो नहीं, मुर्गी अवश्य चढ़ाऊंगा। जब वह राज़ी खुशी पार पहुंच गया तो उसे मुर्गीका भी लोभ हुआ और उसने अपने कपड़ेमेंसे एक चीलड़ निकालकर मार डाला और यह कहकर अपनी मन्नतको पूरा किया कि जानके बदलेमें जान ही तो दी।

पारवाले कहें वारवाले अच्छे, वारवाले कहें पारवाले अच्छे—जब परस्परमें एक दूसरेको सुखी और अपनेको दुःखी समझें, तब क०।

पारसनाथसे चक्की भली, जो आटा देवे पीस। फूहड़ नारसे मुरगी भली, जो अंडे देवे बीस—स्पष्ट।

पाल पाल तेरे जीका होगा काल—जब कोई ऐसा काम करे या ऐसेसे प्रीत करे, जिसका परिणाम बुरा नज़र आता हो, तब क०।

पाबन्द फसे, आज़ाद हंसे—पराधीन दुखी और स्वाधीन सुखी रहते हैं।

पाबन्दी एककी भली—अधीनता एककी अच्छी।

पासंगका चोर तीन जगह ढंढाय, झुकता तोले, रुकन दे, पासंग दिखाय—(व्य०) स्पष्ट।

पास एक कौड़ी नहीं दौलत खां है नाम—नामके अनुसार गुण नहीं होनेपर क०।

पास एक कौड़ी नहीं, नाम करोड़ीमल—क० दे०।

पासका कुत्ता दूरका भाई—दूरके भाईसे पासका कुत्ता अच्छा, क्योंकि वह काम आता है।

पास कौड़ी न हजार लेखा—(व्य०) जिसे किसीका देना लेना न हो, उसे क०।

पासा पड़े अनाड़ी जीते—दांव पड़नेसे अनाड़ी भी जीतता है।

पासा पड़े सो दांव, हाकिम करे सो न्याव—भाग्यवश आदमी पर जैसा आन पड़ता है वैसा ही भुगतना पड़ता है।

पिछली चंदिया खाई है—पीछे सोचते हैं।

पिछली रोटी खाय, पिछलो मत आय—(ज०) स्त्रियोंका ऐसा विश्वास है, कि जो शेषकी रोटी खाता है वह मूर्ख हो जाता है। पिछली रोटी अक्सर कुत्तोंको खिला दी जाती है।

पियें रुधिर पय ना पियें, लगी पयोधर जोंक—(वृन्द) नीच मनुष्य दूसरेके गुणोंको न ग्रहणकर अवगुण को ही ग्रहण करता है जैसे स्तनमें जोंक लगा दी जाय तो वह दूध न पीकर खून ही पी लेती है

पिसनहारीके पूतको चबेना ही लाभ—स्पष्ट।

पिसनहारीका बेटा और केसरका तिलक—(च०) जब कोई ग़रीब आदमी बड़े आदमीकी रीस करे, तब क०।

पी कारन पीरी भई लोग कहें पिंड रोग, छिप छिप लंघन मैं किये पी मिलनेके जोग—विरहिनी नायिकाका कहना है।

पीच पी निमात खाई—मांड़ पीया और उसे दुनियां भरकी नियामत समझा। जब कोई बहुत कष्ट उठाकर दूसरेके साथ सलूक करते करते ऊब जाता है, तब क०।

पीठ पीछे कुछ ही हो—मेरे पीछे जो चाहे सो हो।

पीतम तू मत जानियो, भयो दूरको वास।
देह नेह कितहूं रहै, प्राण तिहारे पास—विरहिनी नायिकाका अपने पतिके प्रति कहना।

कहा भयो जो बीछुरे मोमन तो मन साथ,
गुड़ी उड़ी चलि जात कित तऊ उड़ायक हाथ। बिहारी

पीतम तेरी पीतको, झुक झुक करूं सलाम।
जबसे तो संग नेह करो, सुन्यों न सुखको नाम—स्पष्ट।

पीतम बसे पहाड़ पर, हम यमुनाके तीर। अबका मिलना कठिन है,(कि) पांव पड़ी जंजीर—स्पष्ट।

पीनेको पानी नहीं छिड़कनेको गुलाब—(च०) बाहरी दिखावे पर क०।

पीपल काटे, पाल बिनासे, भगवान भेस सतावे, काया गढ़ीमें दया न व्यापे, जड़ा मूलसे जावे—(मा०) स्पष्ट।

पीपलकी चौखट—जो आदमी जल्दी पिंड न छोड़े, उसे क०। पीपलकी चौखट जल्दी टूटती नहीं।

पीपल पूजन मैं चली, निगम-बोधके घाट।
पीपल पूजत पी मिले, एक पन्थ दो काज—स्पष्ट।

पी प्याला, मार भाला—प्याला पीले तब युद्ध कर, जिसमें उत्तेजित हो जाय।

पीयाकी कमाई मोहे नहीं लहना, मोपै बाजूबन्द नहीं और सब गहना—झूठी शिकायत पर क०।

पीर आप ही दरमांदह, शफ़ात किसकी करेंगे?—जिसकी सहायता चाहे वह खुद ही विपदमें फंसा हो, तब क०।

पीरकी सगाई मीरके यहां—(मु० ज०) अच्छों का सम्बन्ध अच्छों हीसे होता है।

पीरको न शहीदको, पहिले नकटे देवको—(मु० ज०) जब कोई नगण्य आदमी ऐसी चीज़ पहिले ही मांगे जो दूसरे अच्छे आदमियों के लिये तैयार की गई हो, तब क०।

पीर मियां बकरी, मुरीद मियां बांगा। आगई बकरी चाव गई बांगा—(पू०) गुरु चेलोंकी कमाई खाते हैं।

पीर बबरची भिश्ती खर—ब्राह्मणको क०। पुरोहिताई करना, रसोई बनाना, पानी भरना या पिलाना और एक जगहसे दूसरी जगह संदेशा ले जाना या चीज़ ले जाना।

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे कहा, कि 'लाव बीरबल ऐसा नर, पीर बबरची भिश्ती खर' बीरबलने एक ब्राह्मणको ही लाकर खड़ा कर दिया और कहा कि हुज़ूर! यह चारों काम कर सकता है। यह कहावत ब्राह्मणों पर ताना है।

पीसनेवालियां पीस ले जायंगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ लें जायंगी—परोपकारीका कहना है

एक स्त्रीने दूसरीसे चक्की मांगी, तीसरीने देनेके लिये मांगी मारी, तब दूसरीने उक्त मसल कही।

पीस मुई, पका मुई, आये लौंडे खा गये—(ज०) माका कहना निखट्टू लड़कोंसे।

पीहर घर सुबस बसे, जब लग है संसार—स्त्रियोंका कहना है।

पुन्नकी जड़ सदा हरी—अर्थात् कभी नहीं सूखती।

पुन्ननि मिले मनिच्छित भोग—मनके इच्छानुकूल भोग बड़े पुण्यसे प्राप्त होता है।

दम्पति चाहि भाजने मा
करे केलि अति बसि रति • ज

कहे कहावति क्यों सब लोग।
पुन्यनि मिलै मनिच्छित भोग ॥

पुन्नही आड़े आता है—पुण्यही मनुष्यकी रक्षा करता है।

एक राजा तीर्थमें गया और वहां बहुत सा दान पुण्य किया। एक घसियारेने अपने मनमें कहा कि राजाने तो बहुत दान किया, तुम्हें भी कुछ करना चाहिये। उसके पास कुछ धन तो मौजूद न था, परन्तु जाली और खुरपा बेचकर पुण्य कर दिया। जब राजा तीर्थसे लौटा तो उस दिन धूपकी अत्यन्त उष्णताके कारण उसके सब आदमी घबराए जाते थे परन्तु उस घसियारेके सिरपर एक टुकड़ा बदलीका चला जाता था जिससे उसे धूप नहीं मालूम होती थी। यह खबर राजा तक पहुंची। राजाने घसियारेको बुलाकर सब बात पूछी, परन्तु उसकी समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ। एक पण्डितने कहा कि महाराज इस घसियारेने तीर्थमें बहुत पुण्य किया है इस कारण बदली इसके सिरपर रहती है। राजाको आश्चर्य हुआ कि यह घसियारा और मैं राजा, मैंने जितना दान किया है उससे अधिक इस घसियारेने क्या किया होगा। पण्डितने कहा इसने खुरपा जाली पुण्य किया है जो इसका सर्वस्व धन था और आपने यद्यपि लाखों रुपये पुण्य किये हैं परन्तु आपके पास अबभी करोड़ों का धन है। राजा सुनकर चुप हो रहा।

पुन्न करते होय जो हानि, तौ भी न छोड़े पुन्नकी बानि—स्पष्ट।

पुराना छोकरा और क़लईकी भड़क—बुड्ढी औरत और जवानीका सा सिंगार।

पुराना वैद्य नये ज्योतिषी—दोनों अच्छे होते हैं और इनकी क़दर होती है।

पुराने गुम्बदपर क़लई करना—जब कोई बूढ़ा अपनेको जवान बनानेकी कोशिश करे, या कोई पुरानी चीज़को नयी बनानेके लिये, वृथा परिश्रम करे, तब क०।

गर्चे कंदोले सखुनको मढ लिया तो क्या हुआ।
दाबकी तो हैं वही अगले बरसकी तीलियां॥

पुराने चावलोंमें मज़ा होता है—बूढ़े और तजुर्बेकार मनुष्योंसे वार्तालाप करनेसे बहुत शिक्षा मिलती है।

पुरानोंको झिड़की नयोंको प्यार—पुराने और विश्वासी नौकरोंपर दया रखनी चाहिये। जब कोई इस बातके विपरीत आचरण करता है, तब क०।

पुरुषकी माया, वृक्षकी छाया—उसीके साथ जाती है।

पुरुष पुरुषमें होवे अन्तर, कोई हीरा कोई कंकड़—दे० 'आदमी आदमी'।

पुरुष वोही, जो एक दंता होई—बूढ़े मनुष्यों को व्यंगसे क०।

इसपर एक कहानी है। एक बूढ़े सिपाहीने नौकरीसे पेंशन ले नाई भाटोंको रिशवत देकर अपना विवाह किया। दुलहनको बिदा कराके अपने घर जाते समय जब पहिला मुकाम किया तो उसको इच्छा अपनी स्त्रीसे बात चीत करने की हुई। स्त्री उसको बूढ़ा जान कहीं निरादर न करे इसलिये उसकी डोलीके चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ाने लगे और उसके पास आकर कहा कि "पुरुष वोई जो एक दंता होई" क्योंकि उसके मुंहमें एक ही दांत रह गया था। स्त्री जो उससे भी अधिक बूढ़ी थी, डोलीका परदा उठा अपना घूंघट खोलकर बोली "नारि रूपवती वोई, जाके मुखमें दंत न होई।" क्योंकि इसके मुंहमें एक दांत भी नहीं बचा था।

पूछते पूछते दिल्ली चले जाते हैं—जब किसी आदमीसे कहीं जानेके वास्ते कहा जाय और वह कहे मुझे पता नहीं मालूम, तब क०।

पूजले देवता छोड़ले भूत—(पू०) पूजनेसे देवता छोड़नेसे भूत हो जाता है।

पूत आपनो सब कहं प्यारो—अपने लड़के सबको प्यारे होते हैं।

पूत कपूत हो तो हो, पर मां कुमां नहीं होती—स्पष्ट।

पूत करे, भतारके आगे आवे—लड़केका किया बापको भोगना पड़े, तब क०।

पूतके पाँव पालनेमें पहिचाने जाते हैं—लड़कपन हीमें मालूम हो जाता है कि लड़का कैसा उठेगा। जब किसी कामके आसार पहिलेहीसे दीखने लगें, तब क०। होनहार लड़केको भी क०।

दुख पानेवाले लड़के जो दुनियांमें आते हैं।
लच्छन सब उनके पहले ही पहिचाने जाते हैं। (नज़ीर)

पूत फ़क़ीरनीका, चाल अहदियोंकीसी—ग़रीब होकर बड़े आदमियों की सी चाल चले, तब क०।

अकबरके समय अहदी उन अमीरोंको कहते थे जिन्हें बादशाहके यहांसे वसीका (गुज़ारा) मिलता था और कोई काम नहीं करना पड़ता था। जब राजपर कोई मुसीबत पड़ती थी तभी वह बुलाये जाते थे।

पूत भये सयाने, दुःख भये बिराने—लड़का सयाना होनेसे दुःख दूर हो जाता है।

पूत मांगे गई, भतार लेतो आई—उन स्त्रियों-पर कही जाती है जो लड़का होनेके लालच फ़कीरों क पास जाती हैं और वहांसे भ्रष्ट होकर आती हैं।

पूत मीठ, भतार मीठ, किरिया केहिकी खाऊं—जब दो काममेंसे एक भी न छोड़ा जाय, वा करते बने, तब क०।

पूत सपूत तो क्यों संचे, पूत कुपूत तो क्यों संचे—पूत सपूत होगा तो आप ही पैदा कर लेगा और कुपूत होगा तो सब उड़ा देगा।

पूतों रात दुलम्भनी—(पं० ज०) लड़का होना दुर्लभ है।

पूरबका बर्धा उत्तरका मोर, पच्छिमका घोड़ा दक्षिणका चोर—यह अच्छे होते हैं।

पूरा तोल, चाहे मंहगा बेच—(व्य०) वज़न या मापमें कम न देना चाहिए।

पूरी पड़े तो सपूत कहावे—जिस लड़केसे घरका अभाव दूर हो, वही सपूत कहलाता है।

पूरी लपसी घरमें खाय, झूंठी देवीसे आश लगाय—स्पष्ट।

पूरीसे पूरी परै तो सभी न पूरी खायँ—ग़रीब आदमी या मोटा खानेवालोंका कहना है।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हालमें खुश हैं—जो कभी चिन्ता नहीं करते और सब तरहके सुख दुःखको ईश्वरकी इच्छा समझकर झेलते हैं वही पूरे मर्द हैं।

गर यारकी मर्ज़ी हुई सिर जोड़के बैठे।
घरबार छुड़ाया तो वहीं छोड़के बैठे॥
मारा जिधर उसने उधर मुंह मोड़के बैठे।
गुदड़ी जो सिलाई तो वहीं ओढ़के बैठे॥
और शाल उढ़ाया तो उसी शालमें, खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हालमें, खुश हैं। (नज़ीर)

पूले तले गुज़रान करते हैं—जब कोई बहुत ग़रीबी हालतमें हो, तब क०।

पूले पूले आंच है—कष्ट सभीको होता है।

पूस कोने घुस—पूसमें आदमी जाड़ेके बचावके लिये कोनेमें घुसता है।

पूसे जाड़ न माघे जाड़, जबै बयरिया तब्बै जाड़—जब हवा चलती है तभी जाड़ा पड़ता है।

पेट कुई, मुंह सुई—छोटा मुंह खाय बहुत, अर्थात् बहुत खानेवाले पर क०।

पेटके आगे "ना" है—जब पेट भर जाता है तब "ना" कहदेते हैं।

पेट खाये तो आंख लजाये—जिसका खाओगे उसका मुलाहिज़ा करना पड़ेगा। जो आदमी किसीको कुछ देता नहीं खाली अपना काम कराया चाहता है, उसे क०।

पेट चले मन चल्तोंको—बदपरहेज़ आदमीको क०। (२) जब कोई विपद्‌ग्रस्त मनुष्य कोई ऐसा कार्य किया चाहे जिससे उसकी विपत्ति बढ़ जाय, उसको क०। अश्लीलताके लिये पाठ भेद किया गया है।

पेट जो चाहे सो कराये—जब पेटके लिये कोई बुरा काम करे, तब क०।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है—स्वार्थी मनुष्य-को क०। जो दूसरोंको नहीं खिलाता।

पेट पिटारी, मुंह सुपारी—दे० "पेट कुई"

पेट पीठ एक हो रहा है—बहुत भूखा है।

पेट चांडाल है—इसीके पीछे सब तरहके कष्ट उठाने पड़ते हैं।

पेट विच पड़ी रोटियां, तां सब ही गल्लां मोटियां (पं०) जो पहिले ग़रीब हो और पीछे धनवान हो जाय, उसको क०।

पेट भर और पीठ लाद—पेट भरनेसे मेहनत होती है।

पेटभर खाना, नींदभर सोना—सभीको चाहिये।

पेट भरेकी बातें—जब कोई कामके लिये उचितसे अधिक मजूरी मांगे, तब क०।

पेट भरेके गुन—जब कोई पेटभरा नौकर काम कर-नेके समय भुनभुनावे, तब क०।

पेट भरेके खोटे चाले—(१) पेट भरनेपर बदमाशी सूझती है (२) बड़े आदमियोंका धन प्रायः पाप कर्ममें खर्च होता है।

पेट भरे रिज़ाले और भूखे भले मानससे डरिये-

कहै कहावति ज्यों सब लोग।

पुन्यनि मिलैं मनिच्छित भोग॥

पुन्नही आड़े आता है—पुण्यही मनुष्यकी रक्षा करता है।

एक राजा तीर्थमें गया और वहां बहुत सा दान पुण्य किया। एक घसियारेने अपने मनमें कहा कि राजाने तो बहुत दान किया, तुम्हें भी कुछ करना चाहिये। उसके पास कुछ धन तो मौजूद न था, परन्तु जाली और खुरपा बेचकर पुण्य कर दिया। जब राजा तीर्थसे लौटा तो उस दिन धूपकी अत्यन्त उष्णताके कारण उसके सब आदमी घबराए जाते थे परन्तु उस घसियारेके सिरपर एक टुकड़ा बदलीका चला जाता था जिससे उसे धूप नहीं मालूम होती थी। यह खबर राजा तक पहुंची। राजाने घसियारेको बुलाकर सब बात पूछी, परन्तु उसकी समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ। एक पण्डितने कहा कि महाराज इस घसियारेने तीर्थमें बहुत पुण्य किया है इस कारण बदली इसके सिरपर रहती है। राजाको आश्चर्य हुआ कि यह घसियारा और मैं राजा, मैंने जितना दान किया है उससे अधिक इस घसियारेने क्या किया होगा। पण्डितने कहा इसने खुरपा जाली पुण्य किया है जो इसका सर्वस्व धन था और आपने यद्यपि लाखों रुपये पुण्य किये हैं परन्तु आपके पास अबभी करोड़ों का धन है। राजा सुनकर चुप हो रहा।

पुन्न करते होय जो हानि, तौभी न छोड़े पुन्नकी बानि—स्पष्ट।

पुराना छोकरा और क़लईकी भड़क—बुड्ढी औरत और जवानीका सा सिंगार।

पुराना वैद्य नये ज्योतिषी—दोनों अच्छे होते हैं और इनकी क़दर होती है।

पुराने गुम्बद्पर क़लई करना—जब कोई बूढ़ा अपनेको जवान बनानेकी कोशिश करे, या कोई पुरानी चीज़को नयी बनानेके लिये वृथा परिश्रम करे, तब क०।

गर्चे कंदोलें मखुनको मढ़ लिया तो क्या हुआ।

ढाकको तो हैं वही अगले बरसको तीलियां॥

पुराने चावलोंमें मज़ा होता है—बूढ़े और तजुर्बेकार मनुष्योंसे वार्तालाप करनेसे बहुत शिक्षा मिलती है।

पुरानोंको झिड़की नयोंको प्यार—पुराने और विश्वासी नौकरोंपर दया रखनी चाहिये। जब कोई इस बातके विपरीत आचरण करता है, तब क०।

पुरुषकी माया, वृक्षकी छाया—उसीके साथ जाती है।

पुरुष पुरुषमें होवे अन्तर, कोई हीरा कोई कंकड़—दे० 'आदमी आदमी'।

पुरुष वोही, जो एक दंता होई—बूढ़े मनुष्योंको व्यंगसे क०।

इसपर एक कहानी है। एक बूढ़े सिपाहीने नौकरीसे पेंशन ले नाई भाटोंको रिश्वत देकर अपना विवाह किया। दुलहनको विदा कराके अपने घर जाते समय जब पहिला मुक़ाम किया तो उसकी इच्छा अपनी स्त्रीसे बात चीत करने की हुई। स्त्री उसको बूढ़ा जान कहीं निरादर न करे इसलिये उसकी डोलीके चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ाने लगे और उसके पास आकर कहा कि "पुरुष वोई जो एक दंता होई" क्योंकि उसके मुंहमें एक ही दांत रह गया था। स्त्री जो उससे भी अधिक बूढ़ी थी, डोलीका परदा उठा अपना घूंघट खोलकर बोली "नारि रूपवती वोई, जाके मुखमें दंत न होई।" क्योंकि इसके मुंहमें एक दांत भी नहीं बचा था।

पूछते पूछते दिल्ली चले जाते हैं—जब किसी आदमीसे कहीं जानेके वास्ते कहा जाय और वह कहे मुझे पता नहीं मालूम, तब क०।

पूजले देवता छोड़ले भूत—(पू०) पूजनेसे देवता छोड़नेसे भूत हो जाता है।

पूत आपनो सब कहं प्यारो—अपने लड़के सबको प्यारे होते हैं।

पूत कपूत हो तो हो, पर मां कुमां नहीं होती—स्पष्ट।

पूत करे, भतारके आगे आवे—लड़केका किया बापको भोगना पड़े, तब क०।

पूतके पाँव पालनेमें पहिचाने जाते हैं—लड़कपन हीमें मालूम हो जाता है कि लड़का कैसा उठेगा। जब किसी कामके आसार पहिलेहीसे दीखने लगें, तब क०। होनहार लड़केको भी क०।

दुख पानेवाले लड़के जो दुनियांमें आते हैं।

लच्छन सब उनके पहले ही पहिचाने जाते हैं। (नज़ीर)

पूत फ़क़ीरनीका, चाल अहदियोंकीसी—ग़रीब होकर बड़े आदमियोंकी सी चाल चले, तब क०।

पोथा सो थोथा, पाठै तो साथै—कंठस्थ विद्या ही विद्या है, पोथीमें लिखी कुछ नहीं।

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्ते गतं धनम्,
कार्यं काले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्।

पोथी तो थोथी भई, पण्डित भया न कोय। ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय—स्पष्ट।

प्याज़ केसे छिलके उखाड़ना—किसीके गुप्त भेदको प्रकाश करना।

प्यासा कुंएके पास जाता है कुआं प्यासेके पास नहीं आता—जिसे ग़रज़ होती है वही जाता है। जिससे अभाव दूर हो उसके पास जानेके लिये क०।

(१) चाह जु बह चितमें चतुर, चली सु ताहि निवास।
चातग कहुं काम न सुखी, कूप पियासे पास॥
(२) हंस कर कहा कि आता है प्यासा कुएंके पास,
या आता है कुआं किसी तिश्ना दहनके पास॥ (ज़ौक़)

प्यासे दुपहर जेठके, थके सबै जल सोधि। मरुधर पाय मतीरहूं, मारू कहत पयोधि—(बिहारी) मारवाड़के मरु देशमें जब थका हुआ पथिक जेठकी दुपहरीमें जल खोजकर हार जाता है, तब बड़े तरबूज़को पाकर कहता कि यह क्षीर समुद्र है। मतीरेसे भूख प्यास दोनों बुझती हैं।

प्रकृति मिले मन मिलत है, अन मिलते न मिलाय। दूध दही ते जमत है, कांजी ते फट जाय—(वृन्द) स्पष्ट।

प्राण जाहिं बरु वचन न जाहीं—(तुलसी) जो क़ौलका सच्चा हो, उसे क०। व्यंगसे हठीको भी क०।

प्रातःकाल करो असनाना, रोग दोष तुमको नहीं आना—स्पष्ट।

प्रीत करे ते बावरे, करके तोड़े छैल। गलमें रस्सा डालकर, और निबाहें बैल—स्पष्ट।

प्रीत करी थी नीचसे, पल्ले लागी कींच। सीस काटि आगे धरा, अन्त नीचको नीच—नीच अपनी नीचता कभी नहीं छोड़ता।

प्रीतका निबाहना खांड़ेकी धार है—प्रीत करना तो सहज है पर निबाहना कठिन है।

(१) यह प्रेमको पंथ कराल महा,
तलवारकी धारि पै धावनो है। (बोधा)
(२) जिगर ज़ख्म जारी जहां नित लोहूका कीच,
नागर आशिक लुटि रहैं, इश्क चमनके बीच।
चलै तेग नागर हरफ इश्क तेगकी धार,
और कटैं नहिं वार सौं कटैं कटैं रिझवार।

(नागरीदास)

प्रीत तो ऐसी कीजिये, जैसी रुई कपास। जीते जी तो संग रहे, मुये पर होवे साथ—स्पष्ट।

प्रीत न जाने जात कुजात, नींद न जाने टूटी खाट भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट—स्पष्ट।

क्षुधातुराणां न वपुर्न बुद्धिः, तृषातुराणां न च पानशुद्धिः
कामातुराणां न भयं न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमिशय्या

प्रीत न टूटे अन मिले, उत्तम मनकी लाग। सौ जुग पानी में रहे, चकमक तजे न आग—प्रीति कभी छूटती नहीं।

यह दर्द वह ऐसा है कि सर जाये तो जाये।
दलफ़तआ गया जब कोई मर जाये तो जाये॥ (ज़ौक़)

प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखीरी आय। पी ढूंढन को हम गई, आई आप हिराय—स्पष्ट

प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दक्षिना देइ— लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेमका लेइ—स्पष्ट

इश्क़ खेत सौं नहिं टलैं, चावैं ये चसचाव।
चगुन चोट सौं सिर उड़े, धड़ बोले साबास॥
सीस काटकर भू धरे, ऊपर रक्खे पांव।
इश्क़ चमनके बीचमें ऐसा होय तो आव॥
ए दबीच चढिजाहु घर, अवसि कुवें क्या हाय।
चढ़ी इश्क़की कैफ़ यह, उतरे सिरके साथ॥
क़ूचमें तुम्हें करीमकी, सुनियो सबै जहान।
चश्मोंकी लागी गिरह, छूटै छूटैं ज्यान॥
जिन पांवों सो खलकमें, चर्लै सुधरि मति पांव।
सिरके पांवोंसे चले, इश्क चिमनमें पाव॥ (नागरीदास)

प्रेममें नेम कहां—स्पष्ट।

झूठे झूठे सेवरीके चखे कर खाये राम,
नेमसौं अघाये पै न प्रेम सौं अघाये हैं। (रसिक बिहारी)

नीच मनुष्य धनवान होनेपर और धनी कंगाल होनेपर दुःखदाई होता है।

पेट भी ख़ाली गोद भी ख़ाली—(ज०) (१)न खाने-है न लड़का बाला है। (२) न बच्चा पेटमें है न गोदमें है।

पेटमें आंत, न मुंहमें दांत—बूढ़े मनुष्यको क०।

पेटमें घुसे तो भेद मिले—किसीसे मिलकर मनकी बात जाननेपर क०।

पेटमें चूहे क़लाबाज़ियां खा रहे हैं—ज़्यादा भूखमें क०।

पेट मेट, कार समेट—जब थोड़े वेतनपर किसीसे बहुत काम कराया जाय, तब क०।

पेटमें पड़ा चारा, तो कूदन लगा बिचारा—स्पष्ट।

जब आदमीके पेटमें आती हैं रोटियां।
फूली नहीं बदनमें समाती हैं रोटियां॥ (नज़ीर)
रोटीसे जिसका नाक तलक पेट है भरा।
करता फिरे है क्या वह उछल कूद का मज़ा॥
दीवार फांदकर कोई कोठा उछल गया।
ठट्ठा हंसी शराब सनम साक़ी इस सिवा॥
सौ सौ तरहकी धूम मचाती हैं रोटियां। (नज़ीर)

पेटमें पड़ी बूंद, नाम रक्खा महमूद—(मु० ज०) निश्चय कर लिया लड़का होगा। काम होनेके पहिले ही शुमार बांधनेवालेको क०।

पेटमें लात मारना—किसीकी रोज़ीमें ख़लल डालना।

पेट सब रखते हैं—(व्य०) खानेके लिये सब हीको चाहिए। जब कोई किसीकी रोज़ीमें ख़लल डालता है, तब क०।

पेटहा चाकर घसहा घोड़, खाय बहुत काम करे थोड़—(पू०) बहुत खानेवाला नौकर और घोड़ा काम कम करता है।

पेटहिंसे कोई सीख न आवत—कोई पेटसे सीखके नहीं निकलता। काम सीखनेके लिये उत्साह देनेपर क०।

पेट है या कुठार—बहुत खानेवालेको क०।

पेट है या बेईमानकी क़बर—ऊ० दे०।

पेटू मरे पेटको, नामी मरे नामको—स्पष्ट।

पेड़ काटके पल्लव सींचा—स्पष्ट। जब पेड़ ही काट दिया तो पत्तोंको सींचना वृथा है।

पेशा हब्बीबुल्लाह, जो न करे सो लानतुल्लाह—(मु०) काम करनेवालोंपर ईश्वरका प्यार और न करनेवालोंपर ईश्वरका शाप है।

पैदल और सवारका क्या साथ—दोनोंका साथ नहीं निभता।

पैदा हुआ-नापैदके वास्ते—जो पैदा हुआ वह अवश्य नाश होगा।

पैरका जूता पैरमें—जहांका तहां।

पैरमें जूता न सिरमें टोपी—फटी हालतपर क०।

पैसा करे काम बीबी करे सलाम—पैसेसे सब काम होता है।

पैसा गांठका, जोरू साथकी—यही अपने होते हैं।

पैसा न कौड़ी, बांकीपुरकी सैर—(च०) लिफ़ाफ़ियेको क०।

पैसा ना कौड़ी, बाज़ारमें दौड़ी—(ज०) ऊ० दे०।

पैसा न हो तो आदमी चरख़ेकी माल है—पैसे बिना आदमीकी क़दर नहीं होती।

पैसा ही बस बनाता है दुनियांकी बातको।
पैसा ही ज़ेब देता है ब्याहो बरातको॥
भाई सगा भी आनकर पूछे न बातको।
बिन पैसे यारो दूल्हा बने आधी रातको॥
पैसा ही रंगरूप है पैसा ही माल है।
पैसा नहीं तो आदमी चर्खेकी माल है॥
पैसा न हो तो बाग़ो कुएं फिर कहांसे हों।
खानेको पूरी और पुए फिर कहांसे हों॥
ऐसी तरहके मज़े हुये फिर कहांसे हों।
हलुवा कचौड़ी, मालपूए फिर कहांसे हों॥
पैसा ही रंगरूप है पैसा ही माल है।
पैसा नहीं तो आदमी चर्खेकी माल है॥ (नज़ीर)

पैसा पासका, घोड़ी रानकी, काम आती हैं—दे० "पैसा गांठका"

पैसा नहीं पास, तो कैसे सूंघे बास—स्पष्ट।

पैसा नहीं पास, चले नव्वाबके साथ—(च०) हैसियतसे बाहर काम करनेपर क०।

पैसे बिन माता कहे, जन्मा पूत कपूत, भाई भी पैसे बिना, मारें लख सिर जूत—(मा०) स्पष्ट।

पोथा सो थोथा, पाठै तो साथै—कंठस्थ विद्या ही विद्या है, पोथीमें लिखी कुछ नहीं।

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्ते गतं धनम्,
कार्यं काले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्।

पोथी तो थोथी भई, पण्डित भया न कोय। ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय—स्पष्ट।

प्याज कैसे छिलके उखाड़ना—किसीके गुप्त भेदको प्रकाश करना।

प्यासा कुंएके पास जाता है कुआं प्यासेके पास नहीं आता—जिसे ग़रज़ होती है वही जाता है। जिससे अभाव दूर हो उसके पास जानेके लिये क०।

(१) चाह जु वह चितमें चतुर, चलो सु ताहि निवास।
आवत कहुं काम न सुन्यो, कूप पियासे पास॥
(२) हंस कर कहा कि जाता है प्यासा कुएंके पास,
या आता है कुआं किसी तिश्ना दहनके पास॥ (ज़ौक़)

प्यासे दुपहर जेठके, थके सबै जल सोधि। मरुधर पाय मतीरहूं, मारू कहत पयोधि—(बिहारी) मारवाड़के मरु देशमें जब थका हुआ पथिक जेठकी दुपहरीमें जल खोजकर हार जाता है, तब बड़े तरबूज़को पाकर कहता कि यह क्षीर समुद्र है। मतीरेसे भूख प्यास दोनों बुझती हैं।

प्रकृति मिले मन मिलत है, अन मिलते न मिलाय। दूध दही ते जमत है, कांजी ते फट जाय—(वृन्द) स्पष्ट।

प्राण जाहिं बरु बचन न जाहीं—(तुलसी) जो क़ौलका सच्चा हो, उसे क०। व्यंगसे हठीको भी क०।

प्रातःकाल करो असनाना, रोग दोष तुमको नहीं आना—स्पष्ट।

प्रीत करे ते बावरे, करके तोड़े छैल। गलमें रस्सा डालकर, और निबाहे बैल—स्पष्ट।

प्रीत करी थी नीचसे, पल्ले लागी कींच। सीस काटि आगे धरा, अन्त नीचको नीच—नीच अपनी नीचता कभी नहीं छोड़ता।

प्रीतका निबाहना खांड़ेकी धार है—प्रीत करना तो सहज है पर निबाहना कठिन है।

(१) यह प्रेमको पंथ कराल महा,
तलवारकी धारि पै धावनो है। (बोधा)
(२) जिगर जख़्म जारी जहां नित लोहूका कीच,
नागर आशिक लुटि रहैं, इश्क़ चमनके बीच।
चलै तेग आगर हरफ इश्क़ तेगकी धार,
भीर कटैं नहिं बार सौं कूटैं कटैं रिझवार।

(नागरीदास)

प्रीत तो ऐसी कीजिये, जैसी रुई कपास। जीते जी तो संग रहे, मुये पर होवे साथ—स्पष्ट।

प्रीत न जाने जात कुजात, नींद न जाने टूटी खाट भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट—स्पष्ट।

क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धिः, तिषातुराणां न च पानशुद्धिः
कामातुराणां न भयं न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमिशय्या

प्रीत न टूटे अन मिले, उत्तम मनकी लाग। सौ जुग पानी में रहे, चकमक तजे न आग—प्रीति कभी छूटती नहीं।

यह दर्द सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये।
उलफतका मज़ा जब कोई मर जाये तो जाये॥ (ज़ौक़)

प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखीरी आय। पी ढूंढ़न को हम गईं, आईं आप हिराय—स्पष्ट

प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दक्षिना देइ—लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेमका लेइ—स्पष्ट

इश्क़ खेत सों नहिं टरैं, पावैं वे उसवास।
चश्म चोट सों सिर उड़े, धड़ बोले शाबाश॥
सीस काटकर भू धरे, ऊपर रक्खे पांव।
इश्क़ चमनके बीचमें ऐसा होय तो आव॥
ए तबीब उठि जाहु घर, अबसि छुवै क्या हाथ।
चढ़ी इश्क़को कैफ़ यह, उतरे सिरके साथ॥
क़समें तुम्हें करीमकी, सुनियो सबै जहान।
चश्मोंकी लागी गिरह, कूटैं कूटैं ज्यान॥
जिन पावों सो खलकमें, चलें संभरि मति पांव।
सिरके पावोंसे चलै, इश्क़ चिमनमें आव॥ (नागरीदास)

प्रेममें नेम कहां—स्पष्ट।

झूंठे झूंठे बेरनके चाखे चार खाये राम,
नेमसों चखाये पै न प्रेम सों चखाये हैं। (रसिक बिहारी)

फ

फ़क़ीर अपनी कमली में ही खुश है—फ़क़ीर संतोषी होते हैं।

फ़क़ीर, क़र्ज़दार लड़का तीनोंही नहीं समझते—जबतक उनके कहे मूजिब काम न हो।

फ़क़ीरकी ज़बान किसने कीली है—फ़क़ीरकी ज़बान कोई नहीं रोक सकता।

फ़क़ीरकी झोलीमें सब कुछ—फ़क़ीर जो चाहे दे सक्ता है।

फ़क़ीरकी सूरत ही सवाल है—फ़क़ीरको देखनेसे ही जान पड़ता है कि कुछ मांगेगा।

फ़क़ीर को कम्बल ही दुशाला—स्पष्ट।

फ़क़ीर को जहां रात हो गई वहीं सराय है—स्पष्ट।

फ़क़ीरको तीन चीज़ें चाहियें, फ़ाक़ह, क़नात, और रियाज़—स्पष्ट। फ़ारसीमें फ़क़ीर तीन हरफ़ोंसे लिखा जाता है फ़े से फ़ाक़ह (व्रत), क़ाफ़से क़नात (संतोष) और रे से रियाज़ (मेहनत)।

फ़क़ीर रा ब मुजादला चे कार—(फ़ा०) फ़क़ीरको लड़नेसे क्या काम ?

फ़क़ीरी शेरका बुरका है—फ़क़ीर सामर्थवान् होताहै।

फ़ज़ल करे ताँ छुट्टियां, अदल करे तां लुट्टियां—(पं०) दया करनेसे छूट सकता हूं, पर इंसाफ़ करनेसे लुट जाऊंगा। जब कोई क़सूरवार क्षमाका प्रार्थी हो, तब कहता है।

फटकचन्द गिरधारी, जिनके पास न लोटा थारी—तनहां बाछड़े आदमीको क०। जिसके साथ किसी तरहका खटाका नहीं रहता।

फटा कपड़ा, बूढ़ा बाप, काली जोरू, तीन चीज़ की शर्म नहीं—आज कलके शौक़ीन लड़के जो उक्त चीज़ोंकी शरम करते हैं, उन्हें क०।

फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता—जब किसीसे मन फट जाय, तब क०।

फाटेसे जुड़ते नहीं कोटिन करो उपाव।
मन मोती अरु दूध रस, इनका यही सुभाव।

फटी जूती पग्ग पुरानी, ढाइ घरकी यही निशानी—पंजाबी अढ़ाई घर खत्रियोंका कहना है, जो अक्सर बहुत ग़रीब होते हैं।

फटे को न सिये, और रूठेको न मनावे तो काम कैसे चले—(ज०) स्पष्ट।

फटे न फूटे, जिउ जान न छूटे—जिस चीज़से जी उकता जाय, उसपर क०।

फटे में पांव, दफ्तरमें नांव—झगड़े में पड़ने ही से अदालतमें नाम लिखा जाता है (गवाहीके लिये)।

फटेसे कपड़े मत देखो घर दिल्ली है—इन्हें सीधा सादा मत समझो यह बड़े पहुंचे हुए हैं। जब कोई होशियार आदमी सीधेसादे भेषमें रहे, तब क०।

ढङ्ग तकदीरके निराले हैं। न समझो आप भोले भाले हैं।

फटे अकास कहां लग सीवे—दे० 'आसमान फटे'

फ़तह और शिकस्त ख़ुदाके हाथ है—हारजीत ईश्वरके अधीन है।

फ़तह तो ख़ुदाके हाथ है, मार मार तो किये जाओ—होगा वही जो ईश्वर करेगा परंतु हिम्मत न हारना चाहिये।

फ़तह दाद इलाही है—(मु०) जीत ईश्वरकी देन है।

फ़रकाबाद फ़रककी छाहीं, आप खायं जोरूको नाहीं—फ़रकाबादियोंपर ताना है।

फ़र्ज़ से अदा होगये—अपना कर्तव्य कर चुके। लड़के लड़कियोंका ब्याह करने बाद अक्सर मा बाप कहा करते हैं।

फ़रज़ो शाह न ह्वै सके गति टेढ़ी तासीर, रहिमन सूधी चालसों प्यादा होत वज़ीर—आदमी सीधी चालसे ऊंचेसे ऊंचे रुतबेको पहुंच सकता है, टेढ़ी चालसे नहीं।

फर ना फरी बगीचाके नाम—(पू०) फल ना फलो नाम बगीचा। झूठी शेखी करनेपर क०।

फरिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी—(च० ज०) झूठी शेख़ी करनेवाली को क०।

फरीद शकरगंज न रहे दुःख न रहे रंज—आशीर्वाद है। फ़क़ीर शकरगंज कोई औलिया हो गये हैं।

फल खाना आसान नहीं—फल बहुत मुश्किलसे खानेको मिलता है, पहिले गाछ लगाया जाता है, जब वह बढ़ता है तब उसमें फल लगता है। बिना मेहनत कोई काम नहीं होता।

फलेन परिचियते—(सं०) फलहीसे गाछ पहिचाना जाता है। कामहीसे आदमीकी परख होती है।

"फ़लानीने खसम किया," बुरा किया," "करके छोड़ दिया," और भी बुरा किया"—(१)जो कर लिया सो कर लिया। जिस बातके लिये कोई काम करे, जबतक वह बात पूरी न हो उस कामको न छोड़े। (२) जब कोई एक भूल सुधारनेके लिये दूसरी भूल करे, तब भी क०।

फ़ाक़हकशीकी नौबत पहुंची—खानेके लाले पड़ गये।

फ़ाक़ोंसे मरिये, पर न कोई काम कीजिये, दुनिया नहीं अच्छी है ज़माना नहीं अच्छा—(हरिश्चन्द्र) आलसियोंका कहना है।

फाटक टूटा, गढ़ लूटा—फाटक टूटनेसे क़िला फ़तह हो सकता है। मोरचा मारा और काम फ़तह हुआ।

फ़ातिहा न दरूद, खागये मरदूद—(मु० उ०) ख्वार खस्ता या दुराचारीको क०।

फ़ारख़ती लिखवाली—देनेसे छुटकारा पानेके लिये काग़ज़ लिखवानेको फ़ारख़ती लिखवाना कहते हैं। जो दिया सो भर पाया अब फिर न मांगेंगे, ऐसाही भाव प्रगट करनेके लिये क०। सम्बन्ध त्याग करनेके लिये भी क०।

इसपर एक कहानी है—किसी बनियेने अपने महाजनको कर्ज़ा चुकानेके लिये अपने घर पर बुलाया। जब वह बही खाता लेकर अपना हिसाब चुकाने आया तब बनियेने अपने दरवाज़ेपर बाजा बजानेका हुक्म दिया। जब खूब ज़ोरसे बाजा बजने लगा तब बनियेने महाजनको पीटना शुरू किया और यहांतक पीटा कि उससे फ़ारख़ती लिखवाली। बनियेका चिल्लाना बाजोंकी आवाज़के कारन कोई न सुन सका।

फ़ारसी रा टंग तोड़म, ताकी ऊ लंगड़ी शवद—फ़ारसीकी टांग तोड़ दूंगा जिससे कि वह लंगड़ी हो जाय। अर्द्ध शिक्षित फ़ारसीदांको क०।

हक़की कमाई सबको पचती है।

फ़ालूदह खाते दांत टूटे तो खलासे—(मु०) जिस विपदका कोई उपाय नहीं वह भोगनी ही पड़ती है, उसके लिये सोच करना वृथा है।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार—झूठी शेख़ी करनेवालेको क०।

फ़िक्र और ज़िक्र दोनों चाहिये—(मु०) फ़क़ीरोंको ध्यान और आराधना दोनों ही करनी चाहिये।

फ़िक्र बुरा फ़ाक़ा भला फिक्र फ़क़ीरां खाय—(पं०) चिन्ता बहुत बुरी होती है जो फ़क़ीरोंको भी खालेती है, उससे फ़ाक़ा अच्छा।

फिट वाका जीना जो तके पराई आस—स्पष्ट।

फिर बंदा मोचीका मोची—जैसे थे वैसे ही रहे। जिसकी कुछ भी उन्नति नहीं होती, उसे क०।

फिर मुड़ली बेल तले—(पू०) फिर जोखिममें पड़े। बेल तले सिर मुड़ानेसे सिर फूटनेका डर रहता है।

फिसल पड़ेकी हरगंगा—(१) अपनी असावधानतासे तो फिसल पड़े और कहा "हरगंगा," मानो जानकर गिरे हैं। जब किसीकी भूलसे काम बिगड़ा हो और ज़ाहिर करे कि मैंने जानके बिगाड़ा है, तब क०। (२) बदनमें कीचड़ लग गई तो गंगामें धो आये। जो कभी पुण्यार्थ गंगा नहीं नहाते, उनको क०।

फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय विचार, सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाहमें गारि—(वृन्द) मौक़े वक़्त बुरी बात भी अच्छी लगती है जैसे ब्याहमें गाली। (सीठनी)

फुई फुई तालाब भरता है—थोड़ा थोड़ा करके बहुत हो जाता है।

हर रोज़के इसराफ़को सिर्फ़ एक पैसा,
समझा तो एक सालमें कितना होगा।
क्या तुमको ख़बर नहीं है ऐ यारो अज़ीज़,
होता है क़तरे क़तरे आख़िर दरया। (अज़ात)

फ़ुरसत रा ग़नीमत शुमार—(फ़ा०) समयको एक लूट समझो।

फूंक फूंककर पैर रखना—होशियारीसे चलनेके लिये क०।

फूँक मसाल उठा चौपाला—मशाल बाल और पालकी उठा। जल्दी काम करनेके लिये क०।

फूँकी दवा और मुँड़ा फ़क़ीर—इनको पहिचानना मुश्किल है।

फूँकेके ना फाँकेके, टाँग उठाके तापेके—(पू० ज०) स्वार्थी वा आलसीको क०।

फूटी आँखका तारा—मातृहीन बालकको क०।

फूटी डेगची क़लईकी भड़क—धोकेकी चीज़ वा बनावटी चीज़पर क०।

फूटी सही जाती हैं, आँजी नहीं सही जाती—आँख जाती रहे वह मंजूर, मगर अंजनकी जलन सहना मंजूर नहीं; जब कोई किसीकी बात न सहे चाहे उससे सम्बन्ध विच्छेद भले ही हो जाय, तब क०।

फूफी मिस देना, भतीजे मिस लेना—बिरादरीके बर्ताव पर क०। एक रिश्तेसे देना और दूसरे रिश्तेसे लेना।

फूल आये हैं तो फल भी लगेंगे—(ज०) ऋतुधर्म हुआ है तो लड़के बाले भी होंगे।

फूलकी बैरिन धूप, घीका बैरी कूप—फूल धूपमें सूख जाता है और घी कुप्पेमें खराब हो जाता है।

फूलकी डाल नीचेको झुके—गुणी सदा नम्र रहता है।

फूल झड़े तो फल लगे—(१) फूल गिरता है तब फल लगता है। (२) (ज०) स्त्री ऋतुधर्मसे होगी तो लड़का बाला होगा।

फूल टहनीहीमें अच्छा लगता है—अपने स्थानपर ही चीज़की शोभा होती है।

फूल फूल करके चंगेर भरती है—दे० "बुँद बुँद तालाब भरता है।"

फूल न पाती "देवी दादा"—कोरी बातें वा झूठी लल्लोचप्पो करने पर क०।

फूल नहीं पंखड़ी ही सही—बहुत न हो तो थोड़ा ही सही।

गर कबका बोसा देते नहीं लबका दीजिये।
है मसल यह कि फूल नहीं पंखड़ी सही। (ज़ौक़)

फूल सूँघकर रहते हैं—बहुत थोड़ा खानेवालेको क०।

फूली फूली गौनेको, ठसक निकल गई रौनेको—(ज०) स्पष्ट।

फूले फूले फिरते हैं, आज हमारो ब्याव। तुलसी गाय बजायके, देत काठमें पाँव—ब्याह करने पर क०। गृहस्थीमें फँसना जानबूझकर गलेमें फाँसी लगाना है।

हँसकी गर्दनमें नौकरके हरगिज़ न जानत्।
यह जानतीका तौक़ है और गले पड़ी।

फूले फलै न बेत, यदपि सुधा बरषहिं जलद। मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम—(तुलसी) स्पष्ट। किसी मूर्खको बहुत समझाने पर भी जब वह नहीं समझता, तब क०।

अब गर आवे ज़िन्दगी बारद।
हर्गिज़ चक आ.खे बेद बर न खुरी॥ (शेख़सादी)

फूहड़ करे सिंगार, माँग ईंटोंसे फोड़े—फूहड़ सेंदुरकी जगह ईंट घिसकर माँग भरती है। ईंट घिसनेसे खून निकल आता है।

फूहड़का माल हँस हँस खाइये—मूर्खका माल खुशामदसे खाया जाता है और जल्दी शेष हो जाता है।

फूहड़के घर उगी चमेरी, गोबर माड़ उसीपर गेरी—अच्छी चीज़का मूर्खता वश दुरुपयोग किया जाय, तब क०।

फूहड़के घर खिड़की लगी, सब कुत्तोंको चिंता पड़ी। बाँडा कुत्ता बाँचै सौन, लगी तो है पर देगा कौन—फूहड़के घरमें खिड़की लगी देखकर सब कुत्तोंको चिन्ता हुई, कि अब घरमें कैसे जा सकेंगे। इसपर एक लँडूरा कुत्ता बोला, कि खिड़की लगी तो है पर उसे बंद कौन करेगा, अर्थात् हम लोग अनायास घरमें जा सकेंगे। मूर्ख विपदसे बचनेका सामान रहते भी उसे काममें नहीं लाते।

फूहड़ चाले, नौ घर हाले—फूहड़ बाहर जाती है तो नौ घर हिल जाते हैं, अर्थात् जहाँ जायगी वहाँ ऐसी बात कहेगी या ऐसा काम करेगी जिससे फ़साद होगा।

फूहड़ ओढ़आ, सागमें शोरुआ—(मु० ज०) फूहड़के सब काम बेढंगे होते हैं।

फूहड़ देवीको कुरथीका अच्छत—जैसे देवता वैसी पूजा।

फूहड़ सीने बैठे तब सूई तोड़े—(ज०) अनाड़ी जो काम करता है वही बिगड़ जाता है।

फेरोंकी गुनहगार है—बाल विधवाको क०। जिसने पतिका मुँहतक भी नहीं देखा वह भी हिन्दू रीतिके अनुसार दूसरा ब्याह नहीं कर सकती।

फ़ौजकी अगाड़ी, आँधीकी पिछाड़ी—इनको सँभालना मुश्किल है।

फ़ौज बे वकील, साहब बे फ़ील—बिना दूतकी फ़ौज और बिना हाथीका सरदार कुछ नहीं।

ब

बंदके जाये बंदमें नहीं रहते—(ज०) सदा दिन किसीके बराबर नहीं रहते

बंदगी ऐसी और इनाम ऐसा—जब कोई किसीका बड़ा काम करे और बदलेमें सामान्य मज़दूरी मिले, तब क०।

इसपर एक कहानी यों है :—किसी समय एक ब्राह्मण किसी बादशाहके दरबारमें गया। उसने बादशाहको बड़े सम्मान पूर्वक झुककर प्रणाम किया। बादशाहके यहां तीन बार झुककर सलाम करनेका नियम था। ब्राह्मणके एक बार सलाम करनेसे बादशाहने इसे अपमान समझा और ब्राह्मणको तीन तमाचेकी सज़ा दी। उस समय ब्राह्मणने उक्त मसल कही।

बंदगी बेचारगी—नौकरी करना लाचारीका काम है।

बंदर एक निसचरी लाया, करी आपनी अर्धंगी। लालदास रघुनाथ दयासे, उत्पन्न हुए फिरंगी—अंगरेज़ोंको क०। रामचन्द्रजीने हनुमानजीको उनकी सेवाके लिये यह वरदान दिया था कि तुम्हारे वंशज कलियुगमें भारतवर्षपर राज्य करेंगे।

बंदरका ज़ख़म (वा घाव)—जो जल्दी नहीं सूखता। जो मनुष्य अपने घाव या फोड़ेको खुजाया या नोचा करते हैं और जल्दी आराम नहीं होने देते, उनपर क०।

बंदरका हाल मुछंदर जाने—मुछन्दर बन्दरके सरदारको कहते हैं। बन्दरोंका हाल वही जानता है। किसीका हाल उसका साथी ही अच्छी तरह जानता है।

बंदरकी आशनाई, घरमें आग लगाई—मूर्खसे मित्रता करनेमें हानि है।

बंदरकी तुरत फुरत सुरत मशहूर है—स्पष्ट।

बंदरकी दोस्ती जीका ज़िआन—मूर्खसे प्रीति करना जानको आफ़त लगाना है।

कहो मध्यस कन गोपित मर्म, अखि सखि मंजारीको कर्म।
लोग पखानो निचय जानि, बानर मेह नहीं सुखदानि।
(विरह गोपका)

बंदरको पगड़ी मुछंदरके सिर—एकसे लेकर दूसरेको दे, तब क०। एकका दोष दूसरेके सिर मढ़े, तब भी क०।

बंदरके गलेमें मोतियोंकी माला—किसीको ऐसी चीज़ देना जिसके लायक़ वह न हो, तब क०।

बंदरके धन केवल गाल—बन्दर जो पाता है सो गलेमें भर रखता है, पीछेसे निकाल निकालके खाया करता है।

बंदरके हाथ आइना—वृथा है, क्योंकि वह बदशक्ल होता है और उसे फोड़ डालता है।

बंदरके हाथ नारियल—जब किसीके हाथ ऐसी चीज़ पड़े जो उसकी क़दर न जानता हो, तब क०।

भये पिया तेरे अनुकूल, पहिचान कर मानिनि रसमूल।
लोग पठावो सांचो कह्यो, बन्दरी हाथ नारियल पर्यो॥
(स्वाधीन पतिका)

बंदर क्या जाने अदरक़का स्वाद—ऊ० दे०।

चाटीको स्वाद कहा कपिको, अरु नीच कहा उपकारहि माने। जाने कहा हिजरा पतिको गति, बाखरको गति का खर जाने।

बंदरघुड़की (वा भभकी)—झूठा डर दिखाना।

बंदर नाचे ऊँट जल मरे—किसीको सुख देखकर कोई ईर्षा करे, तब क०।

बंदह बशर है—आदमी ही तो है। जब किसीसे चूक हो जाती है, तब क०।

बंधी मुट्ठी लाख बराबर—मुट्ठी बांधकर जो दान या इनाम दिया जाता है, उसे लेनेवाला जितना चाहे बढ़ाकर कह सकता है। जब किसीका हिस्सापत्ती हो जाय और किसीको मालूम न हो, तब क०।

बंधी रहे न टके बिकाय—(व्य०) जो चीज़ जल्दी नहीं बिकती है, उसे क०। दे० 'टंगी रहे……'

बकरा मुटाय तब लकड़ी खाय—बकरा मोटा होता है तब मार खाता है, क्योंकि वह लड़ाका हो जाता है।

बकरी कासा मुंह चलता ही रहता है—दिनरात खाया करता है।

बकरी करे घाससे यारी तो चरने कहां जाय—दे० 'घोड़ा घाससे'।

बकरीके नसीबों छुरी है—जब अच्छा काम करके भी किसीको बुरा फल मिले, तब क०।

बकरी जानसे गई खानेवालेको मज़ा न आया—जब कोई किसीके लिये मर मिटे और वह उसका एहसान भी न माने, तब क०।

'तुम्हें न काल व्याकुल भई, रोवति युवती ज्याद।
गई बकरी निज जीव सों, खादी लह्यो न स्वाद।'
(सुग्धा सुरतान्त लो० र० को०) ज्याद=अधिक।

बकरीने दूध दिया मेंगनी भरा—लानती देकर किसीपर मेहरबानी की जाय, तब क०।

बकरी या सस्सेकी तीन ही टांगें—सरासर झूठ बोलना। जब कोई झूठ भी बोले और उसे सत्य साबित करनेके लिये डटा रहे, तब क०। दे० 'मुर्गी की एक ही……'

बकरेकी मां कबतक ख़ैर मनाय—एक न एक दिन मारा ही जायगा। बदचलनपर क०।

कट मरजैहैं एक दिन, जो नर राखै बैर।
बकरेकी मां कब तलक, रहे मनावत ख़ैर।

बख़्तावरका आटा गीला, कमबख़्तकी दाल गीली—पहिलेकी विशेष हानि नहीं परन्तु पिछलेका मरन है।

बख़शीके धगगड़—(च०) दे० 'लाटके साले……'

बख़शो बीबी बिल्ली चूहा लंडूरा ही जीयेगा—इसका निकास यों है:—एक बार एक बिल्लीने किसी चूहेको पकड़ लिया। बिल्लीसे छूटकर चूहा बिलमें घुस गया, पर उसकी पूंछ टूटकर बिल्लीके मुंहमें रह गई। बिल्ली तो चूहेको खाना चाहती थी, इसलिये उसने चूहेसे कहा ख़ैर अब बाहर निकल' आवो तुम्हारी पूंछ जोड़ दूंगी। इसपर चूहेने उक्त मसल कही।

इसी जोड़की बङ्गला मसल है—"छेड़े दीमा केंदे बांचो"।

बगड़में बगड़ तीन घर, तेली, धोबी, नाई—नीच सोहबतपर क०।

बग़ल था सिपारा, तो पूत था हमारा, जब कमर हुआ कटारा, तो कंथ हुआ तुम्हारा—सासका कहना बहूके प्रति जिसका पति उसके वशमें हो जाय। जब लड़का था, बग़लमें पोथी लेकर पढ़ने जाता था, तब मेरा लड़का था। जब कमरमें कटारा हुआ तो तेरा पति हो गया।

बग़लमें ईमान दाबकर बात करते हैं—बनावटी या बेईमानीकी बात करते हैं।

बग़लमें छुरी मुंहमें राम राम—जो मुंहसे मित्रता-की बातें करे और भीतरसे दुश्मनी रखे, उसको क०। चाणक्यने भी कहा है, 'परोक्षे कार्यं हन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्। वर्जयेत् तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।'

बग़लमें तूनीका पींजड़ा "नबीजी भेजो—लोभी मनुष्यको क०।

बग़लमें तोसा, किसका भरोसा—अपने पास धन है तो दूसरेका आसरा क्या देखना।

बग़लमें बुकचा, चली बज़ार—स्पष्ट।

बग़लमें मुंह डालो—अपनी तरफ देखो। जब कोई किसीकी बुराई करे और वह बुराई खुद उसमें भी हो, तब क०।

बग़लमें सोंटा, नाम ग़रीबदास—नामसे विपरीत गुणवालेको क०।

बग़लमें लड़का, शहरमें ढिंढोरा—दे० 'कनिया लड़का……'।

'कहीं तुमको न पाया गर्चे हमने एक जहां ढूंढा।
फिर आखिर दिलहीमें देखा बग़लहीमेंसे तू निकला।'
(ज़ौक़)

बगला भगत—जो मनुष्य ऊपरसे तो साधु बना हो पर भीतरसे अपना मतलब साधना चाहता हो, उसे

क०। बगला मछली पकड़नेके लिये तालाब या नदीके किनारे एक पांव उठाकर खड़ा रहता है मानों ईश्वरमें ध्यान लगाये है पर जहां मछली सामने आई और उसे पकड़ा।

बगला भी धोबीका भाई है—क्योंकि वह भी पानीमें खड़ा रहता है।

बगला मारे पखना हाथ—जब कोई किसीको नुक़सान पहुंचावे और उसके हाथ कुछ न पड़े, तब क०। बगलेमें खाली पर ही पर होते हैं, मांस नाम मात्रको होता है।

> को बिय जे है सुरतियो, स्वाद न पंछी नाय।
> जै से बगुलाजे हने, पखना नागे हाथ (कृष्ण लो०र०को०

बचन परम हित सुनत कठोरे, कहहिं सुनहिं ते नरवर थोरे—(तुल०) स्पष्ट।

बचन बज्र जेहि सदा पियारा, सहस नयन पर दोष निहारा—(तुलसी) कठोर बोलनेवाले और दूसरोंका दोष देखनेवालों पर क०।

बचनोंका बाँधा खड़ा है—आसमानको कहते हैं जो बिना सहारे खड़ा है।

बचे नर, हज़ार घर—सच्चे मर्दको बचानेसे हज़ार घर बचानेका फल होता है।

बच, बे जुम्मा, आँधी आई—आती विपत्तिसे होशियार होनेके लिये क०।

बच्चे तो खिलादे दूध तो भात, बड़े हुए तो मारदे लात—(पं०) कृतघ्न लड़कों पर क० जो माँ बापका अपमान करते हैं।

बछियाके बाबा पड़ियाके ताऊ—मूर्खको क०। बछियाके बाबा=बैल। पड़ियाके ताऊ=भैंसा।

> बछियाके बाबा पड़ियाके ताऊ घसनीके घुम घुम भर भर
> (हरिश्चन्द्र)

बजत बजत आखिर तो नंदहीके द्वार आवेगी—आखिर बात खुल ही जायगी। जिस मनुष्यसे प्रयोजन हो और उसीसे बात छिपाई जाय, तब वह ऐसा कहता है।

बज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि—(सं० भवभूति) जिसका हृदय बज्रसे भी कठोर और फूलसे भी कोमल हो, उसे क०। न्यायवान मनुष्यको क०। अकसर इन्साफ़ करनेके समय क०।

> कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहिं चाहि।
> चित खगेस रघुबीर कर, समुझ परै कहु काहि। (तुल०)

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो—जिस बातको दुनिया अच्छी कहे उसे अच्छी ही समझना चाहिये।

बज़ाजकी गठरी पर झींगुर राजा—क्योंकि वह कपड़े को चाट जाता है। दूसरोंकी वस्तुपर घमंड करना।

बजा नक़ारा कूचका उखड़न लागी मेख़, चलने हारे चल बसे खड़ा हुआ तू देख—स्पष्ट।

बटियाकी राह, बे निरवाह—पगडंडीका रास्ता आदमीको कहींका कहीं ले जाता है।

बटुर हाथ दुशमनवें लोगो—(भो०) दुश्मनको मारे तो कड़ी मार मारे।

बट्टे खाते डालो—(व्य०) (१) डूबत या गताल खाते डालो। जब रकम वसूल होनेकी उम्मेद न रहे, तब क०। (२) जिस बातसे प्रयोजन न रखना हो, उसकी चर्चा न करनेके लिये क०।

बड़ तलेका भूत—जो जल्दी नहीं छोड़ता, उसे क०।

बड़ रोवे बड़ाईके, छोट रोवे पेटके—रोनेसे खाली कोई नहीं।

बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया—सयाना काम देखता है और बचा प्यारसे खुश होता है।

बड़ा धोता बड़ा पोथा मस्तके पगड़ बड़ा। अक्षरो नैव जानाति उजड्डाये नमोनमः—मूर्ख पण्डितको क०।

बड़ा निवाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिये—आप कष्ट उठा ले पर दूसरोंको कष्ट न दे।

बड़ा बोल क़ाज़ीका प्यादह—बड़ा बोल बोलनेमें क़ाज़ीका प्यादा सामने खड़ा है अर्थात् इंसाफ़ होनेसे उसकी क़लई खुल जाती है।

बड़ी कमाई पर नोंन बिकवा—(पू०) बहुत कमाई करके नोंन बेचना। धनवान होकर छोटा काम करे, तब क०। दे० "पढ़े फारसी।"

बड़ी ननद शैतानकी छड़ी, जब देखो तब तीर सी खड़ी—बड़ी ननदकी घरमें बहुत चलती है, इसलिये वह घरमें भौजाईको बाग्घी बनी रहती है।

बड़ी नाक वाले—इज़्ज़तदारको क०। व्यंगसे उन्हें भी कहा जाता है, जो वास्तवमें इज़्ज़तदार तो नहीं हैं पर अपनेको लगाते बहुत हैं।

बड़ी नांदके टूक—किसी प्रतिष्ठित घरानेका मनुष्य जिसकी अवस्था हीन हो गई हो, उसे क०।

बड़ी फ़ज़र चूल्हेपर नज़र—सवेरा हुआ और खानेकी फ़िक्र पड़ी।

बड़ी बड़ाई गोड़की, तीन कोसको कोस—जो तीन कोसका एक कोस करे उसी पैरकी बड़ाई करनी चाहिये।

बड़ी बड़ी महफ़िलोंसे निकाले गये यह किस गिनतीमें है—बेहया आदमी पर क०।

एक बदतमीज़ आदमीको गुस्ताख़ी करनेपर लोगोंने महफ़िलसे निकल जानेके लिये कहा। तब उसने जवाब दिया कि मैं बड़ी बड़ी महफ़िलोंमेंसे निकाला गया हूं तुम्हारी महफ़िल किस गिनतीमें है।

बड़ी बहूको बुलाओ जो खीरमें नोन डाले—जब किसी बड़ेसे भूल होती है, तब व्यंगसे क०।

बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटा लाढा घणा सुहाग—(मा०) बहूकी उम्र वरसे अधिक होती है, तब वर पक्षवालोंको सांत्वना देनेके लिये क०।

बड़ी भाभी माके थानक—बड़े भाईकी स्त्री माताके तुल्य है।

बड़ी मछली छोटी मछलीको खाती है—बलवान निर्बलको सताता है।

बड़े अन्न पूरना बने हैं—बड़े दानी बने हैं। व्यंगसे क०।

बड़े आदमीकी पीठ काली, ग़रीबका मुंह काला—बड़े आदमीकी निन्दा लोग पीठ पीछे करते हैं ग़रीबकी निन्दा मुंहपर करते हैं।

बड़े आदमीने दाल खाई तो कहा सादा मिज़ाज है, ग़रीबने दाल खाई तो कहा कंगाल है—जिस कामके लिये बड़े आदमीकी तारीफ़ होती है उसी कामके लिये ग़रीबकी निन्दा होती है।

हम चने खाते हैं तो शौक़ करते हैं।
वह चने खाते हैं तो भूखों मरते हैं।

बड़े कड़ाहीमें तले जाते हैं—जब कोई बड़ोंका अपमान करता है, तब क०। बड़े=(१) जो पीठीके बरे बनाकर कड़ाईमें तले जाते हैं। (२) जो उम्रमें बड़े हैं।

बड़े कहैं सो कीजिये, करैं सो करिये नाहिं—स्पष्ट। दे० 'गुरु कहै सो'।

बड़ेकी बड़ाई न छोटेकी छुटाई—जो मर्य्यादासे नहीं चलता है, उसे क०।

बड़ेकी बात बड़े पहिचाना—बड़ोंकी बात बड़े ही समझते हैं। जब कोई मनुष्य मूर्खताकी बात करे और दूसरा उसको सच माने, तब व्यंगसे क०। पूरी मसल यह है:—"कांधे धनुष हाथमें बाना, कहां चले दिल्ली सुल्ताना। बनके राव विरछके राना, बड़ेकी बात बड़े पहिचाना।"

इसका निकास इस क़िस्सेसे है। एक धुनिया कंधेपर धुनकी और हाथमें धुनैटा लिये जङ्गलको राहसे कहीं जा रहा था। उसने एक सियारको जङ्गलमेंसे आते देखा और समझा कि जङ्गलका राजा सिंह यही है। सियारने भी धुनियेंको धनुष बाण लिये शिकारी समझकर भयके मारे मसलका प्रथमार्ध कहा; जिसके उत्तरमें धुनियेंने भी उसके सम्मानार्थ उसका शेषार्ध कहा।

बड़े घरके ठीकरा—दे० बड़े नांदकी टूक।

बड़े घर पड़िये, पत्थर ढोढो मरिये—(ज०) यदि ऐसे घरमें ब्याह हो जिसमें कुनबेके आदमी बहुत हों तो वहां काम बहुत करना पड़ता है, इसलिये क०।

बड़े घोड़ेकी बड़ी चाल—बड़ोंके काम भी बड़े ही होते हैं।

बड़े चोरका हिस्सा नहीं—क्योंकि वह जितना चाहता है ले लेता है।

बड़े न बूड़न देत हैं, जाकी पकड़ें बांह, जैसे लोहा नावमें, तिरत फिरै जल मांह—स्पष्ट।

बड़े बरतनकी खुरचन भी बहुत है—दे० "बड़े नांदकी टूक।"

बड़े बोलका सिर नीचा—अहंकारी नीचा देखता है।

उस बुतने मुझको मुंह लगाया है मगर,
शेख़ीकी न ले मुझसे तू ऐ वोदी ख़बर।
एक रोज़ ज़रूर मुंहकी खायगा तू,
सुन ले कि बड़े बोलका नीचा है सर। (रंजूर)

बड़े भागसे होत है, दाद, खाज और राज—

(१) ऐसा लोगोंका विश्वास है कि दाद और खुजली होनेसे अच्छी प्राप्ति होती है। (२) दाद और खाजके खुजलानेपर अधिक कष्ट होता है इसलिये ऐसे रोगीको लोग व्यंगसे अथवा शांति देनेके लिये कहा करते हैं।

बड़े मियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्लाह—जहां एक बुरा हो और दूसरा उससे भी अधिक बुरा हो, तब क०। जब बापसे बेटा वा बड़े भाईसे छोटा भाई बढ़कर निकले, तब क०।

बड़े शहरका बड़ा ही चांद—बड़े शहरमें बड़े ठग होते हैं। व्यंगसे क०।

बड़े सनेह लघुनपर करहीं। गिर निज सीस सदा तृण धरहीं—(तुलसी) स्पष्ट।

> जो बालक कह तोतरि बाता,
> सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता। (तुलसी)

बड़ोंका बड़ा ही भाग—बड़ोंका नसीब भी बड़ा ही होता है।

बड़ोंका बड़ा ही मुंह—बड़ोंकी मांग भी बड़ी ही होती है।

बड़ोंकी बड़ी बात—(१) बड़ोंके ख्याल भी बड़े ही होते हैं (२) जब कोई बड़ा होकर नीच काम कर बैठे, तब व्यंगसे क०।

> जो चाहैं सोई करैं बड़े पतंकित भार,
> उनके देखत गगन पर धरत गौरि पग पांव (छन्द)

बड़ोंके कहेका और आंवलोंके खायेका पीछे सवाद आता है—यह पीछे अपना गुण दिखाते हैं पहिले कडुवे जान पड़ते हैं।

बड़ोंको होवे दुख बड़ा, छोटोंसे दुख दूर। तारे सब न्यारे रहें, गहैं राहु शशि सूर—स्पष्ट। जब बड़ोंपर आफ़त आती है और छोटे बच जाते हैं, तब क०।

> विपत बड़े ही सहि सकैं, इतर विपति तें दूर।
> तारे सब......' (छन्द)

बड़ोंसे रक्खे आस, न जाय पास—बड़े आदमियोंसे आश रक्खे पर उनके पास न रहे।

बढ़े बाल और मैले कपड़े, और करकसा नार, सोनेको धरती मिले, नरक निसानी चार—स्पष्ट। दे० "पान पुराना"

बढ़े तो अमीर, घटे तो फ़क़ीर, मरे तो पीर—यह मुसलमानोंपर क०। दे० "रज्जा अमीर"।

बत्तीस दांतकी भाषा खाली नहीं जाती—नित्य प्रतिका कोसना बुरा होता है। (२) जिस बातको बहुत लोग कहते हैं वह होकर रहती है।

बत्तीस दांतमें जीभ—बहुत सतर्क होकर चलनेपर क०। जो चारों ओर शत्रुओंसे घिरा हो, उसे भी क०।

> कामसे काम अपने हमको गो हो आलम ख़ुफ़ा भी,
> रहते हैं बत्तीस दांतोंमें ,ज़ुबानोंकी तरह। (हाली)

बद अच्छा बदनाम बुरा—स्पष्ट।

> बाज़ कहते हैं शख़्से ,ख़ुद काम बुरा,
> बाज़ोंको समझमें है मैं बाकाम बुरा।
> मुझसे पूछो तो ये कहूंगा रंज़ूर,
> बद अच्छा है मगर है बदनाम बुरा। (रंज़ूर)

बद घोड़ेकी मेख—बहुत दुष्ट वा पापी मनुष्यको क०।

बदनमें नहीं लत्ता पान खायँ अलबत्ता—लिफाफियेको क०।

बदनमें दम नहीं नाम ज़ोरावर खां—(ख) नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

बद बदीसे न जाय, तो नेक नेकीसे भी न जाय—बुरा बुराई न छोड़े तो अच्छेको भी अपने भलेपनको न छोड़ना चाहिये।

बदलीकी छांह क्या—अस्थायी है।

बदलीकी धूप जब निकसे तब तेज—स्पष्ट।

बदलीमें दिन न दीसे, फूहड़ बैठी पीसे—चक्की रात रहते पीसी जाती है। बदलीके कारण दिन नहीं जान पड़ता इसलिये फूहड़को रात ही जान पड़ती है।

बदाऊंके लाला—मूर्खको क०। बदाऊंके रहनेवालोंपर ताना है।

बधिया मरी तो मरी आगरा तो देखा—हानि हुई तो हुई, अनुभव तो हुआ।

कोई बंजारा आगरे मांस बेचने गया, वहां उसका माल कुछ भी न बिका पर साथ ही साथ उसका बैल मर गया। कोई कोई बधियाके जगह बुढ़िया भी क०।

बधे पाप अपकीरत हारे—(तुलसी) दोनों तरफ़से बुराई होती जान पड़ती है, तब क०।

बनके पात बनहिके खड़िका, केलि करत बारीके लड़िका—(भो०) बारीके लड़के जंगली पत्ते और खड़कों हीसे खेला करते हैं क्योंकि उनके यहां और है ही क्या ?

बन आयेकी बात रे ऊधो—दे० 'ऊधो बनि'।

बन आई कुत्तेकी, जो पालकी बैठा जावे—जब किसी नीचका सन्मान हो, तब क०।

बन गयेके लालाजी औ बिगड़ गयेके चूतिया—(व्य०) एक ही आदमी जब धन कमाता है तब बुद्धिमान कहलाता है और नुकसान देता है तब मूर्ख कहलाता है।

बनजी और बटाऊभा, सुख पावे जिहि गांव। थाको तो चौलूटमें, करें नेक सरनाम—स्पष्ट।

बनज करेंगे बानियें, और करेंगे रीस। बनज करा था भाटने, सौके रह गये तीस—वाणिज्य करना बनियों हीका काम है।

बनज करें तो टोटा आवे, बैठ खाये धन छीजे। कहे कबीर सुनो भाई सन्तो, मांग खाय सो जीते—स्पष्ट।

बनजमें क्या भाई बन्धो—(व्य०) व्यवहारमें मुलाहिज़ा न करना चाहिये।

बनते देर लगती है बिगड़ते देर नहीं लगती—स्पष्ट।

बन बालक और भैंस उखारी, जेठ मास यह चार दुखारी—(कृ०) गरमीके कारण ये चारों विकल रहते हैं।

बनमें मोर नाचा किसने देखा—दे० 'जंगलमें मोर'

"बनाओगे" ? "नहीं", "बिगाड़ोगे" ? "दोनों हाथोंसे"—जिस मनुष्यसे कोई काम न हो सके और यदि कुछ करे भी तो उसे बिगाड़ दे, उसको क०।

बनिआयेकी बनियाई है—जिसपर ईश्वर प्रसन्न होता है उसीका काम बनता है।

बल बुधि विद्या गुन सब ज्ञान, सबपर हरि इच्छा बलवान।
इहि मर्म नहिं समय राई है, "बनि आयेकी बनियाई है"।
(लो० सं०)

धनिक पुत्र जाने कहा, गढ़ लेवेकी घात—स्पष्ट।

बनियां अपने बाप सों, ठगत न लावे वार, निस वासर जननो ठगे, जहां लेत अवतार—(गिरधर कविराय) बनियें बड़े मतलबी होते हैं इसीलिये क०।

बनियांके सखरच, ठकुराके हीन, बैदके पूत, व्याध ना चीन्ह, भटवाके चुप चुप, बेस्वाके मइल, कहें घाघ पांचों घर गइल—बनियेका लड़का खरचीला, ठाकुरका बोदा, बैदका रोग न पहिचानने वाला, भाटका कम बोल, और बेश्याकी लड़की मैली वा काली हो तो इनसे घरका नाश होता है।

बनियां जिसका यार, उसको दुश्मन क्या दरकार स्पष्ट। बनियोंपर ताना है।

बनियां देता ही नहीं कहे ज़रा पूरा तौलियो—जिसकी मांगकी पूर्ति सारी ही अस्वीकारकी जाय पर वह अपनी मांगसे भी अधिक पानेकी इच्छा प्रगट करता जाय, तब क०।

मानिनि मान तजी नहीं, पिय कहै घूंघट खोल।
बनियां ये ठग देत नहीं, कहै ज़ पूरा तोल। (मान)
(लो० र० कौ०)

बनियां भी अपना गुड़ छिपा कर खाता है—जब कोई आदमी ज़ाहिरा बुरा काम करे, तब क०।

जीवन देइ सखी सब राज। जो पै लिय तो चहियत लाज
कहै कहावत ज्यों बुधि बोरि। बनियो मिन गुर खाय जु चोरि।
(मध्याकी सुरति लो० र० कौ०)

असराज-ऐसे राजाको अर्थात् पतिको।

बनियां मारे जान, ठग मारे अनजान—बनियां जान पहिचानवालेको और ठग अनजानको ठगता है।

बनियां मीत न बेस्वा सती—बनियां कभी किसीका मित्र नहीं होता, और बेश्या सती नहीं होती।

है बनियां बनि आयेके साथी, न भूलियो बात सिवानमें।
(राम)

बनियायेकी फ़क़ीरी भी भली—स्पष्ट।

बनियां रीझे हर्र दे—बनियोंकी कृपणता पर क०।

बनियां लिखे पढ़े करतार—बनियोंका लिखना अष्ट होता है।

बनियेंका उल्लू—कोई बेकार चीज़ यत्नसे रखी जाय, तब क०।

किसी बनियेने बाज़के धोखे एक उल्लू ख़रीद लिया था, जिसे वह बाज कहकर सबको दिखाता फिरता था।

बनियेंका जी धनिये बराबर—बहुत छोटा होता है

बनियेंका बेटा कुछ देख ही के गिरता है—बिना मतलबके बनियां कोई काम नहीं करता।

एक बनियेंका लड़का सिरपर तेलका घड़ा लिये जा रहा था। उसका पैर फिसलनेपर वह घड़े सहित गिर पड़ा किसीने उसके बापको इस घटनाकी सूचना दी, जिसके उत्तरमें उसने कहा वह ज़रूर रास्तेमें कोई चीज़ देख कर गिरा होगा। वास्तवमें उसे एक अशर्फी मिलीथी।

बनियेंका बहकाया, और जोगीका फिटकारा—बनियेके बहकानेसे और जोगीके शापसे बचना मुश्किल है। बनियेके बहकानेपर एक कहानी इस तरह है—

किसी मनुष्यके पास एक गिन्नी थी जिसे वह बेंचा चाहता था। एक बनियेने उसे सस्ते दाममें ख़रीदना चाहा। उसने गिन्नीका दाम पांच रुपये लगाया। जब वह इतने दाममें बेंचनेको राज़ी न हुआ, तब बनियेने क्रमसे बढ़ते बढ़ते उसके दाम चौदह रुपये तक लगा दिये। तब मनुष्यके मनमें बहम हुआ कि यह अवश्य ज़्यादे दामकी चीज़ है, तभी तो इसने पांच रुपयेसे बढ़ते बढ़ते चौदह रुपये तक इसके दाम लगाये हैं। यह सोचकर उसने बनियेंसे कहा कि मैं सराफको दिखाये बिना न बेंचूंगा बनियेंने उसका यह भाव देखकर मित्रता दिखाते हुए कहा कि यह तीस रुपयेका माल है, इससे कमतीमें इसे न बेंचना। वह सारे बाज़ारमें उसे लिये फिरा और सबसे तीस रुपये दाम कहता, पर किसीने भी उसे न ख़रीदा। अन्तमें निराश होकर उसने उसी बनियेको चौदह रुपयेमें वह गिन्नी दे दी।

बनियेंका मुंह म्राह और पेट मोम—बनियां पेट काट कर रुपया जमा करता है।

बनियेंका साह भड़भूंजा—जैसेको तैसा मिले, तब क०।

बनियेंकी उचापत और घोड़ेकी दौड़ बराबर—(व्य०) बहुत जल्दी बढ़ती है।

बनियेंकी सलाम बेगरज़ नहीं होती—बिना मतलब के बनियां कोई काम नहीं करता।

बनियेंके पेशाबमें बिच्छू पैदा होता है—बनियेके लड़के भी बड़े चालाक होते हैं। बिच्छू=सयाना, चालाक।

बनियेंसे सयाना, सो दीवाना—स्पष्ट।

बनीके सब यार हैं—अच्छे वक्तके सब साथी हैं।

बनीके सौ साले बिगड़ीका एक बहिनोई भी नहीं—बड़े आदमीको सब कोई अपनी बहिन ब्याहने को तयार होते हैं, पर ग़रीबकी बहिनसे कोई ब्याह नहीं करना चाहता।

बनी तो बनी, नहीं दाऊद खां पनी—यदि एक जगह काम नहीं मिलेगा तो दूसरी जगह देखूंगा।

बनी तो भाई, नहीं दुश्मनाई—यदि अपनीसी कहे तो भाई नहीं तो दुश्मन।

बनी फिर बेसवा, खोले फिर केसवा—(ज०) मां वा सासका कहना बेटी वा बहूके प्रति। सिर खुले फिरना वेश्याका काम है।

बनी बनावे बानियां, बनी बिगाड़े जाट। मूंडे सीस सराह कर, डोम कबीश्वर भाट—स्पष्ट।

बनेके साह, बिगड़ेके मोटिया—स्पष्ट।

बने बनेके सब हैं साथी—जिसका समय अच्छा होता है उसके सब साथी होते हैं।

बने सब ही सराहें, बिगड़े कहें कमबख्त—स्पष्ट।

बम्हनेबचने गड़रे कुश, अहिर दक्षिणा कंडा भुस—गांडर=एक क़िस्मकी घास। ब्राह्मणके बचनसे गांडर कुश हो जाय तो अहीरके कहेसे दक्षिणाके लिये कंडा भूसा भी हो सकता है। दे० "बामनवचन"।

बरमेका काम छिदना नहीं होता—बरमेसे दूसरी चीज़में छेद होता है। यह आप नहीं छिदता। ठगको कोई नहीं ठग सकता।

बर पीपर बिन हो रहे, ज्यों अरंड अधिकार—जहां बड़े नहीं होते वहां छोटेका ही अधिकार होता है।

बरस दिन गणेशजी कूदते हैं—(व्य०) जब कोई नया व्यापार करता है तो पहिले बरस लाभ ही होता है फिर जब नुक़सान होता है, तब क०।

बरस भरमें सखी सूमका लेखा बराबर—जब किसी सूमका नुक़सान हो जाता है, तब क०।

बरसातमें कढ़ाही घर घर—बरसातमें त्योहार बहुत होते हैं, इसलिये घर घर कढ़ाही चढ़ती है।
बरसात बरके साथ—बरसात पतिके साथ बहुत अच्छी तरह कटती है।
बरसाती दरज़ी हो रहे हैं—बेकार बैठे हैं।
बरसा थोड़ी भमरौटी बहुत—थोड़ी बरषा होनेसे बहुत सूखा पड़ता है।
बरसे आसोज, हो नाजकी मौज—(कृ०) क्वारमें पानी बरसनेसे अन्न बहुत पैदा होता है।
बरसेगा, बरसावेगा, पैसे सेर लगावेगा—(कृ०) बरसात अच्छी होनेसे अन्न सस्ता होता है।
बरसेगा मेह, होंगे अनन्द, तुम शाहके शाह हम नंगके नंग—जो पानी बरसेगा तो अनाज बहुत उपजेगा। खानेको सभीको मिलेगा, लेकिन शाह शाह ही और नङ्गा नङ्गा ही रहेगा। गरीबोंका कहना व्यवसाइयोंके प्रति।
बरसे पाढ़, तो हो जा ठाढ़—(कृ०) असाढ़में वर्षा हो तो चैन हो जाय।
बरसे सावन, तो हो पांचके बावन—(कृ०) श्रावणमें बरषा हो तो अन्न दसगुना हो।
बरसो राम धड़ाकेसे, बुढ़िया मर गई फ़ाक़े से—जब बहुत ज़रूरतके बाद पानी बरसता है, तब लड़के कहते हैं।
बरातका छैला, सावनका खेला—बारातमें खुशी, जैसे सावनमें घास, अर्थात् बहुत होती है।
बरातकी सोभा बाजा, अरथीकी सोभा स्यापा—स्पष्ट।
बरसात पीछे पत्तल भारी—बरात बिदा हो जाती है; तो पत्तलका खर्च भी अखरता है। जब उत्सव समाप्त हो जाता है तो फिर उसके लिये सामान्य ख़र्च करना भी भारी पड़ जाता है।
बरातियोंको खानेकी चाह, दुलहेको दुलहिनकी चाह—स्पष्ट।
बराती किनारे हो जायंगे काम दूल्हा, दूल्हनसे पड़ेगा—सिखानेवाले लड़ाई कराकर अलग हो जाते हैं।
बरु भल बास नर्ककर ताता, दुष्ट संग जनि देइ विधाता—(तुलसी) दुष्टके संगमें रहनेसे नर्कमें रहना अच्छा है।
बरेली जानेका काम करते हो—पागलोंका सा काम करते हो। बरेलीमें बड़ा पागलखाना है।
बरेली रूपा रेली—बरेलीमें चांदी बरसती है। उपजाऊ ज़मीन और व्यवसायकी अधिकताके लिये क०
बरोबरी तें कीजिये, ब्याह बैर और प्रीत—ब्याह, बैर और प्रीत बराबरवालोंसे करनी चाहिये।
बर्रे बालक एक सुभाऊ—बच्चे और बर्रेका एकसा स्वभाव होता है। इनको छेड़ना न चाहिये।
बल जाय राजको, मोती लागें ब्याजको—जिस राज्यमें ब्याजका दाम मोतीके समान हो वह गारत हो जाय।
बलती आगमें कूदना—अपनेको जोखिममें डालना।
बलती आगमें घी डालना—झगड़ेको और बढ़ाना।
बल तो अपना बल, नहिं जाय जल—अपना ही बल काम आता है दूसरेका नहीं।
बलवानके बीस बिस्से मारे और रोने न दे—दे० "ज़बरदस्त मारे और रोने न दे।"
बलसे राजा राव है, बल बिन बड़ा न कोय। सांच बड़ेरे कह गये, बल बिन बड़ा न होय—स्पष्ट।
बल सों नामी हो गये, रुस्तम अरजुन भीम। बल बिन कैसी हाकमी, कह गये सांच हकीम—स्पष्ट।
बसंतकी ख़बर ही नहीं—असल बातकी ख़बर न हो, तब क०।
बसंत जाड़ेका अंत—स्पष्ट।
बस कर मियां बस कर, देखा तेरा लश्कर—(मु० ज०) जब कोई बहुत शेखी मारता है, तब क०।
बसत ईशके सीस तऊ, भयो न पूर्ण मयंक—नसीब सब जगह साथ जाता है।
बस ना चलत कुम्हार सों, खरके एंठत कान—दे० "कुम्हारसे बस न चले।"
बसन नीलके माठमें, कबहूं लाल न होय—बुरी जगह रहनेसे किसीकी ख्याति नहीं होती।
बस नमाज हो चुकी मुसल्ला बढ़ाइये—(मु०) जब काम ख़त्म हो जाता है, तब क०।

अब हो चुकी नमाज़ मुसल्ला बढ़ाइये,
बैंट मुझे बताके अब घरको जाइये।

बसाव शहरका, खेत नहरका—(कृ०) शहरका घर और नहरके किनारेका खेत अच्छा होता है।

बसै बुराई जासु तन, ताहीको सन्मान। भलौ भलौ कहि छोड़िये, खोटे ग्रह जप दान—(बिहारी) जिसमें बुराई रहती है, संसारमें उसीका मान होता है। अच्छे ग्रहको लोग अच्छा अच्छा कहकर ही छोड़ देते हैं, पर बुरे ग्रहके लिये जप और दान करते हैं।

बहकि बड़ाई आपनी, कत रांचति मति भूल। बिन मधु मधुकरके हिये, गड़े न गुड़हर फूल—(बिहारी) अपनी बड़ाईसे बहकके अपने मनमें क्यों प्रसन्न होता है। यह तेरी समझकी भूल है। बिना सुगन्धके भौंरेके मनमें गुड़हलका फूल नहीं चुभता। कोई बिना गुणके अपनी बड़ाई करे, तब क०।

बहता पानी निर्मला, बंधा गंदीला होय। साधू जन रमता भला, दाग न लागे कोय—(गिरधर) स्पष्ट। (१) बरे संगे गर्दां न रोयद न बात।' चलता फिरता जोगी बदनाम नहीं होता। (२) जो चीज़ सदा काममें लाई जाती है उसमें ज़ंग नहीं लगता।

(१) आबे दरिया बहे तो बेहतर,
इन्सां रवां रहे तो बेहतर।
(२) पानी न बहे तो उसमें दुर्गन्ध आवे,
खंजर न चले तो मोर्चा खावे।

बहती गंगा धोले पांव—चलते काममें यश लेलो। जब किसीका समय अच्छा हो, तब उसको सत्कर्म करके यशका भागी होनेके लिये क०।

'अब रैहै न रैहै यही समयो,
बहती नदी पांव पखार लेरी।' (ठाकुर)

बहतेको बह जाने दे, मत बतलावे ठौर। समझाये समझै नहीं, तो धक्का दे दे और—जो समझानेसे नहीं माने, उसे क०।

बहते दरियामें जिसका जी चाहे हाथ धोले—दे० 'बहती गंगा........'

बहन कहे मेरा बीर है प्यारा, काल कहे मेरा है बह चारा—स्पष्ट।

बहनके घर भाई कुत्ता, सासरे जमाई कुत्ता—दे० 'कुत्ता पाले........'

बह मरे बैल बैठे खांय तुरंग—जब एक तो खट-कर मरे और दूसरा बैठा आराम करे, तब क०।

बहरा राग स्वाद क्या जाने—मूर्खके आगे गुणकी क़दर नहीं होती।

'लाग नाहिं जेहि लोगन लागी, सो निन्दत है पर अनुरागी।
लोग छलि मनमें नहिं आने, बहिरा राग स्वाद का जाने।
(परकोश, लो० १० को०)

बहरा बहिश्ती, अंधा दोज़खी—(मु०) अंधा बेई-मान होता है इसलिये नर्कगामी होता और बहरा अपने कानोंसे परनिन्दा नहीं सुनता इसलिये स्वर्ग-वासी होता है।

बहरा सुने धर्मकी कथा—असंभव बात पर क०।

बहरा सोगहरा—बहरा मनुष्य बहुत गंभीर होता है।

बहरे आगे गावना गूंगे आगे गल्ल, अंधे आगे नाचना तीनों अल बिलल्ल—(पं०) तीनों काम ही वृथा हैं क्योंकि बहिरा गीत सुन नहीं सकता, गूंगा बातका जवाब दे नहीं सकता और अंधा नाच देख नहीं सकता

बहु गुणी बहु दुःखी—जब कोई अनेक कलाओंमें निपुण होकर भी अर्थाभावसे कष्ट पावे, तब क०।

बहुत अतीथ मठ खराबा—एक कामको बहुतसे आदमी करें, तो वह बिगड़ जाता है।

बहुत कथनी थोड़ी करनी—कहना बहुत करना थोड़ा।

बहुत कहेहुं सब कियेहु ढिठाई, उचित होय तस करिय गुसाईं—(तुलसी) हमें कहना था सो कह चुके, अब जो अच्छा समझो सो करो।

बहुत गई थोड़ी रह गई है—बहुत उमर बीत गई थोड़ी बाक़ी है इसे ईश्वर इज़्ज़तसे काट दे; इसी अभिप्रायके लिये क०।

सुबह होती है शाम होती है। उम्र यूं ही तमाम होती है।

बहुत बुझाई तुम्हहिं का कहहूं। परम चतुर मैं जानत अहहूं—(तुलसी) जो ख़ुद समझदार हो, उसको क०।

बहुत बोलना मूरखताई—स्पष्ट।

बहू नवेली और गऊ दुधेली—नई बहू और दुधारू गऊ अच्छी होती है।

बहू बेटीको ऐसी जगह बैठाये, जहांसे रोके उठे, हंसके न उठे—अर्थात् दबावमें रक्खे स्वतंत्र न होने दे।

बहू बेटी सब रखते हैं—जो दूसरोंकी स्त्रियोंको बुरी निगाहसे देखते हैं, उनको मलामत देनेके लिये क०।

बहू लाली, धन घर घाली—शौक़ीन बहूसे धन और घरका नाश होता है।

बहू शरमकी, बेटी करमकी—शरमदार बहू और नसीबवर लड़की अच्छी होती है।

बांगर बोया बाजरा, खादर बोया धान। अपने पूला हीजरा मोहि बतावे बांझ—स्पष्ट। बहूका कहना सासके प्रति।

बांझ अच्छी इकौंज बुरी—एक लड़केवालीसे बांझ अच्छी। एक लड़केका कुछ भरोसा नहीं।

बांझ क्या जाने प्रसूतकी पीर—जिसपर पड़ती है वही जानता है।

भी विरहिन गति लावी विहाल, हंसी करत संजोगिन बाल
सांचु पखाने कहत सयाने, व्यावर पीर बांझ कह जाने।
(प्रोषित पतिका। लो० र० कौ०)

बांझ थंभौटी, शैतानकी लंगोटी—(मु०ज०) बांझ बड़ी शैतान होती है।

बांझ बियानी, सोंठ उड़ानी—बातका बतंगड़ करना।

बांरल माई परौसी बराबर—स्पष्ट।

बांदीके आगे बांदी आई, लोगोंने जाना आंधी आई—नौकरका नौकर बहुत काम करता है क्योंकि उससे काम लेनेमें किसी तरहकी दया नहीं दिखाई जाती।

बांदीके आगे बांदी, मेह गिने न आंधी—क० दे०।

बांध खोसा, ले हीसा—थैली बांधो तो हिस्सा मिले।

बांधे सकेला, फिरे अकेला—हथियारबंदको किसो-

बांसके बांस खाये, उतराईकी उतराई दी—डबल मारपर क०।

बांसके बांस मल्लाहीकी मल्लाही—पूरा ख़र्च करके भी जब अपमान हो, तब क०।

बांस गुन बसौर और चमार गुन अघौर—जहांकी चीज़ वहीं रहनेसे परखी जाती है।

बांस चढ़ी गुड़ खाय—वेश्या या नष्ट स्त्रीको क०।

बांस डूबे बाउरी थाह मांगे—स्पष्ट। दे० "ऊंट बहे जायं"

बांस बढ़े झुक जाय, अरंड बढ़े टूट जाय—बड़ा आदमी बढ़नेपर और नम्र हो जाता है परंतु छोटा आदमी बढ़नेपर इतराने लगता है।

बांह गहे की लाज—जिसका हाथ पकड़ लिया उसे निबाहना चाहिए।

बांह छुड़ाये जात हो, निबल जानिके मोहि। हृदयमेंसे जाओगे, तो मर्द बदूंगो तोहि—भक्तका कहना ईश्वरके प्रति।

यह दोहा सूरदासजीने उस समय कहा था जब कि चोरोंने उनको कुए में डाल दिया था, और श्रीकृष्ण भगवानने उन्हें कुएं मेंसे बाहर निकाला था।

बाक़ीका मारा गांव और चिलमोंका मारा चूल्हा—फिर नहीं सम्हलते।

बाग लागल ना मंगता डेरा देल—(भो०) बगीचा लगा नहीं और मंगतोंने डेरा डाला।

बाघकी मौसी बिलाई—दोनों एक ही जातिके पशु हैं इसलिये क०।

बाघ बकरी एक घाट पानी पीते हैं—*जिस राजमें* प्रबन्ध अच्छा हो, उसपर क०।

बाघ मार नदीमें डारा, बिलाई देख डरानी—(ग्रा० ज०) खोचरियापर क०।

बाजरा कहेमें हूं अलबेला, दोमूसलसे लड़ूं अकेला जो मेरी नाज़ो खिचड़ी खाय, तो तुरत बोलता खुश हो जाय—बाजरा पुष्टिकर होता है इसलिये उसकी तारीफ़में क०।

बाज़ारका सत्तू, बाप भी खाय बेटा भी खाय—

बाज़ार किसका ? जो लेके दे उसका—(व्य०)
जो अपना देना चुका देता है उसको बाज़ारमें सब चीज़ मिल सकती है।

बाज़ारकी गाली किसकी ? जो फिरके देखे उसकी
स्पष्ट। किसीकी कही बातको अपने ऊपर कही न समझना चाहिए।

बाज़ारकी छींक ससुरालकी गाली—इनको न मानना चाहिए।

बाज़ारकी मिठाईसे निर्वाह नहीं होता—वेश्या-गमन करने वालोंपर क०।

बाजे तांत राग तब बूझे—दे० 'तात बाजी'

बाटे बाटे कुतिया मरी, नाथ कहे मेरी वाचाफरी
कुतिया तो दैवयोगसे रास्ते या नदीके किनारे मर गई, योगीने कहा मेरा वचन फला। जो लोग दैव-घटनाको कहते हैं कि हमारे कहनेसे हुई, उनपर क०

बाड़ लगाई खेतको, बाड़ खेतको खाय।
राजा हो चोरी करे, नियाव कौन चुकाय—
जो रक्षक हो वही भक्षक हो जाय, तब क०।

बाड़ही जब खेतको खाय तब रखवाली कौन करे
क० दे०।

बाड़ीमें बारह आम, हट्टीमें अठारह आम—
विपरीत बात पर क०।

बाढ़े पूत पिताके धर्मा खेती उपजे अपने कर्मा-
पिताके धर्मसे पुत्र समृद्धिशाली हो सकता है, पर खेती अपने ही उद्योगसे सफल होती है।

बातें कहिये जग भाती, रोटी खाइये मन भाती-
स्पष्ट।

बात कहनकी रीतिमें, है अन्तर अधिकाय—
एक वचन ते रिस बढ़े, एक वचनते जाय—
(वृन्द) स्पष्ट। दे० "बातों हाथी"

बात कही और पराई हुई—मुंहसे बात निकली और सबको मालूम हुई। गुप्तभेद प्रकाश न करना हो, तब क०।

बात कहेकी लाज—कही बातको निबाहनेके लिये (चाहे झूंठी क्यों न हो) तथा प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिये क०।

बातका बतंगड़ करना— थोड़ी बातको बहुत बढ़ा कर कहना।

बातकी करामात—बातोंसे बड़े २ काम हो सकते हैं।

बातकी बात, ख़ुराफ़ातकी ख़ुराफ़ात—बात सची भी है और हंसीकी भी। पूरी मसल यह है—'बातकी बात ख़ुराफ़ातकी ख़ुराफ़ात, बकरीके सींगों को घर गये बेरीके पात' अर्थात् जब बकरी बेरीके पत्तोंको चरनेके लिये उचकी तो उसके सींग गाछकी कांटेदार टहनियोंमें फंस कर टूट गये। शिक्षा-जो दूसरेकी हानि किया चाहता है उसीकी हानि होती है।

बात गई फिर हाथ न आती— }
बात गये कुछ हाथ नहीं है— } (१) मुंहसे निकली बात फिर हाथ नहीं आती
(२) इज़्ज़त एक दफ़े गये पीछे फिर जल्दी नहीं मिलती।

बात छीले रूखड़ो, और काठ छीले चीकना—
बात छीलना=बहस करना। बात छीलनेसे रूखी और काठ छीलनेसे चिकना होता है।

बात जो चाहे आपनी, तो पानी मांग न पी—
मांगनेसे बात वा इज़्ज़त जाती रहती है।

बातपर बात याद आती है—प्रसंग वश बात याद आ जाती है।

बात पूछे, बातकी जड़ पूछे—हुज्जती वा झूठा तक करनेवालेको क०।

बात बतासे, कागज नाते—(व्य०) बात करनेसे और हवा चलनेसे काग़ज़ नहीं लिखा जाता। मुनीम गुमाश्तोंका कहना है।

बातमें बात, पेच है-किसीकी बातके बीचमें बोलना बुरा है। द्वाभ्याम् तृतीयो न भवामि राजन किं कारणं भोज भवामि मूर्खः।

बात रह जाती है वक्त निकल जाता है—दे० 'वक्त निकल।'

बात लाखकी, करनी खाक़की-दे० 'करनी खाक़की'

बातुल भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन सम्हारे—(तुलसी) स्पष्ट।

बातें अगली करती हैं ख्वार—पुरानी बातें याद आनेसे मनुष्य दुखित होता है।

बातें आवें बातें जायँ, बातोंके बल रोटी खाय
बातें चूके लातें खायँ—जो केवल बात बनाकर ही

पेट पालता है, उसे क०।

बातें करें मैना कीसी, आंखें बदलें तोते कीसी बे-मुरौवत आदमीको क०।

बातों चिकना कामों खुआर—(पं०) बातें सफ़ाई-की करे और काम कुछ न करे तब क०।

बातों चीतों में बड़ी, करतूतों बड़ी जिठानी—(पं० ज०) बात चीतके लिये मैं और काम करनेके लिये जिठानी बड़ी है। निकम्मी देवरानीको तानेसे क०।

बातों बूढ़ा करतब ख्वार—बातें बुद्धिमानकी सी करे पर काम ख़राब करे, तब क०।

बातोंसे काम नहीं चलता—(व्य०) जब काम करनेके समय या रुपया देनेके समय कोई खाली बातोंसे टाले, तब क०।

बातों हाथी पाइयां बातों हाथी पांव—(पं०) बातोंहीसे हाथीकी सवारी या हाथी इनाममें मिलता है और बातों हीसे हाथीके पैर तले कुचला जाता है।

बाद अज़ मुर्दने सुहरा बनोश दारू—(फा०) मरनेपर दवा करना। बुरा काम हो चुकनेपर जब उपाय किया जाय, तब क०।

बाद सूद्र कह द्विजन सों, हम तुमतें कछु घाट। जानै ब्रह्म सो विप्र वर, आंख दिखावहिं डांट—(तुलसी) कलयुगके धर्म पर क०। शूद्र भी कहता है, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः।

बादल देखि पोतला फोड़ैं—स्पष्ट।

बादल फटे तो कहांतक थिगली—जब काम बहुत बिगड़ जाय और सुधरने लायक़ न हो, तब क०।

बादला मढ़ेसे नीम नहीं छिपता—उसकी कडुआई नहीं जाती। खोटा काम छिपानेसे नहीं छिपता।

बान जल गया पर बल न गये—रस्सी जल गई ऐंठन न गई। बरबाद हो गये पर ज़िद न छूटी।

बान पड़ी नहीं छूटती—जो आदत पड़ जाती है वह नहीं छूटती।

आदत जो पड़ी हो हमेशासे वह दूर भला ... है।
रक्खी है चिनौटी पाकटमें पतलूनके भी।

बानवालेकी बान न जाय, कुत्ता ...

ख़राब आदत कभी नहीं छूटती। उ० दे०।

बाप ओझा मां डाइन, बेटी बेटा सब ही डाइन-स्पष्ट।

बाप कंटक पूत हातिम—जिसके घरमें बाप कंजूस और बेटा ख़र्चीला होता है, उसे क०।

बाप करे बापके आगे आये, बेटा करे बेटेके आगे आये—जो जैसा करता है वही उसका फल पाता है।

बाप कहत सकुचत जुपै, चाचा किमि कहि जाय जो बापको बाप कहनेमें संकोच करता है, वह दूसरे-को चाचा किस तरह कहेगा।

बापका नाम उआपुआ बेटेके नाम जीते खाँ—(च०) स्पष्ट।

बापका नाम दमड़ी, बेटवाका नाम छकौड़िया, नातीका नाम पचकौड़िया, तीन पुरुषा बीती, छदाम न पूरा भया—(पू० ज० च०) अर्थ स्पष्ट। जहां सब मिलकर भी कोई काम न कर सकें वहां क०

बापका नाम सागपात, पूतका नाम परोर—(च०) स्पष्ट।

बापका बेटा बनकर सब कोई आता है, बापका बाप बनकर कोई नहीं आता—सब काम क़ायदेसे होना अच्छा है।

बापकी टांग तले आई, और मां कहलाई—जो सम्मानके योग्य नहीं है उसको व्यंगसे क०।

बापकी पोखर है तो क्या कीच खानी है—(१) अनुपयुक्त चीज़ चाहे किसीकी क्यों न हो, उसे काममें न लाना चाहिये। (२) यदि घरमें नहीं है तो दूसरी जगह क्यों नहीं प्रबन्ध किया जाय।

बापकी बरात बेटा जाय—(१) बे मेल बातपर क०। (... पिताका ... होता है, तब क०।

बाप...

...

प...

कहता है जो बापको थाटा न मिले जिससे मुझे ईंधन लानेको जाना पड़े।

बापको भौंग न भूलत बेटी—स्पष्ट।

बाप चुप चुप, पूत लप भप—(प०) स्पष्ट।

बाप जनम ना खाये पान, दांत निपोड़े गये पिरान, उड़ गई चुटिया रह गये कान—जब किसीने कोई करतूत न करी हो और वह लंबी चौड़ी बातें करता हो, तब क०।

बाप टेनी मां कुलंग, लड़के निकले रंग बिरंग—स्पष्ट। दोगलोंको क०।

बाप डोम और डोम ही दादा, कहे मियां में सरफ़ा ज़ादा—(प०) जब कोई अपनी शेखी बघारता है, तब क०।

बाप दिखा या गोर बता—
बाप दिखा या पिंडा पार— } या तो हमारी चीज़ लाओ, नहीं तो उसका पता बताओ। जब किसीकी कोई चीज़ खो जाती और वह दूसरेको उसका पता लगानेके लिये बाध्य करता है तब, क०।

बाप न दादे, मार खाँ ज़ादे—जब कोई छोटा आदमी अपनी झूंठी शेखी करता है, तब उसे व्यंगसे क०।

बाप न दादे, सात पुश्त हरामज़ादे—ऊ० दे०।

बाप न मारी पीड़री, बेटा तीरंदाज़—जो लम्बी चौड़ी हांकता है, उसे व्यंगसे क०।

बाप नरहटिया, पूत भगतिया—(प०) स्पष्ट।

बाप पंडित पूत छिनरा—(प०) स्पष्ट।

बाप पेटमें पूत ब्याहने चला—असंभव बातपर क०।

बाप बनियां पूत नवाब—(प०) स्पष्ट।

बाप बेटोंकी लड़ाई पना—बाप बेटेका झगड़ा थोड़े समय तक रहता है।

बाप भला न भैया, सबसे भला रुपैया—रुपया सभीसे नाता तोड़ डालता है।

बाप भिखारी, पूत भंडारी—अपने अपने नसीबका फल है।

बाप मरा घर बेटा भया, इसका टोटा उसमें गया—एक कामका घाटा जब दूसरे कामसे पूरा हो जाय, तब क०।

बाप मरा वह बेटा जाया, वाका घाटा यामें आया—ऊ० दे०।

बाप मरि हैं, तब पूत राज करि हैं—(पू०) स्पष्ट।

बाप मरे पर, बैल बटेंगे—दे० "दादा मरेंगे"

बाप मारेका बैर है—जानी दुश्मनीपर क०।

बापसे बेटा सवाया—बापसे बेटा बढ़कर निकले, तब क०।

बापसे बैर पूतसे सगाई—स्पष्ट।

बाप ही मारे और बाप ही बाप पुकारे—जिससे कष्ट मिले उसीको सहायताके लिये बुलाये, तब क०।

बापे पूत सिपाहे घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा—बेटेपर बापका और घोड़ेपर सवारका कुछ न कुछ असर पड़ता ही है। अक्सर लोग ऐसा भी कहते हैं "मांपर पूत पितापर घोड़ा" जो अशुद्ध है।

बाबरे गांवमें ऊंट आया, लोगोंने जाना परमेश्वर आया—मूर्खों को साधारण ही चीज़ अनोखी होती है।

बाबा आदमके वक़्तकी चीज़ (या बात)—बहुत पुरानी चीज़ या बातपर क०।

बाबा कमावे बेटा उड़ाये—स्पष्ट। दे० 'तेली जोड़े'

बाबाके राजे सतुआ महगल, सैयांके राजे सब सहतल—(अ० भो०) जब ग़रीब लड़कीकी शादी किसी धनी घरमें होती है, तब क०।

बाबाजीका ठेंगस बड़—(पू०) दीर्घशोचीको क०। ठेंगस=अंगूठा।

बाबाजीके बाबाजी, बजंत्रीके बजंत्री—जब एक चीज़से दो काम निकलते हों, तब क०।

बाबाजी चेले बहुत हो गये हैं, बच्चा भूखे मरेंगे तो आप चले जायंगे—जब किसीके यहां मुफ़्तख़ोर बहुत जमा हो जावें और उनका गुज़ारा न हो, तब क०।

बाबा मरे निहाल जन्मे वही तीनके तीन—दे० "बाप मरा घर बेटा भया"

बाबा सोवें इस घरमें, और टांग पसारें उस घरमें—दो काम एक साथ नहीं होते। जब काम एक जगह होता है और उसका सामान दूसरी जगह

तैय्यार किया जाता है, तब भी क०।

बामनका बेटा बावन वर्ष तक पोंगा—व्यंगसे ब्राह्मणोंपर क०। क्योंकि ये केवल दान या भिक्षा हीपर भरोसा रखते हैं और कोई काम काज नहीं करते

बामन कुत्ता बानियां, जात देख गुर्राय–यह तीनों अपनी ज़ातवालोंको नहीं देख सक्ते।

बामन कुत्ता हाथी, यह नहीं ज़ातके साथी—ऊ० दे०।

बामन जीमें ही पतियाय—(१) ब्राह्मण खाने हीसे विश्वास करता है। (२) ब्राह्मण जब खाले तभी उसपर विश्वास करना चाहिये, क्योंकि बहुतसे कामोंमें ये दक्षिणा ठहराये या मन मानता नेग लिये बिना पहिले भोजन नहीं करते।

नित प्रति परतिज्ञा करै, मिलै न पियसों भाखि।
लोग भक्ति सांची करो, ब्राह्मण जेंवें काखि। (लो०र०को०)

कलका विश्वास नहीं।

बामन जो चोरी करै, विधवा पान चबाय।
क्षत्री जो रणसे भगे, जन्म अकारथ जाय—स्पष्ट।

बामन नाचे, धोबी देखे—उल्टी बातपर क०।

बामन बचन परमान—ब्राह्मणकी बातको प्रामाणिक मानना चाहिये।

इसपर एक कहानी है। एक ब्राह्मण गंगा किनारे किसी जाटको श्राद्ध कराने लगे। चंदनके अभावमें जब उन्होंने उसके माथेमें मट्टीका तिलक लगाया तब जाटने कहा कि आपको चंदन लगाना चाहिए। ब्राह्मणने कहा "बामन बचन परमान, गंगाजीकी रेणुका, तू चंदन करकै जान।" जाट चुप रह गया। जब दक्षिणा देनेका समय आया और ब्राह्मणने उससे गोदानका संकल्प करनेको कहा तो उसने एक मेंढुकी हाथमें लेकर उनको देना चाहा, तब ब्राह्मण देवता बोले कि यह क्या? तुम्हें गौ या उसका उचित मूल्य देना चाहिये। जिसके उत्तरमें जाटने कहा "जाट बचन परमान, गंगाजीकी मेंडुकी, तू कपिला करकै जान"।

बामन बेटा लोटे पोटे, मूल ब्याज दोनों घो‍टे (ग्रा०) ब्राह्मण जब तक अपना [illegible] वसूल नहीं कर लेता तब [illegible]

बामन भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत—ख़ाली जनेऊ गलेमें डाल लेनेसे ब्राह्मण नहीं होता उसको अपना कर्म जानना चाहिए।

बामन मंत्री भाट ख़वास, उस राजाका होवे नास स्पष्ट।

बायस करि चह खगपति समता। सिंधु समान होय किमि सरिता—(तुलसी) कौआ गरुड़की और नदी समुद्रकी बराबरी नहीं कर सकती।

बायस पालिय अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुं कि कागा—(तुलसी) कौएको कैसे ही प्यारसे पालो पर वह मांस खाना नहीं छोड़ता।

बार बराबर बार है, तापर चलत बयार। रघुबर पार उतारिये, अपनी ओर निहार—जब कोई धर्म संकटमें पड़ता है, तब क०।

बार बार चोरकी, एकबार, साहकी—कभी न कभी चालाकी खुल ही जाती है।

बारसी बारीकी, और मूसरसे भरे—दे० "जहां सुई न जाय"

बारह गांवका चौधरी, अस्सी गांवका राव। अपने काम न आय तो, ऐसो तैसी में जाव—चाहे कैसाही बड़ा क्यों न हो जो अपने काममें न आवे तो किसी कामका नहीं।

बारह वफ़ातकी खिचड़ी, आज है तो कल नहीं–(मु०) जो बहुतायत थोड़ी देरके लिये रहती है। बारह वफात ता: १२ सफ़रको होती है, जो मुहम्मदके मरनेका दिन है। सभी मुसलमानोंके यहां उनकी यादगारमें खिचड़ी बांटी जाती है। और इसीको फ़ातिहा दुवाज़दहम् कहते हैं।

बारह बरसका कोढ़ी, एक ही इतवार पाक—असंभव या आश्चर्य बातपर क०।

बारह बरस काठमें रहे, चलती दफ़ा पांवसे गये छूटनेके वक्त ख़ुशीके मारे अधीर होनेके कारण गिर पड़े। दुर्भाग्यपर क०।

बारह बरसकी कन्या, और छठी रातका वर, माने सोकर—बाल विवाह पर क०।

[illegible] बरसकी पठिया, बीस बरसकी टठिया—[illegible] बुढ़ापा जल्दी आ जाता है

इसलिये क०।

बारह बरसके को वेद क्या, और अट्ठारह बरसके को कैद क्या ?—स्पष्ट।

भई तरुनि तन मनमें जोय, मिलन मान मैं जो गति होय।
लोग चलिको याद न भेद, बारह बरसको का है वेद।

अर्थात् बारह वर्षकी अवस्था जिसकी है उसके लिये वेद की आवश्यकता नहीं उसको सब बात लड़कपनमें आयगी।

बारह बरस दिल्लीमें रहे भाड़ ही झोंका—जब कोई अच्छे स्थानमें रहकर भी अपनी उन्नति न कर सके, तब क०।

बारह बरस पीछे घूरेके भी दिन फिरते हैं—बारह बरस पर सभीके दिन फिरते हैं। कभी न कभी अवश्य अच्छे दिन आवेंगे।

बारह बरस सेई काशी, मरनेको मगहकी माटी सत्कर्म करनेपर भी जिसका अंत खराब हो उसे क०।

बारह बाट अठारह पैंडे—जब कोई बहुतसे काम सामने देखकर घबड़ा जाय कि कौनसा काम करूं, तब क०।

बारहमें तीन गये तो रही खाक—तीन महीने बरसातके सूखे ही बीत जांय अर्थात् अन्न न पैदा हो, तब क०।

बारह हाथकी काकड़ी तेरह हाथका बीज—असंभव बातपर क०।

बारू जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप। मीठी ऐसी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप—स्पष्ट।

बारेकी मां और बूढ़ेकी जोरू न मरे—बालककी मा और बूढ़ेकी जोरूका मरना बहुत दुखदाई होता है।

बारे पूत हरीरी खेती, है है कब धौं कितने देखी क्योंकि इनसे सुख मिलेगा या नहीं, इसका कुछ निश्चय नहीं रहता।

बाल उखाड़नेसे मुर्दा हलका नहीं होता—अश्लीलताके लिये पाठ भेद किया गया है। जब किसी बड़े काममें कोई नाममात्रको सहारा दे जिससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध न हो, तब क०।

बालक जाने हीया, मानस जाने कीया—बालक प्यारसे और सयाना कामसे राज़ी रहता है।

बालका कंबल करना—तिलका ताल करना। थोड़ी बातको बहुत बढ़ाकर कहना।

बालकी खाल निकालना—व्यर्थकी नुक्ताचीनी करना।

बालकी खाल हिन्दीकी चिन्दी—तीव्र बुद्धिवालेपर क०।

बालके हाथमें सींग ससाको—झूठी या असंभव बातके लिये क०। खरगोशके सींग नहीं होते।

यह मिथ्यावादी सुकुमारि। याके वचन न चितमें धारि॥
कहै पखानो क्यों बुधिवान। सुने ससाके सींग न कान॥

खरहाके सींग यह कानसे कभी नहीं सुना॥

बाल जंजाल पलै तो पाल नहीं मूछोंको टाल—आलसीको क०।

बाल जंजाल बाल सिंगार—एक ही चीज़ कभी अच्छी लगती है कभी भारी पड़ जाती है।

बाल बाल गुनहगार—(मु० ज०) जो बहुत नम्रतासे अपना पूरा दोष स्वीकार करता है उसपर क०।

बाल बांधा चोर—चालाक चोरको क०।

बाल बांधा गुलाम—जो कभी छूट नहीं सकता।

बाल बांधी कौड़ी मारता है—अच्छा निशाना लगानेवालेको क०।

बाल हठ तिरिया हठ राज हठ—ये तीनों जल्दी नहीं छूटते।

बालूकी भीत, ओछेका संग, पतुरियाकी प्रीति, तितलीका रङ्ग—स्थायी नहीं होते।

बालों नाल छिनाला, और कागों हाथ संदेसा—(पं०) जिस कामसे अर्थ सिद्ध न हो उसपर क०।

बाल मराल कि मंदर लेहीं—(तुल०) सुकुमार लड़का अधिक बोझ नहीं उठा सकता। जब किसी सुकुमार आदमीको कठिन काम दिया जाय और वह उससे न हो सके, तब क०।

बावन करकी लंएका बढ़े चढ़े असमान—(वृन्द) जैसा मालिक हो वैसा ही नौकर हो तब क०। जैसे बावनजीके हाथकी लकड़ी भी उनके शरीर बढ़नेपर उसी अनुसार बढ़ गई थी।

बावन तोले पाव रत्ती—(व्यं०) बिलकुल ठीकको क०।

हैव्यार किया जाता है, तब भी क०।

बामनका बेटा बावन वर्ष तक पोंगा—व्यंगसे ब्राह्मणोंपर क०। क्योंकि वे केवल दान या भिक्षा हीपर भरोसा रखते हैं और कोई काम काज नहीं करते

बामन कुत्ता बानियां, जात देख गुर्राय—यह तीनों अपनी जातवालोंको नहीं देख सकते।

बामन कुत्ता हाथी, यह नहीं ज़ातके साथी—ऊ० दे०।

बामन जीमें ही पतियाय—(१) ब्राह्मण खाने हीसे विश्वास करता है। (२) ब्राह्मण जब खाले तभी उसपर विश्वास करना चाहिये, क्योंकि बहुतसे कामोंमें वे दक्षिणा ठहराये या मन मानता नेग लिये बिना पहिले भोजन नहीं करते।

मित प्रति परतिज्ञा करै, मिलै न पियसों आलि।
लोग चलि साची करी, ब्राह्मण जेमें कालि। (लो०र०को०)

कलका विश्वास नहीं।

बामन जो चोरी करे, विधवा पान चबाय।
क्षत्री जो रणसे भगे, जन्म अकारथ जाय—स्पष्ट।

बामन नाचे, धोबी देखे—उलटी बातपर क०।

बामन बचन परमान—ब्राह्मणकी बातको प्रामाणिक मानना चाहिये।

इसपर एक कहानी है। एक ब्राह्मण गंगा किनारे किसी जाटको श्राद्ध कराने लगे। चंदनके अभावमें जब उन्होंने उसके माथेमें मट्टीका तिलक लगाया तब जाटने कहा कि आपको चंदन लगाना चाहिए। ब्राह्मणने कहा "बामन बचन परमान, गंगाजीकी रेणुका, तू चंदन करके जान।" जाट चुप रह गया। जब दक्षिणा देनेका समय आया और ब्राह्मणने उससे गोदानका संकल्प करनेको कहा तो उसने एक मेंढुकी हाथमें लेकर उनको देना चाहा, तब ब्राह्मण देवता बोले कि यह क्या? तुम्हें गौ या उसका उचित मूल्य देना चाहिये। जिसके उत्तरमें जाटने कहा "जाट बचन परमान, गंगाजीकी मेंढुकी, तू कपिला करके जान"।

बामन बेटा लोटे पोटे, मूल ब्याज़ दोनों घोटे—(ग्रा०) ब्राह्मण जब तक अपना पावना मय ब्याजके वसूल नहीं कर लेता तब तक नहीं छोड़ता।

बामन भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत—ख़ाली जनेऊ गलेमें डाल लेनेसे ब्राह्मण नहीं होता उसको अपना कर्म जानना चाहिए।

बामन मंत्री भाट खवास, उस राजाका होवे नास स्पष्ट।

बायस करि चह खगपति समता। सिंधु समान होय किमि सरिता—(तुलसी) कौआ गरुड़की और नदी समुद्रकी बराबरी नहीं कर सकती।

बायस पालिय अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा—(तुलसी) कौएको कैसे ही प्यारसे पालो पर वह मांस खाना नहीं छोड़ता।

बार बराबर बार है, तापर चलत बयार।
रघुबर पार उतारिये, अपनी ओर निहार—जब कोई धर्म सकटमें पड़ता है, तब क०।

बार बार चोरकी, एकबार, साहकी—कभी न कभी चालाकी खुल ही जाती है।

बारसी बारीकी, और मूलरसे मरे—दे० "जहां सुई न जाय"

बारह गांवका चौधरी, अस्सी गांवका राव।
अपने काम न आय तो, पैसो तैसी में जाव—चाहे कैसाही बड़ा क्यों न हो जो अपने काममें न आवे तो किसी कामका नहीं।

बारह बफ़ातकी खिचड़ी, आज है तो कल नहीं—(मु०) जो बहुतायत थोड़ी देरके लिये रहती है। बारह वफ़ात ता: १२ सफ़रको होती है, जो मुहम्मदके मरनेका दिन है। सभी मुसलमानोंके यहां उनकी यादगारमें खिचड़ी बांटी जाती है। और इसीको फ़ातिहा दुआज़दहम् कहते हैं।

बारह बरसका कोढ़ी, एक ही इतवार पाक—असंभव या आश्चर्य बातपर क०।

बारह बरस काठमें रहे, चलती दफ़ा पांवसे गये छूटनेके वक्त ख़ुशीके मारे अधीर होनेके कारण गिर पड़े। दुर्भाग्यपर क०।

बारह बरसकी कन्या, और छठी रातका वर, मन माने सोकर—बाल विवाह पर क०।

बारह बरसकी पठिया, बीस बरसकी टटिया—इस देशमें स्त्रियोंको बुढ़ापा जल्दी आ जाता है

इसलिये क० ।

बारह बरसके को वेद क्या, और अट्ठारह बरसके को कैद क्या ?—स्पष्ट।

भई तरुनि तन मनमें जोय, मिलन मान मैं जो गति होय।
लोग उक्तिकी पाइ न भेद, बारह बरसको का है वेद।
अर्थात् बारह वर्षकी अवस्था जिसकी है उसके लिये वेद की आवश्यकता नहीं उसको सब बात लड़कपनमें आयगी।

बारह बरस दिल्लीमें रहे भाड़ ही झोंका—जब कोई अच्छे स्थानमें रहकर भी अपनी उन्नति न कर सके, तब क० ।

बारह बरस पीछे घूरेके भी दिन फिरते हैं—बारह बरस पर सभीके दिन फिरते हैं। कभी न कभी अवश्य अच्छे दिन आवेंगे ।

बारह बरस सेई काशी, मरनेको मगहकी माटी सत्कर्म करनेपर भी जिसका अंत खराब हो उसे क० ।

बारह बाट अठारह पैंडे—जब कोई बहुतसे काम सामने देखकर घबड़ा जाय कि कौनसा काम करूं, तब क० ।

बारहमें तीन गये तो रही खाक—तीन महीने बरसातके सूखे ही बीत जांय अर्थात् अन्न न पैदा हो, तब क० ।

बारह हाथकी काकड़ी तेरह हाथका बीज—असंभव बातपर क० ।

बारू जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप। मीठी देखी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप—स्पष्ट।

बारेकी मां और बूढ़ेकी जोरू न मरे—बालककी मा और बूढ़ेकी जोरूका मरना बहुत दुखदाई होता है ।

बारे पूत हरीरी खेती, है है कब धौं किनने देखी क्योंकि इनसे सुख मिलेगा या नहीं, इसका कुछ निश्चय नहीं रहता।

बाल उखाड़नेसे मुर्दा हलका नहीं होता—अश्लीलताके लिये पाठ भेद किया गया है। जब किसी बड़े काममें कोई नाममात्रको सहारा दे जिससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध न हो, तब क० ।

बालक जाने हीया, मानस जाने कीया—बालक प्यारसे और सयाना कामसे राज़ी रहता है ।

बालका कंबल करना—तिलका ताल करना। थोड़ी बातको बहुत बढ़ाकर कहना ।

बालकी खाल निकालना—व्यर्थकी नुक़ताचीनी करना ।

बालकी खाल हिन्दीकी चिन्दी—तीव्र बुद्धिवाले पर क० ।

बालके हाथमें सींग ससाको—झूठी वा असंभव बातके लिये क० । खरगोशके सींग नहीं होते ।

यह मिथ्यावादी सुकुमारि। याकी बचन न चितमें धारि॥
कहे पखानो ज्यों बुधिवान। सुने ससाके सींग न कान॥
खरहाके सींग यह कानसे कभी नहीं सुना ॥

बाल जंजाल पलै तो पाल नहीं मूछोंको टाल—आलसीको क० ।

बाल जंजाल बाल सिंगार—एक ही चीज़ कभी अच्छी लगती है कभी भारी पड़ जाती है ।

बाल बाल गुनहगार—(मु० ज०) जो बहुत नम्रतासे अपना पूरा दोष स्वीकार करता है उसपर क० ।

बाल बांधा चोर—चालाक चोरको क० ।

बाल बांधा गुलाम—जो कभी छूट नहीं सकता ।

बाल बांधी कौड़ी मारता है—अच्छा निशाना लगानेवालेको क० ।

बाल हठ तिरिया हठ राज हठ—ये तीनों जल्दी नहीं छूटते ।

बालूकी भीत, ओछेका संग, पतुरियाकी प्रीति, तितलीका रङ्ग—स्थायी नहीं होते ।

बालों नाल छिनाला, और कागों हाथ संदेसा—(पं०) जिस कामसे अर्थ सिद्ध न हो उसपर क० ।

बाल मराल कि मंदर लेहीं—(तुल०) सुकुमार लड़का अधिक बोझ नहीं उठा सकता। जब किसी सुकुमार आदमीको कठिन काम दिया जाय और वह उससे न हो सके, तब क० ।

बावन करकी लाठिका बढ़े चढ़े असमान-(वृन्द) जैसा मालिक हो वैसा ही नौकर हो तब क०। जैसे बावनजीके हाथकी लकड़ी भी उनके शरीर बढ़नेपर उसी अनुसार बढ़ गई थी ।

बावन तोले पाव रत्ती-(व्य०) बिलकुल ठीकको क०।

तैय्यार किया जाता है, तब भी क०।

बामनका बेटा बावन वर्ष तक पोंगा—व्यंगसे ब्राह्मणोंपर क०। क्योंकि वे केवल दान या भिक्षा हीपर भरोसा रखते हैं और कोई काम काज नहीं करते

बामन कुत्ता बानियां, ज़ात देख गुर्राय—यह तीनों अपनी ज़ातवालोंको नहीं देख सक्ते।

बामन कुत्ता हाथी, यह नहीं ज़ातके साथी—ऊ० दे०।

बामन जीमें ही पतियाय—(१) ब्राह्मण खाने हीसे विश्वास करता है। (२) ब्राह्मण जब खाले तभी उसपर विश्वास करना चाहिये, क्योंकि बहुतसे कामोंमें वे दक्षिणा ठहराये या मन मानता नेग लिये बिना पहिले भोजन नहीं करते।

नित प्रति परतिज्ञा करै, मिलै न पियकों चालि।
जोग जक्ति सांची करी, ब्राह्मण जिमैं कालि। (लो०र०को०)

कलका विश्वास नहीं।

बामन जो चोरी करे, विधवा पान चबाय।
क्षत्री जो रणसे भगे, जन्म अकारथ जाय—स्पष्ट।

बामन नाचे, धोबी देखे—उलटी बातपर क०।

बामन बचन परमान—ब्राह्मणकी बातको प्रामाणिक मानना चाहिये।

इसपर एक कहानी है। एक ब्राह्मण गया किनारे किसी जाटको श्राद्ध कराने लगे। चंदनके अभावमें जब उन्होंने उसके माथेमें मट्टीका तिलक लगाया तब जाटने कहा कि आपको चंदन लगाना चाहिए। ब्राह्मणने कहा "बामन बचन परमान, गंगाजीकी रेणुका, तू चंदन करके जान।" जाट चुप रह गया। जब दक्षिणा देनेका समय आया और ब्राह्मणने उससे गोदानका संकल्प करनेको कहा तो उसने एक मेंडुकी हाथमें लेकर उनको देना चाहा, तब ब्राह्मण देवता बोले कि यह क्या? तुम्हें गौ या उसका उचित मूल्य देना चाहिये। जिसके उत्तरमें जाटने कहा "जाट बचन परमान, गंगाजीकी मेंडुकी, तू कपिला करके जान"।

बामन बेटा छोटे पोटे, मूल ब्याज दोनों घोटे—(ग्रा०) ब्राह्मण जब तक अपना पावना मय ब्याजके वसूल नहीं कर लेता तब तक नहीं छोड़ता।

बामन भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत—ख़ाली जनेऊ गलेमें डाल लेनेसे ब्राह्मण नहीं होता उसको अपना कर्म जानना चाहिए।

बामन मंत्री भाट ख़वास, उस राजाका होवे नास—स्पष्ट।

बायस करि चह खगपति समता। सिंधु समान होय किमि सरिता—(तुलसी) कौआ गरुड़की और नदी समुद्रकी बराबरी नहीं कर सक्ती।

बायस पालिय अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुं कि कागा—(तुलसी) कौएको कैसेही प्यारसे पालो पर वह मांस खाना नहीं छोड़ता।

बार बराबर बार है, तापर चलत बयार। रघुबर पार उतारिये, अपनी ओर निहार—जब कोई धर्म संकटमें पड़ता है, तब क०।

बार बार चोरकी, एकबार, साहकी—कभी न कभी चालाकी खुल ही जाती है।

बारसी बारीकी, और मूसरसे भर्रे—दे० "जहां सुई न जाय"

बारह गांवका चौधरी, अस्सी गांवका राव। अपने काम न आय तो, ऐसो तैसी में जाव—चाहे कैसाही बड़ा क्यों न हो जो अपने काममें न आवे तो किसी कामका नहीं।

बारह वफ़ातकी खिचड़ी, आज है तो कल नहीं—(मु०) जो बहुतायत थोड़ी देरके लिये रहती है। बारह वफ़ात ता: १२ सफ़रको होती है, जो मुहम्मदके मरनेका दिन है। सभी मुसलमानोंके यहां उनकी यादगारमें खिचड़ी बांटी जाती है। और इसीको फ़ातिहा दुआज़दहम् कहते हैं।

बारह बरसका कोढ़ी, एक ही इतवार पाक—असंभव या आश्चर्य बातपर क०।

बारह बरस काठमें रहे, चलती दफ़ा पांवसे गये—छूटनेके वक्त ख़ुशीके मारे अधीर होनेके कारण गिर पड़े। दुर्भाग्यपर क०।

बारह बरसकी कन्या, और छठी रातका बर, मन माने सोकर—बाल विवाह पर क०।

बारह बरसकी पठिया, बीस बरसकी टठिया—इस देशमें स्त्रियोंको बुढ़ापा जल्दी आ जाता है

बिजली कांसे हीपर गिरती है—दुःख भी बड़ों ही पर पड़ता है।

(१) रथथलमें लखि सुन्दा बाम,
गह्यो दौरि पिय कर नियो काम।
कहे पखानो कविरस भने,
कांसे ही पर बिजुली परे। (लो० र० को०)

(२) बहुत द्रव्य संचे जहां, चोर राज भय होय।
कांसे ऊपर बीजुरी, परति कहैं सब कोय॥ (वृन्द)

बिजली चमके मेहा बरसे—जब बिजली चमकती है तब पानी बरसता है।

बिटोरेमेंसे उपले ही निकलेंगे—बटियेके तोड़नेसे कंडे ही निकलते हैं।

बिदाके समय सब कंठ लगावैं—लड़की बिदा होती है तो सब गले लगते हैं।

बिद्या धन उद्यम बिना, कहो जुपावे कौन। बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखाकी पौन—(वृन्द) परिश्रम किये बिना कोई काम पूरा नहीं होता।

बिद्यामें बिवाद बसे—स्पष्ट।

बिद्या लोहेके चने हैं—पढ़ना बहुत कठिन है।

बिद्या हि परमं धनम्—(सं०) स्पष्ट।

बिद्या धन सब धननते, सब कहत सरदार।
बड़ी गोल नहिं घटत पर, दिन दिन होत सदार।

बिधिका लिखा को मेटनहारा?—होनहार कभी नहीं मिटती।

बिधि प्रपंच गुण अवगुण साना—दुनियांमें भलाई बुराई दोनों मिली हैं।

बिन अवसर भय तेरह जोई, जानेहु अधम नारि जग सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

बिन आई कोई नहीं मरता—बिना मौत कोई नहीं मरता। जब कोई ईश्वरीय घटनासे बच जाय, बहुत क्लेश पाकर आत्मघात किया चाहे और न मरे. ऐसी यंत्रणा भोगे जिससे मर जाना ही अच्छा जान पड़े अथवा जिसे कोई शत्रुता वश मार डाला चाहे और वह न मरे, तब क०।

गो रफ़्ल अपना काम करता है।
वेर भी मौतहीसे मरता है। (अकबर).

बिन कुटनी छिनाला नहीं—बिना दलालके रोज़गार में वृद्धि नहीं होती।

बिन गुरु होहिं कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ बिराग बिनु। गावहिं वेद पुराण, सुख कि लहिय हरि भक्ति बिनु—(तुलसी) स्पष्ट।

बिन घरनी घर पादत है—दे० 'घर घरवालीसे।'

बिन घरनी घर भूतका डेरा—जिस घरमें औरत नहीं है उस घरमें भूतोंका वास होता है।

बिन चूची बारह वर्षतक लड़केको रखता है—जो झूठी प्रतिज्ञा करता है, उसपर क०।

बिन जाने कौन माने?—स्पष्ट।

बिन जुलाहे ईद—(मु०) नहीं होती। क्योंकि वह नमाज़ पढ़नेके लिये दरी बनाता है।

बिन जुलाहे नमाज़ नहीं, बिन ढोलक तज़ीर नहीं—(मु०) तज़ीर=सजा। बिना जुलाहेके नमाज़ नहीं होती क्योंकि वही दरी बनाता है और बिना मुनादीके बड़ी सज़ा नहीं दी जाती।

बिन ताये खोटो खरो, गहनो लहै न कोय—बिना जांचे किसीका साथी न बनना चाहिये।

बिन पंखन ही चहत उड़ना—असंभव बात पर क०।

बिन पति, बहु पति, बाल पति, पतनी पति जहँ होय। नरपुरकी कहुको कहै, सुरपुर बसे न कोय—जिस जगह कोई मालिक न हो, जहां बहुतसे मालिक हों, जहां लड़का मालिक हो, अथवा स्त्री मालिक हो उस जगहका इन्तज़ाम ठीक नहीं होता. जिस रियासतमें उपरोक्त चार बातोंमेंसे एक भी हो, वहां क०।

बिन परचय परतीत नहीं—स्पष्ट।

बिन पैसे साहूकार—स्पष्ट।

कों धनंगते धंग अरावे, प्यारि नाम कहि नाम धरावे।
लोग छतिसी सोख बतावें, बिन दामनको साह कहावे॥

बिन पैसा कौड़ीके तेली साहू, टूटी हांडी कांदू साहू—तेल ही तेलीकी पूंजी है और हांडीका टुकड़ा ही भड़भूजेकी पूंजी है।

बिन बहू प्रीत नहीं—श्वशुर अपने जमाईको तभीतक प्यार करता है जबतक उसकी लड़की जीती रहती है।

बाव न बतास, तेरा आंचल क्यों कर डोला, पूत न भतार, तेरा ढेंढ़ा क्योंकर फूला—(ज०) जो बिना कारण इतरावे उसपर क०।

बावल भेजी बनजको, गई डगरिया भूल, ठगवा मगमें मिल गये, लाभ रह्यो ना मूल—मूर्खपर क०।

बावलीको आग बताई, उसने ले घरमें लगाई—स्पष्ट।

बावली खाटके बावले पाये, बावली रांडके बावले जाये—जैसोंके तैसे ही होते हैं।

बावले कुत्तेने काटा है—जो मूर्खपनकी बातें करे उसे क०।

बासनसे बासन खड़कता ही है—जहां चार आदमी रहते हैं वहां झगड़ा होता ही है।

बासी कढ़ीको उबाल आया—(१) अकस्मात् क्रोध आ जानेपर क०। (२) गई बातका ज़िक्र करनेपर क०।

बासी फूलोंमें बास नहीं, परदेशी बालम तेरी आश नहीं—स्पष्ट।

बासी बचे न कुत्ता खाय—(१) जब कामका थोड़ा ही हिस्सा रह जाता हो तब उसे पूरा करनेके लिये क०। (२) कंगाल आदमीपर भी, जिसके खानेके बाद रोटीका टुकड़ा भी नहीं बचता, क०।

बासी भातमें खुदाका क्या निहोरा (वा नाता)—जो चीज़ आपसे आप मिल जाती है उसके लिये दूसरेकी खुशामद क्यों करें। दे० "जो कबीर काशीमें"

बाहरके खांय, घरके गीत गांय
बाहरके तो माल मारें, घरके गावें गीत } जब कोई बाहरमें तो फ़जूल खर्च करे और घरमें तंगी करे, तब क०।

बाहर टेढ़ो फिरत है बांबी सूधो सांप—दे० 'सांप अपने बिलमें'

बाहर त्याग, भीतर सुहाग—बगला भगतको क०

बाहर मियां अलल्ले तलल्ले घरमें चूहे पके
बाहर मियां छैल चिकनियां, घरमें लिवड़ी जोय
बाहर मियां झंग झंगालें, घरमें नंगी जोय } जिसका बाहरमें बहुत आडम्बर हो और घरमें कुछ न हो, उसे क०।

बाहर मियां पंज हजारी, घरमें बीबी करमों मारी
बाहर मियां सूबेदार, घरमें बीबी झोंके भाड़
बाहर लंबी लंबी धोती, भीतर मड़वेकी रोटी } उ० दे०।

बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर—जो काम हो जाय उसीमें लाभ है और जो न हो वह बेकार है।

बिगड़ी तह फिर नहीं बैठती—(व्य०) बिगड़ा काम नहीं सुधरता।

बिगड़ी लड़ाई, बख़्तर पोशोंके सिर—लड़ाईकी हारसे अफ़सरकी बदनामी होती है।

बिगाड़ संवार ईश्वरके हाथ—बनना बिगड़ना ईश्वराधीन है।

बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं, मिलत एक दारुण दुख देहीं—(तुल०) दुष्टके मिलनेसे और सज्जनके बिछुड़नेसे कष्ट होता है।

बिच्छूका काटा रोवे, सांपका काटा सोवे—मीठी मार बुरी होती है।

बिच्छूका मंत्र न जाने, सांपके पिटारेमें हाथ दे—जो अपनी योग्यतासे बाहर काम करता है, उस पर क०।

> जानति पति न रिझाइबो, गहति सु उपपति गाथ।
> जान न बीछी मंत्रको, डोजति अहि बिल हाथ।
> (लो० र० को०)
>
> रस अनरस समझे न कछु, पढ़े प्रेमकी गाथ।
> बीछू मंत्र न जानई, सांप पिटारे हाथ। (वृन्द)

बिछौनेसे लग गया—मरने परहै, अब न उठेगा। बहुत बीमारको क०।

बिजया लेबो सहज है मौज़े कठिन निदान—दे० 'भंग पीना आसान है'

बिजया पीवे सेज्या सोवे, ताके बैद पिछाड़ी रोवे भंगड़ोंका कहना है।

बिजलिक मारल, लुआठ देख भागे—(पू०) बिजलीका मारा लुआंठी देख कर भागता है। दे० "दाझ्यो दूध"

बिजली कांसे हीपर गिरती है—दुःख भी बड़ों ही पर पड़ता है।

(१) रथपलमें लखि सुभग धाम,
गझी दौरि पिय कर लियो काम।
कहै परवानो बाविरत भरे,
कांसे ही पर बिजुली परै। (लो०-र० की०)

(२) बहुत द्रव्य संचै जहां, चोर राज भय होय।
कांसे ऊपर बीजुरी, परति कहैं सब कोय॥ (वृन्द)

बिजली चमके मेहा बरसे—जब बिजली चमकती है तब पानी बरसता है।

बिटौरेमेंसे उपले ही निकलेंगे—बटियेके तोड़नेसे कंडे ही निकलते हैं।

बिदाके समय सब कंठ लगावें—लड़की बिदा होती है तो सब गले लगाते हैं।

बिद्या धन उद्यम बिना, कहो जुपावै कौन। बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखाकी पौन—(वृन्द) परिश्रम किये बिना कोई काम पूरा नहीं होता।

बिद्यामें बिवाद बसे—स्पष्ट।

बिद्या लोहेके चने हैं—पढ़ना बहुत कठिन है।

बिद्या हि परमं धनम्—(सं०) स्पष्ट।

बिद्या धन सब धननते, सब चाहत सरदार।
वको मोल नहिं घटत पर, दिन दिन होत उदार।

बिधिका लिखा को मेटनहारा?—होनहार कभी नहीं मिटती।

बिधि प्रपंच गुण अवगुण साना—दुनियांमें भलाई बुराई दोनों मिली हैं।

बिन अवसर भय तेरह जोई, जानेहु अधम नारि जग सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

बिन आई कोई नहीं मरता—बिना मौत कोई नहीं मरता। जब कोई ईश्वरीय घटनासे बच जाय, बहुत क्लेश पाकर आत्मघात किया चाहे और न मरे. ऐसी यंत्रणा भोगे जिससे मर जाना ही अच्छा जान पड़े अथवा जिसे कोई शत्रुता वश मार डाला चाहे और वह न मरे, तब क०।

गो रफूल अपना काम करता है।
और भी मौतहीसे मरता है। (अकबर)

बिन कुटनी छिनाला नहीं—बिना दलालके रोज़गारमें वृद्धि नहीं होती।

बिन गुरु होहिं कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु। गावहिं वेद पुराण, सुख कि लहिय हरि भक्ति बिनु—(तुलसी) स्पष्ट।

बिन घरनी घर पादत है—दे० 'घर घरवालीसे।'

बिन घरनी घर भूतका डेरा—जिस घरमें औरत नहीं है उस घरमें भूतोंका वास होता है।

बिन चूची बारह वर्षतक लड़केको रखता है—जो झूठी प्रतिज्ञा करता है, उसपर क०।

बिन जाने कौन माने?—स्पष्ट।

बिन जुलाहे ईद—(मु०) नहीं होती। क्योंकि वह नमाज़ पढ़नेके लिये दरी बनाता है।

बिन जुलाहे नमाज़ नहीं, बिन ढोलक तज़ीर नहीं—(मु०) तज़ीर=सजा। बिना जुलाहेके नमाज़ नहीं होती क्योंकि वही दरी बनाता है और बिना मुनादीके बड़ी सज़ा नहीं दी जाती।

बिन तायें खोटो खरो, गहनो लहै न कोय—बिना जांचे किसीका साथी न बनना चाहिये।

बिन पंखन ही बहुत उड़ना—असंभव बात पर क०।

बिन पति, बहु पति, बाल पति, पतनी पति जहँ होय। नरपुरको कहुको कहै, सुरपुर बसे न कोय—जिस जगह कोई मालिक न हो, जहां बहुतसे मालिक हों, जहां लड़का मालिक हो, अथवा स्त्री मालिक हो उस जगहका इन्तज़ाम ठीक नहीं होता-जिस रियासतमें उपरोक्त चार बातोंमेंसे एक भी हो, वहां क०।

बिन परचय परतीत नहीं—स्पष्ट।

बिन पैसे साहूकार—स्पष्ट।

कौं धनंगति धंम नरावे, प्यारि नाग कहि नाम धरावे।
लोग लखिमें सोख बढ़ावें, बिन दामनको साह कहावें॥

बिन पैसा कौड़ीके तेली साहू, टूटी हांड़ी कांदू साहू—तेल ही तेलीकी पूंजी है और हांडीका टुकड़ा ही भड़भूजेकी पूंजी है।

बिन बहू प्रीत नहीं—स्वसुर अपने दमादको तभी तक प्यार करता है जबतक उसकी लड़की जीती रहती है।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार—स्पष्ट।
बिन बुलाई अहमक, ले दौड़ी सहनक—(मु० ज०)
(१) जो बिन बुलाये न्योतेमें आता है, उसे क० ।
(२) जो बिना कहे सुने दूसरेके काममें हाथ लगाता है, उसे भी क० ।
बिन बुलाई डोमनी लड़केवाले समेत आये—(ज०) स्पष्ट ।
बिन बोले गुण जानन जाय—आदमी अच्छा वा बुरा तब तक नहीं परखा जाता जबतक वह कुछ न बोले ।
बात इन्सां जब तलक करता नहीं।
भेद-औ-बद उसका कभी खुलता नहीं ॥
बिन भय होय न प्रीत—बिना भयके प्रीति नहीं होती।
उठि चलि चलि तजि मद मनुहारि,
बिन वियोग समुझे नहिं नारि ।
सही कहावत गाया गीत,
होय न हियमें भय बिनु प्रीत ।
बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख—मिलनेवाला होता है तो आप ही मिलता है, मांगनेसे भीख भी नहीं मिलती ।
(१) मांगती फिरती थी दुनिया जब तलब करते थे हम।
अब जो नफ़रत हमने की, तो बेक़रार आनेको है॥
(२) एक बिन मांगे ही लहै, मांगे एक लहै न ।
घन जल सर सरिता भरे, चातक चोंच भरै न ॥ (हन्द)
बिन मारेकी तोबा करना—मारनेसे पहले ही रोना । दुख पड़नेसे पहले ही उसका सोच करे, तब क० ।
बिन रुके बैदकी घोड़ी ना चले—बैदकी घोड़ी उस स्थानमें अवश्य रुक जाती है, जहां वह खड़ी की जाती है अर्थात् रोगीके घरके ...
बिन रोये तो मां भी दूध नहीं ...
मांगे अपनी ... ोई भी ...
बिन सतसंग ... होई, ...
सुलभ न ... ।
बिना ...
मजनू को कहे ... भाग ।

बिना द्रव्य ये भ्रष्ट हैं पण्डित कवि अरु बैद—
(१) बिना पैसेके ये तीनों काम नहीं करते । (२) ... तक ये तीनों अपनी अपनी विद्यामें निपुण न ... तबतक किसी कामके नहीं ।
बिना कड़ुवी दवाई खाये रोग आराम नहीं ह...
(१) बिना कष्ट उठाये सुख नहीं होता ।
(२) बुरे लगत सिखके वचन, हिये विचारो आप ।
कड़ुवी भेषज बिन पिये, मिटै न तनकी ताप । (ह...
बिना कुचनकी कामिनी, बिना मूंछका ज्वान
ये तीनों फीके लगें, बिना सुपारी पान—स्पष्ट ।
बिना गोता खाये तैरना नहीं आता—दे० "बि... कड़ुवी दवाई"
बिना ठगाये ठाकुर नहीं होता—जब आद... ठगाया जाता है, तब सावधान हो जाता है ।
बिना डुलाये पंखा हवा नहीं देता—बिना प... श्रमके काम नहीं चलता ।
बिना डुलाये ना मिले ज्यों पंखाकी पौन । (हन्द)
बिना दबाये तिलोंमेंसे तेल नहीं निकलता— दबाव पड़ने पर बात खुलती है ।
बिना दवा रोग नहीं जाता—स्पष्ट ।
"रोग मिटै कछु औषध खाये"
बिना पानी मोजे उतारना—जो मनुष्य बि... कारण लड़नेको तैयार हो जाय, उसे क० ।
पौष सदा सुनि शीत उदास, कौन सयान तजै रस रास।
लोग पढ़ावों करत प्रकास, बिन जल लखे समेटत बास ॥
(लो० र० को०)
बिना पेंद... —अपनी बात पर ... नहीं ... मत पलटता रहता ... उसपर ...

बिना मिर्चकी घोटे भंग, बिन भाइनके रोपे जंग ले वेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंग न जंग न गंग स्पष्ट।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—(सं०) जब समय खराब आता है, तब उल्टी बुद्धि हो जाती है।

(१) न भूतपूर्वं न च केन दृष्टं हेम्नः कुरंगो न कदापि वार्ता। तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।

(२) जाको प्रभु दारुण दुःख देहीं ताकी मति पहिले हरलेहीं (तुलसी)

बिना सींगके बैल—मूर्खको क०।

बिनौलेकी लूटमें बरछीका घाव—(१) मामूली चीज़ प्राप्त करनेमें जब किसीको अधिक कष्ट भोगना पड़ता है, तब क०। (२) साधारण अपराधमें जब कठिन दंड मिलता है, तब भी क०।

विपत्तके समय भूंजी ताले जाती है—दे० "राजा नलको विपता"

विपत्त संघाती तीन जने, जोरू बेटा आप—स्पष्ट।

विपत पड़ी जब भेंट मनाई, मुकर गया जब देनी आई—सुख आ जानेपर आदमी दुःखकी बात भूल जाता है।

विपद बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय—क्योंकि उसमें मनुष्यको अनुभव हो जाता है।

बिरादरीको न खिलाया चार कांदीही जिमा दिये (हि०) स्पष्ट। कांदी=मुर्दा ढोने वाला।

बिरादर-ए-हक़ीक़ी, दुश्मन ए-मादरज़ाद है—सौतेला या कठभाई ही जानी दुश्मन होता है।

बिल्लीका खेल चूहोंकी मौत—जब एकको दुख देकर दूसरोंको आनंद मिले, तब क०। दूसरेके दुख पर हंसनेपर भी क०।

बिल्लीका गू, लीपनेका न पोतनेका—बुरी वस्तु किसी काममें नहीं आती। बिलकुल निकम्मे आदमीको क०।

बिल्लीके ख्वाबमें चूहे कूदे } बुरेको बुराई ही
बिल्लीके ख्वाबमें छीछड़े } सूझती है।

बिल्लीके गलेमें मोहन माला—अज्ञानीके सामने अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्फल होता है।

बिल्लीके भागसे छींका टूटा—जब संयोगसे कोई काम अच्छा हो जाय, तब क०।

(१) छीति गई सुन हरखो बाल,
जिन बस कियो हुतो मन लाल।
कहे पखाभो ज्यों रम जू टा,
बिल्ली भागन सिकहर टूटा। (मुदिता)

(२) अफ़सोस कि अब मेरा मुक़द्दर फूटा।
मेरा चोर उनका साथ ऐ दिल छूटा॥
मुझसे लड़कर गये वो दुश्मनके घर।
बिल्लीके भागों आह छींका टूटा॥ (रंग र)

बिल्ली खायगी नहीं पर फैला तो भी जायगी—दुष्ट व्यर्थकी हानि करता है।

बिल्ली चूहा ख़ुदाके वास्ते नहीं मारती—संसारमें सब आदमी अपने स्वार्थके लिये करते हैं।
'बिल्ली भी मारती है चूहा पेटके लिये'।

बिल्ली भी दबकर हरया करती है—दबेपर सब चोट करते हैं।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुंहपर पंजा धर लेती है—अपना बचाव सब कोई करता है।

विश्वासो फलदायकः—विश्वास हो जानेसे सब काम सिद्ध हो जाते हैं।

बिष देते बिषया दई ऐसे दीन दयाल—दे० "जिन पाये पंथी नहीं"

विषकी औषधि क्या !—ज़हरकी दवा नहीं।

विषकी गांठ—कुटिल आदमीको क०।

विष तरुवर हू रोपिके, कोउ न काटत हाथ—अपनी बनाई चीज़को कोई अपने हाथसे नहीं बिगाड़ता, चाहे वह कैसी ही बुरी क्यों न हो।

विष निकस्यो अति मथन तें, रतनाकरहू माहिं—अधिक बात बनानेसे लड़ाई बढ़ जाती है।

विषधर पकड़, ज़हरको चाट, पर नारी संग चाल ना बाट—पराई स्त्रीकी संगत करनेकी अपेक्षा विष खाकर मरना भला है।

विष रस भरा कनक घट जैसे—जो चिकनी चुपड़ी बातें करता हो और उसका हृदय कपटसे भरा हो, उसपर क०।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार—स्पष्ट।

बिन बुलाई अहमक, ले दौड़ी सहनक–(मु० ज०)
(१) जो बिन बुलाये न्योतेमें आता है, उसे क०।
(२) जो बिना कहे सुने दूसरेके काममें हाथ लगाता है, उसे भी क०।

बिन बुलाई डोमनी लड़केवाले समेत आये—(ज०) स्पष्ट।

बिन बोले गुण जानन जाय–आदमी अच्छा वा बुरा तब तक नहीं परखा जाता जबतक वह कुछ न बोले।

बात इन्सां जब तलक करता नहीं।
ऐब-औ-हुनर उसका कभी खुलता नहीं॥

बिन भय होय न प्रीत—बिना भयके प्रीति नहीं होती।

उठि चलि अलि तजि बहु मनुहारि,
बिन बियोग समुझै नहिं नारि।
कहै कहावत गाथा गीत,
होय न हियमें भय बिनु प्रीत।

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख—मिलनेवाला होता है तो आप ही मिलता है, मांगनेसे भीख भी नहीं मिलती।

(१) भागती फिरती थी दुनिया जब तलब करते थे हम।
अब जो नफ़रत हमने की, तो बेक़रार आनेको है॥
(२) एक बिन मांगे ही लहै, मांगे एक लहै न।
घन जल सुर सरिता भरै, चातक चौंच भरै न॥ (वृन्द)

बिन मारेकी तोबा करना—मारनेसे पहले ही रोना। दुख पड़नेसे पहले ही उसका सोच करे, तब क०।

बिन रुके बैदकी घोड़ी ना चले—वैद्यकी घोड़ी उस स्थानमें अवश्य रुक जाती है, जहाँ वह रोज़ खड़ी की जाती है अर्थात् रोगीके घरके दरवाज़े पर।

बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती—बिना मांगे अपनी ख़ुशीसे कोई भी कुछ नहीं देता।

बिन सतसंग बिबेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

बिना असलके नक़ल नहीं होती—स्पष्ट।

मजनूं को कहैं सब असल, और नकलकी भाय।
कछु जो दिखवै अकल तब, सबै नकल भी खाय।
(भाभी भाष)

बिना द्रव्य ये भ्रष्ट हैं पण्डित कवि अरु वैद—(१) बिना पैसेके ये तीनों काम नहीं करते। (२) जब तक ये तीनों अपनी अपनी विद्यामें निपुण न हों तबतक किसी कामके नहीं।

बिना कड़ुवी दवाई खाये रोग आराम नहीं होता
(१) बिना कष्ट उठाये सुख नहीं होता।
(२) बुरे लगत सिखके वचन, हिये बिचारो आप।
कड़ुवो भेषज बिन पिये, मिटै न तनकी ताप। (वृन्द)

बिना कुचनकी कामिनी, बिना मूंछका ज्वान। ये तीनों फीके लगें, बिना सुपारी पान—स्पष्ट।

बिना ग़ोता खाये तैरना नहीं आता—दे० "बिना कड़ुवी दवाई"

बिना ठगाये ठाकुर नहीं होता—जब आदमी ठगाया जाता है, तब सावधान हो जाता है।

बिना डुलाये पंखा हवा नहीं देता—बिना परिश्रमके काम नहीं चलता।
बिना डुलाये ना मिले ज्यों पंखाकी पौन। (वृन्द)

बिना दबाये तिलोंमेंसे तेल नहीं निकलता—दबाव पड़ने पर बात खुलती है।

बिना दवा रोग नहीं जाता—स्पष्ट।
"रोग मिटै कटु औषध खाये"

बिना पानी मोजे उतारना—जो मनुष्य बिना कारण लड़नेको तैयार हो जाय, उसे क०।

पौध सदा पुनि होत उदास, कौन सयान तजै रस खास।
लोग पखानों करत प्रकास, बिन जल लखे समेटत बास॥
(लो० र० को०)

बिना पेंदीका लोटा—जो अपनी बात पर क़ायम नहीं रहता, घड़ी घड़ी मत पलटता रहता है, उसपर क०।

बिना वसीले चाकरी, बिना बुद्ध की देह। बिना गुरूका बालका, सिरमें डाले खेह—स्पष्ट।

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय। काम बिगाड़े आपनो, जगमें होत हंसाय—(गिरधर) स्पष्ट।

बिना बुलाये आदर नहीं चाहे जा देखे। पेट भरे सवाद नहीं चाहे खा देखे—स्पष्ट।

बिना मरे ना स्वर्ग दिखात—दे० "अपने मरे बिना

विना मिर्चकी घोटे भंग, विन भाइनके रोपे जंग
ले वेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंग न जंग न गंग
स्पष्ट।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—(सं०) जब समय खराब आता है, तब उल्टी बुद्धि हो जाती है।
(१) न शास्त्रमध्ये न च दृष्टपूर्वो न श्रूयते हेममयी कुरंगी।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।
(२) जाको प्रभु दारुण दुःख देहीं ताकी मत पहिले हरलेहीं
(तुलसी)

विना सींगके बैल—मूर्खको क०।

विनौलेकी लूटमें बरछोंका घाव—(१) मामूली चीज़ प्राप्त करनेमें जब किसीको अधिक कष्ट भोगना पड़ता है, तब क०। (२) साधारण अपराधमें जब कठिन दंड मिलता है, तब भी क०।

विपत्तके समय भूंजी ताले जाती है—दे० "राजा नलको विपता"

विपत्त संघाती तीन जने, जोरू बेटा आप-स्पष्ट।

विपत पड़ी जब भेट मनाई, मुकर गया जब देनी आई-दुख आ जानेपर आदमी दुःखकी बात भूल जाता है।

विपद बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय—क्योंकि उसमें मनुष्यको अनुभव हो जाता है।

विरादरीको न खिलाया चार कांदीही जिमा दिये (हि०) स्पष्ट। कांदी=मुर्दा ढोने वाला।

विरादर-ए-हक़ीक़ी, दुश्मन ए-मादरज़ाद है—सौतेला या फलभाई ही जानी दुश्मन होता है।

विल्लीका खेल चूहोंकी मौत—जब एकको दुख देकर दूसरोंको आनंद मिले, तब क०। दूसरेके दुख पर हंसनेपर भी क०।

विल्लीका गू लीपनेका न पोतनेका—बुरी वस्तु किसी काममें नहीं आती। बिल्कुल निकम्मे आदमीको क०।

विल्लीके ख्वाबमें चूहे कूदे } बुरेको बुराई ही
विल्लीके ख्वाबमें छीछड़े } सूझती है।

विल्लीके गलेमें मोहन माला—अज्ञानीके सामने अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्फल होता है।

विल्लीके भागसे छींका टूटा—जब संयोगसे कोई काम अच्छा हो जाय, तब क०।
(१) सौति गई सुन हरखी बाल,
जिन बस कियो हुतो मन लाल।
कहै पखानो ज्यों रस जूटा,
बिल्ली भागन सिकहर टूटा। (मुदिता)
(२) अफ़सोस कि अब मेरा मुक़द्दर फूटा।
मेरा और उनका साथ ऐ दिल छूटा॥
मुझसे लड़कर गये वो दुश्मनके घर।
बिल्लीके भागों आह छींका टूटा॥ (रंजूर)

विल्ली खायगी नहीं पर फैला तो भी जायगी—दुष्ट व्यर्थकी हानि करता है।

विल्ली चूहा खुदाके वास्ते नहीं मारती—संसारमें सब आदमी अपने स्वार्थके लिये करते हैं।
'बिल्ली भी मारती है चूहा पेटके लिये'।

विल्ली भी दबकर हरया करती है—छिपकर सब चोट करते हैं।

विल्ली भी लड़ती है तो मुंहपर पंजा धर लेती है-अपना बचाव सब कोई करता है।

विश्वासो फलदायकः—विश्वास हो जानेसे सब काम सिद्ध हो जाते हैं।

विष देते विषया दई ऐसे दीन दयाल-दे० "जिन पाये पंथी नहीं"

विषकी औषधि क्या ?—ज़हरकी दवा नहीं।

विषकी गांठ—कुटिल आदमीको क०।

विष तरुवर हू रोपिके, कोउ न काटत हाथ—अपनी बनाई चीज़को कोई अपने हाथसे नहीं बिगाड़ता, चाहे वह कैसी ही बुरी क्यों न हो।

विष निकस्यो अति मथन तें, रतनाकरहू माहिं अधिक बात बनानेसे लड़ाई बढ़ जाती है।

विषधर पकड़, ज़हरको चाट, पर नारी संग खाल ना बाट—पराई स्त्रीकी संगत करनेकी अपेक्षा विष खाकर मरना भला है।

विष रस भरा कनक घट जैसे—जो चिकनी चुपड़ी बातें करता हो और उसका हृदय कपटसे भरा हो, उसपर क०।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार—स्पष्ट।

बिन बुलाई अहमक, ले दौड़ी सहनक—(मु० ज०)
(१) जो बिन बुलाये न्योतेमें आता है, उसे क०।
(२) जो बिना कहे सुने दूसरेके काममें हाथ लगाता है, उसे भी क०।

बिन बुलाई डोमनी लड़केवाले समेत आये—(ज०) स्पष्ट।

बिन बोले गुण जानन जाय—आदमी अच्छा वा बुरा तब तक नहीं परखा जाता जबतक वह कुछ न बोले।

बात जबतक नहीं करता नहीं।
ऐब-औ-हुनर उसका कभी खुलता नहीं॥

बिन भय होय न प्रीत—बिना भयके प्रीति नहीं होती।

उठि चलि चलि तजि बहु मनुहारि,
बिन वियोग समुझै नहिं नारि।
कहैं कहावत गाथा गीत,
होय न हियमें भय बिनु प्रीत।

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख—मिलनेवाला होता है तो आप ही मिलता है, मांगनेसे भीख भी नहीं मिलती।

(१) भागती फिरती थी दुनिया जब तलब करते थे हम।
अब जो नफ़रत हमने की, तो बेक़रार आनेको है॥
(२) एक बिन मांगे ही लहै, मांगे एक लहै न।
घन जल सुर सरिता भरै, चातक चोंच भरै न॥ (हन्द)

बिन मारेकी तोबा करना—मारनेसे पहले ही रोना। दुख पड़नेसे पहले ही उसका सोच करे, तब क०।

बिन रुके वैदकी घोड़ी ना चले—वैद्यकी घोड़ी उस स्थानमें अवश्य रुक जाती है, जहाँ वह रोज़ खड़ी की जाती है अर्थात् रोगीके घरके दरवाज़े पर।

बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती—बिना मांगे अपनी खुशीसे कोई भी कुछ नहीं देता।

बिन सतसंग बिबेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

बिना असलके नक़ल नहीं होती—स्पष्ट।

मजनू को कहैं सब असल, और नकलकी भाय।
काहु हो दिखहिं असल तब, सकै नकल भी लाय।
(नाभको दास)

बिना द्रव्य ये भ्रष्ट हैं पण्डित कवि अरु बैद—
(१) बिना पैसेके ये तीनों काम नहीं करते। (२) जब तक ये तीनों अपनी अपनी विद्यामें निपुण न हों तबतक किसी कामके नहीं।

बिना कड़ुवी दवाई खाये रोग आराम नहीं होता
(१) बिना कष्ट उठाये सुख नहीं होता।
(२) बुरे लगत सिखके बचन, हिये विचारो आप।
कड़ुवी भेखज बिन पिये, मिटै न तनकी ताप। (हन्द)

बिना कुचनकी कामिनी, बिना मूंछका ज्वान।
ये तीनों फीके लगें, बिना सुपारी पान—स्पष्ट।

बिना ग़ोता खाये तैरना नहीं आता—दे० "बिना कड़ुवी दवाई"

बिना ठगाये ठाकुर नहीं होता—जब आदमी ठगाया जाता है, तब सावधान हो जाता है।

बिना डुलाये पंखा हवा नहीं देता—बिना परिश्रमके काम नहीं चलता।

बिना डुलाये ना मिलै ज्यों पंखाकी पौन। (हन्द)

बिना दबाये तिलोंमेंसे तेल नहीं निकलता—दबाव पड़ने पर बात खुलती है।

बिना दवा रोग नहीं जाता—स्पष्ट।

"रोग मिटै कछु औषध खाये"

बिना पानी मोजे उतारना—जो मनुष्य बिना कारण लड़नेको तैयार हो जाय, उसे क०।

पोच सदा सुनि होत उदास, कौन सयान तजै रस हास।
लोग बखानों करत प्रकास, बिन जल लखि उमेटत बास॥
(लो० र० कौ०)

बिना पेंदीका लोटा—जो अपनी बात पर क़ायम नहीं रहता, घड़ी घड़ी मत पलटता रहता है, उसपर क०।

बिना वसीले चाकरी, बिना बुद्ध की देह।
बिना गुरूका बालका, सिरमें डाले खेह—स्पष्ट।

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।
काम बिगाड़े आपनो, जगमें होत हंसाय—(गिरधर) स्पष्ट।

बिना बुलाये आदर नहीं चाहे जा देखे।
पेट भरे सवाद नहीं चाहे खा देखे—स्पष्ट।

बिना मरे ना स्वर्ग दिखात—दे० "अपने मरे बिना

विना मिर्चकी घोटे भंग, विन भाइनके रोपे जंग ले वेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंग न जंग न गंग स्पष्ट।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—(सं०) जब समय खराब आता है, तब उल्टी बुद्धि हो जाती है।

(१) न शास्त्रमध्ये न च दृष्टपूर्वं न श्रूयते हेममयो कुरंगो।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।
(२) जाको प्रभु दारुण दुःख देहीं ताकी मत पहिले हरलेहीं (तुलसी)

विना सींगके बैल—मूर्खको क०।

विनौलेकी लूटमें बरछीका घाव—(१) मामूली चीज़ प्राप्त करनेमें जब किसीको अधिक कष्ट भोगना पड़ता है, तब क०। (२) साधारण अपराधमें जब कठिन दंड मिलता है, तब भी क०।

विपत्तके समय भूंजी ताले जाती हैं—दे० "राजा नलको विपता"

विपत्त संघाती तीन जने, जोरू बेटा आप-स्पष्ट।

विपत पड़ी जब भेट मनाई, सुकर गया जब देनी आई—सुख आ जानेपर आदमी दुःखकी बात भूल जाता है।

विपद बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय—क्योंकि उसमें मनुष्यको अनुभव हो जाता है।

विरादरीको न खिलाया चार कांदीही जिमा दिये (हि०) स्पष्ट। कांदी=मुर्दा ढोने वाला।

विरादर-ब-हक़ीक़ी, दुश्मन ब-मादरज़ाद है—सौतेला या कठभाई ही जानी दुश्मन होता है।

विल्लीका खेल चूहोंकी मौत—जब एकको दुख देकर दूसरोंको आनंद मिले, तब क०। दूसरेके दुख पर हंसनेपर भी क०।

विल्लीका गू लीपनेका न पोतनेका—बुरी वस्तु किसी काममें नहीं आती। बिल्कुल निकम्मे आदमीको क०।

विल्लीके ख्वाबमें चूहे कूदे
विल्लीके ख्वाबमें छीछड़े } बुरेको बुराई ही सूझती है।

विल्लीके गलेमें मोहन माला—अज्ञानीके सामने अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्फल होता है।

विल्लीके भागसे छींका टूटा—जब संयोगसे कोई काम अच्छा हो जाय, तब क०।

(१) सोति गई सुन हरखी बाल,
जिन बस कियो हुतो मन लाल।
कहै पखानो ज्यों रस लूटा,
बिल्ली भागन सिकहर टूटा। (मुदिता)
(२) अफ़सोस कि अब मेरा मुक़द्दर फूटा।
मेरा और उनका साथ ऐ दिल छूटा॥
मुझसे लड़कर गये वो दुश्मनके घर।
बिल्लीके भागों आह छींका टूटा॥ (रंजर)

विल्ली खायगी नहीं पर फैला तो भी जायगी—दुष्ट व्यर्थकी हानि करता है।

विल्ली चूहा खुदाके वास्ते नहीं मारती—संसारमें सब आदमी अपने स्वार्थके लिये करते हैं।
'बिल्ली भी मारती है चूहा पेटके लिये'।

विल्ली भी दबकर हमला करती है—दबेपर सब चोट करते हैं।

विल्ली भी लड़ती है तो मुंहपर पंजा धर लेती है-अपना बचाव सब कोई करता है।

विश्वासो फलदायकः—विश्वास हो जानेसे सब काम सिद्ध हो जाते हैं।

विष देते विषया दई ऐसे दीन दयाल-दे० "जिन पाये पंथी नहीं"

विषकी औषधि क्या ?—ज़हरकी दवा नहीं।

विषकी गांठ—कुटिल आदमीको क०।

विष तरुवर हू रोपिके, कोउ न काटत हाथ—अपनी बनाई चीज़को कोई अपने हाथसे नहीं बिगाड़ता, चाहे वह कैसी ही बुरी क्यों न हो।

विष निकस्यो अति मथन तें, रतनाकरहू माहिं अधिक बात बनानेसे लड़ाई बढ़ जाती है।

विषधर पकड़, ज़हरको चाट, पर नारी संग चाल ना बाट—पराई स्त्रीकी संगत करनेकी अपेक्षा विष खाकर मरना भला है।

विष रस भरा कनक घट जैसे—जो चिकनी चुपड़ी बातें करता हो और उसका हृदय कपटसे भरा हो, उसपर क०।

मन मलीन तन सुंदर कैसे, विषरस......(तुलसी)

(सं॰) विषकुंभम् पयोमुखम्।

विष सोनेके बर्त्तनमें रखनेसे अमृत नहीं होता—दुष्ट सतसंगमें भी दुष्टता नहीं छोड़ता।

विसनी बिलार इवरीमें डेरा—बिना बुलाये मेहमानपर क॰। बिल्ली खानेके समय चुपचाप आपही आ बैठती है।

बिसमिल्लाहके गुम्बदमें बैठे हैं—(मु॰) मरे हुए आदमीपर क॰।

बिसमिल्ला ही ग़लत—जब कोई किसी काममें शुरूमें ही भूल करता है, तब क॰। फ़ारसी वा उर्दूवाले लिखते समय पहिले "बिसमिल्लाह उल रहमाने-रहीम" लिखते हैं। जैसे हिन्दीवाले "श्रीगणेशाय नमः" लिखते हैं।

बिस्वा बिसकी गांठ है—बिश्वा लड़ाईकी जड़ है। बिश्वा गांवके बीसवें हिस्सेको क॰।

बी खैला दो चिट्टे एक मैला—(मु॰ ज॰) ऊपरी लिफ़ाफेपर क॰।

बी खैला दो जट्टी एक मेला—(मु॰ ज॰) बीवी खैला और दो जाटनी जहां मिली वहां मेला हो गया। औरतें जब आपसमें लड़ती हैं तो बहुत गुल मचाती हैं।

बीचके चले जायंगे काम दूल्हा दूल्हनसे पड़ेगा—स्पष्ट।

बीत्यो ब्याह कुम्हारको, भांडा ले ले जाय—स्पष्ट।

बीती ताहि बिसार दे, आगेकी सुधि ले, जो बनि आवे सहजमें, ताहीमें चित दे—(गिरधरदास) स्पष्ट।

बी तो अपने घरका धुआं भी निकलने नहीं देती
(ज॰) कंजूस स्त्रीपर क॰।

बी दौलती, अपने तिहेमें आप ही खौलती—(मु॰ ज॰) जो अपने धनके घमण्डमें चूर रहता है, उसपर क॰।

बी पिरागो, कामके वेले सो गई, परसादके वेले जागो—जो कामके समय टल जाता और खानेके समय मुस्तैद हो जाता है, उसपर क॰।

बीबीको बांदी कहा हंस दी, बांदीको बांदी कहा रो दी—(ज॰) अंधेको अंधा कहनेसे बुरा मानता है।

बीबी नेकबख़्त, दमड़ीकी दाल तीन वक़्त—(मु॰ ज॰) जो थोड़े ही खर्चमें अपना काम भली भांति निबाह लेता है, उसपर क॰।

बीबी बकरी, नावमें ख़ाक उड़ाती है—जो अपना स्वार्थ पूरा करनेके लिये लड़ाईका बहाना ढूंढ़ता है, उसपर क॰।

इस मसलका सम्बन्ध उस कहानीसे है जिसमें यही बहाना कर एक भेड़ियेने एक बकरीको खा लिया था।

बीबी बारे बांदी खाय, घरकी बला कहीं न जाय
(ज॰) घरको घरहीमें रही क्योंकि बीबीने बारा और बांदीने खाया, इससे घरके बाहर बला न गई।

'बीबी बीबी ईद आई,' 'चल हरामज़ादी तुझे क्या?'—(मु॰ ज॰) बीबी और लौंडीका सम्वाद। कंजूसको खर्चका काम बतानेसे वह चिढ़ जाता है।

'बीबी बीबी ईद आई' 'चल मुरदार तुझे टिकियासे काम—(मु॰ ज॰) ऊ॰ दे॰ टिकिया=रोटीका टुकड़ा।

बीबी मक्के न गई, लाड़ली हो आई—(मु॰ज॰) जिसे मन चाहे वह बुरा होनेपर भी अच्छा लगता है।

बीबी हैं भरमाली, कान पीतलकी बाली—स्पष्ट।

बीमारकी रात पहाड़ बराबर—रोगी बहुत मुश्किलसे रात बिताता है।

बीस पचीसके अंदरमें, जो पूत सपूत हुआ सो हुआ, मात पिता कुल तारणको, जो गया न गया सो कहीं न गया—जो गयामें अपने माता पिताको पिंड न देकर सब तीर्थोंसे हो आता है, उसे कोई फल नहीं होता है।

दीन पै दया करो, न बापकी गया करो।

बीसी खीसी—बीस वर्षसे अधिककी औरत बुड्ढी हो जाती है।

बुड़वक एक गये बड़ गांव, डेरा पाइन ऊंचे ठांव। बड़े बयार आड़ नहीं पावे, फाटे...मलार गावे—(भो॰) गवांर आदमीपर क॰।

बुड़वक गइले मछली मारे ताप अइले गँवाय—(भो॰) मूर्ख रोज़गार करने जाता है तो घर हीका धन खो बैठता है। ताप=छीप; मछली मारनेका डंडा।

बुड़वकदास गये हरवाहीं, दुइ बैलमें एको नाहीं
(भो॰) ऊ॰ दे॰।

बुड़बक देवीके कुल्थीके अच्छत-(भो०) दे० "दुष्ट देवीकी भ्रष्ट पूजा"

बुड़बक वरके सांझे बिछौना—(भो०) मूर्ख समयका व्यवहार नहीं जानता।

बुड़भस लगी है—दूसरा लड़कपन आया है।

बुड्ढा ब्याह करे पड़ोसियोंको सुख होवे—स्पष्ट।

बुढ़वा भतारपर तीन टिकली—जब कोई स्त्री बूढ़े स्वामीपर हदसे ज़्यादा सिंगार करती है, तब व्यंगसे क०।

बुढ़ापेमें अक़्ल मारी जाती है—जब कोई बूढ़ा मनुष्य बे-सिर पैरकी बातें करता है, तब क०।

पनघटकी हमारी अगर पनहारी गई है।
तो यहां भी लगी साथ यही ख्वारी गई है॥
सुनते हैं कि अकसी यही पनिहारी गई है।
लो देखो बुढ़ापेमें यह मत मारी गई है॥ (नज़ीर)

बुढ़ापेमें मट्टी ख़राब—जब कोई बूढ़ा कष्ट पाता है वा लोग उसकी हंसी उड़ाते हैं, तब क०।

बाज़ारमें अगर जावे तो होती है यह फकड़ी।
खेंचे है कोई हाथ कोई छीने है लकड़ी॥
दाढ़ीको कोई खेंच कोई फाड़े है मकड़ी।
मूछें कहीं बत्तीकी लिये जाती है पकड़ी। (नज़ीर)

बुढ़ियाको पैंठ बिना कब सरे—बुढ़ियाको बाज़ार गये बिना चैन नहीं पड़ता।

बुढ़िया ग़ज़बकी पुड़िया—लड़ाका बुढ़ियापर क०।

बुढ़िया दीवानी हुई, पराये बरतन उठाने लगी—सियान पागलको क०।

बुढ़िया मरेका डर नहीं जम परकेका डर—जब कोई काम ऐसा हो जाय कि जिससे बार बार भविष्यमें बुरा फल होनेकी संभावना हो, तब क०।

हर बार क़ाफ़िलका दखों पर आना है बुरा।
मरनेसे भी मौतका घर देख आना है बुरा॥

बुड्ढी घोड़ी लाल लग़ाम—बेमेल बातपर क०।

बुड्ढी बकरी और हुंडारसे ठट्ठा—जो कमज़ोर होकर अपने बलवान शत्रुसे मुक़ाबिला करता है, उस पर क०।

बुड्ढी भैंसका दूध शक्करका घोलना, बुड्ढे मर्दकी जोरू गलेका ढोलना—स्पष्ट।

बुड्ढी हुई नायका इस हालको पहुंची, सिर हिलने लगा छातियाँ पत्तालको पहुंची—(नज़ीर) बुढ़ापा आनेपर सब अंग निकम्मा हो जाता है।

बुड्ढेकी औलाद—कमज़ोर होती है।

बुड्ढेकी सीख, करे कामको ठीक—बूढ़े आदमीका उपदेश ज़रूर ग्रहण करना चाहिए।

"वृद्धस्य वचनं ग्राह्यम्"

बुड्ढे तोते राम राम नहीं पढ़ते—बूढ़ोंको नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि उम्र अधिक होनेसे बुद्धि मंद पड़ जाती है। जब किसी बुड्ढे आदमीको कोई काम सिखाया जाय और उससे करते न बने, तब क०।

बुड्ढोंने जो काम सिखाया, धोका भूल न उसमें पाया—स्पष्ट।

बुनियेमें, न बीन बजायबेमें—जो किसी कामसे सम्पर्क न रक्खे वा किसी गिनतीमें न हो, उसे क०।

इमें बात कहेकी प्रयोजनका, बुनियेमें न बीन बजायबेमें।
(ठाकुर)

बुयाद हम-पेशा, या हम-पेशा दुश्मन—(फा०) एक ही पेशेके दो मनुष्योंकी राय एक नहीं होती इसलिये कि वे आपसमें डाह रखते हैं।

बुरा जो ढूंढन मैं चला बुरा न पाया कोय। जो दिल ढूंढा आपना मुझसे बुरा न कोय—(कबीर) स्पष्ट।

ऐ ज़ौक़ किसको चश्मे हिक़ारतसे देखिये।
सब हमसे हैं ज़ियादा, कोई हमसे कम नहीं।

बुरा बेटा, खोटा पैसा, किसी वक्तपर काम आ जाता है—निकम्मी चीज़ भी कभी न कभी काममें आ जाती है।

बुरा वही जो दूसरोंको बुरा कहे—किसीकी बुराई न करनी चाहिये।

ज़ुबाँ खोलेंगे तुमपर बद ज़ुबाँ क्या बदशुआरी है।
कि मैंने ख़ाक भरदी है उनके मुंहमें ख़ाकसारी है॥
तू भला है तो बुरा हो नहीं सकता ऐ ज़ौक़।
है बुरा वही कि जो तुझको बुरा जानता है॥

बुरा हाकिम खुदाका गज़ब—स्पष्ट।

बुरी घड़ी न आवे—खराब समयको कोई नहीं चाहता।

बुरी संगतसे अकेला अच्छा—स्पष्ट।

बुरे करमके बुरे हवाल—जो जैसा करेगा वह वैसा ही फल पायगा।

बुरेका लहसन भी बुरा—बदनसीब आदमीको लहसन भी लाभदायक नहीं होता। लहसन शरीरपर लाल रंगका दाग होता है जो दाहिने अंगपर होनेसे शुभ माना जाता है।

लहसन भौंरी, तिल, मसौ, होय दाहिने अंग।
जाय परी बन खंडमें, तहं लच्छी रंग।

बुरेका साथ दे सो भी बुरा—स्पष्ट

बुरेका साथी कोई नहीं—स्पष्ट।

बुरे खाविन्दका मिलना जीते जी दोजख—(मु० ज०) खराब पतिके साथ रहना जीते जी नर्क भोगना है।

बुरे तुझसे डरिये या तेरी बुराईसे—स्पष्ट।
भले बुराई तें डरें, शास्त्री चाहे सोय।
नामत हैं पै दुष्टके, अवगुन कहत न कोय॥ (वृंद)

बुरे वक्तका अल्लाह बेली—दुखके समय ईश्वरके सिवा दूसरा कोई सहायक नहीं है।
(१) होता नहीं है कोई बुरे वक्तमें शरीक,
पत्ते भी भागते हैं खिज़ांमें शजरसे दूर। (दाग़)
(२) पुतलियां तक भी तो फिर जाती हैं, देखो दमनिज़ा
वक्त, पड़ता है, तो सब आंख चुरा जाते हैं॥ (दाग़)

बुल बुल का सा चोंड़ा—(मु० ज० च०) जो अपने सिरके बालको रंडी सा गूंथकर सजाता है, उसे व्यंगसे क०।

बुलाये न चलावे, मैं तो दुलहनकी चाची—(पू०) जो जबर्दस्ती अपना हक़ क़ायम करता है, उस पर क०।

बूंद बड़ा होय तो भनसार न फोड़े—दे० 'अकेला चना'।

बूंद अघात सहैं गिरि कैसे, खलके ... सह जैसे—(तुलसी) सज्जन बुरे ... भी सह लेता है।

बूंदका चूका घड़े ढुलकावे—समयपर काम नहीं करनेसे पीछे बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। दे० "उस बूंदसे भेंट कहां"।

बूंदन बूंदन घट भरे, टपकत बीते तोय। कन कन जोरे, मन जुरे, खाते निबरे सोय—दे० "फूई फूई तालाब भरता है"।

बूंद बूंद करके तालाब भरता है—ऊ० दे०।

बूंद बूंदसे नदी बहती है—ऊ० दे०।

बूंदसे गई सो फिर हौज़से नहीं आती—दे० "बूंदका चूका घड़"

बू गई बूदार गई रही खालकी खाल—अन्तमें शरीर मट्टीमें मिल जाता है।

बूचा सबसे ऊंचा—(च०) जिसका अंग भंग रहता है वही सबसे पहले दीख पड़ता है। अनूठी चीज़ सबसे पहले नज़र आती है।

बूड़ा वंश कबीरका जो उपजे पूत कमाल—दे० "डूबा वंश........"

बूढ़ भइलन, नाक लगले रहितन—(च० भो०) जो सयाना होनेपर भी बच्चों का सा काम करता है, उसे व्यंगसे क०।

बूढ़ भई गुइयां दिमाग मोर वैसे—(पू०) ऊ० दे०।

बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम—जब गुणके विरुद्ध नाम रक्खा जाता है, तब व्यंगसे क०।

बूढ़ा खाय गांठका जाय—निकम्मे आदमीको खिलाना बेकार है।

बूढ़ा जाने किया, बाला जाने हिया—दे० 'बालक जाने'

बूढ़ा, बाला बराबर होता है—बुढ़ापा और लड़कपन एकसा होता है।

बूढ़ी जुरवा नाम खतीजा—दे० "बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम"।

बूढ़े कलावतकी कौन सुने—स्पष्ट। कलावंत=गवैया।

बूढ़ेकी ... ज़ोर होता है—जब आदमी बूढ़ा ... तरहसे निर्बल हो जाता है ... ज़ोर रहता है। (१) बोलता

बूढ़ेको बूढ़ा कहो तो चिढ़ मरे—बुड्ढेको बुड्ढा कहनेसे बुरा मानता है।

का यारों कहें गोकि बुढ़ापा है हमारा।
पर बूढ़े कहानेका नहीं दिलमें सहारा॥
जब बूढ़ा हमें हाय सदा कहके पुकारा।
काफिरने कलेजेमें गोया तीरसा मारा॥ (नज़ीर)

बूढ़े हुये तो क्या हुआ नख़रा तिल्ला उतने—बुढ़ापेमें भी जो मनुष्य अपने लड़कपनकी सी नख़रे तिल्लेकी बातें करे उसपर क०।

बूढ़े मुंह मुहांसे, लोग देखें तमासे—जो बूढ़ा आदमी जवानोंका सा आचरण करता है, उसे देख सब कोई हंसते हैं।

बूरके लड्डू खाय सो पछिताय न खाय वह भी पछताय—दे० "खाय सो पछिताय"

नादारोंकी चारज़ कहीं ज़र हाथ आए।
ज़रदारोंको कर के चोर रखकी न चुराये॥
गर ऐ रंज़ूर बूरका है लड्डू।
जो खाए पछिताए औ न खाए पछिताए॥

वृक्षकी छाया और पुरुषकी माया—दोनों उसीके साथ चली जाती हैं।

वृक्षके सहारे बेल बढ़ती है—बड़ोंका आश्रय ज़रूर ग्रहण करना चाहिये।

रहै समीप बड़ेनके होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त है वृक्ष सहारे बेल। (वृन्द)

वृद्ध वेश्या तपस्विनी—जो आजन्म बुरा काम करके अंतमें अच्छे काममें लग गया हो, उसे व्यंगसे क०।

वृन्दावन सो वन नहीं, नन्द गाँव सो गाँव। वंसी वट सो वट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम—स्पष्ट।

बे अदब बे नसीब या अदब या नसीब—कुचरित्र आदमी अभागा होता है और सचरित्र आदमी भाग्यवान होता है।

बेईमानीका मुंह काला—बेईमानी नहीं करनी चाहिए।

बे ऐब ज़ात ख़ुदाकी—केवल ईश्वर ही निष्कलंक है

(१) शशि कलंक रावण विरोध हनुमत सो बनचर।
काम धेनु सो पशू जाय चिन्तामणि पत्थर॥
पतिव्रता तिय बांझ गुनीको निर्धन कहिये।
चति समुद्र सो खार कमल बिच कंटक लहिये॥
जो युव्यास वेदहनो दुर्वासा ...सन डियो।
कवि गौध कहैं सुन रे गुनी, कौउन ...य निर्मलरच्यो॥

(२) जो काम तुझे है शायरीसे दिन रात।
मालूम तुझे अदबके हैं सारे नुक़ात।
क्यों मेरी नाज़ियों पै है मेरी नज़र।
बे ऐब तुझे यों है ख़ुदाकी ज़ात। (रंजूर)

बेकार मवास कुछ किया कर, कपड़े ही उधेड़ कर सींयाकर—बैठे रहनेसे कुछ करना ही अच्छा है।

बे गुठलीका मेवा—हलुएको कहते हैं।

बेकारी विकारी—खाली बैठे रहनेसे स्वास्थ्य ख़राब हो जाता है।

बेकारीसे बेगारी भली—दे० "बैठेसे बेगार भली"

बेख़ार गुल नहीं—बिना दुखके सुख नहीं मिलता। ख़ार=कांटा। गुल=फूल।

बेच पछिताना अच्छा—(व्य०) माल बेंचके पछिताना अच्छा रखके पछिताना बुरा।

बेच बेच मेरी पखनोका ब्याह—(मु० यु०) जब सारी सम्पत्ति बेंचकर लड़कीकी शादीकी जाती है, तब क०।

बेंचके साग, करे मोतियोंका दाम—जो अपनी योग्यतासे बाहर काम करता है, उसे क०।

बेचे सो बंजारा, रक्खे सो हत्यारा—(व्य०) माल को बेचना अच्छा रखना अच्छा नहीं।

बेजड़ाके पीसनहारी गेहूंके गीत गावै—(१) बे मेल बातपर क०। (२) हैसियतसे बढ़कर बात करने पर क०।

बेज़र बिसनी भड़ुवे बराबर—बिना पैसेका व्यसनी मनुष्य भड़ुवेसे समान है। गरीब रंडी भड़ुवेके समान है।

बेटा खाय, बाप लखाय, कलयुग अपना बल दिखलाय—जब बेटा अपने बापको खानेको न पूछे और उसे दिखा दिखाकर आप खाय, तब क०।

बेटा जनकर निव चले सोना पहिनकर ढक चले—स्पष्ट।

बेटा बनकर सबने खाया है, बाप बनकर कोई नहीं खाता—मीठी बात बोलनेवालेको सब कोई

बुरा हाकिम खुदाका ग़ज़ब—स्पष्ट।

बुरी घड़ी न आवे—ख़राब समयको कोई नहीं चाहता।

बुरी संगतसे अकेला अच्छा—स्पष्ट।

बुरे करमके बुरे हवाल—जो जैसा करेगा वह वैसा ही फल पायगा।

बुरेका लहसन भी बुरा—बदनसीब आदमीको लहसन भी लाभदायक नहीं होता। लहसन शरीरपर लाल रंगका दाग़ होता है जो दाहिने अंगपर होनेसे शुभ माना जाता है।

लहसन भौंरी, तिल, मसो, होय दाहिने अंग।
साय परो बन खंडमें, तहं लक्ष्मी संग।

बुरेका साथ दे सो भी बुरा—स्पष्ट

बुरेका साथी कोई नहीं—स्पष्ट।

बुरे खाविन्दका मिलना जीते जी दोज़ख—(मु० ज०) ख़राब पतिके साथ रहना जीते जी नर्क भोगना है।

बुरे तुझसे डरिये या तेरी बुराईसे—स्पष्ट।

भले बुराई तें डरें, भाख्यो चाहे सोय।
जानत हैं पै दुष्टके, अवगुन कहत न कोय॥ (वृंद)

बुरे वक़्का अल्लाह बेली—दुखके समय ईश्वरके सिवा दूसरा कोई सहायक नहीं है।

(१) होता नहीं है कोई बुरे वक़्तमें शरीक,
पत्ते भी भागते हैं खिज़ांमें शजरसे दूर। (दाग़)

(२) पुतलियां तक भी तो फिर जाती हैं, देखो दमनिज़ा
वक़्त पड़ता है, तो सब आंख चुरा जाते हैं॥ (दाग़)

बुल बुल का सा चोंडा—(मु० ज० च०) जो अपने सिरके बालको रंडी सा गूंथकर सजाता है, उसे व्यंगसे क०।

बुलावे न चलावे, मैं तो दुलहनकी चाची—(पू०) जो जबर्दस्ती अपना हक़ क़ायम करता है, उस पर क०।

बूंट बड़ा होय तो भनसार न फोड़े—दे० 'अकेला चना'।

बूंद अघात सहैं गिरि कैसे, खलके वचन संत सह जैसे—(तुलसी) सज्जन बुरे आदमीकी दो बात भी सह लेता है।

बूंदका चूका घड़े ढुलकावे—समयपर काम नहीं करनेसे पीछे बहुत नुक़सान उठाना पड़ता है। दे० "उस बूंदसे भेंट कहां"।

बूंदन बूंदन घट भरे, टपकत रीते तोय। कन कन जोरे, मन जुरे, खाते निबरे सोय—दे० "फूंई फुई तालाब भरता है"।

बूंद बूंद करके तालाब भरता है—ऊ० दे०।

बूंद बूंदसे नदी बहती है—ऊ० दे०।

बूंदसे गई सो फिर हौज़से नहीं आती—दे०। "बूंदका चूका घड़"

बू गई बूदार गई रही खालकी खाल—अन्तमें शरीर मट्टीमें मिल जाता है।

बूचा सबसे ऊंचा—(च०) जिसका अंग भंग रहता है वही सबसे पहले दीख पड़ता है। अनूठी चीज़ सबसे पहले नज़र आती है।

बूड़ा वंश कबीरका जो उपजे पूत कमाल—दे० "डूबा वंश........"

बूढ़ भइलन, नाक लगले रहितन—(च० भो०) जो सयाना होनेपर भी बच्चों का सा काम करता है, उसे व्यंगसे क०।

बूढ़ भई गुइयां दिमाग मोर बैसे—(पू०) ऊ० दे०।

बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम—जब गुणके विरुद्ध नाम रक्खा जाता है, तब व्यंगसे क०।

बूढ़ा खाय गांठका जाय—निकम्मे आदमीको खिलाना बेकार है।

बूढ़ा जाने किया, बाला जाने हिया—दे० 'बालक जाने'

बूढ़ा, बाला बराबर होता है—बुढ़ापा और लड़कपन एकसा होता है।

बूढ़ी जुरवा नाम खतीजा—दे० "बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम"।

बूढ़े कलावतकी कौन सुने—स्पष्ट। कलावंत=गवैया।

बूढ़ेकी ज़ुबानमें ज़ोर होता है—जब आदमी बूढ़ा हो जाता है तो सब तरहसे निर्बल हो जाता है केवल उसकी ज़ुबानमें ज़ोर रहता है। (१) बोलता बहुत है। (२) खाता बहुत है।

बेहयाईका बुरका मुंहपर डाल लिया है— बेशर्म आदमीको क०।

बेहयाके नीचे रूख जमा उसने जाना छांह हुई— उस बेशर्मको कहते हैं जो बुरे कामको भी अच्छा समझता है।

बैंगनोंका नौकर नहीं हूं आपका नौकर हूं— ठकुर सुहाती कहनेवालेको क०।

किसी अमीरने अपने मुसाहिबसे कहा कि बैंगनकी तरकारी बहुत अच्छी होती है, इसमें यथेष्ट गुण है। वैद्यकमें भी इसकी तारीफ़ लिखी है। "इन्ताकं आख्यायकम्"। उस मुसाहिबने भी हांमें हां मिला दी। बाद अमीरने बैंगनकी निन्दा की क्योंकि यह कटीला होता और इसके खानेसे कफ़ होता है; इसके अलावा और भी इसमें अनेक अवगुण हैं। मुसाहिबने कहा 'जी हुज़ूर! बैंगनकी तरकारी अच्छी नहीं होती।' इसपर अमीरने कहा, क्यों मुसाहिब! जब मैंने इसकी तारीफ़की तो तुमने भी की, और मेरे निन्दा करनेपर तुमने भी निन्दा की। इसका क्या कारण है? इसपर मुसाहिबने कहा 'हुज़ूर! मैं आपका नौकर हूं न कि बैंगनोंका। यदि मालिक दिनको रात बतावे तो नौकरको उचित है कि उसी वक्त चन्द्रमा और तारे भी दिखा दे।' उमरा जो कहें रात तो हम चांद दिखा दें.........

बैठकर सैर मुल्ककी करना, यह तमाशा किताबमें देखा— पुस्तक पढ़नेसे सब मुल्कोंका हाल जाना जा सकता है।

बैठा बनियां क्या करे, उस कोठीके धान उस कोठीमें धरे— जब कोई ख़ाली बैठा आदमी व्यर्थका काम करे, तब क०।

बैठा बनियां सेर बांट तौले
बैठी बुढ़िया मंगल गाय } उ० दे०। करनेवाला कुछ न कुछ करता ही रहता है।

बैठे बनियांकी पहिचान, हेरफेर कोठीमें धान— दे० "बैठा बनियां"

बैठेसे तो क़ारूंका ख़ज़ाना भी ख़ालीहो जाता है जब कोई रोज़गार नहीं करता और बैठे खाता है, तब क०।

क़ारूं एक मुसलमान बादशाह हो गया है। उसने यहांतक धन जमा किया था कि [illegible]

जो मुर्देके मुंहमें रुपया रक्खा जाता है उसे भी क़ब्रें खुदवा कर निकलवा लिया था।

बैठेसे बेगार भली— ख़ाली बैठे रहनेसे मुफ़्तमें काम करना अच्छा।

(१) नाना आदिमसे है दुकान्दार अच्छा।
याने मजबूरसे मुख़्तार अच्छा।
लेकिन एक सख़्त रोग बेकारी है।
ऐ यार है बेकारसे बेगार अच्छा। (रंजूर)

(२) ज़िन्दगीको अटर है इक शग़ल,
ख़ैर विलकुल नौकरी हो सही।
अब तो अकबर बसा है गंगातीर,
न हो काम दिल्लगी हो सही। (अकबर)

बैठो देवल सिखरपर बायस गरुड़ न होय—(वृन्द) मंदिरकी चोटीपर बैठनेसे कौवा गरुड़ नहीं होता। नीचको ऊंचे स्थानमें बैठा देनेसे ऊंचा नहीं होता।

बैद करे बैदाई, चंगा करे ख़ुदाई— (१) ईश्वर आराम करता है डाक्टर फ़ीस लेते हैं। (२) वैद्य अपनी विद्या दिखाता है पर आराम ईश्वर ही करता है।

(१) अतब्बाको तो अपनी फ़ीस लेना और दवा देना।
ख़ुदाका काम है लुत्फ़ो करम करना शफ़ा देना।
(अकबर)

अतब्बा=वैद्य। लुत्फ़ो करम=दया। शफ़ा=आराम

(२) मैं यह नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती।
कहता हूं कि बे-हुक्मे ख़ुदा कुछ नहीं करती।
(अकबर)

बैदकी बैदाई गई, कानीकी आंख गई— जब काम बिगड़नेपर मजूरी न दी जाय, तब क०।

बैन तेय बलि जिमि चह कागू, जिमि शशि चहहिं नाग अरि भागू—(तुलसी) ऊंची आकांक्षा पर क०।

बैर लेनको चन्द्रतें निज घर नाहिं जलाय— बलवान शत्रुसे बदला लेनेमें यदि चूक हो जाय तो क्रोध या लज्जाके मारे अपनी ही हानि न कर डालनी चाहिए।

बैरीका बोल, बसूलेका छोल— दुश्मनके वचन बसूलेकी तरह कलेजेको छीलते हैं।

बैरी तजे न दाढ़ा खाये— ख़ुशामद करनेसे भी दुश्मन नहीं छोड़ता।

चाहते हैं, कठोरको कोई नहीं।

बेटा बेटी बसका अच्छा—आज्ञाकारी लड़की या लड़का प्रशंसनीय है।

बेटा मरियो, पर तिरसर न पड़ियो—(ज०) जीनेकीअपेक्षा तेंतरा लड़केका मर जाना अच्छा है क्योंकि तेंतरे लड़केका जीना अशुभ समझा जाता है।

बेटा लायगा चमारी, वह भी बहू कहलायगी हमारी—खराब चीज़के सराहनेपर क०।

बेटा हुआ जब जानिये, जब पोता खेले बार—लड़केका होना तभी सार्थक है जब घरमें पोता खेलता फिरे, क्योंकि पोता हो जानेपर वंश वृद्धिकी आशा रहती है।

बेटी और ककड़ीकी बेल बराबर है—दोनों बहुत जल्दी बढ़ती हैं।

बेटीका धन निमाना है आते भी रुलाय, जाते भी रुलाय—लड़की पैदा होनेपर भी रंज होता है और जब उसका ब्याह होकर वह अपने घर जाती है, तब भी रंज होता है।

बेटीका भला चाहे तो बोल जमाई लाल की जै—जमाईको राज़ी रखनेसे बेटी सुखसे रहती है।

बेटी चमारकी नाम रजरनियां—(ए०) जाति या गुणके विरुद्ध जब नाम रक्खा जाय, तब क०।

बेटीने किया कुम्हार, अम्माने किया लुहार, न तुम चलाओ हमार, न हम चलायें तुम्हार—स्पष्ट।

बेटेसे नाम चलता है—वंश बढ़ता है।

बे थांग चोरी नहीं होती-बिना भेदके चोरी नहीं होती। थांग=भेद। यानी दूसरेसे मालका पता या सहारा पाये बिना चोर चोरी नहीं करता।

बेदर्द क़साई, क्या जाने पीर पराई—निष्ठुर व्यक्ति पर क०।

बेदिल नौकर, दुश्मन बराबर—स्पष्ट।

बे माघे घी खिचड़ी खाय, बे मेहरी ससुराले जाय। बे भादों पेन्हाई पल्वा, कहैं घाघ ये तीनों कव्वा—घी खिचड़ी गर्म खाना है इसे माघमें खाना चाहिये। बिना स्त्रीके ससुरारमें जानेसे क़दर नहीं होती। बिना भादोंके झूला नहीं डालना चाहिये; जो यह तीन काम करता है, वह मूर्ख है।

बे मेहकी डामरी, घोड़ा बिना लगाम। बे माथके लश्कर तीनों महल निकाम—बिना वर्षाका खेत जोतना, बिना लगामका घोड़ा, बिना सेनापतिकी सेना, ये तीनों बेकाम हैं।

बेलके मारे बबूल तले, बबूलके मारे बेलतले—अभागा मनुष्य सब जगह ठोकर खाता है।

बेल पका तो कौवेके बापको क्या?—जब कोई मनुष्य ऐसे कामको तारीफ़ सुने जिसमें वह दख़ल न दे सके वा उसका कुछ लाभ न हो, तब क०। कौवा बेलको अपनी चोंचसे नहीं तोड़ सकता।

बेल फूटा राई राई हो गया—आपसमें फूट होनेसे मनुष्यकी क़दर नहीं होती।

बेवक़ूफ़ोंका दरया खुल गया—जब कोई मुर्खताकी बात करे, तब क०।

बे वसीले नौकरी नहीं होती—बिना सिफारिसके नौकरी नहीं लगती।

बे वक्त की शहनाई, मुए कूढ़ने बजाई-जब कोई बेमौके बात कहे, तब क०।

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसरकी बात।
जैसे बरनत युद्धमें रस सिंगार न सुहात। (वृन्द)

बे शरमको दुख नहीं कंजूसको सुख नहीं—स्पष्ट।

बेसवा सती, न कागा यती—स्पष्ट।

बेसिरी फौज—बिना सेनापतिके फौज किसी कामकी नहीं। बिना नेताके जनता कुछ नहीं कर सकती।

बेश्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय—बेश्या कम उम्रकी और जोगी ज्यादा उम्रका अच्छा समझा जाता है।

एक पचीस वर्षका युवा पुरुष किसी वेश्याके यहाँ गया। वेश्याकी उम्र पचास वर्ष की थी। जब युवकने वेश्यासे उसकी उम्र पूछी तो उसने कहा कि दस और दस और दो, अर्थात् अपनी उम्र बाईस वर्षकी बताई। जब वेश्याने युवककी उम्र पूछी तो उसने कहा कि तुम्हारे हिसाबसे मैं अभी पैदा ही नहीं हुआ।

बेहयाईका बुरका मुंहपर डाल लिया है—बेशर्म आदमीको क० ।

बेहयाके नीचे रूख जमा उसने जाना छांह हुई—उस बेशर्मको कहते हैं जो बुरे कामको भी अच्छा समझता है।

बैंगनोंका नौकर नहीं हूं आपका नौकर हूं—ठकुर सुहाती कहनेवालेको क०।

किसी अमीरने अपने मुसाहिबसे कहा कि बैंगनकी तरकारी बहुत अच्छी होती है, इसमें यथेष्ट गुण है। वैद्यकमें भी इसकी तारीफ़ लिखी है। "हन्ताकं बात नाशकम्"। उस मुसाहिबने भी हांमें हां मिला दी। बाद अमीरने बैंगनकी निन्दा की क्योंकि यह कटीला होता और इसके खानेसे कफ़ होता है; इसके अलावा और भी इसमें अनेक अवगुण हैं। मुसाहिबने कहा 'जी हुज़ूर! बैंगनकी तरकारी अच्छी नहीं होती।' इसपर अमीरने कहा, क्यों मुसाहिब! जब मैंने इसकी तारीफ़की तो तुमने भी की, और मेरे निन्दा करनेपर तुमने भी निन्दा की। इसका क्या कारण है? इसपर मुसाहिबने कहा 'हुज़ूर! मैं आपका नौकर हूं न कि बैंगनोंका। यदि मालिक दिनको रात बतावे तो नौकरको उचित है कि उसी वक्त चन्द्रमा और तारे भी दिखा दे।' उमरा जो कहे रात तो हम चांद दिखा दें.........

बैठकर सैर मुल्ककी करना, यह तमाशा किताबमें देखा—पुस्तक पढ़नेसे सब मुल्कोंका हाल जाना जा सकता है।

बैठा बनियां क्या करे, इस कोठीके धान उस कोठीमें धरे—जब कोई ख़ाली बैठा आदमी व्यर्थका काम करे, तब क०।

बैठा बनियां सेर बाट तौले } उ० दे०। करनेवाला
बैठी बुढ़िया मंगल गाय } कुछ न कुछ करता ही रहता है।

बैठे बनियांकी पहिचान, हेरफेर कोठीमें धान—दे० "बैठा बनियां"

बैठेसे तो क़ारूंका ख़ज़ाना भी ख़ाली हो जाता है—जब कोई रोज़गार नहीं करता और बैठे खाता है, तब क०।

क़ारूं एक मुसल्मान बादशाह था कंजूस हो गया है। उसने यथेष्ट धन जमा किया था कि इस्लामके ... कि जो मुर्देके मुंहमें रुपया रक्खा जाता है उसे भी क़ब्रें खुदवा कर निकलवा लिया था।

बैठेसे बेगार भली—ख़ाली बैठे रहनेसे मुफ़्तमें काम करना अच्छा।

(१) माना आदिमसे है दुकान्दार अच्छा।
यानी मजबूरसे मुख़्तार अच्छा।
लेकिन एक सख़्त रोग बेकारी है।
ऐ यार है बेकारसे बेगार अच्छा। (रंजूर)

(२) ज़िन्दगीकी मदद है इक बरस,
ख़ैर बिलफ़र्ज़ थोड़री ही सही।
अब तो अकबर बसा है गंगातीर,
न हो काम दिल्लगी ही सही। (अकबर)

बैठो देवल सिखरपर बायस गरुड़ न होय—(वृन्द) मंदिरकी चोटीपर बैठनेसे कौवा गरुड़ नहीं होता। नीचको ऊंचे स्थानमें बैठा देनेसे ऊंचा नहीं होता।

बैद करे बैदाई, चंगा करे ख़ुदाई—(१) ईश्वर आराम करता है डाक्टर फ़ीस लेते हैं। (२) वैद्य अपनी विद्या दिखाता है पर आराम ईश्वर ही करता है।

(१) अतब्बाका तो अपनी फ़ीस लेना और दवा देना।
ख़ुदाका काम है लुत्फ़ो करम करना शफ़ा देना।
(अकबर)

अतब्बा=वैद्य। लुत्फ़ो करम=दया। शफ़ा=आराम

(२) मैं यह नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती।
कहता हूं कि बे-हुक्मे ख़ुदा कुछ नहीं करती॥
(अकबर)

बैदकी बैदाई गई, कानीकी आंख गई—जब काम बिगड़नेपर मजूरी न दी जाय, तब क०।

बैन तेय बलि जिमि चह कागू, जिमि शशि चहहिं नाग अरि भागू—(तुलसी) ऊंची आकांक्षा पर क०।

बैर लेनको चन्द्रतें निज घर नाहिं जलाय—बलवान शत्रुसे बदला लेनेमें यदि चूक हो जाय तो क्रोध या लज्जाके मारे अपनी ही हानि न कर डालनी चाहिए।

बैरीका बोल, बसूलेका छोल—दुश्मनके बचन बसूलेकी तरह कलेजेको छीलते हैं।

बैरी तजे न हाड़ खाये—ख़ुशामद करनेसे भी दुश्मन नहीं छोड़ता।

चाहते हैं, कठोरको कोई नहीं।

बेटा बेटी वसका अच्छा—आज्ञाकारी लड़की या लड़का प्रशंसनीय है।

बेटा मरियो, पर तिस्सर न पड़ियो—(ज०) जीनेकी अपेक्षा तेंतरा लड़केका मर जाना अच्छा है क्योंकि तेंतरे लड़केका जीना अशुभ समझा जाता है।

बेटा लायगा चमारी, वह भी बहू कहलायगी हमारी—खराब चीज़के सराहनेपर क०।

बेटा हुआ जब जानिये, जब पोता खेले बार—लड़केका होना तभी सार्थक है जब घरमें पोता खेलता फिरे, क्योंकि पोता हो जानेपर वंश वृद्धिकी आशा रहती है।

बेटी और ककड़ीकी बेल बराबर है—दोनों बहुत जल्दी बढ़ती हैं।

बेटीका धन निमाना है आते भी रुलाय, जाते भी रुलाय—लड़की पैदा होनेपर भी रंज होता है और जब उसका ब्याह होकर वह अपने घर जाती है, तब भी रंज होता है।

बेटीका भला चाहे तो बोल जमाई लाल की जै—जमाईको राज़ी रखनेसे बेटी सुखसे रहती है।

बेटी चमारकी नाम रजरनियां—(पू०) जाति या गुणके विरुद्ध जब नाम रक्खा जाय, तब क०।

बेटीने किया कुम्हार, अम्माने किया लुहार, न तुम चलाओ हमार, न हम चलायें तुम्हार—स्पष्ट।

बेटेसे नाम चलता है—वंश बढ़ता है।

बे थांग चोरी नहीं होती—बिना भेदके चोरी नहीं होती। थांग=भेद। यानी दूसरेसे मालका पता या सहारा पाये बिना चोर चोरी नहीं करता।

बेदर्द क़साई, क्या जाने पीर पराई—निष्ठुर व्यक्ति पर क०।

बेदिल नौकर, दुश्मन बराबर—स्पष्ट।

बे माघे घी खिचड़ी खाय, बे मेहरी ससुराले जाय। बे भादों पेन्हाई पञ्चा, कहें घाघ ये तीनों कञ्चा—घी खिचड़ी गर्म खाना है इसे माघमें खाना चाहिये। बिना स्त्रीके ससुरारमें जानेसे क़दर नहीं होती। बिना भादोंके झूला नहीं डालना चाहिये; जो यह तीन काम करता है, वह मूर्ख है।

बे मेहकी डामरी, घोड़ा बिना लगाम। बे माथके लश्कर तीनों भइल निकाम—बिना वर्षाका खेत जोतना, बिना लगामका घोड़ा, बिना सेनापतिकी सेना, ये तीनों बेकाम हैं।

बेलके मारे बबूल तले, बबूलके मारे बेलतले—अभागा मनुष्य सब जगह ठोकर खाता है।

बेल पका तो कौवेके बापको क्या?—जब कोई मनुष्य ऐसे कामकी तारीफ़ सुने जिसमें वह दख़ल न दे सके या उसका कुछ लाभ न हो, तब क०। कौवा बेलको अपनी चोंचसे नहीं तोड़ सकता।

बेल फूटा राई राई हो गया—आपसमें फूट होनेसे मनुष्यकी क़दर नहीं होती।

बेवक़ूफ़ोंका दरबा खुल गया—जब कोई मूर्खताकी बात करे, तब क०।

बे वसीले नौकरी नहीं होती—बिना सिफारिसके नौकरी नहीं लगती।

बे वक़्त की शहनाई, मुए कूढ़ने बजाई—जब कोई बेमौके बात कहे, तब क०।

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसरकी बात।
जैसे बरनत युद्धमें रस सिंगार न सुहात। (वृन्द)

बे शरमको दुख नहीं कंजूसको सुख नहीं—स्पष्ट।

बेसवा सती, न कागा यती—स्पष्ट।

बेसिरी फौज—बिना सेनापतिके फौज किसी कामकी नहीं। बिना नेताके जनता कुछ नहीं कर सकती।

बेश्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय—वेश्या कम उम्रकी और जोगी ज्यादा उम्रका अच्छा समझा जाता है।

एक पचीस वर्षका युवा पुरुष किसी वेश्याके यहाँ गया। वेश्याकी उम्र पचास वर्ष की थी। जब युवकने वेश्यासे उसकी उम्र पूछी तो उसने कहा कि दस और दस और दो, अर्थात् अपनी उम्र बाईस वर्षकी बताई। तब वेश्याने युवककी उम्र पूछी तो उसने कहा कि तुम्हारे हिसाबसे मैं अभी पैदा ही नहीं हुआ।

बेहयाईका बुरका मुंहपर डाल लिया है—बेशर्म आदमीको क० ।

बेहयाके नीचे रूख जमा उसने जाना छांह हुई—उस बेशर्मको कहते हैं जो बुरे कामको भी अच्छा समझता है ।

बैंगनोंका नौकर नहीं हूं आपका नौकर हूं—ठकुर सुहाती कहनेवालेको क० ।

किसी अमीरने अपने मुसाहिबसे कहा कि बैंगनकी तरकारी बहुत अच्छी होती है, इसमें यथेष्ट गुण हैं । वैद्यकमें भी इसकी तारीफ़ लिखी है । "हन्ताकं गाल नायकम्" । उस मुसाहिबने भी हांमें हां मिला दी । बाद अमीरने बैंगनकी निन्दा की ; क्योंकि यह बटीला होता और इसके खानेसे कफ़ होता है ; इसके अलावा और भी इसमें अनेक अवगुण हैं । मुसाहिबने कहा-'जी हुज़ूर ! बैंगनकी तरकारी अच्छी नहीं होती ।' इसपर अमीरने कहा, क्यों मुसाहिब ! जब मैंने इसकी तारीफ़की तो तुमने भी की, और मेरे निन्दा करनेपर तुमने भी निन्दा की । इसका क्या कारण है ? इसपर मुसाहिबने कहा 'हुज़ूर ! मैं आपका नौकर हूं न कि बैंगनोंका । यदि मालिक दिनको रात बतावे तो नौकरको उचित है कि उसी वक्त चन्द्रमा और तारे भी दिखा दे ।' जैसा कि—कहें रात तो हम चांद दिखा दें.........

बैठकर सैर मुल्ककी करना, यह तमाशा किताबमें देखा—पुस्तक पढ़नेसे सब मुल्कोंका हाल जाना जा सकता है ।

बैठा बनियां क्या करे, उस कोठीके धान उस कोठीमें धरे—जब कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थका काम करे, तब क० ।

बैठा बनियां सेर बांट तौले
बैठी बुढ़िया मंगल गाय } उ० दे० । करनेवाला कुछ न कुछ करता ही रहता है ।

बैठे बनियांकी पहिचान, हेरफेर कोठीमें धान—दे० "बैठा बनियां"

बैठेसे तो क़ारूंका ख़ज़ाना भी ख़ाली हो जाता है—जब कोई रोजगार नहीं करता और बैठे खाता है, तब क० ।

क़ारूं एक मुसलमान बादशाह बड़ा कंजूस हो गया है । उसने बहुतसा धन जमा किया था कि बादशाहने भी ... जो मुर्देके मुंहमें रुपया रक्खा जाता है उसे भी क़बरें खुदवा कर निकलवा लिया था ।

बैठेसे बेगार भली—ख़ाली बैठे रहनेसे मुफ़्तमें काम करना अच्छा ।

(१) माना आदिमसे है दुकान्दार अच्छा ।
यानी मज़दूरसे मुख़्तार अच्छा ।
लेकिन एक सख़्त रोग बेकारी है ।
ऐ यार है बेकारसे बेगार अच्छा । (रंजूर)

(२) ज़िन्दगीको जरूर है इक शग़ल,
और मिलनेको नौकरी ही सही ।
अब तो अकबर बना है गैयासीर,
न हो काम दिल्लगी ही सही । (अकबर)

बैठो देवल सिखरपर वायस गरुड़ न होय—(वृन्द) मंदिरकी चोटीपर बैठनेसे कौवा गरुड़ नहीं होता । नीचको ऊंचे स्थानमें बैठा देनेसे ऊंचा नहीं होता ।

बैद करे बैदाई, चंगा करे ख़ुदाई—(१) ईश्वर आराम करता है डाक्टर फ़ीस लेते हैं । (२) वैद्य अपनी विद्या दिखाता है पर आराम ईश्वर ही करता है ।

(१) अतब्बाका तो अपनी फ़ीस लेना और दवा देना ।
ख़ुदाका काम है लुत्फ़ो करम करना शफ़ा देना ।
(अकबर)

अतब्बा=वैद्य । लुत्फ़ो करम=दया । शफ़ा=आराम

(२) मैं यह नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती ।
कहता हूं कि बे-हुक्मे ख़ुदा कुछ नहीं करती ।
(अकबर)

बैदकी बैदाई गई, कानोंकी आंख गई—जब काम बिगड़नेपर मजूरी न दी जाय, तब क० ।

बैन तेय बलि जिमि चह कागू, जिमि शशि चहहिं नाग अरि भागू—(तुलसी) ऊंची आकांक्षा पर क० ।

बैर लेनको चन्द्रतें निज घर नाहिं जलाय—बलवान शत्रुसे बदला लेनेमें यदि चूक हो जाय तो क्रोध या लज्जाके मारे अपनी ही हानि न कर डालनी चाहिए ।

बैरीका बोल, बसूलेका छोल—दुश्मनके वचन बसूलेकी तरह कलेजेको छीलते हैं ।

बैरी तजे न हाहा खाये—ख़ुशामद करनेसे भी दुश्मन नहीं छोड़ता ।

छाड़ी न, वह भई बिहाल, रिस रसमें उपजी हो, लाल।
कहै पखानो लग मन भाये बैरी तजें, न छाड़ा खाये।
(प्रौढ़ा सु: को० लो० र० को०)

बैरी बोल घिनावने, मरिये अपने काल—मौत तो अपने समयपर ही आती है पर बैरीके बोल नहीं सहे जाते, कोसनेसे कोई नहीं मरता तथापि कोसना बुरा मालूम पड़ता है।

बैरी मारिये फागुनकी बहार—दुश्मनको मारनेसे आनन्द होता है।

बैरी लागे हाथ तो, छोड़ न लेकर माल। उसकी जड़को मूलही, बाहर फेंक निकाल—स्पष्ट।

बैरी संग न बैठिये, पीकर मद और भंग, जो खोवा है बैठना, जब बैरीके संग—नशा पीकर बैरीके पास न बैठ, नहीं तो जान जानेका डर है।

बैरीसे बच, प्यारेसे रच—दुश्मनसे बचकर और हितूसे मिल कर रहना चाहिए।

बैलका बैल गया, नौ हाथका पघा गया—पूरा नुक़सान हो, तब क०।

बैल न कूदा कूदोगौन, यह तमाशा देखे कौन? जब किसीसे कोई मर्मभेदी बात कही जाय और वह तो उसका उत्तर न दे पर दूसरा ही चिढ़कर बोल उठे, तब क०। बिना ज़रूरत बोल उठनेपर क०।

बोलै निठुर पिया बिनु दोष। आपुहि तिय बैठी गहि रोष
कहै पखानो लहि गहि मौन। बैल न कूदो कूदी गौन
(लो० र० को)

बैल बधिया, साझे अधिया—(कृ०) बैल और बधिया दोनों बटवारेके समय समान समझे जाते हैं।

बैल सरकारो, यारोंकी टिटकारी—दूसरेकी चीज़ से मन बहलानेपर क०।

बैले दीजे जायफल क्या बोले क्या खाय—मूर्ख गुणकी क़दर नहीं करता।

बैसाख नन्दन—गधेको क०।

रासभो गर्दभश्च व खरो बैशाख नन्दनः।

बोटी देकर, बकरा लेते हैं—(व्य०) खूब नफ़े पर क०।

बोटी नहीं तो शोरुवा ही सही—नहींसे कुछ मिलना अच्छा है।

बोया गेहूं उपजा जौ—(कृ०) भलाईके बदले, बुराई पानेपर क०।

बोया न जोता मुफ़्तका पोता—(मु० ज०) (१) अच्छे भाग्यपर क०। (२) खेत बोया जोता गया ही नहीं नाहक़ ज़मीदारका पोत (लगान) देना पड़े, तब भी क०।

बोये आम फले भाटा—दे० "बोया गेहूं उपजा जौ"

बोलता चाकर मुनीमके आगे गूंगा—कमज़ोर दिलके आदमीपर क०।

बोलता है जब तलक है बोलता—जब तक सांस तब तक बात।

बोलतीपर सदमा है—दुःखसे अत्यन्त पीड़ित होने पर क०।

बोलती बंद हो गई—(१) मर गया। (२) गाली भी है।

बोलतेकी आशनाई है—प्रेम जीवन काल तक रहता है। मित्रके मरनेपर जब दुःख प्रगट किया जाता है, तब क०।

बोलहिं बचन मधुर जिमि मोरा, खाहिं महा अहि हृदय कठोरा—(तुलसी) स्पष्ट।

बोली है बहु भांतकी, जो कोइ बोले जान, हिये तराज़ू तोलके, मुखसे बाहर आन—(कबीर) बात विचारके कहना चाहिये।

ओठ जीभ एकत्र करि बांट सहारे तोलिये।
बैताल कहै बिक्रम सुनो, जीभ संभारे बोलिये॥

बोलेके न चालेके, मैं तो सूनेके भली—(पू० ज०) सुस्त और आलसी स्त्रीको क०।

बोले तो बीबी मेरी, नहीं तो दरकार नहीं तेरी—स्पष्ट।

बोहनी ठोनी रद बोला—(व्य०) बोहनी होनेसे बला टलती है।

बौहरेकी राम राम यमका संदेशा—क्योंकि तगादा ही तो करेगा।

बौना जोरूका खिलौना—स्पष्ट। नाटे आदमीको चिढ़ानेके लिये क०।

ब्याज और भाड़ा दिन रात चलता है—(व्य०) स्पष्ट।

ब्याजके आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता—(ब्य०) क्योंकि यह दिन रात चलता है।

ब्याज खोर खुदाका चोर—(मु०) मुसलमानोंमें ब्याज खाना हराम है, इसलिये क०।

ब्याज बढ़ावे धन घना, राढ़ बढ़ावे छो। जैसे गंधक आगमें, गिरे तो दूनो हो—स्पष्ट।

ब्याज मूलतें प्यारो होय—(ब्य०) (१) मूलसे ब्याज प्यारा होता है (२) बेटेसे पोता अधिक प्यारा होता है।

ब्याज मोटा, जमामें टोटा—(ब्य०) ज्यादे ब्याज-पर रुपया लगानेसे असल भी डूबनेका डर रहता है।

ब्याहका असगुन मालूम भये लहोरेमें आये भट्टा (पू०) स्पष्ट।

ब्याह न कराव, झूंठ मूंठका खाव—किसी कामके समाप्ति वा आरंभ होनेके पहिले जब कोई अपना स्वार्थ पूरा करना चाहता है, तब क०।

ब्याह नहीं किया तो क्या, बारात तो गये हैं—हमने यह काम न किया तो क्या दूसरोंको करते तो देखा है; अथवा जब किसीको तानेको तौरपर कहे कि तुम इस कामको क्या जानो, तब क०।

ब्याह पीछे पत्तल भारी—दे० "बरात पीछे"।

ब्याहमें खाई बूर, फिर क्या खायगी धूर—जब अच्छी दशामें कष्टसे रहे तो फिर सुख कब मिलेगा?

ब्याहमें चौदका लेखा—हर एक चीज़के लिये समय है।

ब्याह हुआ नहीं गौनेका झगड़ा—काम करनेसे पहिले मजूरीके लिये झगड़ा करे, तब क०।

ब्याही छोड़ दे मंगनी न छोड़े—जिस लड़कीसे सगाई ठहरी हो यदि उसे कोई दूसरा ही ब्याह ले जाय तो बहुत अपमान होता है, इसीलिये क०। यदि कुछ अनबन भी हो जाय तो ब्याहके छोड़ दे पर मंगी हुई न छोड़े।

ब्याही न बरात चढ़ी, डोलीमें बैठी न चूं चूं हुई-बिना ब्याहीको क०।

ब्याही बेटीको घर रखना और हाथी बांधना बराबर है—लड़की और जमाईको घरमें रखनेसे बहुत खर्च उठाना पड़ता है, इसलिये क०।

ब्याही बेटी पड़ोसन दाखिल—क्योंकि फिर वह दूसरे घरकी हो जाती है।

ब्याही मरी कुंवारी भाग—क्योंकि ब्याहीके मर जानेपर कुंवारीका ब्याह अब उसी घरसे होगा। जब एकके नाश हो जानेपर दूसरेको लाभ हो, तब क०।

भ

भइल ब्याह मोर करबा का—(भो०) काम हो जानेपर जब दूसरेको उचित मांग पूरी नहीं की जाती, तब क०।

भई अंधियारी फूली छाती चीन्ह पड़े रांड़ अहि-वाती—भ्रष्ट विधवाको क०

भई गति कीट भृंगकी नाईं—भृंगी दूसरे कीटोंको भी अपनासा ही बना लेता है। जब कोई अपना स्वरूप छोड़कर दूसरेमें मिल जाय, तब क०।

जबसे लाग्यो चित्त में स्याम। तबतें लग्यो चित यति वाम॥
लोग उक्ति ज्यों कहत सुनाय। लखत कीट भृंगी होइ जाय॥
(चित्र दर्शन। लो० र० को०)

भई गति सांप छछुन्दर केरी—जब किसी कामको करते बने न छोड़ते अर्थात् दोनों हीमें आशंका जान पड़े, तब कहते हैं। दे० "उगले तो अंधा"

(१) राम काम दीक दुख दाई, चली कौनकै चढ़ि सुमाई।
कहैं पखानों सो तू घर घर, भई मोहि गत सांप छछुन्दर।
(लो० र० को०)

(२) भई छछुन्दर सर्प गति, उगलत बनै न खात (तुलसी)

भंग पी और डंड पेल—भंगेड़ी अक्सर, भांगकी तारीफ़में कहा करते हैं।

कूंडी सोटेको बजा और देख टुक कुदरतका खेल।
छोड़ सब कामोंको ग़ाफ़िल भंग पी और डंड पेल।
(नज़ीर)

भंग पीना आसान है मौजें जान मारती हैं—बिना समझे किसी कामका कर डालना सहज है, पर उसका परिणाम भोगना कठिन है।

(१) विजया सेवी सुगम है मौजें कठिन निदान।
(लो० र० को०)

(२) भांग भखन है सुगमपर, लहर कठिन ही होय (वृंद)

भंगीकी जात क्या, झूठेकी बात क्या—झूठेका कोई विश्वास नहीं करता।

भंगीयाँ दर बाग़ रफ़्तन्द बर गुठली सब खा—(फ़ा०) कोई भँगेड़ी बग़ीचेमें गये और भाँगके नशेमें बेर गुठली सब खा गये। भाँग पीनेवालोंपर ताना है

भकुआ भीगे गाँवके गोंयड़ा—गंवार आदमीपर क०।

भगवतको भगवत ही जाने—गुणी ही गुणकी क़द्र जानता है।

भगले चोर कुठरिया हाथ—(भो०) चोरके जो कुछ हाथ लगता है उसीको लेकर भाग जाता है।

भजन और भोजन एकान्त भला—स्पष्ट।

भजन कह्यो तातें भज्यो, भज्यो न एको बार।
दूर भजन जातें कह्यो, सोते भज्यो गंवार—(विहारी) भजनेको कहा उसीसे भागा, एक बार भी उसे न भजा। जिससे दूर भागनेको कहा, रे गवाँर मन! तने उसीको भजा। तात्पर्य यह है कि भगवानको न भजा और विषयमें लिप्त रहा।

भट पड़े वह ज़माना, नतनीको घूरे नाना—स्पष्ट।

भट पड़े वह सोना, जिससे टूटे कान—जिस चीज़से हानि हो, अच्छी होनेपर भी उसे काममें न लावे। जिस लड़के या रिश्तेदारसे बहुत कष्ट पहुंचे उससे या जिस धनके उपार्जन करनेमें बहुत कष्ट हो, उसपर क०।

करिये सुख कों होत दुख, यह कहु कौन सयान।
वा सोनेको जारिये जासों टूटे कान। (वृंद)

भट भटियारी बेसवा तीनों जात कुजात।
आतेका आदर करें जात न पूंछे बात—स्पष्ट।

भटा एकको पित करे करे एकको बाय—दे० 'किसीको बैंगन'।

भड़क भारी, खीसा खाली—बाहरी लिफ़ाफ़े पर क०।

भड़भड़िया अच्छा, पेट पापी बुरा—साफ़ साफ़ कहनेवाला अच्छा, मनका कपटी अच्छा नहीं।

भड़भूजनकी लड़की, केसरका टीका—कर्मानुसार जब जाति न हो, तब कहते हैं। बेजोड़ कामपर भी क०।

भद्रा घा घर घोयंगे, जिनके हैं नौ निद्ध। अट कपाली दारिद्री, जब चाले तब सिद्ध—मुहूर्त और शकुन देखना धनवानके लिये है दरिद्रके लिए नहीं।

भयदायक खलको प्रिय बानी, जिमि अकाशके कुसुम भवानी—स्पष्ट।

भर दे भर पावे, काल कण्टक पास न आवे—अधिक पुण्य करनेसे अधिक फल मिलता है।

भर पेट खाना, नींद भर सोना—आलसी तथा पेटू आदमीपर क०।

भर माँग सेंदुर या झटपट रांड—या तो पूरी तरहसे सुहागिन ही हो या निपट रांड़ ही हो जाय दे० "भर हाथ"

भरमा भूत शंका डायन—(१) भ्रम और शंका दोनों ही हानिकारक हैं। (२) वास्तवमें भूत और डायन कुछ नहीं है केवल भ्रम मात्र है।

इसपर एक दृष्टान्त इस प्रकार है:—किसी वैश्यके एक लड़की थी। दीवालीके एक दिन पहले लड़की एक लोटेमें गेरु घोलकर बिना किसीको कुछ कहे पिताकी खटियाके पास इस ख़्यालसे रख सोनेको चली गई कि सवेरे दीवारमें दीवाली काढूंगी। सन्ध्याके समय उस वैश्यकी खटियाके पास उसकी स्त्री सदैव एक लोटा पानी भरकर रख दिया करती थी। उस दिन सिरहानेमें लोटा देखकर उसने समझा कि लड़कीने रख दिया होगा और वह भी सो रही। प्रातःकाल होते ही वह वैश्य उस लोटेको उठाकर जङ्गलको ले गया। आबदस्त ले चुकनेके बाद क्या देखता है, कि रुधिर बह रहा है। इसपर उसने जाना कि यह रुधिर दस्तमें आया है, मालूम होता है कि किसीने जादू किया है या मुझे कोई कठिन बीमारी हुई है। यह सोचकर वह अत्यन्त घबरा उठा और उसकी सभी सुधिबुधि जाती रही। बड़ी कठिनतासे वह घर तक पहुंचा और खाटपर पड़ रहा। स्वामीकी ऐसी दशा देखकर स्त्री पूछती है, पर वह कुछ जवाब नहीं देता। बार बार स्त्रीके पूछनेपर उसने झुंझलाकर कहा, 'शोक! घड़ी दो घड़ीमें मेरा प्राणान्त होगा, क्योंकि मेरे सवा सेर लहू गया है।' यह सुनके स्त्री भी आपेमें न रही और वैद्य हकीमके बुलानेकी कोशिश करने लगी। इतनेमें उसकी लड़की भी जाग उठी और लोटा ढूंढ़ने लगी। लोटा नहीं मिलनेपर लड़कीने रोना शुरू कर दिया। जब उसकी माने रोनेका कारण पूछा तो लड़कीने जवाब दिया कि कल मैंने एक लोटेमें गेरु घोलकर यहां

रख दिया था, न मालूम क्या हो गया। वैद्यको जब यह मालूम हुआ कि वह सड्ड न था, पर गेंद था, तब उसका सारा दुःख जाता रहा और वह आपेमें आ गया। केवल भ्रममें पड़ कर ही उसे इस तरहकी बेचैनी हो गई थी और अपनेको थोड़ी देर बाद यमराजका मेहमान समझ बैठा था।

भर हाथ चूड़ी, परसूं रांड़—(पू० ज०) बद चलन औरतपर क०। सुहागिन बनो या रांड़ हो जाओ अर्थात् तगादा सहो या हिसाब चुका दो। साफ़ कहनेके लिये क०।

भरा कहार, ख़ाली कुम्हार, तेज़ जाता है—एक बोझ भारी होनेके कारण दूसरा हल्का होनेके कारण जल्दी चलता है।

भरा सो धरा—जब भर जाय तब अलग धर दो दूसरेको भरो अर्थात् जो काम पूरा हो जाय उसे फिर दुहरानेमें समय नष्ट न करो।

भरी थालीमें लात मारना—जब कोई अभाग्यवश अपने लगे कामको छोड़ देता है, तब क०।

भरी मुट्ठी सवा लाखकी—बात ढकी रहनेसे भरम बना रहता है; भरम न खोलनेके लिये क०।

भरेको भरता है—धनमें धन मिलता है।

भरे पेटपर शक्कर खारी—पेट भरा रहनेपर अच्छीसे अच्छी चीज़में भी स्वाद नहीं आता।

भरे ब्याहमें धूर खाई, तो फिर क्या धूर खाय—जब अच्छी दशामें भी कष्टसे रहे तो सुख कब मिलेगा।

भरे समुन्दर घोंघा प्यासा—सुखकी अवस्थामें रहकर भी यदि दुःख भोगे, तब क०।

रही अकेली भरी सभामें। प्यासी रही भरी गंगामें (छाली)

भरे समुन्दर घोंघा हाथ—पूरा लाभ होनेकी जगहसे कुछ न मिले, तब क०।

भरोसेकी भैंस, पड़ा बिआनी—मनुष्य जैसा सोचता है वैसा नहीं होता।

भल अनभल जानै सब कोई, जो जेहि भाव नीक तेहि सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

भल जनमल, भल पंडित भइल—(पू०) जो पंडित होय उसीका जन्म सफल है।

भल मरलस भल पिल्लू पड़ल—(पू०) पापी मनुष्य पर क०।

भल माथ मुड़ौलन, भल बेल गिरलैन—(पू०) अभागेको क०।

भलाईकर बुराईसे डर—स्पष्ट।

भला कर भला हो, सौदाकर नफ़ा हो—स्पष्ट।

भला किया सो खुदाने, बुरा किया सो बन्देने—(१) अच्छे काम सब ईश्वरके हैं बुरे काम सब मनुष्य करता है। (२) कृतघ्नको भी क० जो किसीके किये सलूकको नहीं मानता।

भला मानस घरमें बड़ा, रिज़ालेने जाना मुझसे डरा—जो जैसा रहता है वह वैसा ही सोचता है।

भला हुआ दीदी गौने गई, दीदीकी फरिया मइका भई—(पू० ज०) ननद जब अपने ससुराल चली जाती है तो कुछ आज़ादी आ जाती है।

भली भइल पियाके बाघ मारल, जे बेगारीसे बचल—(पू० ज०) दे० "चोर गली"।

भले आदमीकी मुर्गी टके टके—भला आदमी मुलाहिज़ेमें मारा जाता है।

भलेका ज़माना ही नहीं—जब किसीके साथ भलाई करनेका उल्टा फल हो, तब क०।

भलेकी बातें रसकी खानि,बुरेकी बातें दुःख निदान स्पष्ट।

भलेके भाई, बुरेके जमाई—अच्छेके भाई बुरेके जमाई बनो।

तौविन सों डीये बांके इस बांके न डों
हरिचन्द अगद दगाद अभिमानीके।

भले घोड़ेको एक चाबुक, भले आदमीको एक बात—अक़्लमन्दोंके लिए इशारा काफ़ी है।

भले दिन आयँगे, तो घर पूँछते चले आयँगे—लक्ष्मी आपसे आप चली आती है।

भले बाबा बन्द पड़ी, गोबर छोड़ कसीदे पड़ी—(ज०) ग़रीबकी लड़की धनी घरमें ब्याही जाय तो उसकी पहिली सी स्वाधीनता नहीं रहती; गोबर थापनेमें आज़ादी थी वह कसीदा काढ़नेमें न रही।

भले बुरेका साथ क्या?—नहीं निभ सकता।

भले बुरे सब एकसे, जब लौं बोलत नाहिं। जानि परत है काक पिक, ऋतु बसन्तके माहिं–(वृन्द) कामसे मनुष्यका गुण अवगुण जाना जाता है।

तामदं सुख़न न गुफ़्ता बाशद,
ऐबो हुनरश निहुफ़्ता बाशद।

भले भलाई पै लहहिं, लहहिं निचाई नीच। सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच–(तुलसी) अर्थ स्पष्ट है; यह प्रायः दुष्ट जनों पर कही जाती है।

(१) जो जाही सों रमि रहै, सो तेहि आदर देत।
कोकिल अंबहि लेत है, काक निबौरी लेत॥ (वृन्द)
(२) भ्रमरा मधुमिच्छन्ति व्रणमिच्छन्ति मक्षिका।
सज्जना गुणमिच्छन्ति दोषमिच्छन्ति पामरा॥

भले भलेका सब कोई साथी–अच्छेके सब साथी हैं।

भले भवन अब बायन दीन्हा–दे० 'अच्छे घर'।

भले मानुषकी सब तरह ख़राबी है–स्पष्ट।

भले संग बैठिये, खाइये नागर पान। बुरे संग बैठिये, कटाइये नाक और कान–अच्छी संगतमें बैठनेसे लाभ और बुरी संगतमें बैठनेसे हानि होती है।

भलो भयो मेरी मटुकी टूटी, मैं दही बेचनसे छूटी जब कोई काम भारी पड़ जाय, और उससे रिहाई हो, तब कहते हैं। जब कोई काम अपनी मूर्खतासे बिगड़ जाता है तो अपना दोष छिपानेके लिये भी कहते हैं मानों हमने ऐसा जानके किया है।

भलौ न होई दुष्ट जन, भलो कहै जो कोय। विष मधुरौ मीठौ लवन, कहे न मीठौ होय–(वृन्द) किसीके कहनेसे बुरा मनुष्य अच्छा नहीं हो सकता।

भवन बनावत दिन लगे, ढावत लगे न वार–(वृन्द) बनाते देर लगती है बिगाड़ते देर नहीं लगती।

भसकड़के दामादको भात ही मिठाई–पेटार्थूको क०। क्योंकि उसे तो बहुत खानेसे काम है।

भाई, भतीजा, भानजा, भाट, भांड़, भुईंहार। इतने झंझा छोड़कर, फिर करिये व्यवहार–स्पष्ट।

भाइयोंके दंड मलो, भाइयोंकी खुशामद करो–जब कोई पहलवान कुश्ती मारता है तब उसकी जैजैकार मनानेके लिये लोग उसके दंड मलते हैं। जब कोई मनुष्य अपनी शक्तिके बाहर काम करने जाय और सफल न हो या जितनी डींग हांके उतना कर न सके, तब क०।

भाई ऐसन हितना, भाई ऐसन व रोना...(पू०) भाई सा मित्र और भाई सा शत्रु कोई नहीं।

भाई न दे भाव दे–(व्य०) बाज़ार-भाव चीज़ दे भाई समझके न दे अर्थात् व्यवहारमें मुलाहिज़ा न करे।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर चाव करे–कपटी मित्रको कहते हैं जो भाईसा भाव दिखावे और ऊपरसे तो प्यार करे पर भीतरसे जड़ काटे।

भाई भावका, नहीं अपने दावका–भाई वही है जो प्यार करे, वह नहीं जो अपना स्वार्थ देखे।

भाई वही जो विपद सहाय–स्पष्ट।

भाई सा दुश्मन नहीं, भाई सा मित्र नहीं–देखो "भाई ऐसन हितना"।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर–छींके पर वह चीज़ रखी जाती है जिसकी अभी कोई ज़रूरत नहीं। यहां भाई शब्दमें श्लेष है जिसका अर्थ भ्राता और मन पसंद है। इसलिए इसके दो अर्थ हैं। (१) भाई ही अपना होता है बाकी सब किनारे कर दिये जाते हैं। (२) जो चीज़ अच्छी लगी सो खाई बाक़ी उठाकर छींकेपर रख दी।

भांग कहे "मैं रंगी जंगी" पोस्त कहे "मैं शाहे जहां" अफ़ीम कहे "मैं चुन्नी बेगम, मुझको खाके जाय कहां"–(स्पष्ट) अफ़ीमका नशा छोड़नेसे नहीं छूटता, इसलिए कहते हैं।

भांग जनि देहु गवांरनको, हड़िया भर भात बिगाड़नको–भांगके नशेमें खाया बहुत जाता है, इसलिए क०।

भांड़ पुकारे पीरबस, मिस समझे सबकोय–भांड़ यदि पीड़ावश भी चिल्लाता हो तो उसे भी लोग नक़ल ही समझते हैं।

भांड़ों संग खेती की, गा बजाके अपनी की–भांड़ोंके साझेमें खेतीकी, उन्होंने गा बजाके अपनी

कर ली। जब कोई सीधा आदमी लफंगोंके साथ काम करे और उसका सब धन जाता रहे, तब कहते हैं।

भाखा जौन जाने ताहि शाखा मृग जानिये— (१) जो केवल भाषा ही जानता है (अर्थात संस्कृत नहीं जानता) वह बन्दरके तुल्य है। (२) जो भाषा (अर्थात् हिन्दी) नहीं जानता वह बन्दरके तुल्य है।

भागलपुरके भगोलिए, कहल गाँवके ठग। पटने के दिवालिए, तीनों नामज़द—स्पष्ट।

भागे जाहिं नाम रजपूत—(च०) नामानुसार कर्म न हो, तब क०।

भागते भूतकी लंगोटी भी बहुत है— } (व्य०)
भागे भूतकी मूछें भली— } जब सभी

जानेको हो तो उसमेंसे जो कुछ बच जाय वही लाभ है। जिससे कुछ भी मिलनेकी आशा नहीं उससे थोड़ा भी मिल जाये, तब क०।

भाग्यवानके खेतको जोत जात हैं भूत—नसीबवर का काम आप ही हो जाता है।

भागे हुए लश्करका मर्द पीछा नहीं करता— जो हार मान ले उसे न मारना चाहिए।

भाजीकी भाजी, क्या दूसरेकी मुहताजी— (ज०) इससे अधिक और क्या चाहिए।

भाजी पत्ता जे भखें, तिन्हें सतावे काम। दाल भात जे खात हैं, तिनकी जानें राम—स्पष्ट।

श्लोक—विश्वामित्र पराशरः प्रभृतयः वाताम्बुपर्णाशना।
ते पि स्त्री मुख पंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहंगताः॥
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधि युतं भुंजंत ये मानवा।
तेषामिन्द्रिय निग्रहो यदि भवेत्विंध्यस्तरेत् सागरे॥
(भर्तृहरि)

भाड़ लीपती जाय, हाथ कालेका काला— भाड़के लीपनेसे भी हाथ काला होता है। बुरेके साथ भलाई करने पर भी बुराई ही मिलती है।

भाड़ा व्याज दच्छना, पीछे पड़े कुच्छना—इन तीनोंको हाथके हाथ चुकाना चाहिए बाकी रहनेपर फिर वसूल नहीं होते।

भात खाकर जात पूंछना काम करनेके पहिले जांच करनी चाहिए, पीछे नहीं।

भात खाते हाथ पिराय—(ज०) सुकुमारतापर क०।

भात खाते बहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हनसे-स्पष्ट।

भात छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता— स्पष्ट।

मुनि धुनि प्यारी मत रतिराज,
चल्यो चहत पिय उचित काज।
कह्यो पठायो ज्यों जग भजे,
भात तजे पै साथ न तजे।
(प्रवत्स्यतपतिका। कौ० १० कौ०)

भात बिना है रांड़ रसोई, खांड़ बिना मनपूती। बिन घिउकी जिन रोटी खाई मानो खाई जूती-स्पष्ट।

भात होगा तो कौवे बहुत आ रहेंगे—धन होगा तो खानेवाले बहुत मिल जायंगे। (व्य०) माल होगा तो बहुत गाहक मिल जायंगे।

भादोंका भ्रूला एक सींग गीला एक सूखा— (कृ०) भादोंमें वर्षा कम होती है।

भादोंकी घाम, और साझेका काम—यह दोनों बुरे होते हैं।

भादोंकी छाछ भूतोंको, कातकी छाछ पूतोंको- (ज०) भादोंमें छाछ हानिकारक और कातिकमें गुण कारक होती है, इसीलिये क०। कातकी=कातिक महीने की।

भादोंकी धूपमें हिरण काले होते हैं—बदलीका घाम कड़ा होता है।

भादोंके मेहसे दोनों सालकी जड़ बँधती है— (कृ०) भादोंमें पानी बरसना दोनों फसलके लिये अच्छा है।

भादों दोनों सालका राजा है—(कृ०) क्योंकि इस समयमें अच्छी अच्छी फसल होती है।

भादोंमें जो बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय—(कृ०) भादोंमें पानी बरसनेसे उपज अच्छी होती है, इसलिए अकाल नहीं पड़ता।

भानु उदय दीपक कह काम—बलवान या गुणीके सामने कमज़ोर या मूर्खकी क़दर नहीं होती।

भानु कृशानु सर्व रस खाहीं, तिन कहँ मंद कहत कोउ नाहीं—समरथको कोई दोष नहीं देता।

भले बुरे सब एकसे, जब लौं बोलत नाहिं। जानि परत है काक पिक, ऋतु बसन्तके माहिं—(वृन्द) कामसे मनुष्यका गुण अवगुण जाना जाता है।

तामर्द सुख़न न गुफ़्ता बाशद,
ऐबो हुनरश निहुफ़्ता बाशद।

भले भलाई पै लहहिं, लहहिं निचाई नीच। सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच—(तुलसी) अर्थ स्पष्ट है; यह प्रायः दुष्ट जनों पर कही जाती है।

(१) जो जाही सों रमि रहै, सो तेहि आदर देत।
कोकिल अंबहि लेत है, काक निबौरी लेत॥ (वृन्द)
(२) भ्रमरा मधुमिच्छन्ति व्रणमिच्छन्ति मक्षिकाः।
सज्जना गुणमिच्छन्ति दोषमिच्छन्ति पामराः॥

भले भलेका सब कोई साथी—अच्छेके सब साथी हैं।

भले भवन अब बायन दीन्हा—दे० 'अच्छे घर'।

भले मानुषकी सब तरह खराबी है—स्पष्ट।

भले संग बैठिये, खाइये नागर पान। बुरे संग बैठिये, कटाइये नाक और कान—अच्छी संगतमें बैठनेसे लाभ और बुरी संगतमें बैठनेसे हानि होती है।

भलो भयो मेरी मटुकी टूटी, मैं दही बेचनसे छूटी—जब कोई काम भारी पड़ जाय, और उससे रिहाई हो, तब कहते हैं। जब कोई काम अपनी मूर्खतासे बिगड़ जाता है तो अपना दोष छिपानेके लिये भी कहते हैं मानों हमने ऐसा जानके किया है।

भलौ न होई दुष्ट जन, भलौ कहै जो कोय। विष मधुरौ मीठौ वचन, कहे न मीठौ होय—(वृन्द) किसीके कहनेसे बुरा मनुष्य अच्छा नहीं हो सकता।

भवन बनावत दिन लगे, ढावत लगे न बार—(वृन्द) बनाते देर लगती है बिगाड़ते देर नहीं लगती।

भसकड़के दामादको भात ही मिठाई—पेटार्थू को क०। क्योंकि उसे तो बहुत खानेसे काम है।

भाई, भतीजा, भानजा, भाट, भांड़, मुईहार। इतने भम्भा छोड़कर, फिर करिये व्यवहार—स्पष्ट।

भाइयोंके दंड मलो, भाइयोंकी खुशामद करो—जब कोई पहलवान कुश्ती मारता है तब उसकी जैजैकार मनानेके लिये लोग उसके दंड मलते हैं। जब कोई मनुष्य अपनी शक्तिके बाहर काम करने जाय और सफल न हो या जितनी डींग हांके उतना कर न सके, तब क०।

भाई ऐसन हितना, भाई ऐसन बैरीना...(पू०) भाई सा मित्र और भाई सा शत्रु कोई नहीं।

भाई न दे भाव दे—(व्य०) बाज़ार-भाव चीज़ दे भाई समझके न दे अर्थात् व्यवहारमें मुलाहिज़ा न करे।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर चाव करे—कपटी मित्रको कहते हैं जो भाईसा भाव दिखाये और ऊपरसे तो प्यार करे पर भीतरसे जड़ काटे।

भाई भावका, नहीं अपने दावका—भाई वही है जो प्यार करे, वह नहीं जो अपना स्वार्थ देखे।

भाई वही जो विपद सहाय—स्पष्ट।

भाई सा दुश्मन नहीं, भाई सा मित्र नहीं—देखो "भाई ऐसन हितना"।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर—छींके पर वह चीज़ रखी जाती है जिसकी अभी कोई ज़रूरत नहीं। यहां भाई शब्दमें श्लेष है जिसका अर्थ भ्राता और मन पसंद है। इसलिए इसके दो अर्थ हैं। (१) भाई ही अपना होता है बाकी सब किनारे कर दिये जाते हैं। (२) जो चीज़ अच्छी लगी सो खाई बाक़ी उठाकर छींकेपर रख दी।

भांग कहे "मैं रंगी जंगी" पोस्त कहे "मैं शाहे जहां" अफ़ीम कहे "मैं बुढ़ी बेगम, मुझको खाके जाय कहां"—(स्पष्ट) अफ़ीमका नशा छोड़नेसे नहीं छूटता, इसलिए कहते हैं।

भांग जनि देहु गवांरनको, हड़िया भर भात बिगाड़नको—भाँगके नशेमें खाया बहुत जाता है, इसलिए क०।

भाँड़ पुकारे पीरबस, मिस समझे सबकोय—भांड़ यदि पीड़ावश भी चिल्लाता हो तो उसे भी लोग नक़ल ही समझते हैं।

भाँड़ों सँग खेती की, गा बजाके अपनी की—भांड़ोंके साझेमें खेतीकी, उन्होंने गा बजाके अपनी

कर ली। जब कोई सीधा आदमी लफंगोंके साथ काम करे और उसका सब धन जाता रहे, तब कहते हैं।

भाखा जौन जाने ताहि शाखा मृग जानिये—(१) जो केवल भाषा ही जानता है (अर्थात संस्कृत नहीं जानता) वह बन्दरके तुल्य है। (२) जो भाषा (अर्थात् हिन्दी) नहीं जानता वह बन्दरके तुल्य है।

भागलपुरके भगोलिए, कहल गाँवके ठग। पटने के दिवालिए, तीनों नामज़द—स्पष्ट।

भागे जाहिं नाम रजपूत—(व०) नामानुसार कर्म न हो, तब क०।

भागते भूतकी लंगोटी भी बहुत है—
भागे भूतकी मूछें भली— } (व्य०) जब सभी जानेको हो तो उसमेंसे जो कुछ बच जाय वही लाभ है। जिससे कुछ भी मिलनेकी आशा नहीं उससे थोड़ा भी मिल जावे, तब क०।

भाग्यवानके खेतको जोत जात हैं भूत—नसीबवरका काम आप ही हो जाता है।

भागे हुए लश्करका मर्द पीछा नहीं करता—जो हार मान ले उसे न मारना चाहिए।

भाजीकी भाजी, क्या दूसरेकी मुहताजी—(ज०) इससे अधिक और क्या चाहिए।

भाजी पत्ता जे भखें, तिन्हैं सतावे काम। दाल भात जे खात हैं, तिनकी जानें राम—स्पष्ट।

श्लोक—विश्वामित्र पराशर: प्रभृतयः वाताम्बुपर्णाशना।
ते पि स्त्री मुख पंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहंगता॥
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधि युतं भुञ्जन्ति ये मानवा।
स्तेषामिन्द्रिय निग्रहो यदि भवेत्विंध्यस्तरेत् सागरे॥
(भर्तृहरि)

भाड़ लीपती जाय, हाथ कालेका काला—भाड़के लीपनेसे भी हाथ काला होता है। बुरेके साथ भलाई करने पर भी बुराई ही मिलती है।

भाड़ा ब्याज दच्छना, पीछे पड़े कुच्छना—इन तीनोंको हाथके हाथ चुकाना चाहिए बाकी रहनेपर फिर वसूल नहीं होते।

भात खाकर जात पूछना—काम करनेके पहिले जांच करनी चाहिए; पीछे नहीं।

भात खाते हाथ पिराय—(ज०) सुकुमारतापर क०।

भात खाते बहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हनसे—स्पष्ट।

भात छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता—स्पष्ट।

सुनि धुनि प्यारो मम रतिराज,
चल्यो चहत पिय उदिम काज।
कह्यो पखानो ज्यों जग भजै,
भात तजै पै साथ न तजै।
(प्रवत्स्यत्पतिका : लो० र० कौ०)

भात बिना है रांड़ रसोई, खांड़ बिना अनपूती। बिन घिउकी जिन रोटी खाई मानो खाई जूती—स्पष्ट।

भात होगा तो कौवे बहुत आ रहेंगे—धन होगा तो खानेवाले बहुत मिल जायँगे। (व्य०) माल होगा तो बहुत गाहक मिल जायँगे।

भादोंका झला एक सींग गीला एक सूखा—(कृ०) भादोंमें वर्षा कम होती है।

भादोंकी घाम, और साझेका काम—यह दोनों बुरे होते हैं।

भादोंकी छाछ भूतोंको, कातकी छाछ पूतोंको—(ज०) भादोंमें छाछ हानिकारक और कातिकमें गुणकारक होती है, इसीलिये क०। कातकी=कातिक महीने की।

भादोंकी धूपमें हिरण काले होते हैं—बदलीका घाम कड़ा होता है।

भादोंके मेहसे दोनों साखकी जड़ बँधती है—(कृ०) भादोंमें पानी बरसना दोनों फसलके लिये अच्छा है।

भादों दोनों साखका राजा है—(कृ०) क्योंकि इस समयमें अच्छी अच्छी फसल होती है।

भादोंमें जो बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय—(कृ०) भादोंमें पानी बरसनेसे उपज अच्छी होती है, इसलिए अकाल नहीं पड़ता।

भानु उदय दीपक कह काम—बलवान या गुणीके सामने कमज़ोर या मूर्खकी क़दर नहीं होती।

भानु कृशानु सर्व रस खाहीं, तिन कहँ मंद कहत कोउ नाहीं—समरथको कोई दोष नहीं देता।

भाविधिना प्रतिकूल जब तब ऊंट चढ़ेपर कूकर काटे—दे० 'ऊंट चढ़े'

भार डाल सब भाड़में, सम्मन उतरे पार—विपत्तिमें पड़ जानेसे जब कोई अपनी सब चीज़ खोकर जानकी रिहाई पा लेता है, तब क०।

भारी नाम पहाड़खां जब बोलें तब पींउ—नामके अनुसार काम वा गुण न होनेपर क०।

भारी पत्थर देखा, चूमकर छोड़ दिया—जो काम अपने करने लायक़ न जंचे, उसे छोड़ दे।

> रंज इने पैमाने वफ़ा तोड़ दिया।
> उल्फ़तका रिश्ता चोरसे जोड़ दिया॥
> उस बुतमें तो शाने दिलबरी थी लेकिन।
> भारी पत्थर था चूमकर छोड़ दिया॥

भारी ब्याज मूलको खाय—(व्य०) ज़्यादे सूदपर रुपया लगानेसे असल भी वसूल नहीं होता।

भावजकी थैली और सराफ़ी करे देवरा—दूसरेके धनकी ख़ैरात करनेपर क० या जब आदमी दूसरेके काममें अपना नाम चलाता है, तब क०।

भाव न जाने राव—जो जिस व्यवसायको करता है वही उसका हाल जानता है।

भाव रावकी ख़बर नहीं—राजा और बाज़ारकी दर पहिलेसे कोई नहीं जानता।

भाव राव ख़ुदाके हाथ—स्पष्ट।

भावीके वस संसार है—स्पष्ट।

> जो रहीम भावी कतहुं, होती अपने हाथ।
> राम न जाते हिरन संग सीता रावन साथ॥

भावी बड़ी प्रबल है—स्पष्ट।

> सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलख कहेउ मुनि नाथ। (तुल०)

भीखकी हंड़िया सिकहरपर नहीं चढ़ती—क्योंकि वह ख़ाली रहती है।

भीखके टुकड़े बाज़ारमें डकार—(च०) जो व्यर्थ घमंड करता है, उसपर क०।

भीख मांगे और आँख दिखावे—नीच होकर जो दूसरेपर रोब दिखावे। विशेष कर सथरे साईं और मीरासी फ़क़ीरोंपर क०। जो ज़बरदस्ती मांगा चाहते हैं अथवा जब कोई आदमी ज़बरदस्ती करके किसीसे कोई पदार्थ मांगे, तब क०।

भीगा चूहा—ख़राब चाल चलनवालेको क०।

भीखमें पछोड़ क्या—जो चीज़ मुफ़्तमें मिले उसमें दोष न निकालना चाहिए।

भीगी बिल्ली—सयाने वा धूर्त्त आदमीको क०।

भीगी बिल्ली बताना—बहाना करनेपर क०।

> किसी मालिकने अपने सुस्त नौकरको चिराग़ बुझानेके लिए कहा। नौकरने जवाब दिया कि आँख मूंद लीजिये अंधकार हो जायगा। दूसरे दिन फिर मालिकने उसे कहा बाहर जाकर देखो वृष्टि होती है या नहीं। इसपर उस धूर्त्त आलसी नौकरने जवाब दिया कि एक बिल्ली मेरे पास होकर जा रही थी और उसका बदन भींगा मालूम पड़ा।

भीत टले, पर बान न टले—ख़राब आदत किसी तरह नहीं छूटती।

भीतड़ां नाम कि गीतड़ां नाम—(मा०) दो ही कामोंसे नाम होता है, कविता करनेसे या इमारतें बनवानेसे।

भीतरके पट तब खुलें बाहरके जब दे—ज्ञान उत्पन्न होनेसे भीतरका अन्धकार जाता रहता है।

भीतर भांग अरु तुलसी बाहर—कपटके बर्त्ताव-पर क०।

> (१) सखिया सों सब विधि तजि प्यार।
> चोरी सों नित प्रति हितवार॥
> योग उक्ति यह जगमें ज़ाहिर।
> भीतर भांग अरु तुलसी बाहिर (लो० र० को०)

भीत रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे—(ज०) जड़ रहेगी तो फल फूल भी हो जायँगे। पूँजी रहेगी तो रोज़गार बहुत मिल जायगा। हड्डी रहेगी तो मांस भी बढ़ जायगा, इत्यादि बातोंके लिए क०।

भीष्म प्रतिज्ञा—कठोर प्रतिज्ञा। भीष्मने प्रतिज्ञा की थी कि मैं आजन्म विवाह नहीं करूंगा और इस कठोर प्रतिज्ञाको उन्होंने पूर्ण भी किया था। इसीसे भीष्मका अर्थ कठोर रक्खा।

भुगतमान भुगते बने, ज्ञानी मूरख दोय, ज्ञानी भुगते ज्ञान सों मूरख भुगते रोय—जो भोगमान है सो सभीको भोगना पड़ता है क्या ज्ञानी क्या मूर्ख। ज्ञानी हँसकर और मूर्ख उसे रोकर भुगतता है।

> आक़िल था सो तो आपको समझाके मर गया।
> बे अक़्ल आती मौतके घबराके मर गया॥ (नज़ीर)

भुस ऊपरको लीपयाँ, अरु बालूकी भीत—(छन्द) यह दोनों बहुत जल्द खराब हो जाती हैं।

भुसके मोल मलीदा—(व्य०) जब अच्छा माल सस्ते दाममें बेचा जाय, तब क०।

भुसमें आग लगाकर जमालो दूर खड़ी—(ज०) लड़ाई लगानेवाली स्त्रीको क०।

भूआकी नदीमें कौन बहे—सुख सब कोई चाहता है दुःख कोई नहीं चाहता। भुआ=मैल, फेन।

भूखको भोजन क्या और नींदको बिछौना क्या दे० "भूख न जाने"

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये कबाय, जोबन गये तिरिया मिले, तीनों देव बहाय—स्पष्ट तीनों बेकाम हैं। कबाय=गर्म कपड़ा।

भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट—आतुरके लिये कोई नियम लागू नहीं है।

क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धिः, तृष्णातुराणां न च पावबुद्धिः।
कामातुराणां न भयो न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमि शय्या

भूखमें किवाड़ पापड़ } भूखमें बुरी चीज़ भी
भूखमें गूलर पकवान } अच्छी लगती हैं।

भूख लगी तो घरकी सूझी—भूख लगनेपर घर याद आ जाता है।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं—ईश्वर सबको खानेको देता है। जितने जीव हैं सब भूखे उठते हैं पर भूखा सोता कोई नहीं।

भूखा खाये ही पतियाय—स्पष्ट।

रसवत मिले बाल सौं लाल, अवधि बदी जिमि सुरति रसाल।
यौंही छवि मंद सुमस्याय, भूखा खाये ही पतियाय।
(स्वयं दूतिका। (लो० र० को०)

भूखा गया जो बेचने, अघाना कहे बन्धक रख—ज़रूरत आ पड़नेपर जब एकपर दूसरा दबाव डालता है, तब क०।

भूखा चाहे रोटी दाल, धाया कहें मैं जोड़ूं माल स्पष्ट।

भूखा जोरू बेचे, रज्जा कहे उधार ले—दे० भूखा गया।

भूखा तुरक न छेड़िये होजाय जीका झाड़—भूखे मुसलमानको न छेड़े।

भूखा बंगाली भात भात पुकारे—छोटे बच्चे जब दूधके लिए रोते हैं, तब उन्हें यह मसल क०। जिस पदार्थको मनुष्य बहुतायतसे खाता रहता है उसका अभ्यास उसको पड़ जाता है जब भूख लगती है तो वह वही मांगता है।

चाह रही बहु सुन्दर श्याम, तो बिनु चैन नहीं घनश्याम।
लीन छकि परसिद्ध सुभाली, रट ज्यों भात भात बंगाली।
(लो० र० को०)

भूखा मरता क्या न करता—भूखा आदमी सब कुछ कर सकता है।

भूखा मरे कि सतुआ खाने—भूखे रह जानेकी अपेक्षा सत्तू ही खाना अच्छा है।

भूखा सो रूखा—भूखेको क्रोध जल्दी आता है।

भूखेको अन्न पियासेको पानी, जंगल जंगल अबादानी—भूखेके लिये अन्न और प्यासेके लिये पानी सब जगह मिलता है।

भूखेको क्या रूखा, और नींदको क्या तकिया—दे० "भूख न जाने"।

भूखेको कहा "दो और दो के" कहा "चार रोटियां—अपने मतलबकी समझना।

पूंछा किसीने यह किसी कामिल फ़क़ीरसे,
सूरज औ चाँद हक़ने बनाये हैं काहेके।
वह सुनके बोला बाबा, ख़ुदा तुमको ख़ैर दे,
हम तो न चाँद समझें न सूरज हैं जानते।
बाबा हमें तो यह नज़र आती हैं "रोटियां" (नज़ीर)

भूखेको खिला, और नंगेको पहिना—स्पष्ट।

भूखे घरमें नोन निहारी—भूखेको नमकही न्यामत है।

भूखेने भूखेको मारा दोनोंको गश आ गया—क्योंकि दोनों ही कमज़ोर हैं।

भूखे बेर अघाने गांडा—भूखमें बेर और पेट भरेमें गन्ना अच्छा लगता है। कोई कोई इसके साथमें "ता ऊपर मूलीका डांडा" भी कहते हैं।

भूखे भजन न होहिं गोपाला—भूखमें ईश्वरका भजन भी नहीं होता।

(१) भूखे ग़रीब दिलकी ख़ुदासे लगन न हो।
सच है कहा किसीने कि भूखे भजन न हो।
(२) अल्लाहकी भी याद दिलाती हैं रोटियां। (नज़ीर)

भूखे भले मानससे डरिये—देखो "पेट भरे"

भाविधिना प्रतिकूल जब तब ऊँट चढ़ेपर कूकर काटे—दे० 'ऊँट चढ़े'

भार डाल सब भाड़में, सम्मन उतरे पार—विपत्तिमें पड़ जानेसे जब कोई अपनी सब चीज़ खोकर जानकी रिहाई पा लेता है, तब क०।

भारी नाम पहाड़खां जब बोलें तब पौंउ—नामके अनुसार काम या गुण न होनेपर क०।

भारी पत्थर देखा, चूमकर छोड़ दिया—जो काम अपने करने लायक़ न जंचे, उसे छोड़ दे।

रंज़ूरने पैमाने वफा तोड़ दिया।
उल्फतका रिश्ता औरसे जोड़ दिया॥
उस बुतमें तो शाने दिलबरी थी लेकिन।
भारी पत्थर था चूमकर छोड़ दिया॥

भारी ब्याज मूलको खाय—(ब्य०) ज़्यादे सूदपर रुपया लगानेसे असल भी वसूल नहीं होता।

भावजकी थैली और सराफ़ी करे देवरा—दूसरेके धनकी ख़ैरात करनेपर क० या जब आदमी दूसरेके काममें अपना नाम चलाता है, तब क०।

भाव न जाने राव—जो जिस व्यवसायको करता है वही उसका हाल जानता है।

भाव रावकी ख़बर नहीं—राजा और बाज़ारकी दर पहिलेसे कोई नहीं जानता।

भाव राव ख़ुदाके हाथ—स्पष्ट।

भावीके वस संसार है—स्पष्ट।

जो रहीम भावी कहूं, होती अपने हाथ।
राम न जाते हिरन संग सीता रावन साथ॥

भावी बड़ी प्रबल है—स्पष्ट।

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलख कहेउ मुनि नाथ। (तुल०)

भीखकी हंडिया सिकहरपर नहीं चढ़ती—क्योंकि वह ख़ाली रहती है।

भीखके टुकड़े बाज़ारमें डकार—(च०) जो व्यर्थ घमंड करता है, उसपर क०।

भीख मांगे और आँख दिखावे—नीच होकर जो दूसरेपर रोब दिखावे। विशेष कर खयरे साईं और मीरासी फ़क़ीरोंपर क०। जो ज़बरदस्ती मांगा चाहते हैं अथवा जब कोई आदमी ज़बरदस्ती करके किसीसे कोई पदार्थ मांगे, तब क०।

भीगा चूहा—ख़राब चाल चलनवालेको क०।

भीखमें पछोड़ क्या—जो चीज़ मुफ़्तमें मिले उसमें दोष न निकालना चाहिए।

भीगी बिल्ली—सयाने वा धूर्त्त आदमीको क०।

भीगी बिल्ली बताना—बहाना करनेपर क०।

किसी मालिकने अपने सुस्त नौकरको चिराग़ बुझानेके लिए कहा। नौकरने जवाब दिया कि आँख मूंद लीजिये अंधकार हो जायगा। दूसरे दिन फिर मालिकने उसे कहा बाहर जाकर देखो वृष्टि होती है या नहीं। इसपर उस धूर्त्त आलसी नौकरने जवाब दिया कि एक बिल्ली मेरे बग़ल होकर जा रही थी और उसका बदन भींगा मालूम पड़ा।

भीत टले, पर बान न टले—ख़राब आदत किसी तरह नहीं छूटती।

भीतड़ां नाम कि गीतड़ां नाम—(मा०) दो ही कामोंसे नाम होता है; कविता करनेसे या इमारतें बनवानेसे।

भीतरके पट तब खुलें बाहरके जब दें—ज्ञान उत्पन्न होनेसे भीतरका अन्धकार जाता रहता है।

भीतर भांग अरु तुलसी बाहर—कपटके बर्ताव-पर क०।

(१) सखिया सौं सब विधि तजि प्यार।
चोरी सों नित प्रति हितसार॥
लोग कहि यह जगमें ज़ाहिर।
भीतर भांग अरु तुलसी बाहिर (लो० र० कौ०)

भीत रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे—(ज०) जड़ रहेगी तो फल फूल भी हो जायँगे। पूँजी रहेगी तो रोज़गार बहुत मिल जायगा। हड्डी रहेगी तो मांस भी बढ़ जायगा, इत्यादि बातोंके लिए क०।

भीष्म प्रतिज्ञा—कठोर प्रतिज्ञा। भीष्मने प्रतिज्ञा की थी कि मैं आजन्म विवाह नहीं करूंगा और इस कठोर प्रतिज्ञाको उन्होंने पूर्ण भी किया था। इसीसे भीष्मका अर्थ कठोर रक्खा।

भुगतमान भुगते बने, ज्ञानी मूरख दोय, ज्ञानी भुगते ज्ञान सों मूरख भुगते रोय—जो भोगमान है सो सभीको भोगना पड़ता है क्या ज्ञानी क्या मूर्ख। ज्ञानी हंसकर और मूर्ख उसे रोकर भुगतता है।

आक़िल था सो तो आपको समझाके मर गया।
मैं जहल वाली पीटके घबराके मर गया॥ (नज़ीर)

भुस ऊपरको लीपचों, अरु बालूकी भीत—(वृन्द) यह दोनों बहुत जल्द खराब हो जाती हैं।

भुसके मोल मलीदा—(व्य०) जब अच्छा माल सस्ते दाममें बेचा जाय, तब क०।

भुसमें आग लगाकर जमालो दूर खड़ी—(ज०) लड़ाई लगानेवाली स्त्रीको क०।

भूआकी नदीमें कौन बहे—सुख सब कोई चाहता है दुःख कोई नहीं चाहता। भुआ=मैल, फेन।

भूखको भोजन क्या और नींदको बिछौना क्या दे० "भूख न जाने"।

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये कबाय, जोबन गये तिरिया मिले, तीनों देव बहाय—स्पष्ट तीनों बेकाम हैं। कबाय=गर्म कपड़ा।

भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट—आतुरके लिये कोई नियम लागू नहीं है।

क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धि, अर्थातुराणां न च पापबुद्धि।
कामातुराणां न भयो न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमि शय्या

भूखमें किवाड़ पापड़ } भूखमें बुरी चीज़ भी
भूखमें गूलर पकवान } अच्छी लगती हैं।

भूख लगी तो घरकी सूझी—भूख लगनेपर घर याद आ जाता है।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं—ईश्वर सबको खानेको देता है। जितने जीव हैं सब भूखे उठते हैं पर भूखा सोता कोई नहीं।

भूखा खाये ही पतियाय—स्पष्ट।

रसबस मिले बाल सों लाल, अवधि बदी मिलि सुरति रसाल।
भोली छवि मंद मुसकाय, भूखा खाये ही पतियाय।
(स्वयं दूतिका। (लो० र० को०)

भूखा गया जो बेचने, अघाना कहे बन्धक रख—ज़रूरत आ पड़नेपर जब एकपर दूसरा दबाव डालता है, तब क०।

भूखा चाहे रोटी दाल, धाया कहे मैं जोड़ूं माल स्पष्ट।

भूखा जोरू बेचे, रज्जा कहे उधार ले—दे० भूखा गया।

भूखा तुरक न छेड़िये होजाय जीका झाड़—भूखे मुसलमानको न छेड़े।

भूखा बंगाली भात भात पुकारे—छोटे बच्चे जब दूधके लिए रोते हैं, तब उन्हें यह मसल क०। जिस पदार्थको मनुष्य बहुतायतसे खाता रहता है उसका अभ्यास उसको पड़ जाता है जब भूख लगती है तो यह वही मांगता है।

चाह रही नह सुन्दर श्याम, तो बिनु चैन नहीं घनश्याम।
लोग उक्ति परसिद्ध सुभाली, रट ज्यों भात भात बंगाली।
(लो० र० को०)

भूखा मरता क्या न करता—भूखा आदमी सब कुछ कर सकता है।

भूखा मरे कि सतुआ खाने—भूखे रह जानेकी अपेक्षा सत्त ही खाना अच्छा है।

भूखा सो रूखा—भूखेको क्रोध जल्दी आता है।

भूखेको अन्न पियासेको पानी, जंगल जंगल अबादानी—भूखेके लिये अन्न और प्यासेके लिये पानी सब जगह मिलता है।

भूखेको क्या रूखा, और नींदको क्या तकिया—दे० "भूख न जाने"।

भूखेको कहा "दो और दो के" कहा "चार रोटियां—अपने मतलबकी समझना।

पूंछा किसीने यह किसी कामिल फ़कीरसे,
सूरज को चांद हक़ने बनाये हैं काहेके।
यह सुनके बोला बाबा, ख़ुदा तुमको खैर दे,
हम तो न चांद समझें न सूरज हैं जानते।
बाबा हमें तो यह नज़र आती हैं "रोटियां" (नज़ीर)

भूखेको खिला, और नंगेको पहिना—स्पष्ट।

भूखे घरमें नोन निहारी—भूखेको नमकही न्यामत है।

भूखेने भूखेको मारा दोनोंको गश आ गया—क्योंकि दोनों ही कमज़ोर हैं।

भूखे बेर अघाने गांडा—भूखमें बेर और पेट भरेमें गन्ना अच्छा लगता है। कोई कोई इसके साथमें "ता ऊपर मूलीका डांडा" भी कहते हैं।

भूखे भजन न होहिं गोपाला—भूखमें ईश्वरका भजन भी नहीं होता।

(१) भूखे ग़रीब दिलको ख़ुदाकी लगन न हो।
सच है कहा किसीने कि भूखे भजन न हो।
(२) अल्लाहको भी याद दिलाती हैं रोटियां। (नज़ीर)

भूखे भले मानससे डरिये—देखो "पेट भरे"

रहिमन कहत जो पेट सों क्यों न भयो तू पीठ।
भूखे मान घटावही भरे दिखावै दीठ॥

भूखे हो तो हरेहरे रूख देखो—कृपण मनुष्य भंगतोंको कहा करते हैं।

भूखो सिंह न तिनका खाय—मानी आदमी काम करेगा तो अपनी हैसियत मूजब करेगा नहीं तो नहीं करेगा।

भूड़के हूड़ होते हैं-देहाती मूर्ख होते हैं, गवाँरपर क०।

भूतका पकवान—निकम्मी वा दिखौवा चीज़पर क०।

(१) नित प्रति अवधि बढ़ी सुखदाइ।
मिले न इक दिन कौन सुभाइ॥
जियै भई गाय जो गाई, सांची होत न भूत मिठाई।

अर्थात् भूत गण करनेवाले जो मिठाई बातकी बातमें बनाकर दिखाते हैं वह केवल कौतुकार्थ है उससे कोई पेट नहीं भर सकता।

भूतके पत्थरकी चोट नहीं लगती—क्योंकि वह अदृश्य है।

भूत जान न मारे, हैरान करे—स्पष्ट। दुष्टपर क०।

भूतनके घर बेटा बेटी
भूतन घर सन्तति कैसो } जिस घरमें भूत रहते हैं वहां वंश नहीं चलता, अभागे वा कृपणको क०।

भूतोंके घर राम राम—असंभव बातपर क०।

भून बोया, उपट गया—(पू० कृ०) भूना अन्न नहीं जमता ; जब कोई लड़का बिगड़ जाता है, तब क०।

भूनी भांग न कड़ुआ तेल—जिसके पास कुछ न हो, उसे क०।

भूमिनाग सिर धरइ कि धरनी—क्षुद्र मनुष्य बड़ा काम नहीं कर सकता।

भूमि परा कर गहत अकाशा–(तुलसी) अनहोनी बात या ऊँची आकांक्षा पर क०।

भूमियां तो भूमी पर मरी, तू क्यों मरी बटेर—किसान तो ज़मीनके पीछे लड़ते हैं, हे बटेर! तू क्यों लड़ती है? जब साधारण आदमी बड़े आदमियोंके झगड़ेमें पड़ते हैं, तब क०।

भूमि सयन बलकल बसन, असन कंद फल मूल। तेकि सदा सब दिन मिलहिं,समय समय अनुकूल (तुलसी) स्पष्ट।

भूरका लड्डू खाय सो पछताय न खाय सो पछताय—दे० "खाय तो पछताय......"

यह दुनिया है भूरका लड्डू खावै तो पछतावै,
ना खावै तो भी पछतावै खावै तो पछतावै। (भागवत)

भूरा भैंसा, चांडली जोय, पूस महावट विरले होय—(कृ० पू०) भूरा भैंसा, गंजी स्त्री और पूसमें वर्षा बहुत कम होती है। चांडली=जिसके सिरके बाल झड़ गये हों।

भूल गई दिन दिहाड़ा, मुंडोंने सेहरा बांधा—जब कोई बढ़ती होनेपर अपनी असलियत भूल जाय, तब क०।

भूल गई नार, हींग डाल दई भातमें—(ज०) जब भूलसे एक कामकी जगह दूसरा काम हो जाय, तब क०।

सजत साज कछु दिखै नाम, वेसर धरी कानमें नाम।
लोग लखि ज्यों जग बिख्यात, भूलि डार दी हींग जू भात॥
(विश्रमदास। लो० र० को०)

भूल गये राग रंग भूल गये छकड़ी, तीन चीज़ याद रही नोन तेल लकड़ी—जब आदमी गृहस्थीके फेरमें पड़ जाता है, तब क०।

भूल चूकका डर नहीं—स्पष्ट।

भूल चूक लेनी देनी—(व्य०) जब हिसाब चुकाया जाता है, तब क०।

भूले चूके कश्यप गोत्र—जिसको अपना गोत्र याद न हो वह कश्यप गोत्र कहे।

भूले चूके दँड नहीं—स्पष्ट।

भूला जोगी दूनी लाभ—भुलक्कड़ जोगी एक ही घरमें दो बार भीख मांगता है।

कलि फूल जहँ लपटि सिंगार।
जनि सकचो सुनि रस सुखसार।
लोग पखानो मन चपल हो।
भूले जोगी दूनी लाहो। लीला हाव। (लो०र०को०)

भूला फिरे किसान जो कातिक मांगे मेह—(वृन्द) वह गृहस्थ पागल है जो कातिक महीनेमें वर्षा चाहता है।

भूले बनियां भांग खाई, अब खाऊं तो राम दुहाई
भूले बामन गाय खाई, अब खाऊं तो राम दुहाई

आदमी एक दफ़े ठगाकर सचेत हो जाता है।

भूले विसरे राम सहाई—भूले चूकेका ईश्वर मालिक है।

भूल शराकी, गौन गधाकी—स्पष्ट।

भेंड़की लात घुटनों तक—कमज़ोरकी चोटका असर कम पड़ता है। अधिकसे अधिक इतना कर सकेगा।

भेंड़ जहाँ जायगी वहीं मुड़ेगी—(१) क्योंकि ये मुण्डकी मुण्ड एक साथ जाती हैं। (२) धनी आदमी जहां जाते वहीं लूटे जाते हैं।

भेंड़ पूंछ भादों नदी, को गहि उतरे पार—छोटेके सहारेसे बड़ा काम नहीं हो सकता।

(१) लाख नीच मिर वचन कह, बांह देत सौ बार
भेंड़ पूंछ भादों नदी को गह उतरै पार।

नीच आदमीके कई बार प्रतिज्ञा करनेपर भी उसका विश्वास नहीं करना चाहिये, उसपर विश्वास करना गोया उमड़ी हुई नदीको भेंड़की पूंछ पकड़कर पार करनेके बराबर है।

नीं तू दूती नीच है, कबहुं मिलै न तार।
भेंड़ पूंछ भादों नदी, को गहि उतरे पार॥(लो०र०की०)

भेंड़ पै ऊन किसने छोड़ी—सब कोई भेंड़के बाल कतर लेते हैं क्योंकि ये बहुत कामोंमें लाए जाते हैं।

भेड़िया धसान—जब आगेकी चलाई हुई पद्धतिको अच्छी या बुरी जाने बिना उसीकी देखा देखी सब आदमी विचार शून्य होकर चलें, तब क०।

देखा देखी करत सब, नाहिं न तत्व विचार।
याको यह अनुमान है भेड़ चाल संसार॥ (छन्द)

भेजा खाँय, सिर सहलाँय—चालबाज़ी आदमी पर क०।

भेषसे भीख हैं—पोशाकसे ही आदमी पहिचाना जाता है या उसकी क़दर होती है।

भैंस आस की, पड़ा बियानी—दे० "भरोसेकी भैंस......"

भैंस कहै सुन मेरा पूरा मेरा दूध पी होवे सूरा। जिसके घरमें मैं बँध जाऊँ। दूध दहीको नाल बहाऊँ—स्पष्ट।

भैंसका दूध, नलीका गूद—भैंसके दूधसे कुव्वत बढ़ती है।

भैंसका गोबर भैंसके चुतड़ोंको लग जाता है—सब दूसरेके काममें नहीं आता। बड़े आदमियोंका अपना ही ख़र्च अधिक होता है।

भैंसके आगे बीन बजावे, भैंस बैठि पगुराय—
भैंसके आगे भागवत, भैंस खड़ी रौंथाय—

अज्ञानीके सामने अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्फल होता है।

भैंसको अपने सींग भारी नहीं—अपना परिवार पालनेमें किसीको कष्ट नहीं मालूम पड़ता।

भैंस दूध जो कढ़ुवा पीवे, हाँगा घटे न जबलग जीवे—(ग्रा०) भैंसका दूध जो बराबर पीता है उसका बल कभी नहीं घटता।

भैंस पकौड़े हग गयी—किसी मनुष्यकी असाधारण बुद्धिपर व्यंगसे क०।

भैंस बियानी गढ़ सम्भरमें, खूँटा गड़ा फ़रुख़ाबाद—जब काम एक जगह हो और उसका इन्तज़ाम दूसरी जगह, तब क०। दे० "बाबा सोवे"।

भैंस पै दूध किसने छोड़ा—दे० "भेंड़ पै ऊन..."

भैंसा भैंसोंमें, या क़साईके खूँटेमें—(व्य०) मालका दाम घट जाने पर क०। मतलब यह कि याती मालको बन्द करके घरमें रख दे, जब दाम मिले तब बेचे या बाज़ार भाव फूंक दे।

भोंदू भाव न जाने, पेट भरनसे काम—स्पष्ट।

भोग बिलास, जबतक सांस-मरे पीछे कुछ नहीं।

भोग भाग, छत्तीसों राग—जो कुछ है सो इसीमें।

भोगी सो रोगी—स्पष्ट।

भोजन ऐसा लाभ नहीं, मृत्यु ऐसी हानि नहीं—स्पष्ट।

भोजनं कुरु दुर्बुद्धे मा शरीरे दयां कुरु, परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः—पेटार्थुको क०।

इसपर एक कहानी भी है—किसी शहरमें दो पिता पुत्र खानेके बड़े लालची थे। एक रात ये दोनों निमंत्रण खाकर आये। सुबहको लड़केका पेट फटने लगा। इसी समय दूसरी जगहसे निमंत्रण आया। तब लड़केने बापसे कहा "उद्रं गच्छन्ति नीरधाराः नाभी गच्छन्ति वायवः। निमन्त्रणं समायातः किं कर्तव्यं मयाधुना।" इसपर बापने ऊपरकी मसल कही।

भोजन न भात, नैहरका समाद—बिधवाका आदर न पोहरमें न नैहरमें।

भोजन भट्ट—बहुत खानेवालेको क०।

भोज न भात, हर हर गीत—झूठी शिष्टाचारीपर क०।

भोजपूरमें जेहा मत, जेहा तो लेहा मत, ले हा तो सोइहा मत, सोइहा तो टोइहा मत, टोइहा तो रोइहा मत—भोजपूरमें चोर बहुत रहते हैं इसलिये क०।

भोरका मुरगा बोला, पंछीने मुंह खोला—सबेरा हुआ और सबको भूख लग आई।

भोर भया जब जानिये, जब पीले बादल होयं—स्पष्ट।

भोलेका है दाता राम—सीधेको ईश्वर देता है।

भौंकते कुत्तेको रोटीका टुकड़ा—रिश्वत खानेवालेको क० जो पहिले तो गुल गपाड़ा करे पर कुछ मिलते ही चुप हो जाय।

भौंर न छाड़े केतकी, तीखे कंटक जान—(वृन्द) (१) गुण ग्राही नीचसे भी गुण ग्रहण करते हैं। (२) जिसकी जिससे प्रीति है अनेक बाधा होनेपर भी वह उससे अवश्य मिलता है।

म

मँगनीकी चादर, तापर पचासकी आदर—(ज०) जो दूसरेकी चीज़से अपना नाम चलाता है, उसे क०।

मँगनीके चन्दन के न लगाय—सेंतमें मिले तो कौन न ले।

मँगनीके बैलके दाँत नहीं देखते हैं—मुफ़्तमें जो चीज़ आ जाय उसे बिना देखे सुने ले लेना चाहिए।

मँगनीके सतुआ, सासको पिण्डा—(पू० ज०) अनिच्छासे दूसरेका सत्कार करना। सास बहूके साथ अच्छा बर्त्ताव नहीं करती, इसलिये क०।

मँगाई छींट, लाया ईंट—
मँगाई हींग, लाया अदरक—
} दूसरेकी इच्छाके प्रतिकूल जब कोई काम करे, तब क०।

मड़वेके भाटेमें शर्त्त क्या—खराब या कम दामकी चीज़ लेनेपर दूकानदार कोई शर्त्त नहीं करता।

मंत्री बिन राज सूना—प्रधानके बिना राजकार्य अच्छी तरह नहीं चलता।

मकदूरकी माँ कौड़ी ही रगड़ती है—छोटे हीकी खबरगीरी अधिक करनी चाहिए।

मकर चकरकी घानी, आधा तेल आधा पानी—धूर्त्त और कपटी व्यापारीपर क०।

मक्के गये न मदीने गये, बीच हीबीचमें हाजी भये (मु०) जब किसीका अभिष्ट सहजहीमें पूरा हो जाता है, तब क०।

मक्केमें रहते हैं पर हज नहीं करते—(मु०) जो चीज़ सहजमें मिलती है उसकी चाहना नहीं होती। जो जितना ही पुण्य स्थानके समीप रहता है उसकी भक्ति उतनी ही कम रहती ह।

मक्खी चूस—कंजूसको कहा जाता है जो घीमें पड़ी मक्खी चूस लेता है जिसमें घी न खराब जाय।

मक्खी छोड़ना, और हाथी निगलना—पाखंडी या ऊंचा शिकार मारनेवालेको क०।

मक्खी बैठी शहदपर पंख गये लपटाय। हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय—लालची को क०।

मक्खी भिनकती है—जिस दूकानदारके यहां कोई ग्राहक न जाय या जिससे लोग घृणा करें और उसके पास न जायँ या जो मनुष्य गंदा हो, उसपर क०।

मक्खी मारते हैं—खाली बैठे रहते हैं। क० दे०।

ताकतकी बदौलत चमका भी इरतफा है।
जो मारते थे मक्खी अब मारते हैं चूहे॥
(अकबर) इरतफ़ा = विकास।

मक्खीमार, बड़ा चमार—कंजूसको व्यंगसे क०।

मक्षिका स्थाने मक्षिका—(सं०) हूबहू नक़ल उतारनेपर क०।

मखमली जूती—मीठी बातोंमें तिरस्कार करना।

मग्गह देश कंचनपुरी, देश अच्छा भाषा बुरी—स्पष्ट।

मग्गहमें मरना, अगले जन्ममें गधा बनना—स्पष्ट।

मच्छड़को हमला भयो, हाथी ऊपर आज—जब कोई कमज़ोर अधिक बलवानपर हमला करता है, तब उसे व्यंगसे क०।

मछली किमि जीवे बिन पानी—स्पष्ट।

गौड़ पिय सरस जीवते तीय, कैसे जियौं बिछुरि संग पीय।
सोक उक्ति मन मध नहिं आनी, किमि जीवै मछरी बिनुपानी
(प्रवत्स्यत्पतिका लो० र० को०)

मछलीके बच्चोंको तैरना कौन सिखावे—जिसका जो स्वभाव है, वह आपसे आप आ जाता है। धर्मात्माके लड़के धार्मिक ही होते हैं।

मछली खाये हाथ भी गँधाय, मुँह भी गँधाय—स्पष्ट।

मछली तो नहीं कि सड़ जायगी—(व्य०) जब कोई दूसरेको बहुत जल्दी और सस्ते दाममें चीज़ खपानेको कहे, तब क०।

मजनूको लैलीका कुत्ता भी प्यारा—कामी मनुष्य अपने माशूकके कुत्तेको भी चाहता है अर्थात् जिस पर चाहना होती है उसकी बुरी चीज़ भी प्यारी लगती है।

मज़ा मा मज़ा—(अरबी) बीती ताहि बिसार दे। गई बातको भूल जाओ।

मट्टीका घड़ा भी ठोक बजाकर लेते हैं—(व्य०) बिना सोचे विचारे किसी काममें हाथ नहीं डालना चाहिए।

मट्टीमें हाथ डाले सोना होता है—भाग्यवान पुरुषको क०।

मठा माँगन चली और भलैया पीछे लुकाई—(पू० ज०) अच्छी चीज़ अपने पास रहते हुए भी औरोंसे माँगना।

मढ़्यो दमामा जात क्यों कहु चूहेके चाम—छोटे आदमीसे बड़ा काम नहीं हो सकता अथवा छोटी चीज़से बड़ा काम नहीं हो सकता।

कैसे छोटे नरन तें सरत बड़नको काम।
मढ्यो दमामा जात क्यों कहु चूहेके चाम॥ (बिहारी)

मतकर घार, जो भुगते कार—(व्य०), ऐसा क़र्ज़ नहीं करना चाहिए जिससे कारबारमें धक्का लगे।

मतकर सास बुराइयां, तेरे भी अग्गे जाइयां—(ज० पं०) बहूका कहना सासके प्रति। कहनेका मतलब यह है कि हे सास! तू मुझे सता मत, क्योंकि तेरे भी लड़कियाँ हैं जो, ससुराल जानेवाली हैं। अगर तू मुझे सतायेगी तो वे भी इसी प्रकार वहां सताई जावेंगी।

मत बो चापड़, उजड़े टापड़—(कृ०) पथरीली ज़मीनमें कोई अनाज मत बोओ नहीं तो परिवारकी हानि होगी।

मतला साफ़ हुआ—आकाश साफ़ हुआ। जब किसीका अभीष्ट पूरा हो जाता है और सब बाधायें जाती रहती हैं, तब क०।

मथरा दे बुन्दा, लुभावे दस गुँडा—(पू० ज०) भ्रष्टा औरत पर क०।

मथरा मदारीका क्या साथ—स्पष्ट। मथरा=हिन्दू, मदारी=मुसलमान।

मथुराकी बेटी गोकुलकी गाय, करम फूटे तो अनते जाये—ये दोनों दूसरी जगह नहीं जातीं।

मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ—(वृन्द) कलालके हाथमें दूध भी मदिरा समझा जाता है। तात्पर्य्य यह कि कुसंगतिमें न बैठना चाहिए।

मधुरी आँचे रोटी मीठ—जो काम बहुत धीरे धीरे और सावधानीसे किया जाता है वह काम अच्छा होता है।

मन और दूध फटनेसे नहीं मिलता—स्पष्ट।

दूध औ दिल जब फटा, प्यारे, तो फिर मिलता नहीं।
(नज़ीर)

मन उमराव करम दरिद्री—इच्छा पूरी होनेका साधन नहीं।

मन कपटी तन सज्जन चिन्हा—कपटका बर्त्ताव।

मन करवे मोटा, खोवे सोटा, मन करवे मोंही लगरे लोंहीं—(ओ०) मीठी बात बोलनेवालेको सब कोई चाहते हैं।

मनक्यो पहिरन चौतार, करम लिखे भेड़ीके धार—दे० "मन उमराव कर्म दरिद्री।"

मनका अंकुश ज्ञान—स्पष्ट। ज्ञानसे मन वशमें रहता है।

मनका फेरत दिन गया, गया न मनका फेर।
करका मनका छोड़के, मनका मनका फेर—(कबीर) सब काम साफ़ दिलसे करना चाहिये।

मनकी बात मन हीमें रखिये—गुप्त बात किसीसे

नहीं कहनी चाहिये।

दोष नाहिं दीपतकी दोष कर्म आपनेको मन अपनेकी बात काह सों न कहिये। (दीनानाथ)

मनकी मारी कासे कहूं, पेट मसोसा दे दे रहूं (पू०) भूखे भिखारीका कहना है।

मनका खाय तो लड्डू ही न खाय, चने क्यों खाय—क्योंकि इसमें कुछ दाम तो लगते ही नहीं। दे० "मनके लड्डू खाय"

मनके लड्डुओंसे भूख नहीं मिटती—केवल विचारसे काम नहीं चलता।

> वृथा मरहु जनि गाल बजाई,
> मन मोदकनि कि भूख बुझाई। (तुलसी)

मनके लड्डू खाय तो पेट भरके न खाय आधे पेट क्यों खाय—क्योंकि उसमें कुछ खर्च तो होता ही नहीं। जो मनुष्य केवल मनका ख़याल बांधकर अपना हौसला पूरा करता है उसे क०।

मनके लड्डू फोड़ना—झूठी ऊंची आकांक्षा करना।

मनके हारे हार है, मनके जीते जीत। पार ब्रह्मको पाइये, मन ही की परतीत—पुरुषार्थ कभी न छोड़ना चाहिये।

> दुख सुख सब कहं परत है पौरुष तजहु न मीत।
> मनके हारे हार है मनके जीते जीत॥

मनको मन पहिचानता है—दे० "दिलको दिलसे राहत है।"

मन चंगा तो कठौतीमें गंगा—जिसका हृदय शुद्ध है उसके घरहीमें गंगा है। जिस शुद्ध हृदयवाले पुरुषकी धर्म्ममें श्रद्धा है पर धनाभाव वा और किसी कारणवश तीर्थाटन वा कोई पुण्य कार्य्य नहीं कर सकता, उस पर यह मसल लागू होती है।

इसका निकास इस घटनासे है:—गुरु रामानन्दके बारह शिष्योंमें रैदास भक्त भी बड़े साधु और महात्मा हो गये हैं। यह जातिके चमार थे। किसी पर्वके दिन कुछ यात्रियोंको गंगा स्नानके लिये जाते देख उन्होंने कहा कि यह कौड़ियां तुम मेरा नाम लेकर गंगाजीको दे देना; परन्तु देना तभी जब गंगाजी साक्षात् प्रगट हों और यह कौड़ियां लेनेके लिये अपना हाथ बढ़ावें। यात्रियोंने गंगाके समीप पहुंच कर कहा कि यह कौड़ियां रैदासजीने आपको भेंट की हैं। गंगाजीने हाथ निकाल कर कौड़ियां लेलीं और बदलेमें एक सोनेका कड़ा रैदासजीको देनेके लिये दिया। यात्री वह कड़ा रैदासजीके पास न ले जाकर राजाके पास ले गये। राजाने उसे रानीको दिया। रानी उस कड़ेको देखकर ऐसी मोहित हुई कि उसको जोड़ी मिलानी चाही। जब उस तरहका कड़ा किसीसे न बन सका तो हारकर रैदासजीके पास गये, और उनसे सब हाल कह सुनाया। रैदासजीने उनका अपराध क्षमा करके, अपनी कठौतीमें से जिसमें पानी भरा हुआ था, उस कड़ेकी जोड़ी निकाल कर दे दी। तात्पर्य यह कि उनका चित्त शुद्ध था इसलिये उन्हें गंगाके समीप न जाना पड़ा, और गंगा उनकी कठौतीहीमें आ गई।

> (१) सकीयनकी तीरथ अस्नान,
> बिन पति संग उचित नहिं मान।
> कहै पखानो ज्यों रस रंगा,
> मन चंगा तो कठौतिहि गंगा। (लो०र०को०)
> (२) सरापा पाक हैं धोये जिन्होंने हाथ दुनियासे
> नहीं हाजत कि वह पानी बहायें सरसे पाज़ तक।
> (ज़ौक़)

मन चंचल करम दरिद्री—दे० "मन उमराव..."

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता—अभाव पर क०। वृद्ध मनुष्यकी विषय वासना पर भी क०।

मन चलेका सौदा है—जो चीज़ जिसे पसंद आती है वही वह खरीदता है।

> ले तेरे मन चलेका सौदा है खड़ा और मीठा॥
> कंजड़ेकी सी हाट है दुनिया सारी जिंस इकट्ठी है
> मीठी चाहे मीठी लेले खट्टी चाहे खट्टी॥
> रूपरंगपर भूल न दिलमें देख चकलके भैरी।
> ऊपर मीठी नीचे खट्टी अम्बुआकी सी कैरी॥
> ले तेरे मन चलेका सौदा है खट्टा और मीठा॥

मन जानत है आपको माई जाने बाप—गूढ़ पुरुषोंके हृदयका भेद न जानने पर क०।

मन जाने पाप, माई जाने न बाप—अपने किये पापको अपना मन ही जानता है, मां बाप नहीं जानते।

मनतुरा हाजी बगोयम् तू मरा हाजी बगो—(फा०) मैं तुझे हाजी कहूं तू मुझे हाजी कह। अर्थात् जैसा व्यवहार हम तुम्हारे साथ करें वैसा ही तुम भी हमारे साथ करो।

मन भरका सिर हिलाते हैं, पैसे भरकी ज़ुबान नहीं हिलाते—जब कोई मनुष्य सलाम, प्रणाम आदिका उत्तर मुँहसे न दे और खाली सिर हिला दे, तब क०।

मन भाय तो ढेला सुपारी—जिस चीज़पर मन चाहे वह बुरी होने पर भी अच्छी लगती है। स्त्रियां या लड़के कभी कभी मट्टीके टुकड़े सोंधेपनके लिए सुपारीकी तरह मुँहमें रख लेते हैं।

मन भावे मूंड़ हिलावे—जब किसी मनुष्यको खिलाते वक़्त उसको मन चाही चीज़ और देनेके लिये पूछा जाय और वह मुँहसे तो नाहीं करे पर देनेसे खाता जाय, तब क०। स्त्रियोंको भी क०। स्त्रियोंके "ना" कहनेको "हाँ" समझना चाहिए।
मुझे चोचले तो, खुश आते नहीं।
तेरे नाज़ बेजा यह भाते नहीं।
मेरी तर्फ़ टुक देख तू झाय झाय।
मसल है कि "मन भाय मुड़िया हिलाय।" (मीर हसन)
बहु पिय बोलत प्राण पियारी।
छिन नटिबो पुनि छिन मनुहारी।
क्यों गाया गुण चतुर चलावै।
मनसुख भावे मुंड हिलावै। (छत्र सिंह कवि)
जिसे भाता है वह सामने सिर हिलाता है कि आपका कहना ठीक है।

मन भोगी कर्म दरिद्री—दरिद्री होकर भोग विलास की इच्छा रक्खे, तब क०।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे, विष रस भरा कनक घट जैसे—(तुलसी) कपटीको क०।

मन मानी, अनजानी—जान बूझ कर अज्ञान बने, तब क०।

मन मानी, घर जानी—कोई अपने मनकी करे किसीका कहना न माने, तब क०।

मन मानेका मेला, नहिं सबसे भला अकेला—स्पष्ट।

मन मिलेका मेला, चित्त मिलेका चेला—स्पष्ट।

मनमें गाती टस टस रोवे, चूहा खसम कर सुखसे सोवे—जो सयानी लड़की छोटे लड़केसे ब्याही जाय, उस पर क०।

मनमें बसे सो सपने दसे—जो बात मनमें रहती है वही स्वप्नमें दीखती है।
(१) सोवत देख्यो आयो लाल, भोराजन सुनि हरखी बाल।
कहै पखानो क्यों बुधि भंग, जो सुपनों सो सो परसंग। (काव्य पतिका)
(२) वासना यत्र यस्यास्ते स्वप्ने तु पश्यति।

मनमें मूरख जगमें दुखी कोई नहीं—कोई अपनेको मूर्ख नहीं समझता और किसीको अपना जीना भारी नहीं होता।

मनमें शेख़ फ़रीद, बग़लमें ईंट—कोई साधु पुरुष बुरा काम करनेपर उतारू हो, तब क०। कपटीको भी क०।
इसका निकास उस कहानीसे है जिसमें एक चोर शेख़ फरीदका चेला हो गया था और प्रतिज्ञा की थी, कि कभी किसीकी चीज़ नहीं लूँगा, पर ज्यों ही उसने रास्ते में एक सोनेकी ईंट पड़ी देखी त्यों ही उसे उठाकर बग़लमें छिपा ली थी।

मन मोतियों ब्याह, मन चावलों ब्याह—(ज०) ब्याह सब ही एकसे हैं चाहे मनभर मोतियोंसे किया जाय चाहे मनभर चावलोंसे।

मन मोती अरु दूध रस, इनको एक सुभाय। फाटेसे जुड़ते नहीं, कोटिन करे उपाय—स्पष्ट। ये चारों फटनेसे फिर नहीं जुड़ते।

मन मोदक नहिं भूख बुझाई—दे० "मनके लड्डुओंसे।"

मन मौजी करम दरिद्री—दे० "मन भोगी"

मन मौजी, जोरूको कहै "भौजी"—हँसी करनेके लिए। क्योंकि भौजाईसे हँसी ठट्ठा करनेकी रीति है।

मनवा मर गया, खेल बिगड़ गया—हिम्मत हारनेसे काम बिगड़ जाता है।

मन साँचा, तो सब साँचा—दे० 'मन चंगा'।

मन हमारा पास, धन उनका पास—(पू०) मेरा मन मेरे पास है उसका धन उसके पास है। सन्तोषीका कहना है।

मन हुलासा गावे गीत—खुश होनेपर गाना सूझता है।

मम मति रंक मनोरथ राऊ—(तुलसी) ग़रीब होकर ऊंची आशा रखने पर क०।

मर गये मरदूद, जिनकी फ़ातिहा न दरूद—(मु०) अत्याचारीको क०। मरे पीछे जिसका क्रिया कर्म नहीं होता।

मरज़ बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवाकी—जब किसी कामको सुधारनेंकी जितनी चेष्टा की जाय उतना ही वह बिगड़ता जाय, तब क०।

पुलिसने चोर बदकारोंको मदद।
मरज़ बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवाकी। (प्रताप ना० मिश्र)

मरज़ीये मौला, बज हमद औला—(फा०) हरेरिच्छा बलीयसी (सं०)

मरत प्यास पिंजरा परयो, सुआ समयके फेर। आदर दै दै बोलिये, वायस बलिकी बेर—(बिहारी) जहां गुणवान दुख पावे और निर्गुणीका आदर हो, वहां क०।

मरता क्या न करता—जो मरनेको तैयार है उसके लिये कोई काम मुश्किल नहीं है।

मरता सिवाले हाथ घाले—(मा०) डूबता आदमी सिवार पकड़ता है—दे० "डूबतेको तिनकेका सहारा"

मरतेके साथ मरा नहीं जाता—जब किसीका कोई मर जाय और वह विलाप करे, तब क०।

मरन चली, और शुक्र साम्हने—(ज०) मरनेमें शकुन अपशकुन क्या? शुक्र साम्हने रहे तो यात्रा निषेध है।

मरना जीना सबके साथ लगा है—स्पष्ट।

मरना विचारा तो हटना कैसा—जो प्राणोंपर खेल कर काम करता है, वह पीछे नहीं हटता।

मरना भला विदेशका, जहां न अपना कोय। माटी खायं जनावरा, महा महोत्सव होय—भक्त या सन्यासीका कहना है। ऊपरकी आधी मसल अपनोंसे तंग आकर भी क०।

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो।
हम सख़ुन कोई न हो और हम ज़बां कोई न हो॥
बे दरो दीवारसा इकघर बनाना चाहिए।
कोई हमसाया न हो और पासबां कोई न हो॥
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमार दार।
और अगर मर जाइए तो नौहाख़्वां कोई न हो॥ (ग़ालिब)

मरनेके पहिले कब्र खोदना—दे० "बिना पानी मोज़ा उतारना"।

इस पर एक कहानी इस तरह है:—अकबर बादशाहने जब मथुराके चौबोंको देखा कि यह काम कुछ भी नहीं करते और खाली मांगके खाते हैं और मुस्टण्डे होते जाते हैं, तब उनको यह हुक्म दिया कि जो मुसलमान मर जाय उसकी कब्र तुम लोग खोदा करो। चौबोंने कब्रस्तानमें आकर हज़ारों कब्रें खोद डालीं। जब बादशाहको यह बात मालूम हुई तब चौबोंको बुलाकर पूछा कि तुमने पहलेहीसे कब्रें क्यों खोद डालीं, तब उन लोगोंने कहा कि जहांपनाह कभी न कभी तो सब मुसलमान मरेंहीगे और यह काम भी हमी लोगोंको करना पड़ेगा इसलिये पहलेहीसे कर रक्खा। बादशाह उनकी इस हाज़िर जवाबी पर बहुत खुश हुए और उनको इस कामसे रिहाई दी।

मरनेको क्या हाथी घोड़े जुड़ते हैं—जब चाहे मर जाए। किसीका अनादर करनेके लिये क०।

मरनेको जी चाहे कफ़नका टोटा—ऊ० दे०।

मरने जाय मलहार गाय—(१) जो वीर खुशीसे हथेलीपर प्राण रख लड़ाईमें मरने जाता है, उस पर क०। (२) समयानुकूल काम न करने पर क०।

मर मर न जाते, तो भर घर होते—(पू० ज०) (१) ख़र्च न होता तो बहुत धन इकट्ठा हो जाता। (२) घरके लोग मरते नहीं तो घर भर जाता।

मरल बछिया बामनको दान—निकम्मी चीज़ जब किसीको दी जाय, तब क०।

मरा रावण फ़ज़ीहत हो—बुरे आदमीके मरने पर भी लोग उसकी फ़जीहत करते हैं।

मरा हाथी सौ मनका—(१) मरनेपर भी हाथीकी क़ीमत अधिक होती है। (२) बड़ा घर बिगड़नेपर भी बहुतोंसे अच्छा होता है।

मरिहों पर टरिहों नाहीं—स्पष्ट। ज़िद्दी आदमीको क०। मरिहों पै टरिहों नाहीं भी क०।

मरी क्यों सास न आया—(पू०) स्पष्ट।

मरीज़े इश्क़को दीदार काफ़ी है—प्रेमके रोगीको अपने इष्टका देखना काफ़ी है।

मरेका कोई नहीं जीते जीके सब लागू हैं—स्पष्ट।

मरेको क्या मारना—दुर्बलको न सताना चाहिये।

किसी बे कसको ऐ बेदाद गर मारा तो क्या मारा।
जो आप ही मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा।
(ज़ौक)

मुएहि बधे नहिं कछु मनुसाई। (तुलसी)

मरेको मर जाने दे, हलुआ पूरी खाने दे—बुड्ढे आदमी पर क०।

मरेको मारे शाह मदार—दे० "दैवो दुर्बल घातकः"।

मरे तो शहीद मारे तो ग़ाज़ी—(मु०) जो अपने धर्मका नास्तिक है, उसे मारना अथवा उसके हाथ मर जानेमें ही तारीफ़ है। काफ़िरोंको मारनेके वास्ते उत्तेजित करनेके लिये मुसलमानों पर क०।

मरे न जीये हुकुर हुकुर करे—बुड्ढे रोगीको कहते हैं जिसकी सेवा करते करते उसके घरके लोग थक जाते हैं।

मरे न पीछा छोड़े, मरे न माञ्जा ले, मरे न माँचा छोड़े—न मरता है न बिछावनसे नीचे लाया जाता है। खाट पर मरना हिन्दुओंमें अच्छा नहीं समझा जाता, इसलिये मरनेके पहिले रोगीको नीचे सुलाया जाता है। उ० दे०

मरेपर बैद—
मरे पाछे बैद अइलें, ठेंगा चाटके घरे गइलें—किसी कामके नष्ट हो जानेपर जब उसका उपाय किया जाता है, तब क०।

मरे पीछे डोम राजा—(हि०) क्योंकि श्मशानमें वही कर लेता है। पीछे चाहे जो कुछ हो।

मरे बैलकी बड़ी बड़ी आँखें—जब मरे आदमीकी कोई तारीफ़ करे, तब क०।

मरे मुक्ति केहि काज—जिसका संसारमें यश न हो यदि उसकी मरेपर मुक्ति हो भी जाय तो किस कामकी। जिनको परलोकका निश्चय नहीं है और स्वर्ग नर्क सब यहीं समझते हैं उनका कहना है।

ध्रुव तजि अध्रुव धातकी, चिन्ता तजि बुधराज। जियत हंसी जो जगतमें, "मरे मुक्ति केहि काज॥" (वी० सं०)

मरे सूम सरदार मरे वह कट्टर टट्टू, मरे हठीली नारि मरे वह खसम निखट्टू। बाह्मन वह मरि जाय जो हाथ ले मदिरा प्यावे। पुत्र वही मरि जाय जो कुलमें दाग़ लगावे। बे नियाव राजा मरे नींद धड़ा धड़ सोइये। बैताल कहैं विक्रम सुनो, एते मरे न रोइये—इनमेंसे किसीके मरेपर जब कोई अफ़सोस करता है, तब क०।

मर्द औरत राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी—दे० 'मियां बीबी राज़ी'।

मर्दका एक क़ौल होता है—मर्द अपनी प्रतिज्ञा या बातसे नहीं हटता।

मर्दका क्या है एक जूती पहनी एक जूती उतारी—(ज०) जब एक स्त्री मर जाती है तो दूसरी स्त्रीसे शादी होनेपर क०।

मर्दका दिखाया न खाइये, मर्दका लाया खाइये—स्त्रियां मर्दके सामने नहीं खातीं, इसलिये क०।

मर्दका खाना औरतका नहाना, किसीने जाना किसीने न जाना—मर्दके खानेमें औरतके नहानेमें देर नहीं होती।

मर्दका नौकर मरे बरस भरमें, रंडीका नौकर मरे छः महीनेमें—क्योंकि उसे मेहनत बहुत करनी पड़ती है।

मर्दका हाथ फिरा और औरत उभड़ी—विवाहके बाद लड़की बहुत जल्द बढ़ जाती है।

मर्दकी बात और गाड़ीका पहिया आगे हीकी ओर चलता है—(हि०) भले आदमी अपनी बात नहीं बदलते।

मर्दकी मौत नामर्दके हाथ—जब कोई साहसी पुरुष धोखेसे मारा जाय, तब क०।

मर्दके चार निकाह दुरुस्त हैं—स्पष्ट। हिन्दुओं का ताना मुसलमानोंके प्रति।

मर्दको गर्द ज़रूर है—मनुष्यको मेहनत ज़रूर करनी चाहिए।

मर्द जेकरा गाँठ रुपैया—(पू०) स्पष्ट।

मर्द मरे नामको, नामर्द मरे नानको—स्पष्ट। नान=रोटी

मर्द सीसपर नवे, मर्द बोली पहिचाने।
मर्द खिलावे खाय मर्द चिन्ता नहिं माने।
मर्द देइ अरु लेइ मर्दको मर्द बचावे।
गाढ़े सकरे काम मर्दके मर्दहि आवे॥

पुनि मर्द उन्हींको जानिये साथी सुख दुख दर्दके,
वेताल कहे विक्रम सुनो ये लक्षन हैं मर्दके–स्पष्ट।

मलयागिरिकी भीलनी चन्दन देत जराय—जो चीज़ इफ़रातसे होती है उसकी क़दर नहीं होती
अति परिचय तें होत है अरुचि अनादर भाय,
मलयागिरि..........जराय। (वृन्द)

मल्लाहका लंगोटा ही भींगता है—क्योंकि वह और कोई कपड़ा नहीं पहिनता।

मल्लाहीकी मल्लाही दो, बांसके बांस खाये—दे० "बांसके बांस......"।

मसखरीके चूड़ा भर भर गाल—(पू०) जो केवल मीठी मीठी बातोंसे दूसरोंको बहला लेता और देता कुछ भी नहीं, उसपर क०।

मसजिद ढह गई मेहराब रह गई—मरनेपर नाम रह जाता है।

मसजिद तक मुल्लाकी दौड़—अपनी पहुंचके अनुसार सब कोई काम करता है अथवा जिसकी आशा जहां तक रहती है वह वहीं तक जाता है। दे० 'मुल्लाकी दौड़'

मस्ताई बकरी बोकका मुंह चूमती है—(पू०) जब मस्ती चढ़ती है तो हिताहितका ज्ञान नहीं रहता।
बिहंसि बुलाय लगाय उर मोद लिया रस चूमि।
पुलकि पसीजत पूतको पिय चूम्यो मुख चूमि॥(बिहारी)

मसानका भूत—बहुत काले आदमीको क०

मशालची अंधा होता है—दे० "चिराग़ तले अंधेरा"

मशालची मरे तो पट बीजना हो—यहां भी चमके वहां भी चमके। पट बीजना=जुगनू।

महफ़िले वीरान जहां भांड़ न बाशद—बिना भांड़के महफ़िलकी शोभा नहीं।
जङ्गले वीरान जहां शेर न बाशद, महफ़िले...बाशद।

महदसे लहद तक—जन्मसे मरण तक।

महल्लेमें आई बरात, पड़ौसनको लगी घबराट—किसी कामके आ पड़नेपर घबड़ाना नहीं चाहिए।

महाजनो येन गतस्य पंथा—(सं०) बड़े जिस रास्तेपर चल गये हैं, उसी रास्तेपर चलना चाहिए।

महावट बरसी और पाड़ो सरसी—(कृ०) जाड़ेमें वर्षा होनेसे फसल अच्छी होती है।

महादेव अवगुण भवन, विष्णु सकल गुणधाम
जेहिकर मन रमे जाहिसन, ताहि ताहिसन काम
स्पष्ट।

महिमा घटी समुद्रकी, जो रावण बसा पड़ौस—अच्छा भी यदि बुरी सँगति करे, तो उसे कालिमा लग जाती है।

महीना पुराया, और कमेरा अघाया—क्योंकि महीना पूरनेपर तनख्वाह मिलती है। कमेरा=मज़दूर।

माइ-बापको लातन मारे, मेहरी देख जुड़ाय
चारों धामें जो फिरि आवे, तबौ पाप ना जाय
स्पष्ट।

माई माई सब मिला, बाबू कोई नहीं मिला—(१) मां मरनेपर मां मिल सकती है लेकिन बाप नहीं। (२) फकीरोंका कहना है जो स्त्रियोंको माई और पुरुषोंको बाबा कहते हैं, स्त्रियों हीसे भीख अधिक मिलती है इसलिये वह ऐसा कहते हैं।

मा पली, बाप तेली, बेटा शाखे ज़ाफ़रान—जो अपनी जातिके अनुसार काम नहीं करता है, उसपर व्यंगसे क०।

माँग जाँचके गये भाँभा, माँग लें तो लागे लाजा—जो अनिच्छासे दान देता है, उसपर क०।

माँगत पूत भतार गवांयो—पुत्र माँगने गई स्वामी भी खो बैठी।

माँग न आवे भीख, तो सुरती खाना सीख—तमाखू या सुरती खानेवाले ज़रूर माँगते हैं।

माँगके खाना और मसजिदमें सोना—फक्कड़को क० जिसका कोई न हो, उसको भी क०।
माँगिके खैबो मसीदको सोइबो,
लैबेको एक न देबेको दोज। (तुलसी)

मांगन गये सो मरि गये, मरे जो मांगन जाहिं
वे नर पहिले ही मरे, जो होते कहदे नाहिं
स्पष्ट। जो होते हवाले न दे, उसपर क०।

मांगनेसे मिलता है खड़खड़ानेसे नहीं—बिना मांगे कोई किसीको नहीं देता।

मांगे बनियां भीख न देय, मूंद मारिके सर

माथ मुड़ाय फ़ज़ीहत भये, जात पांत दोनोंसे गये—जब कोई ऐसा काम करे कि न इधरका रहे, न उधर का, तब क०।

एक आलसी मनुष्य सिर मुंड़ाकर फ़क़ीर हो गया इस ख्यालसे कि भीख मांगकर जीवन बिताना बहुत सहज है किन्तु थोड़े समयके बाद उसे यह पंथ अच्छा न लगा और पुनः अपनी जातिमें मिलना चाहा; लेकिन जाति वालोंने उसे अपनी जातिमें न लिया। इसलिये वह दोनों तरफ़से गया। दे० पांडे दोउ दीनसे गये।

माथेका मुड़ौना, बेलका खिसना—जब कोई काम आरम्भ करते ही आफ़त आन पड़े, तब क०।

माथे गठरी मधुरी चाल, आज न पहुंचब पहुंचब काल—बे फ़िक्र आदमी पर क०।

माथेपर मोट बसन्तके गीत—बे मेल बात पर क०।

पहिरे चना हर आवतें, सिर बोझ धरे अठिलायँ।
घाघ कहें ये तीनिड भकुआ, बोझत मान बचायँ॥

मा तेलिन बाप पठान, बेटा शाख-ई ज़ाफ़रान
मा धोबिन पूत बज़ाज—(च०) योग्यताके विरुद्ध नाम होने पर क०।

मानका पान अपमानका लड्डू—पिछलेसे पहला अच्छा।

मानका पान भी बहुत होता है
मानका पान हीरा समान } आदरकी ज़रा सी वस्तु भी बहुत है।

मान घटे नितके घर जाये। ज्ञान घटे कुसंगति पाये। भाव घटे कुछ मुँहके मांगे। रोग घटे कुछ औषधि खाये—ज़्यादा परिचय बढ़ानेसे आदर घट जाता है।

मान न मान मैं तेरा मेहमान—ज़बरदस्ती गले पड़ने पर क०।

मान बड़ाई प्रेम रस, गरुआपन अरु नेह। यह पांचो तब ही गये, मुखसे कहा कुछ दे—(तुलसी) स्पष्ट। मांगना सबसे बुरा काम है।

मान मनाई, खीर न खाई जूठी पातर चाटन आई—जब कोई आदमी सम्मान किये जाने पर न आवे और फिर पीछे आपसे आप आ जाय, तब क०।

मा न माका जाया, सभी लोक पराया—जहां अपनी मा या सगा भाई न हो, वह देश पराया है।

मानस कसनेको मामला कसौटी है—आदमी की परख व्यवहार पड़ने पर होती है।

मानस सलिल-सुधा-प्रतिपाली, जिअइ कि लवन-पयोधि मराली—(तुलसी) स्पष्ट।

मान होत है गुननि तें गुन बिन मान न होय।
सुक सारी राखें सबै काग न राखे कोय—स्पष्ट।

मानहु लोन जरेपर देही—(तुलसी) जब कोई किसीको दुखके समयमें कड़ुवी बात कहे, तब क०।

मा नारंगी बाप कोला, बेटा रौशनुद्दौला—नामानुसार जाति या गुण न हो, तब क०।

मानुष नहीं बैलका बाबा—मूर्ख तथा अज्ञानी आदमी पर क०।

माने न माने मैं भी नौशाकी ख़ाला—(मु०ज०) दे० मान न मान......"

माने ना स्यानेकी सीख, लिये खपरिया मांगे भीख—जो बुद्धिमान या बड़ोंका कहना नहीं मानता वह पीछे दुख भोगता है।

मानो चाहे न मानो मैं तुम्हारा पंच—जो बिना पूछे बीचमें बोल उठता है उसे क०।

मानो तो देव नहीं पत्थर—
मानो तो देव नहीं भीतका लेव— } विश्वासो फलदायकः। विश्वाससे सब कुछ हो सकता है।

खकियनके पति सम भगवान) परकीयनि नति कोई आन।
कहत पखानी जीहि रस भेव। मानो देव न मानो लेव।
(ख़कोया ली०र०को०)

(२) भाव भावकी सिद्धि है भाव भावमें भेव,
जो मानो तो देव है नहीं भीतको लेव। (इन्द)

मा पनिहारी बाप कंजर, बेटा मिरज़ा संजर—दे० "मां तेलिन बाप पठान..."

मापा कनियां और पटवारी, भेंट किये बिन करे न यारी—स्पष्ट। मापा=ज़मीन नापनेवाला। कनियां=कर लगानेवाला।

मा पिसनहारी अच्छी और बाप हफ़्त हज़ारी कुछ नहीं—बापसे माका स्नेह लड़केपर अधिक रहता

है, इसलिये क०।

मा पिसनहारी पूत छैला, चूतरपर बांधे भूरका थैला—मा पिसनहारी है इसलिये उसका लड़का भूसी के सिवा और दूसरी किस चीज़से शौक़ करेगा। (भा०) जिसके पास जो चीज़ रहती है वह उसीसे अपना शौक़ पूरा करता है।

मा पे पूत पिता पे घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़म-थोड़ा—यह अशुद्ध मसल है दे० बाप पूत......"

माफ़िक़ होगा व्यय, तो कभी न होगा क्षय—स्पष्ट।

मा बाप रहते, कोई हरामका नहीं कहलाता—(व्य०) जब कोई अपनी बात या दावेका सबूत देनेको तैयार हो, तब क०

मा बेटियोंमें लड़ाई हुई लोगोंने जाना बैर पड़ा—(ज०) मा बेटीके झगड़ेको झगड़ा नहीं कहते। लोग समझते हैं दुश्मनी हुई पर वास्तवमें ऐसा नहीं होता।

मा बेटी गानेवाली बाप पूत बराती—(ज०) ग़रीब आदमीकी शादीपर क०।

"बेटेका ब्याह की तो न ब्याही न आधी है।
न रोशनी न बाजेकी आवाज़ आती है॥
मा पीछे एक मैली चद्दर ओढ़े आती है।
बेटा बना है दूल्हा तो माका बराती है।
मुफ़लिसकी यह बरात चढ़ जाती है मुफ़लिस।" (नज़ीर)

मा भटियारी पूत फ़तेखाँ } हैसियतके विरुद्ध
मा भटियारी पूत तीरंदाज़ } नाम या काम हो, तब क०।

मा मरे मौसी जीवे—मातासे मौसी अधिक प्यार करती है, इसलिये क०।

मा मारे और मां ही मां पुकारे—जिससे कष्ट मिले उसीकी दुहाई दे, तब क०। कुत्ता मारनेवाले-का ही हाथ चाटता है।

मा मारे दूसरेको न मारन दे—क्योंकि मां सा प्रेम दूसरेमें नहीं है। दे० कहानी "तबेलेकी बला"

मामूके कानमें बालियां, भांजा ऐंड़ा ऐंड़ा फिरे—जो दूसरेकी दौलतपर शेख़ी या अभिमान करता है, उसपर क०

मायाका क्या जोड़ना, खल खाना कंबल ओढ़ना—जो धनी कृपण केवल धन जमा करनेमें ही सुख समझता है, उसपर क०।

मायाके भी पाँव होते हैं, आज मेरे कल तेरे—लक्ष्मी चंचला है।

माया गंठ, विद्या कंठ—पैसा और विद्या पास रहनेसे ही काम आता है।

माया जगत सरायमें, बुरी भट्यारी रांड़। आपसमें छुतरायके किये मुसाफ़िर भांड़—(नागरी-दास) संसाररूपी सरायमें जो मायारूपी भटियारी है वही मुसाफ़िररूपी मनुष्योंको आपसमें लड़ा देती है जैसे रंडियां भांड़ोंको लड़ा देती हैं। धनके लिये ही आपसमें विवाद होता है।

माया जीका जंजाल है—धन आफ़तका घर है।

माया तेरे तीन नाम, परसू, परसा, परसराम—मनुष्य जिस हैसियत या दर्जेका रहता है, उसी तरह सम्मानित भी होता है। किसी ग़रीब आदमी को लोग "परसू" ही कहते हैं। उसकी अवस्था कुछ सुधर जानेसे "परसा" और धनी हो जानेपर "परसराम" कहने लगते हैं। अतः पैसेवालेकी क़दर की जाती है।

माया मरे न मन मरे, मर मर जात शरीर। आशा तृष्णा ना मरे, कह गये दास कबीर—माया, मन आशा, तृष्णा इनका नाश नहीं होता केवल शरीर हीका नाश होता है।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ता।
कालो न यातो वयमेव याताः तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥
(भर्तृहरि)

माया मेरे रामकी, धरनीधरकी देह। पूंजी साहूकारकी, यश कोई कर ले—दानके लिये उभा-ड़नेपर क०।

मायासे माया मिले, करके लंबे हाथ, तुलसी-दास ग़रीबकी, कोई न पूछे बात—जहां धनवानकी पूछ हो और ग़रीब गुणी होनेपर भी न पूछा जाय, वहां क०।

मायासे माया मिले, मिले नीचसे नीच। पानीसे पानी मिले, मिले कीचसे कीच—जो जैसा होता है वैसे हीमें मिल जाता है।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर। नौ नेज़ा पानी चढ़ा, तौउ न भींगी कोर—कुछ असर न हुआ। कृपणको क०। नेज़ा=बांस।

मारके आगे भूत भागे—मारसे सब डरते हैं। जब कोई सीधी तरह समझानेसे नहीं मानता और मारनेसे मान जाता है, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है। किसी कर्कशा स्त्रीने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे साथ विवाह करेगा उसे सवेरे उठते ही पांच जूतियां मारूंगी। वह स्त्री बहुत सुन्दर और धनवान थी। जो कोई उससे विवाह करता दो चार दिनमें जूतियोंकी मारसे विकल होकर भाग जाता। एक जवान और हृष्टपुष्ट पुरुषने उसके रूपपर मोहित होकर उसके साथ विवाह किया। कुछ दिन बाद जब जूतियां खाते खाते उसकी खोपड़ी पिल पिली हो गई, तो उसने किसी कामका बहाना कर कुछ दिनके लिए विदेश जानेकी अपनी स्त्रीसे आज्ञा मांगी। उसने कहा तुम तो चले जाओगे मैं अपना हाथ किसपर साफ़ करूंगी। घरके आंगनमें एक सूखा इमलीका ठूंठ था, उसे दिखाकर उस मनुष्यने कहा कि जबतक मैं लौटकर न आऊं, तुम इसीपर अपना हाथ साफ़ कर लिया करो। दैवयोगसे उस पेड़में एक भूत रहता था। वह स्त्री रोज सवेरे उठकर उस ठूंठ पेड़पर पांच जूतियां मारती, जो उस भूतको लगती थी, जब भूत जूतियोंकी मारसे बेचैन हो गया, तो उसने सोचा कि इसके मालिकको किसी तरह घरमें लौटा लाना चाहिए। यह विचार कर वह उसके पास गया और बोला कि तू अपने घर क्यों नहीं जाता। उस मनुष्यने कहा मैं रोज़गारके लिये आया हूं कुछ धन कमा लूं तो जाऊं। भूतने कहा मैं यहांकी राजकन्याके सिरपर चढ़ता हूं, सिवा तेरे किसीके उतारे न उतरूंगा और राजासे तुझे बहुत सा धन दिलवा दूंगा जिसे लेकर तू जल्दी अपने घर चला जाइयो। ऐसा ही हुआ जब उसके झाड़नेसे राजकुमारीका भूत उतर गया तो राजाने उसे बहुत धन दिया। वह मारके डरसे अपने घर तो नहीं गया वहां ही रहने लगा। वह भूत वहांसे चलकर किसी दूसरे नगरकी रानीपर जा चढ़ा। वहांके राजाने (जिसने इसकी ख्याति सुनी थी) इसी मनुष्यको भूत उतारनेके लिये बुलवाया। ज्यों हीं वह रानीके साम्हने गया त्यों हीं रानीने (जिसपर भूत चढ़ा था) लाल आंखें करके कहा—'क्यों रे दुष्ट! तेरा मतलब पूरा करा दिया तो भी तू अभीतक घर नहीं गया? उस मनुष्यने रानीके कानमें भूतसे कहा कि जिसके डरसे मैं और आप दोनों भागे फिरते हैं वह हमलोगोंकी तलाशमें यहां तशरीफ़ ले आई है। इतना सुनते ही भूत रानीको छोड़कर वहांसे भी भाग गया।

मार खाता जाय और कहे जरा मारो तो सही—डरपोकको विशेषकर बनियोंको कही जाती है, इसी जोड़की बंगलाकी प्रसिद्ध मसल है "मरालो त मारली एबार मार त देखि" दे० "अबके मारे तो..."

मार खाना मसजिदमें सो रहना—ठग और उचक्कोंको क०।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—जब किसी प्रतिष्ठित मनुष्यका अपमान होता है, तब क०।

'झिड़की तो सुहबतसे मुलाकात हो गई।
गाली कभी न दी थी सो अब बात हो गई॥
बाक़ी है मार खाना सो आज कलकी बीच।
सुन लोगे उसे तुम भी कि, औक़ात हो गई॥'

मार गुसैयां तेरी आश—नौकर मालिकसे और स्त्री पतिसे सताये जाने पर क०।

मारतेका हाथ पकड़ा जाता है कहतेकी ज़बान नहीं पकड़ी जाती—जब कोई किसीकी झूठी बुराई करता है, तब क०।

मारतेके अगाड़ी, भागतेके पिछाड़ी—डरपोकको क०। मारतेके पीछे और भागतेके आगे कहनेसे भी यही अर्थ निकलता है।

मारन हारके पीछे रहै अरु भागन हारके आगे।

मारते खांसे सब डरते हैं—(मु०) ज़बरदस्तसे सब डरते हैं।

मारने वालेसे जिलाने वाला बड़ा होता है—जब किसी घटना या रोगसे किसीकी जान बच जाय तब क०।

मारन हारने रचक भारी।

मार पीछे सवांर—मारके बाद बीच बचाव करने या माफ़ी मांगने पर क०।

मार मार किये जाय फ़तह दाद इलाही है—उद्यम किये जाय सफलता ईश्वरके आधीन है।

मार मारसे कीं च् कम है जो बामर्द विधाता कीन्ह।

मार मारके सती करना—अधिक मारने पर क०। जबरदस्ती काम कराने पर भी क०।

मार मुए मार तेरी हथड़ियां पिरायँ मेरी आदत न जाय—(मु० ज०) बहुत हठीली और करकसा स्त्री बहुत मार खानेपर अपने पतिसे क०।

मारा घोंटू फूटी आंख—जब करना है कुछ और हो जाता है कुछ, तब क०।

मा रा चे अर्ज़ी क़िस्सा कि गाव आमद ख़र रफ़्त (फ़ा०) गऊ आई और गधा चला गया इस क़िस्सेसे मुझे क्या मतलब। अप्रयोजनीय वस्तु पर अनिच्छा प्रगट करनेके लिये क०।

मारा मुंह तमाक आगे धरा न जाय—जिसको एकबार मार लग चुकी है वह दूसरा काम करनेसे डरता है।

मारी एक मुसरी नाम तीसमारख़ां—झूठी शेख़ी पर क०।

मारे और रोने न दे—ज़बरदस्तके सामने कुछ बस नहीं चलता।

मारे न चूही नाम फ़तह ख़ां—दे० 'मारी एक मुसरी...'

मारे मेहर और भागे पड़ोसिन—जब एकको त्रास देनेसे दूसरा डरे, तब क०।

मा रोवे तलवारके घावसे, बाप रोवे तीरके घावसे—जब माता पिता अपने पुत्रके भिन्न भिन्न अत्याचारोंसे सताये जायँ, तब क०।

मारे सिपाही नाम सरदारका, काटे धार नाम तलवारका—जब करे कोई, और नाम हो किसीका, तब क०।

मारे सो मीर—जो पहिले मारता है, वही श्रेष्ठ है।

मारे तो हाथी लूटे तो भंडार—काम करे तो ऐसा करे जिसमें नाम हो या अभाव दूर हो। तात्पर्य्य यह कि काम करे तो ऊंचा ही करे।

माल भी दें जूतिआं भी खायँ—व्यभिचारी मनुष्यको क०।

मालका मुंह करते हैं जानका मुंह नहीं करते—कृपणको क०। क्योंकि वह प्राणसे धनको अधिक चाहता है।

मालके नुकसानमें जानकी ख़ैर—जब किसीका धन खोया जाता है, तब उसे ढाढ़स देनेके लिये क०।

माल न राखे आपना चोरों खोरी देंदे—(पं०) अपनी असावधानीसे नुक़सान हो और दूसरोंके सिर दोष मढ़े तब क०।

माल पर ज़कात है—ख़ैरात करना धनवानका काम है। हैसियतके अनुसार खर्च किया जाता है।

मालवाला हारे, गालवाला जीते—(व्य०) अंगरेज़ी अदालतोंमें मुक़दमे पर क०। जहां पावने दार तो हार जाता है और देनदार वकील कौंसिलोंकी सहायतासे जीत जाता है।

माला तेरी काठकी धागा दई पिरोय। मनमें गांठी पापकी राम भजे क्या होय—बिना मन शुद्ध हुए ऊपरी आडम्बर दिखानेसे कुछ नहीं होता।

माला फेरे हरि मिलैं तो बँधा फेरे भाड़—नास्तिकोंका कहना है।

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप, साहु चाहे बोलना, चोर चाहे चूप—स्पष्ट।

मालूम होगा हश्रको पीना शराबका—(मु०) शराबियोंको क०। जिस दिन ईश्वरके यहां विचार होगा उस दिन शराब पीनेका मज़ा मालूम होगा।

माले मुफ़्त दिले बेरहम—(फ़ा०) जब कोई दूसरेका माल खर्च करनेमें दर्द न करे, तब क०।

माले मोल बिकाय, नहीं बैठे भूसा खाय—(व्य०) माल दाम आनेहीसे बिकता है नहीं तो पड़ा रहता है।

माले हराम बूद बजाये हराम रफ़्त—(फ़ा०) मुफ़्तका माल मुफ़्तमें ही जाता है।

माशूक़की ज़ात बेवफ़ा है—स्पष्ट। इससे कोई अच्छा फल नहीं निकल सकता।

मास खाये मास बढ़े, घी खाये बल होय। साग खाये ओझ बढ़े, बूता कहांसे होय—स्पष्ट।

मास बिना सब साग रसोई—(मु०) मांसाहारीओंका कहना है।

माससे नौह जुदा नहीं होता—अपने अलग नहीं हो सकते अर्थात रिश्तेदारी टूट नहीं सकती।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर। नौ नेज़ा पानी चढ़ा, तोउ न भींगी कोर—कुछ असर न हुआ। कृपणको क०। नेज़ा=बांस।

मारके आगे भूत भागे—मारसे सब डरते हैं। जब कोई सीधी तरह समझानेसे नहीं मानता और मारनेसे मानजाता है, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है। किसी करकसा स्त्रीने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे साथ विवाह करेगा उसे सवेरे उठते ही पांच जूतियां मारूंगी। वह स्त्री बहुत सुन्दर और धनवान थी। जो कोई उससे विवाह करता दो चार दिनमें जूतियोंकी मारसे विकल होकर भाग जाता। एक जवान और हृष्टपुष्ट पुरुषने उसके रूपपर मोहित होकर उसके साथ विवाह किया। कुछ दिन बाद जब जूतियां खाते खाते उसकी खोपड़ी पिलपिली हो गई, तो उसने किसी कामका बहाना कर कुछ दिनके लिए विदेश जानेको अपनी स्त्रीसे आज्ञा मांगी। उसने कहा तुम तो चले जाओगे मैं अपना हाथ किसपर साफ़ करूंगी। घरके आंगनमें एक सूखा ऊंचका ठूंठ था, उसे दिखाकर उस मनुष्यने कहा कि जबतक मैं लौटकर न आऊं, तुम इसीपर अपना हाथ साफ़ कर लिया करो। दैवयोगसे उस पेड़में एक भूत रहता था। वह स्त्री रोज़ सवेरे उठकर उस ठूंठ पेड़पर पांच जूतियां मारती, जो उस भूतको लगती थी, जब भूत जूतियोंकी मारसे बेचैन हो गया, तो उसने सोचा कि इसके मालिकको किसी तरह घरमें लौटा लाना चाहिए। यह विचार कर वह उसके पास गया और बोला कि तू अपने घर क्यों नहीं जाता। उस मनुष्यने कहा मैं रोज़गारके लिये आया हूं कुछ धन कमा लूं तो जाऊं। भूतने कहा मैं यहांकी राजकन्याके सिरपर चढ़ता हूं, सिवा तेरे किसीके उतारे न उतरूंगा और राजासे तुझे बहुत सा धन दिलवा दूंगा जिसे लेकर तू जल्दी अपने घर चला जाइयो। ऐसा ही हुआ जब उसके झाड़नेसे राजकुमारीका भूत उतर गया तो राजाने उसे बहुत धन दिया। वह मारके डरसे अपने घर तो नहीं गया वहां ही रहने लगा। वह भूत वहांसे चलकर किसी दूसरे नगरकी रानीपर जा चढ़ा। वहांके राजाने (जिसने इसकी ख्याति सुनी थी) इसी मनुष्यको भूत उतारनेके लिये बुलवाया। ज्यों ही यह रानीके सामने गया त्यों ही रानीने (जिसपर भूत चढ़ा था) लाल आंखें करके कहा—"क्यों रे दुष्ट! तेरा मतलब पूरा करा दिया तो भी तू अभीतक घर नहीं गया?" उस मनुष्यने रानीके कानमें भूतसे कहा कि जिसके डरसे मैं और आप दोनों भागे फिरते हैं वह हमलोगोंकी तलाशमें यहां तशरीफ़ ले आई है। इतना सुनते ही भूत रानीको छोड़कर वहांसे भी भाग गया।

मार खाता जाय और कहे ज़रा मारो तो सही—डरपोकको विशेषकर बनियोंको कही जाती है, इसी जोड़की बंगलाकी प्रसिद्ध मसल है "मराली त मारली एबार मार त देखि" दे० "अबके मारे तो..."

मार खाना मसजिदमें सो रहना—ठग और उचक्कोंको क०।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—जब किसी प्रतिष्ठित मनुष्यका अपमान होता है, तब क०।

'झिड़की तो सुहबतसे मुसावात हो गई।
गाली कभी न दी थी सो अब बात हो गई॥
बाक़ी है मार खाना सो आज कलके बीच।
तुम खोगे उसे तुम भी कि औक़ात हो गई॥'

मार गुसैयां तेरी आश—नौकर मालिकसे और स्त्री पतिसे सताये जाने पर क०।

मारतेका हाथ पकड़ा जाता है कहतेकी ज़बान नहीं पकड़ी जाती—जब कोई किसीकी झूठी बुराई करता है, तब क०।

मारतेके अगाड़ी, भागतेके पिछाड़ी—डरपोकको क०। मारतेके पीछे और भागतेके आगे कहनेसे भी यही अर्थ निकलता है।

मारन हारके पीछे रहै अरु भाजन हारके आगत जाहि।

मारते खांसे सब डरते हैं—(मु०) ज़बरदस्तसे सब डरते हैं।

मारने वालेसे जिलाने वाला बड़ा होता है—जब किसी घटना या रोगसे किसीकी जान बच जाय तब क०।

मारन हारते रच्छक भारी।

मार पीछे सवार—मारके बाद बीच बचाव करने या माफ़ी मांगने पर क०।

मार मार किये जाय फ़तह दाद इलाही है—उद्यम किये जाय सफलता ईश्वरके आधीन है।

मार मारसे क्यों च करत है जो नामर्द विधाता कीन्ह।

मार मारके सती करना—अधिक मारने पर क०। जबरदस्ती काम कराने पर भी क०।

मार मुए मार तेरी हथड़ियां पिरायँ मेरी आदत न जाय—(मु० अ०) बहुत हठीली और करकसा स्त्री बहुत मार खानेपर अपने पतिसे क०।

मारा घोंटू फूटी आंख—जब करना है कुछ और हो जाता है कुछ, तब क०।

मा रा चे अर्ज़ी क़िस्सा कि गाव आमद ख़र रफ़्त (फ़ा०) गऊ आई और गधा चला गया इस क़िस्सेसे मुझे क्या मतलब। अप्रयोजनीय वस्तु पर अनिच्छा प्रगट करनेके लिये क०।

मारा मुंह तमाक आगे धरा न खाय—जिसको एकबार मार लग चुकी है वह दूसरा काम करनेसे डरता है।

मारी एक मुसरी नाम तीसमारखां—झूठी शेखी पर क०।

मारे और रोने न दे—ज़बरदस्तके सामने कुछ बस नहीं चलता।

मारे न चूही नाम फ़तह खां—दे० 'मारी एक मुसरी...'

मारे मेहर और भागे पड़ोसिन—जब एकको त्रास देनेसे दूसरा डरे, तब क०।

मा रोवे तलवारके घावसे, बाप रोवे तीरके घावसे—जब माता पिता अपने पुत्रके भिन्न भिन्न अत्याचारोंसे सताये जायँ, तब क०।

मारे सिपाही नाम सरदारका, काटे यार नाम तलवारका—जब करे कोई, और नाम हो किसीका, तब क०।

मारे सो मीर—जो पहिले मारता है, वही श्रेष्ट है।

मारे तो हाथी लूटे तो भंडार—काम करे तो ऐसा करे जिसमें नाम हो या अभाव दूर हो। तात्पर्य यह कि काम करे तो ऊंचा ही करे।

माल भी दें जूतिआं भी खायँ—व्यभिचारी मनुष्यको क०।

मालका मुंह करते हैं जानका मुंह नहीं करते—कृपणको क०। क्योंकि वह प्राणसे धनको अधिक चाहता है।

मालके नुकसानमें जानकी ख़ैर—जब किसीका धन खोया जाता है, तब उसे ढाढ़स देनेके लिये क०।

माल न राखे आपना चोरों खोरो देंहे—(पं०) अपनी असावधानीसे नुक़सान हो और दूसरोंके सिर दोष मढ़े तब क०।

माल पर ज़कात है—ख़ैरात करना धनवानका काम है। हैसियतके अनुसार खर्च किया जाता है।

मालवाला हारे, गालवाला जीते—(व्य०) अंगरेज़ी अदालतोंमें मुक़द्दमे पर क०। जहां पावने दार तो हार जाता है और देनदार वकील कौंसिलोंकी सहायतासे जीत जाता है।

माला तेरी काठकी धागा दई पिरोय। मनमें गांठी पापकी राम भजे क्या होय—बिना मन शुद्ध हुए ऊपरी आडम्बर दिखानेसे कुछ नहीं होता।

माला फेरे हरि मिले तो बँदा फेरे झाड़—नास्तिकोंका कहना है।

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप, साहू चाहे बोलना, चोर चाहे चूप—स्पष्ट।

मालूम होगा हश्रको पीना शराबका—(मु०) शराबियोंको क०। जिस दिन ईश्वरके यहां विचार होगा उस दिन शराब पीनेका मजा मालूम होगा।

माले मुफ़्त दिले बेरहम—(फ़ा०) जब कोई दूसरेका माल खर्च करनेमें दर्द न करे, तब क०।

माले मोल विकाय, नहीं बैठे भूसा खाय—(व्य०) माल दाम आनेहीसे बिकता है नहीं तो पड़ा रहता है।

माले हराम बूद बजाये हराम रफ़्त—(फ़ा०) मुफ्तका माल मुफ्तमें हो जाता है।

माशूक़की ज़ात बेवफ़ा है—स्पष्ट। इससे कोई अच्छा फल नहीं निकल सकता।

मास खाये मास बढ़े, घी खाये बल होय। साग खाये ओझ बढ़े, बूता कहांसे होय—स्पष्ट।

मास बिना सब साग रसोई—(मु०) मांसाहारीओंका कहना है।

माससे नोह जुदा नहीं होता—अपने अलग नहीं हो सकते अर्थात् रिश्तेदारी छूट नहीं सकती।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर। नौ नेज़ा पानी चढ़ा, तौउ न भींगो कोर—कुछ असर न हुआ। कृपणको क०। नेज़ा=बांस।

मारके आगे भूत भागे—मारसे सब डरते हैं। जब कोई सीधी तरह समझानेसे नहीं मानता और मारनेसे मानजाता है, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है। किसी करकसा स्त्रीने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे साथ विवाह करेगा उसे सवेरे उठते ही पांच जूतियां मारूंगी। वह स्त्री बहुत सुन्दर और धनवान थी। जो कोई उससे विवाह करता दो चार दिनमें जूतियोंकी मारसे विकल होकर भाग जाता। एक जवान और हृष्टपुष्ट पुरुषने उसके रूपपर मोहित होकर उसके साथ विवाह किया। कुछ दिन बाद जब जूतियां खाते खाते उसकी खोपड़ी पिल पिली हो गई, तो उसने किसी कामका बहाना कर कुछ दिनके लिए विदेश जानेको अपनी स्त्रीसे आज्ञा मांगी। उसने कहा तुम तो चले जाओगे मैं अपना हाथ किसपर साफ़ करूंगी। घरके आंगनमें एक सूखा हुआ ठूंठ था, उसे दिखाकर उस मनुष्यने कहा कि जबतक मैं लौटकर न आऊं, तुम इसीपर अपना हाथ साफ़ कर लिया करो। दैवयोगसे उस पेड़में एक भूत रहता था। वह स्त्री रोज़ सवेरे उठकर उस ठूंठ पेड़पर पांच जूतियां मारती, जो उस भूतको लगती थी, जब भूत जूतियोंकी मारसे बेचैन हो गया, तो उसने सोचा कि इसके मालिकको किसी तरह घरमें लौटा लाना चाहिए। यह विचार कर वह उसके पास गया और बोला कि तू अपने घर क्यों नहीं जाता। उस मनुष्यने कहा मैं रोज़गारके लिये आया हूं कुछ धन कमा लूं तो जाऊं। भूतने कहा मैं यहांकी राजकन्याके सिरपर चढ़ता हूं, सिवा तेरे किसीके उतारे न उतरूंगा और राजासे तुझे बहुत सा धन दिलवा दूंगा जिसे लेकर तू जल्दी अपने घर चला जाइयो। ऐसा ही हुआ जब उसके झाड़नेसे राजकुमारीका भूत उतर गया तो राजाने उसे बहुत धन दिया। वह मारके डरसे अपने घर तो नहीं गया वहां ही रहने लगा। वह भूत वहांसे चलकर किसी दूसरे नगरकी रानीपर जा चढ़ा। वहांके राजाने (जिसने इसकी ख्याति सुनी थी) इसी मनुष्यको भूत उतारनेके लिये बुलवाया। ज्यों हीं वह रानीके सामने गया त्यों हीं रानीने (जिसपर भूत चढ़ा था) लाल आंखें करके कहा—'क्यों रे दुष्ट! तेरा मतलब पूरा करा दिया तो भी तू अभीतक घर नहीं गया?' उस मनुष्यने रानीके कानमें धीरेसे कहा कि जिसके डरसे मैं और आप दोनों भागे फिरते हैं वह हमलोगोंकी तलाशमें यहां तशरीफ़ ले आई है। इतना सुनते ही भूत रानीको छोड़कर वहांसे भी भाग गया।

मार खाता जाय और कहे ज़रा मारो तो सही—डरपोकको विशेषकर बनियोंको कही जाती है, इसी जोड़की बंगलाकी प्रसिद्ध मसल है "मराली न मार-ली एबार मार त देखि" दे० "अबके मारे तो..."

मार खाना मसजिदमें सो रहना—ठग और उचक्कोंको क०।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—जब किसी प्रतिष्ठित मनुष्यका अपमान होता है, तब क०।

'झिड़की तो मुद्दतसे मसावात हो गई।
गाली कभी न दी थी सो अब बात हो गई॥
बाक़ी है मार खाना सो आग कलकी बीच।
सुन लोगे उसे तुम भी कि, औक़ात हो गई॥'

मार गुसैयां तेरी आश—नौकर मालिकसे और स्त्री पतिसे सताये जाने पर क०।

मारतेका हाथ पकड़ा जाता है कहतेकी ज़बान नहीं पकड़ी जाती—जब कोई किसीकी झूठी बुराई करता है, तब क०।

मारतेके अगाड़ी, भागतेके पिछाड़ी—डरपोकको क०। मारतेके पीछे और भागतेके आगे कहनेसे भी यही अर्थ निकलता है।

मारन हारकी पीछे रहे भव भागन हारके धावत आगे।

मारते खांसे सब डरते हैं—(मु०) ज़बरदस्तसे सब डरते हैं।

मारने वालेसे जिलाने वाला बड़ा होता है—जब किसी घटना या रोगसे किसीकी जान बच जाय तब क०।

मारन हारते रचक भारी।

मार पीछे सवांर—मारके बाद बीच बचाव करने या माफ़ी मांगने पर क०।

मार मार किये जाय फ़तह दाद इलाही है—उद्यम किये जाय सफलता ईश्वरके आधीन है।

साहब सलामत अब भी मेरी सेखजीसे है।
लेकिन कटे हमारे वही राह हाटमें। (अकबर)

मिल गये को हरगंगा—मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा।

मिले एक समरत्थके, सवै सुन्न दश गुन्न।

मिटे एक समरत्थके, सवै सुन्नके सुन्न—एक सामर्थ्यवान सहायक मिलनेसे दशगुना बल हो जाता है। जैसे सुन्नके आगे एक बैठा देनेसे दस हो जायगा और उसपर जितने सुन्न बैठाते जावो बराबर दस गुना होता जायगा, परन्तु यदि एक मिटा दिया जाय और केवल सुन्न रह जायँ तो उनका कुछ मोल न रहेगा।

मिल्लतमां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल।
माखी जब हों एकठी, तो देवें सहद सुहाल।
एका रहनेपर लाभ दिखलानेके लिये क०।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुसको—(मु० ज०) मुफ़लिसी पर क०।

मिस्सोंसे पेट भरता है किस्सोंसे नहीं—जब कोई झूठी शिष्टाचारी दिखावे कुछ दे नहीं, तब क०। ख़ाली बातोंसे पेट नहीं भरता। मिस्सा=उस आटेकी रोटी जो कई तरहका अन्न एक साथ मिलाकर पीसा जाता है।

मीठ बहुत जहँ कीरा लागे-अधिक प्रीतिसे बिगाड़ होता है।

मीठा और भर कठौती—अच्छी चीज़ बहुत नहीं मिलती। दुहरे लाभ पर भी क०। दे० "एक तो मीठा"

मीठा ख़ातिर जूठा खाय—आदमी स्वार्थके लिये ख़ुशामद करता है।

मीठा बोल पूरा तोल—(व्य०) दूकानदारको चाहिये कि गाहकसे मीठा बोले और वज़न या मापमें पूरी चीज़ दे।

मीठा मीठा गप्प, कड़ुआ कड़ुआ थू—(व्य) जब कोई जीतका माल चुन चुनके निकाले और नुकसानका छोड़ दे, तब क०।

मीठी छुरी—कपटी को क०।

मीठेसे मरे तो ज़हर क्यों दे—दे० "गुड़ दिये मरे"

मीठेपर नोन और नोनपर मीठा—खानेमें स्वादिष्ट लगता है। एक रसकी चीज़ खाते खाते या एक ही प्रसंगकी बातें करते करते जब जी ऊब जाता है, तब उसे बदलनेके लिये क०।

नयन सलोने अधर मधु कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावे लौनपर अरु मीठे पर लौन॥

मीत न नीत गलीत यह, जो धरिए धन जोर।
खाये खर्चे जो बचे, तो जोरिये करोर-(बिहारी)
जो पेट काटकर धन जमा करते हैं, उनके लिये क०।

मीनहिं पैरब कौन सिखावे—दे० "मछलीकेबच्चोंको"

मीर साहबकी जात आली है मुंह चिकना पेट ख़ाली है—(व०) लिफ़ाफ़ियेपर ताना है।

मीरसाहब ज़माना नाज़ुक है, दोनों हाथोंसे थामिये दस्तार—(मु०) खूब सम्हलकर रहनेपर क०।

मीरांकी घोटी है—(मु०) बड़ा हिस्सा अलग कर देनेपर क०। दरगाहोंके मुजाविर या मन्दिरोंके पुजारी चढ़ावा या प्रसादका हिस्सा पीर या देवताके नामसे अलग रख लेते हैं बाकी सबको बांट देते हैं।

मीरां गोर बराबर—जितने बड़े मीयाँ उतनीही बड़ी उनकी क़ब्र। दे० "मियां गोर बराबर"

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—(१) अन्य धर्मी श्राद्ध करनेपर कहते हैं (२) जब कोई बूढ़ा होकर जवानीका मज़ा लूटा चाहे, तब भी क०।

मुई बछिया बाहनको दान—जब कोई किसीको ऐसी चीज़ दे जो किसीके कामकी न हो, तब क०।

मुई माई टूटी सगाई—(ज०) मांके मरनेपर नैहरका नाता टूट जाता है।

मुई लोलो अंडोंपर—कमज़ोर अपना गुस्सा बेक़सूर पर उतारता है।

मुए गे और सो रहेंगे—मरनेपर क०।

मुएपर सौ दुर्रे—दे० "मरे को मारे"

मुए शेरसे जीती बिल्ली भली—जीवट बड़ी चीज़ है।

मुँह ऐसा जैसे भैंसका चूतड़—भद्दी शक्लपर क०।

मुँह कहे "खाया खाया" हलक़ कहे "सवाद न आया"—जब कोई किसीको बहुत थोड़ा खानेको दे, तब क०।

मुँहका निवाला तो नहीं है—जो जल्दी निगल

दिलसे मिटना तेरी अंगुश्त हिनाईका ख्याल।
हो गया गोश्तसे नाखुनका जुदा हो जाना।

मिज़ाज क्या है कि एक तमाशा, घड़ीमें तोला घड़ीमें माशा—अव्यवस्थित चित्तवालेको क०।

मिज़ाज बादशाहका औक़ात भड़भूँजेकी—जो ग़रीब होकर ऊँचा मिज़ाज रखे, उसे क०।

मिट्टी कहे कुम्हारसे, तू क्या रूँधे मोहि, एक दिन ऐसा आयगा, मैं रूँधूँगी तोहि—प्राणी-मात्रका शरीर एक न एक दिन मिट्टीमें ही मिल जाता है।

मिट्टी पकड़े सोना हो—भाग्यवान मनुष्य पर क०।

मिटे न होनहारकी रेख—भावी प्रबल है।

पति पहितानी चली सुखाल, बड़ सो ऐसी कुती न काल।
कहै उक्ति क्यों बुधि विशेख, मिटे न होनहारकी रेख।
(कलह तरिता)

मिटे न मेटे रेख हथेली—ऊ० दे०।

मित्र बनाये ना बने, बैरी सिंह अरु आग। जैसे कधी न हो सकें, एक ठौर जल आग—स्पष्ट।

मित्र वही मर जाय, जो अड़ीपर काम न आय—विपत्तिके समय जो काम न दे वह दोस्त नहीं है।

मित्तरसे अन्तर नहीं, बैरीसे नहिं नेह। पीतमसे परदा नहीं, जिन निरखी सारी देह—स्पष्ट।

मियाँका दम और किवाड़की जोड़ी—किसी बहुत ही ग़रीब भले मानसको क० जिसके पास कुछ न हो।

मियाँकी जूती मियाँका सिर—उसीकी चीज़से उसीकी हानि करने या उसीका ख़र्च कराकर उसीकी दावत करने पर क०।

मियाँकी दाढ़ी वाह वाहीमें गई—दूसरेसे अपनी झूठी तारीफ़ सुनकर जब कोई अपनी दौलत उड़ा डालता है, तब क०। दे० "मुल्लाकी दाढ़ी।"

मियाँके मियाँ गये बुरे बुरे सुपने—(मु० ज०) जब किसीको दुखपर दुख आ जाता है, तब क०।

मियाँ गये रौंद बीबी गई पटरौंद—जिस औरत का चरित्र ख़राब है उसपर क०।

मियाँ गुड़ बराबर—जितनी आमदनी उतना ख़र्च। जितने हिस्से उतने ही लेनेवाले यानी जब बांटते समय चीज़ पूरी हो जाय और सबको मिल भी जाय, तब क०।

मियाँ गोर बराबर—(मु०) जितने बड़े मियां उतनी हीं बड़ी क़ब्र। ठीक हिसाब मिलने पर क०।

मियाँनमेंसे निकला ही पड़ता है—जब कोई आदमी अकारण बहुत क्रोध करता है वा आपेसे बाहर होने लगता है, तब क०।

मियाँ नाक काटनेको फिरें बीबी कहें नथ गढ़ाओ (ज०) जब कोई दूसरेकी इच्छासे ठीक उलटा काम करना चाहता है, तब क०।

मियांने टोई, सब कामसे खोई—(मु०) मियांने टटोला और वह भाग गई। जब कोई अपनी बेवक़ूफ़ीसे अच्छा नौकर भगा देता है, तब क०।

मियाँ फिरें लाल गुलाल, बीबीके हैं बुरे हवाल—(मु० ज०) जो आप तो छैल छिकनियाँ बने फिरे, और घरमें ख़र्चको कुछ न दे, उसे क०।

मियाँ बीबी राज़ी, तो क्या करेगा क़ाज़ी—जब दोनों आपसमें मिल जायं तो बीचमें दख़ल देनेकी कोई ज़रूरत नहीं।

मियाँ हाथ अंगूठी, बीबीके कनपात; लौंडीके दाँत मिस्सी, तीनोंकी एक बात—जैसा शौक़ीन मालिक वैसा नौकर। जहां सब ही लिफ़ाफ़िये हों, वहां क०।

मिरज़ापुरी बग़लमें छुरी, खाते पीते नियत बुरी—मिरज़ापुरके रहनेवालों पर ताना है।

मिरज़ा फोया—जो बहुत सुकुमार बनता है उसको क०।

मिलकी क्या जाने पराये दिलकी—कौन आदमी किस तरहसे अपना जीवन बिताता है वह धनी पुरुष नहीं जान सकता।

मिलकी ना कहे दिलकी, पैठें दरवाज़े निकलें खिड़की—(पू०) धनी आदमी कोई काम प्रकट रूपसे नहीं करता।

मिल गयेकी राम राम— / मिल गयेकी सलाम आलेक— } झूठे मित्र पर क०।

वे गानगी नहीं है बस इतनी दोस्ती है।
मैं उनको जानता हूं वे मुझको जानते हैं। (अकबर)

साहब सलामत अब भी मेरी शेखजीसे है।
लेकिन कटे कमाई वही राह छाटमें। (अकबर)

मिल गये की हरगंगा—मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा।

मिले एक समरत्थके, सबै सुख दश गुन्न।

मिटे एक समरत्थके, सबै सुखके सुन्न—एक सामर्थ्यवान सहायक मिलनेसे दशगुना बल हो जाता है। जैसे सुन्नके आगे एक बैठा देनेसे दश हो जायगा और उसपर जितने सुन्न बैठाते जावो, बराबर दश गुना होता जायगा, परन्तु यदि एक मिटा दिया जाय और केवल सुन्न रह जायँ तो उनका कुछ मोल न रहेगा।

मिल्लतमां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल।
माखी जब हों एकठी, तो देवें सहद मुहाल।
एका रहनेपर लाभ दिखलानेके लिये क०।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुसको—(मु० ज०) मुफ़लिसी पर क०।

मिस्सोंसे पेट भरता है किस्सोंसे नहीं—जब कोई झूठी शिष्टाचारी दिखावे कुछ दे नहीं, तब क०। ख़ाली बातोंसे पेट नहीं भरता। मिस्सा=उस आटेकी रोटी जो कई तरहका अन्न एक साथ मिलाकर पीसा जाता है।

मीठ बहुत जहँ कीरा लागे-अधिक प्रीतिसे बिगाड़ होता है।

मीठा और भर कठौती—अच्छी चीज़ बहुत नहीं मिलती। दुहरे लाभ पर भी क०। दे० "एक तो मीठा"

मीठा ख़ातिर जूठा खाय—आदमी स्वार्थके लिये ख़ुशामद करता है।

मीठा बोल पूरा तोल—(व्य०) दूकानदारको चाहिये कि गाहकसे मीठा बोले और वज़न वा मापमें पूरी चीज़ दे।

मीठा मीठा गप्प, कड़ुआ कड़ुआ थू—(व्य) जब कोई जीतका माल चुन चुनके निकाले और नुकसानका छोड़ दे, तब क०।

मीठी छुरी—कपटी को क०।

मीठेसे मरे तो ज़हर क्यों दे—दे० "गुड़ दिये मरे"

मीठेपर नोन और नोनपर मीठा—खानेमें स्वादिष्ट लगता है। एक रसकी चीज़ खाते खाते वा एक ही प्रसंगकी बातें करते करते जब जी ऊब जाता है, तब उसे बदलनेके लिये क०।

नयन सलोने अधर मधु कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावे लौनपर अरु मीठे पर लौन॥

मीत न नीत गलीत यह, जो धरिए धन जोर।
खाये खरचे जो बचे, तो जोरिये करोर-(बिहारी)
जो पेट काटकर धन जमा करते हैं, उनके लिये क०।

मीनहि पैरब कौन सिखावे—दे० "मछलीके बच्चोंको"

मीर साहबकी जात आली है मुंह चिकना पेट ख़ाली है—(च०) लिफ़ाफ़ियेपर ताना है।

मीरसाहब ज़माना नाज़ुक है, दोनों हाथोंसे थामिये दस्तार—(मु०) ख़ूब सम्हलकर रहनेपर क०।

मीरांकी चोटी है—(मु०) बड़ा हिस्सा अलग कर देनेपर क०। दरगाहोंके मुजाविर वा मन्दिरोंके पुजारी चढ़त वा प्रसादका हिस्सा पीर वा देवताके नामसे अलग रख लेते हैं बाकी सबको बांट देते हैं।

मीराँ गोर बराबर—जितने बड़े मीयाँ उतनीही बड़ी उनकी क़ब्र। दे० "मियां गोर बराबर"

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—(१) अन्य धर्मी श्राद्ध करनेपर कहते हैं (२) जब कोई बूढ़ा होकर जवानीका मज़ा लूटा चाहे, तब भी क०।

मुई बछिया बाह्मनको दान—जब कोई किसीको ऐसी चीज़ दे जो किसीके कामकी न हो, तब क०।

मुई माई टूटी सगाई—(ज०) मांके मरनेपर नैहरका नाता टूट जाता है।

मुई लोलो अंडोंपर—कमज़ोर अपना गुस्सा बेक़सूर पर उतारता है।

मुए गे और सो रहेंगे—मरनेपर क०।

मुएपर सौ दर्रे—दे० "मरे को मारे"

मुए शेरसे जीती बिल्ली भली—जीवट बड़ी चीज़ है।

मुँह ऐसा जैसे भैंसका चूतड़—भद्दी शक्लपर क०।

मुँह कहे "खाया खाया" हलक़ कहे "सवाद न आया"—जब कोई किसीको बहुत थोड़ा खानेको दे, तब क०।

मुँहका निवाला तो नहीं है—जो जल्दी निगल

दिलसे मिटना तेरी मंगूल हिनारेका ख्याल।
हो गया गोश्तसे नाखूनका जुदा हो जाना।

मिज़ाज क्या है कि एक तमाशा, घड़ीमें तोला घड़ीमें माशा—अव्यवस्थित चित्तवालेको क०।

मिज़ाज बादशाहका औक़ात भड़भूंजेकी—जो ग़रीब होकर ऊँचा मिज़ाज रखे, उसे क०।

मिट्टी कहे कुम्हारसे, तू क्या रूँधे मोहि, एक दिन ऐसा आयगा, मैं रूँधूँगी तोहि—प्राणी-मात्रका शरीर एक न एक दिन मिट्टीमें ही मिल जाता है।

मिट्टी पकड़े सोना हो—भाग्यवान मनुष्य पर क०।

मिटे न होनहारकी रेख—भावी प्रबल है।

चलि पक्षिनी चली सुजाल, बड़ तो ऐसी हुती न बाल।
कहै उक्ति ज्यों बुद्धि विशेख, मिटे न होनहारकी रेख।
(कलई तरिता)

मिटे न मेटे रेख हथेली—ऊ० दे०।

मित्र बनाये ना बने, बैरी सिंह अरु आग। जैसे कधी न हो सकें, एक ठौर जल आग—स्पष्ट।

मित्र वही मर जाय, जो अड़ीपर काम न आय—विपत्तिके समय जो काम न दे वह दोस्त नहीं है।

मिन्तरसे अन्तर नहीं, बैरीसे नहिं नेह। पीतमसे परदा नहीं, जिन निरखी सारी देह—स्पष्ट।

मियाँका दम और किवाड़की जोड़ी—किसी बहुत ही ग़रीब भले मानसको क० जिसके पास कुछ न हो।

मियाँकी जूती मियाँका सिर—उसीकी चीज़से उसीकी हानि करने या उसीका ख़र्च कराकर उसीकी दावत करने पर क०।

मियाँकी दाढ़ी वाह वाहीमें गई—दूसरेसे अपनी झूठी तारीफ़ सुनकर जब कोई अपनी दौलत उड़ा डालता है, तब क०। दे० 'मुल्लाकी दाढ़ी।'

मियाँके मियाँ गये बुरे बुरे सुपने—(मु० ज०) जब किसीको दुखपर दुख आ जाता है, तब क०।

मियाँ गये रौंद बीबी गई पटरौंद—जिस औरत का चरित्र ख़राब है उसपर क०।

मियाँ गुड़ बराबर—जितनी आमदनी उतना ख़र्च। जितने हिस्से उतने ही लेनेवाले यानी जब बाँटते समय चीज़ पूरी हो जाय और सबको मिल भी जाय, तब क०।

मियाँ गोर बराबर—(मु०) जितने बड़े मियाँ उतनी ही बड़ी क़ब्र। ठीक हिसाब मिलने पर क०।

मियाँनमेंसे निकला ही पड़ता है—जब कोई आदमी अकारण बहुत क्रोध करता है वा आपेसे बाहर होने लगता है, तब क०।

मियाँ नाक काटनेको फिरें बीबी कहें नथ गढ़ादो (ज०) जब कोई दूसरेकी इच्छासे ठीक उलटा काम करना चाहता है, तब क०।

मियाँने टोई, सब कामसे खोई—(मु०) मियाँने टटोला और वह भाग गई। जब कोई अपनी बेवक़ूफ़ीसे अच्छा नौकर भगा देता है, तब क०।

मियाँ फिरें लाल गुलाल, बीबीके हैं बुरे हवाल—(मु० ज०) जो आप तो छैल छिकनियाँ बने फिरे, और घरमें सबको कुछ न दे, उसे क०।

मियाँ बीबी राज़ी, तो क्या करेगा क़ाज़ी—जब दोनों आपसमें मिल जायं तो बीचमें दख़ल देनेकी कोई ज़रूरत नहीं।

मियाँ हाथ अंगूठी, बीबीके कनपात, लौंडीके दाँत मिस्सी, तीनोंकी एक बात—जैसा बौक़ोन मालिक वैसा नौकर। जहाँ सब ही लिफ़ाफ़िये हों, वहाँ क०।

मिरज़ापुरी बग़लमें छुरी, खाते पीते नियत बुरी—मिरज़ापुरके रहनेवालों पर ताना है।

मिरज़ा फोया—जो बहुत सुकुमार बनता है उसको क०।

मिलकी क्या जाने पराये दिलकी—कौन आदमी किस तरहसे अपना जीवन बिताता है यह धनी पुरुष नहीं जान सकता।

मिलकी ना कहे दिलकी, पैठें दरवाज़े निकलें खिड़की—(पू०) धनी आदमी कोई काम प्रकट रूपसे नहीं करता।

मिल गयेकी राम राम—
मिल गयेकी सलाम आलेक— } झूठे मित्र पर क०।

वे जानते नहीं हैं बस इतनी दोस्ती है।
मैं उनको जानता हूँ वे मुझको जानते हैं। (अकबर)

साहब सलामत अब भी मेरी शेखजीसे है।
लेकिन कटे कमाई वही राह छाटमें। (अकबर)

मिल गये को हरगंगा—मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा।

मिले एक समरत्थके, सबै सुन्न दश गुन्न।

मिटे एक समरत्थके, सबै सुन्नके सुन्न—एक सामर्थवान सहायक मिलनेसे दशगुना बल हो जाता है। जैसे सुन्नके आगे एक बैठा देनेसे दश हो जायगा और उसपर जितने सुन्न बैठाते जावो बराबर दश गुना होता जायगा, परन्तु यदि एक मिटा दिया जाय और केवल सुन्न रह जायँ तो उनका कुछ मोल न रहेगा।

मिल्लतमां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल।
माखी जब हों एकठी, तो देवें सहद मुहाल।
एका रहनेपर लाभ दिखलानेके लिये क०।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुसको—(मु० ज०) मुफ़लिसी पर क०।

मिस्सोंसे पेट भरता है किस्सोंसे नहीं—जब कोई झूठी शिष्टाचारी दिखावे कुछ दे नहीं, तब क०। ख़ाली बातोंसे पेट नहीं भरता। मिस्सा=उस आटेकी रोटी जो कई तरहका अन्न एक साथ मिलाकर पीसा जाता है।

मीठ बहुत जहँ कीरा लागे—अधिक प्रीतिसे बिगाड़ होता है।

मीठा और भर कठौती—अच्छी चीज़ बहुत नहीं मिलती। दुहरे लाभ पर भी क०। दे० "एक तो मीठा"

मीठा ख़ातिर जूठा खाय—आदमी स्वार्थके लिये ख़ुशामद करता है।

मीठा बोल पूरा तोल—(व्य०) दूकानदारको चाहिये कि गाहकसे मीठा बोले और वज़न या मापमें पूरी चीज़ दे।

मीठा मीठा गप्प, कड़ुआ कड़ुआ थू—(व्य) जब कोई जीतका माल चुन चुनके निकाले और नुकसानका छोड़ दे, तब क०।

मीठी छुरी—कपटी को क०।

मीठेसे मरे तो ज़हर क्यों दे—दे० "गुड़ दिये मरे"

मीठेपर नोन और नोनपर मीठा—खानेमें स्वादिष्ट लगता है। एक रसकी चीज़ खाते खाते या एक ही प्रसंगकी बातें करते करते जब जी ऊब जाता है, तब उसे बदलनेके लिये क०।

नयन सलोने अधर मधु कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावै लोनपर अरु मीठे पर लोन॥

मीत न नीत गलीत यह, जो धरिए धन जोर।
खाये खरचे जो बचें, तो जोरिये करोर—(बिहारी)
जो पेट काटकर धन जमा करते हैं, उनके लिये क०।

मीनहिं पैरब कौन सिखावे—दे० "मछलीकेबच्चोंको"

मीर साहबकी जात आली है मुंह चिकना पेट ख़ाली है—(च०) लिफ़ाफ़ियेपर ताना है।

मीरसाहब ज़माना नाज़ुक है, दोनों हाथोंसे थामिये दस्तार—(मु०) ख़ूब सम्हलकर रहनेपर क०।

मीरांकी बोटी है—(मु०) बड़ा हिस्सा अलग कर देनेपर क०। दरगाहोंके मुजाविर या मन्दिरोंके पुजारी चढ़त या प्रसादका हिस्सा पीर या देवताके नामसे अलग रख लेते हैं बाकी सबको बांट देते हैं।

मीरां गोर बराबर—जितने बड़े मीयाँ उतनीही बड़ी उनकी क़ब्र। दे० "मियां गोर बराबर"

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—(१) अन्य धर्मी श्राद्ध करनेपर कहते हैं (२) जब कोई बुढ़ा होकर जवानीका मज़ा लूटा चाहे, तब भी क०।

मुई बछिया बाह्मनको दान—जब कोई किसीको ऐसी चीज़ दे जो किसीके कामकी न हो, तब क०।

मुई माई टुटी सगाई—(ज०) मांके मरनेपर नैहरका नाता टूट जाता है।

मुई लोलो अंडोंपर—कमज़ोर अपना गुस्सा बेक़द्र पर उतारता है।

मुए गे और सो रहेंगे—मरनेपर क०।

मुएपर सौ दुर्रे—दे० "मरे को मारे"

मुए शेरसे जीती बिल्ली भली—जीवट बड़ी चीज़ है।

मुँह ऐसा जैसे भैंसका चूतड़—भद्दी शकलपर क०।

मुँह कहे "खाया खाया" हलक़ कहे "सवाद न आया"—जब कोई किसीको बहुत थोड़ा खानेको दे, तब क०।

मुँहका निवाला तो नहीं है—जो जल्दी निगल

लिये जाय। कठिन कामके लिये क०।

मुँह काला जन कोयला पर है नाम गुलाब—(ज०) नामके अनुसार रूप रङ्ग न हो, तब क०।

मुँह काला पक्ष उजला—कुरूप भाग्यवानको क०।

मुँहकी मीठी हाथकी झूठी—(ज०) जो झूठा आश्वासन दे रक्खे पर कभी दे नहीं उसे क०।

मुँहके आगे खन्दक नहीं—बहुत बोलनेवाले वा बहुत खानेवालेको क०।

मुँहके चिकने पेटके काले—कपटीको क०। विषकुम्भं पयोमुखम्।

मुँहको कालख लग गई—बदनामी हो गई।

मुँह खाय आंख लजाय—जिसका खाया हो उसके सामने झुकना ही पड़ता है।

मुँह गैल ठमावे हैं—दे० "जैसा मुँह"

मुँह चिकना पेट खाली—ढोंग बाज़ या ऊपरसे तिचाव बनाये रक्खे। उसको क०।

मुँह जूतियों पीटा—जिसके चेहरेपर फिटकार बरसती हो, उसे क०।

मुँह देखके टीका काढ़ा जाता है—जैसा आदमी उसके साथ वैसा ही बर्ताव करे। जब कोई अपने धनवान सम्बन्धीकी अधिक खातिर करे और गरीबकी कम तब गरीब खानेको ... क०।

नित नित तो तन सजे सिंगार, भलो ज...
कहैं पखानो ज्यों जग जोको, मुखड़ि...

(

मुँह देखके बीड़ा, और चूतड़ ...
(१) जैसा मनुष्य होता है ...
खातिरदारी की जाती है। जब ...
तो उससे सभ्यताका व्यवहार क...
अच्छी तरह पहिचान लो तब ...
(पान) देना=शिष्टाचार करना।

मुँह देखी सब कहते हैं खुदा ...
कहता—(मु०) जब कोई सचाईकी ...
मुलाहिजेमें आकर पक्षपात, करे तब ...
"मुँह लगती" को ... "धर्म ...

मुँह देखेकी ...

यों तो मुँह देखेकी होती है मुहब्बत सबको,
पीछे भी याद करें उसको वफ़ा कहते हैं।

मुँह धो आओ (वा धो रक्खो)—अनुचित मांग पर क०।

मुँह धोवे रोजी खोवे न्हाय नर्कमें जाय—जैनियों को व्यंगसे कहते हैं कि जो जीव हिंसाके भयसे दांत नहीं मलते और स्नान नहीं करते।

मुँह न तुह नाम चांद खां—(व०) नामके अनुसार रूप न हो, तब क०।

मुँह न मत्था, जिन्द पहाड़ों लत्था—(पं०) जब कोई बद शकल अपनेको खूबसूरत समझे, तब क०। लत्था=उतरा।

मुँह नूर, न पेट सबूर—अभागे मनुष्यको क०।

मुँहपर कहे सो मूछका बाल, पीछे कहे सो...का बाल—मुँहपर कहना अच्छा है पीछे किसीकी निन्दा करना अच्छा नहीं। निन्दक को क०।

मुँहपर कुछ और पीठ पीछे कुछ और—ऊ० दे०।

मुँहपर पूत, पीछे हरामी मूत—(मु० ज०) ऊ० दे०।

मुँहपर मुमानी, पीठपीछे सुअरखानी—(मु० ज०) ऊ० दे०।

मुँहपर ... है (वा मक्खियां भिनकती हैं ... गंदे ...।

मुँह ... ली— ...
को क०

मुँह ...
कुछ
होता
ही
ह

मुँह लगी और फ़ेल मेरे पेटमें—शराबके नशेपर कहते हैं जिसे होंठसे लगाते ही सब ऐब पेटमें आ जाते हैं।

मुँह लगाई डोमिनी, गावे ताल बेताल—नौकरको बहुत मुंह नहीं लगाना चाहिए। जब कोई साधारण मनुष्य मुंह लगानेसे बहुत सिर चढ़ जाय और अपनी हैसियतसे बाहर बातें करने लगे, तब क०।

मुँह लगाई डोमिनी, बाल बच्चों समेत आय—दे० "ऊँगली पकड़ते पहुंचा"।

मुँहसे निकली, खलक़में पहुँची—बात मुँहसे निकलते ही चारों ओर फैल जाती है।

मुँहसे निकली, हुई पराई बात—मुखसे जो बात निकल जाती है उसकी कोई कीमत नहीं रहती।

दैठो ज्यों पिय ग पनखाय, मदिके बोल न बोलि रिसाय।
कड़ो मखानो नाहिं न होय, बोमि बात बिरानी होय।

मुँहसे बोलो, सिरसे खेलो—जो मनुष्य पूछनेसे कुछ जवाब नहीं देता, मौन धारन कर लेता है, उसे क०।

कसा है कालीने जिसको काफ़िर,
तो वह फ़िरंगी पसरसी खेले।
दहाने गेसूका तेरे मारा, न मुँहसे बोले न सिरसे खेले।
(ज़ौक़)

मुँहसे महावा—मुंह देखकर भय होता है। कड़ी निगाह रखनेसे काम ठीक होता है।

मुँहसे राल टपकी पड़ती है—नदीदे आदमीको क०। राल=लार

मुँहसे हजार चाहर खाय, नाकेसे एको ना—(पू० ज०) अपनी इच्छानुसार उतना ही काम करो जबतक तुम ठीक तौरसे उसे कर सको।

मुँह हाले, सत्तर बला टाले—(१) रोगीको क० खाने लगे तो जानो रोग गया (२) आलसी आदमीपर क० जो कुछ न कुछ जवाब देकर काम करनेकी तकलीफ़से बचा चाहता है।

मुँह ही मुँह मारे और तोबा तोबा पुकारे—ताड़ना करने हीसे लड़के सुधरते हैं।

मुकत माल बानर लिये, वेद लिये अज्ञान। परम सुन्दरी जोगी लिये, कायर हाथ कमान—बेमेल कामपर क०।

मुख देखकर बातें करना—दे० "मुंह देखी सब…"

मुखादिमखाँके साले—जिसकी हैसियत कुछ भी न हो वह केवल दूसरोंके सहारे लम्बी चौड़ी बात बनाता हो, उसे क०।

मुखिया मुख सों चाहिए, खान पानको एक। पाले पोषे सकल अँग, तुलसी रहित विवेक—(तुलसी) सरदार ऐसा होना चाहिए जैसा मुंह, जो सबको एक निगाहसे देखे और सबका पालन करे।

मुजर्रद सबसे आला, जिसके लड़का न बाला-छड़ा आदमी बेफ़िकर होता है। मुजर्रद=कुवांरा=बिन ब्याहा।

मुजर्रद सबसे आला है, न जोरू है न साला है क० दे०।

मुझे दे सूप, तू हाथों फूंक—स्वार्थीपर क०।

मुझे न मारे तो सारे जहानको मार आऊं—शेख़ीबाज़पर क०।

मुंड़ा जोगी पिसी दवा—इनकी पहिचान नहीं होती

मुड़े सिरपर पानी पड़ा ढल गया—बेशरम आदमीपर क०।

मुद्दई मुद्दालेह नावसे शहीद तैरते जाँय—देखो "नाव चढ़े झगड़ाल"

मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त—(व्य०) जो रिशवत लेके गवाही देता है, उसे क०।

मुफ़लिसका चिराग़ रोशन नहीं होता—(मु०) ग़रीब आदमीका कोई काम सफल नहीं होता।

मुफ़लिसका मुरदा दरदाबमें बहता है—(१) क्योंकि धनाभावसे उसकी अन्तेष्टि क्रिया नहीं होती (२) ग़रीब आदमीका माल सस्ते मोलमें बिकता है।

क्या बता मैं मुफ़लिसीका कहूं मुख़्तसर दरख़्वास्त।
झाड़ू बग़ैर घरमें बिखरी हैं झकड़ियां॥
कोनेमें जाले लगे हैं छप्परमें मकड़ियां।
पैदा न होंय जिनके उठानेको लकड़ियां॥
दरियामें डालके मुर्दे बहाते हैं मुफ़लिसी॥ (नज़ीर)

मुफ़लिसकी जोरू सदा नंगी—(मु०) धनाभावसे गहना कपड़ा नहीं मिलता।

मुफ़लिससे सवाल हराम है—(मु०) ग़रीबसे माँगना बुरा है।

मंगनिया सों मांगिबो खानसियाको काम। (लो०र०को०

मुफ़लिस हमेशा ख़्वार—(मु०) ग़रीब सबसे अपमानित होता है।

मुफ़लिसी और फ़ालसेका शरबत
मुफ़लिसी और हाटकी सैर } हैसियतसे अधिक चाहनेपर क०।

मुफ़लिसीमें आटा गीला—दुःखपर दुख पड़नेपर क०

गीक़ पैदा कर दिया बंगलेका और पतलूनका।
यह मस्ल है मुफ़लिसीमें आटा गीला कर दिया। (अकबर)
है रिश्ते पढ़कर इन्हें ये नफ़ा हुआ।
हैं रिश्ते चलती नहीं घर बार बिका॥
अब रंगी ठाठ अब निभेगा क्यों कर।
आटा हुआ मुफ़लिसीमें अपना गीला॥ (रंज़ूर)

मुफ़लिसी सब बहार खोती है, मर्दका इतबार खोती है—स्पष्ट।

मुफ़्तका करना और दूर ले जाना—वृथा परिश्रम करनेपर क०।

मुफ़्तका चन्दन घिसे जा बिलल्ली—(ज०) व्यर्थका काम करना। चन्दन लगाना बड़े आदमियोंका काम है, ग़रीबका नहीं।

मुफ़्तका माल किसको बुरा लगता है—सब ही को अच्छा लगता है।

मुफ़्तका सिरका शहदसे मीठा—जो चीज़ मुफ़्त मिले वह बहुत अच्छी न होनेपर भी अच्छी ही है।

मुफ़्तकी दावतमें फ़क़त रोटी ही गोश्त है
मुफ़्तकी शराब क़ाज़ीको भी हलाल }

(मु०)ऊ० दे०। यद्यपि मुसलमानोंमें शराब पीना हराम है, विशेषकर क़ाज़ीके लिये, अगर वह मुफ़्तमें मिले तो उसे पी लेना चाहिए, मुफ़्तकी चीज़ किसीको बुरी नहीं लगती।

मुफ़्तके खानेवाले हम और हमारा भाई—(ज०) जब कोई स्त्री अपने पतिका धन अपने भाईको खिला दे, तब क०।

मुफ़्तके चिड़वा भर भर फाँक—(पू०) हरामके

मुफ़्तमें निकले काम, तो काहेको दीजे दाम—स्पष्ट

मुफ़्त रा चे गुफ़्त—जो चीज़ मुफ़्तमें आ जाय, उसमें दोष नहीं निकालना चाहिए।

मुये चाम सों चाम कटावे, भुईं सकरी मा स्वावै घाघ कहैं ई तीनिउ भकुआ, उढ़रि जाय अरु रवावै—यह तीनों काम मूर्खके हैं।

मुरग़ा पशम भेंड़ भसम—(मु०) जो भेंड़को पचा जाय उसके लिये मुरग़ा क्या चीज़ है। मांसाहारी पर क०।

मुरग़ा बाँग न देगा तो सुबह न होगी?—दे० 'जहां मुरग़ा'

मुरग़ी अपनी जानसे गई खानेवालेको स्वाद न आया—दे० "बकरी जानसे गई"

मुरग़ीकी अज़ाँ कौन सुनता है—(१) स्त्रियोंकी बातपर विश्वास नहीं करना चाहिए (२) ग़रीबकी कोई सुनवाई नहीं करता।

मुरग़ीकी अज़ान और औरतकी गवाहीका इतबार नहीं—ऊ० दे०।

मुरग़ीके ख़्वाबमें दाना ही दाना—जो जिसकी चिन्तामें रहता है उसे सपनेमें भी वही चीज़ दीखती है।

मुरग़ीको तकले घाव ही बहुत है—दुःखियोंको थोड़ा हो ह न बहुत है। ग़रीब थोड़ी हानि भी नहीं सह सकता।

मुरग़ी क्या और मुरग़ीका शोरवा ही क्या?—छोटी चीज़से बड़ेका काम नहीं सरता।

मुरग़ी खाय नहीं पर खोसे—(१) मुरग़ी खाय, तो भी पर न खोसे, अर्थात् कोई ऐब करे भी तो किसीको ज़ाहिर न करे (२) मुरग़ी खाय नहीं तो भी पर खोसे, अर्थात् कोई ऐब न भी करे तो भी दुनियांको ज़ाहिर करे कि मैं ऐब करता हूं।

मुरग़ेकी एक ही टांग होती है—

इस मसलका निकास एक छोटी सी कहानीसे है। कोई बवर्ची अपने मालिकके खाना पकाकर लाया। उसमें मुरग़ेकी एक ही टांग थी। एक टांग चुपकेसे बवर्चीने खा डाली थी। मालिकने देखकर कहा कि इसकी दूसरी

र्गे की सिर्फ एकही टांग होती है। संयोगवश किसी दिन एक मुरग़ा गोबरके ढेरपर एक टांग उठाये खड़ा था। बबर्चीने मुरग़े को घोर बतलाते हुए कहा 'हुज़ूर एक पैरवाले मुरग़े को देखिये। जब मालिकने ताली बजाई तब मुरगेने झट दूसरा पैर ज़मीनपर रख दिया और बबर्चीसे कहा देख इसके दोनों पैर हैं कि एक इसपर उसने जवाब दिया 'हुज़ूर ताली बजानेपर दो पैर दीख पड़े। अगर उस समय भी ऐसा ही करते तो दूसरा पैर ज़रूर सामने आ जाता। दे० "बकरी या सस्ते"

मुरदा ब-दस्त ज़िन्दा—(फा०) मुरदा ज़िन्देके हाथमें होता है।

लाशेको दफ़न कीजे मेरे याके फेंक दीजे।
मुर्दा बदस्त ज़िन्दा" जो चाहिए सो कीजे। (ज़ौक़)

मुरदा बहिश्तमें जाय या दोज़ख़में यहां तो हलवे मांडेसे काम—(मु०) मुसलमानोंमें एक रीति है कि उनके मुर्देके सामने मुल्ला क़ुरान पढ़ता है और उसे मिठाई इत्यादि मिल जाती है, स्वार्थी या मतलबी आदमीको क०।

किसी मुसलमानी बस्तीमें एक मुल्ला रहता था जो कुछ फातिहा दरूदका काम पड़ता लोग उसे बुला लेते थे। जब शबेबरात आई तब हर एकके घरसे उसे बुलाहट आई। उसके किसी दोस्तने पूछा कि कहो भाई आज तुम अकेले क्या करोगे और किस तरह घर घर फातिहा पढ़ोगे। मुल्लाने कहा मुझे फातिहः पढ़नेसे क्या काम, मुरदः दोज़ख़ जाय या बिहिश्त, मुझे तो अपने हलुवे मांड़ेसे काम है।

मुरदेको बैठकर रोते हैं और रोज़गारको खड़े होकर—जीवसे जीविका प्यारी होती है।

मुरदेपर सौ मन मिट्टी तो एक मन और सही—जब बहुत नुक़सान होता है तो उसके साथ थोड़ा नुक़सान और भी सह लिया जाता है।

मुरदोंसे शर्त बांधकर सोता है—बहुत देर तक सोनेवालेको क०।

मुरब्बी बिना मुरब्बा नहीं पकता—(फा०) "मुरब्बी बियार वो मुरब्बा बिख़ूर" का तर्जुमा है जिसका आशय है कि बिना धनी मालिकके अच्छी चीज़ें खानेको नहीं मिलतीं, या बिना अनुभवी या सिरधरूके काम सुचारु रूपसे सम्पन्न नहीं होता।

मुल्के ख़ुदा तंग नेस्त, पाये मरा लंग नेस्त—(फा०) ईश्वरका मुल्क थोड़ा नहीं है और मैं भी पांवका लंगड़ा नहीं हूं। उद्योगी पुरुषका कहना है, जब उसे कामसे जवाब हो जाता है।

मुलाज़िमे नौ, तेज़ रौ—(फा०) नया नौकर फुरतीसे काम करता है।

मुल्लाकी दाढ़ी तबर्रुकमें गई—(मु०) जब किसीका सब धन वाहवाहीमें लुट जाय, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है। कोई मुल्ला यादगारीके लिये चेलोंको अपनी चीज़ें बांट रहे थे; यह देखकर एक मसख़रेने कहा मुल्लाजी आपकी दाढ़ी सदैव मुझे आपकी याद दिलाती रहेगी यह कहकर उसने उनकी दाढ़ीमेंसे एक बाल उखाड़ लिया, यह देखकर सभी चेले आगे बढ़े और मुल्लाके बार बार मना करनेपर भी न माने उन्होंने एक एक बाल करके उनकी सारी दाढ़ी नोच ली।

मुल्लाकी दौड़ मसजिद तक—ज़्यादासे ज़्यादा इतना ही कर सकता है। जहांतक जिसकी पहुंच रहती है वह वहीं तक जा सकता है। अपनी शक्तिके बाहर कोई काम नहीं किया जा सकता। परमित शक्तिवाले मनुष्यको क०।

एक मुल्ला जब अपने घरवालोंसे लड़ता तो यही कहता कि मैं किसी दूसरे मुल्कको चला जाऊंगा। एक दिन वह निहायत रंजीदह होकर बोला कि लो अब मैं जाता हूं। उसके घरके नज़दीक एक मसजिद थी, वहीं जाकर वह बैठ रहा। यह देखकर किसीने उससे पूछा कि तुम तो शहर छोड़कर दूसरे मुल्कको जाने थे, यहां क्यों बैठ रहे। उसने जवाब दिया "क्या तुम नहीं जानते कि मुल्लाकी दौड़ मसजिद तक ही होती है?"

जब ग़म हुआ चढ़ा लीं दो बोतलें इकट्ठी,
मुल्लाकी दौड़ मसजिद अकबरकी दौड़ भट्ठी (अकबर)

मुल्लाजी क्या कहें आप जी आगे ही समझे बैठे हैं
तुम क्या कहोगे हम पहिले हीसे जानते हैं।

मुल्ला न होगा तो क्या मसजिदमें अज़ां न होगी—एक आदमी बिना जनताका काम नहीं रुक सकता।

मुश्किले नेस्त कि आसां न शवद, मर्द बायद कि हिरासां न शवद—(फा०) कोई मुश्किल काम ऐसा नहीं जो उद्योग करनेसे सहज न हो जाय, मर्द कभी हिम्मत नहीं हारते।

मुसलमानां दर गोर, मुसलमानी दर किताब—(फा० मु०) मुसलमान सब कब्रमें हैं और उनका मज़हब किताबोंमें। अर्थात सच्चे मुसलमान अब रह नहीं गये।

मुसलमानी अबादानी—(मु०) मुसलमान एक साथ रहते हैं, इसलिये क०।

मुसलमानीमें आनाकानी क्या ?—(मु०) जब कोई निमन्त्रणमें आकर खानेसे इन्कार करे, तब क०।

मुसल्ला पसार, बग़लमें यार—(मु०) पाखंडीको कहते हैं। मुसल्ला=जिस बिछौनेपर नुमाज़ पढ़ी जाती है।

मुश्क आं अस्त कि ख़ुद बोयद, न कि अत्तार गोयद—(फा०) कस्तूरी सुगन्ध होसे पहिचानी जाती है, बेचनेवालेके प्रशंसा करनेसे नहीं। गुणियोंको प्रशंसा उनके गुणसे ही होती है दूसरोंके किये नहीं होती।

मूंग मोठमें बड़ा कौन—ज़ातमें कोई छोटा बड़ा नहीं सब बराबर हैं।

मूंछ मरोड़ा, रोटी तोड़ा—आलसी मनुष्योंको क०।

मूंजकी टट्टी और गुजराती ताला— बेजोड़ मामलेपर क०। (१) घासकी टट्टीमें गुजराती ताला (जो बेश क़ीमती होता है) नहीं सोहता। (२) मूंजकी टट्टी जो ख़ुद कमज़ोर होती है उसमें (गुजराती) मज़बूत ताला लगाना वृथा है।

मूज़ीका माल, निकले फूटकर खाल—मूज़ीका माल नहीं पचता।

मूज़ीको नुमाज़ छोड़के मारे—(मु०) सांपको जब देखे तभी मारे।

मूड़का नाम कपार कहावे—दोनों एक ही बात है।

मूड़ दिया मांग खावो—योगियोंका कहना चेलोंके प्रति।

मूड़ मुड़ाय फ़ज़ीहत भये, जात पांत दोनोंसे गये—दे० "माथ मुड़ायके०"

मूड़ मुड़ाये जटा धराये, नगन फिरें ज्यों भैंसा
खलड़ी ऊपर राख लगाये, मन जैसे का तैसा

पाखण्डी साधुओंके प्रति क०।

जाके नख अरु जटा बिशाला।
सोई तापस प्रसिद्ध कलिकाला। (तुलसी)

मूड़ मुड़ाये तीन गुन, गई टांटकी खाज।
बाबा हो जगमें फिरे, पेट भर खाया नाज—

मूड़ मुड़ानेमें (साधू होनेमें) तीन गुण हैं, सिरकी खुजली जाती रहती है, दुनियांमें मान होता है और पेट भर खानेको मिलता है।

मूड़ मुड़ायो सिगरे गांव, कौन कौनको लीजे नांव—एक हो तो कहा जाय, जहां सभी मूर्ख हों वहां किस किसका नाम लिया जाय।

इस मसलका निकास इस कहानीसे है :—एक धोबीके गन्धर्वसेन नामका गधा था। जब वह मर गया तो धोबी उसका नाम ले लेकर ज़ोरसे रोने लगा। उसके जो आत्मीय थे वे समझे कि इसका कोई निकट सम्बन्धी मरा है इसलिये उन्होंने मूड़ मुड़ा लिया। जब उनसे लोग पूछते कि तुम लोगोंने मूड़ क्यों मुड़ाया तब वह कहते कि क्या आपको नहीं मालूम कि गन्धर्वसेन मर गये ? वह भी यही समझते कि गन्धर्वसेन कोई ऐसे ही प्रतिष्ठित होंगे इसलिये इन्होंने भी मूड़ मुड़ा लिये। इसी तरह लोगोंको देखकर कोतवालने और कोतवालसे सुनकर मन्त्रीने और मन्त्रीसे सुनकर राजा तकने अपना सिर मुड़ा लिया। जब रानीने राजासे पूछा कि आपने सिर क्यों मुड़ाया तब वह बोले कि गन्धर्वसेन मर गये हैं। रानीने पूछा वह आपके कौन थे ? राजाने कहा मैं उन्हें नहीं जानता; मुझसे मन्त्रीने कहा। जब मन्त्रीसे पूछा गया कि वह कौन थे; उसने कोतवालका नाम लिया; इसी तरह पूछते पूछते अन्तमें मालूम हुआ कि गन्धर्वसेन गधेका नाम था। तब तो सब कोई बड़े लज्जित हुए।

मूड़ मुड़ाये मुरदा नहीं हलका होता—दे० "बाल उखाड़नेसे......"

मूड़ीको नहिं तेल, मांगई खसम मुगौरा—(ज०) सिरमें लगाने तकके लिये तेल तो है ही नहीं खसम मुगौरा मांगता है सो कहांसे हो सकता है क्योंकि मुगौराके लिए अधिक तेलकी ज़रूरत होती है। बहुत ग़रीबी हालतपर क०।

मूतका चुल्लू हाथमें—गंदे आदमीको क०। यदि दूसरे पर डालनेके लिये हो तो भाव दूसरा है।

मूदहु आंख कतहुं कछु नाहीं—(तुलसी) स्पष्ट।

मूरखकी सारी रैन चतुरकी एक घड़ी—(ज०)

मूरखके साथ रात भर रहनेसे चतुरके साथ घड़ी भर रहना अच्छा।

करि के सुरति कह्यो प्रिय मारि, भई बधिके चाहत मारि।
बोली बोल चलि रस भरी, मूरख नैन न देखा परी।

(सामान्य)

मूरखके समझाये तें ज्ञान गांठको जाय—स्पष्ट।

मूरखको मत सौंप तू, चतुराईका काम।
गधा बिकत मिलती नहीं, बध घोड़ेके दाम—

स्पष्ट। बध=बदतरी।

मूरखको समझावनो, सरस बीज चलि जाय।
ज्यों पत्थरके मारने, चोखो तीर नसाय—

मूर्खको शिक्षा देनेसे सम्पूर्ण सदुद्देश्योंकी हानि हो जाती है जैसे कि पत्थरपर तीक्ष्ण तीर मारनेसे उसका नाश हो जाता है।

मूरख गुण समुझे नहीं, तौ न गुणीमें चूक।
कहा भयो दिनको बिभौ, देखे जो न उलूक—

(वृन्द) स्पष्ट।

मूरख जनका माल है, यारोंकी खूराक—दे० "फूहड़का माल हँस हँस खाइये।"

मूरख वैद्यकी मात्रा, बैकुण्ठकी यात्रा—मूर्ख वैद्यकी दवा करनेसे रोगी मर जाता है। दे० 'नीम हकीम खतरे जान'।

मूरखकी दोस्ती जीका जियान—मूरखसे दोस्ती करना जीका जंजाल है।

प्राण तिया पै अधि प्रिय बास, कह्यो बाल भरि जाइ उसास
कह्यो मनावौ क्यों बुधिवान, मूरख सों हित जियको ज्यान

(अप्रसंभोग दुःखिता)

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचिसम—

(तुलसी) स्पष्ट।

मूर्खस्य नास्ति औषधम्—मूर्खका इलाज नहीं।

मूल न यासों भय करो, जो नर करे गरूर।
जो नर साईं सों डरे, वासों डरो जरूर—

स्पष्ट।

मूलसे ब्याज प्यारा होता है—(१) (व्य०) मूल भले ही डूब जाय मगर ब्याज नहीं छोड़ा जाता। मूल तो अपना ही है, ब्याज नफ़ेमें मिलता है, इसलिये अधिक प्यारा होता है। (२) बेटेसे पोता अधिक प्यारा होता है।

मूली अपने पत्तों भारी—जब कोई अपने दुःखमें फंसा हो और दूसरोंका दुःख दूर न कर सके, तब क०।

मूली और मूलीके पत्तोंपर नोनकी डली—जब कोई शेखी करके अपनी ऐसी चीजोंको गिनावे जिनका कुछ मूल्य न हो, तब क०।

मूसे और बिलारमें, कबहुं प्रीति नहिं होय—स्पष्ट।

मूली हाथ पराइयां जिस चाहे तिस दे—(पं०) जब चीज़ अपने अधिकारमें न रहकर दूसरेके अधिकारमें हो, तब क०।

मृगकीसी आंखें चीतेकीसी कमर—सुन्दरी स्त्रीको क०।

मृग बांदरा तीतड़ मोर, ये चारों खेतीके चोर—(कृ०) ये चारों खेतीको नष्ट करते हैं।

मेओंका पूत बारह बरसमें बदला लेता है—मेओं वा मेवाती एक नीच जातिके मुसलमान होते हैं, ये बहुत पराक्रमी और क्रोधी होते हैं। बारह वर्षकी अवस्थासे ही ये शत्रुओंसे अपना बदला चुकाते हैं अथवा बारह वर्ष पीछे भी बदला लेनेसे नहीं चूकते।

मेओं बेटी जब दे जब उजली भर रुपैया रखवाले—मेओं लोग अपनी लड़कीके ब्याहमें बहुत रुपया लेते हैं।

मेओं मरा जब जानिये जब तीजा हो जाय—जब किसी बातमें खटका बना रहे और उसका निपटारा न हो जाय, तबतक उसको पूरा न समझना चाहिये।

इस मसलका निकास मेओं जातिकी एक छोटी कहानीसे है। एक बनियेका कुछ पावना एक मेओंके यहां था। रुपये जिसमें न देने पड़ें, इसलिये उसने बनियेको अपनी मृत्युका सम्वाद भेज दिया। बनियां भी कुछ सन्देह करता हुआ उसके घरपर आया। जब उसकी जाति वाले उसे गाड़नेके बहानेसे कब्रिस्तानको ले चले तो बनिया भी उनके पीछे हो लिया। वहां जाकर उसका सन्देह जाता रहा, जब उसने सचमुच उन्हें कब्रमें गाड़ते

देखा। निराश होकर जब वह लौटा आ रहा था, तब उसके आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा जब उसने उस मियाँको कब्रसे बाहर निकलते देखा। अन्तमें उस बनियेने ऊपरकी मसल कही कि जबतक मियाँका तीजा न हो जाय तबतक उसको मरा न समझना चाहिए। कोई कोई तीजा हो जानेकी जगह "चालीसा होय" भी कहते हैं।

मेड़कीको भी जुकाम हुआ— य कोई छोटा आदमी नज़ाक़त दिखावे, तब क०।

मेंह, लड़का और नौकरी घड़ी घड़ी नहीं हुआ करतीं—स्पष्ट।

मेंह बरसेगा तो बौछार आ ही जायगी— यदि कोई उदार-हृदय मनुष्य खर्च करेगा तो हमें भी कुछ मिल ही जायगा, ऐसी आशा रखनेवालेपर क०।

मेरा था सो तेरा हुआ पराय ,जुदा टूक देखन दे (मु० ज०) दे० तेरा है सो मेरा था।

मेरा दिल बेदिल हुआ देख जगतकी रीत— जो संसारकी गति देखकर विरक्त हो जाय, उसका कहना है।

मेरा बैल ब्याय नहीं पढ़ा है—हुज्जती आदमी जब बाजी बात करनेमें बहुत मीन मेख निकालता है, तब उसको कहते हैं।

इसपर एक कहानी इस तरह है। किसी एक नैयायिकने एक तेलीसे पूछा कि तुम लोग अपने बैलके गलेमें घंटी क्यों बांधते हो ? उसने जवाब दिया कि जब हम अपने कामपर नहीं भी रहते तब, उस घंटीके शब्दसे मालूम हो जाता है कि बैल खड़ा नहीं है अपना काम कर रहा है। इसपर उन्होंने कहा कि यदि वह बैल खड़ा होकर ही अपना सिर हिलावे और घंटा बजावे तो तुम्हें कैसे मालूम होगा कि वह अपना काम करता है ? यह सुनकर उसने हंसते हुए ऊपरकी मसल कही। यह नैयायिकोंपर ताना है। मुसलमान कहते हैं कि मेरा बैल मन्तिक नहीं पढ़ा।

मेरा माथा उसी वक्त ठनका था—जब भविष्यमें आफ़त आ जानेका सन्देह पहिले ही हो गया हो और वह आफ़त यथार्थमें आ पड़े, तब क०।

मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे, कहना अच्छा नहीं चुग़ली खाना अच्छा नहीं।

मेरी सौतन खाय दही, मोसे कैसे जाय सही— सौतियाडाहपर क०।

मेरी ही बिल्ली मुझसे ही म्यांव— जिसका खाय उसीको आँख दिखावे, तब क०।

मेरे गांवका कूड़िया, नाम रक्खा इन्द्र जौ— किसी ओहदेदार आदमीका नाम और इज़्ज़त बाहरमें ही होती है न कि अपनी जन्मभूमिमें। कूड़िया और इन्द्र जौ दोनों एकही पेड़का नाम है।

मेरे बापने घी खाया, मेरा हाथ सूंघो—जो बड़ोंकी कीर्तिपर घमण्ड करता है, उसको क०।

मेरे ब्याह, जीजीके ठिक ठिक—(ज०) बिना प्रयोजन या बे मौक़ेपर रुपया खर्च करना।

मेरे भजूं कि तेरे—अपनेको देखूं कि तुम्हारेको ?

मेरे मियांके दो कपड़े, सुथन, नाड़ा, बंस— ग़रीबी हालतपर क०।

मेरे मेरे मुंहकी सी तेरे तेरे मुंहकी सी करता फिरता है— खुशामदीपर क०।

मेरे यहां आज शुर्ग है—जिस दिन किसीके घरमें चूल्हा भी नहीं जलता, उस दिन क०।

मेरे लालके सौ सौ यार, धुनिये, जुलाहे और मनिहार— (ज०) खराब सोहबतवाले लड़केको क०।

मेरे लालाकी उल्टी रीत, सावन मास चुनावें भीत—जो समयानुकूल काम नहीं करता, उसको क०।

मेरे हीसे आग लाई नाम धरा बसन्धर— (ज०) दूसरेकी चीज़पर घमण्ड करे, और उसके कियेका एहसान न माने, तब क०। बसन्धर उस पवित्र अग्निको कहते हैं जो किसीको दी नहीं जाती कहनेका तात्पर्य्य यह है कि मुझसे आग मांग ले गई और जब मैंने मांगी तो कहा बसन्धर है।

करे न आग पड़ोसकी, कहो सुसुन्दर स्याम।
आगि बिरानी लाइके, धरउ बसन्धर नाम।

मेलेमें जो जायतू, तो नावां कटिमें टांक। चोर जुआरी गंठ कटे, डाल सके ना आंख—(ग्रा०) भीड़ भड़क्केमें अपनी चीज़ होशियारीसे रखनी चाहिए।

मेलेमें झमेला—मेलेमें अक्सर लड़ाई दंगे हुआ ही करते हैं।

मेवा दिये मेवा मिले, फल फूल दे फल पात ले—(नज़ीर) जैसा दो वैसा पावो।

मेहनत आरामकी कुंजी है—मेहनत करनेसे आराम मिलता है।

मेहर करे तो मेह बरसाय—ईश्वरकी कृपासे ही वृष्टि होती है।

मेहर गई, मुहब्बत गई, गई जान और पान
हुक्केसे मुंह झुलसके, विदा किया मेहमान—
कंजूसकी मेहमानदारीपर क०। दे० "आव गया आदर गया।"

मेहर है पर दूध नहीं—झूठे शिष्टाचारपर क०।

मेहरियाके आगे सुगन असगुन—स्त्रियोंको सभी बातमें वहम होता है।

मेहरीकी रोक, जानके शोक—हठीली स्त्रीके प्रति क०

मैं और मेरा मुंस, तीसरेका मुंह झुलूस—जो स्त्री अपने पतिके सिवा और दूसरेको नहीं देख सकती, उसपर क०।

मैं कब कहूं कि तेरे पेटको मिर्गी आवे है—(ज०) अपनी सफ़ाईकी ओटमें दूसरेकी बुराई करनेपर क०।

मैं करूं तेरी भलाई, तू करे मेरी आंखमें सलाई भलाईके बदले बुराई करनेपर क०।

मैंकी गर्दनपर छुरी—अहंकारीको नीचा देखना पड़ता है। यह बकरीकी बोलीपर क०। दे० 'मैनाजी'

मैं क्या तेरा दबैल हूं—जब कोई किसीपर अनर्थका दबाव डाले, तब क०।

मैं क्या तेरी पट्टीतलेकी हूं—ऊ० दे०।

मैं तुझे चाहूं और तू काले धींगको—(ज०) दे० "मैं मरूं तेरे लिये"

मैं तेरी आंखमें उंगली करूं तू मेरे मुंहमें उंगली कर—हर तरहसे दूसरेको नुकसान पहुंचानेपर क०। क्योंकि उसको आंख भी फोड़दी और उसकी उंगली भी काट डाली।

मैं तो तेरी लाल पगिया पर भूली रे रघुवा—(ज०) बाहरी बनावट देख धोखेमें फस जाय, तब क०।

मैना जो 'मैं ना' कहे, दूध भात नित खाय।
बकरी जो "मैं मैं" करे, उलटी खाल खिंचाय।
मैनाने "मैना" कही, मोल भयो दस बीस।
बकरीने जो "मैं" कही, तुरत कटायो सीस।
मैना जो मैं नहीं कहती है उसका आदर होता है और मोल भी बढ़ जाता है। और बकरी जो मैं मैं करती है उसकी खाल खींची जाती है। मैना=पक्षी और मैं नहीं। मैं मैं=बकरीकी बोली और अहंकार। तात्पर्य्य यह कि नम्रतासे चलनेवालेका आदर और अहंकारीका विनाश होता है।

मैंने क्या उसकी खीर खाई है—(ज०) मैं क्या उसका दबैल हूं।

मैंने क्या छरो मारी थी कि कफफन फाड़के बोले—जब कोई अच्छी बात कहनेसे एकाएक बिगड़ जाय, तब क०।

मैंने तीन दफे गुड़ खाया है—जब कोई स्वार्थी मनुष्य पहले [illegible]ीसे अपने स्वार्थ साधनके लिये टिप्पस जमाए तब उसे दिल्लगीके तौरपर क०।

एक अभागका चटोरा अपने किसी दोस्त बनियेके यहाँ मिलने गया। उसके यहाँ नये गुड़का चलान आया था, जिसे देखकर उसके मुंहसे लार टपकने लगी। कुछ इधर उधरकी बातेंकर उसने कहा, मैंने अपनी उमरभरमें तीन बार गुड़ खाया है। बनियेने कहा कब कब। चटोरा बोला कि एक तो जब मैं पैदा हुआ था तब मुझे घुट्टीमें साथ दिया गया था, दूसरी बार जब मेरा कान छिदा गया था तब मुझे खानेको मिला था और तीसरी बार अब यह नया गुड़ खाऊंगा जो आपके यहां आया है। बनियेने कहा, यदि मैं तुम्हें अपना गुड़ खानेके लिये न दूं तो क्या हो। चटोरेने जवाब दिया अच्छा तो दो ही दफे सही।

मैं बैरी सुग्रीव पियारा, कारण कौन नाथ मोहि मारा—(तुलसी) जहां दो अपनोंमें एकके साथ सद्‌व्यवहार और दूसरेके साथ कुव्यवहार करे, वहां क०।

मैं भली कि पनेठा—(ज०) स्पष्ट। पनेठा=पेरीवाला।

मैं भली तू शाबाश—जब आपसमें एक दूसरेकी तारीफ़ करे, तब क०।

मैं भी हूं पाँचों सवारोंमें—दे० "पाँचों सवार"

मैं मरूं तेरे लिये, तू मरे बाके लिये—जिसके लिये आप प्राण दे और वह किसी दूसरेको चाहता हो, तब क०।

इसी बातपर महाराज भर्तृहरिको वैराग्य हो गया था, जिसका उल्लेख करते हुए उन्होंने अपने नीतिशतकके प्रारंभमें यह श्लोक कहा है :—यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोन्य सक्तः अस्मत्कृतेऽपि परितुष्यति काचिदन्या धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च। अर्थात् जिसको मैं सर्वदा चिन्ता किया करता हूं सो मुझसे विरक्त है; वह किसी अन्य पुरुषको चाहती है, जो दूसरी ही स्त्रीसे अनुरक्त है और वह दूसरी स्त्री मुझे प्रसन्न किया चाहती है इसलिये उन तीनोंको मुझे और उस कामदेवको भी धिक्कार है जिसकी यह प्रेरणा है। इसकी कथा इस प्रकार है :—एक दिन किसी ब्राह्मणने राजा भर्तृहरिको एक अमर-फल लाकर दिया, राजाने वह फल अपनी रानी पिंगला-को दिया, रानी शहरके कोतवालसे फंसी थी, उसने उसे कोतवालको दिया। कोतवालकी उस शहरकी एक वेश्यासे प्रीति थी; उसने वह फल वेश्याको दिया। वेश्या अपने मनसे राजापर आसक्त थी; उसने समझा कि यह फल राजाके ही योग्य है, इसलिये उसने उसे राजाको भेंट की, राजाने उस फलको देखकर आश्चर्य माना और सब भेद खुलनेपर उनका चित्त संसारसे विरक्त हो गया और वह योगी होकर घरसे निकल गये। अन्तमें राजाने ही उस फलको खा लिया था, जिसके कारण वह अमर हो गये।

मैं ही पाल करा मुण्डा, मोहिको मारे लेके डंडा (ज॰) माका कहना कपूत लड़केके प्रति।

मैं हूं ऐसा चतुर सयानो, चतुर भरे मेरे आगे पानी—आत्मप्रशंसा।

मैदे और शहाबकी सी लोई—आधा मुंह सफेद और आधा लाल।

मैलका बैल बनाते हैं—जो थोड़ी बातको बहुत बढ़ा कर कहता है, उसे क॰।

मैला कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कौन संदेह—किसीको गरीब और कमजोर पाकर जब अमले फैले लगाते हैं, तब क॰।

मोको और, न तोको ठौर—जब एक दूसरेसे अत्यन्त प्रेम रखता है, तब क॰। जोरू खसमकी लड़ाई पर क॰।

मोको न तोको, ले चूल्हेमें झोंको—(ज॰) जब कोई चीज किसीके कामकी न हो, तब क॰।

मोचीके मोची रहे—जैसेके तैसे ही रहे।

मोजेका घाव मीयाँ जाने या पांव—जिसका दुःख वही जानता है।

मोटी मोटी रोटी उरीदवाकी दाल—(पू॰) दोनों ही जल्दी हजम नहीं होतीं।

मोतीकी सी आब उतर गई—जब किसीका सम्मान जाता रहे, तब क॰।

मोमकी नाक—जिधर चाहो मोड़ दो। भोले भाले आदमी पर क॰।

मोम हो तो पिघले कहीं पत्थर भी पिघलता है—कृपण तथा कठोर आदमी पर व्यंगसे क॰।

मोर अपना पर देखकर नाचता है, पर पैर देखकर रोता है—क्योंकि जैसा सुन्दर मोर होता है वैसा सुन्दर उसका पैर नहीं होता। जब कोई सब तरहसे सुखी हो पर एक ही दुःख ऐसा हो जिससे उसका सब सुख जाता रहे, तब क॰।

दुलहिन सब निज साज संवारि।
नाची किते कुरूप निहारि॥
लोग पखानी सब जग गाईं।
मोर गहार पमन सकुचाईं॥

मोर चन्द्रिका स्याम सिर, चढ़ि कत करत गुमान। लखिवी पायन पर लुठति, सुनियत राधा मान—(विहारी) अर्थ स्पष्ट है। जब कोई मनुष्य उच्च स्थान पाकर अभिमान करे, तब उसका मान भंग होता देखकर क॰।

मोरनी हार निगल गई—असंभव बात हो गई। इस मसलका निकास उस कहानीसे है जिसमें कि राजा विक्रमादित्यकी, साढ़ेसातीकी अपासे, अपना राज पाट छोड़कर अन्य भूपकी चाकरी करते हुए वर्णन किया है। विक्रमादित्य जब अपने मालिकके तोशेखानेका पहरा दे रहे थे तो देखते क्या हैं कि आधी रातको मोरनी (जिसकी तस्वीर तोशेखानेकी एक दीवारपर टंगी थी) तस्वीरसे निकलकर खूंटीपर टंगे हारको निगल गई। सबेरे रानीको हारके खोये जानेका पता चल गया। तोशेखानेपर केवल उन्हींका पहरा रहनेके कारण राजाको दंडका भागी होना पड़ा।

मोर सइयाँ चिकनियाँ, पचास बीड़ा खाय। आगे पीछे रिनिहा, दीवाना बने जाय—

(पू० जा०) क़र्ज़दार होकर जो फ़िज़ूल ख़र्च करता है, उसपर उसकी स्त्री व्यंगसे कहती है।

मोरीकी ईंट चौबारे चढ़ी—जब कोई नीच आदमी अच्छे ओहदे पर पहुंच जाता है अथवा जब कोई नीच लड़की अच्छेसे ब्याही जाती है, तब क०।

मोरीके कीड़े मोरीमें ही खुश रहते हैं—स्पष्ट। जब किसी गंदे आदमीको अच्छी तरह खिलाओ पहनाओ और वह उससे खुश न हो और पूर्ववत् गंदा रहना ही पसंद करे, तब क०।

मोरे कहे उ न संशय जाहीं, विधि विपरीत भलाई नाहीं—(तुलसी) जब कोई दूसरेकी हितकर बातको अहितकर समझता है, तब क०।

मोरे बापके उपजल कपास, मोरे लेखे पड़ल तुसार—(भो०) बाप कितना ही धनी क्यों न हो जाय पर उसकी लड़कीका हिस्सा नहीं होता।

मोह न नारि नारिके रूपा—(तुलसी) स्त्री स्त्रीके रूपपर नहीं मोहती।

मोहरोंकी लूट, कोयलों पर छाप—जो अपनी सारी सम्पत्ति खो डालता और साधारण वस्तुके लिये लड़ाई करता है, उस पर क०। अथवा जो अपनी बहुमूल्य चीज़के नष्ट होनेकी ओर ध्यान न देकर तुच्छ वस्तुकी विशेष ख़बरदारी रखता है, उस पर क०।

मोहिं न कछु बांधे कर लाजा, कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा—(तुलसी) हनूमान मेघनादसे कहते हैं कि मालिकका काम करने पर अपमान भी हो तो कुछ डर नहीं।

मौकेका घूसा तलवारसे बढ़कर—समयपर काम हो जानेसे बहुत फ़ायदा होता है, साधारण बात भी यदि मौक़ेपर कही जाय तो उसका बहुत असर होता है।

मौत और गाहकका पतबार नहीं, जाने किस वक्त आ जाय—(व्य०) स्पष्ट।

मौतकी दारू नहीं—जब कोई बहुत दवा करने पर भी अच्छा न हो, तब क०।

मौतके आगे किसीका वश नहीं चलता—कोई मर जाय उसकी परतावनी करनेके समय क०।

मौतके आगे सब हारे हैं—ऊ० दे०।

मौतको आते देर नहीं लगती—स्पष्ट।

मौत दीजो पर मौर न दीजो—विवाह करनेसे मर जाना अच्छा है।

मौत सिरपर खेलती है—स्पष्ट

मौन गहे बक दाव पर, मछली लेत उठाय—स्वार्थी जो अपनी घातमें लगा रहता है, उसपर क०।

मौनम् सम्मति लक्षणम्—(सं०) चुप रहना सम्मतिका लक्षण है।

मौनम् सर्वार्थ साधनम्—(सं०) चुप रहनेसे सब काम सधता है

मौला यार, तो बेड़ा पार—(मु०) ईश्वरकी कृपा हो तो सब काम हो जाय।

मौला हाथ बढ़ाइयां जिस चाहें तिस दें—(मु० पं०) ईश्वरकी कृपा जिसपर होती है उसीको देता है।

मौसीका घर नहीं है—मौसीके घरमें लाड़ बहुत होता है—(भा०) ज़रा सोच समझकर काम करो।

म्यांवका ठौर है—मुश्किल काम है। असंभव बात पर क०। नीचे देखो।

म्यांवको कौन पकड़े—असल सब तो बना ही हुआ है। जो लोग ऊपरसे तो बहुत वीरता दिखाते हैं पर काम पड़ने पर डरके मारे भाग जाते हैं, उन्हें क०। इसका निकास यह कहानीसे है:—एक दिन चूहोंने सलाह की कि बिल्ली हमें जब मौका पाती है तब पकड़के खा लेती है इसलिये उसके गलेमें घंटा बांध देना चाहिये जिससे जब वह आवे तो घंटेकी आवाज़ सुनकर हम लोग भाग जाया करें। किसीने कहा मैं उसका पैर पकड़ लूंगा, किसीने कहा मैं पूंछ पकड़ लूंगा, किसीने कान पकड़ लेनेको कहा, इसी तरह सब अपनी अपनी वीरता बघारने लगे, अन्तमें एक बूढ़े चूहेने कहा कि उसकी "म्यावको कौन पकड़ेगा ?"। इस बातको सुनते ही सब चूहे डरके मारे भाग गये। कोई कोई म्यांवका ठौर कौन पकड़ेगा भी क०।

म्यांवका ठौर=जिस जगहसे म्यांव निकलता है। अर्थात् बिल्लीका मुंह।

म्हाने इमरत लागे राबड़ी, जामें दांत लगे न जाबड़ी—(मा०) मदोंदे या बूढ़ेका कहना है।

य

यक मन इलमरा दहमन अक्ल मी बायद—(फ़ा०) एक मन इलमके लिये दश मनबुद्धिकी आवश्यकता होती है।

यक़ीन बड़ा ईश्वर है—दे० विश्वासो फलदायकः।

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः—यदि यत्न करनेपर भी काम सिद्ध न हो तो उसमें अपना कोई दोष नहीं। तात्पर्य्य यह कि किसी कामको पूरा करनेके लिये यथेष्ट उद्योग करना चाहिए, उसपर भी यदि कार्य्य सिद्ध न हो तो मनको संतोष रहता है और दुनियांको भी कहनेकी कोई जगह नहीं रहती। यदि यत्न न करनेसे काम बिगड़ जाय तो मनमें पश्चात्ताप रहता है कि यदि मैं ऐसा करता तो मेरा काम हो जाता और दुनियां भी कहती है कि यत्न ही नहीं किया तो काम कहांसे हो। पूरा श्लोक यह है :—

(१) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी
दैवेन देयमिति का पुरुषा वदन्ति॥
दैवं निहत्य कुरु पौरुष आत्मशक्त्या।
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः। (हितोपदेश)

(२) आगम-हो, जोतिष पुरान और वैदक को
जोरि जोरि अच्छर कवित्तन को सवरो।
देखि जाती सभामाझ राजा को रिझाय जानो
खल बांध खेत माहि सब न कों हो खरो॥
रागधरि गाऊं भी कृपाऊं घोरे बाग धरि
कूप ताल बावरी, नवारनमें हौं तरो।
दीनबंधु दीनानाथ एते गुण लये फिरौं
करम न यारो देत ताको हौं कहा करौं॥

यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम था वैसा ही निकला।

यथा राजा, तथा प्रजा—जैसा स्वामी वैसा सेवक।

यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं ना करणीयं ना करणीयं—वेदाचारसे लोकाचार बढ़कर है।

यम सेनाकी विमल ध्वजा अब जरा दृष्टिमें आती है। करती हुई युद्ध रोगोंसे देह हारती जाती है—बुढ़ापेपर क०।

यह अंगूर ही खट्टे हैं—दे० "लो गिर गया" इसका निकास इस कहानीसे है:—एक भूखी लोमड़ी किसी अंगूरके बागीचेमें गई। वहां पके हुए अंगूरके गुच्छों को लटकते देख उसके मुंहमें पानी भर आया और उन्हें लेनेकी कोशिश करने लगी। बहुत उछल कूदके बाद जब वह अंगूरको पा न सकी, तब उसमें खट्टा होनेका दोष लगाकर वहांसे चल पड़ी।

यह कबहु नहीं दूबरे होत, रसोईके विप्र, कसाई के कूकर—स्पष्ट। दे० "कसाईका कुत्ता।"

यह किसीका भी सगा नहीं—जिसकी किसीसे न बने, उसपर क०। अविश्वासीको भी क०।

यह कुत्ता दर दर फिरे, और दर दर दुर दुर होय एकहि घरको हो रहे, तो दुर दुर करे न कोय—जो स्थिरचित्तका आदमी नहीं है वह सदा ठोकर खाया करता है।

यह कुत्ता नहीं मानता—पेटपर क०।

यह घोड़ा किसका? जिसका मैं नौकर, तू नौकर किसका? जिसका यह घोड़ा—सूमका नाम न लेना हो, तब क०।

यह जवानी मुझे न भावे, सींग डुलावे हंसी आवे—(ज०) जो व्यर्थके लिए हंसता है, उसपर क०। किसी जानवरको सींग हिलाते देखकर हंसने लगे, तब क०।

यह तीन काने और यह पौ बारह—चौपड़ खेलते समय क०। तीन काने नुक़सानपर और पौबारह फ़ायदा होनेपर क०।

यह तू शिक्षा साधकी, निश्चै चित्तमें ला। भेद न अपने जीउका, औरोंको बतला—स्पष्ट।

यह दाढ़ी धोखेकी टट्टी है—पाखंडीको क०। दाढ़ी देखकर इसे भला आदमी न समझो।

यह दिन सबके वास्ते है—मौतपर क०।

यह दीदे नदीदे हैं दीदारके—यह आंखें केवल देखना ही चाहती हैं।

यह दुनिया दिन चार है, संग न तेरे जाय। साईंका रख आसरा, अरु वासेहि नेह लगा—संसारकी अस्थिरता दिखाते हुए उससे मुंह मोड़-

कर ईश्वरसे प्रीति करनेके लिये क०।

यह पट्टी नहीं पढ़े—किसीकी अनुचित प्रार्थनाको अस्वीकार करनेके समय क०।

यह बड़ मिट्ठा, यह बड़ खट्टा—मनकी अस्थिरता पर क०।

यह वचन मेरा ठीक है, सांच इसे तू जान, मरे बिन छूटे नहीं, जीसे भूंडी बान—बुरी आदत जन्मभर नहीं छूटती।

यह बला तो कदमोंसे लगी है—जब कोई ऐसा पीछे पड़े कि किसी तरह भी उससे पिण्ड न छूटे, तब क०।

किसी अमीरके यहां एक गवैया भूला भटका आ पहुंचा। वह अमीर ऐसा कंजूस था कि, खाना खिलाना तो दूर रहा, कभी कहे हुक्केकी भी न मारता। गवैयेने उसे बड़ा आदमी जानकर बड़ा ख़ूब गाया। अमीर भी उसके गानेपर रीझकर तारीफ कर रहा था कि आदमीने आकर कहा कि हुज़ूर खाना तैयार है। अमीरने कहा मेरे सिरमें दर्द है अभी रहो एक नींद लेकर खाऊंगा। यह बहाना कर वह मुंह ढककर सो रहा। गवैया भी उसके इस फरेबको समझ उसकी पलंगके नीचे पैर तले लेट रहा। दो घंटे बाद जब अमीरने अपने आदमी को पुकारकर पूछा कि अरे वह बला गई, तो गवैया बोल उठा 'बलैयां लेउं यह बला तो कदमन लगी है; बिना खाना खाये कब जाती है।

यह बात वह बात, टका धर मेरे हाथ—लालची मनुष्यको विशेष कर ब्राह्मणोंको क०, जो पूजा कराते समय बात बातमें दक्षिणा मांगते हैं। बातें बनाकर अपना मतलब साधनेवालेको भी क०।

यह बात शराफ़तके बईद है—(मु०) जब कोई असभ्यताकी बात कहे या काम करे, तब क०।

यह बातें मत कीजियो, कभी न तू अय यार। जिन बातोंमें रूस जा, साईं और संसार—स्पष्ट।

यह बेल मढ़े चढ़ती नज़र नहीं आती—जब कोई काम पूरा होते न दिखाई दे या उसकी सफलतामें सन्देह हो, तब क०।

(१) वो क़ौम तरक़्क़ी करे क्या ख़ाक ऐ यार। होती रहती है जिनमें आती पैकार। क्या ख़ाक इससे और हम समझेंगे, यो बेल मंढ़े नहीं चढ़ेगी ज़िनहार। (ज़फ़र)

(२) कैसा समुझायो सुकुमारि, सुरति न चढ़ै बालु निर्धारि। कहै पखाने ज्यों जगमाहिं, मांडो बेलि जु चढ़ि है नाहिं॥ पेरोंसे हदी लता जैसे ऊपर नहीं चढ़ती।

यह भी अपने वक़्के हातिम हैं—बड़े सखी या दाताको क०।

यह भी किसीने न पूछा कि तेरे मुंहमें के दांत हैं—जब किसीकी ख़बर न ली जाय, तब क०। राजाके सुप्रबन्धपर भी क०, जहां जानमालका ख़तरा नहीं रहता।

यह भी दाम ग़ुलामों खाये, यह भी बैंगन काट पकाये—सब तरहसे बरबाद होनेपर क०।

यह भी नहीं जानते कि मेंढ़का मुंह किधर है—सीधेको, अनाड़ीको या जिसे किसी बातकी ख़बर न हो, उसे क०।

यह भी मेरी बात तू, जीव बीच धर ले। गज्जा दे राजबालको, पर जीव भेद मत दे—धन सौंप दे, पर मनका भेद किसीको न दे।

यह भी शिक्षा नाथजी, कह गये, ठीकम ठीक खोवें आदरमानको, दगा लोभ अरु भीक—स्पष्ट।

यह मत जाने बावरे, कि पाप न पूछे कोय। साईं के दरबारमें, एक दिन लेखा होय—पापका दण्ड ईश्वर अवश्य देता है।

यह मत जीमें जान तू, कि मनुख बड़ा जगबीच याद बिना कर्त्तारकी, हैं नीचनका नीच—जो मनुष्य ईश्वरकी उपासना नहीं करता वह नीचोंसे भी नीच है।

यह मुंह और गाजरें!—यह तुम्हारे खाने लायक़ नहीं। गाजर बहुत सस्ती चीज़ है। जानवरोंके खानेकी है, अमीरोंके लिये नहीं।

यह मुंह और मसूरकी दाल!—मसूरकी दाल मँहगी होती है ग़रीबके खाने लायक़ नहीं। हैसियतसे अधिक इच्छा रखनेवालेको क०।

यह मुंह पानों जोगा!—(पं०) क० दे०। पान खाना अमीरोंका काम है। जिस मनुष्यने किसीकी निन्दा की हो उसको पान देनेके लिये कहा जाय, तब क०

यह मेरी शिक्षा निपट है आछी, रोटी, भूल न खा अधकाची—कच्ची रोटी न खाय।

यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, परनारीको दूरसे ता हो—(उप०) परस्त्रीको दूर ही से त्याग दे।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेला, कधी बाट मत चाल अकेला—(उप०) अकेला दूर देशको न जाय।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेले, वालों मत मिल जुआ जो खेले—(उप०) जुआरीकी संगत न करे।

यह मेरी शिक्षा मान ले बीर, कपटी संग न राखो सीर—(उप०) कपटीसे साझा व व्यवहार न करे।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर संग न बैठ अकेली—(उप० ज०) पराये पुरुषके पास न बैठे।

यह मेरी सीख मान रे मीता, भीड़ समय मत रह हथ रीता—(उप०) भीड़के समय खाली हाथ न रहे अर्थात् कुछ हथियार ज़रूर हाथमें रक्खे।

यह मेरी शिक्षा मान पियारा, सौदा बेच न कधी उधारा—(उप० व्य०) उधार माल न बेचे।

यह रहस्य काहू नहिं जाना—(तुलसी) जब कोई विशेष घटना हो जाय और उसका भेद किसी पर न खुले, तब क०।

यह रास्ता बुरा निकला—जब एकको कोई चीज़ दी जाय और उसको मिलता देख सभी कोई मांगने लगे, या कोई ऐसा काम किया जाय जो सदाके लिए नियत हो जाय, तब क० दे० "बुढ़िया मरनेका डर नहीं"

इसपर एक कहानी है:—एक बनिया अपने घरमें रातको नींदमें ग़ाफ़िल पड़ा सोता था कि एक चूहा उसके पेटपर होकर इधरसे उधर चला गया। वह नींद से चौंक पड़ा और चीख मारकर रोने लगा। उसके रोनेकी आवाज़ सुन घरके लोग दौड़ आए और उससे पूछा कि तू क्यों रोता है। बनियेने कहा एक चूहा मेरी छातीपर होकर इस तरफ़से उस तरफ चला गया, अब इस घरमें मैं नहीं रह सकता। लोगोंने कहा, चूहा चला गया तो चलाने दो, इसके लिये रोना क्या। बनिया बोला, "ओ तन ... बड़ी तन जाने दूजा क्या ... रे भाई, मैं उसकी ... राह बुरी निकली" आज चूहा गया है, कलको सांप जायगा तो मैं क्यों कर जीता बचूंगा।

यह संसार कालका खाजा, जैसा गदहा तैसा राजा—मौत किसीको नहीं छोड़ती।

एक राजाने किसी साधु संतको व्यंगसे कहा, "जब देशी का आया अन्न जैसा गदहा वैसा संत" इसके उत्तरमें साधु ने कहा, 'यह संसार कालका खाजा, जैसा गदहा वैसा राजा'। राजा उत्तर पाकर खिसियाने से हो गये, पर कुछ कह न सके।

यह हज़रते दिल जिधर आय उधर आय—मन जिधर ही लग जाता है उधर ही लगा रहता है।

यह हमारि अति बड़ि सेवकाई, लेहिं न बासन बसन चुराई—(तुलसी) निषादका कहना रामचन्द्रके प्रति। अपनी दीनता दिखानेके लिये या ख़ातिरदारी न कर सकनेके लिये क०। नीच यदि कष्ट न दे तो समझना चाहिए कि उसने हमारी बड़ी सेवा की।

यहां अच्छोंके पर जलते हैं—कड़े अफ़सरके बारेमें क०।

यहां उल्टी गङ्गा बहती है—नियम विरुद्ध काम पर क०।

यहां किसीका चारा नहीं चलता—मौतके विषयमें क०।

यहां ज़रूर कुछ दालमें काला है—दे० "कुछ दालमें काला"

यहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं, जो तर्जनी देखत मरिजाहीं—(तुलसी) लक्ष्मणका कहना परशुरामजीके प्रति। यहां कोई ऐसा नहीं है जो तुम्हारे क्रोधसे डर जाय। ऐसा लोगोंका विश्वास है कि कुम्हड़ेकी बतिया उंगली दिखानेसे सूख जाती है। जब कोई झूठा रोब दिखाकर डराया चाहे, तब क०।

यहांके बाबा आदम ही निराले हैं—जहां नियम-विरुद्ध काम हो वहां क०।

यहांके रहे न वहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफ़से निराश हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई मंतकी नहीं है—हुज्जती या झूठा तर्क करनेवालोंको क०। मंतकी=नैयायिक, तर्कशास्त्र जाननेवाला पंडित। दे० "मेरा बैल"

कुछ आदमी एक नावपर सवार होकर कहीं जा रहे थे। सबने मिलकर यह सलाह की कि मन बहलानेके लिये कोई कहानी कहनी चाहिये। उनमेंसे एकने कहा कि अगर यहांपर कोई मनहूस न हो तो हम कुछ सुनावें। सभीने कहा कि यहां कोई नहीं है। तब उसने कहना शुरू किया 'एक पत्ते और ढेलेमें बड़ी दोस्ती थी। जब पानी होता तो पत्ता ढेलेको ढांप लेता और हवा चलनेपर ढेला पत्तेपर सवार हो जाता।' सुननेवालोंमेंसे एक बोल उठा, 'अगर पानी और हवा एक साथ होवे तो क्या होता'? कहानी कहनेवालेने कहा 'मैंने इसी लिये कहा था कि यहां कोई मनहूस न हो'।

यहां क्या तेरी नाल गड़ी है—जब कोई जगह न छोड़े, तब क०।

यहां तुम्हारी टिक्की न लगेगी
यहां तुम्हारी टिप्पस नहीं जमेगी
यहां तुम्हारी दाल नहीं गलेगी
— यहां तुम्हारी बात नहीं चलेगी, अर्थात् हमसे किसी तरहकी आशा न रक्खो।

यहां तो सब हारे हैं (या कान पकड़ते हैं)—मौतके बारेमें क०।

यहां तो हम भी हैरान हैं—मुश्किल कामपर सलाह पूछी जाय, तब क०।

यहां परिन्दा पर नहीं मार सकता—यहां कोई नहीं आ सकता।

यहां फ़रिश्तोंके पर जलते हैं—दे० "यहां अच्छोंके"।
क़ासिदने कहा कि यह लीजिये अपना ख़त वापिस।
पहुंचें मैं तो वहां परिन्दोंके भी पर जले जाते॥

यहां फ़िक्र मैशत है, वहां डगडगे हश्र आसूदगी हरफ़ेस्त न यहां है न वहां है—यहां खानेकी फ़िक्र वहां विचारका डर, सुख दुनियांमें नामको भी नहीं।

यही खेल में खेलियां, धौले आये केस। सासू नाल पहेलियां, यारों नाल संदेस— (ज० पं०)
सासका कहना बहूके प्रति। अर्थ स्पष्ट है।

यही गौ और यही मैदान—कारण और कार्य-पर क०।

यही गौना बहुरि नहिं औना—मृत्युपर क०

यही भरोसा ठीक है, कि दाता दे तो लूं। औरतका कर आसरा, जी तरसावे क्यूं—ईश्वरके देनेहीसे पूरा पड़ता है।

यही भला है मीत जो, झूंठ कभी ना बोल। चोग न सोना हो सके, फिरत सुनहरी झोल—झूठी बात सच्ची नहीं होती। रांगपर सोनेका पानी फेरनेसे सोना नहीं होता।

यहो मुंह यही मसाला—जैसेको तैसा।

या अल्लाह गौड़ोंमें भी कौन गौड़—
इसका निकास इस कहानीसे है। एक मुसलमान ब्राह्मण-का वेष बनाकर किसी ब्रह्मभोजमें ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें जा बैठा। ब्राह्मणोंको उसपर संदेह हुआ तो पूछा कि तुम कौन हो। उसने कहा, ब्राह्मण। फिर पूछा कौन ब्राह्मण, उत्तर मिला गौड़। जब पूछा कौन गौड़ तो वह घबड़ाके बोल उठा "या अल्ला गौड़ोंमें भी कौन गौड़?" तब सबको मालूम हुआ कि यह मुसलमान है। तात्पर्य यह कि बिना तहक़ीक़ किये सच्चा भेद नहीं मिलता या बनावटी बात तहक़ीक़ात करने पर खुल जाती है।

या इधर हो या उधर हो—आगा पीछा करने वाले को क०।

या करे दर्दमन्द, या करे ग़र्ज़मन्द—स्पष्ट।

या किसीको कर रहे, या किसीका हो रहे—जो मनुष्य किसीसे मिल कर नहीं रहता, अपने ही मनका काम करता है और दुःख पाता है; उस पर क०। संसार दो तरहसे ही निभ सकता है या किसीको अपना मित्र बना ले या आप ही दूसरेका उपकारी हो जाय।

या फूंकीके इस पार, या उस पार—दे० "फूंकी के इस पार या उस पार" और दे० "नौ दिन चले अढ़ाई कोस।"

या खाय उसला, या खाय मुसला—ओसवाल और मुसलमान दोनों ही बढ़िया चीज़ खानेके शौक़ीन होते हैं, इसलिये क०। उसला=ओसवाल, जैनियोंकी एक जाति। मुसला=मुसलमान।

या खाय घोड़ा, या खाय रोड़ा—घोड़े और मका-नकी मरम्मतके लिये नित्य प्रति ख़र्च होता रहता है, इसलिये क०।

या ख़ुदा ख़ैर, बचा हाथ पैर—स्पष्ट।

या ख़ुदा तू दे, न मैं दूं—कंजूसका कहना है।

या घरतें कबहूं न टलो, पिय टूटो तवा और

फूटी कठौती—(नरोत्तम दास) सुदामासे उनकी स्त्रीने कहा है। सदा दरिद्रीको क०।

या तो भर मांग सेंदुर, या निपट ही रांड़—दे० "भर हाथ चूड़ी पटसू रांड"

याद भली भगवानकी, तो हो गये भगत कबीर। झूंठे वाकी याद बिन, सब हैं पीर फ़क़ीर—स्पष्ट

याद करो भगवानको, और भली ना कोय। राजाकी कर चाकरी, जो परजा तावे होय—ईश्वरकी उपासना सबसे अच्छी है। जो राजाकी सेवा करता है सब कोई उसका हुक्म मानते हैं। इसका उत्तरार्ध सरकारी नौकरीपर भी कहा जा सकता है।

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी—(सं०) जिसकी जैसी भावना रहती है उसे वैसी सिद्धि मिलती है।

जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी। (तुलसी)

यादृशी शीतला देवी तादृशो वाहनो खरः—(सं०) एक सी जोड़ी मिलनेपर क०। दे० "जैसी देवी शीतला".

या बसे गूजर, या रहे ऊजड़—

इसका निकास एक कहानीसे है:—किसी समय दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुगलक दिल्लीके समीप एक किला बनवा रहे थे। इसके समीप ही निज़ामउद्दीन नामक कोई फ़क़ीर भी एक कूआं खुदवाता था। अधिकांश मजदूर कूएंके काममें लग जानेसे क़िलेका काम कुछ ढीला पड़ गया। इसपर बादशाहने उन्हें सख्त आज्ञा दी कि एक मजदूर भी फ़क़ीरके कूएंपर काम करनेको न जाय। बिचारे ग़रीब मजदूर दिनभर बादशाहके यहां और रातको फ़क़ीरके यहां काम करने लगे। एक दिन बादशाह जब क़िलेका काम देखने आये तो उन्होंने बहुतसे मजदूरोंको अपने कामपर ऊंघते पाया। पूरा हाल मालूम होनेपर बादशाहने तेल बेचनेवालोंसे कहा कि तुम निज़ामुद्दीन फ़क़ीरके हाथ तेल मत बेचो। बादशाहने सोचा था कि ऐसा करनेसे फ़क़ीरका रातका काम न हो सकेगा। संयोगवश उसी दिन फ़क़ीरके कूएंमें एक पानीका सोता निकला। तब उसने मजदूरोंसे कहा कि तुमलोग नित प्रति रातको काम करनेके लिए आया करो, इसी कूएंका पानी तेलका काम करेगा। जैसा उस फ़क़ीरने कहा था वैसा हुआ भी। यह बात बादशाहको मालूम होनेपर उन्होंने उसे एक जादूगर समझा और उसका सिर मांगा। दूसरे दिन एक आदमी एक बड़ा तरबूज़ लेकर फ़क़ीरके पास गया और उसने सब बात कह सुनाई। तुगलककी ऐसी निष्ठुरता देख फ़क़ीरने शाप दिया कि तुम्हारे सिरपर वज्रपात हो और उस क़िलेमें गूजरका वास हो अथवा खाली ही पड़ा रहे। इतना कहते ही चारों ओर काली घटा घिर आई और एक वज्र क़िलेपर गिरा जिससे तुगलककी मृत्यु हो गई। अभी भी वह क़िला ध्वंसावस्थामें पड़ा है और इसके कुछ भागमें गूजरजाति वास करती है।

या बेईमानी तेरा आसरा—जब कोई बेईमानी करता है, तब क०।

या बेहयाई तेरा आसरा—बे शरम आदमीको क०।

या मारे भादोंकी घाम, या मारे साझेका काम—दे० "कांटा बुरा करीलका"।

यार करूं, प्यार करूं, चूतड़ तले अंगार धरूं, जल जाय तो क्या करूं—कपटी मित्रपर क०। जो ऊपरसे स्नेह दिखावे, भीतरसे जड़ काटे।

परोक्षे कार्यं हन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्ज्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥

यारका गुस्सा भतारके ऊपर—(ज०) भ्रष्ट स्त्रियोंके प्रति क०।

यारका दिल यार रक्खे तो यारका भी राखिये। यारके घर खीर पके तो तनकसी चाखिये। यारके घर आग लगे तो पड़े पड़े ताकिये—स्वार्थी मित्रपर क०।

यारकी यारीसे काम या यारके फ़ेलोंसे—अपने मतलबसे मतलब है।

यारकी न भतारकी—(ज०) यार ही खुश न भतार हो खुश। इधरकी न उधरकी। घरकी न घाटकी। जो अपनेको चाहता हो उसे भी खुश न कर सके और जिसे आप चाहती हो वह भी खुश न हो, तब क०।

यारको करूं प्यार, खसमको करूं भसम, लड़केको करूं चटनी—खराब औरतको क०।

यार ज़िन्दः सोहबत बाक़ी—जब तक मित्र जीता रहे मिलनेकी उम्मेद रहती है।

यार डोमने किया जुलाहा, तन ढाकनको कपड़ा पाया—स्पष्ट।

यार डोमने किया रंघड़िया और न देखा वैसा हंड़िया—रांघड़ एक नीच जातिके राजपूत होते हैं जो चोरीके लिये प्रसिद्ध हैं।

यार डोमने किया सिपाही, बात बातमें करे लड़ाई—स्पष्ट।

यार डोमने कीना कंजर, हर लिया पला पलाया कूकर—स्पष्ट।

यार डोमने कीना गूजर, चुरा चुरा घर कर दिया ऊजड़—स्पष्ट।

यार डोमने कीना नाई, कौड़ी दे ना बाल मुड़ाई स्पष्ट।

यार डोमने जाट बनाया, सीत दूध इन मुका पाया—स्पष्ट। सीत=दही।

यार डोमने बनियां कीना, दस ले क़र्ज़ सैकड़ा दीना—स्पष्ट।

यार वही जो भीड़में काम आवे—स्पष्ट। भीड़= विपत्ति।

यार वही है पका, जिसने मन यारका रक्खा—स्पष्ट।

याराँ चोरी न पीराँ दग़ाबाज़ी—(मु०) मित्रसे मनकी बात छिपाना और पीरोंको ठगना उचित नहीं। जब किसीसे मनका सच्चा हाल कहा जाय, तब क०।

या रिन्द रिन्दे, या फ़तहचन्दे—या फ़क़ीर हो या बादशाह।

यारी करें सो बावरे और करके छोड़ें कूढ़।
याते ओढ़ निबाहिये या इससे रहिये दूर—स्पष्ट।

या तो काहू रंगमें न रंगिये सुजान प्यारे।
रंगे तो रंगे ही रहे फेर रखनो कहा॥ (ग्वाल)

या संसारमें करम प्रधान—दे० "कर्म प्रधान"

या सुख नींद सो, या माला जपो—स्पष्ट।

या हंसा मोती चुगें या लंघन करि जायं—स्वाभिमानी मानके साथ ही जीवन व्यतीत करते हैं

युग फूटे बिना नर्द नहीं मरती—दो मनुष्य यदि एक साथ मिले रहें तो उन्हें कोई नहीं ठग सकता। एका बड़ी चीज़ है। दे० "जुग टटा"

दो चौबे दक्षिणकी कमाई किये मथुराको चले जाते थे। राहमें लुटेरों ने उन्हें आ घेरा और लगे भाले बरछियां चलाने। यह दोनों भी चट घोड़ोंसे उतर पलथी मार कर बैठ गये और उनसे पूछने लगे कि 'बनैया लै ज' मार मार कर हार हो कर आयो है कि कभू चौपड़ भी खेली हो'। उनमेंसे एक बोला कि क्यों यह पूछनेसे तुम्हारा क्या मतलब। इन्होंने कहा 'कछु जुगहूं मारयो जात है'। इस मसौफ़े से वे बहुत खुश हुए, और इन्हें न लूट हंसकर चले गये।

यूं मत मान गुमान कर कि मैं हूं शेर जवान।
मुझसे इस संसारमें लाखों हैं बलवान—स्पष्ट।

ये दोऊ कहाँ पाइये, सोनो और सुगन्ध—दे० "सोना और सुगन्ध" दोनों बातें एक साथ नहीं मिलतीं।

येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत—(सं०) नामके भूखे मनुष्यको क०। जिस तरह बने नाम होना चाहिये।

हम तालिबे शोहरत हैं, हमें इश्क़ से क्या काम
बदनाम अगर होंगे तो क्या कुछ नाम न होगा?

र

रंगकी खुशी मनका सौदा—रंग अपने मन पसंदका है।

रंग कौएसा नाम महताब कुंवर—(व्यं०) नामके अनुसार रूप न हो, तब क०।

रंगमें भंग पड़ गई—जब किसी शुभ कार्यमें विघ्न पड़ जाय या खुशीके काममें रंज पैदा हो जाय, तब क०।

रंग रूप देखकर न भूलिये—(व्यं०) भड़कीली चीज़ पर क०।

न गैर्रो भूलकर भी आप ज़ाहिरकी सफ़ाईपर।
वरक़ सोनेका चिपकाया है गोबरकी मिठाईपर।

रंग है उसीको, जो कहेना किसीको—भला वही है जो किसीकी निन्दा न करे।

मैं बताऊं आपको अच्छों की क्या पहचान है।
जो हैं ख़ुद अच्छे वह औरों को नहीं कहते बुरा॥ (हाली)

रंडियोंकी ख़रची और वकीलोंका ख़रचा पेशगी चाहिये—क्योंकि काम निकल जाने पर पीछे कोई जल्दी नहीं देता।

रंडीका दिया अब न तब—न यह लोक सुधरता है न परलोक।

रंडी किसकी जोरू और भडुवा किसका साला—ये अपने मतलबके होते हैं।

रंडीका जोबन रकाबीमें—(१) अच्छी चीज़ें खानेसे रंडीका यौवन बना रहता है। (२) जिससे माल मिलता है उसीसे ख़ुश रहती हैं। रकाबी रुपया लखनऊमें चलता है।

रंडीकी कमाई, या खाय घोड़ी, या खाय गाड़ी—रंडियोंका पैसा घोड़ियोंको खिलानेमें और गाड़ी भाड़ा देनेमें बहुत ख़र्च होता है।

रंडीकी गाली और भूतके पत्थरकी चोट नहीं लगती—स्पष्ट।

रंडीका मीत पैसा—वह पैसेकी चाहना है।

तवायफ़की विछौनेपर, बना है काम सोनेका।
न ठहरेगा मुलम्मा है, भरा है ज़रके खोनेका॥

रंडीके घर माँड़े, और आशक़ोंके घर फड़ाके—रंडियोंके घर बढ़िया माल पकेगा तो उनके चाहनेवालोंके यहां फड़ाका होगा। क्योंकि उन्हींका धन इनके यहां ख़र्च होता है।

रंडीके नाक न हो तो गु खाय—स्पष्ट।

रंडी तेरा यार मर गया "कहा" कौनसी गलीका—रंडीके सैकड़ों यार होते हैं।

रंडी फ़क़ीर कर दे दममें शाहे ज़माको, बदफ़न करें पलकमें इनसान नेक फ़नको—(नजीर) स्पष्ट।

रंडी मांगे रुपैया, "लेले मेरी मैया" फक्कड़ मांगे पैसा, "चलबे साले कैसा"—स्पष्ट।

रंडी मोमकी नाक होती है—जिधर चाहो मोड़दो।

जायगा।

रँडुआ गया सगाईको, आपको लाय कि भाईको—क्योंकि उसे भी स्त्रीकी ज़रूरत है। पहले अपना मतलब पूरा करे या दूसरेका।

रकाब पांव हो रहे हैं—चलनेको तैयार हैं, जल्दबाज व उतावलेको क०।

रख पत रखा पत—दूसरेकी इज्जत रक्खो तो तुम्हारी भी इज्ज़त रहेगी।

रख पछताया कुछ नहीं, बेच पछताया अच्छा—(व्य०) माल बेचकर पछिताना अच्छा, रखकर पछिताना अच्छा नहीं।

रक्खे सच्चा हाथ जो मुक्ता मिले उधार, बिगड़े सेती मीत भी भागे कोस हज़ार—स्पष्ट।

रक्खा तो चश्मोंसे उड़ा दिया तो पशमोंसे—स्वाधीन नौकरका कहना। मुझे रख लें तो अच्छी बात है, निकाल दें तो कुछ परवाह नहीं।

रक्खे तो पीत, नहीं पलीत—निबाह सके तो प्रीत रहती है नहीं तो ख़राबी होती है।

रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाहिं पर बचन न जाई—(तुलसी) श्री रामचन्द्रका कहना परशुरामके प्रति। दृढ़ प्रतिज्ञा पर क०। व्यंगसे हठी मनुष्यको भी क०।

रज़ीलकी दो, न असराफ़की सौ—गाली देने पर क०।

रज्जा अमीर, भुक्का फ़क़ीर, मुआ पीर, पागल औलिया, अन्धा हाफ़िज़—अवस्थानुसार मुसलमानोंकी पदवी पर क०। धनवान हुये तो अमीर, भुक्कड़ होनेपर फ़क़ीर, मर गये तो पीर, पागल हो गये तो औलिया, और अन्धे हो गये तो हाफ़िज़जी कहलाते हैं।

रत्तियों जोड़े, तोलों खोवे, वाको लाभ कहांसे होवे—स्पष्ट।

रत्ती दान न धीको दिया, देवोरी समधनका दिया...(ज०) दहेजमें कुछ न दिया।

रत्ती देकर मांगे तोला, वाको कौन बतावे भोला

तुम कौन धों पाटी पढ़े हो लला,
मन लेहु पै देहु छटांक नहीं। (घनानंद)

रत्ती भरकी तीन चपाती, खाने बैठे सात संगाती—(ज०) मुफ़लिसी पर क०।

रत्तीभर धन साथ न जावे, जब तू मरकर जीव गँवावे—स्पष्ट। दे० 'सब ठाठ'।

रत्ती भर सगाई, न गाड़े भर आशनाई—वक्त पर रिश्तेदार ही काम आता है, दोस्त नहीं।

रन फतह हो गया—लड़ाई जीत ली। हमारा काम हो गया।

रपट पड़ेकी हर गंगा—जो कभी गंगा नहीं नहाते उनको क०। दे० "फिसल पड़े की"।

रमज़ानका नमाज़ी, मुहर्रमका सिपाही—(मु०) बाकी सालभर कुछ नहीं, कपटी व छलीको कहते हैं।

रले मिले पांचो रहिये, जान जायपर सच न कहिये—समयानुकूल काम करने पर क०।
"जैसी बहै बयारि पीठ तब तैसी दीजै" (गिरधर)
दे० "पंच कहे बिल्ली"

रवि जल उखरे कमलको, जारत मारत जात—(वृन्द) बने पर जो मित्र रहते हैं वह भी बिगड़े पर शत्रु हो जाते हैं।

रवि नहिं लखियत बारि मसाल—सूर्यको कोई मशाल बाल कर नहीं देखता, गुणवान अपने गुणों-हीसे प्रसिद्ध हो जाता है।

रविहूंकी इक दिवसमें, तीन अवस्था होय—एकसी अवस्था किसीकी भी नहीं रहती।

रसको स्वाद जो और खवैये—स्पष्ट।
'अधर मधुर मिश्री मुसकात बात, देहु मैकु मांगत हैं लाल,
लीग छकि नमते न अंचैयी, रसको स्वाद जो और खवैये।

रस मारे रसायन बनता है—(१) पारा मारनेसे चांदी वा सोना बनता है। (२) रिपुओंको दमन करनेसे मनुष्य सिद्ध हो जाता है।
पिय आवत भई बैर सुनारी खीझि कै साज सिंगार उतारौ
आयो लाल कहे सखि सोय। मारे रसहि रसाइन होय॥
(बिचित्र दास)

रसमें विष फैला दिया—दे० "रंगमें भंग।"

रससे मरे तो विष क्यों दीजे—दे० "गुड़ दिये मरे........."

रसोई और रसायन बराबर—दोनोंका बनाना मुश्किल है, हरएकको नहीं आता।

रसोईके विप्र क़साईके कुत्ते—यह दुबले नहीं होते।
यह कब हूं नहिं दूबरे होत,
रसोईके विप्र कसाईके कूकर।

रस्सीका सांप बन गया—जब थोड़ी बातका बहुत विस्तार हो जाय, तब क०।

रस्सी जल गई ऐंठन न गई (वा बल न गया)—जब कोई मनुष्य बर्बाद होनेपर भी अपनी आन न छोड़े, तब क०।
अबतक ख़बली दिमाग़ों नीखलल न गया,
सौदाये गेसूए मुसलसल न गया।
है क़ब्रमें भी मुझे तेरी ज़ुल्फ़ोंका ध्यान,
जो रस्सी जल गई मगर बल न गया। (रंजूर)

रहनेको नहीं झोंपड़ी मियां मुहल्लेदार—हैसियत या गुणके विरुद्ध नाम रहने पर क०।

रहमान जोड़े पली पली, सैतान लुड़ावे कुप्पा—जब घरमें एक आदमी धन सचय करे और दूसरा उड़ावे, तब क०। दे० "तेली जोड़े.........." जब गृहस्थीमें कोई भी चीज़ अच्छी तरह संचय करके रक्खे और चूहे बिल्ली उसे ख़राब कर दें, तब भी कही जा सकती है।

रहिमन मोहि न सोहाय, अमिय पियावे मान बिनु। जो विष देय बुलाय, मान सहित मरबो भलो—स्पष्ट।

रहिमन रहिलाकी भली जो परसै मनलाय, परसत मन मैला करै वह मैदा जरि जाय—ऊ० दे०। रहिला=चना।

रहिमानको रहिमान, शैतानको शैतान—अच्छेको अच्छा और बुरेको बुरा मिलता है।

रही बात थोड़ी, ज़ीन लगाय घोड़ी—जब काम कुछ भी न हुआ हो और करनेवाला उसे पूरा समझे, तब क०। कहनेका तात्पर्य यह कि अभी हुआ ही क्या है अर्थात् कुछ भी नहीं हुआ।

रहे अंत मोचीके मोची—जैसे थे वैसे ही अनेक कष्ट सहनेपर भी अवस्था न [illegible] हो, तब क०।

रहेके भुसाहुल नाम लेवेके धरोहर—(पू० ज०) हैसियतके विरुद्ध नाम हो, तब क०।

रहेगा बांस न बाजेगी बांसुरी—कारण ही नहीं रहेगा तो कार्य कैसे होगा।

रहे झोंपड़ीमें ख्वाब देखें महलोंका—(च०) ऊंची आकांक्षापर क०।

रहे तो टके कसे, जाय तो जड़ बेलसे—बेइज़्ज़तीसे रहनेकी अपेक्षा मरना भला है।

रहे महमूदके और अंडे देवें मसूदके—जब खाय एकका और काम करे दूसरेका, तब क०।

राईको पर्वत करे और पर्वतको करे राई—ईश्वरकी क़ुदरतपर क०।

चाहे सुमेरको छार करे, अरु छारको चाहे सुमेर बनावे। चाहे तो रंकको राउ करे, अरु राउको द्वारहिं द्वार फिरावे। रीति यही करुणानिधिकी, कवि देव कहै बिनती मोहिं भावे। चींटीके पायमें बांध गयंदहिं, चाहे समुद्रके पार लगावे। (देव)

राखनहार भये भुजचार, तो क्या बिगड़े भुज दोके बिगाड़े—ईश्वर जिसका सहायक है, उसे मनुष्य हानि नहीं पहुंचा सकता।

राग तालका हाल न जाने, दोनों हाथ मजीरा—बाहरी दिखावे पर क०।

रागी, बागी, पारखी, नारी और नियाव। इन पांचोंके गुरु सही, उपजत अंग सुभाव—गाना, घोड़ेकी सवारी, रत्न परीक्षा, नाड़ीका ज्ञान और न्याय करना, यद्यपि इन पांचों विद्याओंके गुरु हैं तथापि यह स्वभावसे ही उत्पन्न होती हैं अर्थात् यदि ईश्वरको देन न हो तो सिखानेसे जल्दी नहीं आती। कोई कोई "इन पांचोंके गुरु नहीं" भी क०।

न्यायपर एक दृष्टान्त है कि:—एक दिन महाराजाविक्रमादित्यके यहां चार मनुष्य चोरीके सुभामलेमें पकड़े आये। राजाने उनमेंसे एकको पास बुला इतना कह छोड़ दिया कि तुम्हारे लायक यह काम न था। दूसरेको पांच चार गालियां दे निकाल दिया। तीसरेको दस बीस जूतियां लगवा धक्के दिलवा निकलवा दिया। चौथेको नाक और कान कटवा काला मुंह कर गधेपर चढ़वा शहर बाहर करवाया। यह इन्साफ देख दर एक पूछा कि तुम्हारे दिलमें क्या है सो कहो। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, धर्मावतार आपने न्याय तो समझ ही कर किया होगा पर इसका भेद हमपर न खुला कि एक ही कसूरमें चार मनुष्योंको भिन्न भिन्न सजाएं क्यों दी गई। राजाने कहा, कि तुम चारोंके पीछे चर लगाकर यह खबर मंगवाओ कि वह घर जाकर क्या करते हैं। तीसरे दिन जब वह लोग खबर लगाकर राजाके समीप आये तब राजाने सब दरबारियोंके सामने पूछा कि कहो किसने घर आकर क्या किया। दूतोंने कहा जिसे आपने कहा था कि यह काम तुम्हारे लायक नहीं है वह तो घर जाकर जहर खाके मर गया। दूसरा जिसे आपने गालियां दी थीं शहर छोड़के चला गया। तीसरा जिसे थोड़ी बहुत मार पड़ी थी अभी तक घरसे नहीं निकलता चौथेकी कुछ न पूछिये। जब वह नाक कान कटाये काला मुंह किये गधेपर बैठा जा रहा था और दो चार सौ तमाशगीर भी चारों तरफसे लानत मलामत करते जाते थे तब उसकी जोरू भी सामने आ गई। उसने उसे पास बुलाकर सबके देखते कहा कि तू घर जाकर नहानेका पानी जल्द गरम कर रख थोड़ा शहर फिरना बाकी है अभी फिरकर इन मूंजियोंके हाथसे छुटकर चला आऊंगा। राजाने दरबारियोंसे कहा 'कहो अब तो इस भेदको समझे?' दरबारियोंने हाथ जोड़कर कहा, 'पृथ्वीनाथ आपका न्याय आप हीसे बने दूसरेकी क्या सामर्थ्य जो इसमें दम मारे'।

रांघड़ गूजर दो, कुत्ता बिल्ली दो। ये चारों ना हों तो खुले किवाड़ों सो—रांघड़ और गूजर बहुत चोट्टे होते हैं, उन्हींपर क०।

रांड़ और सांड़का यौवन रातको—स्पष्ट।

रांड़का सांड़ और छिनालका छिनरा—विधवाका लड़का खुलासा और छिनालका लड़का छिपके रहता है।

रांड़का सांड़ सौदागरका घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा—स्पष्ट।

रांड़की गांठमें मालका टूक—विधवा निरवलम्ब रहती है।

रांड़के आगे गाली क्या—सुहागनके लिये रांड़से बढ़कर कोई गाली नहीं।

काम सदा चलता रहे, कभी नहीं रुके, उसपर क०।

रांड़को बेटीका बल, रंडुयेको रुपयेका बल—स्पष्ट।

रांड़ सांड़ बिगड़े बुरे—नीचे देखो।

राँड़ सांड़ अरु नकटा भैंसा, ये बिगड़े तो होवे कैसा—इन तीनोंको न छेड़े। जब कभी उद्दंड और मूर्ख आदमी विरुद्ध हो जाता है और, समझानेपर नहीं समझता, तब क०।

रांड़ भइलाके सुख कौन, जो निचिन्त सोअल न—(पू० ज०) स्पष्ट।

रांड़ रोवे, कुंवारी रोवे, साथ लगे सत ख़समी रोवे—सहानुभूतिकी अधिकतापर क०।

ख्याल भी कोरी मंदलाल ब्रज कानन्दकी।

। रांड रोवे सेर कहिवाली रावें सात सेर॥ (छ०प०)

रांड़ सांड़ सीढ़ी सन्यासी, इनसे बचे तो सेवे काशी—काशीमें रहना हो तो इन चारोंसे होशियार रहे। काशीमें सीढ़ियां बहुत ऊंची और पत्थरकी होती हैं जिनपरसे गिरनेका सदैव डर रहता है।

रांड़से बढ़कर कोसना नहीं—(ज०) दे० "रांड़के आगे गाली क्या।"

रांड़ तो बहुतेरी रहें, जो रंडुये रहने दें—रंडुओंके ही सबब विधवाओंका चरित्र बिगड़ता है। यदि चोरीका माल ख़रीदनेवाले न रहें तो चोर भी न रहें।

रांधे सो रानी भरे सो लौंडी—रसोई बनाना मालकिनका और पानी भरना दाईका काम है।

राचेका पान विराचेकी मेंहदी—यदि मनसे दिया जाय तो पान है नहीं तो मेंहदीके समान है।

राज करंते सेरभर, भीख मंगते सेर। तुलसी राम प्रताप ते, नहीं सेरमें फेर—स्पष्ट।

राजका राजमें, व्याजका व्याजमें, नाजका नाजमें—(व्य०) जिस कामको कमाई होती है उसी काममें ख़र्च होती है। राजाका धन राजमें, सराफ़का कर्ज़ देनेमें और ग़ल्लेवालेका ग़ल्लेमें लगता है।

राज नहीं है पोपा बाईका—जब कोई धींग धींगी करे, तब क०।

राजपूत, जाट, मूसलके धनुहीं। टूट जात नवे नहिं कबहीं—राजपूत और जाट मूसलके धनुषके तुल्य हैं जो झुकानेसे झुकता नहीं, टूट भले ही जाय। दोनोंकी ज़िद और कट्टरपनपर क०।

राजहंस बिनको करै, छीर नीरको दोय—(वृन्द) बिना पहिचाननेवालेके अच्छे बुरे अलग अलग नहीं हो सकते।

"संघइ ग्याय न बिनु पहिचाने" (तुलसी)

राजा आगे राज, पीछे चलनी न छाज—विधवायें कहती हैं।

राजा करे सो न्याव, पासा पड़े सो दाँव—दे० "पासा पड़े सो दांव"। पासा पड़े सो दांव है राजा करे सो न्याव। (पद्माकर)

राजाका दान, प्रजाका स्नान—दोनों बराबर है, सबको अपनी सामर्थ्यके अनुसार पुण्य-कार्य करना चाहिये।

राजाका दूजा, बकरीका तीजा, दोनों ख़राब—राज्यका अधिकारी पहिला लड़का ही होता है और बकरीके दोही थन होते हैं जो दो बच्चे पीते हैं।

राजकी दूसरी, छेरीकी तीसरी, भेड़की मूसरी। स्वाहर मुसा।

राजाका परवाना, और साँपका जिलाना बराबर है—दोनों जोखिमके काम हैं।

राजा किसके पाहुने, और जोगी किसके मीत—राजा और जोगी किसीके मीत नहीं होते।

मुसाफ़िरसे कोई भी करता है प्रीत।

मसल है कि जोगी हुये किसके मीत। (मीरहसन)

इनको दोस्ती पर विश्वास नहीं करना चाहिये।

राजाकी बेटी, करमोंकी हेटी—ये जोड़ विवाह पर क०।

राजाकी सभा नर्कमें जाय—जब किसीके पास बैठकर लोग ख़ुशामदकी बातें करें और उसको प्रसन्न करनेके लिये झूठ बोलें, तब क०।

राजाके घर काज और हमारे घर ठक ठक—राजा और ज़मींदारोंके यहां ब्याह शादी होनेपर उसके ख़र्चके लिये प्रजासे ज़बर्दस्ती कर वसूल किया जाता है।

राजाके घर आई, और रानी कहलाई—जिसे राजा

मानै वही रानी हो जाती है।

कहा भयो मोहि कुल नहिंचार।
निसि दिन पिया करत बहु प्यार॥
सुनो वलि जो लोग बखानो।
राजा मानो सोई रानी॥ (प्रेम गर्विता लो०र० कौ०)

राजाके घर मोतियोंका काल—जब किसीके यहां कोई चीज़ बहुतसी होनेकी उम्मेद हो पर बिल्कुल न दिखाई पड़े वा किसीसे वैसी चीज़ मांगे जो उसके यहां बहुत सी हो पर वह न दे, और यह कह दे कि मेरे यहां नहीं है, तब क०।

राजा छूए और रानी होय—जिसपर राजा वा अमीरकी निगाह हो, वही ऊंचे पदपर पहुंच जाय।

राजा छोड़े नगरी जो चाहे सो लेवे—जिस चीज़से अपना कोई प्रयोजन न रहे, उसे जिसका जी चाहे ले ले।

कह्यो चलत परदेश तिय, देखि रमनको गेह।
राजा छाड़े नगरको, जिहि भावे सो लेइ।
(अनुशयना। लो० र० को०)

बुलबुलने आशियाना चमन से उठा दिया,
उसकी बलासे बू रहे या हुमा रहे।

राजा जोगी किसके मीत—राजा और जोगी बेमरव्वत होते हैं।

राजा नटे तो किसको कहे—जब इंसाफ़ करनेवाला ही बेईमान हो जाय, तो इंसाफ़ कौन करे।

राजा नलपर विपता पड़ी, भूनी मछली जलमें तरी—जब मनुष्य पर विपत्ति पड़ती है तो सभी बातें उल्टी होती हैं। जब राजा नल अपना राज जूएमें हार रानी दमयन्तीको साथ ले जंगलमें चले आये, और वहां कुछ फल फूल भी खानेको न मिला, तो क्षुधासे व्याकुल हो उन्होंने तालाबमेंसे मछली पकड़ी, और उसको आगमें भूना। जब रानी उसकी राख धोनेके लिये तालाबमें ले गई, तो वह भूनी मछली पानीमें चल पड़ी।

राजा न्याव न करेगा तो घर तो आने देगा—काम हो चाहे न हो, पर उद्योग जरूर करना चाहिये। आलसीको काम करनेके लिये उत्साह दिलानेको क०।

होता है।

राजा बेटा किसका, जो खिलावे उसका—(ज०) छोटे बच्चोंको खिलाते समय क०।

राजा भीमकी कज़ा, रामकी रज़ा—भीम भी ईश्वरकी इच्छा हीसे मरे हैं।

राजा माने सो रानी, छानी बीनती आनी—दे०, "राजाके घर आई"।

राजा रक्खे रानी खावे—पुरुष कमावे स्त्री खर्च करे, तब क०।

राजा राज परजा चैन—जब न्यायी राजा होता है, तो प्रजा सुखसे रहती है।

राजा रूठेगा, अपनी नगरी लेगा—जब कोई आदमी अपनी स्वाधीनता रखनेके लिये सब तरहके कष्ट सहनेको तैयार हो जाता है, तब क०।

राज़ी हैं हम उसीमें जिसमें तेरी रज़ा है, यहां यों भी वाहवा है और वों भी वाहवा है—(नज़ीर) जब कोई हर तरहसे दूसरेके कहने मुताबिक चलनेको तैयार हो तब क०।

रातकी मालज़ादी, और दिनकी खूज़ादी—रातको वेश्या और दिनको गृहस्थिन।

रात गई, बात गई—वक्त भी खराब हुआ और कुछ काम भी नहीं हुआ।

रात थोड़ी, कहानी बड़ी—समय थोड़ा है पर काम बहुत करना है। जब कोई व्यर्थकी बातें करके समय नष्ट करे वा काममें विघ्न डाले, तब क०।

थोड़ी है रात और कहानी बहुत बड़ी,
हाली मिकस सकेंगे न दिलके गुबार बस। (हाली)

रात नर्वदा उतरी, सुबह कुंआ देख डरी—(ज०) स्त्री चरित्र पर क०।

दिवा काक कताद्भीता रात्रौतरति नर्मदाम्।

रात पड़ी बूंद, नाम रक्खा महमूद—(मु० ज०) समझ लिया कि लड़का ही होगा। जब कोई काम होनेसे पहिले उसका नतीजा अपने मन मुताबिक़ निकाल बैठे, तब क०।

रात पड़े उपासी, दिनको खोजे बासी—ग़रीबी पर क०।

— जिस कामके लिये आडम्बर किया जाय वह काम ही न हो, तब क०। लड़का होनेपर बहुत खुशी हुई पर उसमें लड़केका कोई चिन्ह न पाया।

रात मांका पेट—निद्राके समय सब कष्ट भूल जाते हैं।

दिन व्यतीत दुःख दर्दमें, चार पहर उतपात।
बिपती भरि जाते सबै, जो होती नहिं रात॥(नागरीदास)

रात रातका पड़ रहना, भोर भये चल देना—मुसाफ़िर वा फ़क़ीरको क०।

रात हटाई, लड़के ही आई, भूख वेदना बुरी रे भाई स्पष्ट।

रातों काता कातना, सिरपर नहीं नातना—(ज०) विफलतापर क०।

रातों रोई एक ही मूआ—सारी रात कोसा पर एक ही मरा। बहुत परिश्रम करनेपर भी थोड़ा ही लाभ हो, तब क०।

राधे राधे रटत हैं, आक ढाक अरु कैर। तुलसी या बृज भूमिमें, कहा राम सों बैर—(तुलसी) स्पष्ट।

तुलसीदासजी रामचन्द्रजीके परम भक्त थे। एक बार वह मथुराजी गये। वहां जाकर उन्होंने देखा कि यहांका प्रत्येक मनुष्य केवल श्रीराधेकृष्णकी ही चर्चा करता है। रामचन्द्रजीका कोई नाम भी नहीं लेता। इस बातसे उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने उक्त दोहा कहा—इसके बाद जब वह एक मंदिरमें पहुंचे तो उन्होंने श्रीकृष्णकी दिव्य मूर्ति देखी और बड़े विनीत भावसे यह दोहा कहा—

"कहा कहौं छवि आजकी, भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक जब नवैं, धनुषबाण लो हाथ॥"

तुलसीदासजीकी यह प्रार्थना सुन श्रीकृष्णजीने धनुषवाण धारण कर लिया। श्रीकृष्णजीकी यह छवि देखकर तुलसीदासजी बड़े प्रसन्न हुए और यह दोहा कहा—

"कित मुरली कित चंद्रिका, कित गोपिनको साथ।
तुलसीदासके कारने नाथ भये रघुनाथ॥"

रानीको कौन कहे "आगा ढक?"—(ज०) बड़े आदमीका दोष कोई डरसे उसके मुंहपर नहीं कहता।

रानीको राजा प्यारा, कानीको काना प्यारा—
(१) अपनी अपनी चीज़ सबको प्यारी लगती है
(२) जैसेको तैसा ही मिलता है।

रानी गई हाट, लाई रीझकर चक्कीके पाट—क्योंकि वह नहीं जानती थी कि अनाज कैसे पीसा जाता है। जो चीज़ न देखी हो उसे ही देखनेकी इच्छा होती है।

रानी दीवानी हुई, औरोंको पत्थर अपनोंको लड्डू मारकर—स्यान-पागलपर क०।

रानी रूठेगी अपना सोहाग लेगी, क्या किसीका भाग लेगी—दे० "राजा रूठेगा"। मालिक रूठेगा अपनी नौकरी लेगा।

रामके न रहीमके—जो मनुष्य किसी धर्मका न हो, उसे क०।

काशी के द कामके न, कलमा क रामके न
रामरहिमानके न, भजन गंभीरके॥

रामके भक्त काठके गुड़िया, दिनभर ठक ठक

रातके घुसकुरिया—(लो०) वैष्णव पुजारियोंपर आता है।

राम खबरिया लेवे करिहैं, दया लगे कछु देवे करिहैं—स्पष्ट।

राम चरित जे सुनत अघाहीं, रस विशेष जाना तिन नाहीं—(तुलसी०) स्पष्ट।

राम छोड़ो अयोध्या मन चाहे सो लेय—दे० "राजा छोड़ी नगरी॥"

रामजीका आसरा है—जिसके लड़का नहीं होता वह कहता है।

रामजीकी माया, कहीं धूप कहीं छाया—ईश्वरकी क़ुदरतपर क०।

राम झरोखे बैठके, सबका मुजरा लेत। जैसी जाकी चाकरी, वैसा वाको देत—जैसी सेवा करता है वैसा फल पाता है।

एक राजाने किसी कंगाल ब्राह्मणसे पूछा कि तुझे और तुझे खानेको कौन देता है, उसने जवाब दिया कि परमेश्वर। फिर पूछा इसका क्या कारण कि मुझे इतना अधिक देता है और तुझे इतना कम। जिसके उत्तरमें ब्राह्मणने उक्त दोहा कहा।

राम न मारे आपे मरे, देय कुमति चढ़ाय—(पू०) स्पष्ट।

जाको प्रभु दारुण दुख देहीं, ताकी मति पहिले हर लेहीं।
(तुलसी)

राम नाम आराधियो, तुलसी वृथा न जाय। लरिकाईको पैरियो आगे होत सहाय—रामकी उपासना खाली नहीं जाती, वक्त पर ज़रूर काम आती है

राम नामकी लूट है, लूट सके तो लूट। अंतकाल पछतायगा प्रान जायंगे छूट—स्पष्ट।

राम नामके आलसी, भोजनको तैय्यार—हराम ढील या जांगरचोरको क०।

राम नामके कारने, सब धन डारै खोय। मूरख जाने के गया, दिन दिन दूना होय—दान करनेको उत्तेजित करनेके लिए क०।

राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार। तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार—(१) देहलीपर दीया रखनेसे जैसे घरके भीतर बाहर दोनों तरफ़ चाँदना होता है उसी तरह रामका नाम मुंहसे लेनेसे आत्मा शुद्ध होती है, और संसारमें यश होता है। (२) बुद्धिमान दो झगड़ालुओंके बीचमें पड़कर उनका झगड़ा मिटा देता है।

सुबुध बीच परि दुहुन की, करत कलह रसपूर।
करत देहरी दीप ज्यों, घर आँगन तम दूर॥ (वृन्द)

राम नाम लड़ुआ गोपाल नाम घी हरिका नाम मिश्री तू घोल घोल पी—स्पष्ट।

राम नाम ले सो धक्का खावे, चूतड़ हिलावे सो टका पावे—(ज०) वेश्याओंको धन मिलता है सच्चरित्र स्त्रियोंकी कोई बात नहीं पूछता।

राम नाम सत्य है—ईश्वरका नाम ही सचा है। हिन्दुओंमें मुरदा ले जाते समय कहते हैं।

राम नाम सुमिरन करो, यही नाम है तंत। तीनलोक चौदह भुवन, छाय रहे भगवंत—स्पष्ट।

राम नाम शमशेर पकड़ लो, कृष्ण कटारा बांध लिया। दया धर्मकी ढाल बना ली, यमका द्वारा जीत लिया—स्पष्ट।

राम बढ़ाये सो बढ़े, बलकर बढ़ा न कोय। बल करके रावण बढ़ा, छिनमें डारा खोय—स्पष्ट।

राम बने है तो बन जैहे बिगरी बनत बनत बन जाय—ईश्वर चाहे तो बिगड़ी बात भी बन जाती है।

राम बिना दुख कौन हरै ? बरखा बिन सागर कौन भरै ? लछमी बिन आदर कौन करै ? माता बिन भोजन कौन धरै ?—स्पष्ट।

राम बिमुख अपना नहिं कोई—जो ईश्वरसे विमुख है उसका सगा कोई नहीं होता।

राम मिलाई जोड़ी एक अंधा एक कोढ़ी—जब दो दुष्टजनोंका आपसमें घना सम्बन्ध हो, तब क०।

राम राम कहते रहो, जब लग घटमें प्रान। कबहुं तो दीन दयालके, भनक पड़ेगी कान—राम राम रटे जाओ कभी न कभी सुनवाई ज़रूर होगी।

राम राम कहो मन मेरे, क्षणमें पाप कटेंगे तेरे—स्पष्ट।

राम राम जपना पराया माल अपना—पाखंडी और बगुला भगतको क०।

"पूछा कि ग़ज़ल क्या है, कहने लगे गुरुजी,
बस राम राम जपना, चेलोंका माल अपना"॥ (अकबर)

राम राममें टेंटें—जहां कोई अच्छी बात होती हो वहां बेहूदी बात कहनेपर क०।

राम राम सत्य है सबकी यही गत्य है—मरनेपर क०।

राम राम लिख दे शिलातर जायगी, भज ले सीताराम मुक्ति हो जायगो—स्पष्ट। जब समुद्र पार होनेके लिये बन्दरोंने सेतु बांधा था, तब शिलाओंपर राम नाम लिखा था जिसके कारण वह तैरती रही थीं।

राम राम सब कोई कहे, दशरथ कहे न कोय। एक बार दशरथ कहे, कोटि यज्ञ फल होय—रामके पिता होनेके कारण दशरथ उनसे बड़े हैं, परन्तु उनका कोई स्मरण नहीं करता।

राम राम कहोगे, तो सदा सुखी रहोगे। रामको बिसारोगे, तो जीती बाजी हारोगे—स्पष्ट।

राम सहाय करे तो कोई क्या कर सके—ईश्वर जिसका सहायक है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

राम सो रहीम—दोनों एक ही हैं। हिन्दू मुसलमा-

नोंके एकेपर क०।

रामहिं केवल प्रेम पियारा, जानि लेहि जे जान-निहारा—रामको केवल प्रेम ही प्यारा है, नेम नहीं।

जूठे जूठे बेरोंके चखूठे कर खाये राम।
नेम सों चखाये पै न प्रेम सों चखाये हैं॥ (रसिक बिहारी)

रावनका साला—उस अत्याचार करनेवालेको क० जिसका हिमायती कोई बड़ा आदमी हो।

रावनने जब जनम लिया था, बीस भुजा दस सीस। माय अचंभे हो रही; किस मुंहमें दूं खीस स्पष्ट।

राव न रावड़ी, ले उठे खावड़ी—(मा०) मैंने एक बात भी नहीं कही और उसने तरवार खींच ली। बिना कुछ कहे जब कोई लड़नेको तैयार हो जाय, तब क०।

रास्तगो मुफ़लिस मजलिसमें झूठा—ग़रीब आदमी सच्चा हो तो भी अदालतमें झूठा ठहरता है क्योंकि रुपयेवाला उसके विपक्षमें लोगोंको रिशवत देकर झूठी गवाही दिला देता है।

रास्तेमें लूटे और आंख दिखावे—दे० "चोरी और सीनाज़ोरी"।

राहकी बात है—ठीक बातपर क०।

राह छोड़ कुराह चले, तुरत धोखा खाय—स्पष्ट।

राह पड़े जानिये, या बाह पड़े जानिये—(पं०) संग करनेसे या व्यवहार पड़नेसे आदमी पहिचाना जाता है।

राह बतावे तो आगे चल—नेताओंके प्रति क०

रिज़क़ न पल्ले बांधते, पंछी और दरवेश। जिनका तकिया रब्ब है, उनको रिज़क़ हमेश—ये दोनों ईश्वरपर निर्भर रहते हैं इससे इन्हें रोज़ीकी फ़िक्र नहीं रहती।

रिज़क़ है न मौत—कमनसीबको क०।

रिज़ाला मस्त हुआ, खुदाको भूल गया—स्पष्ट।

रिज़ालेका लट्ट—बदअख़्ल और बेहूदा आदमीको क०।

रिज़ालेके नाखून हुए—सतानेका सामान मिला।

रिज़ालेकी जोरूको सदा तलाक़—(मु०) लुच्चेकी स्त्री रोज़ त्यागी जाती है।

रिज़ालोंकी दोस्ती पानीकी लकीर, शरीफ़ोंकी दोस्ती पत्थरकी लकीर—पानीकी लकीर तुरत मिट जाती है और पत्थरकी लकीर कभी मिटनेकी नहीं

रिमझिम बरसे मेह ऊपर हो रावटी, कामिन करे किलोल पांय बिच पावटी। और फूलोंकी सेज पंखोंका डोलना, इतना दे करतार तो फिर क्या बोलना—विषयी लोग चाहते हैं।

रिशवतख़ोर ख़ुदाका चोर
रिशवतख़ोर जहन्नुमी } रिशवत लेना पाप है।

रियासत बग़ैर सियासत नहीं होती—बिना रौब (डर) ज़मींदारी नहीं चल सकती।

रीछका एक बाल भी बहुत है—रीछका बाल लड़कोंको नज़र न लगनेके लिये बांध देते हैं।

रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे—ख़ुश होंगे तो भी बुराई ही करेंगे। दुष्ट प्रकृतिवाले मनुष्यको क०।

रीतकी कौड़ी न ऊत बिलावकी ढेरी—मूर्खोंकी ढेरीसे हक़की एक कौड़ी भी अच्छी।

रीते भरे भरे ढुलकावे, मेहर करे तो फिर भर जावे—ईश्वरकी मर्ज़ी पर क०।

एक बड़ा सौदागर किसी कमाल फ़क़ीरका चेला हुआ और आठों पहर उनकी ख़िदमतमें हाज़िर रहने लगा। ईश्वरकी इच्छासे छ महीनेके भीतर उसका ऐसा काम बिगड़ा कि खाने पीनेसे भी तंग आ गया। उसे उदास देख फकीर साहबने कहा तू इतना फ़िक्र क्यों करता है, क्या तूने यह मसल नहीं सुनी।

समरथ दाद करताकी बातें क्या न करता क्या न करै।
हाथी मार गर्दमें डाले चदनाके सिर छत्र धरे।
रीते भरे भरे ढुलकावे मिहर करे तो फेर भरे।

रीते सरवर पर गये, कैसे बुझत पियास—(वृन्द) निर्धनसे आशा पूरी नहीं हो सकती।

रीस न कर धनवंतकी, निर्धन होकर यार। रीस करते सैकड़ों, देखे होते ख़्वार—किसीकी रीस न करना चाहिये।

रीस भली, हूंस बुरी—बराबरी करना अच्छा द्वेष करना बुरा है।

रुचे जुरे पचे—जो चीज़ अच्छी लगे, मिल जाय और पच जाय वही खानी चाहिये।

रुचे सो पचे—जिस खाद्य पदार्थ पर रुचि होगी वह पच भी जायगा।

रुपया आनी जानी शय है—किसीके पास नहीं टिकता।

रुपया तो शेख नहीं तो जुलाहा—स्पष्ट।

रुपया हाथ पैरका मैल है—जब किसीका रुपया निकल जाता है, तब क०। उदारता पूर्वक खर्च करनेके लिये भी क०।

रुपयेका काम रुपयेसे चलता है—(व्य०) खाली बातोंसे नहीं चलता। जब कोई बात बनाकर तगादा टाला चाहता है, तब क०।

रुपयेकी खीर है—रुपयेसे खीर बनती है।

रुपयेकी ज़ात है—जब रुपयेके ज़ोरसे जातमें हेठा भी कुलीन बन जाता है, तब क०।

रुपयेको ठीकरी कर दिया—किसी काममें रुपयेको तुच्छ समझके बहुत खर्च कर दे, तब क०।

रुपयेको रुपया कमाता है—(व्य०) रुपयेसे रुपया पैदा होता है।

इसपर एक कहानी है:—किसी मनुष्यके पास एक रुपया था। उसने सुना था कि रुपयेको रुपया कमाता है इसलिये वह उसे साथ लेकर बाज़ारमें एक सराफ़की दूकानपर गया। वहां उसने रुपयोंका ढेर रक्खा देखकर चुपकेसे अपना रुपया उसके पास रख दिया, और अलग जा खड़ा हुआ। वह यही सोच रहा था कि देखो मेरा रुपया रुपया कमाता है या नहीं, इतनेमें सराफ़की निगाह उस रुपये पर पड़ी, उसने समझा कि रुपया छिटक कर ढेरीसे अलग जा पड़ा है इसलिये उसे उठाकर ढेरमें मिला दिया। उस मनुष्यने कहा यह रुपया मेरा था, मैंने सुना था कि रुपयेको रुपया कमाता है पर मेरा तो गांठका भी चला गया। सराफ़ बोला तुम्हारा सुनना ठीक था मेरे रुपयोंने यह रुपया कमाया है। तात्पर्य यह है कि धनसे धन मिलता है।

रुपयेवालेकी हमेशा पूछ है—स्पष्ट। पूंछ=दुम, पीछे लगना, पूछ=तलाश करना, उसके पास जाना।

रुपयेवालेको रुपयेकी आशा, मोको रामकी आशा

रुस्तमका साला—रिज़ालेको क०।

अजब नक़्शा है दुनियांका, अजब आलम है आलमका।
कि अब तो जो रज़ीला है वही साला है रुस्तमका।

रूख बिना ना नगरी सोहै, बिन बरगन ना कड़ियां। पूत बिना ना माता सोहे, लख सोनेमें जड़ियां—स्पष्ट।

रूखा खाना धरती सोना, नाम्ह सुहेला फक्कड़ होना—फ़क़ीर होना सहज नहीं है, क्योंकि फ़क़ीरोंको रूखा खाना और ज़मीनमें सोना पड़ता है।

रूखा सो भूखा—रूखा (बिना घीका) अन्न खानेसे भूख जल्दी लगती है।

रूखी मिस्सी खायके, ठंढा पानी पी—सन्तोषके लिये क०।

रूठेको मनाय नहीं, फटेको सिलाय नहीं, तो काम कैसे चले—(ज०) स्पष्ट।

रूठे बाबा दाढ़ी हाथ—बूढ़ा आदमी क्रोध करता है तो अपनी ही दाढ़ी नोचता है।

रूपकी रोय करमकी खाय, विधि करतूत जानि नहिं जाय—जब गुणीका अनादर हो, और निर्गुणीका भाग्यके बलसे आदर हो, तब क०।

पिय धरि यह संग सुन्दरि नारि, करै दुरै दासी सों प्यार।
कहे पखानी क्यों चित लाय, रोवै रूप करम पै खाय॥

पिछले चरणका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि कर्मका है अर्थात दोष खाकर रूप होता है। पै लगाना या निकालना दोष या ऐब दिखानेको क०।

रूसल बहुड़िया अउ गोरल आग, दोनों ठेरें बड़े हैं भाग—(पू०) रूठी स्त्री और बलती आग बड़े भाग्यसे ठहरती हैं।

रेवड़ीके फेरमें पड़ना या आजाना—मुश्किलमें पड़ जानेको क०। रेवड़ी बहुत मुश्किलसे बनती है इसकी चासनीको खूंटीमें लटकाकर खींचते और दुहराते जाते हैं, इसलिये इसमें सैकड़ों फेर पड़ जाते हैं।

रेवड़ीके लिये मसजिद ढाना—अपने सामान्य लाभके लिये दूसरेको बहुत हानि पहुंचाने पर क०।

रोके पूंछ ले हँसके उड़ा दे—उस कपटी मित्रके

जान ले और फिर उसे हँसीमें उड़ा दे।

रोगका घर खांसी, और लड़ाईका घर हाँसी—बहुत हँसी करनेसे लड़ाई हो जाती है।

रोगिया भावे सो वैद्य बतावे—जब रोगी बड़ा आदमी होता है तब डाक्टर उसके मन मुताबिक़ पथ्य बताता है।

रोगीको रोगी मिला कहा 'नीम पी'—जो जिस बातको जानता है वही सलाह वह दूसरेको भी देता है।

रोज़ कूँआ खोदना और रोज़ पानी पीना—निर्धनको क०। जो रोज़ मज़दूरी करके खाता है।

रोज़गार और दुश्मन बार बार नहीं मिलते—(व्य०) इनको पाकर नहीं छोड़ना चाहिये।

रोज़ रोज़की दवा भी ग़िज़ा हो जाती है—(मु०) जो नित्य दवा खाया करते हैं, उनको क०। ग़िज़ा=ख़ुराक।

रोज़ा न रक्खे, नमाज़ न पढ़े, सहरी न खाय, तो काफ़र ही न हो जाय—(मु०) स्पष्ट।

रोज़ीका मारा दर दर रोवे, पूतका मारा बैठके रोवे—"देखो जीवसे जीविका प्यारी"।

रोज़ेको गये नमाज़ गले पड़ी—(मु०) दे० "गये थे रोज़ा छुड़ाने"

रोज़े ख़ोर, ख़ुदाका चोर—(उ०) स्पष्ट।

रोटिया चाकर बलहा घोड़, खाय बहुत चले थोड़—जिस नौकरको तनख्वाह नहीं मिलती केवल खाने हीपर रहता है और जिस घोड़ेको दाना नहीं मिलता केवल घास ही मिलती है, वह काम थोड़ा करता है।

रोटी करो सत्तू करो, भात बरोबर नाहीं। मौसी करो फूफी करो, माय बरोबर नाहीं—(पू०) पूर्व देशके लोग जो भात खाकर ही रहते हैं, उनका कहना है।

रोटी कहे मैं मंज़िल पहुंचाऊं, बाटी कहे मैं फेर ले आऊं। दाल भातका हलका खाना, इसको खाकर कहीं न जाना—भात जल्दी पच जाता है, रोटी देरमें और बाटी उससे अधिक देरमें पचती है, इसलिये क०।

रोटी कारन छोड़कर, कुटुम देश घरबार। लाख कोस जाकर बसें रोटी ढूंढ़न हार—स्पष्ट। पेट पालनेके लिये सभी तरहके कष्ट सहने पड़ते हैं।

रोटी कारन जालमें, फंसे पखेरू आय। रोटी कारन आदमी, लाखों पाप कमाय—ऊ० दे०।

रोटी कारन लशकरी, रनमें शीश कटाय। रोटी कारन रैन दिन, गीत गवैया गाय—ऊ० दे०।

रोटी कारन सीखते; विद्या हैं सब लोग। जिस घरमें रोटी नहीं, उस घर पूरा सोग—ऊ० दे०।

रोटी क़िसमतकी हुक़ा पांव दौड़ीका—रोटी नसीबसे मिलती है पर हुक़ा उद्योगसे मिल जाता है। किसीके यहां जा पहुंचो तो वह हुक़े तमाखूसे ख़ातिर करता है।

रोटीकी ख़ाक झाड़ना—ख़ुशामद करना।

रोटीकी जगह उपला खाना—बेहूदा बात पर क०। जो जानबूझकर भोला बनता है, उसे व्यंगसे क०।

रोटीको टॉटी, पानीको बिल्ला, खसमको दादा—भोंड़ी या भोली स्त्रीको क०। जो जान बूझकर भोला बनता है, उसे भी क०।

रोटीको रहोगे, कि वह भी छोड़ोगे—जब कोई अपने गुज़रका ख़्याल न करके मन मानी चाल चलता है, तब क०।

रोटीको रोवे, कपड़ीको टोवे
रोटीको रोवे, चूल्हे पीछे सोवे } (ज०) बहुत ग़रीबी हालतपर क०।

रोटी खाइये शक्करसे, दुनियां ठगिये मक्करसे—जो लोग फ़रेब और ख़ुशामदसे दुनियांको ठगते हैं वह मौज़में रहते हैं पर सीधे और सच्चे दुःख पाते हैं।

रोटी गई मुंहमें, ज़ात गई गुहमें—(मु० ज०) नीचा सम्बन्ध करनेपर क०। देस फिरङ्गियोंके बारेमें प्रायः क०।

रोटी न कपड़ा, सेंतका भतरा—(पू० ज०) खाना दे न कपड़ा दे, केवल नामका भतार है।

रोटीपरका घी गिर गया मुझे रूखी ही भाती है दे० "यह अंगूर ही खट्टे हैं।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लंबा टीका मधुरी चाल, यह आई किसका घर घाल—(ज०) बदचलन औरतको क०।
लंबा टीका मधुरी बानी, दग़ाबाज़की यही निशानी—पाखण्डीको क०।
लम्बे घूंघटवालीसे डरिये—स्पष्ट।
लकड़ीके बल बकरी नाचे—मूर्ख भय दिखानेसे काम करता है। बकरीकी जगह बंदरी भी क०।
लकीर पर फ़क़ीर—पुरानी चालपर चलनेवालोंको क०।
लग गई जूती उड़ गई खेह, फूल पानसी हो गई देह—बेशरमको क०।
लगन बुरी होती है—किसी काम या चीज़ या मनुष्यसे मन लग जाय, तो जबतक उसे न करे या उसे न मिले तो चित्तमें बेचैनी रहती है और उसीके करने या मिलनेकी उत्कंठा बनी रहती है।
लगा तो तीर नहीं तुक्का ही सही—कामके लिये उत्साह दिलाने पर क०।
लगा सो भगा—काम शुरू किया और समाप्त हुआ। ज़िन्दगीकी अनस्थिरता पर क०।
लगी बुरी होती है—चित्तमें [illegible] ऊंच नीच नहीं सूझता।
लगीमें और लगती है—चोटपर ही चोट लगती है। दे० "काने चोट"।
लगेको बिडारियेना, बिन लगेको हिलाइये ना—जाने हुएको त्यागना और बिना जानेको मुँह न लगाना चाहिये।
लगे ख़ुशामद सब कहं प्यारी—स्पष्ट।
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है,
सच तो यह है कि ख़ुशामदसे ख़ुदा राज़ी है। (नज़ीर)
लगे तोतें भीतों बोलने—बात प्रकाशित हो गई।
लगे दम, मिटे ग़म—गंजेड़ियोंका कहना है।
लगे दाम, बने काम—रुपयेसे काम बनता है।
लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा—भंगेड़ियोंका क०।
लघुता तें प्रभुता मिले, प्रभुता तें प्रभु दूर। चींटी शकर खात है, कुंजरके मुख धूर—स्पष्ट।
लच्छमी चंचल है—लक्ष्मी किसीके पास स्थिर होकर नहीं रहती, आज एकके पास है तो कल दूसरेके पास चली जाती है। जब किसीका धन निकल जाता है, तब क०।
अपना यह न रहीम थिर, सोंच कहत सब लोय।
पुरुष पुरातनकी बधू, क्यों न चंचला होय।
लच्छमीसे भेंट ना, दरिद्रसे बैर—(भो०) जब कोई लाभका काम तो न करे और वृथा किसीसे बिगाड़ कर ले, तब क०।
लजाधुर बहोरिया सरायमें डेरा—(भो०) स्पष्ट लजाधुर=शरमाऊ। अनुचित काम पर क०।
लजाना बोलू मुंह बिदोरे—(पू०) शरमाई बकरी दाँत दिखाती है। निर्लज्जताकी हंसी पर क०।
लजायल लड़िका ढोंढ़ा टोहवे—(भो०) शरमाया हुआ लड़का अपने पेटकी ओर देखता है।
लजालू मरे ढिठाऊ जीये, गंगाजल चमारो पीये-समयकी खूबी पर क०।
लटा हाथी बिटौरे बराबर—बड़ा आदमी बिगड़ने पर भी छोटोंसे बड़ा ही रहता है।
लटा हाथी भी सौ मनका—ऊ० दे०।
लटेकी जोय, सारे गांवकी सरहज—(पू०) ग़रीबको सब कोई छेड़ते हैं। सालेकी स्त्रीके साथ हँसी करनेकी रिवाज़ है।
लटे पटे दिन काटिये-तंगीसे गुज़रान होनेपर क०।
लठ, मुँह फट—जो बिना विचारे बोल उठते हैं, उनको क०।
लड़कनके भगवा ना बिलाईके गाँती—(पू० ज०) घरवालोंको कुछ न दे और ग़ैरोंकी मदद करे, तब क०
लड़का जने बीबी और पट्टी बाँधे मियां—दे० "खायँ भीम"
लड़का परकावेके न चाही, हरकावेके चाही—लड़कोंको शह न दे, दबाके रक्खे।
लड़िका रोवे खसम चिल्लाय, लड़कौरी मेहरिया फ़ज़ीहत होय—(पू० ज०) गृहस्थीके झगड़ों पर क०।
लड़का रोवे बालोंको, नाई रोवे मुड़ाईको—सब अपना स्वार्थ देखते हैं।
लड़केकी यारी, गधेकी सवारी—दे० "नादानकी दोस्ती"।

लड़केके भागसे लड़कोरी जीये—लड़केके कारण उसकी मांकी ख़ातिरदारी होती है।

लड़केको जब भेड़िया ले गया तब टट्टी बाँधी—काम बिगड़ जाने पर सचेत हो, तब क०।

लड़केको मुँह लगाओ, तो दाढ़ी खसोटे। कुत्तेको मुँह लगाओ, तो मुँह चाटे—ओछेको मुँह न लगाना चाहिये।

लड़ते तो नहीं मुये मारते हैं—(उ०) चुगलखोरको क०।

लड़तोंके पीछे और भागतोंके आगे—डरपोकको क०

लड़ना दे पर बिछुड़ना न दे—साथ रहकर लड़ते रहो मगर अलग न हो।

लड़ना सिर फोड़के, खाना जांघ जोड़के—लड़ो मगर जुदे मत हो।

लड़ाई और आगका बढ़ाना क्या?—बहुत जल्दी बढ़ सकती है।

लड़ाईका घर हांसी, और रोगका घर खांसी—स्पष्ट।

(१) करो न कहुं उपहास तिय, गयो पखाभो मूल।
खांसी घर है रोगको, हांसी कलह मूल॥
(लो० र० को०)

(२) काहू कों हँसिये नहीं, हंसी कलह को मूल।
हांसी ही तें है भयो, कुल पांडव निरमूल॥ (वृन्द)

लड़ाईका मुँह काला—स्पष्ट। लड़ाई बुरी है।

लड़ाईमें कुछ लड्डू नहीं बँटते—लड़ाईमें कुछ लाभ नहीं।

लड़ाकेके चार कान—लड़नेके लिये दूसरोंकी बुराई बहुत जल्दी सुनता है।

लड़में लड़का बूढ़ोंमें बूढ़ा—मिलनसार या सीधे आदमीको क०। हरदिल अज़ीज़।

लड़ें न भिड़ें, तरकस पहिने फिरें—ढोंगबाज़को क०।

लड़े सांड़ बारीका भुरकस—सांड़ोंकी लड़ाईमें खेतकी ख़राबी।

लड़े सिपाही नाम हो सरदारका—दे० "काटे धार नाम तरवारका"

लड्डू न तोड़ो चूरा झाड़ खाओ—(व्य०) मूल न बिगाड़ो ब्याज खा लो। पूंजी न बिगाड़ो मुनाफ़ा खा लो।

लड्डू फुटेगा तो चूर झरेगा—लो० दे०।

लड्डू लड़े चूरा झड़े—दो बड़े आदमियोंकी लड़ाईमें दूसरोंका फायदा हो, तब क०।

लश्करकी अगाड़ी, और आंधीकी पिछाड़ी—भयानक होती है।

लश्करमें ऊंट बदनाम—बदनाम आदमी पर क०।

लसन बसाये बसनको कैसे फूल बसाय—(वृन्द) बिगड़ा हुआ आदमी नहीं सुधरता।

लहनेकी जड़ तगादा—(व्य०) तगादा करने हीसे लहना वसूल होता है।

लहू लगा शहीदोंमें मिले—झूठी प्रसंशा चाहनेवाले पर क०।

लाखका घर ख़ाक़में मिला दिया—घर बरबाद कर दिया।

लाख जाय पर साख न जाय—धन भले ही चला जाय पर इज़्ज़त न जाय।

लाख तदबीर एक तरफ़, और एक तक़दीर एक तरफ़—भाग्यके आगे उद्योगकी नहीं चलती।

लाखनमें कोई एक सपूत—स्पष्ट।

लाखोंके वारे न्यारे कर दिये—लाखों कमाये खर्चे।

लाग लगी तब लाज कहां—किसीसे मन लगनेसे लज्जा नहीं रहती।

लागे किये नेह फेर लाजें लगनो कहा। (ग्वाल)

लाचारमें विचार क्या—ज़रूरतके वक्त, न्यायका विचार नहीं रहता।

लाचारी पर्वतसे भारी—अभाव वा ग़रीबी असह्य होती है।

लाजकी आंख जहाज़से भारी—ऊ० दे०।

लाज भली है बालके, या मत जीसे खोय। लाज बिना ऐसा मनुष, खसम बिना ज्यूं जोय—स्पष्ट।

लाठीके हाथ मालगुज़ारी बेबाक—लाठी हाथमें लेनेसे मालगुज़ारी जल्दी वसूल हो जाती है।

लाठी मारे पानी जुदा नहीं होता—झगड़ा होनेसे

रिश्तेदारी नहीं छूटती।

लाठी लिये पांवपर खाक—लाठी लेकर चलनेसे पैरपर धूल पड़ती ही है (लाठीके टेकनेसे उड़कर।)

लाठी हाथकी, भाई साथका—लाठी और भाई पासके काम आते हैं।

लाड़में आवे कूकड़ी, चल बल जावे कौवा—जब कौवा मुरग़ीके प्रेममें फंसता हैं तो अपनेको बलिदान कर देता है। आशय स्पष्ट है।

लाड़ला लड़का जुआरी, और लाड़ली लड़की छिनाल—स्पष्ट।

लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेनु—दे० "दुधार गौकी लात भी भली।"

लात भात खाइला, ठाकुरकी नाईं रहोला—(ग्रा०) दे० "मार गाली सहते हैं"।

लात मारी झोंपड़ी, सलाम मियां चूल्हे—दे० "उठाऊ चूल्हा।"

लात सही मूंकी सही, उल्टे सहे कुदार। इन होंठनके कारने, सिरपर धरे अंगार—जब कोई अपनी प्यारी चीज़के मिलनेके लिये बहुत कष्ट उठावे और वही उसे मिल जाय, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है:—एक नौजवान खूबसूरत, चुस्त और चालाक स्त्री अपनी बहनेलीके यहां गई और इधर उधरकी बातें कर रही थी कि उसे प्यास लगी। इसकी उस मुंहबोली बहनने कोरे कुल्हड़ेमें भरकर उसे पानी पीनेको दिया। जब उसने मुंह लगाकर पानी पिया तो कुल्हड़ा होंठोंसे चिपका रहा। वह खिलखिलाकर हंसी और इस दोहेको कहा—

रे माटीके कुल्हड़ा, तोहि डारौं पटकाय।
होठ रखे हैं पीव कों, तू क्यों चूसे जाय।

यह दोहा सुन उसकी बहनेलीने कुल्हड़ेकी तरफसे जवाबमें उपरोक्त मसलवाला दोहा कहा।

लातोंके देव बातोंसे नहीं मानते—नीच समझानेसे नहीं मानता, अर्थात् बिना मारे सीधा नहीं होता।

लाद दे, लदा दे, लादनवाला साथ दे—(पं०) अनुचित मांगपर क०। जब किसीको कोई चीज़ दी जाय और वह कहे कि हमारे घर पहुंचा दो, या किसीको लाभका काम बताया जाय और वह कहे कि साथ चलकर करवा दो, तब क०।

लादे पादे और औंघाय, सांच न कहे जीव चह जाय—माल लादनेवाला, पादनेवाला और ऊंघनेवाला कभी सच नहीं कहता। किसी ऊंघतेसे पूछो कि क्या सोते हो? झट कहेगा, "नहीं तो।" ऐसे ही बाक़ी दोनोंका भी हाल जानो।

लाभे लोहा ढोइये बिन लाभ न ढोइये रुई—लाभके काममें मेहनत करी जाती है पर बेगार नहीं सहा जाता।

लायगा दारा तो खायगी दारी, न लायगा दारा तो पड़ेगी कुवारी—(ज०) पति कमावेगा तो स्त्री खायगी नहीं तो लड़ाई होगी। गृहस्थीके जंजालपर क०।

लारा लीरीका यार, कभी न उतरे पार—दीर्घसोचीका काम कभी पूरा नहीं उतरता।

लाल किताब उठ बोली यों, तेली बैल लड़ाया क्यों? खल खिलाकर किया मुसंड, बैलका बैल और दण्डका दण्ड—

इसका निकास इस कहानीसे है:—किसी तेलीके बैलने एक क़ाज़ीके बैलको मार डाला। इसपर क़ाज़ीने तेलीसे कहा कि तुमने अपने बैलको क्यों खिला पिलाकर मुसंड किया, जिससे मेरा बैल मारा गया। इस अपराधमें तुम्हें बैल और जुर्माना दोनों देना होगा। अन्तमें जब क़ाज़ीको मालूम पड़ा, कि मेरे ही बैलने तेलीके बैलको मार डाला है, तब उन्होंने अपना दोष हलका करनेके लिये कहा कि फिर जानवर ही तो था, अर्थात् पशुको भले बुरेका विचार नहीं होता। इसपर तेलीने अपने मन ही मन कहा, "वाहजी क़ाज़ी साहब, एक ही अपराधमें अपने लिये खास एक क़ाम न और मेरे लिये कुछ दूसरा ही।" (भा०) केवल दूसरेका दोष ढूंढनेमें मनुष्यकी आंख तीव्र होती है।

लाल किताब=क़ानूनकी किताब या क़ाज़ी।

लाल खांकी चादर बड़ी होगी तो अपना बदन ढकेगा, हमको क्या—जब कोई आदमी दूसरेके धनकी तारीफ़ करे, तब क०।

धनार बाले जी काबुलसे तो पहते सबके दिरंगमें।
अमीर बाये तो हमको क्या मज़ा है लोटें मिट्टीमें॥
(अकबर)

लाल गुदड़ीमें नहीं छिपता—अच्छे बुरी स्थितिमें भी नहीं छिपते।

लालच गुण घर विनाश—बहुत लालच करनेसे घर बरबाद हो जाता है।

लालच परेशान है—लालच आदमीको लज्जित बनाता है।

लालच बुरी बला—लालच करनेसे जो मिलता हो वह भी नहीं मिलता। लालच अन्याय कराता है।

(१) घी शैककी फिक्रमें सो रोटी भी गई।
चाही थी बड़ी सो छोटी भी गई॥
वाइजकी नसीहत क्यों न माने आखिर।
पतलूनकी ताकमें लंगोटी भी गई॥ (अकबर)

(२) लालच मतकर बावले, लालच बुरी बलाय।
तुरत पखेरू जालमें, लालचसे फँस जाय।

लालचीको जहान तंग—स्पष्ट।

लाल प्यारा तो उसका ख्याल भी प्यारा—दे० "कान प्यारा........"

लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझा कोय। कड़ी बड़ंगा डारके, ऊपरको ही लो—(पं०) मूर्खको या खराब सलाह दी जाने पर क०।

किसी गांवमें एक छोटा लड़का अपने दोनों हाथ खंभेके दोनों तरफ फंसाये खड़ा था। इसी समय उसके बापने उसकी दोनों हथेलीमें थोड़ा चना भर दिया, अब सब कोई इस असमंजसमें पड़ गये कि किस तरह वह लड़का बिना हाथसे चना गिराये बाहर हाथ निकालेगा। उसी समय लाल बुझक्कड़ भी वहां आ पहुंचा और उसने अपनी सम्मति दी कि खंभे परसे कड़ी बरगा हटाकर लड़केको बाहर निकाल लेनेसे लड़केकी अंजुलीका चना ज्योंका त्यों भरा रह जायगा, अन्यथा कोई उपाय नहीं सूझता। लाल बुझक्कड़ अकबर बादशाहके मंत्री बीरबल-का पुत्र था। असली नाम इसका लाल था। वह अपने पितासे भी अधिक ठठोलीपसंद था। यह छोटे इसके मनमें वैराग्य समाया हुआ था, संसारको मिथ्या जानता था, और मानवीय बुद्धिको अल्प समझता था। सन् १५८३ ई० में काबुलकी लड़ाईमें अपने पिताके मर जाने पर यह अपना सर्वस्व लुटाकर सन्यासी हो गया। लोग इसको बड़ा चतुर समझते थे, पर यह लुकमान हकीम की तरह अपनी बुद्धिको तुच्छ जानता था। इसकी बनाई सैकड़ों पहेलियां देश भरमें प्रसिद्ध हैं, जिनमेंसे प्रत्येक इस बातको प्रकाशक हैं कि गंभीर गूढ़ बातोंमें बड़े बड़े चतुर विद्वानोंकी बुद्धि वैसी ही अल्प होती है, जैसी कि साधारण बातोंमें और गँवारोंकी।

लाल बुझक्कड़ बूझियां, और न बूझे कोय। पैरों चक्की बांधके, हिरना कूदा होय—(पं०) ऊ० दे०।

किसी गांव होकर एक हाथी गया था, इस कारण उसके पैरका चिन्ह; जमीनपर उपट गया। गांववाले उस लम्बे चौड़े गोलाकार चिन्हको देख भयभीत हो गये। अपनी शंकाको दूर करनेके लिये उन्होंने लाल बुझक्कड़को बुलाया। लाल बुझक्कड़ने उस निशानको देखकर बताया कि कोई हिरन अपने पैरमें चक्की बांधकर कूदा है।

लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझे ज्ञानी। पुरानी होकर गिर पड़ी अल्लाहकी सुरमेदानी—ऊ० दे०।

एक दिन लालबुझक्कड़ कई गँवारोंको साथ लिये कहीं जा रहे थे। गँवारोंको एक कोल्हू किसी खेतमें पड़ा दिखाई दिया तो सबके सब कहने लगे कि ऐ महाराज! यह क्या है? तब तो लालबुझक्कड़ उनको खास अकली पर आंसू भर लाये और उक्त मसल कही।

लालाका घोड़ा, खाय बहुत, चले थोड़ा—क्योंकि वे उसके पालनेका तरीका नहीं जानते।

"लाला बरात दिखा ला"; "चल ससुरे किसी-की फ़ारखती लिखी जाती होगी"—किसी लड़के-ने अपने बापसे प्रथमार्ध शब्द कहे जिसके उत्तरमें उसके पिताने शेषार्ध शब्द कहे।

इसका निकास इस कहानीसे है:—किसी क़र्ज़दारने अपने दरवाज़े पर बहुतसे बाजे वालोंको इकट्ठा किया। उसने अपने महाजनको बुलाया कि अपना हिसाब चुका ले जाओ। बनियां अपना बही खाता लेकर घरके भीतर हिसाब चुकानेके लिये आया, तो उसने बाजेवालों-को हुक्म दिया कि खूब ज़ोरसे बाजे बजाओ। उधर तो बाजा बजने लगा और इधर क़र्ज़दारने बनियेको पीटना आरंभ किया, और उसे इतना पीटा कि उसने उससे फ़ारखती लिखा ली; उसका चिल्लाना बाजेकी आवाज़से कोई न सुन सका।

लालाजी आज मर गये बड़ो बहूको भेज दो—मुड़िया अक्षरोंपर व्यंगसे क०, क्योंकि इसमें मात्रा नहीं होती।

किसी साहूकारने चिट्ठीमें यह लिखकर भेजा था, "लाला-जी अजमेर गये बड़ी बहीको भेज दो।" पर वहां उपरोक्त

बात पढ़ी गई जिससे बड़ी बहू गोती पीटती चली आई।

लिखना आवे नहीं मिटावे दोनों हाथ—नालायक़ पर क०।

लिखे न पढ़े कानमें कलम—झूठा ढकोसला दिखानेवालेको क०।

लिखे मूसा पढ़े ख़ुदा—(मु०) (१) ख़ुदा ही मूसाके लिखेको पढ़ सकता है। (२) ऐसा ख़राब लिखता है जो उसके सिवा कोई दूसरा नहीं पढ़ सकता। मूसा और ख़ुदामें श्लेष है; मूसा=पैगम्बर और बाल ज ैसा महीन। ख़ुदा=ईश्वर और ख़ुद आ=आप आकर। ख़राब लिखने पर कहते हैं। एक सिपाहीने किसी कायस्थके पास आकर कहा कि मुझे एक चिट्ठी लिख दे। कायस्थने कहा मेरे पांवमें दर्द है। सिपाहीने कहा, चिट्ठी तो हाथसे लिखी जाती है कुछ पांवसे नहीं, तू झूठा बहाना क्यों करता है। कायस्थने कहा तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु जब मैं किसीके लिये चिट्ठी लिखता हूं तो उसके पढ़नेके वास्ते भी बुलाया जाता हूं क्योंकि मेरा लिखा कोई दूसरा पढ़ नहीं सकता।

उसे तो आप समझें या कहीं शायद ख़ुदा समझे।
न लालाजी न पंडितजी न कोई तीसरा समझे।

लिखे न आवे कलमिया टेढ़—(पू०) दे० "चले न आवे।"

लिखे न पढ़े, दूध मारे कढ़े—जो लड़का लिखता पढ़ता नहीं, केवल अच्छी अच्छी चीज़ें खानेकी ताकमें रहता है, उसपर क०।

लिखे ना पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल—उ० दे० नामानुसार गुण न हो, तब क०।

लिखे ईसा पढ़े मूसा—दे० "लिखे मूसा"

लिट्टो गंडेरीका साथ क्या?—बेमेल बात पर क०।

लीक लीक गाड़ी चले, लीकहिं चले कपूत।
लीक छोड़ि तीनहि चलें, शायर, सूर, सपूत—उन्नतिशील मनुष्य अपनी भलाईके लिये नया मार्ग ढूंढ़ता है।

लीजे ससा अखेट पर, नाहरके सामान—(१) छोटे कामके लिये जब बड़ा आयोजन किया जाय, तब क०। (२) थोड़ी आफतके लिये भविष्यतमें भारी खतरा आ जानेके डरसे बड़ा आयोजन करना चाहिये।

लीप बहू दिवाली आई, पोत बहू दिवाली आई, छेंद छिदालो माथे मारी, क्यों सासू यही दिवाली थी—जब सास बहूके साथ बुरा बर्ताव करे तो उसे ताना मार कर क०। सासने बहूके ऊपर कूड़ा करकट फेंककर कहा कि दिवाली आई। इसपर बहूने कहा कि दिवालीके उपलक्षमें क्या सिरपर कूड़ा करकट ही फेंका जाता है।

लीपू ओटा, मरे मोटा—जब कोई धनी आदमीके मरनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करे, कि जिससे उसे लाभ हो तब क०। महापात्रोंके घरमें ओटा नामको एक प्रतिमा रहती है, और वह उसीकी पूजा हमेशा किया करते हैं ताकि किसी धनीको मृत्यु हो जाय और उसे प्रचुर धन हाथ लगे।

लुगाई रहे तो आपसे, नहीं तो जाय लगे बापसे—दे० "औरत रहे तो"।

लुटाया बिगाना माल, बन्दीका दिल दरियाव—(मु० ज०) जो नौकर अपने मालिकका धन बरबाद होता देखकर उस पर कुछ भी ध्यान न दे, उसे क०। कृतघ्न या नमकहराम चाकर पर क०।

लुटिया डूबी रे हरदास, घोड़ा दाना खाय न घास—जब काम बिगड़नेके लक्षण दिखाई पड़ें, तब क०।

लुहारकी कूंची कभी आगमें कभी पानीमें—(व्य०) दे० "दर्ज़ीकी सूई"

सुधो त्रिलोक न भूलो भट,
यह कभो न होय लुहारको कूंचो। (च० प०)

लूटका मूसल भी बहुत—मुफ़्तमें जो मिला सो अच्छा।

लूट कोयलोंकी, मार बर्छीकी—बहुत परिश्रम करनेपर थोड़ा लाभ हो, तब क०।

लूटमें चरखा नफ़ा—दे० "लूटका मूसल।"

लूट लाये कूट खाया—कारगर चोर या ठगको क०।

लूर न ऊर, चला मियां जगदीशपूर—(पू० प०) अक्ल न शहूर और चले जगदीशपूर।

लूहर मारा कूकरा, बिजली देख डराय—दे० "दूधका जला"। लूहर=लुआठी।

लेके दिया कमाके खाया, ऐसी तैसी जगमें आया—नादिहन्दको क०।

ले गये गठरी चोर चुराई, सकल बेगारन छुट्टी पाई—दे० "चोरने......"

लेता भूले न देता—(व्य०) पूरे हिसाब पर क० । जैसे पचीस पचास सौ इत्यादि जिसमें आना पाई न रहे ।

लेता मरे कि देता—जो अपना क़र्ज़ा न चुकाया चाहे, उसे क० ।

लेते कुछ और, देते कुछ और—(व्य०) जब कोई लेते वक्त तो खुशामद करके ले ले और देते वक्त अलसेट करे, तब क० । जो अपना लेना तो सवाया वसूल करे और दूसरेका देना देते समय रुपयेके बारह आने दिया चाहे, उसे भी क० ।

किसी बनियेके यहां एक लड़का नौकर था, जिसके उसने दो नाम रख लिये थे—एक तो लिब्बा और दूसरा दिब्बा । जब कोई उसके यहां माल बेचने आता तो वह लड़केको पुकारकर कहता, "अबे लिब्बा जरा तराजू बाँट तो ले आ ।" तो लड़का सवा सेरका सेर ले आता । और जब कोई माल खरीदने आता तो वह लड़केको यह कहकर बुलाता, "अबे दिब्बा तराजू बाँट तो ले आ ।" तब लड़का तीन पावका सेर उठा लाता । कोई चालाक उसकी इस बातको ताड़ गया और उसने बनियेसे कहा, वाह साहजी, आपकी तो वही मसल है कि "लेते वक्त कुछ और, और देते वक्त कुछ और ।"

ले दे आटा कठौतीमें—मेरी कठौतीमें आटा दे, स्वार्थीको क० । दिखानेको लेता देता है पर वास्तवमें अपने पास रखता है ।

लेना उसका देना नहीं—जो लेके न दे, उसे क० ।

लेना एक न देना दो—(व्य०) (१) कुछ लेना देना नहीं (हिसाब साफ़ ।) (२) न किसीसे एक लो न दो देना पड़े । किसीसे कुछ प्रयोजन न रखना हो, तब क० ।

इसपर एक कहानी है । दैवयोगसे एक हंस उड़ता हुआ समुद्रके किनारे आ गया । एक मेंढकसे उसकी मित्रता हो गई । एक दिन किसी बहेलियेने हंसको जालमें फांसा । मेंढकने बहेलियेसे कहा, तूने मेरे मित्रको क्यों पकड़ा । उसने उत्तर दिया कि मैं इसे राजाको भेंट करूंगा जिससे मुझे इनाम मिलेगा । मेंढकने कहा, तू इसे छोड़ दे, मैं तुझे ऐसा धन दूंगा कि तेरे राजाके पास भी न होगा । यह कहकर उसने समुद्रमें गोता मारा और एक बहुमूल्य लाल (रत्न) निकालकर उसे दिया । बहेलियेने हंसको छोड़ दिया और रत्न लेकर अपने घर गया, और उसे अपनी स्त्रीको दिया । उसने कहा कि इसका जोड़ा लाओ तो मैं अपने कानोंका लटकन बनवा लूं । बहेलियेने जाकर फिर हंसको फांसा और मेंढकसे कहा, कि उसीको जोड़ीका दूसरा लाल दो तो छोड़ूं । मेंढक बोला यह तो रत्नाकर है इसमें उससे अच्छे और बुरे अनगिनत रत्न हैं, तू वह रत्न ले आ तो मैं उसकी जोड़ी मिलाकर निकाल लाऊं । उसने मेंढकको वह रत्न ला दिया । मेंढकने हंससे कहा इसकी नीयत खराब है, यह तुझे फिर पकड़ेगा इसलिये तू यहांसे चला जा, और उस बहेलियेसे कहा कि तुझे तो न एक (रत्न) लेना है न मुझे दो देने हैं । यह कहकर वह लाल मुंहमें लेकर समुद्रमें चला गया । शिक्षा—यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिसेवते, ध्रुवाणितस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्ट एवच । आधी छोड़ सारीको धावे, आधी रहे न सारी पावे ।

बहता फिरै बदेको मारै घरके करते टिक टिक तोय ।
मार लकड़िये पुट्ठे फोरे नकुना छेद नाक दई पोय ॥
करी अगोड़े दई भांवरी खानेको खरपोना तोय ।
कहते नित्य न गाफिल हो यहां लेनो एक न देना दोय ॥
जो तू आया जगतमें बंदे गंदा काम करै मत कोय ।
कबहुं न परै दुःख बहुतेरा कबहुं न रहै सुःखमें सोय ॥
भाई बंधु सब कुटुम्ब कबीला मरघट लौं सब चलते रोय ।
कहते नित्य न गाफिल हो यहां लेना एक न देना दोय ॥

लेना देना कुछ नहीं, लड़नेको मज़बूत—कलयुगके दानियोंको क० ।

लेना देना साढ़े बाईस—(व्य०) जो मोल तोल करता है पर खरीदता नहीं, उसे क० । साढ़े बाईस जैसी अधूरी रकम है वैसा ही दर दाम करके माल न लेना अधूरा सौदा करना है ।

लेना न देना कारे न मसले—बेकार आदमीको क० ।

लेना न देना "गाड़ी भर चना"—खाली बातोंसे चना नहीं खरीदा जाता ।

लेना न देना, झूठों मुंह छुटौवल—बेबातके लिये झगड़ा करने पर क० ।

लेना न देना बातोंका जमा खर्च—(व्य०) स्पष्ट ।

लेनेके देने पड़ गये—सोचा था कुछ और, हो गया कुछ और, लाभ समझकर कुछ काम किया जाय और उसमें हानि हो, तब क०।

सेठजीको फ़िक्र थी एक . . के दस दस कीजिये।
मौत आ पहुँची कि . . . वापिस कीजिये॥
(अकबर)

लोकका डर न परलोकका डर—पापीको क०। जो न तो बदनामीसे डरे न ईश्वरसे डरे।

हाय चन लोगन सों कौन सों उपाय,
जिन्हें लोककी न डर परलोककी न डर है। (ठाकुर)

लोन केरि पुतला चल्यो, थाह सिन्धुकी लेन—नोनका पुतला पानीमें जाते ही गल जायगा।

लेनेको सब कुछ देनेको कुछ नहीं—नादिहन्द या सूमको क०।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला,
मन लेहु पै देहु छटांक नहीं। (धन आनन्द)

ले लिया पल्ला और बिनने लागी तिल्ला—(कु०) जो बिना हुक्म लिये काम करने लगता है, उसे क०।

ले लुगड़ो, चल गुदड़ी—(अ०) जो तुम्हारा काम है, सो करो।

लोभ पापको मूल है, लोभ मिटावत मान।

लोभ कभी नहिं कीजिये, यामें नरक निदान—मनुष्यको लोभसे निवृत्त रखनेके लिये क०।

पायो दुख सूले संकेत, फिरि धाई निंदत पति देत।
कबी पढ़ायो हियमें सूल, लोभ सकल दुखनिको मूल।
(विनयपत्रिका)

लोभीके गांवमें ठगड़िया भूखा नहीं मरता—(व्यं०) लोभी मनुष्य ही जुआचोरोंद्वारा बहुत ठगाये जाते हैं, जब कोई लोभवश किसी जुआचोर द्वारा ठगा जाता है, तब क०। उन मनुष्योंको भी क०। जिनका पेशा ही लोगोंको ठगके खानेका है।

छिये कपट मुख मधुरता, ठगी स्याम बहुधाम।
गथ न भूखा ना रहै, बसि लोभीके धाम।
(सठ नायक । लो० र० को०)

लोभी गुरु लालची चेला, दोऊ नरकमें ठेलमठेला—क्या गुरु क्या चेला जो लोभ करेगा सो नर्कमें जायगा।

लोमड़ीके शिकारको जाय तो शेरका सामान कर ले—दे० "लीजे ससा प्लेट पर"।

लोहा कहे अपनी बड़ाई, हम भी हैं महादेवकी भाई—जब कोई नीच मनुष्य किसी प्रतिष्ठित आदमीसे अपना घनिष्ट सम्बन्ध बतलावे, तब क०। लोहेसे तात्पर्य्य त्रिशूलका है जो महादेवजीका हथियार होनेके कारण देवताकी तरह पूजा जाता है।

लोहा जाने लुहार जाने धौंकनेवालेकी बला जाने—अपने मतलब रखनेवालेको क०।

लोहेकी मंडीमें, मार ही मार—लोहेकी मंडीमें केवल हथौड़े और लोहेकी आवाज़ आती है, इसलिये क०।

लोहेके चने चबाना—बहुत मुश्किल काम करने पर क०।

लौंडोंकी ज़ात क्या? रंडोंका साथ क्या?

मेंढकी लात क्या? औरतकी बात क्या—इनका कुछ मोल नहीं।

लौंडेका यार, सदा ख्वार, टाटका बिछौना जूतियोंका हार—स्पष्ट।

लौंडी बनकर कमाना, और बीबी बनकर खाना—मेहनत करके कमाओ और इज़्ज़तसे खाओ।

व

वकीलोंका हाथ पराई जेबमें—दूसरोंके धनसे ही इनका निर्वाह होता है।

वक़् उड़ गये बुलंदी रह गई—समय निकल जाता है, पर कीर्ति रह जाती है।

वक़्का रोना बे वक़्के हँसनेसे बेहतर है—स्पष्ट।

वक़्की ख़ूबी है—समयका प्रभाव है। जब किसीके साथ नेकी की जाय और वह बुरा माने, तब क०।

वक़्को ग़नीमत जानिये—समयका सदुपयोग कर लेना चाहिये।

वक़् दे यारी तो कर घोड़े असवारी, वक़् ना दे यारी तो कर खा चरवेदारी—यदि सौभाग्य घोड़ेकी सवारी दे तो उसे करना चाहिये और यदि ऐसा समय आ जावे कि घोड़ेका साईस बनना पड़े

तो उस समय वही करना चाहिये।

वक्त निकल जाता है, बात रह जाती है—जब कोई मनुष्य किसीसे न्याय्य सहायताकी आशा रखता हो और वह उसे न मिले, तब क०।

काम इनसानको इनसानसे पड़ता है ज़रूर।
बात रह जाती है पर वक्त गुज़र जाता है॥

वक्त पड़ेपर जानिये, को वैरी को मीत—विपत्ति पड़नेपर शत्रु मित्र पहिचाने जाते हैं।

वक्त पड़े बाँका तो गधेको कहे काका—विपदके समय नीचकी भी ख़ुशामद करनी पड़ती है।

वक्त पर कुछ बन नहीं आता—विपत्तिके समय अक्ल काम नहीं करती।

वक्त पर कोई काम नहीं आता—ज़रूरत पड़नेपर किसीसे सहायता नहीं मिलती।

पुतलियाँ तक भी तो फिर जाती हैं देखो दम निज़ाँ।
वक्त पड़ता है तो सब आँख चुरा जाते हैं॥ (अमीर)

वक्त पर गधेको बाप बनाते हैं—दे० वक्त पड़े बाँका।"

वक्त पर गाँठका पैसा ही काम आता है—स्पष्ट।

वक्त पर जो हो जाय सो ठीक है—स्पष्ट। आलसियों या संतोषियोंका कहना है।

वक्त पर भाग जाना मर्दानगी नहीं है—स्पष्ट। संकटके समय जब कोई काम नहीं आता, तब क०।

वक्त पर सब कुछ करना पड़ता है—नीचसे नीच काम भी समय पड़नेपर करना पड़ता है।

वक्त पीरी शबाबकी बातें, ऐसी हैं जैसी ख़्वाबकी बातें—बुढ़ापेमें जवानीकी बातें ऐसी मालूम पड़ती हैं मानों स्वप्नमें देखी हुई बातें हों।

वक्त वक्तकी रागिनी है—प्रत्येक कार्य समयका ही ठीक होता है।

वक्त भूलता है पर बात नहीं भूलती—दे० "वक्त निकल जाता है"।

वक्त सब कुछ कर लेता है—समयके आनेपर कार्य अपने आप हो जाता है।

वक्त सब कुछ करा लेता है—समय पड़नेपर बुरेसे बुरा काम भी करना पड़ता है।

वक्त हीका गुलाम वक्त हीका बादशाह—समय ही सब कुछ मनुष्यको बनाता है।

वक्तके बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया—दे० "शाह पीर"।

वज़नमें तीन मन नाम छटंकी—नामके अनुसार गुण न हो, तब क०।

वज़ीरो शहर यारी चुनां—(फा०) जैसा वज़ीर है वैसा ही बादशाह। जब कोई दूसरेके कहने बमूजिब चले, तब क०।

वरके न मिले भूसा, बरियाती माँगे चूरा—असंगत या अनुचित माँगपर क०।

वर मरे पटवासी न टूटे—वर मर गया पर पटिया पारना न छूटा। नष्ट विधवाको क०।

वर मरो या कन्या मरो मेरी गोदका भाड़ा भरो—मुझे अपने मतलबसे मतलब।

वलायतमें क्या गधे नहीं होते—अच्छे बुरे सब जगह होते हैं। बुद्धिमानोंके समाजमें जब कोई मूर्खताका काम करे, तब क०।

वलिहारी इन कदमोंकी—चल दो, चाल दिखाओ अर्थात् तुम चले जाओ तो हम ख़ुश हों। बलिहारी सदके जाना, कुरबान होना। (१) जब किसीका चला जाना अभिष्ट हो, तब क०। (२) सब्ज़ क़दमको भी व्यंगसे कही जाती है, जिसके आते ही काम चौपट हो जाय।

एक दिन रासधारियोंकी मंडलीको चोरोंके गिरोहने घेर लिया। जब वे उन्हें लूटने लगे तो मंडलीके मालिकने कहा कि तुमने कभी रास भी देखा है, यदि न देखा हो तो देख लो। चोरोंने विचारा कि यह तो हमारे कब्ज़ेमें क़ैद हो गये हैं अब कहाँ जा सकते हैं, मुफ़्तमें रास देखनेमें आवे तो क्यों न देखें। चोरोंके सरदारने उनसे कोई अच्छी लीला दिखानेके लिये कहा जिस लड़केको उन्होंने कन्हैयाजी बनाया उसे सब गहने और अच्छे अच्छे कपड़े पहिना दिये। जब वह नाचते नाचते बहुत दूर निकल गया, तो उसने आवाज़ लगाई 'लालाजी कहो तो चलतो भऊँ'। रासधारियोंके मालिकने चिल्लाकर कहा 'बलिहारी इन कदमोंकी'। कन्हैयाजी नाचते नाचते भी दो ग्यारह हो गये। चोरोंने जब समझा कि इन्होंने चालाकीसे माल सब पार कर दिया तो उनको मार पीटकर छोड़ दिया।

वलीका बेटा शैतान—योग्य पिताके अयोग्य पुत्रपर

क० । जैसे उग्रसेनके कंस ।

वली सबका अल्ला है हम तो रखवाले हैं—(मु०) मालिक सबका ईश्वर है हम केवल रखनेवाले हैं। कृपणका क० ।

वसीले बिना रोजगार नहीं होता—बिना हीले रोज़ी नहीं मिलती।

वह कमली जाती रही जिसमें तिल बंधते थे—समय निकल जानेपर जब कोई सवाल करे, तब क०।

वह कीमियागर कैसा, जो मांगे पैसा—स्पष्ट।

वह कुछ नाहर तो नहीं है जो खा जायगा—जब कोई किसीसे डरता हो तो उसका डर छुड़ानेके लिये क०।

वह कौनसी किसमिस है जिसमें तिनका नहीं—कुछ न कुछ दोष सभीमें होता है। निष्कलंक कोई नहीं है, सिवा ईश्वरके।

वह कौनसी तपरी, जो हमसे छपरी—कौनसा घर है जो हमसे छिपा है। तात्पर्य यह है कि तुम क्या हमें सिखाने आये हो, हम सब जानते हैं।

वह क्या मेरी खालाकी खलयची है ?—(मु० ज०) वह मेरी कौन है ? अर्थात् कोई नहीं।

वह गुड़ नहीं जो चींटे खायँ—यहांसे तुम्हें कुछ न मिलेगा। तुम हमें धोखा न दे सकोगे। प्रायः कृपण मनुष्यके लिये क०।

वह गुड़ नहीं जो मक्खी बैठे—ऊ० दे०।

वह डूबें मझधार जिनपर भारी बोझ—पापियों-पर क०।

वह तो सगे बापको नाहिं—जो किसीका इहसान न माने, उसे क०।

वह दफ्तर गाव खुर्द हो गया—बिगड़ गया अर्थात् वहां अब घास पैदा होती है।

वह दरयाही जल गया—ऊ० दे०। वहांसे अब कुछ आशा नहीं।

वह दिन गये जो खलील खाँ फाखता मारते थे—बढ़तीके दिन निकल जानेपर क०।

वह दिन गये जो भैंस पकौड़े हगती थी—ऊ० दे०। पहले सी आमदनी नहीं, इसलिये उतना खर्च नहीं कर सकते।

वह दिन डूबे, जब घोड़ो चढ़े कुब्बे—(पं०) वह दिन गारत हो जब कुबड़ा घोड़े चढ़े। श्राप देना या कोसना है।

वह नारी भी दिन दिन रोवे, जाका पुरुष निखट्टू होवे—(ज०) स्पष्ट।

वह पानी मुलतान गया—(व्य०) वह बात बहुत दूर चली गई। जब कोई शेख़ीके मारे या ज़िद वश मिलती चीज़को न ले, या अपने अनुकूल फ़ैसलेको मंज़ूर न करे, फिर पछताकर वही चीज़ या वही फ़ैसला चाहे और देनेवाला राज़ी न हो, तब क०। इसका निकास इस कहानीसे हैः—एक दिन गुरु गोरख-नाथ रैदास भक्तसे मिलने गये। प्यास लगनेपर उन्होंने पानी मांगा, जो रैदासजीने उनके खप्परमें भर दिया। तब उन्हें सुध आई कि यह जातिके चमार हैं तब उन्होंने पानी न पीया और उसे खप्परमें ही रहने दिया। वहांसे वह कबीरके पास गये। जब कबीरने पूछा कि खप्परमें क्या है ? तब उन्होंने सारा हाल कह सुनाया। कबीरकी लड़की कमाली जो पास ही बैठी थी और रैदासकी सिद्धता भलीभांति जानती थी, उस पानीको पी गई। पानी पीते ही उसे दिव्य ज्ञान उत्पन्न हो आया। ऐसा अकस्मात् परिवर्तन होते देख गोरखनाथको होश हुआ और उन्होंने तुरंत रैदासजीके पास आ उनसे फिर पानी मांगा। इसी बीचमें कमाली अपने पतिके साथ मुलतान चली गई। रैदासने अपने योगबलसे सब हाल जानकर गोरखनाथसे कहा, "प्यावत थे जब पिया नहीं, तब तुमने बहु अभिमान किया। भूखा योगी फिरे दिवाना, वह पानी मुलतान गया।"

वह पुरखा एक दिन पछतावे, दया धरम जो जीसे तावे—जो मनुष्य दया और धर्म जीसे त्याग देते हैं उन्हें एक दिन पछताना पड़ता है।

वह पुरखा तो फले और फूले, जो दाताको मूल न भूले—जो ईश्वरको सदैव याद रखता है वही फूलता फलता है।

वह पुरखा दिन दिन पछतावे, जो आमदसे दुगना खावे—आयसे व्यय अधिक करनेसे पछताना पड़ता है।

वह पुरखा भी अति दुख पावे, सीख बड़ोंसे जो फिर जावे—जो बड़े बड़ोंका कहना नहीं मानते

वे दुःख पाते हैं।

वह पुरखा भी मूल है खोटा, पावे लाभ बतावे टोटा—स्पष्ट।

वह पुरखा लै निपट भलाई, जिसको होवे खौफ़ इलाही—(मु०) स्पष्ट।

वह बात कोसों गई—वह मौक़ा दूर निकल गया अर्थात् अब न मिलेगा।

वह बिल्ली पूजके चलते हैं—वहमी आदमीको क०। बिल्ली भाग्यणी समझी जाती है।

वह बूंद मुलतान गई—जब कोई मौकेपर चूक जाय तब क०। दे० 'वह पानी'।

वह भलामानस कैसा, जिसके पास न होवे पैसा पैसेमें ही भलमनसाहत है।

वह ऐसे गए जैसे गधेके सिरसे सींग—बेमालूम चले जानेपर क०। गधेके सिरपर सींगका निशान भी नहीं होता। कुछ लोगोंका ऐसा ख्याल है कि पहले गधोंके सींग और घोड़ोंके पर होते थे।

वह भी कन्या जिसके अबलख बाल—जिसके बाल सफ़ेद हो जायँ क्या वह भी कन्या ही है। हिन्दुओंमें इतनी उमर तक स्त्री कुमारी नहीं रह सकती। अबलख=आधा काला आधा सफ़ेद।

वहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं है—वहमी आदमीको कोई भी नहीं समझा सकता।

वह मढ़ी ही जाती रही जहां अतीथ रहते थे—बीते हुए समयपर क०।

वह मर गये हमें मरना है—सत्य कहनेके समय या अपनी बातको सच्ची बतानेके लिये क०।

वह मानस तो नित सुख पावे, सीख बड़ोंकी जो चितलावे—स्पष्ट।

वह राजा मरता भला जिसमें न्याव न हो }
मरी भली वह इस्तरी, लाज न राखे जो }

अन्यायी राजा और निर्लज्ज स्त्रियोंपर क०। दे० "मरे सूम सरदार........"

वह शैतानसे ज़्यादा मशहूर है—उसे सभी कोई जानते हैं।

वह समयही नहीं रहा—विगत अच्छे समयके लिये क०।

वहां उसके घर बसन्त है, यहां मेरे घर बसन्त—जिस समय दो आदमियोंके घर ख़ुशी रहती है, तब क०।

वहां तलक हँसिये जो ना रोइये—हंसीसे जी उकतानेपर क०।

वहां फ़रिश्तोंके भी पर जलते हैं—दे० "वहां अच्छोंके........"

वही जोरूका भाई वही साला-दोनों एकही बात है।

वही ढाकके तीन पात—ढाककी एक टहनीमें तीन ही पत्ते होते हैं। जब किसीकी अवस्था ज्यों की त्यों बनी रहे, पहलेसे कुछ भी न सुधरे, तब क०।

वही तीन बीसी, वही साठ, वही चारपाई, वही खाट—एक ही बात भिन्न भिन्न शब्दोंमें या एक ही चीज़ भिन्न भिन्न नामोंसे कही जाय, तब क०।

कोई ब्यास कोई शंभु सुजान, इनमें बिबिधि भेद अभिमान।
कहैं पखानो सब सुख पाठ, कोई तीन बीसी कोई साठ।
(लो० र० कौ०)

वही दे वही दिलाय—जो कुछ मिलता है वह ईश्वरकी प्रेरणासे ही मिलता है।

गर वह दिलाना चाहे तो दुश्मनसे भी दिलाय।
औ जो न दे तो दोस्त भी फिर अपना मुंह छिपाय॥
बिन हुक्म उसके रोटीका टुकड़ा न हाथ आय।
गर बिन पानी मांगे तो हर्गिज़ न कोई पिलाय॥
ग़ैर अज़ ख़ुदाके किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय।
मक़दूर क्या किसीका "वही दे वही दिलाय"। (नज़ीर)

वही फूल जो महेश चढ़े—किसी चीज़के सदुपयोग करनेपर क०। यानी वही अच्छा है जो सत्पुरुषोंके काम आवे।

जो सुहात सिव राजको, सो कबित रस मूल।
जो परमेश्वर पै चढ़ें, तेई आछे फूल॥ (भूषण)

वही भला है मेरे लेखे, कु नाहक़को जो नर देखे जिसे अच्छे बुरेका ख़्याल रहता है, वही अच्छा है।

वही भूत जो सिर चढ़ बोले—स्पष्ट।

क्या लुत्फ़ जो ग़ैर परदा खोले।
जादू वही जो सिरपर चढ़के बोले॥

वही मन वही चालिस सेर—एक सी बातपर क०। दे० "वही तीन बीसी"

वही मनुष धनवन्त है, वही मनुष बलवंत, जो साईंके नामपर, बैठा होय निचन्त—स्पष्ट । साधुके लिये क० ।

वही मनुष तो दे सके, राजनको सिख ज्ञान । जो ना राखे लोभ धन, और धरे हाथपर जान—स्पष्ट ।

वही मामू वही बापका साला—दोनों एक ही हैं। जब एक ही बात दूसरी तरह कही जाय, तब क० ।

वही रहैगा चैनमें, लोभ किया जिन दूर । साईंका कर आसरा, राखा जो भरपूर—स्पष्ट ।

वही रांड़की रांड़, वही बावल पिट्टी—जहां दो बातोंका एक ही अर्थ हो, वहां क० । रांड़की रांड़= विधवाकी लड़की । बावल पिट्टी=जिसका बाप मर गया हो ।

वाकी गत वाही जाने—ईश्वरके लिये क० ।

वाको अच्छा मत कहे, जो तेरे धोरे आय । करै बुराई औरकी, अपने तईं बढ़ाय—उस आदमीको अच्छा नहीं समझना चाहिये जो किसी के सामने अपनी बड़ाई करे और अन्यकी बुराई बतावे ; क्योंकि ऐसे गुण बुरे लोगोंमें रहते हैं।

वा तिरिया तो एक दिन भाजे, जाकी आंख कधी ना लाजे—निर्लज्ज स्त्रियोंके लिये क० ।

वा तिरिया संग बैठ न भाई, जाको जगत कहे हरजाई—स्पष्ट । हरजाई=व्यभिचारिणीको क० ।

वा दिनकी बतिया मैं कह दूँगी—दूसरेकी साधारण कही हुई बात अपने ऊपर कही जानकर अपना भेद आप ही खोल दे, तब क० ।

इसपर एक कहानी है :—एक रईस अपने दोस्तके यहां शादीमें मेहमान होकर गये । शामके वक्त वह मैदान गये और झाड़ीकी आड़में फ़राग़तके लिये बैठे । बेर खूब फले हुए थे, इसलिये वह पके पके तोड़ तोड़कर खाते भी जाते थे । उस वक्त एक रंडीका इक्का उसी रास्ते होकर गुज़रा । वह भी इसी ब्याहमें नाचनेके लिये बुलाई गई थी । जिस रोज़ उसका नाच हुआ तो उसने यह गीत गाया "वा दिनकी बतियां मैं कहदूंगी।" वह रईस जो महफ़िलमें बैठे उसका गाना सुन रहे थे अपने मनमें समझे कि उस दिन जो फ़राग़तके वक्त मैं बेर खा रहा था, सो इसने देख लिया है उसीको कहा चाहती है । इसलिये उसी रिशवतके तौरपर दस रुपयेका नोट निकालकर दे दिया, जिसमें वह इस भेदको न कहे । रंडी यह समझी कि शायद यह गाना इनको बहुत पसंद आया है, इसलिये मुझे इनाम दिया है । वह घड़ी घड़ी उनकी तरफ़ देखकर इसी बातको कहने लगी । दो तीन दफ़ै तो इन्होंने उसे दस दस रुपयेके नोट दिये पर जब उसने गाना बन्द न किया तो आप बोल उठे कि "तू क्या कह देगी, मैं ख़ुद ही कहे देता हूं ।" यह कहकर उन्होंने सारी बात कह सुनाई । वह रंडी जो इस भेदको जानती भी न थी और महफ़िलके सब लोग उनकी मूर्खतापर हंस पड़े ।

वा दिन देखे जायंगे, भले बुरे सब कार । जा दिन लेखा लेयगा, वह क़ादिर करतार—सबके नेक बद कामोंका विचार ईश्वर एक दिन अवश्य करता है ।

वा नरसे मत मिल रे मीता, जो कभी मिरग कभी हो चीता—अव्यवस्थित चित्तवालेसे कभी मित्रता न करे ।

वा पुरुखाकी दिन दिन ख्वारी, जाकी तिरिया हो कलहारी—स्पष्ट । कलहारी—झगड़ालू ।

वा पुरुखा तेरी चतुराई, चून बेचकर गाजर खाई—मूर्खको क० ।

वार करत पी जात है फेर न आवत हाथ, वेग चरन पीके गहो जो मूल न छूटे साथ—स्पष्ट । देर करनेसे जो काम बिगड़ जाता है वह फिर नहीं सुधरता ।

वार कहे उत पार है, पार कहे, इत पार । पकड़ किनारा बैठ रहु, यही पार यही वार—किसी एक दृढ़ विचारके वशीभूत होकर रहना अच्छा है ।

वार न पार अधम मा नैया । खेवा कहे कि उतरो भैया—स्पष्ट ।

वारवाले कहैं पारवाले अच्छे, पारवाले कहे वारवाले अच्छे—जो संतोषी नहीं होते वे अपनेसे दूसरेको सुखी समझते हैं ।

वारी गई फेरी गई, जलवेके वक्त टल गई—आवश्यकताके वक्त, टल जानेपर क० ।

वारी फेरी जब गई जब नेव धराई, मुंह मोड़ बातें करें जब ताखों आई, बांध मुंडेरी उतरा जम दिये दिखाई—यह कहावत स्त्रीपर है, किन्तु इसका रूपक राजसे बांधा गया है अर्थात् जबतक मकानकी नींव पड़ती है राजसे बड़ा सद्‌भाव रहता है, जब मकान बनकर ताख तक पहुंच जाता है, तब उससे मुंह मोड़कर बातें करते हैं और जब मकान मुंड़ेरे तक बन जाता है, तब राज यमकी तरह दिखाई देता है और उसे लोग अलग कर देते हैं। यह कहावत स्त्रीपर इस तरह घटती है कि पहले स्त्री बड़े आवभगतसे पुरुषका आदर करती है, कुछ अवस्था हो जानेपर मुंह मोड़कर बातें करती है और वार्द्धक्य प्राप्त हो जानेपर मनमाना व्यवहार करती है।

वारी सोवे उठे सबेरे, वाको नाह दरिद्दर घेरे—जो देरसे सोता है और सबेरे उठता है, वह दरिद्री नहीं होता।

वाह पीर अलिया, पकाई थी खीर, हो गया दलिया—अच्छा करने जाय और बुरा हो जाय, तब क०। अलिया एक पहुंचे हुये फ़क़ीर थे। वह भीख मांगते मांगते एक औरतके पास पहुंचे और उसे खीर पकाते हुए देखकर उन्होंने उससे पूछा कि क्या पकाती है। उस औरतने कहा कि दलिया पकाती हूं। फ़क़ीर यह सुनकर तथास्तु कहकर चल दिया। उसके जानेके बाद उस औरतने खीरको देखा तो उसे खीरकी जगह दलिया मिला। इसपर उस औरतने उपरोक्त मसल कही।

वाह पुरखा तेरी चतुराई, मांगा गुड़ ला दी खटाई—स्पष्ट। करनेको कहा जाय कुछ और करे कुछ, तब क०।

वाह पुरखा मेरे चातुर ज्ञानी, मांगी आग उठा लाया पानी—(मु०) ऊ० दे०।

वाह वाह तेरी चतुराई, देखा मूसा कहे बिलाई—देखे कुछ और कहे कुछ अर्थात् बहाना करे, तब क०।

वाह मियां काले, खूब रंग निकाले—(मु० च०) नई रंगत लानेपर मसख़रीकी तौरपर क०।

वाह मियां नाकवाले—(मु०) जो अपनेको बड़ा मानता है, उसको क०।

वाह मियां बांके तेरे दगलेमें सौ सौ टांके—(मु० च०) लिफ़ाफ़ियेको क०।

वाहीका भाई—जो पागलपनकी बातें करे, उसे क०।

वाही नरको जान तू, पूरा अपना मीत। जो राखे बिन लाभके, तुझसे प्रीत परीत—स्पष्ट।

विद्या तो वह माल है, जो खरचत दूना होय, राजा, राव, चोरटा छीन न सके कोय—स्पष्ट।

वृन्दावन सो बन नहीं, नन्द गामसो गाम। वंशी वट सो वट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम—स्पष्ट।

वेद पुराण संत मत यह। सकल सुकृत फल राम सनेहू—(तुलसी) स्पष्ट।

वेही मियां दरबारको, वे ही मियां चूल्हा फूंकनेको—एक ही आदमी सब कुछ करे, तब क०।

वैसहि ताको फल मिले, जैसा बीज बुआय। नीम बोयके बालके, गांडा कोइ न खाय—जैसा जो करता है वैसा फल पाता है।

श

शंका डायन मनसा भूत—शंका ही डायन और मनसा ही भूत है।

शकल चुडेलकी मिजाज परियोंका—(च० ज०) नीच खानदानमें पैदा होकर ऊंचे श्रेणीके पुरुषोंका सा मिजाज करना।

शकल भूतकी सी, नाम अलबेले लाल—नामके अनुसार रूप न हो, तब क०।

शक्कर खोरेको शक्कर, मूंजीको टक्कर—(मु०) जो जिस लायक होता है, ईश्वर उसको वैसाही देता है।

जिहिं जैसो निश्चय तिती, देत दई पहुंचाय।
शक्करखोरेको मिले, ज्यों शक्कर घाय॥ (छन्द)
जो जिसके मुनासिब था गर्दूं ने किया पैदा।
यारोंके लिये औहदे चिड़ियोंके लिये फंदे॥ (अकबर)

शक्कर दिये मरे, तो जहर क्यों दीजे—दे० "गुड़ दिये मरे"

शठ सन विनय, कुटिल सन प्रीती—दुष्टोंसे विनती तथा कुटिलोंसे प्रेम नहीं करना चाहिये।

शतरंज चौपड़ पोथी खोई, भगवत चर्चा गप्पोंने।

खोया रास भक्तियों भक्ति, हरि जश खोया टप्पोंने—(नागरी दास) स्पष्ट।

शतरंज नहीं सद रंज है—शतरंजमें सौ रंज हैं—इसमें सोचना बहुत पड़ता है, इसलिये क०।

छाड़ शतरंज जामें रंज अति भारी है।

शत्रोऽरपि गुणाः वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि—(सं०) शत्रुका भी गुणगान तथा गुरुका भी अवगुण कहना चाहिए।

शमाका पुश्त और रूह बराबर है—(मु०) मोमबत्तीकी रोशनीका आगा पीछा दोनों बराबर है। भले आदमीको क०। बुरेकी उपमा चिरागसे दी जाती है, जिसके पीछे छाया पड़ती है।

शमाकी रोशनी जलते तलक और दीयेकी रोशनी महशर तलक—(मु०) दीया शब्द दुमानी है जिसका अर्थ देना भी है। यहां अर्थ दान करनेसे है। महशर=विचारका दिन।

शमाके सामने चिरागकी क्या ज़रूरत—क्योंकि चिरागमें रोशनी कम होती है।

शरहमें शरम क्या—व्यवहारमें शरम नहीं चाहिये।

शरण गुरुकी आयके, जो सुमिरे सिया राम। }
यहां रहे आनंदसे, अंत बसे हरिधाम॥ }

स्पष्ट।

शराब कायस्थोंकी घुट्टीमें पड़ती है—कायस्थ जन्मसे ही शराब पीते हैं।

शराबख्वार हमेशा ख्वार—शराबी हमेशा तबाह रहते हैं।

शर्मकी बहू नित भूखी मरे—जो बहू खाने पीनेमें शर्माती है वह भूखी ही रहती है, क्योंकि जब नई बहू घरमें आती है तब शर्माती है। खाने पीनेमें शर्म करनेवालेके लिये क०।

शर्म चे कुत्तीस्त कि पेश मर्दां बिआयद—(फा०) शर्म कौन कुतिया है कि मर्दको वशमें कर सके। बेशर्म या बेहयाको व्यंगसे क०।

शलीतेमें मेख लश्करमें शेख न रक्खे—जेबमें कील कांटा न रक्खे और फ़ौजमें शेखको भरती न करे। शेख लड़नेमें बोदे होते हैं।

शब्द भेदको लखा, नहीं तो क्या हो पुस्तक चीन्ह लिये? (जो) दिल दिल-बरसे मिला नहीं तो क्या (हो) करवा कोपीन लिये—बिना सच्ची भक्तिके ऊपरी आडम्बरसे कुछ नहीं होता।

जप माला छापा तिलक, सरै न एको काम
मन कांचे नाचे वृथा, सांचे राचै राम॥ (बिहारी)

यह कहावत साधुओंके लिये क०।

शशि तारा निशि हैं तऊ, रवि बिन रहत मलीन। स्पष्ट।

शहदकी छुरी—अच्छे शब्दों द्वारा घात करनेपर क०।

शहद लगाकर चाटो—जब किसी काग़ज़की मियाद हुब जाती है, तब क०। दे० "नालिश करो"।

शहद सुहागा घी, मरी धातका जी—इनतीनोंसे धातु पुष्ट होती है।

शहरकी सलाम, दिहातका दाल भात—शहरमें ख़ातिर किसी मनुष्यकी सलामसे की जाती है और देहातमें भोजनसे।

शाखा मृगकी यह मनुसाई, शाखाते शाखापर जाई—जिनकी पहुंच थोड़ी दूरतक रहती है, उन्हें क०।

शागिर्द क़हर, उस्ताद ग़ज़ब—नौकर और मालिक दोनोंके अत्याचारी होने पर क०।

शागिर्द रफ़्ता रफ़्ता वा उस्ताद मिरा शुद—धीरे धीरे चेला भी गुरु हो जाता है।

शादी, ख़ाना आबादी—ब्याहसे घर बसता है।

शादी ग़मी सबके साथ हैं—दुख सुख सबके लिये है।

शादी है, कुछ गुड़ियोंका ब्याह थोड़ा ही है—यह उस समय कहा जाता है, जब मनुष्य ब्याहके समय कम ख़र्च करता है।

शानमें क्या जुपते पड़ेंगे—(मु०) अभिमानीको क०।

शामके मुर्देको कबतक रोवे—अभीसे कैसे पूरा पड़ेगा। सारी रात कोई नहीं रो सक्ता।

शाम भई दिन ढल गया, चकई दीनी रोय।
चल चकवे वा देशमें, जहं शाम कभी ना होय—स्पष्ट। दे० "चकवा चकई दो जने"

शाबाश मियां तुमको, तूने मोह लिया मुझको—(मु० ज०) स्पष्ट।

शाहका माल भूईं पड़े दूना—धनिकोंका धन देनेसे ही बढ़ता है।

शाहके सवाये कमबख्तके दूने—(व्य०) जो कम मुनाफेसे माल बेचता है वही साहूकार है, जो बहुत मुनाफा खाता है, उसका काम बहुत दिन नहीं चलता।

शाहजहाँ बूढ़े बग़लमें दाढ़ी, खाते पीते विपत्ति पड़ी—जब किसीको बुढ़ापेमें कष्ट होता है, तब क०।

इस मसलका निकास इस कहानीसे है :—जब शाहन्शाह शाहजहाँ वृद्धावस्थाको प्राप्त हुआ और वह समय उसके सुखसे व्यतीत करनेका था, उसी समय वह अपने पुत्र औरंगजेब द्वारा कैद करके बन्दी गृहमें डाल दिया गया, उस समय उसको सुख करनेके बदले दुख मिलने लगा; तबसे यह कहानी प्रचलित है।

शाहिद बार बार, मुक़द्दमेवाले पार पार—दे० "नाव चढ़े झगड़ालू आवे"

शिकारके वक्त कुतिया हगासी—जब कोई कामके वक्त, जी चुराता है, तब क०।

शिकारको गये और खुद शिकार हो गये—जब कोई किसीको परास्त करनेकी नियतसे जाता है और खुद परास्त होकर आता है, तब क०।

शिकारमें हल्दी—असगुन है। पहिले हल्दी बाँटके जाओ तो शिकार नहीं मिलता।

शिकारी शिकार खेलें, चूतिया साथ फिरें—कामवालोंके साथ निकम्मोंके रहनेपर क०।

शिव जपे न राम जपे, न हरिसे लावे हेत।
वे नर ऐसे जायंगे, ज्यों मूलीके खेत—स्पष्ट।

शिव शिव रटे, तो संकट कटे—स्पष्ट।

शिव दधीचि हरिचन्द नरेशा, सहे धर्मलगि कोटि कलेशा—(तुलसी) परोपकारार्थ कष्ट सहनेके लिये क०।

शीतल शिष दाहक भई कैसे, चकइहिं शरद चाँदनी जैसे—(तुलसी) जैसे शरदऋतुका चन्द्रमा, जो सबको सुखदायी है, चकईके विरह-व्यथाको बढ़ाता है, उसी प्रकार वह सुन्दर शिक्षा जो श्रीसीताजीको रामचन्द्रजीने दी थी, व्यथा देनेवाली सी प्रतीत हो रही थी। अच्छी शिक्षा भी जब बुरी मालूम पड़े, तब क०।

शीनके शहक़ (या शड़प्पे)—जो 'स' की जगह 'श' उच्चारण करते हैं, उनपर क०।

एक मनुष्य जो थोड़ी सी फ़ारसी पढ़ी थी, सदैव सीनकी जगह शीन बोला करता था। एक दिन वह घूमते घूमते बनियेंकी दूकानपर गया। बनियेंने उससे पूछा कि आप कौन हैं, उत्तर दिया कि मैं एक शौदागर हूं। आपका नाम क्या है? शुभान अली। आपकी जात क्या है? कहा शैयद। पुनः बनियेंने पूछा, आप बेचते क्या हैं? कहा शूशी। किस रंगकी? कहा, श्याह, शफ़ेद, शब्ज़ शुर्ख़, शोशनी, शुरमई, शफ़ तालू। वास्तवमें किसी शब्दमें शीन नहीं है।

शुक्रवारकी बादली, रहे शनीचर छाय। ऐसा कहते भड्डरी बिनु, बरसे ना जाय—(कृ०) शुक्रवारको यदि बदली उठे और शनिवार तक बनी रहे तो बिना बरसे नहीं रहती। "घाघ कहै सुन घाघनी" ऐसा भी कोई कोई कहते हैं।

शुक सारी राखैं सबै, काक न राखे कोय।
मान होत है गुणनते, बिन गुण मान न होय—(वृन्द) स्पष्ट।

शुतर बे मुहार—बिना नकेलका ऊँट। उद्दंड मनुष्यको कहते हैं।

शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहहीं, सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं—नीच पुरुष भी बड़ोंके या सज्जनोंके साथमें पड़कर बड़ा या सज्जन बन जाता है। सामर्थवानको कुछ भी दोष नहीं है।

शुभस्य शीघ्रम्—शुभ कार्यमें विलम्ब नहीं करना चाहिये।

शूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव—(सं०) जब कोई बिना लड़ाई किये किसीका हक़ न दिया चाहे, तब क०।

शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना, बैठ बरासन कहहिं पुराना—(तुलसी) कलिधर्मपर क०।

शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना, मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना—(तुलसी) क० दे०।

शेख़ चंडाल, न छोड़े मक्खी न छोड़े बाल—देढ़ू मनुष्यको व्यंगसे क०।

शेख़ने कौएको भी दग़ा दी है—कौवा सब जानवरसे चतुर होता है किन्तु शेख़ उससे भी कहीं बढ़ चढ़के चतुर होते हैं।

इस कहानीका निकास यों है :—किसी शेख़ने एक कौवेको पकड़ना चाहा। इसलिये वह अपने मुंहमें एक रोटीका टुकड़ा लेकर मृतवत् ज़मीनपर सो रहा। संयोगवश ज्यों ही एक कौवेने उसके शरीरपर बैठ उस टुकड़ेको लेना चाहा त्यों ही उस धूर्तने उसकी चोंच अपने मुंहसे पकड़ी। कौवेने छुटकारा पानेके लिये उसको प्राप्त पूछी। लेकिन वह शेख़ उस कौवेका आभ्यन्तरिक भाव समझ गया। इस कारण वह हठमाये उसकी चोंच अपने दांतोंके बीच दबाके बोला "शेख़"

शेख़सादी शीराज़ी, आशिक़ोंके बादशाह माशूक़ोंके क़ाज़ी—(मु०) शेख़सादीकी तारीफ़में क०।

शेख़ी और तीन काने—झूठी शेख़ी करनेपर क०।

शेख़ीका मुंह काला—स्पष्ट।

शेख़ीख़ोरेसे कहा 'तेरा घर जलता है।' कहा, 'चलासे, मेरी शेख़ी तो मेरे पास है'—स्पष्ट।

शेख़ी सेठकी, धोती भाड़ेकी—झूठी शेख़ीपर क०।

शेख़ोंकी शेख़ी पठानोंकी टर, यहां न धोवेंगे धोवेंगे घर—यह मसल शेख़ और पठानोंके स्वभाव पर क०।

शेर और शख़्स बांधे—दे० 'एक तो भाले'

शेरका एक ही भला—अगर लड़का सपूत हो तो एक ही अच्छा है।

शेरका खाजा बकरी—शेरकी ख़ुराक बकरी है।

शेरका जूठा गीदड़ खाय—प्रतापियोंके प्रतापसे कितने छोटे लोग जीते हैं, तब क०।

शेरका बच्चा शेर ही होता है—वीरके वीर ही पुत्र जन्म लेते हैं।

शेरके बुरकेमें छीछड़े खाते हैं—जो बे-इज़्ज़तीसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उनपर क०।

शेर पूत एकै भलो, सौ सियारके नाहिं—वीर पुत्र एक ही अच्छा है, सैकड़ों, कायर अच्छे नहीं।

वरमेको गुणी पुत्रो नचमूर्खो शतैरपि,
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति नच तारा गणैरपि।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं—न्यायी और प्रतापी राजाके अच्छे राज्य प्रबन्ध पर क०।

शेरशाहकी दाढ़ी बड़ी, या सलीमशाहकी—छोटी छोटी सी बातोंके लिये आपसमें लड़ने पर व्यंगसे क०। शेरशाह सूर और सलीमशाह सूर बाप बेटे थे, जिन्होंने सन् ई० १५४२ से १५५४ तक दिल्लीमें बादशाहत की थी।

शेरोंका मुंह किसने धोया—उन छोटे लड़कोंको क० जो साफ़ सुथरे नहीं रहते। औरतोंका अक्सर ऐसा ख़्याल रहता है कि लड़कोंको साफ़ सुथरा रखनेसे नज़र लग जाती है। इसी जोड़की दिहाती मसल है—"कहीं कपिला भी सींचती हैं।"

शेरोंके शेर ही होते हैं—वीरके वीर ही पुत्र पैदा होने पर क०।

शैतानकी आंत—(मु०) लम्बी चीज़ पर क०।

शैतानकी ख़ाला—(मु० ज०) दुष्ट औरत पर क०।

शैतानके कान काटे—(मु०) जटिल कार्य करनेवालेको क०।

शैतानके कान बहरे—(मु० ज०) जो किसीकी नहीं सुनता, अपने मनकी करता है, उसे क०।

शैतान जान न मारे, हैरान तो ज़रूर करे—स्पष्ट।

शैतान तूफ़ानसे ख़ुदा निगहबान—(मु०ज०) जो बहुत अत्याचारी हो जाता है, उस पर क०।

शैतानने भी लड़कोंसे पनाह मांगी है—स्पष्ट।

इसपर एक कहानी है कि :—किसी शैतानको लड़कोंके साथ खेलनेमें बड़ा आनन्द मिलता था। एक दिन वह गदहेके रूपमें उनके बीच खेलने आया। लड़कोंने उसे देखते ही उसकी पीठपर सवारी करनी आरंभ कर दी। चार लड़के तो आसानीसे उसकी पीठपर बैठ गये, और जब पांचवेंको स्थान नहीं मिला तब वह उसकी दुममें बांस बांध कर बैठ गया। यह दुःख शैतानके लिये असह्य हो गया और लड़कोंसे हार मानकर भाग गया।

उत्पाती लड़कोंको क०।

शैतान सिरपर चढ़ रहा है—क्रोधके वेगमें जब कोई ख़राब काम करने लगता है, तब क०।

शैतानसे ज़्यादः मशहूर—(मु०) किसी मशहूर आदमीके विषयमें क०।

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे। साधवो नहिं सर्वत्र चंदनं न वने वने—(सं०) जैसे सब पहाड़ोंमें माणिक, सब हाथियोंमें मोती, सब वनोंमें चंदन नहीं होता, उसी तरह सब जगह साधु भी नहीं मिलते।

सर सर हंस न होत बाजि गज रज न दर दर।
तर तर सुफर न होत नारि पतिव्रता न घर घर॥
तन तन सुमति न होत मलयगिरि होत न वन वन।
फणि फणि मणि नहिं होत सुक्त जल होत न घन घन॥
रन रन सूर न होत हैं जन जन होत न भक्ति हरि।
नर हरि निरखि कविरा कहि सब नर होत न एक सरि॥

शौक़ दाद इलाही है—शौक़ ईश्वरकी देन है। शौक़= व्यसन।

शौक़ीन बुढ़िया चटाईका लहँगा—बेमेल बात, या नदीकी बनावट पर क०।

शौक़ीन बीबी कम्मलकी चोली—ऊ० दे०।

श्याम सुरभि पय विशद अति, गुण न करहिं तेहि पान—शकल देखकर नहीं भूलना चाहिए, गुण देखना चाहिए, क्योंकि गाय काली होती है पर उसका दूध अमृत-तुल्य है।

श्रीगणेश करो—कामका आरंभ करो।

श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि मृगनयनीके नयन शर, को अस लागु न जाहि—स्पष्ट।

स

सइयांके अरजन भैयाके नाउँ, पहन ओढ़ मैं सासुर जाउँ—(ज०) उस स्त्री पर क० जो अपने पतिकी कमाईको भाईका कहकर अपने ससुराल लाती है।

सइयां गये परदेश अब डर काहेका—(ज०) दुश्चरित्र स्त्री पर क०। अब कोई देखने रोकनेवाला नहीं है।

सइयां गये विदेस मैं तो कात कात मुई, आगरेका चरखा बुरहानपुरकी रुई—(ज०) जिसका पति विदेशमें है उसका कहना है। बिहार प्रान्तमें जो लोग कठपुतली नचाते हैं (जिसे गुलाबो सिताबो का नाच कहते हैं) वह ऐसे ही गीत गाते हैं।

सइयां गये लदनी, लदाइन भड़ा भड़, सौके पचास किये, चले आये घर—(पू०ज०) जो कोई व्यापार करता है और उसमें हानि उठाता है, तब उसपर व्यंगसे क०।

सइयां जा न विदेशको, कथा हाट न खोल। हुनर देख मेरे हाथका, कातूं सूत अनमोल—(ज०) पतिको विदेश जानेसे रोकनेके लिये कहती है।

सइयां तेरे कारने, जल बल हो गई राख। पतसे मैं बेपत भई, पंचनमें गई साख—(ज०) परकीया विरहिनी नायिकाका कहना है।

सइयांने इस दुनियांमें, लाखों रुपैये वट्टे; कधी न लाये लड्डू पेड़े, बेर खिलाये खट्टे—(ज०) धनाढ्य सूम पतिके प्रति स्त्रीका कहना है।

सइयां परदेश मज़ा लूटत हुइहैं, चूतड़ उठाय चूल्हा फूंकत हुइहैं। रोटी तो खात नीक लागत हुइहैं, बासन मांजत........फाटत हुइहैं—जो परदेशमें अकेले रहते हैं, उन पर क०।

सइयां भये कोतवाल अब डर काहेका—(ज०) जब कोई बड़प्पनको प्राप्त होता है, तब उसके आश्रित कहा करते हैं।

सईसोंका काल, मुंशियोंकी बहुतात-अशिक्षितोंको नौकरी मिले और शिक्षितोंको न मिले, ऐसी जगह पर क०।

संख बजाओ सोवो साधू, जो सुख पावे काया—आज कलके साधुओं पर व्यंगसे क०।

संख बाजे, सत्तर बला भाजे—घरमें शंख बजनेसे सब बला विपत्ति दूर हो जाती है। हिन्दुओंका ऐसा विश्वास है।

संग आमद, व सख्त आमद—(फा०) पत्थरकी चोट बड़ी कड़ी होती है। विपत्ति पर विपत्ति पड़े तब क० तथा कठिन समयमें मुस्तैदीसे काम करने पर क०।

संगत अच्छी बैठके, खैये नागर पान। छोटी संगत बैठके, कटै नाक और कान—स्पष्ट।

संगत कीजे साधुकी, हरे औरकी व्याधि। ओछी संगत नीचकी, आठों पहर उपाधि—स्पष्ट।

संगतकी फूटका अल्लाहबेली—संगतकी फूटसे ईश्वर बचावे।

संगतसे फल होत है, यही तिली वही तेल। जात पांत सब छोड़के, पाया नाम फुलेल—स्पष्ट।

संगतसे फल होत है, संगतसे फल जाय—अच्छे साथसे फल होता है और बुरे साथसे फल जाता रहता है।

संगत फल देखिय तत्काला, काक होहिं पिक बकहु मराला—(तुलसी) सत्संगके महात्मपर क०।

एक चोरने मरते समय अपने लड़केको उपदेश दिया कि कभी सत्संगमें न जाना, नहीं तो भूखों मरोगे। लड़का बापकी शिक्षा पर यहांतक दृढ़ था कि किसी फकीर और पंडितकी बात नहीं सुनता था। एक दिन वह ऐसे स्थानमें गया जहां कथा हो रही थी। वहां उसने अपने कानोंमें उंगली दे ली। दैवात् उसी समय उसके पैरमें कांटा लगा जिस लिये उसे कानसे उंगली निकालनी पड़ी। उस समय कथामें यह प्रसंग चल रहा था कि देवताके परछाहीं नहीं होती। इतना उसको सुनाई दे गया। कुछ दिन बाद उसने कहीं चोरी की। किसी मनुष्यने उसके पकड़ा देनेका इकरार किया और देवीका रूप बनाकर रातको उसके घर जाकर कहा, 'तुमने मेरी पूजा नहीं की इसलिये मैं तुम्हें मार डालूंगी।' पहिले तो चोरने देवीकी विनती की और ज्योंही चोरीका सारा भेद कहा चाहता था, त्योंही उसे दीवालमें देवीकी परछाहीं दिखाई दी। उसे कथाकी बात याद आगई कि देवताके परछाहीं नहीं होती, इस-लिये उसे देवीपर संदेह हुआ और उसे बनावटी समझ-कर मारके निकाल दिया। इस तरह उसने अपनी और अपने साथियोंकी जान बचाई, नहीं तो सबके सब मारे जाते। जब उसे कथापर विश्वास हुआ तो बराबर कथा सुनने जाने लगा। धीरे धीरे सब चोर भक्त हो गये। ऐसी महिमा सत्संगकी है।

संगति दोष लगै सबै, कहे जु सांचे बैन। कुटिल बंकभ्रू संगमें, कुटिल बंक गति नैन—(बिहारी) संगतका दोष सभीको लगता है। खोटी टेढ़ी भौंहके साथ नैनके रहनेसे ये भी खोटे टेढ़ी चालके हो गये हैं।

संगति सुमति न पावहीं, परे कुमतिके धंध। राखो मेलि कपूरमें, हींग न होति सुगंध—(बिहारी) कुबुद्धिके काममें पड़नेसे मनुष्यको संगतसे भी सुमति नहीं होती, जैसे हींगको कपूरमें डालके रखनेसे भी उसमें कपूरकी सुगंध नहीं होती। तात्पर्य यह है कि जन्मगत दोष किसीका नहीं छूटता।

संग सोई तो लाज क्या?—पास सोई तो फिर शरमें किस बातकी?

एती लाज न सोहति बाल, रहो मौन यदि बूझत लाल।
लोग चलि सांची दरसावै, संग सोवै अरु लाजहिं छिपावै॥

संतनकी वाणी सुने, प्रेम सहित जो कोय। गंगादिक सब तीर्थ फल, बिन अस्नाने होय—स्पष्ट।

संतोषं परमं सुखम्—(सं०) संतोषका होना ही परम सुख है।

संदलके छापे मुंहको लगें—आशीर्वाद है।

संदेशन खेती नहीं होय—संदेश भिजवानेसे खेती नहीं होती, मिहनत करनेसे होती है।

संध्या देइ सवेरे पावे, पूत भतारके आगे आवे—बुराई करने पर क०।

संपति केश सुदेश नर, नवनि दुहुन इक बानि। विभो सतर कुच नीच नर, नरम विभोकी हानि—(बिहारी) सम्पत्तिके बढ़नेसे बाल और अच्छे पुरुष नम्र होते हैं। ऐश्वर्यमें ऐंठे हुए कुच और नीच मनुष्य सम्पत्ति जाने पर नम्र होते हैं।

संपतिकी जोरू, विपत्तिका यार—स्त्री संपतिकी साथी है और सच्चा मित्र विपत्तिका साथी है।

संपनसे भेटा नहीं दलिद्दरसे टूं टां— निष्प्रयोजन झगड़ा करने पर क०।

संवर जाय सो काम, पल्ले पड़े सो दाम—(व्य०) जो काम पूरा हो जाय उसीको काम सम-झना चाहिये और जो अपने पास दाम आ जाय, उसीको दाम समझना चाहिए।

सकल तीर्थकर आई तुमड़िया, तो भी न गई तिताई—जन्मगत दोष किसीका दूर नहीं होता।

सक्सेना कायथ बुरा, खत्री बुरा सरीन, वेश्या सुत बाम्हन बुरा, मुगल बुरा तुरीन—कायस्थोंमें सकसेना, खत्रियोंमें सरीन कुछ नीचे समझे जाते हैं; तीसरेका कहना ही क्या है और चौथेकी राम जाने।

सकुची पूँछे बसत विष, मस्तक बसे भुजंग। केहरिके नखमें बसे, तिरिया आठों अंग—बिच्छूकी पूँछ, सर्पके मस्तक और सिंहके नखमें विष रहता है, परन्तु स्त्रीके सर्वांगमें रहता है।

सख़ी करीम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं, बख़ील मूसलोंसे मोतियोंको तोड़ते हैं—दाता और उदार पुरुष दुःख पाते हैं और कंजूस सूमड़ोंकी मौजसे कटती है।

सख़ीका ख़ज़ाना कभी ख़ाली नहीं होता—दे० "राम नामके कारने"।

सख़ीका बेड़ा पार और सूमकी मट्टी ख़्वार—स्पष्ट।

सख़ीका बोल बाला, सूमका मुंह काला—स्पष्ट।

सख़ीका सर बुलन्द, मूज़ीकी ग़ोर तंग—(मु०) दाताका सिर ऊंचा रहता है और कृपणकी क़ब्र तंग रहती है।

सख़ीकी कमाईमें सबका साझा—क्योंकि वह जो पैदा करता है दूसरोंको बांटकर खाता है।

सख़ीकी नाव पहाड़ चढ़े—दाताको प्रत्येक कार्यमें सफलता मिलती है।

सख़ीके मालपर पड़े, सूमकी जानपर पड़े—दाताकी धनपर बीतती है, सूमकी जानपर बीतती है।

सखी दासकी डलिया ढोवें, अपना काम करत ही रोवें—जो अपने घरका कार्य कुछ भी न करे और दूसरोंका करे, उसको क०।

सखी न सहेली, भली अकेली—(ज०) जो स्त्री अकेली रहती है, उसका क०।

सख़ी सख़ावतसे फलता है, अदू अदावतसे जलता है—दानी दानसे फलता है और डाही डाहसे जलता है।

सख़ी सूमका लेखा बराबर—जब किसी सूमका नुक़सान हो जाता है, तब क०।

> सोवत बीर्यपात भयो लाल,
> भार देखि कह्यो निर हित बाल।
> सुनो पखानो भाषत ओड़,
> सखी सूम लेखो सम होइ॥ (भी० र० की)

सख़ीसे भेंटा नहीं तो सूमसे क्यों बिगाड़े—कुछ नहींसे कुछ अच्छा है।

सख़ीसे सूम भला जो तुरत दे जवाब—जो आदमी देनेमें बहुत टाल मटोल करे, उसपर क०।

सगरी उमरमें पाप कमाई, जनम न कीना पुन्न लेवनहारा आ गया, तो तन मन हो गया सुन्न—स्पष्ट। यह सन्तोंका कहना है।

सगरी रैन बन बन फिरी, भोर भये कुएँसे डरी—(ज०) झूठे सतीत्वपर क०।

सगरे गांव घूरे अइली, कहीं न देखी लग्दा। पटना शहर अइसन देख लीं, कांख तरे लग्दा—(पू०) पटना जिस समय व्यवसाइयोंका केन्द्र था उस समय यह बात कही जाती थी। लग्दा=प्राप्ति

सगरे घरमें रेंगके मुसरी सिर पटकके मरजा—जब किसीपर विपत्ति पड़ती है, तब क०।

सगों बिन सगाई कैसी, भलों बिन भलाई कैसी—स्पष्ट।

सच और झूठमें चार अंगुलका फ़र्क़ है—आंख और कानमें चार अंगुलका फ़र्क़ है। कानसे सुनना झूठा और आंखसे देखना सच्चा है।

> अन्तर अंगुरी चारको, सांच झूठमें होय।
> सब माने देखी भई, सुनी न माने कोय। (छन्द)

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है—यदि किसीका सच्चा दोष भी कह दिया जाय, तो उसे बुरा लगता है।

सच कहे सो मारा जाय—ऊ० दे०।

> सांच कहते पनही खावें, झूठे बहुविधि पदवी पावें।
> (हरिश्चन्द्र)

सचकी सँड़सी बुरी होती है—ऊ० दे०।

सच बराबर पुण्य नहीं, झूठ बराबर पाप—स्पष्ट।

सच बात कड़वी लगती है—दे० "सच कहना आधी लड़ाई"

सच बोलना, सुखी रहना—स्पष्ट।

सच बोल, पूरा तोल—(व्य०) सदैव सच बोलना चाहिए और पूरा तौलना चाहिए।

सचाईमें ख़ुदाकी सूरत है—स्पष्ट। सत्य ही परमेश्वर है।

सचिव वैद्य, गुरु तीन जो प्रिय बोलहिं भय आस। राजधर्म तन तीन कर, होंहिं बेगही नाश स्पष्ट।

सच्चा जाय, रोता आय, झूठा जाय, हँसता आय अदालतमें झूठेकी ही जीत होती है।

सच्चे का ज़माना नहीं—जब कोई सच कहे और उसकी बात न मानी जाय, तब क०।

सच्चेका बोल बाला, झूठेका मुँह काला—सच्चेको सदैव यश और झूठेको अपयश मिलता है।

सच्चेकी बावड़े, झूठेकी न बावड़े—सच्चेकी बारी फिर आयेगी पर झूठेकी फिर नहीं आनेकी।

सच्चे रामको छोड़के, पूजें देवी भूत। आप बिचारे मर गये, उनसे मांगे पूत—स्पष्ट।

सच्चे लोग क़सम नहीं खाते—झूठी बातको सच साबित करनेके लिये ही कसम खाई जाती है।

सजन चले परदेशको, धर घोड़ेपर जीन। जो मैं ऐसा जानती, चाबुक लेती छीन—यह खबर न थी कि परदेश चले जायंगे।

सजन तुम झूठ मत बोलो, ख़ुदाको सांच प्यारा है। कहावत है बड़ोंकी यों "कभी सांचा न हारा है—स्पष्ट।

सजन बिन ईद कैसी—(मु० ज०) जब किसी स्त्रीका पति परदेश चला गया हो, तब वह दुःखसे क०।

सजन सकारे जायंगे और नयन मरेंगे रोय। बिधना ऐसी रैन कर, कि भोर कभी ना होय—स्पष्ट (प्रवत्सतपतिका)

सजनी हम हूँ राजकुमार—दे० "पांचों सवारोंमें मिलना।"

सज्जन चित कब हु न धरे, दुर्जन जनके बोल पाहन मारे आमको, तो फल देत अमोल—स्पष्ट। पाहन=पत्थर।

सड़ी साहिबी और गचका सोना—(च०) हैसियतके बाहर काम करनेपर क०। गच=चूनेकी छत

सत मत छोड़े सूरमा, सत छोड़े पत जाय—कर्तव्य न भूलना चाहिये, सत्यका पालन सदा करना चाहिये।

सतवन्तीको लाज बड़, छिनारीको बात बड़—सती स्त्रियां शीलवान और व्यभिचारिणी स्त्रियां बेहया होती हैं।

सतरा बहतरा—बेकार आदमीपर क०, क्योंकि सत्तर बहत्तरकी उम्रमें आदमी किसी कामके लायक नहीं रहता।

सत हारा, गया मारा—जो अपना सत छोड़ देता है, वह मारा जाता है।

सति कुच और भुजंग मणि, सिंह केश गज दन्त सूर कटारी विप्र धन हाथ लगे जब अन्त—बिना मरे इनकी यह चीजें हाथ नहीं लग सकतीं।

सत्तमानके बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा पूजा थी सो मालिन ले गई, मूरतको ध रचाटा—(कबीर) आजकलकी प्रचलित मूर्तिपूजापर ताना है।

सत्तर कोने सातके, और सोलहके बिये सौ ब्याज बुरा रे बालके, बासूँ राखो भौ—(व्य०) सूदखोरको क०।

सत्तर चूहे खाके बिल्ली हजको चली—जब कोई आजन्म पाप करके पीछे पुण्य करने लगता है, तब क०। जो वेश्या वृद्धावस्थामें धर्मपथपर चलने लगती है, उसपर क०।

(सं) वृद्ध वेश्या तपस्विनी।
चलत्र अगोचर चसल बने चपात बद
सात सूस खायके बिलारी बनी भगतिन। (उ०५०)
गोपियोंका कहना उद्धवसे श्रीकृष्णके विषयमें।

सत्तू खाके शुक्र क्या?—(मु०) तुच्छ वस्तु पाकर तारीफ़ क्या? शाला सत्तू खाकर शुकर करता है, अल्ला मियांकी ख़राब करता है—(बंगला)

सत्तू बांधके पीछे पड़ना—किसी तरहसे दम नहीं लेने देना। दृढ़ संकल्प बनाये रखना।

सकल तीर्थकर आई तुमड़िया, तो भी न गई तिताई—जन्मगत दोष किसीका दूर नहीं होता।

सक्सेना कायथ बुरा, खत्री बुरा सरीन, वैश्या सुत बाम्हन बुरा, मुगल बुरा तुरीन—कायस्थोंमें सकसेना, खत्रियोंमें सरीन कुछ नीचे समझे जाते हैं; तीसरेका कहना ही क्या है और चौथेकी राम जाने।

सकुची पूँछे बसत विष, मस्तक बसे भुजंग। केहरिके नखमें बसे, तिरिया आठों अंग—बिच्छूकी पूँछ, सर्पके मस्तक और सिंहके नखमें विष रहता है, परन्तु स्त्रीके सर्वांगमें रहता है।

सख़ी करीम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं, बख़ील मूसलोंसे मोतियोंको तोड़ते हैं—दाता और उदार पुरुष दुःख पाते हैं और कंजूस सूमड़ोंकी मौजसे कटती है।

सख़ीका ख़ज़ाना कभी ख़ाली नहीं होता—दे० "राम नामके कारने"।

सख़ीका बेड़ा पार और सूमकी मट्टी ख़्वार—स्पष्ट।

सख़ीका बोल बाला, सूमका मुँह काला—स्पष्ट।

सख़ीका सर बुलन्द, मूज़ीकी ग़ोर तंग—(मु०) दाताका सिर ऊँचा रहता है और कृपणकी क़ब्र तंग रहती है।

सख़ीकी कमाईमें सबका साझा—क्योंकि, वह जो पैदा करता है दूसरोंको बांटकर खाता है।

सख़ीकी नाव पहाड़ चढ़े—दाताको प्रत्येक कार्यमें सफलता मिलती है।

सख़ीके मालपर पड़े सूमकी जानपर पड़े—दाताकी धनपर बीतती है, सूमकी जानपर बीतती है।

सखी दासकी डलिया ढोवें, अपना काम करत ही रोवें—जो अपने घरका कार्य कुछ भी न करे और दूसरोंका करे, उसको क०।

सखी न सहेली, भली अकेली—(ज०) जो स्त्री अकेली रहती है, उसका क०।

सख़ी सख़ावतसे फलता है, अदू अदावतसे जलता है—दानी दानसे फलता है और डाही डाहसे जलता है।

सख़ी सूमका लेखा बराबर—जब किसी सूमका नुक़सान हो जाता है, तब क०।

> सोवत वीर्यपात भयो लाल,
> भार देखि कह्यो निर हित बाल।
> सुनो पखानो भाषत कोइ,
> सखी सूम लेखो सम होइ॥ (लो० र० को)

सख़ीसे भेद्या नहीं तो सूमसे क्यों बिगाड़े—कुछ नहींसे कुछ अच्छा है।

सख़ीसे सूम भला जो तुरत दे जवाब—जो आदमी देनेमें बहुत टाल मटोल करे, उसपर क०।

सगरी उमरमें पाप कमाई, जनम न कीना पुन्न लेवनहारा आ गया, तो तन मन हो गया सुन्न—स्पष्ट। यह सन्तोंका कहना है।

सगरो रैन वन वन फिरी, भोर भये कुएँसे डरी—(ज०) झूठे सतीत्वपर क०।

सगरे गांव घूरे अइली, कहीं न देखी लबदा। पटना शहर अइसन देख लीं, कांख तरे लबदा—(पू०) पटना जिस समय व्यवसाइयोंका केन्द्र था उस समय यह बात कही जाती थी। लबदा=प्राप्ति

सगरे घरमें रेंगके मुसरी सिर पटकके मरजा—जब किसीपर विपत्ति पड़ती है, तब क०।

सगों बिन सगाई कैसी, भलों बिन भलाई कैसी—स्पष्ट।

सच और झूठमें चार अंगुलका फ़रक़ है—आंख और कानमें चार अंगुलका फ़र्क़ है। कानसे सुनना झूठा और आंखसे देखना सच्चा है।

> अन्तर अंगुरी चारको, सांच झूठमें होय।
> सब माने देखी भई, सुनी न माने कोय। (छन्द)

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है—यदि किसीका सच्चा दोष भी कह दिया जाय, तो उसे बुरा लगता है।

सच कहे सो मारा जाय—ऊ० दे०।

> सांच कहेते पनही खावें, झूठे बहुविधि पदवी पावें। (हरिश्चन्द्र)

सचकी सँडुसी बुरी होती है—ऊ० दे०।

सच बराबर पुण्य नहीं, झूठ बराबर पाप—स्पष्ट।

काम निन्दित समझे जाते हैं।

बाकी है दिलमें मीलुकी हसरत गुनाहकी।
काला करेगा मुँह भी जो दाढ़ी सियाहकी। (ज़ौक़)

सब आदमी एकसे नहीं होते—जब अच्छे आदमी पर कोई सन्देह करे तब या सभीको कोई बुरा समझे, तब क०।

(१)नरहरि निरखि कवित्त कहि, सब नर होत न एक सरि
(२) सब एकसे होत न कहूं होत अवनमें फेर,
कपरी खादी बाफ़ती लोह तवा समसीर। (छन्द)

सब उस्तरे बांधो, कोई तलवार न बांधो। फ़र दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो—नामर्दी पर क०। अंगरेज़ी राज्यके आर्मस् एक्ट-पर लाता है।

सब एकही थैलीके चट्टे हैं—एक बापके लड़के, एक घरके रहनेवाले या एक साथ रहनेवाले। जहां सबका स्वार्थ एक सा हो या सबकी राय एक होती हो, वहां क०।

सबक़ और तबक़ दोनों मौजूद हैं—(मु०) पाठ और भोजन दोनों। मौलवी सारा काम अपने विद्यार्थियों हीसे लेते हैं। स्कूलके नौकरोंको भी क०।

सब काम थक़ा, तो बुरा काम तक़ा—(पं०) जब कोई काम नहीं चलता तब छोटे काम पर निगाह जाती है।

सब कामोंमें पूरी, कोई न कहे अधूरी—अभिमानी स्त्रीको व्यंगसे क०।

सबकी मैया सांझ—संध्या सबको आराम देनेवाली है।

सब कुत्ते स्वर्गको जायँ तो जूठी पत्तल कौन चाटे दे० 'सब ही कूकर'।

सबके गुरु गोवर्द्धनदास—गुरु घंटालको क०। दे० "गुरु घंटाल"।

सबके दांव अंडे बच्चे, हमारे दांव कुड़क—अपनी निष्फलता पर क०।

सबके दाता राम—ईश्वर सबको देनेवाला है।

सबके पांय नउनियां धोवे, धोवत आप लजाय—जो दूसरेका कार्य तो करता है परन्तु अपना करते हुए शर्माता है, उसे क०।

सब केहू बोले तो नीक लागेला, कपूर बहू बोले टिहुक चरेला—(पू०) सास अपनी उस पतोहूको कहती है, जिससे घृणा करती है।

सब कोई झूमर पहरे, लंगड़ी कहे "हमहूं"—(ज०) जो जिस वस्तुके योग्य न हो उसकी इच्छा करे, तब क०।

सब कोई मिलियो, लंगोटिया न मिलियो—क्योंकि वह सब भेद जानता है।

सबको ठेल, मैं अकेल—स्वार्थियों पर क०।

सब गहनोंमें चन्दन हार—चन्दहार सब गहनोंमें अच्छा होता है। वह सबमें अच्छा है।

सब गुड़ मिट्टी हुआ—जब बना बनाया काम बिगड़ जाता है, तब क०।

सब गुणकी आगर धीया नाक बिना बेहाल—(पू० जं०) जो बके बहुत और काम थोड़ा करे, उसे क०।

सब गुणकी आगर, फूटल गागर—सब गुणसे परिपूर्ण है परन्तु घरमें केवल फूटी गगरी है।

सब गुणकी पूरी, कौन कहे अधूरी—(जं०) मूर्ख स्त्रीको व्यंगसे क०।

सब गुण भरा ठकुरवा मोर, अपने पहरू अपने चोर—जब रक्षक ही भक्षक बन जाता है, तब क०।

सब गुण भरी बैतरा सोंठ—बैतरा सोंठ बहुत गुणकारी है। जो सब गुणोंमें सम्पन्न हो, उसपर क०। व्यंगसे नष्ट स्त्रियों पर भी क०।

सब घटा देते हैं मुफलिसके गरज मालका मोल प्रत्येक मनुष्य गरीबके मालका कम दाम लगाते हैं अर्थात गरीबोंकी उपेक्षा प्रत्येक स्थानोंमें होती है।

सब छोड़ दे पर सत न छोड़े—सत्यके महात्मके लिये क०। जो अनेक कष्ट सहने पर भी अपने सत्यको नहीं छोड़ता, उसकी अन्तमें विजय होती है। हरिश्चन्द्रादिकी कथा तो इस विषयके प्रमाण स्वरूप प्रसिद्ध ही हैं, अब एक नया दृष्टान्त दिया जाता है।

सत्यवान नामक किसी राजाने सत्यपुर नामक एक नया नगर बनाया। उसे आबाद करनेके लिये उसने सब शहरोंमें इश्तहार बँटवा दिया, कि अमुक दिनसे इस नगर-

इष्ट सिद्धिमें परे जो विघ्न, तबहु मन न करो उद्विग्न।
होइहि अवसि अट्टायम करी, सतुआ बांधके पाछे परो॥"
(लो० सं०)

सत्तू मन भत्तू जव घोले जव खाय, धान विचारे भले, कूटे खाये चले—(पू०) दे० "धान विचारे……"

सत्य कहहिं कविनार सुभाऊ, सब विधि अगम अगाध दुराऊ—(तुलसी) स्त्री-चरित्रपर क०।

सत्य वचन विश्वास न करहीं। वायस इव सब ही सन डरहीं—(तुलसी) वहमी मनुष्यको क०।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्—(सं०) सत्य बोलो, मीठा बोलोपर ऐसा सत्य भी न बोलो जो दूसरेको अप्रिय लगे।

सत्य समान धर्म नहिं दूजा—(तुलसी) स्पष्ट।

सत्ये नास्ति भयं क्वचित्–सचको डर नहीं।

सदका दिए टले बलाय, उधार दिये गाहक जाय (व्य०) सदकेसे सब बला दूर होती है और उधार देनेसे गाहक छूट जाता है।

सदा ईद नहीं जो हलुआ खाय—(मु०) पेटू तथा व्यंजनप्रिय आदमीपर क०।

सदा एक ही रुख नहीं नाव चलती—सब दिन एकसे नहीं जाते।

सदा किसीकी नहीं रहती—भाग्य परिवर्त्तनपर क०।

सदा न काहूकी रही, गल पीतमकी बांह।
ढलते ढलते ढल गई, तरुवरकी सी छांह॥

सदाको पदनी उरदों दोष—(ज०) जो अपने स्वाभाविक दोषको कोई बहाना लगाकर छिपाता है, उसपर क०।

सदाके उजड़े नाम बस्तीराम—(च०) हैसियत या गुणके अनुसार नाम न रहनेपर क०।

सदाके दानी मूसलके नौ टके—कंजूसको व्यंगसे क०। तात्पर्य्य यह है कि यह सदाके दानी हैं, एक टकेकी चीज़के नौ टके देते हैं।

सदाके दुखिया, नाम चंगे खाँ—(च०) हैसियतके प्रतिकूल नाम रहने पर क०।

सदा दिन एकसे नहीं जाते—दुख और सुख आदमीको हुआ ही करता है।

सदा दिवाली सन्त घर, जो गुड़ गेहूं होय—जिसके घरमें खाने पीनेकी कमी नहीं है उसके घर नित्य त्यौहार है। 'जो घर गेहूं होय' भी कहते हैं।

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय। सदा न योवन थिर रहे; सदा न जीवे कोय—सदा दिन एकसे नहीं रहते—

(१) चलि चलि लखि दुति तड़ित घन,
सुखद समो भनि खोय।
सदा न फूलि तोरई, सदा न सावन होय।

(२) ये भरी जुगनू चमकसे यह बनेकी बात है,
मूढ़ क्यों कि सर्वदा रहती नहीं बरसात है।

(३) रहती है कब, बहारे जवानी तमाम उम्र,
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई।

सदा नाव काग़ज़की बहती नहीं—कच्चा काम थोड़े दिनमें बिगड़ जाता है।

सदा फूली फूली चुनी है—भाग्यवान आदमी पर क०।

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहें गणेश। पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश—मंगलाचरण है।

सदा मियां घोड़े ही तो रखते थे—किसीको व्यंगसे क०।

सपूती रोवे टूकोंको, और निपूती रोवे पूतोंको—जिसे जन है उसे धन नहीं और जिसे धन है उसे जन नहीं।

सपूतोंके कपूत और कपूतोंके सपूत—अच्छोंके बुरे और बुरोंके अच्छे। जैसे उग्रसेनके कंस और हिरण्यकश्यपके प्रहलाद।

सफ़र कर्दः विसियार गोयद दरोग़—(फ़ा०) मुसाफ़िर कितनी झूठी बातें करते हैं।

सफलताका मूल विश्वास है—बिना विश्वासके किसी काममें सफलता नहीं होती। सं० विश्वासो फल दायकः।

सफ़ेदीपर स्याही—(व्य०) लेख पर क०। (१) तात्पर्य यह है कि जो बात लिख दी वह बदल नहीं सकती। (२) बुढ़ौतीमें कलप लगाकर बाल काले करनेवालेको क०। सफ़ेद काग़ज़पर स्याहीसे लिखकर मुकरना और बुढ़ौतीमें बाल काले करना दोनों

काम निन्दित समझे जाते हैं।

बाक़ी है दिलमें शेख़के हसरत गुनाहकी।
काला करेगा मुंह भी जो दाढ़ी सियाहकी। (ज़ौक़)

सब आदमी एकसे नहीं होते—जब अच्छे आदमी पर कोई सन्देह करे तब या सभीको कोई बुरा समझे, तब क०।

(१) नरहरि निरखि कवित्त कहि, सब नर होत न एक सरि
(२) सब एकसे होत न कहुं होत उनमें फेर,
कपरी खादी बाफ़ती लोह तवा शमशेर। (छन्द)

सब उस्तरे बांधो, कोई तलवार न बांधो।
कर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो—नामर्दों पर क०। अंगरेज़ी राज्यके आर्मस् एक्ट पर लाना है।

सब एकही थैलीके चट्टे हैं—एक बापके लड़के, एक घरके रहनेवाले या एक साथ रहनेवाले। जहां सबका स्वार्थ एक सा हो या सबकी राय एक होती हो, वहां क०।

सबक़ और तबक़ दोनों मौजूद हैं—(मु०) पाठ और भोजन दोनों। मौलवी सारा काम अपने विद्यार्थियों हीसे लेते हैं। स्कूलके नौकरोंको भी क०।

सब काम थका, तो बुरा काम तका—(पं०) जब कोई काम नहीं चलता तब छोटे काम पर निगाह जाती है।

सब कामोंमें पूरी, कोई न कहे अधूरी—अभिमानी स्त्रीको व्यंगसे क०।

सबकी मैया सांझ—संध्या सबको आराम देनेवाली है।

सब कुत्ते स्वर्गको जायँ तो जूठी पत्तल कौन चाटे दे० 'सब ही सूकर'।

सबके गुरु गोबर्द्धनदास—गुरु घंटालको क०। दे० "गुरु घंटाल"।

सबके दांव अंडे बच्चे, हमारे दांव कुड़क—अपनी निष्फलता पर क०।

सबके दाता राम—ईश्वर सबको देनेवाला है।

सबके पांव नउनियां धोवे, धोवत आप लजाय—जो दूसरेका कार्य तो करता है परन्तु अपना करते हुए शर्माता है, उसे क०।

सब केहू बोले तो नीक लागेला, कपूर बहू बोले टिहुक बरेला—(पू०) सास अपनी उस पतोहूको कहती है, जिससे घृणा करती है।

सब कोई झूमर पहरे, लंगड़ी कहे "हमहूं"—(ज०) जो जिस वस्तुके योग्य न हो उसकी इच्छा करे, तब क०।

सब कोई मिलियो, लंगोटिया न मिलियो—क्योंकि वह सब भेद जानता है।

सबको ठेल, मैं अकेल—स्वार्थियों पर क०।

सब गहनोंमें चन्दन हार—चन्द्रहार सब गहनोंमें अच्छा होता है। वह सबमें अच्छा है।

सब गुड़ मिट्टी हुआ—जब बना बनाया काम बिगड़ जाता है, तब क०।

सब गुणकी आगर धीया नाक बिना बेहाल—(पू० ज०) जो बके बहुत और काम थोड़ा करे, उसे क०।

सब गुणकी आगर, फूटल गागर—सब गुणसे परिपूर्ण है परन्तु घरमें केवल फूटी गगरी है।

सब गुणकी पूरी, कौन कहे अधूरी—(ज०) मूर्ख स्त्रीको व्यंगसे क०।

सब गुण भरा ठकुरवा मोर, अपने पहरू अपने चोर—जब रक्षक ही भक्षक बन जाता है, तब क०।

सब गुण भरी बेतरा सोंठ—बेतरा सोंठ बहुत गुणकारी है। जो सब गुणोंमें सम्पन्न हो, उसपर क०। व्यंगसे नष्ट स्त्रियों पर भी क०।

सब घटा देते हैं मुफ़लिसके गरज मालका मोल प्रत्येक मनुष्य गरीबके मालका कम दाम लगाते हैं अर्थात् गरीबोंकी उपेक्षा प्रत्येक स्थानोंमें होती है।

सब छोड़ दे पर सत न छोड़े—सत्यके महात्मके लिये क०। जो अनेक कष्ट सहने पर भी अपने सत्यको नहीं छोड़ता, उसकी अन्तमें विजय होती है। हरिश्चन्द्रादिकी कथा तो इस विषयके प्रमाण स्वरूप प्रसिद्ध ही हैं, अब एक नया दृष्टान्त दिया जाता है।

सत्यवान नामक किसी राजाने सत्यपुर नामक एक नया नगर बनाया। उसे आबाद करनेके लिये उसने सब शहरोंमें इश्तहार बंटवा दिया, कि अमुक दिनसे इस नगर-

मैं एक मेला लगेगा जो एक महीने तक रहेगा। सब तरहकी चीजोंके सौदागर अपना अपना माल लेकर आवें, जिसका माल बिकनेसे बाकी रह जायगा, उसकी कीमत सरकारी खजानेसे मिलेगी, बहुतसे दूकानदार अपना अपना माल लेकर आये और सबका माल बिका भी, जो बच रहा उसका दाम राजाके खजानेसे मिल गया। एक मनुष्य लोहेकी एक प्रतिमा बनवा कर मंत्रोंसे सिद्ध करके लाया था जिसका नाम उसने "दरिद्र" रक्खा था और उसका मूल्य एक लाख रुपये रक्खा था। उसमें गुण भी उसके नामानुसार ही था इसलिये कोई उसे खरीदनेमें राजी न हुआ। जब राजाको खबर लगी कि सबका माल बिक गया केवल एक आदमीकी चीजका दाम नहीं दिया गया तब उसने उस मनुष्यको बुलाया और उस प्रतिमाका हाल पूछा। उस मनुष्यने कहा कि मैंने इस प्रतिमाको मन्त्रसे सिद्ध किया है। यह जिस घरमें रहेगी वहां पूरा "दरिद्र" आ जायगा। इसीलिये इसे किसीने नहीं लिया। राजाने अपनी प्रतिज्ञानुसार उसे ले लिया और उसका मूल्य एक लाख रुपये देकर उसे अपने तोशेखानेमें रखवा दिया। रातको स्वप्नमें एक सुन्दर स्त्रीने आकर कहा कि राजा! मैं जाती हूं। राजाने पूछा कि तू कौन है और क्यों जाती है? उत्तरमें उस स्त्रीने कहा कि मैं लक्ष्मी हूं, तेरे यहां तो दरिद्र आया है यदि तू उसे न त्यागेगा तो मेरा रहना तेरे यहां नहीं हो सकता। राजाने कहा मैं यदि उसे ग्रहण न करूं तो मेरी प्रतिज्ञा भंग होती है इसलिये तू भले ही चली जा मैं इसे न छोड़ूंगा। कुछ देर बाद धर्म आया। उसने भी कहा कि राजा! तेरे घर दरिद्र आया है और लक्ष्मी भी चली गई अब मेरा रहना यहां ठीक नहीं, इसलिये मैं जाता हूं। राजाने उसे भी जाने दिया। इसी तरह सब गुण क्रम क्रमसे आकर राजाको सूचना देकर विदा हो गये। अन्तमें सत्य आया और कहा कि राजा! मैं भी जाता हूं। राजाने उससे पूछा कि तू कौन है और क्यों जाता है? तब उसने कहा कि मैं सत्य हूं। तेरे यहां दरिद्रका निवास है और लक्ष्मी धर्म कर्म सब तुझे छोड़ गये अब तेरे यहां मेरा निर्वाह नहीं हो सकता। इतना सुन राजाको बड़ा क्रोध आया और उससे बोले कि रे दुष्ट! तेरे ही पीछे तो मैंने सबका त्याग किया अब तू ही मुझे छोड़ा चाहता है तो जा अब मैं किसीका मुंह न देखूंगा और न अपना मुंह किसीको दिखाऊंगा इतना कह चद्दर तानकर सो रहा दूसरे दिन सत्य लौटकर आया और राजासे कहा कि "राजा मैं आ गया" राजाने आंखें बन्द किये हुए उससे पूछा कि तू कौन है और क्यों आया है? सत्यने कहा कि मैं सत्य हूं मैं सारी पृथ्वीमें घूम चुका परन्तु तेरे समान मेरी मर्यादा रखनेवाला कोई न मिला इससे कहीं मेरा जी न लगा इसलिये लौटकर तेरे ही पास आया हूं मुझे अंगीकार कर। राजाने उसे अंगीकार किया। इसी तरह कर्म धर्म आदि सब गुण लौट आये, अन्तमें लक्ष्मी भी आ गई। तात्पर्य यह है कि बिना सत्यके कर्म नहीं, बिना कर्मके धर्म नहीं और बिना धर्मके लक्ष्मी नहीं रह सकती अर्थात् सब गुणोंमें सत्य ही बड़ा है इसलिये इसे कभी न छोड़े।

सब जग रूठा रूठने दे, एक वह न रूठा चाहिये—
ईश्वरके प्रति उस मनुष्यका कहना है जिसका वक्त खराब आता है और सब कोई उससे फिरंट हो जाते हैं।

रूठे क्यों न राजा, जासों काज नाहिं काजा, एक तोहि महाराजा, और कौनकों सराहिये। रूठे क्यों न भाई, जासों काजू ना बसाई, एक तूही है सहाई, और कौन पास जाइये। रूठे क्यों न सब, मित्र, आठों याम एक चित्त, रावरे चरनहीसे नेह कों निबाहिये। सब जगहै रूठा, एक तूही है अनूठा, सब अंगमें अंगूठा, एक तू न रूठा चाहिये। (बहार दरवेश)

सब जहाज़ एक ही घाट लंगर करते हैं—
ईश्वर-वादियों पर क०। देश, जाति, धर्म, और मत भिन्न भिन्न होने पर भी उद्देश्य सबका एक ही है।

(१) आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्व देव नमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥
(महा भारत)

(२) मिलतें रस्तेके हैं सब हेर फेर,
सब जहाजों का है लंगर एक घाट. (हाली)

सब जीते जीके झगड़े हैं, यह तेरा है यह मेरा है। जब चल बसे इस दुनियांसे, ना तेरा है ना मेरा है। (नज़ीर)

सब जीते जीके झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या खाक हुए।
जब मौतसे आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़ज़िये पाक हुए
(नज़ीर)

सबज़ी मत देव गँवारनको, हंडिया भर भात बिगारनको—गँवारोंको भांग न पिलाना चाहिये।

भांग पीनेसे भूख बहुत लगती है।

सोहनको कुम्भकरन भोजनकी नीम सी।

सबज़ीमें सुरखी, खबर लाये घुरकी—अंगेड़ियोंको क०।

सब झूठे तो मर गये, तुम्हें न आई ताप—बहुत झूठेको क०।

सब ठाट पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बनजारा—(नज़ीर) मरनेपर कुछ साथ न जायगा, सब यहीं पड़ा रह जायगा।

(१) दौलत दुनियाँ माल खज़ाना, रहेगा महलमहल खासा।
कोई न तेरे संग चलेगा, जंगल होगा वासा (यादकमाल)

(२) हैरत हो हाथिनके हलका हिराय जैहैं
रोरे सब घोरे रथ महल बिलाएँगे।
छोड़ें रुपैयापर छोड़ें रहेंगी कोरी
परोसी नितम्बिनी ते परी रहि जावेंगी॥
पालकीमें हालको खबर न रहैगी जब
कालकी कविरकी फौजें उठ धावेंगी।
संभुज सिपाही माहो चलत मसालियोंते
नौबत बजाइवेकी नौबत न आवेंगी॥

सब तीरथ बार बार, गंगासागर एक बार—गंगासागरमें कष्ट बहुत होता है, इसलिये क०।

सबतें कठिन जात अपमाना—जातका अपमान नहीं सहा जाता।

यद्यपि दारुण दुख जग नाना,
सबतें अधिक जाति अपमाना। (तुलसी)

सबते लघु है मांगिबो, यामें करे न सार। बलि पै याचत ही भये, बावन तन करतार—(वृन्द) मांगना सबसे बुरा है।

सब तोड़े, मेरा एक रब न तोड़े—(ज०) बुरी अवस्थापर क०। दे० "सब जग रूठा"।

सब दिन चंगे, तिहवारके दिन नंगे—बुरी अवस्थापर क०। दे० "और दिन खीर पूरी"

सब दिन जात न एक समान—जब कोई संपत्तिवाली मनुष्य दरिद्र हो जाता है, तब उसकी दशा देखकर क०।

सब धड़ कढ़िगो अटकी पूंछ—जब कोई कार्य पूरा होनेमें थोड़ा बाकी रह जाता है और उसमें कुछ कठिनाई पड़ती है, तब ऐसा क०।

सब धान बाईस पसेरी—जहां न्याय अन्याय, मूर्ख पण्डित, अच्छे बुरेका कुछ विचार न हो, वहां क०। (व्य०) बहुत सस्ती चीज़पर भी क०।

सब नर काम लोभ रत क्रोधी, देव विप्र गुरु संत विरोधी—कलियुगकी महिमापर क०।

सब पंचन मिलि कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज दे० "पाँच पंच मिलि"

सब पीर छूटे, पकड़ी गई बीबी नूर—जहां बड़े बड़े दोषी तो बच जायें और कोई छोटा फँस जाय, वहां क०।

सब पेड़ोंमें बड़ा जो बड़, आकाश बाकी चोटी पाताल बाकी जड़, हरे हरे पत्ते लाल लाल फर, अकबर बादशाह गीदी खर—

इस कहावतका निकास इस कहानीसे हुआ है:—अकबर बादशाह कविताके बड़े प्रेमी थे, यह जानकर चार दिहातियोंने अपनी कवितासे उन्हें प्रसन्न करना चाहा। तीनने तो उपरोक्त तीनों चरण बना लिये, पर चौथा न बन सका, इसलिये वह सोच विचारमें बैठे थे कि एक मसखरा उधरको आ निकला। उसने चौथे चरणकी पूर्ति कर दी। चारों दिहाती दरबारमें पहुंचे और आज्ञा पाकर अपना अपना पद सुनाने लगे। तीन तो बारी बारीसे अपने पद सुना गये, जब चौथेने अपना पद सुनाया तो सब दरबारी उसे धिक्कारने लगे और बादशाह भी बहुत नाराज़ हुए। उस दिहातीने जब यह समझा कि उससे बड़ी भारी भूल हुई है तो उसने उस मसखरेका नाम बता दिया, जिसने चौथा चरण बना दिया था। बादशाहने उसे निरा गँवार देख हँसकर छोड़ दिया और उसे चले जानेकी आज्ञा दी।

सब मद मद है विद्या मद उनमाद—सब नशोंमें विद्याका नशा अधिक है, थोड़ी विद्या मनुष्यको पागल बना देती है।

सब रात पीसा, ढकनीके उठाया—(पू०) अधिक परिश्रम करके सामान्य लाभ हो, तब क०।

सब रामायन पढ़ गये सीता केकी जोय—सब बात सुनकर भी जो नहीं समझता, उसे क०।

सब शकल लंगूरकी एक दुमकी कसर है—(व०) भद्दी पोशाक पहिननेवालेको क०।

सब सदके मैं अलग—(ज०) सिवा मेरे और सब

तुमपर न्योछावर है। बनावटी प्रेमपर क०।

सब संसै मिट जायगा,(जब) होगा राम सहाय। रानी उस भगवानसे, लीजे ध्यान लगाय— राजा नलका कहना दमयन्तीके प्रति वा हरिश्चन्द्रका शव्याके प्रति। हिम्मत न हारनेके लिये क०।

सब सुखके साथी हैं, दुखका साथी कोई नहीं— स्पष्ट है।

इसपर एक दृष्टान्त है कि :—एक लुटेरा सदैव विदेशियोंको लूटा करता था और उसी धनसे अपने कुटुम्बका पालन किया करता था। एक दिन एक फकीर चला जाता था, वह लुटेरा उनको भी लूटने गया। तब फकीर साहबने कहा कि भाई एक बात मेरी भी सुन लो, पीछे तुझे अख्त्यार है, मुझे लूट लीजियो। लुटेरेने कहा, कहो क्या कहते हो। फकीरने कहा तू सबको इस तरह क्यों लूटा करता है? उसने उत्तर दिया कि कुटुम्ब पालनेको। फकीर साहबने कहा कि तू उन खानेवालोंसे पूछ कि जिस समय भगवानके यहांसे तुझे इस लूटनेका दंड मिलेगा उस समय तुम सब मिलकर उस दुःखको बाँट लोगे या नहीं। वह मनुष्य अपने घर गया और वहाँ अपने लड़के वा स्त्रीसे यह बात पूछी; सबने कानपर हाथ रखकर कहा कि हम क्या लूटनेको कहते हैं; हम इसका दण्ड क्यों भोगेंगे। तब वह फिरकर फकीरके पास आया और वही उत्तर सुनाया तो फकीर साहब बोले कि ऐ मूर्ख! खानेको सब मौजूद और मार खानेको तू ही अकेला रहा। फकीरका कहना उसके दिलमें घुस गया। उसने सोचा कि यह सब अन्याय मेरे ही गलेपर रहा। उसी दिनसे उसने लूटना छोड़ दिया। तात्पर्य यह है कि सब कोई अपने अपने सुखके साथी हैं दुखमें कोई पास भी नहीं खड़ा होता।

सबसे बड़ी भूख, जो पावे सो चूख— भूखमें जो मिलता है वही खा लिया जाता है।

सबसे बेहतर है, मियाँ, साहब-सलामत दूरकी— दूर रहना अच्छा, बहुत घनिष्ठतासे आदर घट जाता है।

सबसे भला किसान, खेती करे और घर रहे— जो जीविकाके लिये विदेश जाते हैं, उनपर क०।

सबसे भली चुप— स्पष्ट।

(सं०) मौनम् सर्वार्थसाधकम्।

सबसे भले भीखके रोट— मुफ्तखोरोंको क०

सबसे भले मूमलचन्द, करें न खेती भरें न दंड— लुटेरोंको क०।

सबसे रल-मिल चालिये, जब लग पार बसाय, मिष्ट बचन मुख बोलिये, नेको ही रह जाय— स्पष्ट।

सबसे हिलिये सबसे मिलिये, सबसे कीजे चाव। हाँजी हाँजी सबसे कहिये, बसिये अपने गाँव— स्पष्ट।

सब स्वांग बनते हैं पर रुपयेका स्वांग नहीं बनता— रुपयेका काम रुपयेसे ही निकलता है।

सब ही मारग साइयाँ आगे एक मुकाम। जोही सन्मुख हो रहा ताही सेती काम— सबको बड़ा समझना चाहिये परन्तु जिससे अपनेको काम पड़ा है उसको मुख्य करके बड़ा समझना ही बुद्धिमानीका काम है।

एक दृष्टान्त है कि कोई मनुष्य सब पंथके साधुओंकी सेवा किया करता था। उसने एक बार साधुओंका भंडारा किया और सब भेषके साधु इकट्ठे हुए। सबको बहुत अच्छे प्रकारके एकसे भोजन करवाये। जब सब साधु भोजन कर चुके तब उसने अपने गुरुकी पत्तलमेंसे प्रसाद लिया। किसी साधुने कहा, 'क्यों भाई यह अन्तर क्यों किया, तुम्हें सबकी पत्तलमेंसे प्रसाद लेना था' उसने उत्तर दिया कि 'महाराज सुनिये, जब लड़कोंका विवाह होता है और जिस समय बरात आती है तब बरातियोंकी दूलहसे अधिक शिष्टाचारी होती है, परन्तु लड़कीका हाथ लड़केको ही पकड़वाया जाता है। सो महाराज आप सब बराती हैं और गुरु दूलहके समान होते हैं इसलिये इतना अन्तर किया। यह सुनकर साधु चुप हो गये।

सब ही कूकर काशी जायँ, तो पत्तल चाटे कौन— (पू० ज०) सब कुत्ते स्वर्गको चले जायँ, तो जूठी पत्तल कौन चाटे। जब अयोग्य मनुष्य कोई काम करने जाय और न कर सके; तब क०।

सबै सुहाये ही लगैं, बसे सुहाये ठाम, गोरे मुख बेंदी लसे अरुन पीत सित स्याम—(बिहारी) अच्छी जगह रहनेसे सभी चीज़ोंकी शोभा होती है।

सबै हँसत करताल दै, नागरताके नांव। गयो

गरब गुणको मरे, बसे गंवारे गांव—गवांरके साथ गांवमें बसनेसे गुणका गर्व चला जाता है और उस चतुरको सब कोई ताली बजाके हंसते हैं।

सब्र कर मनमें, ता सुख लहे तनमें—धैर्य्य रखनेसे शरीरको सुख मिलता है।

सब्रकी डालमें मेवा लगता है—सबका फल अच्छा होता है।

सब्रकी दाद खुदा देगा—सताये हुएको धैर्य्य देते समय क०।

सब्र तल्ख़ अस्त, व लेकिन बरे शीरी दारद—(फा०) धैर्य्य कड़ुआ है, किन्तु उसका फल मधुर होता है।

सबही जात चमारकी, बिना चाम नहिं कोय।
बिना चाम वह आप है, जिसको लखे न कोय—निराकार परमात्माके लिये कहा है।

समाको चूका डामनी और डालका चूका बन्दर बराबर है—स्पष्ट।

सभा बिगारें तीन जन, चुग़ल चूतिया चोर—स्पष्ट।

सभी भूमि गोपालकी यामें अटक कहा।
जाके मनमें अटक है सोई अटक रहा—पूर्वकालमें सिन्ध नदी पार करना हिन्दू धर्मके विरुद्ध बतलाया जाता था। कहा जाता है कि १५८५ ई० में महाराज मानसिंहने अपने हिन्दू सिपाहियोंको नदी पार करनेके लिये कहा। सिपाहियोंके आनाकानी करनेपर उन्होंने उक्त मसल कही।

सभी सहायक सबलके, कोउ नहिं निबल सहाय
पवन जगावत आगको, दीपहि देत बुझाय—(वृन्द) बलवानके सब सहायक होते हैं निबलका कोई नहीं, हवा आगको जगाती है और दीयेको बुझा देती है।

समझका घर दूर है—समझ होना बहुत मुश्किल है।

समझदारको मिट्टी ख़राब है—समझदार होपर सब कामका भार पड़ता है, इसलिये उसीपर बुराई-भलाई निर्भर है।

समझनेवालेकी मौत है—ऊ० दे०।

किसी समय अकबरके दरबारमें एक बढ़िया गवैयेका गाना हो रहा था, सब कोई बीच बीचमें सिर हिलाते जाते थे। बादशाहने कचहरीमें आकर बीरबलसे पूछा कि क्या सब लोग गाना समझते हैं? बीरबलने उत्तर दिया कि समझनेवाले तो बहुत ही कम हैं अभी मैं उनको छांटे देता हूं। यह कहकर उन्होंने दरबारियोंको सम्बोधन करके कहा कि इस तरह सिर हिलाना जहांपनाहको बहुत बुरा लगता है। अब कोई ऐसी हरकत करेगा तो उसका सर ले लिया जायगा। इसपर सब सम्हलकर बैठ गये। सरका हिलाना बन्द हुआ और गाना चलता रहा। अन्तमें एक हद मनुष्यसे न रहा गया। उसके मुंहसे निकल पड़ा, "समझदारको मौत है।" तब बीरबलने बादशाहसे कहा कि यही एक मनुष्य गाना समझता है। तब ही इसके मुखसे घबराहटके कारण ऐसे शब्द निकले, बिना सर हिलाये इसको बड़ा कष्ट हो रहा है।

सुकवि जननके हृदयकी जानत हो कछु कौन।
असमझवार सराहिबो समुझवारको मौन॥
(मुरारीदान)

समझा और पत्थर हुआ—समझदारके मनमें जो बात बैठ जाती है उससे वह कभी विचलित नहीं होता।

समझाये समझत नहीं, मन नहिं धरता धीर।
पराजय पहिले बनी, पीछे बना शरीर—स्पष्ट।

समझे सो गधा, मनाड़ीकी जाने बला—जो समझता है उसीकी ख़राबी है।

समझो न बूझो, लूंटा लेके जूझो—बिना समझे किसी बातपर हठ करने पर क०।

समय करे नर क्या करे, समय समयकी बात।
किसी समयके दिन बड़े, किसी समयकी रात—स्पष्ट।

समय चूकि पुनिका पछिताने—देखो "का वर्षा"

समय न बारंबार—अच्छा समय घड़ी घड़ी नहीं आता।

समय पड़ेकी बात बाज़ पर झपटे बगुला—(गिरिधर) जब समय ख़राब आता है तब दुर्बल भी सबलको सताता है।

समय पाय तरुवर फले, केतक सींचो नीर—समयसे पहिले कुछ नहीं होता। समय आने पर ही सब काम होते हैं। असमयमें अनेक यत्न करनेपर भी नहीं होते।

समय समयकी बात है—दे० "वक्त की रागनी है"।

समय समय सुन्दर सभी, रूप कुरूप न कोय—अपने समयपर सभी अच्छे लगते हैं कोई बुरा नहीं लगता।

समरथको नहिं दोष गुंसाई। रवि पावक सुरसरिकी नाईं—(तुलसी) बलवानको दोष करने पर भी दोष नहीं लगता। जब कोई धनवान कुकर्म करे या किसी पंडितसे भूल हो जाय, तब लोग व्यंगसे क०।

> जो अहि-सेज सयन हरि करहीं,
> बुध कछु तिनको दोष न धरहीं। (तुलसी)

समुझै मीत मीतके नैन—मित्रकी हालत मित्र ही जानता है।

> दृष्टि परे कहुं नंदकुमार, बोली बरन बरनसे बार।
> कहै पखानो ज्यों मति पैन, समुझै मीत मीतके नैन।
> (सूर सं०)

समुन्दर क्या जाने दोज़खका अज़ाब—आगका कीड़ा नर्कके कष्टको क्या जाने? क्योंकि वह आगहीमें रहता है।

समुन्दर सोखको दरया क्या?—जो बड़े बड़े काम सुगमतासे कर लेता है उसके लिये छोटा काम कुछ भी नहीं है।

सम्मन ऐसी प्रीतकर, जैसी करे कपास। जीते तो हुरमत रखे, मुए चलेगी साथ—प्रीत कपासकी तरह करनी चाहिये, जो जीते जी तन ढककर इज़्ज़त रखती है और मरनेपर कफ़न बनकर साथ जाती है।

सम्मन ऐसी प्रीत कर ज्यों हिन्दूकी जोय। जीते जी तो संग रहे मरे पै सत्ती होय—स्पष्ट। ऊ० दे०।

सम्मन ऐसी प्रीत कर जैसे शकर घी, जात भात पूछे नहीं जिससे मिल जाय जी—स्पष्ट।

सम्मन चूड़ी कांचको कौड़ी कौड़ी देख, जब गल लागी पीउके लाख टकेकी एक—स्पष्ट। अच्छी संगतसे सामान्य चीज़का भी बहुत आदर हो जाता है।

सम्मन धागा प्रेमका जिन तोड़ो चटकाय। तोड़े पर जो जोड़ हो बीच गाँठ पड़ जाय—स्पष्ट।

सम्मन वह दिन कौनसे जो सुखसे लाई प्रीत, अब दुख दे न्यारे भये कौन गाँवकी रीत—(ज०) स्पष्ट।

सम्मन वह फल कौनसे जो पक्के पै कड़वास, कच्चे लगें सुहावने गद्दर करें मिठास—मनुष्यकी तीन अवस्था पर क०। पक्का=बुढ़ापा, कच्चा=लड़कपन, गद्दर=जवानी।

सम्मन साँझ अंधेरमां भूल बाट मत चाल, जान गँवावे एक दिन संग गँवावे माल—(उप०) स्पष्ट।

सयाना कौआ गू खाय—जब कोई सयाना आदमी धोखा देखता है, तब क०। दे० "सयानेका गू तीन जगह"।

सयाना सो दीवाना—बहुत सयाना आदमी पागलके बराबर है।

सयानेका गू तीन जगह—जो बहुत चालाक होते हैं, वही धोखा भी बहुत खाते हैं।

दो मित्र एक साथ कहीं जा रहे थे। उनमेंसे एक तो सीधासादा था, और दूसरा बहुत चालाक था। रास्तेमें कहीं दोनोंके पैरोंमें विष्ठा लग गई। जो सीधा था उसने तो तुरंत अपना पैर धो डाला, परन्तु जो चालाक था, उसने कहा कि यह विष्ठा है या नहीं इसका क्या ठीक? इसलिये उसे हाथ लगाकर देखा। जब इसपर भी उसे निश्चय न हुआ, तब उसने हाथको सूंघा, जिससे उसकी नाकमें भी विष्ठा लग गई, इस तरह वह तीन जगह गंदा हुआ। (मै०) दे० बहु काबिल से तीन ठाम माख।

सरकारसे मिला तेल, पल्ले हीमें मेल—राजासे अगर कोई तुच्छ वस्तु भी मिले तो उसे अपना सौभाग्य ही समझना चाहिये।

सरगसे गिरो खजूरे अँटकी—एक दुःखसे छुटकारा पाते ही दूसरे दुःखमें फँसे, तब क०।

सरदारीका डंडा अटका है—जो अपनी व्यतीत प्रतिष्ठाके अभिमानमें रहकर वर्त्तमान अवस्थानुसार काम नहीं करता, उसे क०।

सरदीका मारा पनपताहै, अन्नका मारा नहीं पनपता – स्पष्ट।

सरधा ढाल जो पहने खावे, वाके टोटा कभी न आवे—जो अपने सामर्थके अनुसार खाता पहिनता है, उसको किसी बातकी कमी नहीं रहती है।

सरधा लागे कइलों भतार, ऊहो निकलल जातके चमार—(पू० ज०) जल्दीमें कोई काम किया जाय और उसका परिणाम बुरा हो, तब क०।

सरबस खाय भोग करि नाना, समर भूमि भा दुर्लभ प्राणा—(तुलसी) कृतघ्नको क०, जो कामके वक्त, पीठ दिखावे।

सरसों फूले फागमें और सांझी फूले सांझ, नाहि कभी फूले फले, जो तिरिया हो बांझ—स्पष्ट।

सराफ़की थैलीमें खोटा खरा एक—कुलीन घरमें नीच संबन्ध हो जाने पर क०।

सरायका कुत्ता हर मुसाफ़िरका यार—मुफ्तखोरको क०।

सराहल बहुरिया डोम घर जाय—(पू० ज०) बहूको सराहो, तो भंगीके साथ निकल जाय। बहुत तारीफ़ करनेसे दिमाग़ ख़राब हो जाता है।

सरैसेका टट्टू बना फिरता है—निकम्मे आदमीको क०। सरैसा दरभंगा ज़िलेका एक परगना है, वहांके टट्टू मशहूर हैं।

सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति—जब धनवानकी सेवा गुणी करते हैं और उसके आश्रयमें रहते हैं, तब क०।(१) धनवानमें सब गुण रहते हैं। (२) सब गुणियोंको धनवानका आश्रय ग्रहण करना पड़ता है।

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः...(भर्तृहरि)

सलामत रहे वह, जिसका बड़ा भरोसा है—(ज० मु०) जिसका लड़का मर जाता है उसको धैर्य्य दिलानेके लिये क०।

सलाह न शुद, बला शुद—(फा०) ज़ियाफ़त क्या थी आफ़त थी।

सवाब न अज़ाब, कमर टूटी मुफ़्तमें—निष्फल परिश्रम पर क०।

सवारीकी सवारी ज़नाना साथ—घोड़ीकी सवारी पर क०।

सवाल दीगर जवाब दीगर—पूछा जाय कुछ और उत्तर मिले कुछ, तब क०।

सवेरेका भूला शामको लौट आवे तो भूला नहीं कहलाता—अपनी भूलको आप ही जल्दी सुधार ले, तब क०।

करी कलह तो बेगि चलु, ज्यों पिय हित अरसांझ।
भोर भयो भूल्यो नहीं, ज्यों फिर आवे सांझ।

ससुरार सुखकी सार, जो रहे दिना दो चार—ससुरालमें बहुत न रहना चाहिये।

इसपर एक कहानी है। एक कायस्थ अपनी ससुराल गया। वहां अपना अधिक आदर सत्कार देखकर उसने पहिला मिसरा कहा। जब उसके सालेने (जो उसे अपने घर रखनेमें राजी न था) देखा कि इसको वहां रहनेका चस्का पड़ गया है, तब दूसरा मिसरा बनाकर उसमें जोड़ दिया। पूरी मसल यह है:—ससुरार सुखकी सार, जो रहै दिना दो चार। रहै मास, पखवारा, हाथमें खुर्पा बग़लमें खारा। देखो "दूर जमाई"।

सस्ता ऊँट महँगा पट्टा—दे० 'दमड़ीकी घोड़ी"।

सस्ता गेहूं घरघर पूजा—गेहूं सस्ता होनेसे घरघर आनन्द होता है।

सस्ता रोवे बार बार, मँहगा रोवे एक बार—(व्या०) सस्ती वस्तु ख़राब होती है, क्योंकि वह रोज़ रोज़ बिगड़ती है और उसपर ख़र्च होता रहता है, पर मंहगी चीज़का एकही दफ़े दाम ज्यादा लग जाता है और जल्दी बिगड़ती नहीं।

सस्ता हँसावे महंगा रुलावे—(कृ०) सस्ता अन्न होनेपर लोग ख़ुश होते हैं, और मंहगा होने पर कष्ट पाते हैं।

सस्ती भेड़की टांग उठाकर देखते हैं—(व्या०) सस्ती चीज़को लोग बार बार इसलिए देखते हैं कि कहीं ऐब तो नहीं है।

सस्तेको देख भालकर लेना चाहिये—(व्या०) सस्ती चीज़ अच्छी तरह देखकर लेना चाहिये।

सस्सों जाऊँ, या गोसों जाऊँ—(ज०) खरगोश-के लिये जाऊँ या उपलोंके लिये?—एक गँवार स्त्री जंगलमें रोज़ इंधनके लिये गोबर बटोरने जाती थी। एक दिन कहीं उसने एक खरगोश पकड़ लिया। उसने समझा कि खरगोश मुझे रोज़ मिलेगा। इसीसे उक्त मसल कही।

सहज पके सो मीठा—जो काम सुगमतासे हो जाय वही अच्छा है।

सहजाइल कुतिया मुंह चाटे—दे० "कुत्ता मुंह लगानेसे"।

सहता सहे, न सहता छाती दहे—जो बात सहने योग्य होती है वह तो सही जाती है और जो असह्य होती है उससे छाती जलती है।

सहनाईका बजाना और सत्तूका फांकना एक साथ नहीं होता—दो विपरीत काम एक साथ नहीं होते—दे० "लिट्टी गंडेरी"।

दुइ कि होइ एक संग भुवाला। हँसब ठठाइ फुलाउब गाला॥ (तुलसी)

सहरी खाय सो रोज़ा रक्खे—(मु०) मुसलमानोंमें यह रिवाज़ है कि रोज़ेके दिनोंमें सूर्य्योदयके कुछ पहिले खाना खा लेते हैं।

एक मियां साहिबके पास एक कुत्ता था। एक दिन उस कुत्तेने उनका खाना, जिसे उसने प्रातःकाल खानेके लिये रखा था, खा डाला। इसपर मियां साहिबने गुस्सेमें आ उसे एक खंभेसे बांध दिया और कहा कि मेरे बदले आज यही कुत्ता रोज़ा रक्खेगा, क्योंकि इसीने प्रातः-कालका खाना खाया है।

सहरी भी न खाऊँ तो काफ़िर न हो जाऊँ—दे० "रोज़ा न रखे"।

एक समय बहुतसे मुसलमान सहरी खा रहे थे। उनमें एक मुसलमान ऐसा भी था जो रोज़ा नहीं रखता था। उसको अपनी पांतमें देखकर सबके सब कहने लगे, कि तुम क्यों खाते हो? तुमको क्या रोज़ा रखना है, इसपर उसने कहा कि नमाज़ भी नहीं पढ़ता हूं, न रोज़ा ही रखता हूं अगर सहरी भी न खाऊं तो क्या काफ़िर हो जाऊं।

सहस बाहु सुरनाथ त्रिशंकू, केहि न राजमद दीन कलंकू—(तुल०) उच्चपद पाकर सभीको अभिमान होता है और उसी अभिमानके कारण उनको नीचा देखना पड़ता है। सहस्रबाहु, इन्द्र और त्रिशंकु तीनोंको अपने अभिमानका फल भोगना पड़ा था।

सहसा करि पछिताय विमूढ़ा—(तुल०) मूर्ख एकाएकी कार्य्य करके पछिताते हैं—

सहसा करि पाछे पछताहीं, कहहिं वेद, बुध ते बुध नाहीं।

सहस्र गोपी एक कन्हैया—जब एक पदके लिये हज़ार प्रार्थी हों, तब क०। एक कृष्णकी इच्छुक हज़ारों गोपियां थीं।

सहस्र डुबकी मैं लयी, मोती लगा न हाथ। सागरका क्या दोष है, हीन हमारे भाग—अभागे मनुष्य कहा करते हैं।

सही गये, सलामत आये—(मु० ज०) जो रोज़-गारके लिये विदेश जाय और खाली हाथ घर लौट आवे, उसे व्यंगसे कहते हैं।

साईसी इल्म दरयाव है जामें सौ सौ बकसुआ लगत हैं—साईसके कार्य्यमें भी हुनर चाहिये। (सभी पेशेमें कुछ न कुछ गुप्त रहस्य रहता है)। मूर्खको भी व्यंगसे क०।

साईसोंका काल मुंशियोंकी बहुतात—साईस कम और गुमाश्ते बहुत मिलते हैं। जब छोटे आदमियोंको काम मिल जाय और इज़्ज़तदार वा पढ़े लिखेको न मिले, तब क०।

टामस थेकम साहबको घोड़ोंका बहुत शौक था। एक दिन उन्होंने एक अरबी घोड़ा खरीदा। मुनशी बदर-दीनने खैरख़्वाही दिखाते हुए कहा कि इसपर अगर पंजाबी साईस रक्खा जाय तो घोड़ेकी खिदमत ब,खूबी हो। साहबने अस्तबलके जमादारको बुलाकर कहा, एक पंजाबी साईस ला दो। बीस पचीस दिन बाद उसे बुला-कर पूछा कि साईस मिला या नहीं। उसने कहा, हुज़ूर मैं तलाश करता हूं अभी मिला नहीं। यह सुन मुनशीने कहा, कैसा बदज़ात है एक महीनेसे टालमटोल करता है, साईस नहीं ला देता। जमादारने कहा, पीर मुरशिद बदज़ातके कहेका मैं बुरा नहीं मानता, आप मालिक हैं जो जी चाहे करें, पर मालिकोंके हुक्म एक बात कह-नेमें कुछ ऐब नहीं, तकसीर मुआफ हो, ये कुछ मौलवी मुनशी नहीं हैं जो एकके बुलानेसे सौ आन पहुंचे।

तो साहब हैं, मद्दीनोंकी सलाममें एक भी न मिल जाय तो मिल जाय। यह सुन साहब बहुत हँसे और जो मौलवी मुनशी उम्मेदवार वहां बैठे थे शरमिन्दा हो गये और मुनशी सदरुद्दीन भी मन ही मन कुढ़कर दम साध रहे।

साईं अँखियाँ फेरियाँ, वैरी मुलकजहान। टुक इक झांकी मिहर दी, लक्खाँ करें सलाम—(पंजाबी) ईश्वर जिससे विमुख होता है, संसार उसका वैरी हो जाता है और जिसपर उसकी कृपा होती है, सब उसे वंदगी करते हैं।

साईं अपने चित्तकी, भूल न कहिये कोय। तबलग मनमें राखिये, जबलग कारज होय—(गिरिधर) जबतक काम न हो जाय, तबतक अपना संकल्प किसीसे न कहे।

साईं इस संसारमें भाँति भाँतिके लोग। सबसे मिलके बैठिये नदी नाव संयोग—(गिरिधर) जैसे नदी पार होनेके समय एक नावमें सभी तरहके लोग इकट्ठे हो जाते हैं, वैसे ही संसारमें सभी तरहके लोगोंसे काम पड़ता है, इसलिये सबसे मिलकर रहना चाहिये।

साईंका घर दूर है, जैसे लांबि खजूर। चढ़े तो चाखे प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर—ईश्वरका घर बहुत ऊँचा है जैसे खजूरका पेड़। यदि वहां तक पहुँच जाय तो (प्रेम) रस पीनेको मिलता है और यदि गिर जाय तो नष्ट हो जाता है।

साईंके दरबारमें, बड़े बड़े हैं ढेर, अपना दाना बीन लो, जिसमें हेर न फेर—ईश्वरके यहाँ किसी बातकी कमी नहीं है, मगर तुम्हारे नसीबमें जो बदा है वही तुम्हें मिलेगा। तात्पर्य यह है कि जो तुम्हें मिले, उसीमें संतोष करो, दूसरेकी ईर्षा मत करो।

साईंके सौ खेल हैं—ईश्वरके सौ तरहके ख़याल हैं न जाने वह क्या किया चाहता है।

साईंको सांच प्यारा, झूठेका मालिक न्यारा—ईश्वर सचेको प्यार करता है। झूठेका ईश्वर ही कोई दूसरा है।

साईं घोड़े मर गये, गदहन आयो राज। काग हाथ पे लेत हैं, दूर कियो है बाज—(गिरिधर) जहाँ अच्छोंकी क़दर न हो और दुष्टोंका आदर हो, वहाँ क०।

साईं तेरा आसरा, छोड़े जो अनजान। दर दर हांडे मांगता, कौड़ी मिले न दान—जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता उसे मांगेसे भीख भी नहीं मिलती।

साईं तेरी यादमें, जिन तन कीना ख़ाक। सोना उसके रूबरू, है चूल्हेकी राख—ईश्वरकी यादमें जिसने अपना शरीर मट्टी कर दिया, उसके लिये सोना चूल्हेकी राखके तुल्य है।

साईं तेरे आसरे, आन परे जो लोग। उनके पूरे भाग हैं, उनके पूरे जोग—जो ईश्वरकी शरणमें रहता है वही भाग्यवान और पूरा योगी है।

साईं तेरे कारने छोड़ा बलख बुखार, नौलख घोड़े पालकी औ नौलख असवार—स्पष्ट।

साईं तेरे कारने जिन तज दिया जहान, ठैठ किया बैकुंठमें उसने जहां मकान—स्पष्ट।

साईं तेरे नेहका, जिन तन लागा तीर। सोही पूरा साधु है, सोही पीर फ़क़ीर—जिसे ईश्वरसे स्नेह है, वही पूरा साधू और फ़क़ीर है।

साईं ते सच्चा रहो, बन्दे ते सत भाय। भावें लम्बे केश रख, भावें घोट मुड़ाय—(पं०) सिक्ख बनो या हिन्दू, पर ईश्वरसे सच्चे रहो और सबसे सद्भाव रक्खो।

साईं मोर आप विरूभल, लोग दिहल पोचारा, लात, मूका हम सहलौं, और सहलौं दू गारा—(भो० ज०) मेरा पति स्वयं नाराज़ था तिसपर लोगोंने उसे शह दी। मार और गाली सब मैंने सही। दे० "वलती आगमें घी डालना।"

साईं राज बुलन्द राज, पूत राज दूत राज—विधवा स्त्री कहती है, क्योंकि जबतक उसका पति जिन्दा था तबतक उसकी सब माँगें पूरी होती थीं। अब पुत्रके समयमें नहीं होतीं।

साईं संसा मेट दे और न मेटे कोय। वाको संसा क्या रहा, जा सिर साईं होय—जिसका ईश्वर सहायक है उसे किसी बातका भय नहीं है।

साईं साईं जीभपर, गरव कपट मन बीच। वह नर डाले जायँगे, पकड़ नरकमें खींच—जो मनके कपटी हैं और ऊपरसे ईश्वरका नाम लेते हैं, वह नर्कगामी होते हैं।

साईंसे जो फिर गया, उसको लाभ न होय, वह तो योंही जायगा, जनम अकारथ खोय—जो ईश्वरसे विमुख है उसका जन्म लेना वृथा है।

साईंसे साँची रहूं, बाज बाजरे ढोल। पंचन मेरी पत रहे, सखियनमें रहे बोल—स्पष्ट।

सांच कहे मुंह मारा जाय, झूठ कहे तो जग पतियाय—स्पष्ट।

सांच कहे सो पनही खावे, झूठा बहु विधि पदवी पावे—(हरिश्चन्द्र) सत्य कहनेवाला बहुत कष्ट पाता है और झूठे सुख पाते हैं।

सांचको आंच कहां—सचेको किसीका डर नहीं। सत्य बोलनेमें किसी तरहका डर नहीं।

(सं०) सत्ये नास्ति भयं क्वचित्।

सांच झूठ निर्णय करे, नीति निपुण हो जाय—स्पष्ट।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके मनमें सांच है, ताके मनमें आप—प्रथमार्ध स्पष्ट है। सच्चे मनमें ईश्वरका वास होता है।

सांचहुं ताको न होय भलो, जो कही नहिं मानत चार जनेकी—(पद्माकर) जो चार मनुष्यका कहना नहीं मानता, उसका भला नहीं होता।

सांची बात गोपाले भावे—सची बात ईश्वरको प्यारी है।

सांची बात सदुल्ला कहे, सबके मनसे उतरे रहें—सच्ची बात सबको कड़ुई लगती है।

सांची होत न भूत मिठाई—दे० "भूतका पकवान"

सांचेका रंग रूखा—(१) सच बात सबको बुरी लगती है (२) अच्छे मनुष्यमें बनावटी चटक मटक नहीं होती।

सांचे गुरुका बालका, मरे न मारा जाय—स्पष्ट।

सांचेहु उनके मोह न माया। उदासीन धन धाम न जाया—(तुल०) साधु विरक्तोंको कहते हैं।

सांचो कोइ न मानही, झूठो जग पतियाय—सच कहो तो कोई नहीं मानता, झूठको सब मान लेते हैं। जहां सचेकी बात नहीं मानी जाती, वहां क०।

सांझ जाय और भोर आय, वह कैसे न छिनाल कहाय—नष्ट स्त्रीपर कहते हैं।

सांझी चाली सांझसे, साथ बसंता पूत। माधो भी तो जात हैं, बांध कमरके सूत—स्पष्ट।

किसी गांवमें माधो नामका एक बनिया रहता था। उसकी स्त्रीका नाम सांझी और लड़केका नाम बसन्त था। जब उसे बहुत देना हो गया और लोगोंने कड़ा तगादा किया तो उसने कहा, मैं भागूंगा नहीं और जो भागूंगा तो कहकर भागूंगा। एक दिन होलीके दिनोंमें स्वांग बनाकर उक्त मसल कही और रफू चक्कर हो गया।

सांटेकी सगाई सेंधे, तेलकी मिठाई सेंधे—बदलेका ब्याह और तेलकी मिठाई दोनों ही खराब होती हैं।

सांप अपने बिलमें सीधा ही जाता है—बाहर चाहे जो करे पर घरमें निष्कपट रहना चाहिये। जब कोई घरमें ही छल कपटका व्यवहार करे वा अपनों सेही उड़नझाई बतावे, तब क०।

सांप और चोरकी धाक बहुत होती है—दोनोंसे डर लगता है।

सांप और चोर दबेपर चोट करता है—बिना दबे वह दोनों चोट नहीं करते।

जातडुसी चित चोरे बात। गोहन लग्यो नन्दको लाल॥
सूरमारके सरस लगावे। चोर चपे तब चोट चलावे॥

सांपका काटा पानी नहीं मांगता—क्योंकि उसके काटनेसे मृत्यु शीघ्र आ जाती है। कपटी मनुष्य जिसे सलाह देता है वह नहीं पनपता।

सांपका काटा रस्सीसे डरता है—एक बार किसी काममें हानि होनेसे दूसरी बार सामान्य काममें भी मनुष्य सावधान हो जाता है।

तू मेरी दोस्तीका है दम भरता,
मैं दोस्तके नामसे हूं नफ़रत करता।
क्यों कर न रहूं डरा हूं यारोंका शिकार॥
है मार गुज़ीदः रेसमांसे डरता॥ (रंगूर)

सांपका काटा सोवे, बिच्छूका काटा रोवे—

बिच्छूके काटनेसे आदमी रोता है पर सांपके काटनेसे मर जाता है।

सांप काटना छोड़ दे, पर फुंकार न छोड़े—जब कोई किसीका अनिष्ट करना छोड़ दे, लेकिन अपने बचावके लिये केवल रोबदाब दिखाता रहे, तब क०।

इसपर एक कहानी है—एक हिंसक सांप रास्ते पर बैठकर सदैव पथिकोंको काटा करता था। एक दिन कोई साधू उसी राहसे जा रहे थे। जब सांप उनपर चोट करने दौड़ा, तब साधुने उसे उपदेश देते हुए कहा, कि तू क्यों इस तरह निर्दोष पथिकोंकी जान लिया करता है, पूर्व जन्मके कुकर्मसे तू सर्पयोनिमें प्राप्त हुआ अब भी तुझे उचित है, कि कुपथको छोड़ सुपथ पर चल, ताकि भविष्यमें एक अच्छी योनि प्राप्त हो। अतः तुझे आज्ञा देता हूं कि जबतक मैं लौट न आऊं तबतक तू किसीपर चोट न करियो। सांपने उनकी आज्ञाको शिरोधार्य कर उस दिनसे किसी पथिक पर आक्रमण न किया। यहांतक कि मनुष्योंसे कुचल जानेपर भी उस सांपने साधकी आज्ञा उल्लंघन न की। थोड़े दिनके बाद वह साधू उसी राहसे लौटा और उसने सांपसे दुर्गति होनेका कारण पूछा। सांपने सब बात कह सुनाई। इसपर साधने ऊपरकी मसल कही।

सांपका बच्चा संपोलिया—उसमें सांपसे भी अधिक विष होता है। दुश्मनके बच्चेपर भी विश्वास न करना चाहिये। जब किसी खोटे मनुष्यका लड़का भी बुराई करे, तब क०।

सांपका बिल भी नहीं मिलता जहाँ समा जाऊं—जब कोई बहुत लज्जित या दुःखित होकर दुनियांसे अपना मुँह छिपाया चाहता हो, तब कहता है।

हरीफों पर खज़ाने हैं खुले यां हिज्रे गेसू है।
वहां पै बिल है और यां सांपका भी बिल नहीं मिलता॥
(अकबर)

हरीफ़=दुश्मन। हिज्र=वियोग। गेसू=ज़ुल्फ।

सांपका मन्तर न जाने बिलमें हाथ दे—बिना बचावका रास्ता रखे किसी ख़ौफ़नाक काममें हाथ डाले और उसमें ज़िल्लत उठावे, तब क०।

मन्त्र न जाने सांपको देत पिटारो हाथ। (वृन्द)

सांपका सिर ही कुचलते हैं—दूसरे अंगको कुचलनेसे उसके जीनेकी आशंका रहती है, परन्तु सिर कुचलनेसे किसी बातकी चिन्ता नहीं रहती।

सांपकी तो भाप बुरी—सांपके श्वाससे आदमीको देह झुलस जाती है। दुष्टकी हवा भी बुरी होती है।

सांपकी सी केंचली झाड़ दी (वा बदल दी)—जब कोई रोगी आराम हो जाता है, तब क०।

सांपको दूध पिलानेसे केवल विष ही बढ़ता है—दुष्टको अच्छी शिक्षा देनी न चाहिये।

(१) (सं०) पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम्।

(२) मूरख कों हितके वचन, सुनि उपजत है कोप।
सांपहिं दूध पिवाइये, वाके मुख विष चोप॥
(वृंद)

सांप छछुन्दरका बैर—दे० "उगले तो अन्धा..."।

सांप निकल गया लकीर पीटनेसे क्या?—अवसर चूकनेपर पछितानेसे कुछ लाभ नहीं होता।

सांप मरे न लाठी टूटे—(१) सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे। दो मनुष्योंके झगड़ेको ऐसी तरह निपटा देनेके लिये क०, जिसमें किसीका भी नुक़सान न हो और काम भी हो जाय। (२) सांप तो मर जाय पर लाठी न टूटे। अपना मतलब भी हो जाय और किसी तरहकी हानि भी न हो। (३) सांप तो न मरे पर लाठी टूट जाय। जिस मतलबसे कोई काम किया जाय वह मतलब तो पूरा न हो पर उल्टी हानि हो जाय, तब क०। (४) युक्तिसे काम लेनेके लिये भी क०।

इसपर एक दृष्टांत दिया जाता है:—कोई मुसलमान नमाज पढ़ रहा था और उसके पास हलुआ रक्खा था। हलुएको देखकर बिल्ली आई; नमाजी हैरान हुआ कि जो बिल्लीको मारता हूं तो नमाज जाती है और जो नहीं मारता तो खाना जाता है और खाने बिना दूसरे समयकी नमाज नहीं हो सकेगी। उस समय उसने विचारके "अल्हम्दुल्लाह रब्बिल आल्मीन" बहुत जोरसे पढ़ा। बिल्ली भाग गई, इसलिये कि रब्बिल आल्मीनमें बिल्ल निकलता है जिससे वह समझी कि मुझे धमकाया है। इस युक्तिसे नमाज भी हो गई और खाना भी बचा।

सांप सताया ढोकिया तीनों जीव निकास।
जब लग पार बसाय तो बैठ न इनके पास—सांप, शत्रु और ठगसे सदैव अलग ही रहना चाहिये।

सांपोंकी सभामें जीभोंकी लपालप—जब बहुतसे

गप्पी और आलसी मनुष्य एक जगह इकट्ठे हों और कोरी बकवाद होती हो, तब क०।

सांभर जाय, अलोना खाय—देखो "तेली खसम"

सांभरमें नोनका टोटा-जिस चीज़की जहां खान है और वहांके लोग उसीके अभावसे कष्ट पावें, तब क०।

थी न कमी कुछ तेरे घरमें। नोनको तरसी मैं सांभरमें (हाली)

सांभरमें पड़ा और गला - राजपूतानेके अन्तर्गत सांभर नामकी एक झील है। उसका जल इतना तेज़ है, कि उसमें गिरनेसे हरएक चीज़ नमक हो जाती है या गल जाती है।

सांभरमें पड़ा सो सांभर हुआ—सांभर=झील, नमक। उ० दे०।

सांसा मत कर मूरखा, सिरपर है करतार। यों ही है सब जगतका, सांसा मेटनहार— जबतक ईश्वरकी कृपा किसी मनुष्य पर होती है तबतक उसे किसी बातकी चिन्ता नहीं रहती। ईश्वर पर भरोसा रखनेके लिये क०।

सांसा भला न सांसका, और थांन भला न फांसका—एक ग्रासके लिये भी चिन्ता करनी फांस (एक प्रकारकी घास) की बनी हुई रस्सीके बराबर है अर्थात् दोनों बुरी हैं।

सांसा सुध बुध सभी घटावे, सांसा सुखका खोज मिटावे—स्पष्ट।

साख गये फिर हाथ न आये—(व्य०) एक बार इज्जत उतर जानेपर फिर नहीं होती।

साख लाखसे अच्छी—देखो "जाय लाख"।

सागमें शोरुआ अंडेमें पानी, क्यों बीबी पठानी— (मु० ज०) फूहड़पनेका काम करनेपर क०।

सागरको गागरमें भरना—बहुत बात थोड़ेमें कहना।

सागरको नहिं पैये पार—समुद्रको पार नहीं मिलता।

रसिकाई पिय रसिक सुजाना,
को गनि सकै तिया गुनवाना।
सुनो पखांनी जग परचार,
सागरको नहिं पैये पार।
(विब्बोक हाव। सौ० र० कौ०)

सागर सीपकी जाय उलीचो—(तुल०) छोटेसे बड़ा काम नहीं हो सकता है।

साजन आवत हूं सुनो, कुछ नेरे कुछ दूर। पलकन हीसे झाड़ लूं, उन पांवनकी धूर— प्रेम होनेपर कहते हैं।

साजन दुखिया कर गये, और सुखको ले गये साथ। अब दुख दे न्यारे भये, वौर न पूछी बात (ज०) अपने स्वामीके परदेश जानेपर पश्चात्ताप करती है।

साजन यों मत जानियो, तोहि बिछुरत मोहि चैन। आले बनकी लाकड़ी, सुलगत हूं दिन रैन-स्पष्ट।

साजन वे दिन कौन थे, जो सुखसे लाये पीत। अब दुख दे न्यारे भये, कौन गांवकी रीत— स्पष्ट।

साजन साजन मिल गये, झूठे पड़े बसीठ— लड़ाई झगड़ेके बाद जब दोनों मित्र आपसमें मिल जाते हैं, तब पीछे लड़ाई लगानेवालेका अपमान होता है।

बिन दूती चतुराइ तिय, आइ मिलेंगे ऐंठ।
साजन साजन मिल गये, झूठे पड़े बसीठ। (अभिसारिका)
बसीठ=दूत,

साजन हम तुम एक हैं, देखत हीके दो। मनसे मनको तौल ले, दो मन कभी न हो— स्पष्ट। 'मन' शब्द श्लिष्ट है।

साझा जोरू खसम हीका भला—स्पष्ट।

साझेकी मां गंगा न पावे—जिस स्त्रीके कई लड़के होते हैं उसे जल्दी गंगा लाभ नहीं होता। यह प्रसिद्ध बंगला मसल "भागेर मागा पाय ना" का अनुवाद है, बंगालियोंमें मरनेसे कुछ पहिले गंगाघाट ले जाते हैं। साझेकी कोई वस्तु अच्छी नहीं होती।

साझेकी हंड़िया चौराहेमें फूटे—जब साझेके काममें विवाद हो, तब क०।

साझेकी होली सबसे भली—दस आदमी मिलकर जो उत्सव मनाते हैं, वह अच्छा होता है।

साझा भला न बापका, और ताव भला न तापका (व्य०) स्पष्ट।

साझा सधे न बापका, है रासेकी खान। घर न्यारा कर बालमा, बात मेरी तू मान—(ज०) स्त्री अपने स्वामीसे कहती है कि हम दोनों पितासे अलग हो रहें।

साझेका काम, उखाड़े चाम—साझेके काममें हमेशा झगड़ा हुआ करता है।

साझेकी खेती सूअर न खायँ—क्योंकि उसपर दोनोंकी ही निगरानी रहती है।

साझेकी सूई सांगमें चले—हिस्सेदार कभी मेलसे नहीं रहता। सांग=सेंगरा।

साटेकी सगाई और ब्याजू रुपयेका एहसान क्या (ब्य०) स्पष्ट।

साठ गांव बकरी चर गई—दे० "मोरनी हार निगल गई"।

इस मसलका निकास इस तरह है:—किसी समय शिकारसे श्रान्त होकर कोई राजा किसी गरीब आदमीकी झोंपड़ीमें आ टिके। उस गरीबने राजाकी यथेष्ट सेवा शुश्रूषा की। राजाने उसकी जाते समय उसकी सेवासे संतुष्ट होकर साठ गांवका दान एक पत्रमें लिख कर गरीबको दे दिया। दुर्भाग्यवश उसकी एक बकरीने उस पत्रको खा डाला। दूसरे दिन वह बिचारा बहुत सोच करता हुआ राजदरबारमें पहुंचा, और बहुत जोरसे यह मसल कही। राजाने उसे पहिचान लिया और एक दूसरा दानपत्र प्रदान किया।

साठ सास, ननद हों सौ, मांकी होड़ न इनसूं हो (मार०) स्त्रियां अपनी सास और ननदसे बढ़कर अपनी मांको प्यार करती हैं।

साठा सो पाठा, बीसी सो खीसी—साठ वर्षका होनेपर भी पुरुष जवान रहता है, और स्त्री बीस वर्षमें ही बुड्ढी हो जाती है।

साढ़ीकी साख, और पीपलकी लाख—(कृ०) बसन्त ऋतुकी फसल और पीपलकी लाह दोनों अच्छी होती हैं।

सात पांचकी लाकड़ी एक जनेका बोझ—कई एक आदमियोंकी एक एक लकड़ी मिलकर एक आदमीका बोझ हो जाता है। जब कई एक आदमी थोड़ा थोड़ा देकर दूसरेका उपकार करें, तब क०।

कहै न दखिन बात निज, सुनो कहावत जोय।
सात पांचकी लाकड़ी, बोझ एकको होय।

सात पांच पकुआ न एक गूलर—अगर लड़का सपूत निकले तो एक ही अच्छा। (पकुआ एक प्रकारका जंगली फीका फल है।)

सात पांच मिल कीजे काज, हारे जीते न आवे लाज—जो काम दश पांच आदमीसे मिलकर किया जाता है, अगर वह काम न भी सधे तौभी उसमें किसीको लज्जा नहीं आती।

सात मामाका भानजा नौता ही नौता फिरे—
सात मामाका भानजा भूखा ही भूखा पुकारे—
बहुतसे निरीक्षक रहनेपर भी जब कोई काम पड़ा रहता है, तब क०, क्योंकि खास किसीका ख्याल उसपर नहीं होता। सभीका यह ख्याल रहता है कि दूसरा उसे खिला देगा, इसलिये वह भूखा ही रह जाता है। सभी आदमियोंका काम किसीका भी काम नहीं समझा जाता।

सात हाथ हाथीसे रहिये, पांच हाथ सिंघारेसे। बीस हाथ नारीसे रहिये, तीस हाथ मतवारेसे—स्पष्ट। सिंघारा=सींगवाला जानवर।

दन्ति दश सहस्रेषु शत हस्तेन वाजिना,
शृंगीणां दश हस्तेषु स्थानत्यागेन दुर्जनात्। (चाणक्य)

साथ कोई आये, न कोई जाये—मनुष्य अकेला ही जन्म लेकर आता है और मरनेपर अकेला ही जाता है।

साथ कौन किसीके जाता है—मरनेपर कोई किसीके साथ नहीं जाता।

किसीका कब कोई रोज-वियदमें साथ देता है।
कि तारीकीमें साया भी जुदा रहता है इन्सांसे॥

साथ जोरू खसमका—ये दोनों जीवन पर्य्यन्त प्रेम बन्धनमें बंधे रहते हैं।

साथ तो हाथका दिया ही चलता है—जो दान दिया जाता है मरनेपर वही संग जाता है।

साथ सोई, बात खोई—(ज०) स्पष्ट।

साथ सो, पेटका दुःख—(ज०) साथ सोनेसे ही गर्भ रहता है।

साथ सोना, और मुंह छिपाना—(ज०) जिससे किसी बातका परदा न हो उससे सामान्य बात छिपावे, तब क०।

एतो लाज न छोड़ति लाल, रहो मीन गहि घूंघट आल।
लोग चलि साँची दरसावै, संग सोवै पेद मुखहि छिपावै।
(विहितदास)

(२) प्रान पियारी सुनो चित दै,
हिरदै बसि घूंघट घालिबी कैसो। (ठाकुर)

साथी ऐसा चाहिये, जो सारा साथ निभाये। साथ न उसका लीजिये, जो दुख विच काम न आये—जो दुःखमें साथ दे वही साथी है।

साध खुदाई ना करे, ना मूरख सों प्रीत। चातुर तो वैरी भला, मूरख भला न मीत—स्पष्ट। दे० "नादान दोस्तसे"।

साध चले बैकुण्ठको, बैठ-पालकी मांहि। रस्तेमेंसे आये फिर, भांग तमाखू नांहिं—जो साधु भांग और तमाखू बहुत पीते हैं, उनको क०। तमाखूकी तारीफमें भी क०।

साधन पी, संतन पी, पी कुंवर कन्हाई। जो विजयाकी निन्दा करे, उसे खाय कालिका माई—भांग पीनेवाले कहते हैं।

साध भगतकी करे जो सेवा, पार तुरत हो वाका खेवा—जो साधु सन्तोंकी सेवा करते हैं उनका जल्दी बेड़ा पार होता है।

साध भगत दें जिन्हें असीस, सुखी रहें वे बिस्वे बीस—स्पष्ट।

साध भगत हो जिन्ह पर छो, मूल भला ना उसका हो—(पं०) साधके शापसे कोई सुख नहीं पाता है।

साध सन्तको टहलको, उठो न बैठो जाय। तुलसी लालच लेनको, दौड़ा दौड़ा जाय—जो साधू संतकी सेवा न कर रातदिन लोभके पीछे पड़ा रहता है, उसपर क०।

साधु असाधु सदन शुक सारी। सुमिरहिं राम देहि जनि गारी—(तुल०) संगतका असर होता ही है।

साधु समागम हरि भजन, तुलसी दुर्लभ होय—स्पष्ट।

साधू कहिये सूपको पाया फेंके हलोर। ओछी कहिये चालनी, भूसी राखे बटोर—सज्जन गुणके ग्राहक होते हैं और दुर्जन दोषके।

"खल गेह अगुण साधु गुण गाहा" (तुल०)

साधूकी जिन संगत कीनी, उन्हीं कमाई पूरी कीनी जो साधकी संगत करते हैं, उन्हींका जीवन सफल है।

साधू जन रमते भले, दाग न लागे कोय—दे० "बहता पानी"

साधू तो वोही भला, जो कर साधूका भेष। पूजा करता रब्बकी, हांडे देश विदेश—(पं०) स्पष्ट। रब्ब=ईश्वर, हांडे=फिरे।

साधू बच्चे, बहुते झूठे थोड़े सच्चे—मिखमंगे साधुओंमें झूठे बहुत और सच्चे थोड़े होते हैं।

साधू वही जो साधन करे, क्रोध, लोभ और मोहको मारे—स्पष्ट।

साधू वही सराहिये जाके हृदय गाँठ, लड्डू ले भीतर धरे चरणामृत दे बांट—स्पष्ट।

साधू वही सराहिये, जो दुखें दुखावें नांहिं। फल फूलहिं छेड़े नहीं, रहे बगीचे माहिं—स्पष्ट।

साधू सत कर बैठ जा, वही साधु है ठीक। वाको साधू मत कहो, जो घर घर मांगे भीख—स्पष्ट।

साधू होकर कपट जो राखे, वह तो मजा नरकका चाखे—स्पष्ट।

साधू होकर करे जो चोरी, उसका घर है नरककी मोरी—स्पष्ट।

साधू होकर करे जो जारी, उसको हो दो जगमें ख्वारी—साधका वेश बनाकर जो औरतका पीछा करता है, वह दोनों लोकमें कष्ट पाता है।

साधू होकर देवे घुत्ता, उसको जानो पेटका कुत्ता—घुत्ता देना=छलना।

साधोंको क्या सवाद, गुड़ नहीं बताशे ही सही—व्यंगसे कहते हैं। गुड़से बताशे कहीं अच्छे होते हैं। जो ज़ाहिरा अपनेको त्यागी बताते हैं, पर भोग विलासमें रत रहते हैं, उनके ऊपर ताना है।

साधोंने काम सधापनसे, कुत्तनने काम कुतापनसे (मा०) जिसका जो काम होता है वही करता है।
(सं०) यथा यदि क्रियते राजा किं स नाश्नात्युपानहम्॥

साने सदा सनेहमें, जीभ न चिकनी होय—(वृन्द) रूखा मनुष्य मीठी बातोंसे नहीं पसीजता

साबित नहीं कान, बालियोंका अरमान—जो जिस चीज़के ग्रहण करने योग्य नहीं है, अगर वह उसे पानेकी इच्छा करे, तब क० ।

साबित क़दमको सब जगह ठांव—मेहनतीका ठिकाना सब जगह है ।

सारके सार लबड़धू—जब कोई बहुत दूरकी रिश्तेदारी जोड़ने बैठे, तब क० ।

सार पराई पीरकी क्या जाने अनजान—एकका दुःख दूसरा नहीं जानता है ।

सारसकी सी जोड़ी—अन्तरंग मित्रोंपर क० । सारस पक्षीका जोड़ा एक साथ रहता है, कभी बिछुड़ता नहीं और उड़नेके समय एक अपना दहिनापर दूसरेके बायें परके साथ ऐसा उलझा देता है कि दोनों अलग नहीं हो सकते ।

सारा खेल तक़दीरका है—सुख और दुख दोनोंमें क० ।
(दे०) "भाग्य फलति सर्वत्र"

सारा गांव जल गया, काले मेघा पानी दे—गांव जल जानेपर पानी बरसना । दे० "का वर्षा जब कृषी सुखाने"

सारा घर सूना रहे, चूहा रहे बिल खोद । सौ गुलाम हाथी चढ़े, फिर भी मादर ...—नीच अपनी नीचता नहीं छोड़ता ।

सारा धड़ देख नाचे मोरवा, पांव देख लजाय—मोरका पैर ही भद्दा होता है । जब कोई धन जन सब तरहसे सुखी हो परन्तु एक ही मनुष्य उसके घरमें ऐसा खोटा हो जिसके कारण उसे सदेव लज्जित होना पड़े, तब क० ।

दुलहिनि सब निज साज संवारि, नाची किती कुरूप निहारि ।
लोग पखानी सब जग गाई, मोर निहारि पगन सकुचाई ।

सारा नरबदा फिर दी, कुंआ देख डर दी—(पं०) स्त्री चरित्रपर कहते हैं । नरबदा=बीयाबान जंगल ।
दिवा काक रुता भीता रात्रौतरति नर्मदाम् ।

सारा शहर जल गया, बीबी फ़ातमाको खबर ही नहीं—स्वार्थी पुरुषपर क० जो अपने अड़ौस पड़ौसकी स्थितिसे बिलकुल अनमनस्क रहता है ।

सारी उमर काठमें रहे, चलते वक्त पांवसे गये—कम नसीब मनुष्यपर क० । उम्र भर जेलमें रहे और जब छुट्टी हुई तो पांव बे काम हो गये ।

सारी उमर भाड़ ही झोंका—भाग्यहीन मनुष्य पर क० ।

सारी कुड़ियाँ मर गयीं नानीसे राह चले—(पं०) क्या सब जवान औरतें मर गईं जो तुम नानीके पीछे दौड़ते हो ।

साबिर ओ शाक़िर दोनों जन्नती हैं—(मु०) संतोषी और कृतज्ञ दोनों देवताके तुल्य हैं ।

सारी ख़ुदाइ एक तरफ़, जोरूका भाई एक तरफ़—जब पुरुष जब सालेकी बड़ी खातिर करता है, तब उसे व्यंगसे क० ।

सारी ख़ुदाई एक तरफ़, फ़ज़ले इलाही एक तरफ़—ईश्वरकी शक्ति सबसे बड़ी है ।

सारी चोट निहाईके शिर—जो घरमें बड़ा होता है सब भार उसीके शिर पड़ता है ।

सारी डेगमें एक ही चावल टटोला जाता है—(व्य०) हांड़ीका एक चावल देखने हीसे मालूम हो जाता है, कि सब चावल गल गये या नहीं ।
(१) नमूना देखकर माल खरीदनेके समय क० ।
(२) एक बातसे मनका सारा हाल जाना जाता है ।

सारी रात कहानी सुनी और सुबहको पूछा जुलेखा औरत थी या मर्द—मूर्खको क० जो ध्यानसे बात न सुने, या सुनकर भूल जाय, अथवा समझानेसे न समझे ।

सारी रात मिमियानी और एक ही बच्चा वियानी (पू० अ०) जो शोर गुल बहुत करे पर काम थोड़ा करे, उसपर क० । बकरी प्रायः दोसे कम बच्चे नहीं देती ।

सारी रामायण सुनके पूछा सीता किसकी जोरू थी—दे० "सारी कहानी सुनी"

सारे धड़की सुई निकाले सो कोई नहीं, आंखकी सुई निकाले सो सब कोई—(ज०) दे "आंखकी सुइयां"

सारे डीलमें ज़बान ही हलाल है—सच बोलनेके लिये क० ।

सारे नगरमें दो ही, धुनकड़ या भुनगाड़ (वा धुनगाड़)—नीच संगतपर क० । (धुनिये, भड़भूंजे या जुलाहे)

सालगरामकी बटिया जैसी छोटी वैसी बड़ी—
दे० 'मूंग मोटमें छोटा बड़ा कौन।'

सालगराम जैसे सोए वैसे बैठे—दोनों एक होते हैं। जो सब अवस्थामें एक सा रहे, उसे क०।

साला तीरथ सुसरा तीरथ तीरथ छोटी साली
मातु पिताकी लाज न कीजे तीरथ है घरवाली
जो लोग घरवालोंकी क़दर न करके ससुरालवालोंका कहना करते हैं, उन्हें क०। स्त्रैण पुरुषको भी क०।

साली आधी निहाली, सलहज पूरी जोय—
साली और सलहजसे हंसी ठट्ठा करनेकी रीति है, इसलिये क०।

साली निहाली चहिये ओढ़ी चहिये बिछाली—
ऊ० दे०।

सालेका साला पटाक साला—नीचे देखो।

सालेके सुसरे और सुसरेके लबड़ धौंधौं—
जब कोई दूरका नाता जोड़ने बैठे, तब क०।

सावकी साथ भला और रातका घात भला—
संगके लिये धनवान और खोटे काम करनेके लिये रात अच्छी होती है।

सावन की ना सीत भली, जातक की ना पीत भली—सावन महीनेमें दही खाना और तुरतके पैदा हुए लड़केसे प्रीत करना अच्छा नहीं।

सावन कीसी झड़ी-मूसलधार पानी बरसनेको क०।
नवते निरख्यो सुन्दर श्याम, थामि सकै नहिं चाँद बाम।
कौन उक्ति यह चाँची करी, लागि रही ज्यों सावन झरी॥

सावन केसा साँथरा, पोह माह कैसा पाँखड़ा-
सावनमें चटाई और पूष माघमें पंखा बेकार है।

सावनके अंधेको हरी हरी सूझे—(व्यं०)जो सावनमें अंधा हो जाता है उसे हरे रंगकी ही स्मृति रह जाती है। व्यंगसे उन लोगोंको क० जिन्होंने अनुचित उपायसे या अकस्मात धन पैदा कर लिया हो और यही समझते हों कि सब कोई इसी तरह करते हैं।

सावनके रपटे और हाकिमके डपटे का कुछ डर नहीं—फिसल पड़नेसे आदमीको शर्म आती है। सावनमें वर्षाके कारण फिसलन होती है इसलिये बहुत लोग फिसल पड़ते हैं, इससे शर्म न करनी चाहिये इसी तरह हाकिमके डपटनेमें भी डर नहीं क्योंकि वह सबहीको डपटता है।

सावन खीर जो खाय सकारे, मिरग ढाल कुरचालैं मारे—(ग्रा०) सावनमें खीर खाय तो हरिनकी तरह उछलता फिरे।

सावन घोड़ी भादों गाय, माघ मासमें भैंस बियाय, जीसे जाय या खसमें खाय—लोगोंका विश्वास है, कि सावनमें घोड़ी, भादोंमें गाय और माघ मासमें भैंस बियाये तो आप ही मर जाती है या उसका मालिक मर जाता है।

सावन थोड़ा पानी गदला क्या मलमलके धोता है, अंदर दाग़ लगा क़ुदरतका जब देखो तब रोता है—स्पष्ट।

सावन दिये मैल कटे गंगा नहाये पाप-स्पष्ट।

सावन मास बहै पुरवैया, खेले पूत बलाले मैया.
(कृ०) सावनमें पुरवैया चलनेसे वृष्टि अच्छी होती है, इसलिये क०।

सावन मास बहै पुरवैया, बेचो बरदा कीनो गैया
(कृ०) ऊ० दे०। वृष्टि अधिक होनेसे अन्न बहुत होगा, सिंचाईकी ज़रूरत न पड़ेगी इसलिये बैल बेचकर गाय खरीद लो जिसके खानेको पुआल भी बहुत मिलेगा। कोई कोई यह भी अर्थ करते हैं कि सावनमें पुरवैया बहनेसे सूखा पड़ता है इसलिये बैलकी जरूरत नहीं रहती, उसे बेचकर गऊ खरीदो और घ पीके गुजरान करो।

सावनमें करैला फूला, नानी देख नवासा भूला
- नानी देख=नानीका धन देखकर।

सावनमें हुए सियार, भादोंमें आई बाढ़।
"ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी थी"—जब कोई कम उम्रका आदमी बूढ़ोंकी सी बातें करे, तब क०।
महीने भरकी उम्रमें दूसरो बाढ़ हो कहांसे देखता।

सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके ऊगे भान। कहै घाघ सुन घाघनी, बरखा देय उठान—(कृ०)
श्रावण शुक्ला सप्तमीको यदि बदली फटके सूर्य निकल आवे, तो वर्षाका अन्त समझो।

सावन साग, न भादों दही। क्वार करेला, कातिक मही॥ अगहन जीरा, पूसे धना। माघे

मिसरी, फागुन चना ॥ चैते गुड़, वैसाखे तेल। जेठे राई, असाढ़े बेल ॥ इन बारहसे बचे जो भाई, ताके घरमें वैद न जाई—इन महीनोंमें यह चीजें न खानी चाहियें।

सावन सिवा उपास—हिन्दुओंमें श्रावण महीना महादेवजीके व्रतके लिये पुनीत माना जाता है, विशेषकर सोमवारको सभी व्रत करते हैं।

सावन सोवे साँथरे, माह खुरैरी खाट, आपहि वह मर जायँगे, जो जेठ चलेंगे बाट—सावनमें सीलके कारण चटाईपर न सोवे, माघमें सरदीके कारण खुरैरी खाटपर न सोवे और जेठमें गरमीके कारण बाट न चले।

सावन हरे न भादों सूखे—सदा एकसी हालत रहने पर क०।

सास उधलिया, बहू छिनलिया, सुसरा भाड़ झुकावे, फिर भी दूल्हा सास बहूको सीता सती बतावे—अपने घरवालोंकी, विशेष कर स्त्रियोंकी कोई बुराई नहीं किया चाहता।

सासका ओढ़ना, बहूका बिछौना—आजकलकी विपरीत चालपर कही जाती है क्योंकि सासका दर्जा बहूसे ऊँचा है।

सास, कोठेपरकी घास—(ज०) सासकी बेकदरी पर क०।

सास कोठे बहू चबूतरे—सास छिपके करे और बहू खुलमखुला।

सासको नहीं पायँचे, बहू चाहे तम्बू और सरांचे—(ज०) पायँचे=पायजामा; सरांचे=परदा। दे० "सासका ओढ़ना"

सास गई गाँव, बहू कहे मैं क्या क्या खाँव—(ज०) सासका डर तो रहा नहीं, मन चाहे सो करे।

सास झाँके टूँई टूँई बहू चली बैकुण्ठ—(ज०) उस बहूको तानेसे कही जाती है, जो सास को घरमें छोड़ कर आप तीर्थ यात्राको जाती है।

सासड़ कारन वैद बुलाया, सौक कहे तेरा धगड़ा आया—(ज०) सासके लिये वैद्य बुलाया सौतिन कहती है तेरा यार आया। सौतिया डाह पर क०।

सासड़ साँसा मत करे, देख थुड़ैरा काम। थोड़ेको बहुता करे, देन लगे जब राम—स्पष्ट।

सासरे तेरे साग, माथे तेरे भाग, बापके तेरे राज, तू बैठी बैठी झाँक—सासका कहना बहूके प्रति जो अपने पिताके धनपर गर्व करे। हिन्दुओंमें बापके धन पर लड़कीका कोई दावा नहीं होता।

सास न नन्दी, आप ही अनन्दी—(ज०) न सास है न ननद, अकेली ही सुखी है। जो सास और ननदसे दुख पाती हैं वही कहती हैं।

सास पतोहू मैं हँसिया गायब—स्पष्ट।

सास बहूकी हुई लड़ाई, करें पड़ौसिन हाथापाई—

सास बहूकी हुई लड़ाई, सिरको फोड़ मरी हमसाई दूसरेकी लड़ाईमें पड़ कर जब कोई अपनी हानि करे, तब क०।

सास बिन कैसी ससुराल, लाभ बिन कैसा माल (ज०) स्पष्ट।

सास भी रानी, बहू भी रानी, कौन भरे कुएँ का पानी—जहां दोनों ही सुकुमार हों, वहां क०।

सास मर गई अपनी अरवाह तोंबेमें छोड़ गई—(ज०) मरते समय एक बूढ़ी औरत अपने पतोहूको डरानेके लिये ऐसा कह गई थी।

कोई बूढ़ी औरत अपनी पतोहूको बहुत तंग किया करती थी। मरते समय उसने पतोहूसे कहा कि जब मैं मर जाऊं, तब मेरी आत्माको तुम एक लौकीमें बन्द कर रखना और उसीको अपनी सास समझ कर सदैव परामर्श लेती रहना। उसके मर जाने पर भी वह रोज़ रोज़ लौकीके पास आती और उससे सलाह लेती थी। एक दिन जब वह उसी तरह लौकीके पास खड़ी होकर कुछ पूछ रही थी इतनेमें कोई पड़ोसी उसके पास आ पहुंचा और उसने लौकीको लेकर ज़मीन पर पटक तोड़ फोड़ डाला। तभीसे वह पतो आनन्द पूर्वक तथा स्वतन्त्रतासे रहने लगी।

सास मुई, बहू बेटा जाया, वा का पलटा यामें आया—देखो "बाप मरा घर बेटा........"

सास मोरी मरे, ससुर मोरा जीये, नई बहुरिया के राज भये—सासके मर जानेसे पतोहू स्वतन्त्रता

पूर्वक दिन व्यतीत करती है।

सासरा, सुख वासरा—(ज०) लड़कीको ससुरालमें ही रहना अच्छा है। ससुरालमें रहनेसे सुखमिलता है (२) जो ससुरालमें बहुत रहते हैं, उन्हें व्यंगसे क०।

"सासरी सास मेरे लड़का हो तो मुझे जगा लीजिओ" "मैं तुझे क्या जगाऊंगी तू आपही सारे मुहल्लेको जगा लेगी"—बहूने साससे प्रथमार्ध कहा, जिसका उत्तर सासने शेषार्धमें दिया। अर्थ स्पष्ट है।

कहा सीख किय हित दुख खाभि, तबहु न सिखी सिखैहै थाभि
लोग उक्ति यह गंमहिं पगैये, जना कहै मोहिंजगत जगैये
लो० र० को०

जननेवाली कहती है कि जननेके समय मुझे जगा देना।

सास री सास तुझे पेटका दुख, पहिले चूल्हा ही याद आया—(ज०) स्पष्ट

सासरे जानेवाली छिनाल नहीं कहलाती—उचित काम करनेपर निन्दा नहीं होती।

सास लुका लुका, बहू बुका बुका— (ज०) लुका=छिपकर; बुका=खुलाखुली देखो 'सासकोठे बहू चबूतरे।'

साससे तोड़, बहूसे नाता— (ज०) जो घरके मालिकसे नाता न लगा कर राहीसे लगाता हो, उस पर क०।

साससे बैर पड़ौसिनसे नाता— (ज०) खराब औरत पर क०।

सासू छोटी, बहू बड़ी— जब कोई पुरुष जवान लड़का और पतोहू रहते एक छोटी लड़कीसे शादी करता है, तब यह मसल लागू होती है।

साहबका कुछ दोष नहीं है अमले गड़बड़ करते हैं—(१) मनुष्य अपनेही दोषोंसे दुःख पाता है। यदि ईश्वरकी आज्ञानुसार चले तो कभी दुख न हो। (२) मालिक तो देनेका हुक्म दे दे पर कर्मचारी बाधा डालें, तब भी क०।

साहके सवाये कमबख्तके दूने— (व्य०) जो सवाया करता है उसकी रकम बढ़ती है और जो दूना करता है उसकी डूब जाती है। कम मुनाफ़ेमें बरकत बहुत होती है।

साहबके दरबारमें, कमी काहुकी नाहिं। बन्दा मौज न पावहीं, चूक चाकरी मांहि—ईश्वरके यहां किसी चीज़ की कमी नहीं यदि अपनेको न मिले तो अपने ही कर्मोंका दोष समझनाचाहिये।

साहब मेरा बानियां, सहज करे ब्यौपार। बिन डण्डी बिन पालड़े, तोले जग संसार—ईश्वरकी न्यायपरता पर क०।

साहूकारको किसान, बालकको मसान— (व्य०) साहूकारके लिये किसान वैसा ही कष्ट दायक है जैसा मसान बालकके लिये, क्योंकि वे बहुत मुश्किलसे महाजनका रुपया चुकाते हैं।

साहू बट्टे वह भी साह— (व्य०) जो दामके दाम पर अपना माल बेचता है, वह भी साहूकार है। बहुत दिनों तक मालको व्यर्थ रखनेसे खरीद दाम पर उसे बेच डालना अच्छा है।

साहू बहे न जांय, गौं से जांय—स्पष्ट।

इसपर एक छोटी कहानी है—किसी समय एक साहूकार नदी में बहा जा रहा था। तैरना वह बिलकुल नहीं जानता था, इसलिये सहायताके लिये चिल्ला उठा। उसकी चिल्लाहट सुनकर एक मसखरेने जो नदी किनारे खड़ा था, उक्त मसल कही। इसका तात्पर्य यह है कि सूदखोर बिना स्वार्थके कोई काम नहीं करता।

सिन्धु तैरके सरस्वतीमें डूबना—जो कठिन काम करके एक सामान्य काम करनेसे डरता हो, उस पर क०।

सिवँइयों बिन ईद कैसी— (मु०) मुसलमान ईदके दिन सिवईं जरूर खाते हैं।

सिंहके वंशमें उपजा स्यार— जब वीरके वंशमें कायर जन्म ले, तब क०

सिंह गवन सुपुरुष बचन, कदलि फरै इक बार। तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार—देखो "तिरिया तेल..........."

सिंह चढ़ी देवी मिले, गरुड़ चढ़े भगवान। बैल चढ़े शिवजी मिले, अड़े सँवारे काम—स्पष्ट।

सिंह पराये देशमें, नित मारे नित खाय—चोर डकैतोंको दूर देशमें ही चोरी डकैती फबती है।

सिंह सांपसे हेत कर, भूतोंके गल लाग। रांघड़ उठे न बाज तो, कोस पचासे भाग—स्पष्ट। इन सबसे भलेही मिले पर रांघड़से दूर रहे।

सिंहसे सरवर करे सियार—जब कम ज़ोर बलवानका मुकाबला करे, तब क०।

सिंहासन छोड़ घूर पर बैठना—जब कोई ऊँचे दरजेका आदमी नीचा काम करे, तब क०।

साँचे किये उपखान सुनो तजि राज सिंहासन बैठत घूरे (रघुनाथ)

सिखाये पूत दरबार नहीं चढ़ते—जो गवाहको झूठी बात सिखा पढ़ा कर गवाही दिलानेके लिये अदालतमें ले जाता है, उसकी जीत नहीं होती।

सिज़दे से गर बहिश्त मिले दूर कीजिये। दो ज़ख़ही सही सिरका झुकाना नहीं अच्छा—(हरिश्चन्द्र) आलसीको क०। जिद्दी को भी क०।

सिद्धको साधक पुजाते हैं—सहायता से काम होता है।

सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी, तेपि काम वश भये वियोगी—काम किसीको नहीं छोड़ता।

विश्वामित्र पराशर प्रभृतयः ... मुख पंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः। (भर्तृहरि)

सिपहगरीके छत्तीस फ़न हैं—सिपाहीके काम करनेमें ३६ कलाओंकी ज़रूरत पड़ती है।

सिपारसी घोड़ी इराकीको लात मारे—जब कोई अयोग्य मनुष्य मालिककी शह पाकर किसी सुयोग्य पुरुषका अपमान करे, तब क०।

सिपाहीकी जोरू हमेशा राँड़—क्योंकि उसको सदा लड़ाईमें हथेली पर प्राण रख कर लड़ना पड़ता है।

सिपाही की रोटी शिर बेचेकी—सिपाही अपना सिर बेचकर जीविका निर्वाह करता है।

सिपाहीको ढाल रखनेकी जगह चाहिये—फ़िर तो वह अपने लायक़ जगह आप ही कर लेगा।

सिफ़्त भी हो, मुफ़्त भी हो, बड़े पनेका भी हो—(व्यं०) जो गाहक कम दाम देकर बढ़िया माल ख़रीदना चाहे, उसे व्यंगसे क०।

सिफ़लेकी मौत माघ—क्योंकि उस समय बहुत जाड़ा पड़ता है, और अकालमें दाम बहुत ख़र्च होता है।

सिफ़ारिश बिना रोज़गार नहीं लगता—(व्यं०) बिना प्रशंसापत्रके नौकरी नहीं मिलती।

सिय रघुबीर कि कानन योगू, धर्म प्रधान सत्य कह लोगू—(तुलसी) स्पष्ट।

सियारके मन्त्री कौवा—छोड़ दहले हाड़ चाम खाह ले मसवा—(भो०) जब कोई अच्छी चीज़ आप रख ले, और ख़राब चीज़ औरोंके लिये छोड़ दे, तब क०। अकबर के प्रधान मन्त्री टोडरमलने जब कांगड़ा घाटी दख़ल की, तब उन्होंने अच्छी अच्छी ज़मीन बादशाहके लिये रख छोड़ी और ख़राब ज़मीन दूसरोंके हाथ बन्दोबस्त कर दी। ऐसा करनेके बाद उन्होंने उक्त मसल कही थी।

सियाल कोटी, हराम खोटी-पंजाबके सियालकोटके लोगोंको व्यंगसे क०।

सियाह करो या सफेद—इच्छानुसार अच्छे या बुरे काम करने पर क०।

सियाही बालोंकी गई, दिलकी आरज़ू न गई—बूढ़े लम्पट पर क०।

सिरका नहाया पाक—(मु०) (१) सबसे ऊँचे हाकिम द्वारा फैसला सुनाया जाता है, तब क०। (२) मुसलमान नहानेके समय केवल सिर ही भिंगोते हैं, इसलिये क०।

सिरका पसीना एड़ीको आना—जो कठिन परिश्रमकर अपनी जीविका निर्वाह करता है, उस पर क०।

सिरका पांव और पांवका सिर—उल्टी सीधी बात करने पर क०।

सिर गाड़ी पैर पहिया करे तो रोटी मिलती है—उ० दे० 'सिरका पसीना'

सिर गाला, मुँह काला—जो बूढ़ा होकर भी लड़कों जैसा काम करे, उसको क०। बुढ़ापा दूसरा लड़कपन है।

सिर सैल सिरबाहा है—(१) जैसा सिर वैसी पगड़ी चाहिये। (२) नेताके साथ ही जनता चलती है।

निसदिन तिया प्रेम दिय पागी,
दिन दिन दूर अकुलावन लागी।
बौझो लोग छाड़ि अवराह,
जैसो सिर तैसो सिरबाह। (कौ०र०को०)

सिर भाड़, मुंह पहाड़—भयानक शकलवालेको कहते हैं।

सिर तोड़ मेहनत, मुख तोड़ जवाब—सिर तोड़ परिश्रम करना और मुंह तोड़ जवाब देना अच्छा है।

सिर तो नहीं खुजाया है ?
सिर तो नहीं फिरा है ? } जो आदमी व्यर्थकी बातें करता हो उसको कहते हैं। सिर खुजाना=मार खानेकी इच्छा करना; सिर फिरना=पागल होना।

सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा, परम धर्म यह नाथ हमारा—(तुलसी) किसीकी आज्ञापालन करनेके लिये कहते हैं।

सिर नक़द नौकरी उधार—जब कोई किसीसे तुरत काम करा ले परन्तु उसका मेहनताना पीछे दे, तब क०।

सिर नहीं, या सिरोही नहीं—जब वीर युद्धमें शत्रुसे मरने या शत्रुको मारनेका संकल्प करता है, तब क०।

सिरपर आरे चल गये तौभी मदार ही मदार—(मु० ज०) जब कोई संकटमें पड़कर भी आलसी सा बैठा रहता और जीवनका कोई उपाय नहीं सोचता, तब क०।

सिरपर जूती, हाथमें रोटी—(मु०ज०) जो बहुत अपमान सहकर रोटी कमाता हो, उसको क०।

सिरपर पड़ी बजाये सिद्ध—दे० 'गले पड़ी'।

सिर बड़ा सरदारोंका, पैर बड़ा गँवारोंका—बुद्धिमानका सिर बड़ा और गँवारका पैर बड़ा होता है।

सिर मुड़ाके क्या घुटना मुड़ावेगा ?—जो कुछ कर चुका है, इससे अधिक क्या करेगा ?

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े—जब किसी कामके प्रारम्भमें ही विघ्न पड़े, तब क०।

सिर मुड़ाये मुरदा हलका नहीं होता—अर्थ स्पष्ट है। अश्लीलताके लिये पाठ भेद किया गया है। सामान्य सहारा देनेसे कोई काम पूरा नहीं होता।

सिर मुड़ाया भला किया, बेलतले मत जाइयो। बेल गिरेगा सिर फूटेगा, दही चूड़ा मत खाइयो—लड़कोंका मूड़न होता है तब उनके साथी चिढ़ानेके लिये कहा करते हैं।

सिर मुंडे उस रांड़का, जो खसमसे पहिले खाय (ज०) पतिको बिना खिलाये स्त्रीको नहीं खाना चाहिये।

सिरमें बाल नहीं भालसे लड़ाई—बिना अपनी मज़बूती किये बलवानका सामना करे, तब क०। देखो "छातीपर बाल नहीं"।

सिर सलामत तो पगड़ी पचास—सिर रहेगा तो पगड़ी बहुत मिल जायंगी, जैसे जड़ रहेगी तो पत्ते बहुत निकल आवेंगे. मूल रहेगा तो ब्याज बहुत आ जायगा, लड़का रहेगा तो बहुएं बहुत आ जायंगी इत्यादि।

सिर सहलावें, भेजा खावें—जो ऊपरसे मीठी बातें कहे और भीतर जड़ काटे, उसे क०।

सिर सिजदेमें, मन बदियोंमें—(मु०) बगुलाभगतको क०।

सिरसे उतरे बाल, गूमें जायें या मूतमें—जब त्यागी हुई चीज़ या मनुष्यसे कुछ प्रयोजन न रखना हो, तब क०।

सिरसे कफ़न बांधे फिरते हैं—जो हथेलीपर जान लिये फिरे अथवा मरने मारनेको तैयार हो, उसे क०

सिरसे खाया भारी—बेजोड़ मामलेपर क०।

सिरिस सुमन किमि बेधहिं हीरा—(तुलसी) सिरिसके फूलकी नोकसे हीरेमें छेद नहीं हो सकता, सिरिसका फूल बहुत कोमल होता है। एक लड़के या सुकुमार आदमीसे कठिन काम नहीं हो सकता।

सिरे ही की मेड़ कानी—दे० "बिसमिल्ला ही ग़लत"

सिसकते गये, बिलखते आये—बे मनसे काम करनेवाले नौकरको कहते हैं।

सिहबन्दीके प्यादेका आगा पीछा बराबर—तीन आने रोज़के आदमीका भूत भविष्यत दोनों बराबर हैं।

सींक न समाय तहाँ मूसल घुसेड़ दे—जहाँ कुछभी कहनेकी गुंजाइश नहीं वहां बहुतसा कहनेपर क०। जब कोई बातको बहुत बढ़ा कर कहे तब भी क०।

चोरोंकी चौपहरी बाजे, चिप्पोंकी अठपहरी।
बाहरका कोई आवे नाहीं, आ मारे शहरी॥
साफ सुथरा आगे राखे, जामें नाहीं तूसल।
चोरी के जहाँ सींक समावे, चिप्पोंके तहाँ मूसल॥

(अमीर खुसरो)

दिल्ली शहरके बाहर चिम्मो नामकी एक भटियारिन थी जिसके यहां नगरके लुच्चे भांग चरस पीते थे और जब लुगाई उधरसे निकलती थी तब वह हुक्का लेकर सामने खड़ी होती थी। एक दिन उसने कहा कि भंगेड़ियोंके नामपर भी कुछ कह दो। तब उन्होंने यही ढकोसला कहा था। उस समय बादशाहके यहां चौपहरी नौबत बजती थी। भंग अभी इतनी गाढ़ी बनती है कि भंगेड़ोंमें लोग कहते हैं कि इसमें सींक खड़ी रह सकती है पर इसके यहां इतनी गाढ़ी बनती थी कि उसमें मूसल खड़ा हो जाय।

सींक सड़प्पे तो लालाजीके संग गये अब तो देखो और खाओ—कंजूसोंको क० जब किसी कृपण-का लड़का उससे भी अधिक कृपण हो, तब क०। इसका निकास इस कहानीसे है :—किसी कंजूसने अपने घरमें यह नियम रक्खा था कि घीके बरतनमें सींक डुबानेसे जितना घी निकले उतना हरएक आदमी ले लिया करे। जब वह मर गया तब उसके लड़केने घीके बरतनका मुंह बन्द करके उसपर मुहर लगा दी और उक्त मसल कही। तात्पर्य यह कि सींक चाटना तो पिताजीके साथ गया, अब इसे देखकर ही संतोष करो।

सींग कटाके बछड़ोंमें मिलना—जब कोई बड़ी उम्रका आदमी लड़कोंकी सोहबत करे, तब क०।

सींगकी के टूक और अरंडका के रूख—(मा०) सींगका टुक क्या और रेंड़का रूख क्या? किसी कामके नहीं।

सींचा हम हित जानके, इन न करी कछु कान। छाती पै बेड़ा किया, ओछेकी पहिचान—जल कहता है कि मैंने इस काठको वृक्षके रूपमें सींचा और जब यह बड़ा और मज़बूत हुआ तब मेरी ही छातीपर नाव और जहाज़ बनकर चलने लगा। कृतघ्नताके लिये कहते हैं।

सीख उसीको देनी अच्छी, जो तेरी शिक्षा मानें सच्ची—जो तुम्हारी बात माने उसीको सलाह देनी चाहिये।

सीख तो वाको दीजिये, जाको सीख सुहाय। बंदरको क्या दीजिये, बयेंका घर ही जाय—जो सीखने लायक़ हो उसीको सिखाना चाहिये। एक बयेने बंदरसे कहा, "मानस केरे हाथ पांव मानक-की सी काया। चार महीने बरखा बीती छप्पर क्यों नहिं छाया"। तब बंदरने कहा, मुझे घर बनाना नहीं आता, तब बयेने उसे घोंसला बनाना सिखा दिया। जिसका फल यह हुआ कि बंदरने अपना घर बनानेके लिये बयेका घर तोड़ डाला और अपना भी न बना सका।

सीख देत औरन कों पाँड़ा, आप भरें पापोंका भाँड़ा—दे० "पर उपदेश"

सीखी सीख पड़ोसिनको, घरमें सीख जिठानीको—जिससे सीखे उसीको सिखाने जाय, तब क०।

सीढ़ी सीढ़ी छत पै चढ़ते हैं—शनैः शनैः काम करनेके लिये क०।

सीत दूध जिसने देसाई, वाको तो बैकुंठ यहाँई—(मा०) ईश्वर जिसे दूध दही देता है उसे यहीं बैकुंठ है।

सीतल ताव सुगन्धकी, घटै न महिमा मूर। पीनस वारे जो तज्यो, सोरा जानि कपूर—पीनसवाला जो कपूरको शोरा जानके छोड़ दे तो कपूरकी शीतलता और सुगन्ध नहीं घटती। पीनस एक नाकका रोग है। इसमें नाक बैठ जाती है और रोगीको सुगन्ध दुर्गन्ध नहीं जान पड़ती। कोई श्रीमान गुणीके गुणको न समझे, तब क०।

सीतलाका खाज़ा (या थड़ा)—उस मनुष्यको कहते हैं जिसके मुँहमें शीतलाके दाग़ बहुत हों। खाजा=ख़ुराक, थड़ा=स्थान।

सीतलाका पुजापा—निकम्मी चीज़को क०।

सीतलाका वाहन—गधेको क०।

सीधा घर ख़ुदाका—अदालतको कहते हैं, जहां जानेमें किसीको रोक टोक नहीं।

सीधी उंगलियों घी नहीं निकलता—जब सीधी राहसे काम न हो, तब क०। बिना कड़ाई किये रक़म वसूल न हो, तब भी क०।

(१) लजी सखी सुधा मनुहार, कैलि करन दे यह श्रीहार
सुन्यो पखानों ज्यों जग यद्दे, सीधी अंगुरी घीव न कढ़े।
(दास। छी० १० की०)

(२) समझौते सब मिलत हैं, बन श्रम मिलें न काहि।
सीधी अंगुरी घी जम्यो, क्यों हूं निकसत नाहिं॥ (छन्द)

सीधी उंगलियों घी निकले तो टेढ़ी क्यों कीजे—(व्य०) अगर आपसमें फैसला हो जाय तो अदा-लत क्यों जाय?

सीधे सीधे काटिये बांके तरु बचि जायँ—
दे० "टेढ़ जानि शंका सब काहू"

सीस काटे बालकी रक्षा—जड़ काट कर डालियोंकी रक्षा करना असम्भव है।

सुई सुहागे से सदा, सीखो पर उपकार,
घूस मूसकी बात तुम, कभी न सीखो यार—
(बालमुकुन्द गुप्त) सुई और सोहागा जोड़नेवाले हैं और घूस मूस काटनेवाले।

सुकुमार बीबी चटाईका लहँगा—(च०) बे मेल काम पर क०।

सुख कहना जगसे, दुख कहना मनसे—
अपना दुःख किसीसे न कहे।
(१) रहिमन परघर जायके, दुःख न कहिये रोय।
मान घटे रिपु सब बढ़े, बाँट न लैहै कोय॥
(२) दीप नाहिं दीपतको दीप कर्म आपनेको
मन अपनेकी व्यथा काहू सो न कहिये।" (दीनानाथ)

सुख कारन सागर तज्यो, आन बिधायो अङ्ग।
मोती नर यूं कंपियाँ, तू हँसी और के संग—
सुखके कारन समुद्र अर्थात् अपना घर छोड़ा और अपना शरीर छिदवाया, मोतीकी तरह पुरुष कांपता है जब स्त्रीको दूसरेके साथ हँसते देखता है। स्त्री के हँसनेसे बेसरका मोती हिलता है। मोती और पुरुषका रूपक है।

सुखके बड़े योधा रखवाले हैं—सुख बहुत मुशकिलसे मिलता है।

सुखके सब साथी हैं—सुखमें सभी अपने हो जाते हैं। जब दुःखमें कोई खबर न ले, तब क०।
(१) द्रुम ज्यों लागे जात खग, आवें जब फल होय।
संपतिके साथी सबै, बिपदाके नहिं कोय। (नागरीदास)
(२) सब यह किसी सांईकी सदा थी।
सुख सम्पतका हर कोई साथी॥ (हाली)

सुखन गोई मुशकिल नहीं सुखन फ़हमी मुशकिल है—बात कहनेसे उसका समझना कठिन है।

सुखन उन्हींपर डारिये जो हँस हँस राखे मान—
उन्हींसे माँगो जो तुम्हारा मान रक्खे।
जो मुशकिल आसान करो तो मुहसे बचन निकालें।
नहीं तो चुपके रहें, आपसे फिर कुछ सुखन न डालें।
(सरवरनौर)

सुख बढ़े मुटापा चढ़े—सुख मिलनेसे ही आदमी मोटा होता है।

सुख मानो तो सुक्ख है, दुख मानो तो दुक्ख।

सच्चा सुखिया कोई है जो सुख माने ना दुक्ख—स्पष्ट।

सुखमें आये करमचन्द, लगे सुड़ावन गंज—
जब कोई सुखी मनुष्य मूर्खतासे दुख पानेका काम करे, तब क०।

सुखमें निद्रा दुखमें राम—सुख तो आरामसे कट जाता है। पर दुःखमें ईश्वरको याद आती है।

सुखमें पड़ी सभागी, भुसमें लोटन लागी—
जब कोई दुलारमें पड़ कर इतराने लगे, तब क०।

सुखमें वामा दुखमें राम दे० 'सुखमें निद्रा'

सुख सम्पति और आ[illegible] सब काहूपर होय।
ज्ञानी काटे ज्ञानसे, और मूरख काटे रोय—
अच्छे और बुरे दिन सभोंपर पड़ते हैं, ज्ञानी उसे सुखसे काटते [illegible] और मूर्ख उसे दुःखसे बिताते हैं।
दुनियामें अपना ज[illegible] है पड़ताके मर गया।
दिल तंगियोंसे [illegible] कोई तकलाके मर गया॥
आख़िर था वह तो [illegible] पक्की [illegible] झाके मर गया।
बेचारा खाती पीटके [illegible] खावे [illegible] र गया॥
सुख पाके मर गया कोई दु[illegible] पाके मर गया।
जीता रहा न कोई हर एक पाके मर गया॥ (नज़ीर)

सुखसे किया सनेह पड़ा दुख दूना—जो अधिक सुख चाहते हैं उनको दूना दुःख होता है।

सुख सोवे कुम्हार जाकी चोर न लेवे मटिया—
बे[illegible] क को क०।
[illegible] [illegible]रचा तजे, रहे काम नहिं देहि।
ज्यों कुम्हार सोवे सुखी, चोर न मटिया लेहि॥

सुख सोवे शेख और चोर न भाड़े ले—ऊ० दे०।
शेख एक जातिके भाट होते हैं जो पीरोंका यश गाते फिरते हैं। यह बहुत ही ग़रीब होते हैं, इसलिये इनके बरतन चुराने लायक़ नहीं होते।

सुख सोवे शेख, जिनके टट्टू न मेख—ऊ० दे०।

सुख सोवे होरू, जिनके गाय न गोरू—
ऊ० दे०।

सुखार दुहार आसमानी फ़रमानी है—(पू० क०)
अनावृष्टि और अति वृष्टि ईश्वरके हाथ है।

सुगन्ध लगाऊं तो ऊभ मरूं अरू ऊभ मरूं पहने तन सारी। हार चमेलीको भार सो लागत, जानत हो तनको सुकुमारी—(रूपगर्विता) झूठी सुकुमारता पर क०।

सुघड़ बलैया सुसरा ले, बैल मांगि बहूको दे—इसलिए बहूको उसका ससुर भी प्यार करता है।

सुघड़ सुघड़ हंस गई, फूहड़ोंको आया हाँसा—(ज०) बुद्धिमान मनुष्य केवल मुसकुरा देता है, परन्तु मूर्ख खिलखिला कर हँस देते हैं।

सुत दारा अरु लक्ष्मी, पापीके भी होय। साधु-समागम हरि-भजन, तुलसी दुर्लभ होय—साधुओंकी संगति और हरि-भजन बड़ी कठिनतासे होता है।

सुता जो राखै चोरो पर, तो पगड़ी पत रख मोरी पर—जो चोरीकी नीयत रखता है उसकी इज्जत नहीं रहती।

सुथन बिच गहना तो भूखों क्यों रहना—(पं०) स्पष्ट। दुमानी है।

सुध और छो का बैर है, छो आवत सुध जाय, सोही नर भरपूर है, जो सुध ना देत गँवाय—(मार०) वही मनुष्य प्रशंसनीय है, जो क्रोधमें भी अपनी बुद्धि नहीं खोता है।

सुध बुध ना खो आपनी, बात ले मेरी मान। इस दुनियां रहना नहीं, मत ना हो अनजान—(मार०) फ़क़ीरका कहना है।

सुध सूं सुधरें कार सब, सुध बिन होत बिगाड़। ऐसा सुध बिन है मनुष, जैसा पत्थर भ्वाड़—(मार०) बिना किसी गुणका आदमी पत्थर सरीखा है।

सुन कोई हज़ार कुछ सुनावे, कीजे वही जो समझमें आवे, काबू हो तो कीजे न ग़फ़लत, आजिज़ हो तो हारिये न हिम्मत, आता हो तो हाथसे न दीजे, जाता हो तो उसका ग़म न कीजे—स्पष्ट।

सुन खगेश अस को जग माहीं, प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं—ऐसे आदमी कम हैं, जो विभव पाकर घमंड न करें।

सुनत बात मृदु अन्त कठोरी, देत मनहु मधु माहुर घोरी—पहिले मीठा सुनकर पीछे कठोर सुननेसे बहुत दुःख होता है।

सुनते सुनते कान बहरे हो गये—जब एक ही विषय बार बार कहा जाता है, तब क०।

सुन रे ढोल बहूके बोल—किसीको चितावनी देनेके लिये क०।

इस मसलका निकास इस तरह है:—कोई बूढ़ी औरत अपने लड़केसे उसकी स्त्रीकी शिकायत किया करती थी। स्त्रीका चालचलन खराब था सही, किन्तु लड़केने उसपर तनिक भी ध्यान न दिया। कुछ दिन बाद उसकी स्त्री बीमार पड़ी। तब पुरोहितने आकर उस स्त्रीसे कहा कि तुम्हारा अन्तिम समय बीत रहा है, इस लिये तुमने आजतक जो अपराध किये हैं, उन्हें स्वीकार कर लो। बुढ़ियाने अच्छा मौका जान अपने लड़केको एक ढोलमें छिपा रक्खा जो रोगीके पास ही धरा हुआ था। इधर स्त्री अपनी सभी किये हुए पापोंको एक एक करके पुरोहितके सामने कह रही थी, उधर उसकी सास उक्त मसल कहकर ढोल बजाती जाती थी, ताकि उसका लड़का अपनी कुलटा स्त्रीके पापोंको स्वयं अपने कानोंसे सुन ले।

सुन सुनके तेरी बात सहेली सोच हुआ मेरे मनको। करके ब्याह घरों नहीं रखते बाबुल अपनी धी को—(ज०) स्पष्ट। इसलिये कि पीहरमें जैसा दुलार होता है वैसा ससुरालमें नहीं होता।

सुन सुन मीठी बोल गत, बैठ न बैरी पास। दही भुलावे बावरे, खाप कधी कपास—भूलकर भी बैरीको संगति न करनी चाहिये।

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी, जिमि दशनन महँ जीभ बिचारी—(तुलसी) अशोक वाटिकामें सीताजी हनुमान्‌जीसे कहती हैं। जब कोई चारों तरफसे शत्रुओंसे घिरा रहता है, तब क०।

सुनाड़ी बेचे कांतु, अनाड़ी बेचे मांछु—(पू०) कांतु=हड्डी, मांछु=मछली। दे० "ऐसे उत।"

सुनार अपनी माकी नथमेंसे भी चुराता है—सुनार अपनी माको भी ठगता है, दूसरेकी बात ही क्या है।

सुनारकी खटाई, और दर्ज़ीके बन्द—जब कोई सुनार और दर्ज़ीसे अपनी चीज़ मांगने जाता है, तब सुनार 'सब चीज़ तैयार हो गई केवल 'खटाई' बाकी है' और दर्ज़ी केवल 'बन्द' की कसर बतला कर गाहक को टाल देता है।

सुनि सुनि गीता फूटे कान, तऊ न उपज्यो रंचक ज्ञान—दे० 'फूले फले न बेत'।

सुनिय सुधा देखिय गरल, विधि करतूत कराल। जहँ तहँ काक उलूक बक; मानस सुकृत मराल—स्पष्ट।

सुनिये सबकी, कीजिये मनकी— अगर दस आदमी दस तरहकी सम्मति दें, तो जिससे अपना इष्ट साधन होता देखे, उसीको ग्रहण करे।

सुनिये दो तो कहिये एक—मनुष्यको चाहिये कि सुने अधिक और कहे कम।

कहै एक जब सुन लें इन्साम दो। कि हकने जबां एक दी कान दो। (ज़ौक़)।

सुनी सुनाई बातकी, गँठरी बाधें लूट। बरछिन की मार पड़ी, ककड़िनकी भई लूट—जो किसी प्रकारकी सुनी हुई बातोंको सभी मान लेता है, चाहे वह सम्भव हो या असम्भव, उसे क०। (ककड़ीकी चोरीमें बरछीकी मार. असम्भव है।)

सुन्नी न शीया, जीमें आया सो किया— (मु०) जो किसी मज़हबका पाबंद नहीं है, वह अपने इच्छानुसार सब कुछ करता है।

सुपना देख रहे मन गोय, अनका देखे अपना होय (पू०) ऐसा लोगोंका विश्वास है कि जो सपना देखकर मनमें छिपा रखता है वह सपनेमें जो घटना दूसरोंपर होते देखता है, उसपर भी उसका असर होता है।

सुपना है संसार—जगत् मिथ्या है। वेदान्तिओंका कहना है।

(१) उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।
सत हरि भजन जगत सब सपना॥ (तुलसी)

(२) सपने होइ भिखारि नृप रंक नाक पति होइ।
जागे हानि न लाभ कछु तिमि प्रपंच जग जोइ॥ (तुलसी)

सुपनेकी सी माया जिसको अपनी बतलावे—सम्पत्ति किसीके पास सब दिन नहीं रहती, वह सपनेकी माया सी है।

सुपनेकी सी संपति झूठी—ऊ० दे०।

सुपनेमें राजा भये, दिनको वही हवाल—देखो "चार दिनकी........"

निरख्यो सोवत ग्वाम सखि, कहै छकि ज्यिमि थीर।
सुपनेमैं राजा भये, जागे भये फ़कीर।

सुपनेमें स्वामी मिले, कर न सकी दो बात। सोवत थी रोवत उठी, मलती रह गई हाथ—स्पष्ट।

सुपुरदम ब तू माया-ए-ख़ेशरा, तू दानी हिसाबे कम-ओ-बेशरा—(फा०) मैंने अपनी चीज़ सपुर्द कर दी, उसकी भलाई बुराई समझना तुम्हारे अख़्त्यार है। पुस्तककी भूमिकामें लिखी जाती है।

सुफल होत मनकामना, तुलसी प्रेम प्रतीत। अपनो पैपन लायके, तिरिया पूजत भीत—(तुलसी) विश्वाससे ही फल होता है। पैपन, चावलका आटा और हलदीको पानीमें घोलकर बनाया जाता है, जिससे स्त्रियाँ दीवालमें चित्र आकृती हैं।

सुफेद बाल, जवानीका ज़वाल—बाल पकनेसे उमर ढल जाती है।

सुफ़ेद बाल, मौतका पैग़ाम—स्पष्ट।

सुमिरनि करमें, सुरत न हरमें, कहो भेष यह कैसा है? ऊपरसे तो सिद्ध बन बैठा, भीतर पैसा पैसा है—स्पष्ट।

सुरतीला, सो फुरतीला—तीक्ष्ण बुद्धि या याद रखनेवाला मनुष्य बहुत चतुर होता है।

सुरनर मुनिकी है यह रीती, स्वारथ लाग करहिं सब प्रीती—(तुलसी) स्पष्ट।

सुरमा सब लगाते हैं, पर चितवन भाँत भाँत—सब ही काम करते हैं, परंतु काम करनेका तरीक़ा सबका जुदा जुदा है।

सुरमें ईश्वर बसे—गानसे ईश्वर प्रसन्न रहते हैं।

सुरा सुरापी ना तजे, यदपि विकल गत होय—

जिसको जो आदत पड़ गई है, वह लाख चेष्टा करने पर भी नहीं छुटती।

सुबह होता है शाम होती है, उम्र यूं ही तमाम होती है—स्पष्ट।

सुस्त मनुष्यका कोई न लागू फुरतीलेके सब लेभागू—परिश्रमीको सभी चाहते हैं।

सुस्ती बुरी रे बालके, याकूं जीसे टार। रत्ती बोझा सुस्तको, लागे बोझ पहाड़—(ग्रा०) आलसीको सामान्य काम भी कठिन जान पड़ता है।

सुहागनका पूत पिछवाड़े खेले है—सुहागिनका लड़का जब मर जाता है, तो उसे मालूम पड़ता है, कि मेरा लड़का पिछवाड़े में खेल रहा है, अर्थात् उसे फिर भी पुत्र उत्पन्न होनेकी उम्मीद रहती है। जो आदमी रोज़गारी है या जिसकी आमदनी अच्छी है, अगर उसका कुछ नुकसान हो जाय, तब क०, क्योंकि वह अपना घाटा पूरा कर लेगा।

सुहागभाग अरज़ानी, चूल्हे आग न घड़े पानी—(मु० ज०) किसी गरीब या अभागेके विवाहपर क०।

सुहातेकी लात, न सुहातेकी बात—(१) जब मित्रकी गाली भी कोई सहे पर शत्रुकी साधारण बात भी बुरी लगे, तब क०। (२) जहां कुछ मिलनेकी आशा है, वहां कटुवचन भी सह लेवें, पर जहां प्राप्ति नहीं है, वहांकी साधारण बातसे भी अप्रसन्न हो, तब क०।

सूंड़ कटे गनेस—मोटे आदमीको क०।

सूई, कतरनी, गज़, डंगलेटा, रक्खे सो दरज़ीका बेटा—दरज़ीको ये चार चीज़ें अवश्य रखनी चाहिये।

सूई कहे मैं छेदूं छेदूं, पहिले छेद कराय—जो अपना ऐब न देखे और दूसरोंका दोष निकाले, उसपर क०।

सूईका भाला हो गया—जब थोड़ी सी बात बहुत बढ़ जाय, तब क०।

सूईके नाकेसे सबको निकालता है—(१) जो किसी के गुण-दोषका विचार नहीं करता, सबको एक ही निगाहसे देखता है, उसे क० (२) होशियार आदमी जो सबको एक ही रास्ते चलाये, उसे भी क०।

सूई चोर, सो बज्जरचोर—चोरी करना बुरा है, चाहे थोड़ी करे या बहुत।

सूई टूटी कुड़ी कसीदे छूटी—(पं०) दे० 'चोरोंने गठरी'।

सूई न जाय तहां, फावड़ा घुसेड़ दे—जो थोड़ी सी बातको बहुत बढ़ाके कहते हैं, उन्हें क०।

सूई भर छान मूसल भर अंधेर—न्याय थोड़ा अन्याय बहुत।

सूखली मिरचइया तितैया तीरे उतनी—सूखनेपर भी मिर्चकी कड़वाहट नहीं जाती। देखो "रस्सी जल गई.........."

सूखा ढाक, बढ़ईका बाप—ढाकका काठ सूखनेपर बहुत कड़ा हो जाता है।

सूखा साखा बामन हो गया फूल फाल चुगत्ता—जब कोई निर्धन मनुष्य धनवान होकर मोटा ताज़ा हो जाय, तब क०। चुगत्ता=चुगताई=मुग़ल।

सूखी चिनाई करते हैं—सूखे मसालेसे भीत उठाते हैं। (१) बुरी रीतिसे व्यवसाय करनेपर क०। (२) ब्राह्मणोंको वा चौबोंको खानेकी तरह क०, क्योंकि खाते समय वे पानी नहीं पीते, जिसमें ज़्यादा खाया जाय।

सूखे धानों पानी पड़ा—जब कोई मनुष्य या काम बिगड़नेको हो और किसी तरहकी सहायता पाकर सुधर जाय, तब क०। जब किसीका वंश लोप होनेको हो, उस समय उसके घरमें लड़का पैदा हो जाय, तब क०।

(१) पर चाथौ घनश्याम लखि, चढ़े रोम तिय देह। कहे सखि ज्यों बरसई, सूखे धाननि मेह॥ (भारत पत्रिका)

(२) सूखत धान परा जनु पानी—(तुलसी)

सूखे माँ झड़बेर घने हों, सम्मत माँ अनढ़ेर घने हों—(ग्रा० कु०) अन्न कम पैदा होता है, तो झड़बेरी बहुत फलती है।

सूखे संख बजै दिन रात—दे० 'खाली संख'

सूखे सरमें हंस न जाय—सूमके पास गुणी नहीं जाता।

सूखे सावन रूखे भादों—सावन सूखा जानेसे भदई फसल अच्छी नहीं होती।

सूची प्रवेशो मुसल प्रवेशा—(सं०) दे० "सूई न जाय"

सूज सटका, कपड़ा फटाक—सूई घुसानेसे कपड़ा

फट जाता है। खोटे आदमीको क०।

सूजी फूली जैसे घीका कुप्पा—(ज०) मोटी औरतको क०।

सूझे नहीं और गुलेलका शौक़—(च०) जिस कामके योग्य न हो, उसका शौक़ करे, तब क०, गुलेल कमानकी तरह होती है, जिससे छोटे जानवरोंका शिकार करनेके लिये गोली मारी जाती है।

सूझे न बिटौरा चाँदसे 'राम राम'—(च०) बिटौरा (गोबरका टीला) तो दिखाई न पड़े और चले दूजका चाँद देखने।

सूतकी आँटी और यूसुफ़की ख़रीदारी—(च० मु०) थोड़ी सी पूंजीसे बहुत दामकी चीज ख़रीदा चाहे, तब क०।

ऐसा कहा जाता है कि जब यूसुफ़ गुलाम बनाकर मिश्रके बाज़ारमें बेचनेके लिये लाये गये, तब एक बुढ़िया ने एक आंटी सूतके बदलेमें उन्हें ख़रीदना चाहा था।

सूतके बिनौले हो गये—सब काम बिगड़ जानेपर क०।

सूत दिया नहिं तार, कोरीसे तकरार
सूत न कपास कोलीसे लट्ठम लट्ठा } बिना कारण लड़ाई करनेपर क०।

दो जमींदार अपने गांवसे कहींको चले जाते थे। रास्तेमें उन्हें ५०।६० बीघ अच्छा जमीनका टुकड़ा दिखाई दिया। उनमेंसे एकने कहा, भाई यदि यह जगह हमारे तुम्हारे हाथ लगे तो तुम क्या करो। उसने कहा, मैं तो उसमें बगीचा लगाऊंगा। पहलेने कहा, मैं तो उसमें अपनी गायें भैंसे चराऊंगा। दूसरेने जवाब दिया कि तुम चाहे बुरा मानो चाहे भला, मैं तो अपने बगीचेके पास तुम्हें न चराने दूंगा। पहलेने कहा, इसमें तुम्हारा कुछ इजारा नहीं है, मैं अपनी जमीनमें जो चाहूंगा सो करूंगा। गरज़ इसी तरह हुज्जा हुज्जी करके सभी दोनों हाथापाई करने। इनको झगड़ते देख बहुतसे राहगीर जमा हो गये। उन्होंने बीच बिचाव कर लड़नेका कारण पूछा, दोनोंने अपनी अपनी बात कह सुनाई। इसपर एक मनुष्यने कहा, कि भाई तुम्हारी वही मसल है "कि सूत न कपास कोलीसे लट्ठम लट्ठा।

सूता सरप जगावेना, गोबर पाँव लगावेना—स्पष्ट।

सूधेका मुंह कुत्ता चाटै—बहुत सीधापन भी अच्छा नहीं।

न इतना हलवा बन कि चटकर जाय भूखे।
न इतना कड़ुवा बन कि जो चक्खे सो थूके॥

सूना खेत कुलच्छना, हिरना ही चुग जाय।
खेत बिराना बोयके, बीज अकारथ जाय—(कु०) जिस खेतकी रखवाली नहीं होती, उसे हरिन चर जाता है और पराये खेतमें खेती करनेसे लाभ नहीं होता।

सूना खेत पहरुआ सोवे, क्यों ना खेती ऊजड़ होवे—स्पष्ट।

सूना घर चोरोंका राज—जिस घरकी रखवाली नहीं होती, उसीमें चोरी होती है।

सूना घर भीड़ोंका राज—ख़ाली घरमें ही बरें अपना छत्ता लगाते हैं।

सूनी शालासे मरखनी गौ अच्छी—स्पष्ट।

सूनी सेजसे मरखना बैल अच्छा—(ज०) वैधव्यसे ख़राब स्वभाववाला पति अच्छा। विधवाओंका कहना है।

सूने घरको पाहुनों, ज्यों आवे त्यों जाय—स्पष्ट।

सूनेमा मत चीज़ रख, ले जा चोर चकार, खाऊ है धन जीवका, सूना और उजाड़—स्पष्ट।

सूपके फटके सूपमें नहीं रहते—जहांकी चीज़ वहीं चली जाती है। पराये लड़केको कैसे ही दुलारसे पालो पर वह अपना नहीं होता।

माल ए जवाहिर जगत बीच ज़ाहिर है।
सूपको उसारो कहीं सूपहीमें रहतो॥ (उ० प०)

सूपके बजायेसे ऊँट नहीं भागते—स्पष्ट।

ताको बगदाय झूठ भलम दिखाओ कभी
सूपके बजाये कहीं ऊंट भागि जात हैं॥ (उ० प०)

सूप बोले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद—जो ख़ुद अवगुणोंसे भरा रहता है, वह किसीकी शिकायत नहीं कर सकता।

सूमकी थाती—सूम मनुष्यके जमा किये हुए धनको क०।

सूमका माल अकारथ जाय—सूमका धन निष्प्रयोजन ही व्यय हो जाता है।

सूमके घर कुत्ता जाय न जाने दे—धनवान कृपणके लालची नौकरको क०। दे० "अपना कुत्ता बरजो"।

सूमिन पूछे सूमसे, "काहे वदन मलीन। का गाँठीसे गिर पड़ा, का काहूको दीन ?" "ना गाँठीसे कुछ गिरा, ना काहूको दीन।" देते देखा औरको, तातें वदन मलीन—स्पष्ट। सूम आप तो कुछ किसीको देता ही नहीं, दूसरेको देते देखकर भी उसे दुःख होता है।

सूरज अस्त, और मजूर मस्त—इसलिये कि कामसे छुट्टी मिली और दिन भरकी मजूरी पक गई।

सूरजको क्या आरसी लेकर देखते हैं—तेजवान पुरुष आप ही प्रकाशित होते हैं।

तिन क कहिय नाथ जिमि चीन्हें,
देखिय रवि कि दीप कर लीन्हें। (तुलसी)

सूरज धूल डालनेसे नहीं छिपता—तेजवान पुरुष छोटे आदमियोंके छिपानेसे नहीं छिपते। अच्छा आदमी बुरोंके बुरा कहनेसे बुरा नहीं होता।

सूरजने भान उभारी, रैन घरको सिधारी—सूर्य्य निकलनेसे रात चली जाती है।

सूरज वैरी ग्रहण हैं, दीपक वैरी पौन। जीका वैरी काल हैं, आवत रोके कौन—स्पष्ट।

सूरत और सीरत—सुन्दरता और गुण, दोनों होना बहुत मुश्किल है।

सीरतके हम गुलाम हैं सूरत हुई तो क्या।
सुर्खो सफ़ेद मट्टीकी सूरत हुई तो क्या॥

दे० "सोना सुगन्ध"

सूरत चुड़ैलकी सी, मिज़ाज परियोंका सा—(मु० ज०) बदसूरत औरतके अधिक शौक़ीन होने पर क०।

सूरत न शकल, भाड़मेंसे निकल—काले कलूटे बदसूरत मनुष्यको क०।

सूरतमें ऐसे, सीरतमें ऐसे—न देखनेमें ही अच्छे न गुणमें ही। सब तरहसे खराब आदमी या चीज़को क०।

सूरत मेरे मित्रकी, मनमें रही समाय। ज्यूँ मेंहदीके पातमें, लाली लखी न जाय—आन्तरिक प्रेमपर कहते हैं।

सूरदासकी कारी कमरिया चढ़े न दूजो रंग—काली कमली पर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता। यह सूरदासने अपने ऊपर जो भगवत-भजनका रंग चढ़ा था उसके लिये कहा था। सूरदास खल कारी कामरि चढ़े न दूजो रंग—जैसे काली कंबली पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता, उसी तरह दुष्टजन उपदेश करने पर भी दुष्टता नहीं छोड़ते।

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आप। विद्यमान रण पाय रिपु, कायर करहिं प्रलाप—(तुलसी) जो कर्मठ है वह काम करके दिखाता है खाली मुंहसे बकता नहीं।

सूर सूर तुलसी शशी, उडुगन केशवदास। अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहिं प्रकाश—स्पष्ट।

सूरा काटे और बिलमें घुस जाय—वीर मनुष्य अपना रास्ता आप साफ़ कर लेता है।

सूरा रणमें जायकर, लोहा करो निसंक। ना मोहि चढ़े रंडापड़ो, ना तोहि चढ़े कलंक—वीर क्षत्राणीका अपने पतिके प्रति उपदेश।

सूरा सो पूरा—(१) सूरमा सब कुछ कर सकता है। (२) अंधे बुद्धिमान होते हैं।

सूलीपरकी रोटी खाता है—जो मनुष्य अपनी जानको संकटमें डालकर जीवन निर्वाह करता है, उसे क०। जैसे चोरी, डाका, लड़ाई या और कठिन कार्य्य जिसमें जान जोखिम हो।

सूलीपर भी नींद आती है—नींदकी बड़ाईपर क०।

याद मिज़गाँमें मेरी आँख लगी जाती है।
लोग सच कहते हैं सूली पे भी नींद आती है।

सूवा सेमल देखके, सभो गंवाई बुद्धि। फूल देखके रम रहे, फलको रही न सुद्धि—धोखेकी टट्टी पर क०।

सूहा जोग सुहागका, अरु कूप जोग है नीर। गुरु विद्याका जोग है, सोच समझ रे वीर—स्पष्ट।

सूहेकी रीति नहीं, मसख़की तौफ़ीक़ नहीं—(ज०) जो करने योग्य है, उसे करते नहीं, और जो करने योग्य नहीं है उसपर तबीयत चलती है।

सेंतका माल हृदा निर्दयी—जो चीज़ मुफ्तमें मिलती है, उसके खर्च करनेमें तरस नहीं होता।

यह फ़ारसी मसल, "माले मुफ़्त दिले बेरहम" का अनुवाद जान पड़ता है।

सेंतका चूना दादाकी क़ब्र—(पू० ज०) मुफ़्तके मालसे अपना मतलब निकालने पर क०।

सेंतकी गंगा हरामके गोते—जब मुफ़्तकी चीज़ मनमानी या फ़िजूल ख़र्च की जाती है, तब क०।

सेंत मेंतका गेहूं घर घर पूजा—स्पष्ट।

सेंदुर न लगावें तो भतारका मन कैसे रक्खें—(पू० ज०) स्पष्ट।

सेंदुर टिकुली जरल, तब पेटोमें बज्जर पड़ल—(पू० ज० शौक़की चीज़ न मिलेगी तो क्या पेटके लिये अन्न भी न मिलेगा। जब कोई स्त्री कष्ट पाती तब क०।

सेजकी मक्खी भी बुरी—(ज०) स्त्री अपनी सौतकी निसबत कहती है।

सेज चढ़ते ही रांड़—विवाहके बाद ही पतिके मर जाने पर क०। जीती बाजी हारनेपर क०। जब कोई राजा वा अफ़सर लड़ाई जीतते ही मर जाय या किसीका बना बनाया काम बिगड़ जाय, तब भी क०।

सेठ क्या जाने साबुनका भाव—जो जिसका पात्र नहीं है, वह उसका हाल नहीं जानता। सेठोंका काम सराफ़ी करनेका है।

सेत सेत सब एकसे—अच्छे बुरेकी जब पहिचान न हो, तब क०।

जहां नहीं गुन बूझ तहँ, कैसो काम विलास।
सेत सेत सब एकसे, करक कपूर कपास॥
(दीनदयाल गिरि। करक=ओला)

सेरकी हंडीमें सवा सेर पड़ा और उफनी—छोटे दिमाग़वालेको कुछ कठिन काम देनेसे वह उकताने लगता है। (२) छोटा आदमी उचितसे अधिक धन पानेसे इतराने लगता है।

क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई, थोरे धन जस खल बौराई
(तुलसी)

सेरको सवा सेर—(१) अत्याचारीसे क०। तात्पर्य यह है, कि तुम्हें भी दबानेवाला और कोई है। (२) जो अपनेको बहुत चालाक समझता हो उससे भी अधिक चालाक जब उसे मिल जाय, तब क०।

एक चालाक मनुष्यने अपने किसी दोस्तसे कहा कि मैं सफरको जाता हूं, तुम अपनी अंगूठी मुझे दो तो मैं उसे अपने पास रक्खूं। जब उसे देखूंगा तब तुम्हें याद करूंगा। उसने जवाब दिया कि यदि मुझे याद रक्खा चाहते हो तो अपनी उंगलीको खाली देखकर याद करना कि फलाने दोस्तसे अंगूठी मांगी थी, उसने मुझे न दी।

सेरमें पसेरीका धोखा—(१) असम्भव बात पर क०। सेरमें पसेरीका धोखा नहीं हो सकता। (२) बिलकुल नुक़सान होने पर या इतना अधिक नुक़सान होनेपर क०, जितना होना असंभव है।

सेरमें पूनी भी नहीं कती है—अभी कुछ भी काम नहीं हुआ।

सेवकको न्यून भाग ही बहुत है—ग़रीबको थोड़ा सहारा भी बहुत है।

अर माधुर सी चरि भयी, हरी तजो रस इष्ट।
न्यून भाग सेवक कह्यो, ज्यों दस अंगुल मिष्ट॥
(लो० र० को०)

भोजनके समय सेवकसे मालिकने कहा कि अब क्या कोई बहुत (न्यून भाग) कम भाग बच गया, उसपर सेवकने कहा यह न्यून भागही मेरे लिये दस अंगुल मीठा है, अर्थात् बहुत मीठा है, उसी प्रकार पतिने जिस समय प्रियाको धरा (पकड़ा) उस समयका माधुर्य-सुख तो अनुभव कर लिया, उसी समयमें लोग चरि भये अर्थात् देख लेनेसे विघ्न हुए, इसलिये इष्टरस लेना छोड़ दिया, परन्तु पकड़नेका जो आनन्द सेवकके न्यून भागके ऐसा बहुत माना।

सेवक शठ नृप कृपण कुनारी, कपटी मित्र शत्रु सम चारी—(तुलसी) स्पष्ट।

सेवक सुख चह मान भिखारी, व्यसनी धन शुभगति व्यभिचारी—असम्भव बात पर क०।

सेवक सोई जानिये, रहे विपतिमें संग। तन छाया ज्यों धूपमें, रहे साथ एक रंग—सेवक वही है जो विपत्तिमें साथ दे जैसे धूपमें शरीरकी छाया साथ नहीं छोड़ती।

सेवा ऐसी लाभ दे, ज्यों गांडा दे रस।

सेवा की थी डोमने, हुए एक के दस—स्पष्ट।

सेवा करे सो मेवा पावे—सेवाका फल अच्छा होता है।

सेवैं पक्षी सरस तरु, निरस भये उड़ जायँ—जब तक धन रहता है, तभी तक लोग अधिक संख्यामें घेरे रहते हैं। सब स्वार्थके साथी हैं।

क्षीणं वृक्षं फलं त्यजन्ति विहगाः शुष्कं सरः सारसाः।
पुष्पं पर्युषितं त्यजन्ति मधुपा दग्धं वनान्तं मृगाः॥
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका भ्रष्टं श्रियं मन्त्रिणः।
सर्वे कार्यवशाज्जनोऽभिरमते कस्यास्ति को वल्लभः (भर्तृहरि)

सोई बड़ो भगता जगमें, दिये कंठमें काठ कपारमें माटी—आजकलके साधुओंपर क०।

सोंटा बल बिन काम न आवे, बैरी छीन लुंझे गुदकावे—बिना बलके लाठी भी काम नहीं आती।

सोंटा हाता देहमें हांगा, उसने मेंटे सब कुछ मांगा—(मा०) जिसके हाथमें लाठी और शरीरमें बल है उसको मांगनेसे सब कुछ मिलता है।

सोंटे चल अब तेरी बारी—जब सब तरहसे हारकर अन्तिम उपाय अवलम्बन किया जाय, तब क०।

किसी समय एक शेखचिल्लीने अपनी मांसे कहा कि मैं कुछ दिनके लिये विदेश जाऊंगा, मुझे रास्तेमें खानेके लिये कुछ बना दे। उसकी मांने चार रोटियां बना दीं जिन्हें लेकर वह सफ़रमें गया। पहली मुकाम पर एक पेड़के नीचे बैठ गया और रोटियां निकाल कर कहने लगा, "एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं, कि चारोंको ही खा जाऊं।" उस पेड़पर चार परियां रहती थीं, वे समझ गईं कि यह कोई बड़ा देव है जो हम चारोंको खाना चाहता है। परियोंने उसके सामने उपस्थित हो प्रार्थना की कि यदि वह हम लोगोंका प्राण दान दे तो वे उसे एक अनोखी चीज़ देंगी। जब शेखचिल्ली राजी हो गया, तो परियोंने उसे एक जादूकी कड़ाही दी, और कहा कि इससे तुम जितनी रोटियां मांगोगे यह तुम्हें देगी। शेखचिल्ली घर लौटते समय एक सरायमें ठहरा, और भटियारेसे उस कड़ाहीका सब हाल कह सुनाया। भटियारेने चालाकीसे कड़ाही बदल ली। जब वह घर आया तो कड़ाही अपनी मांको देकर बोला कि इसकी आज़माइश करो—जब कड़ाही चूल्हेपर चढ़ाई गई और रोटियां मांगी गईं, तब कुछ न मिला। इससे वह बहुत निराश हो गया। दूसरे दिन उसने फिर चार रोटियां साथ ले उसी पेड़के नीचे बैठ कर वही बातें कहीं जो पहिले दफ़े कही थीं। परियां समझ गईं, कि इसे किसीने ठग लिया है। अबकी बार उन्होंने एक रस्सी और एक सोंटा दिया। शेखचिल्ली उसे लेकर उसी सरायमें आया, और रस्सीको ज़मीनमें बिछाकर कहा कि सबको बांध ले। जितने वहां मौजूद थे सबको रस्सीने बांध लिया। अब उसने सोंटेको ज़मीनमें पटकके कहा कि 'सोंटे चल अब तेरी बारी।' इसपर सोंटा सबको पीटने लगा। मारकी व्यथासे पीड़ित हो जब भटियारेने उसकी कड़ाही फेर दी तब वह राज़ी खुशी अपने घर लौट आया।

सोआ सो चूका—दुमानी है (१) जो सोता है सो खोता है। (२) कुंजड़ेका कहना है, जिस भाव सोआ उसी भाव चूका है (दोनों सागके नाम हैं)

सोइ सयान जो परधन हारी, जो कर दंभ सो बड़ आचारी—कलियुगमें जो दूसरेका धन हरण करता है, वही चतुर और जो दंभ पाखंड करता है, वही आचारी है।

सो घर सत्यानाश जहां हो अतिबल नारी—(गिरि०) जिस घरमें स्त्रीका ज़ोर अधिक होता है, उस घरका नाश हो जाता है।

सोचके चलना मुसाफिर यह ठगोंका गांव है—(१) संसारमें माया मोह आदि जो ठग हैं, उनसे बचे रहना चाहिये। (२) संसारमें सभी अपने स्वार्थके लिये दूसरेको ठगनेके लिये तत्पर रहते हैं। अतएव खूब होशियारीसे रहना चाहिये।

होशियार यार जानी यह दश्त है ठगोंका,
यां टुक निगाह चूकी और माल दोस्तोंका। (नज़ीर)
दे० "आंख बची"।

सोचना, जी मोसना—चिन्ता करनेसे मनको कष्ट होता है।

सो जाये सुपनेमें प्राणी, धन दौलतको पाये। जाग पड़े जैसेके तैसे, हाथ कछू नहिं आवे—स्पष्ट।

सोतका पानी पाक—नालेका जल स्वच्छ एवं पवित्र होता है।

सोता नाग जगाना—किसी ज़बरदस्तसे छेड़छाड़ करने पर क०।

सोती थी पर काता नहीं, जो काता तो पांच गाय—आलसी मनुष्य पर ताना है।

मिलती है तब क०।

सोह न राम प्रेम बिनु माना, कर्णधार बिनु जिमि जलयाना—(तुलसी) स्पष्ट।

सोहनी बुआ और चटाईका लहँगा—(ज०) दे० 'शौक़ीन बुढ़िया...'

सोहबतका असर है—जब किसीपर संगतका प्रभाव पड़ता है, तब क०।

आदै जैसी वस्तु कौं, तैसो ही मन होय।
माला और गिलोल कौं, कर लै देखौ कोय॥
(नागरीदास)

सो है दूलह संग बराता—(तुलसी) दे० "दुलह-की गैल बरात"।

सौ अजान, न एक सुजान—एक चतुर मनुष्य सैकड़ों मूर्खोंसे उत्तम है।

सौ ऐबोंका एक ऐब नादारी है—ग़रीबी सैकड़ों बुराइयोंसे बुरी है।

सौकन गई, और आँख छोड़ गई—सौतके लड़केको क०।

सौकन चूनकी भी बुरी—सौत आटेकी भी बुरी होती है।

इसका निकास उस कहानीसे है जिसमें एक मनुष्यने अपनी स्त्रीको कुढ़ानेके लिये आटेकी एक मूर्ति बना ली थी, और वह उसे रोज़ रोज़ अच्छे अच्छे कपड़े गहने पहिनाता था, और प्यार करता था।

दे० 'काँटा बुरा करीलका'

सौ कव्वोंमें एक बगला भी नरेश है—जहाँपर सब बुरे होते हैं, वहाँपर छलियोंका ही राज होता है।

सौ कपूतसे एक सपूत भला—स्पष्ट।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि,
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि। (चाणक्य)

सौ कालियोंका एक काला—बहुत कपटी आदमीको क०।

सौकी हानी, सहस्र बखानी—बात बढ़ाकर कहने पर क०।

सौके रहे सठ, आधे गये नट, बाकी रहे तीस। दस देंगे दस दिला देंगे, दसका देना क्या?—(व्यं०) जो क़र्ज़दार अपना देना चुकानेमें आलसेट डालता है, उसे क०। झूठा सच्चा बहाना करके रक़मको बराबर कर देने पर क०।

इसपर एक कहानी है:—दो दोस्त मिलकर सैरको निकले। जब वे दरया किनारे पहुँचे तब एकने दूसरेसे कहा कि भाई तुम यहाँ खड़े रहो तो मैं जल्दीसे एक गोता लगा लूँ। इतना कह बीस रुपये उसे सौंप, कपड़े किनारे पर रख, ज्योंही वह पानीमें पैठा, त्योंही दूसरेने चालाकीसे वह रुपये किसीके हाथ अपने घर भेज दिये। जब उसने पानीसे निकल, कपड़े पहिनकर अपने रुपये माँगे तो दूसरा बोला कि हिसाब सुन लो! उसने कहा अभी देते देर भी नहीं हुई, हिसाब कैसा? ग़रज़ दोनोंमें तकरार होने लगी और सौ पचास आदमी घिर आये। उनमेंसे एकने रुपयेवालेसे कहा कि मियाँ क्यों झगड़ता है, हिसाब किस लिये नहीं सुन लेता। हार मान उसने कहा अच्छा सुना हिसाब। वह बोला जिस वक़्त आपने गोता मारा, मैंने जाना कि डूब गये। पाँच रुपये ही तुम्हारे घर ख़बर भेजी और निकले तब पाँच लुच्चोंको ख़ैरातमें दिये। रहे पाँच सो मैंने अपने घर भेजे हैं, उसका कुछ अंदेशा हो तो मुझसे तमस्सुक लिखवा लो। यह धाधलपनेकी बात सुन वह बिचारा बोला, 'अच्छा साहब भर पाये'।

सौ कोसा और एक मसोसा बराबर है—सौ गाली देना और एक ग़म खाना बराबर है।

सौखके बियाह सनोरोंके उजियाले—कोई काम जब बड़े उत्साहसे तो किया जावे, पर उसमें काम सब कंजूसीसे किया जाय, तब क०।

सौ खोटोंका वह सरदार, जिसकी छाती एक न बार—दे० 'कोते गर्दन—'

सौ गज़ पानीमें रहे मिटै न चकमक आग—जन्मगत गुण या दोष किसीका नहीं छूटता।

सौ गज़ वारूँ और गज़ भर न फाड़ूँ—कहे बहुत काम कुछ न करे, तब क०।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ सोते न एक मचला—स्पष्ट।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ हरामज़ादे न एक मगरा—सैकड़ों हरामज़ादोंसे बढ़कर एक मगरा होता है। मगरा या घुना मनुष्य बहुत बुरा होता है।

सौ गाथा सूवा पढ़े अंत बिलाई खाय—जब किसी अच्छे आदमीकी बुरी गति होती है, तब क०।

सौ गालियोंका एक थाला बनाया और उड़ा दिया—ग़मखोर आदमी ऐसा कहते हैं।

सौ गुण्डा न एक मुछमुण्डा—(पं०) एक मुछ-मुण्डा सैकड़ों गुण्डोंसे अधिक बदमाश होता है। पंजाबी मूंछ नहीं मुड़ाते। यह मसल उस वक्त बनी थी, जब कर्ज़न फैशन नहीं चला था।

करधनने अलकर दिया मरदोंकी सूरत देखिये,
फैशन बनाके थायद चेहरेको सब पूछ ली।
सच तो यह है इनसानको योरपने हलका कर दिया,
इसतदा दाढ़ीसे की और इन्तहामें मूंछ ली। (अकबर)

सौ गुलामों घर सूना—(मु० ज०) घरके स्वामीके न रहने पर क०।

घर है यह इक हैरतका नमूना।
सौ घर वाले और घर सूना॥ (ज्ञानी)

सौ घड़े पानी पड़ गये—जब कोई बहुत शर्मिन्दा होता है, तब क०।

देखति रूप अनूपम लाल, भयी मधा पवीन तन बाल।
कांपी पखानों ज्यों रस भरे, मनो सौ घड़े पानी परे॥
(खेद)

सौ चंडाल न एक कंगाल—कङ्गाल चण्डालसे भी भी बुरा होता है।

चहो मित्र धनसंचय करो, सब गुन तन अपुनपर धरो।
तिहि बिनबुद्धि बिकल सबकाल सौ चण्डाल न एक कंगाल

सौ चोट सुनारकी, एक चोट लुहारकी—दे० 'खुट खुट सुनारकी'।

दो मनुष्य आपसमें मित्रता रखते थे। उनमेंसे एक बड़े चंचल स्वभावका था। वह अक्सर दूसरेको छेड़ता और धीन धप्पड़ किया करता था। एक दिन दूसरेने क्रोधमें आकर ऐसा लड़, जमाया कि उसका सिर फूट गया। उसने कहा कि तूने यह क्या किया, जिसके जवाबमें दूसरेने कहा क्या तूने यह मसल नहीं सुनी कि 'सौ सुनारकी न एक लुहारकी'।

सौ चोर न एक उठाई गीरा—एक बटमार सौ चोरोंसे अधिक खतरनाक है।

सौ जीवोंका एक बचाव—जहां एक कमानेवाला और बहुत खाने वाले हों, वहां क०।

सौ जूते और हुक्केका पानी—किसीको लानती देना हो, तब क०।

सौ ठकठका और एक निकला खखला एक—ठकठका=सुनार, खखला=खत्री। सुनार बहुत चालाक होते हैं, परन्तु खत्री उससे सौगुने अधिक हैं।

सौ डण्ड न एक लिपटंत—सौ दण्ड करनेसे कुश्ती लड़ना अच्छा है।

सौ डंडी न एक बुन्देलखण्डी—बुन्देलखण्डी बड़े ही बलवान होते हैं। सौ डण्डियोंकी बराबरी एक बुन्देलखण्डी क्षत्री करता है।

सौतकी बात रसौत—सौतकी बात कड़ुवी होती है।

सौतकी मूरति भी बुरी—देखो 'सौकन चून'

सौत जाय सौतका नाड़ा न जाय—(ज०) सौत चली जाय, पर उसका पति न जाय—नाड़ा=इज़ारबन्द।

सौत पर सौत और जलापा—(ज०) दुखपर दुख।

सौत बुरी है चूनकी औ साझेका काम—दे० 'कांटा बुरा'।

सौत भली सौतेला बुरा—(ज०) सौतसे भी सौतेला लड़का बुरा होता है।

सौ दवा न एक हवा—सौ दवासे जो रोग अच्छा नहीं होता है वह हवा बदलनेसे अच्छा हो जाता है।

सौदा अच्छा लाभका, और राजा अच्छा दाबका—सौदा वही अच्छा है जिसमें मुनाफ़ा हो और राजा वही अच्छा है जिसका दबाव हो।

सौदा कर नफ़ा होगा—अच्छा काम करो फल मिलेगा।

सौदा बिक गया दूकान रह गई—जवानी निकल गई हड्ड रह गया। रस निकल गया फोकट रह गया। यह मसल प्रायः वेश्याओं पर क०।

सौदा सौदाइयों बात नफ़ेमें—(व्य०) सौदाका सौदा और बातें नफ़ेमें। दूकानदार गाहक पटानेके लिये जो तरह तरहकी बातें करता है, उस पर क०।

सौ दिन चोरका, एक दिन साहका—जब आदमी कई बार दोष करके बच जाता है, पर एक बार पकड़े जाने पर पूरा पूरा दण्ड पाता है, तब ऐसा क०।

जातुहते पियपर निय धाम, मारग माँह मिलो निज बाम
बोलो लोग डगल चरवाह, सौ दिन चोरकी एक दिन साह
(अधीरा। लो० र० कौ०)

सौ दिल्ली उजड़ गई तो भी सवा लाख हाथी—उजड़ जाने पर भी दिल्लीकी शान बनी है। देखो 'लटा हाथी भी सौ मनका।'
लोग कहते हैं बना दिल्ली उजड़ कर लखनऊ,
हैं कहाँ यह दाग उस उजड़े हुए घरका जवाब।

सौ नकटोंमें एक नाकवाला नक्कू—जब अच्छा आदमी बुरोंके समाजमें जाता है, तब वह उनके बीच नक्कू बन जाता है। नक्कू शब्द श्लिष्ट है जिसका अर्थ नाकवाला और बदनाम दोनों होता है।

सौ बातकी एक बात यह है—किसी बातका सार कहने पर क०।

सौ बार तेरी तो एक बार मेरी—चोरको क०। क्योंकि अन्तमें एक दिन वह पकड़ा ही जायगा।

सौ बामन न एक खत्री—दिल्लगी से क०।

सो बेरी कहयाँ कही, मस्तक लिखा सो होय लेख लिखे को बालके मेट न सके कोय—नसीबका लिखा नहीं मिटता।
विधिका लिखाको मेटनहारा (तुल०)

सौ मडुवे मरें तो एक चम्मच चोर पैदा हो—क्योंकि वह बदचलन होता है। चम्मच चोर=चम्मच चुरानेवाला, अंग्रेजोंका खानसामा या खिदमतगार

सौ भागिनो विभूषण होना, विधवन कहँ शृंगार नवीना—उलटी रीत पर क०।

सौ रंडी मरें तो एक आया—आया=अंग्रेजोंके यहांकी दाई, जो बदचलन होती है।

सौ मन सोना रत्ती हुकूमत—बड़ोंपर छोटोंकी हुकूमत होने पर क०।

सौ मारे और एक न गिने—निकम्मे मनुष्यको क०। तात्पर्य यह है कि वह किसी लायक नहीं केवल पीटने लायक है।

सौ मारे और निन्नानबेसे भूल जाय—ऊ० दे० अर्थात मारता ही जाय हाथ बंद न होने पावे।

सौ मुंह हज़ार बातें—किसी विषयपर तरह तरहकी अफ़वाहें उड़नेपर क०।

सौमें फूला, हज़ारमें काना, सवा लाखमें ऐंचा ताना—देखो 'कोतागर्दन दुम·····'

सौमें सती, लाखमें यती—सैकड़ों स्त्रियोंमें एक सती होती है और लाखों पुरुषोंमें एक यती होता है।

सौ लगीं तो क्या ? हज़ार लगीं तो क्या ?—(१) निलज्ज मनुष्यपर क०। (२) जो आदमी क़र्ज़पर क़र्ज़ लेता जाता है, उसपर क०।

सौ लठैत न एक पटैत—सौ लाठीवालोंको एक पटेवाला हरा सकता है।

सौ सयाने एकमत—सब सयानोंकी एक ही राय होती है।
इस मसलका निकास इस कहानीसे है। बीरबल इस कहावतको अकबर बादशाहसे कहा करते थे। अकबरने कहावतकी सचाई परखनी चाही। सुतरां बीरबलने बादशाहके आज्ञानुसार नगरसे बाहर एक पक्का कुण्ड बनवाया। जाड़ेकी एक अंधेरी रातको बीरबलने शहरके सौ सयानोंको कुण्डमें एक-एक घड़ा दूध डालनेकी आज्ञा दी। प्रत्येक सयानेने सोचा "निन्नानबे घड़े दूधमें एक घड़ा पानी अवश्य मिल जायगा, अतएव मुझे दूध डालनेकी आवश्यकता नहीं।" इस विचारका यह फल हुआ कि प्रत्येक सयानेने कुण्डके पासवाले तालाबसे एक एक घड़ा जल ही कुण्डमें डाला और उसमें एक बूंद भी दूध न पड़ा। दूसरे दिन प्रातःकाल बीरबल अकबरके साथ कुण्डपर गया और कुण्डमें एक बूंद भी दूध न दिखाई दिया। बादशाहके भेद पूछनेपर बीरबलने कहा,—"हुजूर, सौ सयाने एक मत।"
यहाँ कहत हरिमोहन सान, तू साहस स्वामी वह सान।
कहो कहावत धरि हिय मति, क्यों भी स्याने एकै मति॥
(लो० र० कौ०)

सौ सौ धक्के खायँ, तमाशा घुसके देखें—तमाशेके शौक़ीन धक्के खानेकी शर्म नहीं करते।

स्वर्गसे उतरा, खजूरमें अटका—जब कोई बड़ा कार्य्य अन्तमें आकर अटक रहता है, तब क०।

स्वप्न महलको देखहीं, रहें झोपड़ी मांहि—ऊंची आकांक्षा रखनेवालेको क०।

स्वसुर स्वर्ग
जो ··· ···त है, ···

(१) अन्यत्र कुले निवासः स्वर्गे तुल्यो भवाम्याम्।
यदि भवति विवेकी पश्चता पट दिनानि
दधि मधु घृत लोभान् माक्षिकं च सिद्धं तु
स भवति खर तुल्यो मानवो मान हीनः (उद्भट सागर)
(२) असारे खलु संसारे सारं श्वसुर मंदिरम्।
हरो हिमालये शेते विष्णुः शेते महोदधि।

स्वांग बहुत रात थोड़ी—ज़िन्दगी कम है और काम अधिक करना है।

चलि चलि सहजहिं साजि सिंगार,
पिय खिजिहैं मोहिं लगि बिसार।
लोग उभि सोवो दरमात,
स्वांग बहुत और थोरी रात। (लो० र० कौ०)

स्वांग भी लाये तो कोढ़ीका—किया भी तो गन्दा काम। जब कोई मनुष्य बेमौक़े कोई बात कहे, या ऐसी बात कहे जो सुननेवालोंको बुरी मालूम हो, तब क०।

स्वाति बूंद बिन सघनमें स्वातीमरे पियास—स्वाभिमानी मानसहित ही जीवन व्यतीत करते हैं।

स्वाति बूंद सीपी मुकुत, कदली भयो कपूर। व्यारेके मुख विष भयो, संगतके गुण सूर—स्वातिकी बूंद सीपीमें पड़नेसे मोती, कदलीमें कपूर और सांपके मुखमें विष हो जाती है। सूरदास कहते हैं यह संगतका गुण है।

किसी समय दो मनुष्य आपसमें बहस कर रहे थे। एक कहता था कि मनुष्य अच्छे कुलमें जन्म लेनेसे बड़ा होता है दूसरा कहता था कि सत्संगमें बैठनेसे। यह देख कर किसीने कहा कि तुम्हारा यह झगड़ा कभी न निपटेगा जबतक तुम लोग किसी महात्मासे इसका निर्णय न कराओगे। तब वे दोनों सूरदासजीके पास गये। उनकी बातें सुन कर सूरदासजीने उक्त दोहा कहा था।

स्वास स्वांसमें कृष्ण रट, स्वास वृथा मति खोय। ना जाने या स्वासका, येही अन्त न होय—ज़िन्दगीका कुछ ठिकाना नहीं न जाने कब स्वास निकल जाय, इसलिये कृष्णका नाम सदैव लेता रहे।

स्वारथ न परमारथ—व्यर्थके कामपर क०। जिसमें न तो अपनाही लाभ हो न दूसरेका ही उपकार हो।

स्वारथ मीत सकल जग मांही, सपनेहु कोउ परमारथ नाहीं—स्पष्ट।

स्वारथके सब ही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
जैसे पंछी सरस तरु, निरस भये उड़ जाहिं। (वृन्द)

ह

हँड़िया न डोई मुआ सारी रात खोई—वृथा परिश्रमपर क०।

हँसमुख पाये, तेवर लाये—(पू०) जो कोई हंसके देता है उसे तेवरी चढ़ाके लेता है। कृतघ्नको क०।

हँसना जाय रोता आय, रोता जाय हँसता आय अदालतपर क०।

हँसता ठाकुर खँसता चोर, इन दोनोंका आया छोर—हँसनेसे ठाकुरका रोब जाता रहता है और खांसनेसे चोर पकड़ा जाता है।

हँसते, घर बसते—(१) हँसी मज़ाक़ करते करते घर बस जाता है अर्थात विवाह हो जाता है। (२) हंसता घर ही बसता है। (३) हंसता घर ही कह देता है, कि लोग यहां बसते हैं।

अति उपहासनि तिय दुख पाय, झूठो कह्यो सखी समुझाय
लोग छलि मनमें नहिं लहे, हँसते ही घर बसते कहे।
(लो० र० कौ०)

हँसते देर, न रोते देर—स्त्रियोंके लिये क०।

हँसते हो, कुछ पड़ा पाया है—जब कोई आदमी बहुत हंसता है, तब क०।

हँसना ब्राह्मन, खसना चोर। कुपढ़ कायथ, कुलका बोर ये तीनों कुलको डुबानेवाले हैं।

हंसा चलल भाग, कोऊ न संगे लाग—मर जानेपर कोई साथ नहीं जाता है।

आख़िरको तो वह हंस अकेला ही सिधारा। (नज़ीर)

हंसा तो सरवर गये भये काग परधान—नीचे देखो।

हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दिवान—जब किसी सज्जनके स्थानपर दुर्जनका आधिपत्य हो जाय, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है:—एक ब्राह्मण लोभवश किसी सिंहकी मांदमें गया। उसने यह विचारा था कि सिंहने जिन मनुष्योंको मार खाया है, उनका धन या

गहना वहां पड़ा होगा, सो उठा लाऊँगा। सिंहने उसे देखते ही पकड़ लिया। उस समय सिंहका मन्त्री एक हंस था। उसने ब्राह्मणको अवध्य जान सिंहको समझाया कि यह आपके पुरोहित हैं आप इनके यजमान हैं इन्हें न मारिये। सिंहने ब्राह्मणको छोड़ दिया और वहांपर जो माल पड़ा था, उसे ले जाने दिया। कुछ दिन बाद ब्राह्मण फिर उसी स्थानपर गया। उस समय एक कौआ सिंहका मन्त्री हो गया था। उसने ब्राह्मणको मार डालनेकी सलाह दी। सिंहने हंसकी बात याद करके ब्राह्मणसे कहा, "हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दिवान। जाव विप्र घर आपने, सिंह काके जिजमान।"

हँसिये दूर पड़ौसी नाहिं }
हँसिये दूर पड़ौसी से ना } दूरवालोंसे हंसे, पर पड़ोसीसे न हंसे।

हँसी और फँसी—स्त्री यदि हंसी तो समझो कि अब वह क़ाबूमें आ गई। हंसना सम्मतिका लक्षण है।

हँसी पराई गुड़से मीठी—स्पष्ट

हँसीमें खँसी—(१) बहुत हंसीसे बिगाड़ हो जाता है। (२) बहुत हंसनेसे खांसी आती है।

हँसुआके ब्याह खुरपाके गीत—(पू०) बेजोड़ बातपर क०।

हँसुआ चोख, न खुरपा भोथर—(पू०) जब दोनों निकम्मे होते हैं, तब क०।

हँसुआ दूर कि पड़ौसिनकी नाक—(पू० ज०) न हंसुआ दूर है न पड़ोसनकी नाक। पड़ौसियोंमें अक्सर झगड़ा हुआ करता है, इसलिये क०।

हँसे तो औरोंको, रोवे तो अपनेको—मनुष्य अपनेपर रोता है और दूसरोंपर हंसता है।

हँसे तो हँसिये, अड़े तो अड़िये—जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही बर्त्ताव करना चाहिये।

हँसोड़की जोरू वेश्या—जो आदमी बहुत हंसी मसखरी किया करता है उसकी स्त्री भी बेशर्म हो जाती है।

हक़ कर हलाल कर दिनमें सौबार कर—(मु०) स्पष्ट।

हक़ कहनेसे अहमक़ बेज़ार—मूर्ख मनुष्य सत्यसे चिढ़ते हैं।

मारता है, उसपर अंगारे बरसते हैं।

हक़ ना पावे 'इनाम'—दे० "बनिया देता ही नहीं"।

हक़ नाम अल्लाहका—(मु०) सत्य नाम परमात्माका है।

हक़ हक़ है और नाहक़ नाहक़—सत्य सत्य ही है और असत्य असत्य। जब किसीको समझाते हैं, तब ऐसा कहते हैं।

हकीमको क़ारूरेसे लाज—जो जिसका पेशा है अगर वह उसीसे शरमावे, तब क०।

हग न सकें पेटको पीटें—स्वयं कार्य कर न सकें और दूसरोंको दोष दें, तब ऐसा क०।

हगा न घर रक्खा—दे० 'इधरके रहे न उधरके'।

इस कहावतका निकास इस प्रकारसे है:—एक दिन किसी राजाने एक जाटसे तर्क वितर्कमें हार मान ली और उसके साथ प्रतिज्ञा की कि जो तुम मांगोगे उसे मैं दूंगा। इसपर जाटने कहा, कि मैं तुम्हारे बिछौनेमें हगूंगा। राजा वचन दे चुके थे इससे उलट न सके और लाचार होकर उन्हें यह बात माननी पड़ी। उस समय मन्त्रियोंको एक युक्ति सूझी। उन्होंने जाटसे कहा कि बिछौनेमें हगना सही किन्तु पेशाब न करना। अगर ऐसा करोगे तो तुम्हारा घर ज़ब्त कर लिया जायगा। जाटने इस शर्तको क़बूल कर लिया, किन्तु हगनेके पहिले पेशाब कर दिया। वह उसी समय पकड़ लिया गया और उसका घर ज़ब्त हो गया।

हगासे लड़केके नथने पहिचाने जाते हैं—(ज०) भारत मनुष्य मुँह देखनेसे ही पहिचाना जाता है।

हजका हज और बनिजका बनिज—(मु०) दे०, 'एक पंथ दो काज'। जो मुसलमान यात्री हजके बहाने मक्के जाते हैं और वहांसे बहुत सी चीजें ख़रीद कर लाते हैं जिसमें उन्हें लाभ होता है, उन पर क०।

हजामत हो गई—ठगे जानेपर क०।

हज़ार आफ़तें हैं एक दिल लगानेसे—किसीसे प्रेम करनेपर हज़ारों तरहकी विपत्तियोंका सामना करना पड़ता है।

हज़ार इलाज, और एक परहेज़—रोगीके लिये संयमसे रहना हज़ारों इलाजसे अच्छा है।

हज़ार जूतियां मारूं और एक न गिनूं—दे०

हज़ार जूतियां लगी और इज़्ज़त न गई—निर्लज्जको क०।

हजार दवा और एक दुआ—हजार दवा करनेसे एक बार ईश्वरकी प्रार्थना करना अच्छा है। जब दवासे रोग आराम नहीं होता, तब क०।

हज़ार बरसका रेंजा और मन्हीं नाम—(अ०) जब कोई पुराना आदमी किसी काममें अनभिज्ञता प्रगट करता है, तब क०।

हज़ार लाठी टूटी तौभी घरबारके बासन तोड़नेको बहुत है—बूढ़े कुत्ते पर क०।

हज़ारों टांकी सहकर महादेव होते हैं—बिना कष्ट उठाये मनुष्य ऊंचे दर्जेको नहीं पहुंचता।

सुर्खरू होते हैं इंसां ठोकरें खानेके बाद,
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद।

हज्जामका उस्तरा वही मेरे सिरपर वही तेरे सिरपर—जब दोके साथ एक ही तरहका बर्ताव होता है, तब क०।

हज्जामका टका—कहीं नहीं जाता, चाहे जैसी हजामत बनावे पैसा मिलेहीगा। नाई जब विवाहका सम्बन्ध ठीक करा देता है तब अपना नेग ले लेता है, विवाह चाहे हो या न हो।

हज्जामका लड़का पहिले उस्तादहीका सिर मूंड़ता है—स्पष्ट। जब कोई सिखानेवालेहीको चूना लगावे, तब क०।

हज्जामके आगे सबका सिर झुकता है—ग़रज़के सामने सबको सिर झुकाना पड़ता है।

हठ न छूटै छूटहु बरु देहा—जब मनुष्य किसी कामको करनेके लिये ज़िद करता है, तब ऐसा क०।

हड्डी खाना आसान पर पचाना मुश्किल—घूसख़ोरोंके लिये क०।

हड़ खाय उगले बहेड़ा—करे कुछ फल हो कुछ, तब क०।

हड़ लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—जो बिना ख़र्च किये काम निकालना चाहता है, उस पर क०।

हत्थोंकी गढ़ां दन्दोंसे न खुलें—(पं०) बड़ा काम कम परिश्रमसे नहीं होता है।

हत्थों कीते दम्मड़े, सई संभड़ी व्याह—(पं०) हाथमें पैसा हो तो तुरत ब्याह हो सकता है।

हत्थों लगावें पैरों बुझावे—दे० "चोरसे कहे चोरी करो........"

हथिया चले न पैयां, बैठे दे गुसैयां—(पू०) आलसी मनुष्य पर क०।

हथिया बरसे चित्रा मंड़राय, घर बैठे किसान रिरियाय—(कृ०) पैसा होनेसे खेती नहीं होती।

हथिया बरसे तीन होत हैं, शक्कर, साली, माश।

हथिया बरसे तीन जात हैं, तिल्ली, कोदो, कपास—(कृ०) स्पष्ट।

हथियार हाथका—हाथका अस्त्र ही काम आता है।

घटा स्याम लखि दहै धुधाम, चलौं साथ नखि व्याकुल बाम
यहै प्रसिद्ध जगतमें गाथ, अस्त्र सोई जो हाथके साथ।

हथेलीका फफोला—कष्टदायक मनुष्यको क०।

हथेली पर जान लिये फिरते हैं—जिसे मरनेका डर न हो, उसे क०।

हथेली पर सरसों नहीं जमती—बात कहते ही काम नहीं होता। जो काम करते ही तुरत उसका लाभ उठाया चाहे, उसे क०।

जानौं तोहि चति आतुर ब.म, अब ही मिलवै क्यों घनश्याम
कछौ पखानो सुन्यो सुनाहि, सरसों जमै हथे री नाहिं॥

हथेलीपर सरसों जमाना भानमतीवालोंका काम है, जो हाथ पर सरसों बोकर तुरत पेड़ लगा देते हैं।

हनतेको हनिये, पाप दोष नहीं गनिये—जो किसीका प्राण लेता हो, उसे मारनेमें कोई पाप नहीं।

हनोज़ गाव व ख़र रा न शिनाख़्त—(फा०) अभी तक गधे घोड़ेकी पहिचान नहीं हुई। जब किसीकी उम्र ज्यादा हो जाय वा उसे काम करते बहुत दिन हो जायें और कुछ भी तजरबा न हो, तब क०। गाव=बैल। ख़र=गधा।

किसी मुग़लके पड़ोसमें एक कुम्हार रहता था। उसका गधा बड़ा मस्त था और बराबर रेंका करता था, जिससे मुग़ल बहुत नाख़ुश रहता। वह रोज़ ख़ुदासे यही दुआ मांगता कि या अल्लाह इस गधेको ग़ारत कर। इत्तफ़ाक़न मुग़लकी बारबरदारीका बैल मर गया। तब मुग़लने

कहा सुबहानअल्लाह ! चंद साल खुदाई कर दी, हनोज़ गाव व खर रा न शिनाख़्त ।

हनोज़ दिल्ली दूरस्त—(फा०) उद्देश्य-सिद्धिमें देर है। दे० "अभी दिल्ली........"

हनोज़ रोज़ अव्वल—जब उन्नतिकी आशा रहती है, तब क०। अभी तो पहला ही दिन है।

हम खुरमा ओ हम-सवाब—(फा० मु०) खानेका खाना और पुण्यका पुण्य। खुरमा अर्थात् छुहारा या खजूर मुसलमानोंमें बहुत पवित्र गिना जाता है।

हम चौड़े, बाज़ार सकरा—जो अपना बड़प्पन दिखाता और दूसरोंको छोटा समझता है, उसपर क०। अहंकारीका कहना है।

हम तुम दोनों हैं महरानी, कौन किसीको देवे पानी—जहां दोनों ही सुकुमार हों, वहां क०।

हम ना जावें उहि बैकुंठे जहवां चिलम तमाखू नाहिं—तमाखूके प्रेमी ऐसा कहते हैं।

कान्हरदासजी शहर आगरा मुहल्ला ताजगंजके रहनेवाले बहुत अच्छे साधु हो गये हैं। एक दिन किसी देवालयमें उनका गाना हुआ। जब गाते गाते उनका पेट फूलने लगा तो उन्हें तमाखूकी याद आई। मन्दिरमें तमाखू पीना निषेध है, यह जानकर उन्होंने यह भजन गाया—"है कोई ऐसा मित्र हमारा जो हुक्का भर लावे। कोई खावे कोई पीवे कोई नस्याँ चढ़ावे। कान्हरदास कलियुगकी महिमा इसको बुरा बतावे॥ है कोई ..." भजन सुनकर लोगोंने समझा कि तमाखू बिना बाबाजीका पेट फूलता होगा, इसलिये वहींपर उनके लिये हुक्का लाया गया।

हमने क्या गधे चुराये हैं—
हमने क्या घास खोदी है—
} जो बुद्धिमान कहलानेका दावा करता है, वह कहता है।

हम परदेशी पाहुने, आन किया विश्राम। भोर भये उठि जायेंगे, बसो तिहारो गाँव—स्पष्ट।

हम प्याले, हम निवाले—एक साथ खानेवाले। क़रीबी रिश्तेदारको या गाढ़े मित्रको क०।

हम वासी उहि देसके, जाति बरण कुल नाहिं। शब्द मिलावा होत है, अंग मिलावा नाहिं—साधुओंका कहना है।

हम रोटीको नहीं खाते रोटी हमको खाती है—जो आदमी पारिवारिक चिन्तासे चिन्तित रहता है, वह कहता है।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥
(भर्तृहरि)

हम सांप नहीं हैं कि जियें चाटकर मिट्टी—जब किसीको मज़दूरी या खुराक नहीं मिलती है, तब क०।

हमसे और चौसर—जब कोई अपनेसे बड़ेके साथ मज़ाक़ करता है, तब बड़ा कहता है।

हमारा काम हो बीता, जहाँसे मैं चला रीता—मेरा कर्त्तव्य पूरा हो गया। अब मैं संसारसे ख़ाली हाथ जाता हूँ। वृद्ध या संतोषी मनुष्यका कहना है।

हमारा घर जाय तो जाय पर तुम्हारा न जाय—(१) परोपकारी मनुष्य अपनी हानि करके भी दूसरेको हानि पहुँचनेसे बचाता है। (२) जब कोई परोपकार दिखाते हुए अपना मतलब गाँठता है, तब उसे व्यंगसे क०।

इसपर एक कहानी है:—दिल्लीके दो कंगाल चांदनी बाजारकी सैरको निकले। उन्होंने रास्तेमें एक खोमचेवालेको सामने खोमचा रक्खे हुए बैठे देखा। खोमचा मिठाईसे लबालब भरा था जिसे देख उनके मुँहमें पानी भर आया। एकने खोमचेवालेसे कहा—तू कैसा बेवकूफ है कि मिठाई सामने लिये बैठा है और इसे खाता नहीं। वह बोला, भाई इसके खानेसे घर जाता है। यह दोनों लगे गपागप मिठाई खाने। उसने कहा कि तुम यह क्या करते हो, तो वे दोनों कहने लगे, "हमारा घर जाय तो जाय पर तेरा घर न जाने देंगे।" वह अपनी करनी पर पछताता और देखता ही रह गया।

हमारी बिलमिलाह और हमसे ही छू—(मु० ज०) दे० "मेरी ही बिल्ली........"

हमारे घर आओगे तो क्या लाओगे? तुम्हारे घर आवेंगे तो क्या खिलाओगे?—हर हालतमें अपना ही स्वार्थ देखने पर क०।

हम्मामकी लुंगी जिसने चाहा बांध ली—जो चीज़ सर्वसाधारणके काम आवे, उस पर कहते हैं। हम्माम=नहानेका घर।

हम्मामके भीतर सब नंगे— "धोतीके भीतर..."

यात और मौत किसीके यसकी नहीं—जीना और मरना किसीके अख्त्यारमें नहीं।

(१) हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ।

(तुलसी)

लाई हयात आये कज़ा ले चली चले।

अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले॥ (ज़ौक़)

हरएक बातकी कुछ इंतिहा भी है—सभी वस्तुएं सीमाबद्ध हैं। जब कोई इससे ज़्यादह बात या काम करे, तब क०।

हर कमाले रा जवाले—(फ़ा०) दे० "जो फलेगा सो झड़ेगा"।

हर कसे मसलहते ख़ेश निको मीदानद—(फ़ा०) प्रत्येक आदमी अपना ही अपना फ़ायदा देखता है।

हरका माने; परका न माने—किसी (नये) को मना करनेसे मान जाता है, परन्तु जो परच जाता है वह नहीं मानता।

हरकारे ओ हरमर्दे—हरएक आदमीको अपना ही काम सूझता है।

हर कौरन लक्ष्मी नारायण—स्पष्ट। दे० "हर निवाले..."

हरखें पितर तिलांजलि पाये—स्पष्ट।

हरगुन गावे धक्का पावे, चूतड़ डुलावे टका पावे आमकलकी दशापर कहा है। जहां गुणीका आदर नहीं होता और निर्गुणीका होता है, वहां क०।

हर जैसेको तैसा—(१) जो जैसा करता है वैसा ही फल पाता है। (२) जिसकी जैसी भावना रहती है ईश्वर उसे वैसा ही दिखाई देता है।

जाकी रही भावना जैसी।

प्रभु मूरत देखी तिन तैसी (तुलसी)

हरदी जरदी ना तजै खटरस तजै न आम।

जो हरदी जरदी तजै तो औगुन तजै गुलाम—दे० 'जो हरदी......'

हर देगी चमचा—(मु०च०) अविश्वासी पतिपर क०।

हर निवाले बिसमिल्लाह—जो खानेको हर वक़् तैयार रहता है, पर काम कुछ नहीं कर सकता, उसे क०।

हर फन मौला—जो मनुष्य सब काममें होशियार हो, उसे क०।

हरभूमिका राज—अन्यायी राज्यपर क०। हरभूमि इलाहाबादके निकट एक ग्राम है। वहांका राजा बड़ा अत्याचारी था।

हर रोज़ ईद नेस्त कि हलुआ ख़ुर्दे कसे—हर एक चीज़के लिये समय है।

हर शब शबेबरात है हर रोज़ रोज़े ईद—जो बहुत ठाठ बाटसे रहता है, उसे क०।

हर सट्टे गुड़ मीठा—जब कोई हर बार अपनी जीत चाहता है, तब क०।

एक लड़का किसी बनियेकी दूकानपर नौकर था। वह नित्य प्रति कटोरीमेंसे गुड़ चुराकर खाया करता था। एक दिन उस बनियेने अनुभव किया कि गुड़ कोई चुराकर अवश्य खाता है। चोरको पकड़नेकी नीयतसे उसने गुड़के कटोरेकी जगह विरोजेका कटोरा रख दिया। लड़का गुड़ समझकर उसमेंसे बिरोजा निकालकर खा गया, जिससे उसका मुंह चिपक गया। अंधा बिरोजेमें रस बहुत होता है इसलिये बहुत मुश्किलसे उसका मुंह छुटा। तब बनियेने व्यंगसे यह मसल कही

हर साल जुलाब, हर माह क़य। हर हफ़्त हम्माम हर रोज़ मय—(मु०) वर्षमें एक बार जुलाब, महीनेमें एक बार वमन, हफ़्तेमें एक बार गर्म जलसे स्नान और नित्य थोड़ी सी शराब (दवाके तौरपर) पीना चाहिये। हकीमोंका कहना है।

हर हर गाओ, ढोल बजाओ—ईश्वर-भजन करो, आनन्द मनाओ।

हरामका बोल उठता है, हलालका झुक जाता है असल जहां लज्जासे सिर झुका लेते हैं, वहां कम असल निर्भय होकर बोल उठता है।

हरामकी कमाई, हराममें गंवाई—अन्यायकी कमाई व्यर्थ ही चली जाती है।

हराम कोठेपर चढ़के पुकारता है—बुरी बात छिपी नहीं रहती, अपने आप प्रगट हो जाती है।

हराम खाना और शलगम—(मु०) अन्यायपर अन्याय किया जाय, तब क०।

हराम चालीस घर लेकर डूबता है—स्पष्ट।

हरामज़ादेकी रस्सी दराज़ है—बदमाशोंसे सभी

डरते हैं।

हरामज़ादेसे ख़ुदा भी डरता है—स्पष्ट।

हरिको भजे सो हरिका होय—जो ईश्वरकी उपासना करता है, वही उसे प्रिय होता है। दे० "जात पांत......"

हरिया हाथी हाकिम चोर, दोनोंके विगरे ओर न छोर—जंगली हाथी और चोर हाकिम सीमाबद्ध नहीं रहते।

हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार। तौ भी नहीं बराबरी वेदों किया विचार—गुरुसेवाका महात्म है।

हरी खेती गाभिन गाय मुँह पड़े तब जानी जाय (कृ०) जबतक गाय न वियाये और अन्न घरमें न आवे तबतक उसका क्या ठिकाना? जब किसी बातका पूरा निश्चय न हो, तब क०।

हरे रूखपर सब कोई बैठते हैं—धनी लोगोंका साथ सभी देते हैं।

हरे शिष्य-धन शोक न हरई, सो गुरु घोर नरकमें परई—स्पष्ट।

हर्दी न छोड़े ज़र्दी बुलबुल न छोड़े रंग—प्रकृति नहीं बदलती।

हलक़का न तालूका, यह माल मियां लालूका-बुरी चीज़पर या अन्यायसे उपार्जन किये हुए धनपर क०।

हलक़के कोतवाल—उन लड़कोंको कहते हैं जो बिना भोजनकी सामग्रीमेंसे कुछ लिये अपने माता-पिताको भोजन नहीं करने देते।

हलक़ रोवे, जीभ टोवे—जब किसीको बहुत थोड़ी चीज़ खानेको दी जाय, तब क०।

हलक़से निकली ख़लक़में पड़ी—बात मुंहसे निकली और दुनियांमें फैली। गुप्त बातके प्रगट होनेपर क०।

हलके पिछोड़े उड़ उड़ जायँ—(ज०) दे० 'थोथे फटके'

हल न सकूं मेरे सौ बलरे—(ज०) आलसी मनुष्य कहा करते हैं।

हलवाईकी जाई और सोवे साथ कसाई—किसी उच्च कुलका मनुष्य अगर अपने कुलकी रीतिके विरुद्ध नीचोंका साथ करता है, तब ऐसा कहते हैं। बेजोड़ बातपर भी क०। हलवाई हिन्दू और क़साई मुसलमान होते हैं।

हलवाईकी दूकान और दादाजीकी फ़ातिहा—(मु०) जब कोई दूसरेके धनसे अपना काम करता है, तब कहते हैं। मुफ़्तका माल लुटानेपर भी क०।

हलवा खानेको मुंह चाहिये } (१) अच्छी वस्तु
हलवा ख़ुरदनरा रूप बायद } की प्राप्तिके लिये वैसा गुण चाहिये (२) हलवेमें दाम बहुत लगता है। हरएक आदमी नहीं खा सकता इसलिये भी क०।

हलवा पूरी बांदी खाय, पोता फेरने बीबी जाय—जब घरका काम तो मालिक करे और नौकर मौज उड़ाये, तब क०।

हलवा पूरी बीबी खाय, पुड़ा पिटावन बांदी जाय—बांदीका कहना है—हलवा पूरी खानेके लिये तो बीबी और पिटनेके लिये बांदी।

हलवाही चरवाहेको—जो जिसका काम न हो और उसको वह काम दिया जाय, तब ऐसा कहते हैं। चरवाहा हलवाही क्या जाने अर्थात् गड़रिया किसानका काम नहीं कर सकता।

हलालमें हरकत, हराममें बरकत—जब सत्यवादी मनुष्य दुःख पाते हैं और बुरे आराम पाते हैं, तब क०

हल्दी लगी न फिटकरी, पटाक बहू आन पड़ी—जब कोई काम मुफ़्तमें हो जाय, तब क०। हल्दी फिटकरी कपड़ा रंगनेमें काम आती है।

हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—जब मनुष्य बिना व्ययके अच्छा काम चाहता है, तब ऐसा क०।

हवाका रुख़ देखना—समयकी गतिको पहिचानना।

हवाके घोड़े दौड़ाना—जो मनुष्य अपने मनमें हवाई महल बनाया करता है, उसके लिये क०। झूठी गप्पें हांकनेपर भी क०।

हवाके घोड़ेपर सवार हैं—जब कोई बिना तत्त्वकी बात कहता है, तब क०। बहुत जल्दबाज़को भी क०।

हस्त ओ नेस्त बराबर है—उसका जीना और मरना मेरे लिये बराबर है।

हस्तीका क्या भरोसा ?—ज़िन्दगीका भरोसा क्या ?

हाँ करो, या ना करो—जब किसीसे कोई बात साफ़ कहलानी होती है, तब क०।

हांड़ीका भात छुपे, मुंहकी बात न छुपे—(पं०) भात हांड़ीमें छिप सकता है, मगर मुंहसे निकली बात नहीं छिपती।

हांड़ी न डोई घरघर हमारी रसोई—फ़क़ीरोंका कहना है।

एक साधु किसी गलीमें एक पेड़के नीचे जा उतरा और इधर उधरसे सूखी लकड़ियां चुनचान कर धूनी लगा दी और बाघम्बर बिछाकर बैठ गया। दो चार राही मुसाफ़िर भी उसके पास आ बैठे और हुक्का तमाखू पीने लगे। उनमेंसे एक बोला, बाबाजी ! दिन ढल गया, कुछ रसोई पानीकी फ़िक्र भी तो करो। साधुने कहा, बाबा न हमारे यहां हांड़ी, न हमारे यहां डोई, घर घर हो हमारी रसोई।

हांड़ी न डोई, मुआ सारी बात खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांड़ी न डोई, सब पन खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांड़ीमें अच्छत ना, चला समधी जेंवें—(पू०) जब पासमें कुछ नहीं रहता है और दूसरोंको उसके देनेके लिये कह आता है, तब क०।

हांड़ीमें एक चावल टटोला जाता है—दे० "सारी देगमें……"

हांड़ीमें होगा, सो डोईमें आप ही आवेगा—जो मनमें होगा सो मुंहसे निकलेगा।

इत्थं वदन चल बचमवा वर भावद।

हांड़ेसे दांड़ा भला—बेकार घूमनेसे क़ैद होकर बैठना अच्छा।

हाड़ों थका, ब्योहारों थका—(पं०) बूढ़े आदमी-को क०।

हाकिमकी अगाड़ी, और घोड़ेकी पिछाड़ी न खड़ा हो—दोनोंमें हानि होनेका भय है।

हाकिमके आँख नहीं होती, कान होते हैं—न्यायाधीश सुनकर ही न्याय करते हैं, देखकर नहीं।

हाकिमके डपटे और कीचड़के रपटेका किसने बुरा माना है—स्पष्ट।

हाकिमके तीन शहनाके नौ—हाकिमके तीन और कामदारके नौ हिस्से होते हैं। हाकिमके पास जो पहुंचता है उससे बहुत ज्यादा अमले फ़ैले खा जाते हैं।

हाकिम टले पर हुक्म न टले—हाकिमका किया फ़ैसला ही क़ायम रहता है। हाकिम बदल जाता है, पर उसका हुक्म बहाल रहता है।

हाकिम, दो जाननेवालोंमें एक अनजान—फ़रियादी और असामी दो ही सच्चा हाल जानते हैं, तीसरा हाकिम कुछ नहीं जानता।

हाकिम महकूमकी लड़ाई क्या—स्वामी और अधीनस्थकी लड़ाई लड़ाई नहीं कहलाती।

हाकिमसे महकूम बड़ा—जब मालिकसे भी नौकर अधिक जबरई दिखावे, तब क०।

मौलवी साहब न छोड़ेंगे, खुदा भी बख्श दे।

घेर ही लेंगे पुलिसवाले सज़ा हो या न हो॥

(अकबर)

हाकिम हारे, मुंहमें मारे—जब बड़ा आदमी अनुचित बात करनेपर लज्जित या निरुत्तर हो जाता है, पर बड़प्पनके कारण धमकाकर अपनी बात सच्ची कर लेता है, तब क०। बलवानसे विवाद करना वृथा है।

हाकिमी गरमकी, दुकानदारी नरमकी, दलाली बेशरमकी, शराफ़ी भरमकी, दौलत करमकी, बात मरमकी, और आढ़त धरमकी—स्पष्ट।

हाजिते मशशातह नेस्त रूए दिल-आराम रा—(फ़ा०) सौन्दर्यको सजावटकी ज़रूरत नहीं।

(१) नहीं मुहताज ज़ेवरका जिसे ख़ूबी ख़ुदाने दी।

कि आख़िर बदनुमा लगता है देखो चाँदको गहना॥

(२) पहिरि न भूषन कनकके कहि आवत इहि हेत।

दर्पनकेसे मोरचे देह दिखाई देत॥ (बिहारी)

हाज़िरको लुक़मा ग़ायबको तकबीर—जीतोंका पालन करते हैं, मरोंके नाम ख़ैरात करते हैं। अच्छे मनुष्य पर क०।

हाज़िर मारे ग़ाफ़िल रोये—जो अवसर पर रहता है वह लाभ उठाता है और जो चूक जाता है, वह पछताता है।

डरते हैं।

हरामज़ादेसे ख़ुदा भी डरता है—स्पष्ट।

हरिको भजे सो हरिका होय—जो ईश्वरको उपासना करता है, वही उसे प्रिय होता है। दे० "जात पांत......"

हरिया हाथी हाकिम चोर, दोनोंके बिगरे ओर न छोर—जंगली हाथी और चोर हाकिम सीमाबद्ध नहीं रहते।

हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार। तौ भी नहीं बराबरी वेदों किया विचार—गुरुसेवाका महात्म है।

हरी खेती गाभिन गाय मुँह पड़े तब जानी जाय (कृ०) जबतक गाय न बियाये और अन्न घरमें न आवे तबतक उसका क्या ठिकाना? जब किसी बातका पूरा निश्चय न हो, तब क०।

हरे रूखपर सब कोई बैठते हैं—धनी लोगोंका साथ सभी देते हैं।

हरे शिष्य-धन शोक न हरई, सो गुरु घोर नरकमें परई—स्पष्ट।

हर्दी न छोड़े ज़र्दी बुलबुल न छोड़े रंग—प्रकृति नहीं बदलती।

हलक़का न तालूका, यह माल मियां लालूका-बुरी चीज़पर या अन्यायसे उपार्जन किये हुए धनपर क०।

हलक़के कोतवाल—उन लड़कोंको कहते हैं जो बिना भोजनकी सामग्रीमेंसे कुछ लिये अपने माता-पिता को भोजन नहीं करने देते।

हलक़ रोवे, जीभ टोवे—जब किसीको बहुत थोड़ी चीज़ खानेको दी जाय, तब क०।

हलक़से निकली ख़लक़में पड़ी—बात मुंहसे निकली और दुनियांमें फैली। गुप्त बातके प्रगट होनेपर क०।

हलके पिछोड़े उड़ उड़ जायँ—(ज०) दे० 'थोथे फटके'

हल न सकूं मेरे सौ बखरे—(ज०) आलसी मनुष्य कहा करते हैं।

हलवाईकी जाई और सोवे साथ कसाई—किसी उच्च कुलका मनुष्य अगर अपने कुलकी रीतिके विरुद्ध नीचोंका साथ करता है, तब ऐसा कहते हैं। बेजोड़ बातपर भी क०। हलवाई हिन्दू और क़साई मुसलमान होते हैं।

हलवाईकी दूकान और दादाजीकी फातिहा—(मु०) जब कोई दूसरेके धनसे अपना काम करता है, तब कहते हैं। मुफ्तका माल लुटानेपर भी क०।

हलवा खानेको मुंह चाहिये } (१) अच्छी वस्तु
हलवा ख़ुरदनरा रूए बायद } की प्राप्तिके लिये वैसा गुण चाहिये (२) हलवेमें दाम बहुत लगता है। हरएक आदमी नहीं खा सकता इसलिये भी क०।

हलवा पूरी बांदी खाय, पोता फेरने बीबी जाय जब घरका काम तो मालिक करे और नौकर मौज उड़ावे, तब क०।

हलवा पुरी बीबी खाय, पुड़ा पिटावन बांदी जाय बांदीका कहना है—हलवा पूरी खानेके लिये तो बीबी और पिटनेके लिये बांदी।

हलवाही चरवाहेको—जो जिसका काम न हो और उसको वह काम दिया जाय, तब ऐसा कहते हैं। चरवाहा हलवाही क्या जाने अर्थात् गड़रिया किसानका काम नहीं कर सकता।

हलालमें हरकत, हराममें बरकत—जब सत्यवादी मनुष्य दुःख पाते हैं और बुरे आराम पाते हैं, तब क०

हल्दी लगी न फिटकरी, पटाक बहू आन पड़ी—जब कोई काम मुफ़्तमें हो जाय, तब क०। हल्दी फिटकरी कपड़ा रंगनेमें काम आती है।

हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—जब मनुष्य बिना व्ययके अच्छा काम चाहता है, तब ऐसा क०।

हवाका रुख़ देखना—समयकी गतिको पहिचानना।

हवाके घोड़े दौड़ाना—जो मनुष्य अपने मनमें हवाई महल बनाया करता है, उसके लिये क०। झूठी गप्पें हांकनेपर भी क०।

हवाके घोड़ेपर सवार हैं—जब कोई बिना तत्त्वकी बात कहता है, तब क०। बहुत जल्दबाज़को भी क०।

हस्त ओ नेस्त बराबर है—उसका जीना और मरना मेरे लिये बराबर है।

हस्तीका क्या भरोसा ?—ज़िन्दगीका भरोसा क्या ?

हाँ करो, या ना करो—जब किसीसे कोई बात साफ़ कहलानी होती है, तब क०।

हांड़ीका भात छुपे, मुंहकी बात न छुपे—(पू०) भात हांड़ीमें छिप सकता है, मगर मुंहसे निकली बात नहीं छिपती।

हांड़ी न डोई घरघर हमारी रसोई—फ़क़ीरोंका कहना है।

एक साधू किसी बस्तीमें एक पेड़की नीचे आ उतरा और इधर उधरसे सूखी लकड़ियाँ चुनचाम कर धूनी लगा दी और बाघम्बर बिछाकर बैठ गया। दो चार राही मुसाफ़िर भी उसके पास आ बैठे और हुक्का तमाखू पीने लगे। उनमेंसे एक बोला, बाबाजी! दिन ढल गया, कुछ रसोई पानीकी फ़िक्र भी तो करो। साधूने कहा, बाबा न हमारे यहां हांड़ी, न हमारे यहां डोई, घर घर हो हमारी रसोई।

हांड़ी न डोई, मुआ सारी बात खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांड़ी न डोई, सब पन खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांड़ीमें अच्छत ना, चला समधी जेवें—(पू०). जब पासमें कुछ नहीं रहता है और दूसरोंको उसके देनेके लिये कह आता है, तब क०।

हांड़ीमें एक चावल टटोला जाता है—दे० "सारी देगमें......"

हांड़ीमें होगा, सो डोईमें आप ही आवेगा—जो मनमें होगा सो मुंहसे निकलेगा।

इत्र बदेंग श्रस्त वदमशा वर चायद।

हांड़ेसे दांड़ा भला—बेकार घूमनेसे क़ैद होकर बैठना अच्छा।

हाड़ों थका, त्योहारों थका—(पं०) बूढ़े आदमीको क०।

हाकिमकी अगाड़ी, और घोड़ेकी पिछाड़ी न खड़ा हो—दोनोंमें हानि होनेका भय है।

हाकिमके आँख नहीं होती, कान होते हैं—न्यायाधीश सुनकर ही न्याय करते हैं, देखकर नहीं।

हाकिमके डपटे और कीचड़के रपटेका किसने ...

हाकिमके तीन शहनाके नौ—हाकिमके तीन और कामदारके नौ हिस्से होते हैं। हाकिमके पास जो पहुंचता है उससे बहुत ज्यादा अमले फ़ैले खा जाते हैं।

हाकिम टले पर हुक्म न टले—हाकिमका किया फ़ैसला ही क़ायम रहता है। हाकिम बदल जाता है, पर उसका हुक्म बहाल रहता है।

हाकिम, दो जाननेवालोंमें एक अनजान—फ़रियादी और असामी दो ही सच्चा हाल जानते हैं, तीसरा हाकिम कुछ नहीं जानता।

हाकिम महकूमकी लड़ाई क्या—स्वामी और अधीनस्थकी लड़ाई लड़ाई नहीं कहलाती।

हाकिमसे महकूम बड़ा। जब मालिकसे भी नौकर अधिक जबरई दिखावे, तब क०।

मौलवी साहब न छोड़ेंगे ,खुदा भी बख्श दे।

घेर ही लेंगे पुलिसवाले सज़ा हो या न हो॥

(अकबर)

हाकिम हारे, मुंहमें मारे—जब बड़ा आदमी अनुचित बात करनेपर लज्जित या निरुत्तर हो जाता है, पर बड़प्पनके कारण धमकाकर अपनी बात सच्ची कर लेता है, तब क०। बलवानसे विवाद करना वृथा है।

हाकिमी गरमकी, दुकानदारी नरमकी, दलाली बेशरमकी, शराफ़ी भरमकी, दौलत करमकी, बात मरमकी, और आढ़त धरमकी—स्पष्ट।

हाजिते मशाशातह नेस्त रूप दिल-आराम रा—(फ़ा०) सौन्दर्यको सजावटकी ज़रूरत नहीं।

(१) नहीं मुहताज ज़ेवरका जिसे ख़ूबी ख़ुदाने दी।

कि आख़िर बदनुमा लगता है देखो चाँदको गहना॥

(२) पहिर न भूषन कनकके कहि आवत इहि हेत।

दर्पनकेसे मोरचे देह दिखाई देत॥ (बिहारी)

हाज़िरको लुक़मा ग़ायबको तकबीर—जीतोंका पालन करते हैं, मरोंके नाम ख़ैरात करते हैं। अच्छे मनुष्य पर क०।

हाज़िर मारे ग़ाफ़िल रोये—जो अवसर पर रहता है वह लाभ उठाता है और जो चूक जाता है, वह पछताता है।

हाज़िरमें हुज्जत नहीं गैरकी तलाश नहीं—जो चीज़ सामने है उसे देनेमें कोई हुज्जत नहीं और जो नहीं है उसकी तलाश नहीं।

हाज़िरीके मेलेमें कोई हो—खानेके समय कोई आ जाय। मुहर्रममें शीया लोग जो भोज देते हैं उसमें सभी मज़हबके मुसलमान बुलाये जाते हैं।

हाजी जो हज करते फिरे नामे खुदा कभी ना लिया। दिलका कुफर टूटा नहीं मक्के गये तो क्या हुआ—दिखावटी धर्मात्मा वा बगुलाभगतको क०।

हाट भली न सीरकी, और संगत भली न चोरकी साझेकी दूकान और चोरका संग अच्छा नहीं।

हाट हाट पुकारे बैसा, जैसा करे सो पावे तैसा जो जैसा करता है, वह वैसा ही पाता है। बैसा एक साधूका नाम है।

हातमकी गोरपर लात मारी—हातमसे बढ़कर दानी हो गये। व्यंगसे सूमको क०।

हाथ कंगनको आरसी क्या?—
हाथ देखनेको आरसी क्या?— } प्रत्यक्षके लिये प्रमाणकी क्या आवश्यकता।

(१) भली भोर उठि आयें लाल,
लखि सोभा बिनु गुन उर माल।
कहि कहावति ज्यों नभि सहा,
कर कंगनको आरसि कहा॥ (अधीस)

(२) देखि दसा किन आपनी तू,
अब हाथके कंकनको कहा आरसी। (पद्माकर)

हाथ कसीदह, आसमान दीदह—(उ०) एक कामको करते समय मनुष्य अपने ध्यानको दूसरी ओर लगाता है, तब क०।

हाथ कसीदा चंचल दीदा—उ० दे०।

हाथका चूहा बिलमें बैठा—हाथमें आया हुआ काम जब बिगड़ जाता है, तब क०।

हाथका दिया आड़े आय—दान ही ढालका काम करता है अर्थात् कष्टोंसे बचाता है।

हाथका दिया साथ चलेगा—स्पष्ट।

हाथका देना, और बैर बिसाना—(व्य०) दे० "उधार दीजे"।

हाथका हथियार, पेटका आधार—दे० 'जिसकी लाठी......'

हाथकी लकीरें नहीं मिटतीं—(१) होनहार होकर ही रहती है। (२) रिश्तेदारी नहीं टूटती।

कैसे मित्र तिय तजौं पियार, जो मोहि मिली बेट अनुसार
लोग उजि ज्यों कहै सहेली, मिटै न मेटै रेख हथेली॥
(अनुकूल नायक)

हाथके संकल मुंहके पियार—(पू० ज०) बनावटी प्रेम पर क०।

हाथ को हाथ नहीं सूझता — जब बहुत अंधकार रहता है, तब क०।

हाथ को हाथ पहिचानता है—(व्य०) जिस हाथसे लिया है उसीमें देंगे। जब कोई किसीके बदलेमें तक़ाज़ा करे, तब क०।

हाथ कौड़ी न बाज़ार लेखा— जिसके पास कुछ भी न हो और उसका कोई एतबार भी न करे, उसे क०।

हाथ गोड़ लकड़ी, पेट बकरी—
हाथ गोड़ सिरकी, पेट नदकोला— } जो दुबला आदमी बहुत खाता हो, उसे क०।

हाथ न गले, नाकमें प्याजके डले—(मु० ज०) गहना न हाथमें कुछ है और न गलेमें, पर नाकमें प्याजके डले हैं। बेहूदा गहना पहिनने पर क०। जिसके पास असली चीज़ न हो और वह नक्लीसे अपनेको सजाये, तब भी क०।

हाथ न मुट्ठी, हलबलाती उट्ठी—(ज०) जिसे चीज़ लेनेका शौक़ तो हो, पर पास दाम न हो, उसको क०।

हाथ पांवकी काहिली मुंहमें मूंछे जायँ—आलसी आदमी को क०। यह मसल अशुद्ध जान पड़ती है क्योंकि मूंछमें पांव नहीं लगाया जाता, इससे 'हाथ पायके आलसी' होना चाहिये। हाथ पायके=हाथ डालनेके वा हाथ रहते हुए भी।

हाथ पांव दीया सलाई, बात करनेको फ़ज़्ल इलाही—काम कुछ न हो सके, पर ज़बान खूब चले, तब क०।

हाथ पाँव बचाइये, मूंजीको टरकाइये—स्पष्ट। मूंजी=शत्रु, सूम, सांप।

हाथ बेचा है, कुछ जात नहीं बेची है—जब मालिक अपने नौकरको उसके अयोग्य काम करनेको कहता है, तब नौकर ऐसा कहता है।

हाथ भरेका अहै लड़ैया, नौ गज़की है पूंछ—जब छोटा आदमी बड़ी बड़ी डींगें हांकता है, तब क०।

हाथमें न गातमें, मैं धनवन्ती ज़ातमें—(ज० प्रा०) न हाथमें पैसा न तन पै कपड़ा और मैं धनवन्ती हूं और ज़ातमें बड़ी हूं। झूठी कुलीनता दिखानेवालों को क०।

हाथमें लाना, पातमें खाना—(ज०) बहुत ग़रीब आदमी को क०।

हाथ लिया कांसा, तो रोटियों क्या सांसा—जब भीख ही मांगना हुआ, तब रोटियोंकी क्या कमी होगी।

हाथ सुमिरनी, पेट कतरनी—जो धर्मात्माका रूप धारण कर दूसरोंको ठगते हैं, उनको क०।

सुखमें चारवेदकी बातें, मन पर-धन पर-तियकी घातें।
धनि बगुलाभक्तनिकी करनी, हाथ सुमिरनी पेट कतरनी

हाथ सुमिरनी, बग़ल कतरनी, पढ़े भागवत गीता रे। औरों को तो ज्ञान बतावे, आप फिरे तू रीता रे—जो केवल दूसरोंको ही उपदेश करते हैं, आप तदनुसार नहीं चलते, उनको क०।

हाथ सूखा, फ़क़ीर भूखा—जब किसी निर्धन मनुष्यके पास याचक आ जाता है, तब ऐसा क०।

हाथ से मारे, भातसे न मारे—हाथसे भले ही मार ले, पर किसीकी रोज़ी न मारे। जब कोई किसी की जीविकामें खलल डाले, तब क०।

हाथी अपनी हथियाईपर आ जाय तो आदमी भुनगा है—अगर ज़बरदस्त अपनी ज़बरदस्ती दिखलाने लगे तो सब परेशान हो जायँ।

हाथी आवें घोड़े जायँ, ऊंट बिचारे गोते खायँ—नष्ट स्त्रियोंसे क०।

हाथी का कंधा खाली नहीं रहता—उसपर महावत बैठता है।

हाथीका जग साथी, कीड़ी पाहन पीड़ी—(प्रा०) ज़बरदस्तके सभी साथी होते हैं, ग़रीबका कोई नहीं। हाथीके सब साथी हैं और चींटीको सब पांवसे कुचल देते हैं।

हाथीका दांत, घोड़ेकी लात, मूंजीका चुङ्गल—इन तीनोंसे बचना चाहिये।

हाथीका दांत निकला जहां निकला—फिर भीतर नहीं जाता। जब कोई बदचलन हो जाय, तब क०। जब कोई बड़ेका बड़प्पन न रखकर सामना करने लगे, तब भी क०।

हाथीका पीर अंकुश—हाथी अंकुशसे ही दबता है।

हाथीका बोझ हाथी उठाता है—(१) बड़ोंका भार बड़े ही बरदाश्त करते हैं। (२) योग्य आदमीसे ही कठिन कार्य होता है।

बड़े बड़ेकी बिपतिनैं, लिहबे लेत उबारि।
ज्यों हाथी कौ कीच तैं, हाथी लेत निकारि॥ (वृन्द)

हाथीके खाये कैथ हो गये—भीतर ही भीतर खोखले हो गये। जब किसी मनुष्यका सब धन निकल जाय और जाते मालूम न पड़े, तब क०। हाथी कैथ और बेल समूचा खा जाता है और समूचा ही हग देता है परन्तु उसका सब गूदा हजम कर लेता है।

समायाति यदा लक्ष्मी नारिकेल फलाम्बुवत्।
विनिर्याति यदा लक्ष्मी गज भुक्तकपित्थ वत्॥

हाथीके दांत खानेके और, दिखानेके और—जो आदमी कहता कुछ और करता कुछ है, उस पर क०।

(१) धरम न कर बिभिचारमें, भक्ष्यो ध्यार मन माल।
दिखनके अरु खानके, ज्यों हाथीके दन्त॥ (सतनामक)
(२) वाइज़के वाज़ हैं सुनानेके और।
और आप अपनी चालमें आने के और॥
कहती है सफ़ये ये मसल हाथीको।
खानेके हैं दांत और दिखानेके और॥ (रंजूर)

हाथीके पांवमें सबका पांव समाय—बड़े आदमियोंके साथ छोटोंकी गुज़र होती है।

(१) नमो नमो योगजमुखदेव, सकल देव आदिक भेदि भेव
कहे पावामी ज्यों बुधि जोज, हस्ती खोज माहि सब खोज
(२) एक सेवके चाकरें, जाति बरन छिप जात।
ज्यों हाथीके पाँवमें सबको पाँव समात। (वृन्द)

हाथीके पीर गदहा दागा जाय—जब बड़े आदमीके अपराधमें छोटेको दंड मिले, तब क०।

हाथीके मुँह आता है, चींटीके मुँह जाता है—धनपर क०। आते सबको दीखता है, जाते किसीको नहीं दीखता।

हाथीके साथ गाँड़े खाना—अपनेसे ज़बरदस्तका मुकाबिला करनेपर क०। हाथीको ऊख पकड़ा दिया जाय तो उससे छुड़ाना मुश्किल है।

(१) यदपि यदी तुम निसि रंग लाल।
अब नटिबो कैसे बने बाल॥
हाथी लखरो सुगम गहैबो।
पै अति कठिन है फेरि छुड़ैबो॥
(२) अब व्याकुल क्यों होत है बाल।
रति मानो रंग गिरिधरलाल॥
लोक उक्ति ज्यों कहै उमंग।
ऊख न छिबो हाथी संग॥ (लो० र० को०)

हाथी घोड़े बहते जायँ गदहा कहे कितना पानी—बड़े बड़े जिस कामको नहीं कर सकते, अगर छोटा उसको करने जाय, तब क०।

हाथी चढ़े कुत्ता काटे—दे० 'ऊँट चढ़े—'

हाथी दलदलमें फँसा है—जब बड़ा आदमी कहीं बुरी तरहसे फंस जाता है, तब क०।

हाथी निकल गया दुम रह गई—(१) जब किसी कामका बहुत अंश हो जाय और थोड़ा सा बाकी रह जाय, तब क०। (२) कामका बहुत भाग हो जाय और थोड़ेमें असमंजस रहे, तब क०।

एक आदमी झूठ बहुत बोलता था। एक दिन उसकी जोरूने कहा, खुदाके वास्ते झूठ बोलना छोड़ दो क्योंकि यह बहुत बुरा काम है। उसने कहा; तू दो चार रोटियाँ पका दे कि मैं पाँच सात कोसपर जाकर झूठको छोड़ आऊँ। उस बिचारीने जल्द रोटियाँ पका दीं। वह बाहरसे खाकर घरमें चला आया और अपनी जोरूसे कहने लगा कि बीबी तुम्हारे कहनेसे मैं झूठको तो छोड़ आया मगर एक हादिसा अजीब मुझपर गुज़रा। उसने पूछा क्या? कहने लगा कि एक हाथीने मुझको खदेड़ा; मैं एक पेड़की फुनगीपर जा चढ़ा, वह हाथी भी चढ़ आया, फिर मैं नीचे उतर एक घड़ेमें घुस: उसकी टोंटीसे बाहर निकला; वह हाथी भी उसमें घुसकर उस-राह निकला मगर उसकी दुम अटक रही। यह सुनकर उसकी जोरूने कहा कि तुम तो कहते हो लेकिन झूठेका मुँह काला।

हाथीपर चढ़के गधेपर क्या चढ़ना!—बड़ा काम करके छोटा काम क्या करना!

हाथी फिरे गाँव गाँव, जिसका हाथी उसका नाम—लड़केको चाहे कोई रख ले परन्तु कहलावेगा अपने बापका।

हाथी फिरे बज़ार, कुत्ता भूके हज़ार—बड़े आदमी काम किया करते हैं, नीच उसका विरोध करते रहते हैं।

हाथी बेचके करत कोउ अंकुश हेतु विवाद—दे० 'तलवार तो दे दी—'

विक्रीते करिणि किमंकुशे विवादः?

यह उक्ति रामचन्द्रजीने लक्ष्मणसे कही है जब उन्होंने कहा था कि विभीषणको लंका दे दी सो दे दी पर कोष न दीजिये।

हाथी सूँड़ न हाथिहिं भारी—अपना भार अपनेको नहीं मालूम होता।

हाथी हज़ार लटा तौभी सवा लाख टकेका—(१) बड़ा आदमी कितना ही ग़रीब हो जाय तौ भी साधारण आदमीसे अच्छा है। (२) मरा हाथी भी दांत और हड्डीके लिये बहुत दाममें बिकता है, इसलिये क०।

हाथों मेंहदी पाओं मेंहदी, अपने लच्छन औरां देवी—(प०जं०) जो जैसा रहता है वह दूसरोंको भी वैसा ही बनाना चाहता है। मेंहदी लगाना सुहागिनका काम है जब कोई विधवा लगावे तो उसे नष्ट समझना चाहिये, ऐसे ही मौक़ेपर यह क०।

हाथों हाथ बिक गया—(व्य०) जो माल तुरत बिक जाय, उसपर क०।

हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधिहाथ—(तुल०) ये सब चीजें परमात्माके हाथ हैं।

हार जीत, किस्मतके हाथ—हानि लाभ भाग्यके अधीन है।

हार जीत सबमें रहे, हारे नहिं दातार—परमात्माको छोड़कर सबलोग हारते जीतते हैं अर्थात् हानि लाभ उठाते हैं।

हार मानी झगड़ा जीता—जो हार मान लेता है वही झगड़ा जीतता है। जहां दो मनुष्य विवाद

करते हों, वहां क०। दोमेंसे एक भी अपनी ज़िद छोड़ दे तो झगड़ा मिट जाता है।

हारमें हार न घरमें खेती नुक़सानपर नुक़सान पड़ने पर क०।

हारा, हाकिम ज़ामिन मांगे—मामला कमज़ोर रहने पर हाकिम ज़मानत मांगता है।

हारिल लकड़ी, पकड़ी सो पकड़ी—ज़िद्दीको क०।

हारेके हरनाम—जब मनुष्य धन अथवा शरीरसे शिथिल होजाता है, तब ईश्वरकी उपासना सूझती है।

हारे जुआरीको कब कल पड़ती है—हारा जुआरी निश्चिन्त नहीं बैठ सकता।

हारे भी हरावे, जीते भी हरावे—जो दोनों तरहसे अपनी ही जीत रखे, उसे क०।

हारों भी हार, जीतों भी हार—(पं०) अदालतके मुक़द्दमों पर कहते हैं। दीवानी मुकद्दमोंमें देर बहुत लगती है और इतना खर्च पड़ता है कि जीतने पर भी नुक़सान ही रहता है। (२) जबर्दस्तसे मुकाबला पड़नेपर भी क०।

एक सिपाही कुछ बाज़ी लगाकर किसी बनियेके साथ चौपड़ खेल रहा था। इत्तिफ़ाक़न सिपाही पांच सौ रुपये हार गया, तब उसने बनियेसे फरेब किया और कहने लगा कि क्यों भाइजी यदि हम १ जिताते तो हमें पांच सौ रुपये ज़रूर देने पड़ते। बनियेने उसकी नीयत बिगड़ी देखकर कहा, हां भाई सच कहते हो ज़बर्दस्तसे हारे भी हार है और जीते भी हार है।

हालका, न कालका, टुकड़ा रोटी, चमचा दालका—(मु० ज०) जो आदमी किसी कामका न हो, उस पर क०।

हालका न रोज़गारका—ऊ० दे०।

हाल गया, अहवाल गया, दिलका ख्याल न गया सब बर्बाद हो गया तब भी बुरी आदत न छूटी।

हालमें फाल, दहीमें मूसल—(व्य०) बलतीमें देवानी होना व्यर्थ है क्योंकि दहीके लिये मूसलकी आवश्यकता नहीं होती।

हाली अच्छा हांगला, और बलदा अच्छा चांगला (कृषि०) हलवाहा अगर बैलको अच्छी तरहसे कोंचता रहेगा तो बैल भी अच्छी तरह चलेगा।

हालीका पेट सुहालीसे नहीं भरता—(कृ०) हलवाहेका पेट सुहालीसे नहीं भरता है क्योंकि वैसे परिश्रमीके लिये अधिक भोजन चाहिये। सुहाली छोटी मोयनदार (ख़स्ता) मट्ठी होती है, जिसे नमकीन मट्ठी भी कहते हैं।

हासिद्का मुंह काला—ईर्षा करना बहुत बुरा है।

हाहा खातेको कोई नहीं मारता—विनय करनेवालेको कोई नहीं मारता।

पहिली रति कीन्हीं देहाल, करी न रस बस नीदा बाल।
लीय छकि तुम दई बिसारि, घेरत कौऊ न खातन मारि॥

हाहा खाये बूढ़े नहीं ब्याहे जाते—(१) असंभव काम विनती करने पर भी सिद्ध नहीं होता। (२) बूढ़े केवल मिनती करनेसे नहीं ब्याहे जा सकते, हां यदि भरपूर रुपया खर्च करें तो भले ही उनका विवाह हो सकता है, जैसा कि आजकल होता है। इस मसलसे यह जान पड़ता है कि थोड़े दिन पहले यह काम असंभव था परंतु अब सुलभ हो गया है।

हिंदी न फ़ारसी, लालाजी बनारसी—जो कुछ पढ़ा लिखा नहीं रहता है उसको व्यंगसे क०। बनारस संस्कृतके विद्वानोंके लिये मशहूर है।

हिंदू मुसलमानका चोली दामनका साथ है—दोनोंका घनिष्ठ सम्बन्ध है। क्योंकि दोनों एक ही जगह रहते हैं।

हिकमत-ए-चीन, हुज्जत-ए-बंगाला—चीना हिकमती और बंगाली हुज्जती होते हैं।

हिचकी, खाँसी, उबासी, यह रोग मांसी, छींक, पाद, डिकार, इनसे रोगसे रार—पहिले तीन रोगके चिह्न हैं और पिछले आरोग्यताके।

हिजराको नहिं नारि सुहाई—हिजड़े मनुष्यको स्त्रीसे मतलब नहीं रहता। जिसको जिस वस्तुको आवश्यकता नहीं पड़ती उसको वह वस्तु अच्छी नहीं लगती।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—(सं०) ऐसी बात जो हितकी भी हो और प्रिय भी हो दुर्लभ है।

हित अनहित पशु पच्छिहु जाना, मानुष तन गुण ज्ञान निधाना—(तुलसी) अपना हित तो पशु पक्षी भी समझते हैं मनुष्यकी बात ही क्या है।

हिमायतीकी घोड़ी ऐराकीके लात मारे— किसी बड़े आदमीके सहारेसे अपनेसे अधिक शक्तिमान्‌के साथ लड़ने पर क०। अथवा क्षमता प्राप्त करके प्रतिष्ठित मनुष्योंका भी अपमान कर बैठते हैं, तब क०।

हिम्मते मरदां मददे खुदा—(फा०) जो हिम्मत करता है परमात्मा उसकी मदद करता है।

हिरसका पेट खाली—ईर्षा करनेवाला सदा भूखा रहता है।

हिरी फिरी चल गई, जलबेके वक्त टल गई—(मु०) जो लेनेके समय मौजूद रहे और देनेके समय टल जाय, उसे क०।

हिरे फिरे खेतमेंको राह—सब कुछ देखता भालता है मगर अपनी बुरी बान नहीं छोड़ता। उजड्ड या मूर्खको क०।

हिल न सकूं मोरे तीन बखेरा—काम न करे हिस्सा पूरा मांगे, तब क०। आलसियोंके प्रति क०।

पतिमग हरे न वसन बनावे, कहै कोति घरमें नहिं आवे।
लोग उक्ति ज्यों कहै प्रवीन, उठि नहिं सकै भाग चहै तीन॥
उठनेको तो सामर्थ्य नहीं और भागते तीनों अर्थात् अर्थ धर्म कामकी इच्छा करे। (लो० र० को०)

हिलाय न डुलाव, मुझे बैठे ही खिलाव— जांगरचोर मनुष्यको क०।

हिसके हिसके गैया बिआय, गैयाके बछवा मर-मर जाय—ईर्षासे काम करे किन्तु काम खराब हो जाय, तब क०।

हिसाब ए-दोस्तां दर दिल—(फा०) मित्रोंका हिसाब दिलमें रहता है।

हिसाब जौ जौ, बख़शिश सौ सौ—(व्य०) हिसाब तिल तिलका करना चाहिये, इनाम चाहे सौ दे दे।

हिसाब ज्योंका त्यों, कुनबा डूबा क्यों?— कच्चा पढ़ना लिखना ख़तरनाक है।

इसका निकास इस तरह है:—एक कायस्थ सपरिवार बैल गाड़ीपर यात्रा कर रहा था। राहमें उसे एक नदी मिली। नदीको देखकर वह झट गाड़ीपरसे उतरा और नदीके भिन्न भिन्न स्थानोंके जलको नापने लगा। औसतमें पानी गाड़ीके पहियेके बराबर साबित हुआ। तब उसने गाड़ीवानसे गाड़ीको नदीमें होकर ले जानेके लिये कहा। जब गाड़ी अधिक पानीमें गई तब डूब गई और साथ ही साथ उस कायस्थका परिवार भी डूब गया। परिवारके डूब जानेपर उस कायस्थने पुनः हिसाब लगाया और हिसाब ठीक पाया। इसपर उसने उपरोक्त मसल कही।

हिसाब नित नया—हिसाब रोज़ नया रखना चाहिये, क्योंकि पुराना होनेसे वह भूल जाया करता है।

हिसाब लेब कि बनियां डांड़ब—(भो०) हिसाब लेते हो या धींगाधींगी करते हो। बनियां डाड़व=बनियोंका सा दण्ड देना। (१) बनियें बहुत सीधे और डरपोक होते हैं उन्हें जो चाहो सो दण्ड दो। वह बिचारे बरदाश्त कर लेते हैं। (२) बनियें बहुत चालाक होते हैं, वे जैसे बनता है उलटा सीधा हिसाब समझा कर ठग ही लेते हैं।

हींग जाय पर बास न जाय—(१) मनुष्य मर भी जाय तौभी उसकी कीर्त्ति रह जाती है। (२) धन सब स्वाहा हो जाय परन्तु बुरी आदत नहीं छूटती।

हींग बिके और घोड़े बाधें—(१) हींग बहुत थोड़ी बिकती है, ऐसा हलका रोज़गार करके जो घोड़ा बांधता है, उसे टोटा होता है। जब थोड़ी आमदनी पर बहुत खर्च बांध ले, तब क०। (२)हींगके रोज़गार में इतना ज़्यादा नफ़ा होता है कि चाहे तो घोड़े बांध ले।

हींग, लहसुनमें ना मिले घन कस्तूरी बास— हींग और लहसुनकी दुर्गन्ध कपूर और कस्तूरीसे नहीं जाती।

हींग हगते हैं—बीमार पड़े हैं। जो अपने कर्मोंका भोग भोगता तथा जो बहुत दुर्बल है, उसपर क०।

हीजड़ेकी कमाई, मुड़ौनीमें गई—क्योंकि वह अपनेको ज़नाना साबित करनेके लिये रोज़ रोज़ हजामत बनवाता है।

हीजड़ेके घर बेटा हुआ—जब कोई ऐसा काम करता है जो उसके लिये असम्भव हो, तब क०।

केवल धनमदके मतवार, बिन बचा बिन बुद्धि बिचार।
जिन अपने न प्रेम-पथ छुआ, हिजड़ोंके घर लड़का हुआ॥

हीना बैरी जानकर, मत निडर हो यार। कीड़ी बढ़कर सूंड़मा दे हाथीको मार—(मार०) शत्रुको

छोटा नहीं समझना चाहिये।

हीनी पुड़िया छत्तीस रोग—घटिया दवाईसे ३६ रोग पैदा होते हैं। सस्ती चीज़ विशेष कर हानिकारक ही होती है।

हीरा आब धरे नहीं, जौ लौं चढ़े न शान। विद्यासे मांजे बिना, बुद्धि गहै नहिं ज्ञान—स्पष्ट।

हीरेकी क़द्र जौहरी जाने—गुणकी परीक्षा गुणी ही कर सकता है।

कद्र जौहर शाह दानद या बिदानद जौहरी।

हीले रिज़्क़ बहाने मौत—हीलेसे रोज़ी और बहानेसे मौत होती है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर ही रोज़ी देता है और वही मारता है रोग केवल बहाना है।

हुई फ़ज़र, चुल्हेपर नज़र—सवेरा होते ही खानेका फ़िक्र होता है।

हुए तो जैसे न हुए तो जैसे—जो रहते हुए भी अपने कुछ काम न आवे, उसे क०। जिससे अपनी स्वार्थ सिद्धि न हो उसका रहना और न रहना दोनों एक सा है।

कबहु न रंगकर कुछ गहै, कबहु न रिसकर केश।
जैसे कंथा घर रहै तैसे रहै बिदेश॥

हुए फेरे, चूमे मेरे—ब्याह हो गया, अब मेरे पैर चूमेगा। ब्याह होनेपर लड़कीपर ज़ोर नहीं रहता। दे० "महल ब्याह मोर……"

हुँड़ार चीन्हैं बाह्मनका पूत—(पू०) हुंड़ार ब्राह्मणको भी मारनेसे बाज़ नहीं आता। दुष्ट सज्जनको भी कष्ट देता है।

हुंडी आवे हुंडी जाय, सौ हुंडीको हुंडी खाय—(व्य०) एक रुपया सैकड़ा ब्याज देना पड़े तो सौ हुंडी लिखनेमें एक हुंडी गायब हो जाती है। जो लोग हाथकी हुंडी बहुत लिखते हैं, उन्हें क०।

हुकूमतकी घोड़ी छः पसेरी दाना—हाकिमकी घोड़ी छः पसेरी दाना खाती है। वास्तवमें वह एक पसेरी ही खाती है बाक़ी बीचवाले।

हुक्का अफ़ीमीका—स्पष्ट। अफ़ीमचीको हुक्का बहुत प्रिय होता है।

हुक्क़ा चार वक्त अच्छा सोके, मुँह धोके, खाके, नहाके और चार वक्त बुरा आँधीमें, अँधेरेमें, भूकमें और धूपमें—स्पष्ट।

हुक्का पांव दौड़ीका—(१) किसीके यहां चलकर जाओ तो हुक्का पीनेको मिले। मेहनत करने होसे खातिर होती है। (२) आग लाने जाना पड़ता है।

हुक्क़ा पानी बन्द है—जो जातिच्युत किया जाता है, उसे क०।

हुक्क़ा पीना उसका है, जो रखे तमाखू पास। धुवां लपक कहवे उसे, जो तके पराई आस—स्पष्ट।

हुक्क़ा भर बड़ोंको दीजे, जब सुलगे तब आप भी पीजे—शिष्टाचारमें ऐसा ही होता है।

हुक्क़ा यकदम, दो दम, सिहदम बाशद, न कि मीरास-इ-जद्द ओ आम बाशद—(फा०) हुक्क़ा एक फूंक, दो फूंक या तीन फूंक पीना चाहिये, उसे अपनी मीरास या बपौती न समझें। जहां चार आदमी बैठे हों वहां पारी पारीसे सबको हुक्क़ा देना चाहिये, यह नहीं कि आप ही छड़ुक छड़ुक पीने लगे, ऐसे ही मौक़ेपर क०।

हुक्क़ा, सुक्का, हुरक्नी गूजर और जाट। इनमें अटक कहा, बाबा जगन्नाथका भात—स्पष्ट। इन चीज़ोंमें जाति भेद नहीं माना जाता।

हुक्क़ा, हक्का लाड़ला, राखे सबका मान। भरी सभामें यों फिरे, ज्यों गोपिनमें कान्ह—हुक्क़ेकी तारीफ़में क०।

हुक्क़ा हुक्म ख़ुदाका, चिलम बहिश्तका फूल। पीवें मर्द ख़ुदाके, घूरें नामाकूल—ऊ० दे०।

हुक्क़ेका मज़ा जिसने ज़मानेमें न जाना, वह मर्द मुख़न्नस है न औरत न ज़नाना—हुक्क़ा पीनेवालोंका कहना है।

हुक्क़ेकी मारी आग, बाक़ीका मारा गांव—ये नहीं पनपते।

हुक्क़ेसे हुरमत गई, नेम गया सब छूट। पगड़ी बेच तम्बाकू लिया, गई हियेकी फूट—हुक्क़ा पीनेकी बुराई है।

हुक्म निशानी बहिश्तकी जो मांगे सो पाय—हुकूमतसे सब कुछ मिल सक्ता है।

२७०	१	११	याद	यदि
,,	,,	१८	पौरुश्र यारम	पौरुष मारम
,,	,,	३०	वेसा	वैसा
२७१	,,	१७	हुजर	हुजूर
,,	,,	१८	नींद	नींद
,,	,,	२०	उसकी	उसके
,,	,,	२४	जातो है	जाति है
२७१	२	२	(रंजर)	(रंजूर)
२७२	,,	,,	क्योकर	क्योंकर
,,	,,	१४	अवनी	अपनी
२७३	१	१०	ह्या	क्या
,,	२	६	तसा	तसा
२७४	१	८	करी	मली
,,	,,	३१	कॉम	काम
,,	२	४	समझा	समझा
,,	,,	७	निष्ठरता	निष्ठुरता
२७५	२	२१	घिपत्ति	विपत्ति
२७६	,,	२१	रँडी	रंडी
२७८	२	३५	गुजर	गूजर
२७६	२	३	टट	टूट
२८०	१	२७	जएमें	जूएमें
२८१	,,	३६	य	यह
२८१	२	३१	दिमा	दिया
२८२	१	२१	लड्आ	लड्आ
२८२	२	२०	बेहूदी	बेहूदा
२८३	२	१२	शैव	रौब
२८४	२	३३	पर्योंने	रुपयोंने
२८५	१	३६	ग्रयिक	अधिक
२८७	,,	१६	लहीं	महीं
२८८	१	१६	लड़में	लड़कोंमें
२८६	१	२८	कामन	कानन
,,	१	३२	,,	,,
२६०	२	२८	मर्ख	मूर्ख
२६४	२	११	टूट	टूटे
,,	२	२४	पेर	पेर
२६५	२	३८	बड़ोंका	बड़ोंका
३००	१	६	मसल	मसल
,,	१	३०	नियत	नीयत
३०१	१	३६	वरमेंको	वरमेको
३०२	१	६	रज	राज
,,	,,	१०	होन है	होत है
,,	२	२०	प्रश्रित	आश्रित
,,	,,	३३	पड़	पड़े
३०३	१	२२	देवताक	देवताकी
३०४	२	२७	झठा	झूठा
,,	,,	२८	अन्तर री	अन्तर अंगुरी
,,	,,	३४	टे वध	झूटे बहु विधि
३०७	१	२८	ता	तो
,,	२	१	वाले	बोले
३०८	,,	७	लौटा	लौट
,,	,,	१६	कद्ध	कद्ध
,,	,,	१६	कों	क्यों
,,	,,	२१	एक	एक तुही
३०६	१	१८	संभुज	संभुज
३०६	,,	१७	चरण्य	चरण
३१०	१	६	लटा	लूटा
,,	,,	१२	लट	लूट
,,	,,	२७	लटना	लूटना
,,	२	२४	बरात	बारात
३११	१	१६	डामनी	डोमनी
३११	,,	३०	टट	टूट
३१४	१	२२	एक १ था	एक कुत्ता था
३१४	,,	३२	क	कि
३१४	२	५	मख	मूर्ख
,,	,,	१६	मखको	मूर्खको
,,	,,	२८	बखवी	बखूबी
३१६	१	१४	झठे	झूठे
,,	,,	३६	साघ	साध
३१७	,,	१०	साघ	साध
,,	,,	१८	,,	,,
,,	२	८	भुजंगमां	भुजंगामां
३१८	२	१	सीपकी	सीप कि
,,	,,	२८	मागा	मांगेगा
३१६	१	१०	घुडकी	घुड़की
३१६	२	२०	हस्तपु	हस्तेपु
३२०	१	२०	साघ	साधु
,,	,,	२५	,,	,,
,,	२	३	,,	,,

२३४	२	१५	मुर्त्तना	मुत्तेता
२३५	१	२	स्नुद्‌या	खुद्‌वा
”	”	८	घण्छ्‌या	अच्छा
२३५	२	६	घरल	गगल
२३६	१	३८	दफ्ला	दफ्न
२३८	१	१६	तने	सूने
”	”	१३	मोते	सोतें
”	”	३१	गयि	गया
”	१	२३	उससे	उसे
२३६	१	३	मालुम	मालूम
”	२	२०	सलक	सलक
”	”	२२	सानि	सान
२४०	१	१३	मधूमिच्छूवन्ति	मधुमिच्छन्ति
”	”	१४	गुणमिच्छयन्ति	गुणमिच्छन्ति
”	”	१५	दांव	दाँव
२४२	”	३०	रहती ह	रहती है
”	२	६	मुस्त	सस्त
”	”	२७	फल फल	फल फूल
२४३	”	६	सन्दर	सुन्दर
”	”	१२	सत्त ही	सत्तू ही
२४४	१	१	पौठ	पीठ
”	२	४	सोमी	सोमी
”	”	५	महावत	महावट
२४५	”	४	भेस	भैंस
२४६	”	१२	रहतो ह	रहती है
”	”	३६	काई	कोई
२४७	१	१०	छोट	छोटे
”	”	३२	कज	कर्ज
२४८	२	१३	स्वीक्रीयम	स्वकीयम
२४८	१	३२	भद	भेद
”	”	३७	मुझ	मुझे
२५०	”	५	कमस्तान	कब्रिस्तान
”	”	३१	काम	काम
२५१	१	१२	उत्तेजित	उत्तेजित
”	”	३४	मुक्ति	मुक्ति
२५२	१	२८	जुगन	जुगनू
२५२	२	२५	बैठी	बैठो
२५३	१	३१	झटा	झूठा
”	”	९	सिर	सिये
”	”	३	जाव	जावें
”	”	१८	मोसी	मौसी
”	”	”	यहा	यहा
”	”	३६	झठी	झूठी
२५४	१	६	अच्छ्‌या	अच्छा
”	”	१२	यटा	पेटा
”	”	२८	सिद्धिभाव	सिद्धि है भाव
”	”	३०	जा	जो
२५५	१	२०	ब्याहही	ब्याह हो
”	”	२४	घड़ओत है	घड़ाती है
			मुफलिस	मुफलिसी
”	”	२७	यथमेयपतः	यथमेवयातः
२५६	१	३३	मत	भूत
”	१	३८	त घड़ा था	भूत घड़ा था
”	२	८	मराली	मारली
२५७	१	१	यकत है	चूकत है
”	२	३१	मास	मांस
”	”	३४	मास	मांस
”	”	३४	मांसाहारीओं	मांसाहारियों
”	”	३६	माससे	मांससे
२५७	१	३१	झठी	झूठी
२५८	”	६	लीनपर	लोनपर
”	”	२७	टट	टट
२६०	१	३३	सिंगार	सिंगार
”	”	३५	खदा	खुदा
२६१	”	१४	ग	संग
”	२	६	रहित	सहित
२६२	”	२७	तकले घाव	तकलेका घाव
”	२	३८	अन्तेष्टि	अन्त्येष्टि
२६२	”	२३	हन	हानि
२६३	”	१०	इकठो	इकट्ठी
”	”	३१	दौड़	दौड़
२६४	१	२३	जो	जो
”	२	१५	माम	मालम
”	”	३२	मुकते	मुकते
२६७	”	११	दरी	दुरी
२६८	१	१६	उम्रने	उमने
”	१	२०	विरक्त	विरक्त
२६६	२	३४	[illegible]	[illegible]

२७०	१	११	याद	यदि
,,	,,	१८	पौरुष ग्रात्म	पौरुष मात्म
,,	,,	३०	येसा	वैसा
२७१	,,	१७	हुजर	हुजूर
,,	,,	१८	नौंद	नींद
,,	,,	२०	उसकी	उसके
,,	,,	२४	जाती है	जाति है
२७१	२	२	(रंजर)	(रंजूर)
२७२	,,	,,	क्योकर	क्योंकर
,,	,,	१४	अवनी	अपनी
२७३	१	१०	हुया	क्या
,,	२	६	तसा	तसा
२७४	१	८	करी	भली
,,	,,	३१	काँम	काम
,,	२	४	समझा	समझा
,,	,,	७	निष्ठरता	निष्ठुरता
२७५	२	२१	विपत्ति	विपित्ति
२७६	,,	३१	रँडी	रंडी
२७८	२	३५	गुजर	गूजर
२७९	२	३	टट	टूट
२८०	१	२७	जपमें	जूपमें
२८१	,	२६	य	यह
२८१	२	३१	दिमा	दिया
२८२	१	२१	लड़श्मा	लड़ुया
२८२	२	२०	मेंहूदी	मेंहूदा
२८३	२	१२	रोव	रोय
२८४	२	३३	पयोंने	रुपयोंने
२८५	१	३६	अयिक	अधिक
२८७	,,	१६	तहीं	नहीं
२८८	१	१६	लड़नें	लड़कोंमें
२८९	२	२८	कानन	कानन
,,	१	३१	,,	,,
२९०	२	२८	मर्ख	मूर्ख
२९४	२	११	टूट	टूटे
,,	२	२४	धेर	घेर
२९५	२	३८	बड़ोंका	बड़ोंका
३००	१	६	मसल	मसल
,,	१	२०	नियत	नीयत
३०१	१	३६	वरमेंको	वरमेको
३०२	१	६	रज	राज
,,	,,	१०	होन है	होत है
,,	२	२०	अश्रित	आश्रित
,,	,,	३३	पड़	पड़े
३०३	१	२२	देवताक	देवताकी
३०४	२	२७	झठा	झूठा
,,	,,	२८	अन्तर री	अन्तर अंगुरी
,,	,,	३४	टे वध	झूटे बहु विधि
३०७	१	२८	ता	तो
,,	२	१	बाले	बोले
३०८	,,	७	लौटा	लौट
,,	,,	१६	कढ़	कढ़
,,	,,	१६	कों	क्यों
,,	,,	२१	एक	एक तूही
३०९	१	१८	संभुज	संभुजू
३०९	,,	१७	चरण्या	चरण
३१०	१	६	लटा	लूटा
,,	,,	११	लट	लूट
,,	,,	२७	लटना	लूटना
,,	२	२४	बरात	बारात
३११	१	१६	डामनी	डोमनी
३११	,,	२०	टट	टट्ट
३१४	१	२२	एक । था	एक कुत्ता था
३१४	,,	३२	क	कि
३१४	२	५	मख	मूर्ख
,,	,,	१६	मखको	मूर्खको
,,	,,	२८	बलवो	बलूबी
३१५	१	१४	झठे	झूठे
,,	,,	२६	साघ	साध
३१७	,,	१०	साघ	साध
,,	,,	१६	,,	,,
,,	२	८	भुजंगमां	भुजंगानां
३१८	२	१	सीपकी	सीप कि
,,	,,	२८	मागा	मांगेगा
३१९	१	३०	बुडढी	बुढ्ढी
३१९	२	२०	हस्तपु	हस्तेपु
३२०	१	२०	साध	साधू
,,	,,	२५	,	,,
,,	२	२	,,	,,

,,	,,	२५	,,	,,
३२१	१	२३	स्नाद् भीता	स्ताद् भीता
३२१	२	१६	देगमें	दृगमें
३२२	१	१०	रह्वा	रहा
,,	,,	१७	सायकी	सायका
३२३	,,	७	करते ह	करते हैं
,,	,,	१४	तीथ	तीर्थ
,,	२	२६	लोकी	सौकी
३२४	१	१०	ईश्वरकी	ईश्वरके
,,	,,	३५	हय	हूय
३२५	२	१५	सुर	सुरे
,,	,,	३८	खिर	सिर
३२६	१	१०	किम्नोकी	किसीको
,,	,,	३५	था सागे	थाईं सागे
३२७	,,	२	सामने	सामने
,,	२	३४	यन	विनु
,,	,,	४	तीड़	तोड़
३२८	१	१७	विधायो	विंधायो
३२८	२	१७	मर्ख	मूर्ख
,,	,,	१६	उम्काता	उकता
,,	,,	३१	घय । के	घयराके
,,	,,	२७	पे का	पेफिक्र
,,	,,	२७	वृद्ध ।	वृद्ध तिया
३०६	१	६	श्ररू	श्ररु
३१२	१	२२	वीध	वीघा
३३२	१	११	कं	कहँ
३३३	,,	१६	मरी	मैरी
३३४	२	३	रक्खं	रक्ख
,,	,,	,,	देखंगा	देखूंगा
,,	,,	३३	मभयका	समयका
,,	,,	२६	न्यन	न्यून
३३५	१	४	सरासारसा	सरस्सारसा
,,	,,	५	धनान्तकं	धनान्तं
,,	,,	४	मासा	मोसा
,,	२	२६	चकी	चूकी
३३६	१	१६	वभि	वूभि
३३६	,,	२६	मौनो	सोनो
३३७	,,	१०	मुदके	मुदोंके
,,	,,	२६	डय	हूय
३३८	१	३३	यड़ाकर	यढाकर
,,	२	१६	डय	हूय
,,	२	२०	अच्छुवा	अच्छा
३३९	१	१७	अनपम	अनूपम
३४०	,,	१५	चोरका	चोरको
,,	२	५	निलज्ज	निर्लज्ज
,,	,,	३५	हुजर	हुजूर
,,	,,	२६	मोचम	मोचन
३४१	,,	१६	स्वरथ	स्वारथ
३४२	,,	१४	मै	मैं
३४४	१	१	सल	साल
,,	२	४	मुक्या	मुक्ता
,,	,,	१२	जहांस	जहांसे
,,	,,	१०	कत्तव्य	कर्त्तव्य
,,	,,	३२	इसक	इसको
,,	१	२८	घुराये	घराये
,,	,,	,,	दवा	दाया
,,	,,	२६	हनने	हमने
३४५	२	१०	छटा	छूटा
३४६	२	३३	झठी	झूठी
३४७	२	२८	घमनेसे	घूमनेसे
,,	१	३६	चक	चूक
३४८	२	३८	शत्र	शत्रू
३४९	१	९	झठी	झूठी
,,	२	३२	यताव	यताये
३५०	२	४	नाम	नांव
,,	२	११	किमंगकुशे	किमंकुशे
३५१	१	३२	सच्च २	सच्चन
,,	,,	२६	रोग मांसो	रागको मांसी